समाज, राज्य और सरकार

ग्यारहवीं कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक

एस. एन. झा



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मई 1989 : ज्येष्ठ 1911
पुनर्मुद्रण
मार्च 1990 : फाल्गुन 1911
नवम्बर 1990 : कार्तिक 1912
मार्च 1992 : फाल्गुन 1913
PD 11T -- NSY

आवरण : शान्तो दत्त एवं सी.पी. टण्डन
सज्जाकार : कर्ण चड्ढा

मूल्य : रु. 8.50

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली- 110016 द्वारा प्रकाशित तथा सुप्रीम आफसैट प्रैस, के-५, मालवीय नगर, नई दिल्ली -110017 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

दस वर्षीय विद्यालयी शिक्षा की अवधि में विद्यार्थियों को नागरिक व राजनैतिक संस्थाओं का तथा भारत और विश्व की समकालीन समस्याओं का अध्ययन करने का अवसर मिलता है। सामान्य शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप इन दस वर्षों की अवधि में विद्यार्थियों में नागरिक व राजनैतिक प्रक्रियाओं की सही समझ पैदा करने के लिए बल दिया जाता है। सामान्य शिक्षा के इन तत्वों को बनाये रखते हुए +2 स्तर पर वैषयिक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। +2 स्तर का एक उद्देश्य विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान के भिन्न-भिन्न विषयों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए तैयार करना है। चूंकि इस स्तर पर ये विषय अध्ययन के लिए ऐच्छिक विषय हैं इसलिए ये उचित ही है कि नागरिक शास्त्र के स्थान पर राजनैतिक विज्ञान का अध्ययन किया जाए।

हमारा यह प्रयास रहा है कि पाठ्यक्रम व पाठ्य सामग्री को अधिक से अधिक अर्थपूर्ण और व्यावहारिक बनाया जाए। नये पाठ्यक्रम में अध्ययन को अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए राजनीति विज्ञान के सैद्धान्तिक व व्यावहारिक पक्षों को समन्वित करने का प्रयास किया गया है।

'समाज, राज्य और सरकार' +2 स्तर पर राजनीति विज्ञान की पाठ्य पुस्तक माला की पहली कड़ी है। यह पुस्तक नये पाठ्यक्रम पर आधारित है। इस पुस्तक में समाज, राज्य और सरकार के कुछ सैद्धान्तिक पहलुओं की चर्चा भारत के संदर्भ में की गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति व कार्यक्रम योजना में दिए गए कुछ केन्द्रिक शिक्षाक्रम के क्षेत्रों का समावेश इस पुस्तक में उपयुक्त रूप से किया गया है। पुस्तक को और अधिक व्यावहारिक बनाने के लिए पाठ्य सामग्री के साथ कुछ प्रयोगात्मक क्रियाओं का सुझाव दिया गया है। साथ ही साथ प्रत्येक अध्याय में चौखटे के भीतर कुछ प्रश्न दिए गए हैं अथवा अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए सुझाव दिए गए हैं। इन प्रश्नों का उद्देश्य पाठ्यसामग्री को बच्चों के व्यावहारिक जीवन के अनुभव और परिस्थितियों से जोड़ना है। इसके अलावा, पुस्तक में शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए कुछ अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं। पुस्तक की उपयोगिता को और अधिक बढ़ाने के लिए कठिन शब्दों की सूची दी गई है।

अन्त में कई वर्षों से हमने यह आवश्यकता महसूस की है कि पुस्तक की उपयोगिता के संदर्भ में अध्यापक और छात्रों से व्यवस्थित जानकारी प्राप्त की जाए। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पुस्तक का मूल्यांकन करने के लिए अंतर्निर्मित प्रणाली विकसित की गई है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पुस्तक के अंत में अध्यापक और छात्र दोनों ही के लिए प्रश्नावली दी गई है। आपके द्वारा सामाजिक विज्ञान और मानविकी सुझाव और टिप्पणियां हमारे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होंगीं।

हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर एस. एन. झा के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार की। विषय विशेषज्ञों और अनुभवी अध्यापकों द्वारा इस पाण्डुलिपि का पूरी तरह से निरीक्षण किया गया। परिषद इन सभी के योगदान के लिए आभारी है। पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक निर्माण के लिए पर्याप्त

अनुभव की आवश्यकता होती है। पुस्तक के निर्माण में सुनिश्चित योजना, अनुवेक्षण तथा पर्यवेक्षण अनिवार्य है और अन्त में मुद्रण के समय भी काफी ध्यान देना पड़ता है। इस सब के लिए मैं परिषद् के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के प्रो॰ दि॰ सी॰ मुले, श्रीमती सुप्ता दास, तथा डा॰ श्रीमती मंजु रानी के प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं कुमारी शशि अरोड़ा का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के लिए महत्त्वपूर्ण राजनीति विचारकों के रेखा चित्र तैयार किये।

पी. एल. मल्होत्रा
निदेशक

नई दिल्ली

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

विषय सूची

प्राक्कथन		III
अध्याय 1	राजनीति विज्ञान का अर्थ	1
अध्याय 2	राज्य, समाज और नागरिक	13
अध्याय 3	राज्य और संघ	24
अध्याय 4	राज्य और सरकार	32
अध्याय 5	सरकार के स्वरूप	39
अध्याय 6	लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक सरकार	45
अध्याय 7	संसदीय और अध्यक्षीय सरकार	54
अध्याय 8	एकात्मक और संघात्मक सरकार	60
अध्याय 9	समाजवादी सरकार	67
अध्याय 10	भारत में सांविधानिक विकास के विभिन्न चरण	72
अध्याय 11	राष्ट्रीय आन्दोलन : एक धरोहर	80
अध्याय 12	भारतीय संविधान की प्रस्तावना	85
अध्याय 13	भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएं	89
अध्याय 14	भारतीय संघ : सांविधानिक प्रावधान और कार्य	96
अध्याय 15	केन्द्र-राज्य सम्बन्धों में तनाव का प्रश्न	101
अध्याय 16	भारतीय संविधान में आपात्कालीन प्रावधान	106
	कठिन शब्द	109
	प्रश्नावली	111

पाठकों के लिए टिप्पणी

इस पुस्तक को पुनर्मुद्रण के लिए भेजने के बाद विश्व तथा भारत में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। पुस्तक के वर्तमान संस्करण में इन परिवर्तनों को सम्मिलित किया जाना संभव नहीं हो पाया है। यूरोप में हुए परिवर्तनों, विशेष रूप से साम्यवादी दलों की सरकारों के पतन के बाद, "समाजवादी सरकार" से संबंधित अध्याय को अब पूर्णतयः नई दृष्टि से देखना आवश्यक है। पुस्तक के विविध अध्यायों में सोवियत संघ का उल्लेख किया गया है, जबकि सोवियत संघ नामक राज्य का अब कोई अस्तित्व नहीं है। भूतपूर्व सोवियत संघ के सभी 15 गणराज्य अब स्वतंत्र, संप्रभु राज्य बन गए हैं। उनमें से 11 गणराज्यों ने मिलकर स्वतंत्र देशों का राष्ट्रमंडल (कॉमनवेल्थ ऑफ इंडिपेन्डेन्ट स्टेट्स) बनाया है।

इस पुस्तक के प्रथम मुद्रण से लेकर अब तक भारत में कई संवैधानिक तथा अन्य राजनैतिक परिवर्तन हुए हैं। उदाहरण के लिए, इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में मात्र 59 संवैधानिक संशोधनों का उल्लेख किया गया है, जबकि वर्तमान संसद के सम्मुख 74वां संवैधानिक संशोधन अधिनियम विचाराधीन है। इस संस्करण में केंद्र और राज्यों के संबंधों के विषय में सरकारिया आयोग की सिफारिशों का भी विस्तारपूर्वक विवेचन नहीं किया गया है जो भारतीय संघ व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं।

इस पुस्तक का नया संस्करण आने तक यह आवश्यक है कि पाठकगण समाचार-पत्रों तथा पत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य प्रकाशनों की सहायता से संबंधित उपयुक्त जानकारी प्राप्त करते रहें।

अध्याय 1

राजनीति विज्ञान का अर्थ

आधुनिक समाज में जो भी नागरिक दैनिक समाचार पत्र पढ़ता है, वह यह समझता है कि उसे राजनीति का ज्ञान है। उसका यह समझना उचित भी है। लेकिन राजनीति वैज्ञानिक यह सोचते हैं कि राजनीति को समझना और उसका विश्लेषण उनका खास विषय है। आम लोगों की दृष्टि में राजनीति एक "गंदा खेल" या एक "कुटिल प्रथा" से संबद्ध है और हम अक्सर "राजनीति का खेल" या "राजनीति करना" हेय व्यवहार मानते हैं। लेकिन शायद ही कोई ऐसा मानव समूह, संस्था या समाज है जो राजनीति से मुक्त हो। बहुत सी जटिल समस्याओं को राजनीतिक स्तर पर हल करने की बात की जाती है। समाज में विभिन्न प्रकार के विरोधों के राजनीतिक समाधान तलाशे जाते हैं। राजनीतिज्ञों का परिचय अक्सर "सत्ता लोलुप" जैसे अनादर सूचक शब्दों से दिया जाता है। लेकिन उन्हें समाज में जो पद और सुविधा मिलती है उसे पाने के लिए लोग लालायित भी रहते हैं। "राजनीति" शब्द का व्यवहार सामाजिक समूह के लिए किया जाता है जो क्लबों और परिवार जैसे छोटे मानव समूहों से लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ तक व्याप्त है। मानव समाज में यूनानी दार्शनिक प्लेटो से लेकर अब तक के जितने चिंतक आदर्श लोक की कल्पना करते रहे हैं सभी अंत में समाज के राजनीतिक पुनर्गठन की बात किसी न किसी रूप में करते हैं। जब राजनीति शास्त्र की विषय वस्तु को परिभाषित किया जाता है तो इन सभी विरोधी शक्तियों का सामना करना पड़ता है। राजनीति शास्त्र के लिए इन विरोधी शक्तियों की व्याख्या आवश्यक है। राजनीतिक प्रक्रिया के बारे में अलग-अलग समझ इसकी जटिलता और इसके विभिन्न स्तरों के कारण ही हैं। राजनीति की किसी परिभाषा के लिए इन विषयों को समझना आवश्यक है।

मानव समाज और राजनीति

मनुष्य अगर समुदाय में रहते हैं तो यह कोई असाधारण बात नहीं है। मानव समाज के बारे में ध्यान देने योग्य बात यह है कि इसकी कोई न कोई संस्कृति होती है, और इसके उद्देश्य भी होते हैं। मनुष्य केवल जीवन यापन से संतुष्ट नहीं होता। उसका तो यह प्रयास होता है कि वह कुछ अधिक उत्पादन करे जिससे उसके पास भी कुछ रह जाए। मनुष्य ने अपने ऐतिहासिक विकास के क्रम में सदा यह पाया कि उत्पादन गतिविधि का सहकारी संगठन ही विकास का कारण है। चाहे वह शिकार की अवस्था हो या चरवाहा संस्कृति और कृषि समाज, सहकारिता का महत्व हर समय दिखाई देता रहा। जैसे-जैसे उत्पादन पद्धति विकसित होकर आधुनिक औद्योगिक समाज की स्थिति में पहुँची, सहकारिता की महत्ता का ज्ञान बढ़ता गया। मनुष्य और साधनों का यह संगठन प्रायः ऐच्छिक ही होता है। लोग अपनी इच्छा से ही मिलकर काम करते हैं। कभी-कभी इसके लिए बल प्रयोग भी करना पड़ता है, लेकिन मनुष्य का कोई भी समूह केवल शक्ति के आधार पर इकट्ठा नहीं रह सकता।

जब उत्पादन प्रणाली बड़े पैमाने पर संगठित हो तो यह प्रश्न सामने आता ही है कि उत्पादन का बँटवारा कैसे किया जाए। समाज में कुछ ऐसे लोग होते हैं जिन्हें उत्पादन का बड़ा हिस्सा मिलता है और वे संपत्ति उपार्जन कर लेते हैं। इसी

संदर्भ में समानता और न्याय के प्रश्न सामने आते हैं। क्योंकि वितरण पद्धति भिन्न-भिन्न प्रकार की हो सकती हैं। इस तरह *स्वार्थ और अभिमत के विरोध उभर कर सामने आते हैं* जो मानव संगठन को प्रभावित करते हैं। बड़े सहकारी समूह प्रायः विभिन्न स्वार्थों के प्रतिनिधि छोटे समूहों में बँट जाते हैं। संघर्ष *का कारण अगर सिर्फ "उत्पादन का बंटवारा" ही होता* तो स्थिति सहज होती। मतभेद संस्कृति के द्वारा निर्धारित ऐसे तत्वों के आधार पर भी उभरते हैं जो सुनिश्चित नहीं हैं। *"क्या अच्छा है और क्या बुरा"* — इन प्रश्नों के उत्तर विभिन्न वर्ग के लोग अपनी तरह से देते हैं। इस तरह मानव समूहों में सघर्ष का स्वरूप जटिल होता है। लोगों का मिलकर काम *करने के लिए जो साधन, शक्ति और अवपीड़न का प्रयोग* करते हैं वे अनिवार्यतः संघर्ष के मुद्दों में उलझ जाते हैं। यह स्थिति राजनीतिक प्रक्रिया का सार है। इस तरह मानव समाज *में सहयोग और संघर्ष अनिवार्य हैं और यही राजनीति के दो पक्ष हैं।*

मानव विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामूहिक गतिविधियों में हिस्सा लेता है। इसीलिए ऐसे समूहों के आकार और स्वरूप में भी विभिन्नता होती है। कुछ समूह छोटे होते हैं। कुछ की गतिविधि अन्य की तुलना मे सरल होती है। कुछ ऐसे बड़े मानव समूह भी देखने में आते हैं जिनकी गतिविधियाँ काफी जटिल होती हैं। विभिन्न स्तर पर इस प्रकार के समूह हैं — परिवार, ग्राम सभाएं, श्रमिक संघ, उद्योग, शिक्षा संस्थान तथा राजनीतिक दल। कुछ राजनीतिक चिंतक तो राज्य को भी इसी प्रकार की संस्था मानते हैं जो नागरिकों की स्वेच्छा से बनी हैं। जहाँ एक ओर ये सभी संस्थाएँ सहकारिता के उदाहरण हैं, वहीं इन सभी में संघर्ष भी निहित है। एक ही समूह के लोगों के बीच संघर्ष होता है और विभिन्न समूह आपस में संघर्षशील होते हैं। इसीलिये ऐसे समूह संघर्षों को नियंत्रित करने के लिये नियम, अधिनियम, और कार्यविधि बनाते हैं। सहयोग और संघर्ष का विस्तार और प्रकृति मानव समूह के विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग होते हैं। किस प्रकार का और कितनी मात्रा में शक्ति का प्रयोग किया जाए इसका निर्धारण भी तदनुसार ही होता है।

संघर्ष और एकीकरण, राजनीति के दो पहलू

सहयोग और संघर्ष यद्यपि परस्पर विरोधी दिखाई देते हैं तथापि उन्हीं से राजनीतिक प्रक्रिया संगठित होती है। दरअसल, ये एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सामाजिक संघर्ष का संबंध *सत्ता से है, जो समाज में सुख, सुविधा, सम्मान, प्रतिष्ठा और* लाभ प्रदान करता है। सत्ता के वितरण का एक पक्ष जो सर्वत्र पाया जाता है, वह है उसकी असमानता। कुछ लोगों के पास *सत्ता अधिक होती है, तो कुछ दूसरों के पास कम। इस तथ्य* की व्याख्या विभिन्न तरीकों से की गई है। इनसे समाज में संघर्ष के कारणों का भी पता चलता है। प्रायः सबसे उचित *व्याख्या वह है जो सामाजिक, आर्थिक तत्वों को इसका कारण* मानती है। खास कर मानव समाज में सभी प्रकार के साधनों की हर समय कमी रहती है। प्रतिस्पर्धा और संघर्ष इन्हीं दुर्लभ साधनों की प्राप्ति के लिये होते हैं। संघर्ष का उभरना अनिवार्य है लेकिन यह मानव समाज का आदर्श कदापि नहीं है। संघर्ष के सभी प्रकार के विश्लेषण अंत में इसके समाधान के तरीके अवश्य बताते हैं। संगठित समाज का संक्रमण उतना ही *अनिवार्य है जितना संघर्ष का आविर्भाव।* समाजिक प्रक्रिया में कुछ संघर्ष कम हो जाते हैं, कुछ का हल निकल आता है और कुछ बने तो रहते हैं लेकिन नियंत्रित होकर, और स्थितियों के बदलते रहने से कुछ नये संघर्ष उत्पन्न हो जाते हैं। एक सद्भावपूर्ण समाज के उद्देश्य की पूर्ति में विविध सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से सहायता तो मिलती है, लेकिन इसमें राज्य और सरकार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

राज्य समाज की सामूहिक सत्ता का भंडार होने के नाते एकीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए कई कदम उठाता है। इसके द्वारा बनाए गए कानून, नियम, और कार्यविधि विरोध की अभिव्यक्ति को नियंत्रित करते हैं। राज्य का अनुमोदन होने से इन नियंत्रणों का पालन भी होता है। राज्य कुछ ऐसे कार्यों की जिम्मेदारी लेता है जिसका फायदा समाज के कुछ *वर्गों तक ही सीमित नहीं रहता।* रेलवे, परिवहन और डाक सेवा ऐसे संगठन हैं जो पूरे समाज के हित की दृष्टि में बनाए जाते हैं। एकीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक की एक मुख्य भूमिका है। समाचार पत्र, रेडियो, और दूरदर्शन जैसे जन माध्यम महत्वपूर्ण हैं। एकीकरण की अवस्था प्राप्त करने के लिए अंतिम लेकिन आवश्यक माध्यम राज्य शक्ति प्रयोग है जो ऐसे लोगों के लिए व्यवहार में लाया जाता है जो सामूहिक प्रक्रिया और लक्ष्य प्राप्ति से अपने को अलग रखते हैं। राज्य पुलिस, सेना, कारागार, और अंत में प्राणदण्ड जैसे चरम तंत्र

का प्रयोग कर सकता है। लेकिन कठोर साधनों का प्रयोग अंतिम रूप में होता है और ऐसा होना भी चाहिए। जो राज्य जनता द्वारा आज्ञापालन बिना बलप्रयोग के प्राप्त कर लेता है उसी को एक स्वस्थ राज्य की संज्ञा दी जाती है। वास्तविक बलप्रयोग के बदले उसकी धमकी ही पर्याप्त होनी चाहिये। फिर राज्य को अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए समय आने पर बलप्रयोग के साधनों का सहारा लेना पड़ता है।

आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के द्वारा सामाजिक संगठनों की प्रकृति का कुछ हद तक रूप बदल गया है। इनके प्रयोग से एकीकरण की प्रक्रिया को बल मिला है। ऐसे सामूहिक संगठनों में बहुत वृद्धि हुई है जिसका संबंध व्यक्ति के जीवन से है। इन विशाल संगठनों द्वारा दी गई सुविधाओं पर समाज निर्भर होता जा रहा है जिससे परस्पर निर्भरता का महत्व अधिक हो गया है। लेकिन यह एक मिश्रित वरदान है क्योंकि साथ ही इससे कुछ नई समस्याएँ और संघर्ष की स्थिति उभर आती है। इसी सिलसिले में राज्य और सामाजिक प्रक्रिया की समस्याओं का सामना करने की क्षमता भी बढ़ जाती है।

राजनीति और राजनीति विज्ञान

राजनीति और राजनीति विज्ञान का प्रयोग अक्सर एक दूसरे के पर्याय के रूप में होता है। लेकिन इनका अर्थ, विषय क्षेत्र और विशिष्टता, दोनों की दृष्टि से भिन्न है। सामाजिक सहयोग, संघर्ष और प्रतिस्पर्धा जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है, उन्हीं गतिविधियों को हम "राजनीति" कहते हैं। और राजनीतिक प्रक्रिया के क्रमबद्ध अध्ययन को "राजनीति विज्ञान" की संज्ञा दी जाती है। ये नाम दो विभिन्न पहलुओं की ओर संकेत करते हैं। "राजनीति" अध्ययन के विषयवस्तु और "विज्ञान" अध्ययन करने के प्रामाणिक तरीके से संबंधित है। पहला प्रश्न यह है कि अध्ययन की विषयवस्तु क्या है? और इसी का दूसरा हिस्सा इस प्रश्न से जुड़ा है कि "हम इस विषय वस्तु का अध्ययन किस प्रकार करें?" पहला प्रश्न अध्ययन के क्षेत्र और दूसरा अध्ययन-पद्धति की ओर इशारा करता है। विषय क्षेत्र और अध्ययन-पद्धति ऐसे पहलू हैं जिनको अलग नहीं किया जा सकता।

व्यक्तियों और समूहों में सहयोग और संघर्ष के स्वरूप और उसके तत्व विभिन्न प्रकार के होते हैं। और राजनीति विज्ञान उन्हीं का अध्ययन करता है। राजनीति विज्ञान के सामान्य निष्कर्ष इसी पर आधारित होते हैं। फिर इनकी जांच विभिन्न परिस्थितियों में की जाती है। जाँच की विभिन्न अवस्थाओं के बाद ही सिद्धांतों का क्षेत्र व्यापक हो पाता है और विचारों का श्रेष्ठ एकीकरण होता है। राजनीतिक प्रक्रिया में स्थिति और काल के कारण जो विभिन्नता होती है वही राजनीतिक सिद्धांत के आधार होते हैं। *राजनीतिक प्रक्रिया की परिकल्पनाओं और* सिद्धांतों के व्यवस्थित ज्ञान को ही राजनीतिक विज्ञान कहते हैं।

> मनुष्य की कौन सी गतिविधियों को आप "राजनीति" की श्रेणी में रखेंगे। कोई दो उदाहरण दीजिए।

राजनीति विज्ञान का अर्थ और क्षेत्र

राजनीति विज्ञान की व्याख्या कभी भी राज्य के समकालीन स्वरूप के प्रभाव से अलग नहीं रही है। विभिन्न समयों में राज्य और सरकार का क्षेत्र बदलता रहा है और विभिन्न समस्याएँ उनके सामने रही हैं। जहाँ एक ओर राजनीति शास्त्र के दार्शनिक राज्य के समकालीन स्वरूप और समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहे हैं, वहीं उन्होंने राज्य की प्रगति और उसके संगठन के बारे में भी दिशा निर्देश किया है। परिभाषाओं पर समकालीन और अन्य सामाजिक-आर्थिक बातों का भी असर रहा है। उत्पादन प्रक्रिया और सामाजिक संस्थाओं के विकास के साथ-साथ राज्य और सरकार की परिकल्पना भी बदली है। अरस्तू की राजनीति की "सर्वव्यापी विज्ञान" की परिकल्पना यूनान के नगर/राज्य (City/State) पोलिस (Polis) के अनुभव पर आधारित थी, जिसका विस्तार व्यक्ति के समस्त सामाजिक क्रियाकलापों तक था। प्लेटो और अरस्तु द्वारा दी गई राजतंत्र की परिभाषा राजनीतिक और सामाजिक दोनों प्रकार की संस्थाओं को सम्मिलित करती है। उन्होंने राजनीति और समाज में कोई प्रभेद नहीं माना। उत्पादन विधि के विभिन्न चरणों में सामाजिक और आर्थिक संस्थाओं का महत्व अधिक हो गया। राज्य के लिए अपने कार्यों के विस्तार उन क्षेत्रों तक करना संभव नहीं रहा जो सामाजिक प्रक्रिया में विशेष क्षेत्र के रूप में उभरे थे। इसी वजह से राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं में प्रभेद करना आवश्यक प्रतीत हुआ। राजनीति विज्ञान की परिभाषा "राज्य के विज्ञान" से की गई जिसका बल (emphasis) संस्थाओं की व्यवस्था का अनुरक्षण और बाहरी आक्रमण से सुरक्षा तक

सीमित हो गया। राजनीति विज्ञान का क्षेत्र आर. जी. गेटेल के शब्दों में, "राज्य के बारे में विज्ञान" (Science of the State) निर्धारित किया गया। राज्य के विकास के विभिन्न चरणों का विस्तृत अध्ययन, इसके क्या कार्य हों और कौन से मापदण्ड अपनाने चाहिये जैसे प्रश्नों को राजनीति विज्ञान की विषयवस्तु माना गया। राज्य अपने कार्य सरकार के माध्यम से ही करता है और इसीलिये स्टीफन लीकाक ने कहा कि "राजनीति विज्ञान सरकार के विषय में विचार करता है।" सरकार के विभिन्न रूप क्या हैं? इसके मुख्य कार्य क्या हैं? सामाजिक कल्याण की दृष्टि से सरकार का संगठन कैसा है? राजनीति विज्ञान मुख्य रूप से ऐसे ही प्रश्नों को विचार योग्य मानता था। राज्य और सरकार ही राजनीति शास्त्र की विषयवस्तु मानी गई थी जिसमें संस्था और उनके अधिकार और कार्य के विश्लेषण पर अधिक बल दिया जाता था।

व्यवहारवादी क्रांति ने राजनीति विज्ञान में मात्र "ढांचा" के अध्ययन को "प्रक्रिया" के अध्ययन तक बढ़ाया। इस विचारधारा के कायल लेखक सरकार के औपचारिक ढांचे और उसके कानूनी अधिकार और कर्तव्य के विश्लेषण से संतुष्ट नहीं थे, और उन्होंने संस्थाओं की प्रक्रिया को अधिक महत्व दिया। राजनीति का अर्थ ऐसे लेखक मुख्यतया उसकी प्रक्रिया से समझना चाहते थे। और इसी सिलसिले में उन्होंने "राजनीतिक" और "राजनीतिकेत" क्रियाकलापों में सुस्पष्ट भेद किया। "राजनीतिक" की विशेष परिभाषा संस्था के स्थान पर "क्रिया कलापों" के संदर्भ में की गई। इन लेखकों के अनुसार राजनीति की मूल प्रक्रिया का संबंध समाज में मतभेद, संघर्ष, एवं प्रतिस्पर्धा से है। राजनीतिक प्रक्रिया का सार सत्ता को समझा जाता है। समाज में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो आदेश देते हैं और दूसरे उसको मानते हैं। दूसरों से अपने आदेशों को मनवाना और उसके अनुसार आचरण करवाने की क्षमता ही सत्ता की परिभाषा है। राजनीति का संबंध सत्ता के उपार्जन और उसके व्यवहार से है। कुछ व्यक्ति या समूह अधिक सत्ता किस प्रकार उपार्जित कर लेते हैं? इसके क्या कारण हैं? ऐसे कौन से घटक और तत्व हैं, जो कुछ लोगों को सत्ता उपार्जित करने में सहायता करते हैं? सत्ता का आधार क्या है? सत्ता की प्रकृति क्या है? कुछ दूसरे प्रश्न सत्ता के व्यवहार के बारे में किये जाते हैं। अर्जित सत्ता का प्रयोग दरअसल कैसे किया जाता है? ऐसे कौन से तरीके और कौन-सी संस्थाएँ हैं जिनके द्वारा सत्ता को प्रयोग में लाया जाता है? सत्ताधारी का अनुसरण लोग क्यों करते हैं? राजनीति ऐसे ही प्रश्नों के विश्लेषण से संबंध रखती है। मार्क्सवादी भी राजनीतिक प्रक्रिया की मूल सत्ता को मानते हैं। लेकिन उनकी परिकल्पना अर्थमूलक वर्गों के आविर्भाव और वर्गों के असमाधेय टकराव से जुड़ा है। विश्लेषण और परिभाषा के इस लम्बे सफर में राजनीति और राजनीति विज्ञान का जो एक और पक्ष महत्वपूर्ण माना गया है, वह है लोकहित की प्राप्ति, समाज में व्यवस्था रखना, और न्याय की उपलब्धि। न्याय, समानता, और स्वतंत्रता ऐसी परिकल्पनाएँ हैं जो राजनीति विज्ञान में अंतहीन विवेचन के विषय बनी रही हैं। लेखकों ने इनकी कई परिभाषाओं द्वारा इनको समझने का प्रयास किया है और इनकी प्राप्ति के लिये कई तरीके सुझाए हैं। इसमें कोई दो मत नहीं कि ये मानव समाज के न्यायसंगत आदर्श हैं।

हम इन परिभाषाओं पर विस्तार से विचार करें। राजनीति विज्ञान की एक स्पष्ट और मानी हुई परिभाषा यह है कि इस *विषय का संबंध "राज्य और सरकार की सामान्य समस्या" से है* (आर. एन. गिलक्राइस्ट)। सरकार के अंग अधिक प्रत्यक्ष और दृश्य होते हैं। इसीलिये अक्सर राज्य और सरकार को अभिन्न समझ लिया जाता है। लेकिन लेखक इन दोनों में भेद करते हैं। सरकार के विभिन्न अंगों और संस्थाओं में राजनीति वैज्ञानिक की मुख्य दिलचस्पी रही है। *नियम, विनियम,* और कानून बनाना और उन्हें समाज में लागू करना, शासन के काम में सम्मिलित हैं। इनमें कोई भी काम पूर्णतया ऐच्छिक नहीं है। इसीलिए इन्हें लागू करने के लिए सरकार को सत्ता का प्रयोग करना पड़ता है। किस संस्था के पास कौन-सी और कितनी सत्ता हो, यह सांविधानिक विशेषज्ञों के विचार का मुख्य विषय रहा है। सरकार के तीन सुप्रसिद्ध अंग, विधायिका, कार्यपालिका, और न्यायपालिका, अलग-अलग कार्य के लिए उत्तरदायी हैं और उसके लिए जो सत्ता आवश्यक है वह उन्हें दी जाती है। लेकिन समाज में सिर्फ सरकार ही ऐसी संस्था नहीं है, जो नियम और विनियम बनाती है और जिन्हें लोग मानते भी हैं। यह विदित है कि सामाजिक प्रथा और परंपरा भी कानून के स्रोत होते हैं। क्लब जैसे ऐच्छिक समूह भी अपने लिए नियम और विनियम बनाते हैं। लेकिन इनकी बाध्यता वैसी नहीं होती जो सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों, नियमों और विनियमों की होती है, जो *विधिसम्मत* होते हैं। लेकिन *विधिसम्मत* सरकार की बात करना एक स्पष्ट बात की ही अभिव्यक्ति है। सरकार की परिभाषा वैधता से ही पूरी होती है।

राज्य का क्षेत्र सरकार से व्यापक है। दरअसल राज्य की अभिव्यक्ति सरकार द्वारा होती है। एक सुप्रसिद्ध परिभाषा के अनुसार राज्य की पहचान संप्रभुता का उन लोगों पर व्यावहार से होती है जो एक भूभाग में रहते हैं। इन तीन लक्षणों में संप्रभुता सबसे महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। अगर हम इसके मूल तत्व को समझने की कोशिश करें तो संप्रभुता का अर्थ वह सर्वोच्च सत्ता है, जिसका अनुसरण करवाने के लिए सरकारी तंत्र का व्यवहार होता है। मार्क्सवादी सिद्धांत से राज्य का स्पष्टीकरण और व्याख्या बहुत हद तक समृद्ध हुई है। यह विश्लेषण सामाजिक एवं राजनीतिक प्रक्रिया के आर्थिक आधार का कायल है और राज्य की प्रकृति की व्याख्या इस बात से करता है कि आखिर किस वर्ग हित की स्वार्थसिद्धि होती है। राज्य की अवधारणा शासक वर्ग के उपकरण के रूप में की जाती है।

समाज में सत्ता के केन्द्र के रूप में राज्य की अवधारणा सर्वमान्य है, लेकिन इससे कुछ नये विद्वान संतुष्ट नहीं हैं। इस संदर्भ में कई कठिनाइयाँ बताई जाती हैं। कुछ ऐसे समाज भी हैं जिनमें राज्य के लक्षण हैं और उसके कार्य भी संपादित होते हैं (जैसे, एक भूभाग, सामाजिक व्यवस्था, वैधानिकस्तता, और बल प्रयोग) लेकिन राज्य सही अर्थों में नहीं पाया जाता। ई. ई. इवान्सप्रिचार्ड और मायर फोरटेस जैसे सामाजिक मानव वैज्ञानिकों ने कुछ जनजातीय समाजों का अध्ययन किया है जिन्हें वे "राज्य रहित समाज" की संज्ञा देते हैं। साथ ही, राज्य के अलावा कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं जिनके लक्षण राज्य से मिलते-जुलते हैं। हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते कि शिक्षा संस्था, व्यापार और धार्मिक संगठन के पास भी कुछ मात्रा में निग्रह बल सत्ता होती है। संप्रभुता, यानी सर्वोच्च सत्ता, राज्य का सबसे विशिष्ट लक्षण है और इसलिए राजनीतिक प्रक्रिया के विश्लेषण में इस लक्षण को मुख्य मानना श्रेयस्कर होगा।

कुछ प्रभावशाली लेखक सत्ता को राजनीति विज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण संकल्पना मानते हैं। इनके अनुसार जहाँ भी सत्तामूलक संबंध और संघर्ष की स्थिति है, वहीं राजनीति उपस्थित है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि एक बार फिर बल संस्था के विश्लेषण पर नहीं, पर इस बात पर है कि क्रिया कलाप और व्यवहार का स्वरूप क्या है। हेराल्ड डी. लासवेल के द्वारा दी गई परिभाषा "राजनीति–किसको, कब और कैसे प्राप्त होती है" इस दृष्टिकोण का अच्छा उदाहरण है। सत्ता की परिभाषा दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित करने की क्षमता है, चाहे वह बलप्रयोग के व्यवहार या उसकी धमकी मात्र से हो जाए। लेकिन राजनीतिक व्यवस्था मात्र बलप्रयोग के आधार पर टिकी नहीं रह सकती। यहाँ विद्वान टी. एच. ग्रीन के चिरसम्मत कथन से सहमत हैं कि "मात्र बलप्रयोग नहीं, सम्मति राज्य का आधार है।"

इस संदर्भ में जो एक नया शब्द प्रवर्तित हुआ है वह है विधिसंगत, जिसका अर्थ है ऐच्छिक आज्ञापालन। राज्य के पास सत्ता होती है, और बल प्रयोग की क्षमता भी है जिसका प्रयोग लोगों से आज्ञापालन करवाने के लिये किया जा सकता है। अगर वास्तविक बलप्रयोग नहीं भी होता तो इसकी संभावना तो बनी ही रहती है। लेकिन बहुत से लोगों के अधिक व्यवहार को नियंत्रित करने के लिये सत्ता का बार-बार प्रयोग राज्य के लिए महंगा साबित होता है। नागरिकों को मात्र सत्ता के आधार पर नियंत्रित करना न तो संभव है न ही उपयुक्त। इसीलिये राज्य सत्ता को सिर्फ अंतिम अस्त्र के रूप में लेता है, जिसका व्यवहार उनके लिये होता है जिन्हें कानून मान्य नहीं होता। यह श्रेयस्कर समझा जाता है कि लोग इस विश्वास पर राज्य का आज्ञापालन करें कि शासन समुचित और लोगों के लिए लाभकारी है और सरकार सर्वमान्य प्रक्रिया के आधार पर ही सत्ता में आई है। दूसरे शब्दों में राज्य और सरकार को शासन का अधिकार प्राप्त है और इसलिए लोगों को इसका आज्ञापालन करना चाहिये। इसी आम विश्वास को "विधिसंगत" की संज्ञा दी गई है। इस वैधता की प्राप्ति की प्रक्रिया का प्रथम क्रमबद्ध सिद्धांत मेक्सवेबर द्वारा दिया गया।

इस प्रकार राजनीति विज्ञान का अर्थ और क्षेत्र उत्तरोत्तर व्यापक होता गया है। राजनीति के मूल तत्व की विवेचना करने के सिलसिले में उपयोगी संकल्पनाएँ प्रवर्तित हुई हैं। विभिन्न दृष्टिकोणों को हमें एक दूसरे के विकल्प के रूप में नहीं लेना चाहिए। इन सभी के द्वारा राजनीति विज्ञान ने समृद्धि को संचित किया है। राज्य और सरकार को समझने और उसकी परिभाषा करने के सिलसिले में विद्वानों के लिए जो एक स्थायी प्रकरण रहा है वह है एक विशिष्ट राज्य की परिकल्पना। प्लेटो के "आदर्श राज्य" और अरस्तू के "मिश्रित संविधान" से आरंभ होकर रूसो, मार्क्स, और महात्मा गांधी जैसे राजनीतिक चिंतक एक "अच्छा" और "इच्छित" मानव जीवन के बारे में सोचते रहे हैं। राज्य और सरकार इसको किस प्रकार सुनिश्चित कर सकते हैं, यह भी इन विचारकों के लिए एक महत्वपूर्ण विषय

रहा है। यह राजनीति विज्ञान में विचार का एक सशक्त पक्ष रहा है।

राजनीतिक विज्ञान के मानकीय एवं आनुभविक दृष्टिकोण

राजनीति विज्ञान का संबंध दो प्रश्न श्रृंखला से है। पहला तो राज्य और सरकार की संस्था और प्रक्रिया के विषय में है। उनका प्रादुर्भाव कैसे हुआ? ये किस प्रकार संगठित हैं? इनमें अधिकार एवं कार्य का वितरण कैसा है? किसके पास कितना अधिकार है? सत्ता का प्रयोग कौन किसके ऊपर करता है? और दूसरे प्रकार के प्रश्न लोकहित और भलाई के विषय में होते हैं जिसकी प्राप्ति के लिए राज्य और सरकार अन्ततोगत्वा सत्ता का प्रयोग करते हैं। सत्ता का प्रयोग किस प्रकार होना चाहिए? संस्थाओं का संगठन कैसा हो कि सत्ता के प्रयोग पर आवश्यक नियंत्रण रह पाये? किन नियंत्रणों की आवश्यकता है? कौन से कार्य लोकहित और भलाई के लिये हैं? इन ध्येयों की पूर्ति कैसे की जाए? पहले प्रकार के प्रश्न सत्ता के प्रयोग के विषय में हैं और दूसरे इस प्रयोग के ध्येय की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। पहले प्रकार का संबंध "राजनीति कैसी होनी चाहिये" इससे है। पहले प्रकार के प्रश्न "राजनीति के साधन" से संबंध रखते है और दूसरे " राजनीति के साध्य" को महत्व देते हैं।

राजनीति विज्ञान की प्रकृति ही ऐसी है कि वह किसी भी एक दृष्टिकोण को अपना कर दूसरे को अस्वीकार नहीं कर सकता। इसका संबंध दोनों ही प्रकार के प्रश्नों से है — इसका स्वरूप "क्या है" और "क्या होना चाहिये"। राजनीति ऐसे विषय से सम्बन्ध रखती है जिसे हर समाज के विभिन्न समूह या व्यक्ति कार्यान्वित करते हैं। इसका अध्ययन किसी स्थान या किसी समय विशेष में राजनीति की उपेक्षा नहीं कर सकता या उसके विश्लेषण से नहीं कतरा सकता। इस प्रक्रिया की वास्तविकता को समझने के लिये तथ्य-संग्रह और उनका विश्लेषण आवश्यक है। वास्तविक प्रक्रिया के इसी विश्लेषण के आधार पर व्यापक सामान्यीकरण किए जाते हैं। विश्लेषण की इसी पद्धति को आनुभविक दृष्टिकोण कहते हैं। तथ्यों पर आधारित ये विश्लेषण नये तथ्यों के संदर्भ में परीक्षण के लिये रखे जाते हैं और उसके उपरान्त व्यापक निष्कर्ष का प्रतिपादन होता है। इस पूरी प्रक्रिया से ऐसे आचरण या ऐसी संस्था को बिल्कुल अलग नहीं रखा जा सकता जो समाज (या व्यक्ति) के मानदण्ड के अनुसार है और उनकी अभिरुचि के अनुरूप है। लेकिन ये मानदण्ड या अभिरुचियां विभिन्न समाज या व्यक्ति के लिए अलग-अलग होती हैं। इनका अर्थ ऐसी मान्यता, आचरण, संस्था, या संकल्पना से है जिसको अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है। इस वरीयता के प्रश्न पर व्यक्तियों, विद्वानों और विभिन्न समाजों का सहमत होना आवश्यक नहीं — ये अलग-अलग हो सकते हैं। ऐसी अभिरुचि की कोई भी श्रृंखला मान्य हो सकती है या अस्वीकार की जा सकती है। इसको मानकीय दृष्टिकोण की संज्ञा दी जाती है। दोनों दृष्टिकोणों में यह भेद उपयोगी तो है लेकिन यह मानना होगा कि दोनों पूर्ण रूप से पृथक नहीं हैं और किसी एक पर बल देना या दूसरे पर, यह सापेक्ष है। मानकीय वक्तव्य यों ही नहीं दिये जाते हैं, आखिर इनका समर्थन कुछ तथ्यों या तर्कों के आधार पर किया जाता है। इसलिए अगर हम ऐसे किसी वक्तव्य पर प्रश्न चिन्ह लगाना चाहते हैं तो हमें विपक्ष में दूसरे तथ्य या तर्क प्रस्तुत करने पड़ेंगे।

राजनीति विज्ञान में दोनों ही दृष्टिकोण की उत्कृष्ट परंपराएं पाई जाती हैं। अरस्तू की पुस्तक "राजनीति" में जो राजनीतिक परिवर्तन एवं क्रांति की व्याख्या और "मिश्रित संविधान" की अवधारणा है, वह विभिन्न प्रकार के संविधानों के वर्णन और तुलना पर आधारित है। दूसरी तरफ, प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा, रूसो द्वारा प्रस्तुत समुदाय की अनुभूति का पुनः स्थापन का सुझाव और मानव की नैतिक एवं भावात्मक आवश्यकता, जरमी बेनथम के राजनीतिक कार्य पर आधारित प्रसन्नता — ये सभी मानकीय विचार के उदाहरण हैं। कार्ल मार्क्स का विशाल विश्लेषण, जो राजनैतिक और शास्त्रीय दोनों दृष्टि से प्रभावशाली रहा है, इन दोनों दृष्टिकोणों के संयोग का बहुत अच्छा उदाहरण है।

कभी-कभी राजनीति दर्शन और राजनीति विज्ञान में भेद इस आधार पर किया जाता है कि ये क्रमशः मानकीय और आनुभविक दृष्टिकोण के द्योतक हैं। लेकिन कुछ विद्वान मानकीय और विश्लेषणात्मक दर्शन में भी अंतर करते हैं। विश्लेषणात्मक प्रस्ताव सभी दार्शनिक विचारविमर्श का आवश्यक अंग है।

अभी कुछ समय से राजनीति विज्ञान के "विज्ञान" शब्द पर अधिक बल दिया जाने लगा है, जिसमें आनुभविक पक्ष

को मानकीय से अलग करने का प्रयास किया गया है। यह सुझाव बहुत उत्साह से दिया जाता है कि राजनीति के अध्ययन में अगर वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाये तो "राजनीति का विज्ञान" संभव है। यह एक सामान्य उक्ति के रूप में नहीं दिया जाता है : वैज्ञानिक पद्धति को एक विशेष और क्रमबद्ध पद्धति के रूप में समझा जाता है।

वैज्ञानिक पद्धति और राजनीति विज्ञान

आधुनिक युग विज्ञान और प्रोद्योगिकी को बहुत महत्व देता है। लेकिन ऐसे युग में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए ही राजनीतिशास्त्र एक विज्ञान होने का दावा नहीं करता। इस प्रणाली-विज्ञान को अपनाने से निश्चित फायदे हैं। विज्ञान का संबंध एक ज्ञान समुदाय और उसे प्राप्त करने के लिए एक सर्वसम्मत प्रणाली, दोनों से है। ज्ञान की विषय-वस्तु तो विषय के अनुसार विभिन्न होती हैं लेकिन वैज्ञानिक पद्धति के स्वरूप के बारे में अब एक आम सहमति है। एक वैज्ञानिक ज्ञान का सर्जन किस प्रकार करे कि उस काम को वैज्ञानिक मान्यता मिले? ज्ञान के सृजन और प्रजनन की प्रक्रिया को प्रणाली (Method) की संज्ञा दी जाती है।

वैज्ञानिक कार्य की मूल मान्यता यह रही है कि संसार में कोई भी घटना यों ही नहीं घट जाती, वरन् उनका एक सुसंगत समुच्चय है। उनमें कार्यकारण संबंध होता है, जिसकी पुनरावृत्ति होती है। विज्ञान का कार्य पुनरावृत्ति की रचना को स्थापित करना और कार्यकारण संबंध का पता करना है। इस प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक तथ्यों का अनुभव करे। घटनाओं का अवलोकन और उनका परीक्षण आवश्यक है। तथ्यों को तभी प्रमाणिक ठहराया जा सकता है जब वे आनुभविक हों। अवलोकन की प्रक्रिया में वैज्ञानिक के लिये उचित है कि वह अपने पूर्वाग्रह को उससे अलग रक्खे। उसके लिए विषयपरक होना आवश्यक है। वस्तुओं का वास्तविक वर्णन होना चाहिए। विज्ञान के आनुभविक आधार का ही विषय यहाँ फिर आता है। इस तरह की व्याख्या के आधार पर वैज्ञानिक इस बात की भविष्यवाणी भी कर सकता है कि भविष्य में तथ्य आपस में किस प्रकार संबद्ध होंगे। ऐसी भविष्यवाणी का आधार भी आनुभविक है। अध्ययन की यह पद्धति कभी भी यह दावा नहीं करती कि वैज्ञानिक निष्कर्ष सत्य को उद्घाटित करता है। निष्कर्ष ज्यादा से ज्यादा प्राक्कथन के रूप में होता है, जिसके परीक्षण सतत् नए तथ्यों के परिपेक्ष्य में होते रहते हैं। आज जो निष्कर्ष संस्थापित हो चुका है, उसमें बाद में नये तथ्य और व्याख्या के प्रकाश में संशोधन हो सकता है। इसका सबसे अच्छा दृष्टांत है गैलेलियो, न्यूटन, और आइन्सटाईन द्वारा किए गए ब्रह्माण्ड की परिकल्पना। वैज्ञानिक पद्धति किसी भी निर्णय को अप्रतिबद्ध ज्ञान के रूप में नहीं मानती।

विज्ञान की उपधारणाएं जो पहले बताई गई हैं, उनका उपयोग प्रकृति विज्ञान में अधिक अंश में होता है। सामाजिक तथ्यों के लिए इनका उपयोग किस हद तक किया जा सकता है, इस प्रश्न पर समाज वैज्ञानिकों में मतभेद है। एक मत यह है कि समाज विज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग न तो संभव है, न ही उचित। कुछ विद्वानों का समाज विज्ञान के मानवीय प्रकृति के बारे में दृढ़ विचार है और वे मानव समाज का विश्लेषण वस्तुपरक (निष्पक्ष) दृष्टि से नहीं, लेकिन सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से करने का विचार देते हैं। कुछ दूसरे विद्वानों के मत में विज्ञान के उपरोक्त पूर्वधारणा समाज विज्ञान के लिए उपयुक्त नहीं है। कार्यकारण संबंध की प्रकृति के बारे में भी विवाद है, जिसका आरम्भ प्रसिद्ध दार्शनिक डेविड ह्यूम ने किया था। आनुभविक तथ्यों पर जो बल दिया गया है, उसके विषय में भी कठिनाइयाँ बताई जाती हैं, क्योंकि कुछ विद्वान सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र को सिर्फ अवलोकन योग्य तथ्यों तक ही सीमित नहीं करना चाहते। कुछ ऐसे तथ्य हो सकते हैं जिनका अवलोकन उपलब्ध साधनों से संभव नहीं है। वैज्ञानिक की वस्तुपरकता के बारे में भी विवाद है। यह कहा जाता है कि जब अध्ययन करने वाले (समाज वैज्ञानिक) और अध्ययन के विषय वस्तु (मानव समाज में व्यक्ति) दोनों ही मानव समाज के अंग हैं, तो विषयपरकता कहाँ तक सम्भव है?

अब राजनीति विज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग पर विचार करें। यह कहा जाता है कि राजनीति तथ्य अत्यंत जटिल होते हैं और इसकी रचना या नियमितता का पता करना कठिन है। यहाँ जटिलता का अर्थ यह है कि राजनीतिक प्रक्रिया के बहुत से कारक होते हैं और बहुत सी शक्तियाँ इस पर अपना असर डालती हैं। जटिलता की वजह से जो कठिनाई बताई जाती है वह किसी तर्क पर आधारित नहीं है। यह प्रधानतः एक आनुभविक प्रश्न है जिसका अर्थ यह है कि राजनीति के अध्ययन में बहुत सारे तथ्यों को ध्यान में रखना पड़ता है।

जटिलता का प्रश्न इस संदर्भ में संगत है कि राजनीति विज्ञान में विविध महत्त्वपूर्ण कारकों को ध्यान में रखकर ही इसका व्यापक विश्लेषण हो सकता है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो आसानी से माना जा सकता है। वस्तुत: आधुनिक शोध प्रणाली गणित और सांख्यिकी जैसी प्रणालियों का व्यापक उपयोग करती है। इस तरह के शोध में कम्प्यूटर जैसे अति आधुनिक साधन भी व्यवहार में आते हैं। इन सभी कारणों से एक शोधकर्ता के लिए राजनीति तथ्य की जटिलता पर अधिकार अधिक संभव हो गया है। दूसरी कठिनाई यह बताई जाती है कि मानव मात्र का अध्ययन कठिन है क्योंकि मनुष्य किसी निर्धारित रूप में व्यवहार नहीं करता। मनुष्य के व्यवहार के विषय में भविष्यवाणी बहुत कठिन है। यह कहा जाता है कि मानव व्यवहार पर विविध तथ्यों का असर होता है, लेकिन कोई भी निर्णय लेने के वास्तविक समय में उनकी इच्छा स्वतंत्रता महत्त्वपूर्ण होती है। इसलिए मानव व्यवहार के विषय में कार्यकरण संबंध स्थापित करना आसान नहीं है। यहाँ इच्छा की स्वतंत्रता का तर्क कुछ अतिशयोक्ति मालूम पड़ता है। इसमें दो मत नहीं कि मनुष्य का व्यवहार कभी-कभी ऐसा होता है, जिसके बारे में भविष्यवाणी कठिन है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि ये कार्य ऐसे हैं जिनपर किन्हीं तथ्यों और शक्तियों का असर ही नहीं होता। अकारण कार्य अनिश्चित तो होता ही है। लेकिन अनिश्चित व्यवहार के भी कुछ अत्यन्त व्यक्तिगत कारण हो सकते हैं। मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषक यह मानते हैं कि मानव के स्पष्टतः अनिश्चित व्यवहार का भी कारण होता है। जान हास्पर्स का कहना है कि "स्वतंत्रता बाध्यता की विपरीत है, कार्यकारण संबंध का नहीं"। आवश्यकता इस बात की है कि राजनीति अध्ययन को दूसरे मानव विज्ञानों की सूक्ष्मदृष्टि की सहायता से व्यापक बनाया जाए। उद्देश्य तो यह है कि मानव समाज और व्यवहार के अध्ययन को सम्पूर्ण बनाया जाए। तीसरी कठिनता, जिसका जिक्र अक्सर होता है, वह यह सुझाव है कि वैज्ञानिक अध्ययन मूल्य मुक्त होना चाहिए। राजनीति विज्ञान लोक नीति के प्रश्नों पर विचार करता है और इसलिए यह सम्भव नहीं कि उद्देश्य और साधन जैसे विषयों को छोड़ दिया जाए। वैज्ञानिक पद्धति साधन की चर्चा तो सहन करती है, लेकिन साध्य की बात होते ही मान्यता (मूल्य) का प्रश्न सामने आता है। ये मूल्य कई प्रकार के हो सकते हैं : व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, सैद्धांतिक आदि। इस विषय में कई दृष्टिकोण हैं। दरअसल, वैज्ञानिक पद्धति की मदद से तथ्य और मूल्य को अलग करना आसान है। जब वैज्ञानिक पद्धति में मूल्य-मुक्त अध्ययन की बात की जाती है, तो इसी भेद की ओर ही इशारा होता है। कठिनाई तो उस वक्त होती है जब तथ्य और मूल्य जानबूझ कर या अनजाने में, मिल-जुल जाते हैं। एक स्पष्ट मूल्य के स्वरूप के अंतर्गत एक वैज्ञानिक अध्ययन संभव है। यह भी कहा जाता है कि राजनीतिक अन्वेषण इतना सूक्ष्म और शुद्ध हो ही नहीं सकता जिसके आधार पर घटनाओं की भविष्यवाणी की जा सके। दूसरे सामाजिक विज्ञान के साथ राजनीति विज्ञान भी वर्णन तो बखूबी कर सकता है, लेकिन भविष्यवाणी के प्रसंग में यह विषय कुछ कमजोर है।

राजनीति विज्ञान में वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग में जो कठिनाई बताई गई है उनमें से कुछ संगत है। लेकिन क्रमबद्ध पद्धति की चेतना से राजनीति विज्ञान निश्चय ही समृद्ध हुआ है। यह तो स्पष्ट है कि राजनीति विज्ञान उस अर्थ में विज्ञान नहीं है जिसमें प्रकृति विज्ञान और जो विद्वान वैज्ञानिक पद्धति के वास्तविक लाभ की चर्चा करते हैं उनका यह प्रस्ताव भी नहीं है। वैज्ञानिक पद्धति के विषय में चेतना का अर्थ ही यही है कि इस बात का पूरा ज्ञान हो कि स्थानों पर इनका उपयोग हो सकता है और कहाँ वैकल्पिक पद्धति अधिक उपयोगी होंगी। किसी भी अध्ययन के लिये शोध का विवेकपूर्ण चुनाव वैज्ञानिक प्राणाली का एक हिस्सा है।

राजनीतिशास्त्र और अन्य मानव एवं सामाजिक विज्ञानों का संबंध

राजनीति विज्ञान राज्य और सरकार जैसे अधिशासन की संस्थाओं और प्रक्रियाओं का अध्ययन है। इस अध्ययन में अन्य प्रक्रियाएं भी शामिल की जाती हैं, जैसे संघर्ष, सहकारिता, एकीकरण और समाज में सत्ता मूलक संबंधों का पारस्परिक प्रभाव। आधुनिक समय में राजनीति विज्ञान की यह परिभाषा अधिक व्यापक मानी जाती है। इस विषय की व्यापक व्याख्या राजनीति को कुछ संस्थाओं के विश्लेषण तक सीमित नहीं रखना चाहती। वस्तुतः समाज के सभी क्रियाकलापों का एक क्षेत्र ऐसा होता है जिसका संबंध विरोध और सत्ता के लिए संघर्ष से होता है। इस तरह "धर्म की राजनीति", "क्लब की राजनीति", "खेलकूद की राजनीति", "पारिवारिक राजनीति" खासकर संयुक्तपरिवार

में, ऐसे शब्द सुनने में आते हैं। अरस्तु ने जब राजनीति को "सर्वव्यापी विज्ञान" की संज्ञा दी, तब उसका अर्थ सिर्फ राजनीतिक अधिशासन के व्यापक फैलाव से नही था। उसका इशारा इसके सर्वव्यापी स्वरूप की ओर भी था। सामाजिक अध्ययन का केंन्द्रबिंदु कुछ भी हो, राजनीति का अध्ययन उसका एक आवश्यक अंग है। अन्य सामाजिक विज्ञानों की सूक्ष्मदृष्टि के उपयोग से राजनीति विज्ञान लाभान्वित होता है। इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, और नीतिशास्त्र जैसे विषयों का राजनीति विज्ञान से निकट का संबंध है।

इतिहास से संबंध : इतिहास का क्षेत्र राजनीति विज्ञान से अधिक विस्तृत है, क्योंकि इसमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, और राजनैतिक, सभी प्रकार की घटनाएं सम्मिलित की जाती हैं। इतिहास का संबंध "अतीत के अध्ययन" से भी है। इतिहासकार समसामयिक समस्याओं का भी अध्ययन करते हैं, लेकिन उनकी व्याख्या में कारणों को अतीत में हुई घटनाओं में ढूँढा जाता है। ऐतिहासिक अध्ययन में घटनाओं का वर्णन कुशलता से किया जाता है। जिसके लिए विश्लेषण के अपने खास तरीकों का प्रयोग होता है। विश्लेषण के बगैर कोई भी वर्णन सभंव नही। विश्लेषण और वर्णन का भेद उनकी मात्रा के आधार पर होता है। राजनीति वैज्ञानिक, ऐतिहासिक विश्लेषण से ही उन सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का सिंहावलोकन करते हैं जिसमें कुछ खास संस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ। कोई भी ऐसी संस्थाओं के विकास का पूर्ण अवलोकन तभी हो सकता है जब उनका अध्ययन कुछ लम्बे समय तक किया जाए। इतिहासकार हमें उन विभिन्न स्थितियों के बारे में बताते हैं जिनमे कुछ खास "वस्तु", "घटना", "परस्पर संबंध", और संस्था उभर कर आए। उनके असर का भी विश्लेषण किया जाता है। इतिहास प्रयोगशाला जैसे स्थितियों से भरा पड़ा है जिससे हमें सामाजिक संबंध के कार्यकारण भाव का पता चलता है। किसी विद्वान ने कहा है, "इतिहास की संभावनाओं और संभावना के इतिहास का अध्ययन ही राजनीति की विषय वस्तु है।"

अर्थशास्त्र से संबंध : सामान्य रूप से अर्थशास्त्र का संबंध समाज में धन के उत्पादन और वितरण से है। व्यक्ति और समाज दोनों के लिए भौतिक साधन आवश्यक होते हैं। आर्थिक संबंध और संस्थाएं राजनीतिक प्रक्रिया पर अपना प्रत्यक्ष असर डालती हैं। मार्क्सवादी सिद्धांत राज्य और सरकार के संगठन के लिए आर्थिक कारणों को महत्वपूर्ण समझता है। उनकी दलील विश्वादोत्पादक है। राजनीतिक संस्थाएं आर्थिक कारणों को ही प्रतिबिंबित करते हैं। आर्थिक पक्ष राजनीतिक संगठन का एक मूल कार्य इसलिए भी होता है कि आर्थिक विकास सामाजिक कल्याण के लिये आवश्यक है। समाज के संचालन के लिए जिम्मेदार किसी भी संस्था के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि आर्थिक गतिविधियों की ओर खास ध्यान दे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं आधुनिक सरकार, चाहे वह समाजवादी हो या पूंजीवादी, आर्थिक योजना को अपना एक बुनियादी कर्तव्य मानती है। आर्थिक क्रियाकलाप इतने महत्वपूर्ण हैं कि किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के लिए उनकी उपेक्षा संभव नहीं। दरअसल में सरकार अर्थव्यवस्था पर उतना नियंत्रण चाहती है जितना संभव हो। इन सब कारणों से एक राजनीति वैज्ञानिक समाज में आर्थिक शक्तियों के पारस्परिक क्षेत्र के बाहर नहीं छोड़ सकता। एक अर्थशास्त्री के लिए भी राजनीति की प्रकृति और व्यवस्था को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। अर्थव्यवस्था संबंधी बहुत से निर्णय वास्तव में राजनीतिक निर्णय होते हैं। अर्थशास्त्रियों के विश्लेषण की प्रक्रिया के लिए सूक्ष्म शब्दावली और अधिक परिशुद्ध मानदण्ड उपलब्ध हैं। इस विषय के विकास से यह संभव हो सका है कि इसके निष्कर्ष और सुझाव कार्य रूप में परिणत किए जाएँ और इनके मुख्य आशय का प्रभाव सरकार के लोक निर्णय की प्रक्रिया पर हो।

समाजशास्त्र से संबंध: समाज के विभिन्न स्तरों के क्रियाकलाप समाजशास्त्र के विषय वस्तु हैं। संस्थाओं के पारस्परिक संबंध का अध्ययन किया जाता है और ये संबंध विभिन्न प्रकार के समाज में किस प्रकार के हैं, इनका अध्ययन भी किया जाता है। समाजशास्त्री समाज के आंतरिक संगठन का अध्ययन करते है। विभिन्न समाजों में ये संगठन किस प्रकार के हैं, इसकी तुलना भी की जाती है। संस्थाओं का अध्ययन इस दृष्टि से किया जाता है कि वे क्या कार्य करते हैं और कौन से कार्य उन्हें करने चाहिए। कार्यों को फिर विभिन्न प्रकार के सामाजिक संबंधों में बाँट कर देखा जाता है। उदाहरण के लिए, परिवार विभिन्न प्रकार के संबंध को मिलाकर बनता है, जैसे, पुरुष-स्त्री, माता-पिता और बच्चे, भाई-बहन, दादा-दादी, नाती-पोते के संबंध,आदि। कुछ समाजशास्त्री इन संबंधों को व्यक्ति के विभिन्न कार्यों में बांटते हैं। इन सभी स्तरों के

अध्ययन में समूह, संस्था और व्यक्ति के प्रभुत्व-संरचना का मुख्य स्थान रहता है। राज्य और सरकार समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और कोई भी सामाजिक अध्ययन इनका अनादर नहीं कर सकता। सामाजिक विश्लेषण राजनीतिक संस्थाओं के कार्य को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रस्तुत करता है। राजनीतिक समाजशास्त्र (पोलिटिकल सोशियोलोजी) का एक विषय के रूप में सामने आना इन दोनों विषयों के घनिष्ठ संबंध का प्रमाण है। राजनीति विज्ञान में सत्ता मूलक संबंध और राजनीति व्यवहार पर जो बल दिया जाने लगा है उससे ये दोनों विषय और नजदीक आए हैं।

नीतिशास्त्र से संबंध: नीतिशास्त्र मुख्यतः व्यक्ति के लिए अच्छे जीवन की प्राप्ति से संबंध रखता है। इसका औचित्य नैतिकता के आधार पर आंका जाता है और फिर यह निर्धारित किया जाता है कि किन लक्ष्यों की कामना की जाए और उनकी प्राप्ति के लिए किन साधनों का प्रयोग किया जाए। मानव को जीवन में "परम हित" की प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए ? इन सब विचारों में व्यक्ति मुख्यतः निजी जीवन को ध्यान में रखता है। दूसरी तरफ राजनीति का संबंध सामूहिक हित से है। *इसी संदर्भ में जॉन स्टुअर्ट मिल और दूसरे उपयोगितावादी* "सबसे बड़े समूह का सर्वाधिक हित" को राजनीति का लक्ष्य मानते हैं। कल्याणकारी समाज की सृष्टि के लिए किन संस्थाओं को बनाया जाए, उनका संगठन किस प्रकार का हो, और उन्हें क्रियान्वित कैसे किया जाए ? इन्हीं संदर्भों में नीति-शास्त्र और राजनीति विज्ञान में पारस्परिक संबंध होता है। अंत में राजनीतिक संगठन को इसी कसौटी पर आँका जाता है वह व्यक्ति के लिए एक अच्छे जीवन को किस हद तक सुनिश्चित करता है।

राजनीतिक व्यवस्था अच्छे जीवन की सामान्य स्थिति लोगों को उपलब्ध करके इस दिशा में काम करती है। कुछ चीजें अकेले व्यक्ति की पहुँच के बाहर होती हैं। इनके लिए संगठित समाज पर निर्भर होना पड़ता है। युद्ध, दासता, गरीबी एवं अस्वास्थ्यकारी परिस्थितियों से बचना, सुरक्षा, शिक्षा के अवसर, स्वतंत्रता, एवं अवकाश के अवसर, उपलब्ध कराना, ये ऐसी सुविधाओं के कुछ उदाहरण हैं जिनके लिए व्यक्ति को संगठित समाज पर निर्भर होना पड़ता है। राज्य का लक्ष्य यह होता है कि ये सुविधाएँ सभी को उपलब्ध हों। लेकिन समाज में कुछ ऐसे वर्ग होते हैं जिनके लिए इन सुख-सुविधाओं के वितरण में पक्षपात होता है। प्रायः सभी समाजों में थोड़ी बहुत असमानता पाई जाती है। इस सामान्य स्थिति का विश्लेषण भिन्न सिद्धांतों और विचारधाराओं ने किया है और समाधान भी सुझाए जाते हैं। लेकिन असमानता किसी न किसी अनुपात में बनी रहती है। राजनीतिक प्रक्रिया सतत् एक से अधिक हित को ध्यान में रखती है, लेकिन कभी सब को सम्मिलित नहीं कर पाती। रस्किन ने इस प्रसंग में "अंत की ओर" (Unto the Last) की बात की थी। गाँधीवादी और सर्वोदय नेताओं द्वारा समर्थित "अंत्योदय" इसी लक्ष्य की ओर ध्यान आकर्षित करता है----बिना किसी अपवाद के समाज के सभी वर्गों तक पहुँचना। इस विचारधारा में "गरीबों में भी सबसे गरीब" के हित पर बल दिया जाता है।

प्राकृतिक अधिकार के सिद्धांत को राजनीति शास्त्र में इतना महत्वपूर्ण इसलिए माना गया है कि ये अच्छे जीवन की प्राप्ति के लिए आवश्यक स्थितियों की कल्पना करते हैं। लोगों के लिए प्राकृतिक अधिकार इसीलिए आवश्यक हैं कि उनकी आवश्यकताएं भी "प्राकृतिक" हैं। यह तर्क, यह सुझाव देता है कि जो एक व्यक्ति के लिए हितकारी है, वह सब के लिए हितकारी है। राज्यतंत्र से यह अपेक्षा की जाती है कि ऐसे अधिकारों की गारंटी वह लोगों को प्रदान करेगा। राज्यतंत्र का सही मापदण्ड अक्सर यह होता है कि कितने लोग वस्तुतः अधिकारों का उपभोग करते हैं। समाज में संगठित सत्ता के भंडार की हैसियत से, राज्यतंत्र इस लक्ष्य की प्राप्ति नकारात्मक और संकारात्मक दोनों तरीकों से करता है। एक तरफ तो वह लोगों को औरों के अधिकारों के अतिक्रमण से रोकता है, और साथ ही सामान्य हित के क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करता है, जिन्हें व्यक्ति अपने-आप उपलब्ध नहीं कर सकता। इस तरह व्यक्ति के लिए अच्छे जीवन से संबंधित नैतिक मान्यता ही अंततः राजनीतिक व्यवस्था के कार्यों का पथ प्रदर्शन करती है। सरकार द्वारा बताए गए कानून आखिर इन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये होते हैं। जब नागरिक राजनीतिक व्यवस्था के कार्य को लोकहित की दृष्टि से स्वीकार करते हैं, तो वे स्वेच्छा से उन्हें मानने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। यह वैधता की प्रक्रिया में सहायक होता है।

व्यक्ति और राजनीतिक व्यवस्था, दोनों अपने कार्य में नैतिक मापदण्ड के अनुसरण में अपने को सीमित पाते हैं। हर समय कुछ ऐसी शक्तियां होती हैं जो व्यक्ति और राज्यतंत्र की शक्ति से बाहर होती हैं और यही उनके कार्यों को सीमित

करती हैं। साधन की कमी एक ऐसी स्थिति है जो कार्यों को निश्चित रूप से सीमित करती है। व्यवहार्य और अव्यवहार्य आदर्श में फर्क करना आवश्यक है। राजनीति संभावनाओं की कला है। नीतिशास्त्र इसके मानक स्थापित करता है कि क्या अच्छा है और क्या नहीं।

समाज शास्त्रीय परिपेक्ष्य : इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र और राजनीतिशास्त्र जैसे विभिन्न विषय आखिर मानव समाज का ही अध्ययन करते हैं और एक दूसरे से संबंधित हैं। सामाजिक तथ्य और समस्याओं के स्तर पर ये भेद नहीं रह जाता और वहां सभी अंतर्दृष्टियों का मिश्रण दिखाई देता है। वास्तविक विश्लेषण के संदर्भ में ये भेद अक्सर कृत्रिम प्रतीत होते हैं। समाज विज्ञान के अंतर्गत समस्त मानवीय समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। सुविधा के लिए विद्वानों ने इनके अध्ययन को विभिन्न शाखाओं जैसे राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र में बाँट रखा है। नीति निर्माण की प्रक्रिया में सरकार को समाज के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखना पड़ता है। ऐसा अनुभव किया जाने लगा है कि जो अध्ययन विभिन्न विषयों के परिपेक्ष्य को मिलाकर चलता है, वह सामाजिक वास्तविकता के अधिक नजदीक पहुँच पाता है। अध्ययन क्षेत्रों का सतत इस प्रकार विस्तार हो रहा कि ये विभिन्न विषयों की सीमा रेखाओं का अतिक्रमण कर लेते हैं। ऐसे कुछ नए विषय हैं, सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, राजनीतिक अर्थनीति और राजनीतिक समाजशास्त्र। आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से विभिन्न विषयों के इस कथोपकथन की प्रक्रिया को सहायता मिली है। सामाजिक विज्ञान ने एक सामूहिक भाषा प्राप्त की है।

राजनीति विज्ञान के अध्ययन का महत्व

राजनीति विज्ञान जिन विषयों के अध्ययन से संबंध रखता है वह सामान्य भी हैं और विशिष्ट भी। इसका सम्बन्ध संघर्ष और एकीकरण, सत्ता-संगठन और उसके पारस्परिक प्रभाव से है और इस तरह यह सर्वव्यापी है। समाज, समूह और व्यक्ति के क्रियाकलापों में भी यह प्रक्रिया लक्षित होती है। अपने विशिष्ट अर्थ में, यह राज्य और सरकार का अध्ययन करता है, जिसका समाज पर सीधा नियंत्रण और असर होता है। सरकारी संगठन समाज के दूसरे संगठनों से इस अर्थ में भिन्न है कि आधुनिक वैधानिक समाज में कोई भी व्यक्ति राज्य के क्षेत्र से बाहर नहीं है। राज्य कानूनों का प्रभावशाली नियंत्रण सभी के ऊपर रहता है। इस तरह यह एक अनिवार्य संगठन है, न कि ऐच्छिक। इन जटिल पहलुओं का विश्लेषण समाज के मूल प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालता है।

सरकार में निर्णय लेने की प्रक्रिया निश्चय ही बहुत जटिल होती है। ऐसे सामाजिक और राजनीतिक समूह होते हैं जिनकी अपनी माँगें होती हैं। बहुत सी मांगें परस्पर विरोधी होती हैं। उनमें समन्वय करना पड़ता है। फिर, विभिन्न प्रकार के प्रतिबंधों को ध्यान में रखना पड़ता है, जैसे साधनों का। एक राजनीतिक व्यवस्था विभिन्न प्रकार के दबावों और अनिवार्यताओं के बीच काम करती है। इसका परिणाम यह होता है कि कुछ निर्णय ऐसे होते हैं जो संभव नहीं हैं और कुछ अन्य निर्णय ऐसे हो सकते हैं जो उपयुक्त नहीं हैं। राजनीतिक प्रक्रिया का ज्ञान सरकार की प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने में मदद करता है। इससे राजनीतिक व्यवस्था का संतुलित मूल्यांकन संभव हो पाता है।

राजनीति विज्ञान सरकारी संस्था और प्रक्रिया का अध्ययन भी करता है। इसका संबंध संविधान और सरकारी संस्थाओं की शक्ति और कार्य से भी है। उनकी भूमिका, महत्व और कार्य का विश्लेषण होता है। यह हमें कानून और कानून बनाने की प्रक्रिया के बारे में बताता है। सरकार और नागरिक, दोनों के अधिकारों और कर्तव्यों की विवेचना को महत्वपूर्ण माना जाता है। इन विषयों की जानकारी के फलस्वरूप नागरिकों की



सुकरात (लगभग 470-399 ई॰ पूर्व॰)

प्रख्यात यूनानी दार्शनिक। पाश्चात्य दर्शन और विचारों की नींव डाली। प्लेटो का गुरू। प्लेटो द्वारा लिखित "सोक्रेटिक डॉयलाग"।

राज्य के क्रियाकलाप में सार्थक भागीदारी हो पाती है। सरकार के कार्य का वास्तविक ज्ञान, उन समूहों के बारे में जानकारी जो असरदार हैं, उनके अधिकार और विशेषाधिकार, इन जानकारियों के आधार पर नागरिक अपनी भागीदारी को अधिक प्रभावकारी बना सकते हैं।

राजनीतिक विज्ञान को एक सामाजिक विज्ञान के रूप में' मान्यता प्राप्त है। यह विषय बौद्धिक इतिहास के प्रसिद्ध लेखकों और दार्शनिकों के काम से संबंध रखता है, जैसे प्लेटो, अरस्तु, सुकरात, कौटिल्य, मेकियावेली, रूसो, मार्क्स और महात्मा गांधी। प्रभावोत्पादक और महत्वपूर्ण ज्ञान भंडार पर इसका दावा तर्कसंगत है। सदियों के विकास के इस विषय में नई संकल्पनाएं, सिद्धांत और पद्धति जुड़े हैं। राजनीति शास्त्र का अध्ययन विद्यार्थियों को इस शास्त्र के अनुशासन का प्रशिक्षण देता है।

एक "राजनीतिज्ञ" और "राजनीति वैज्ञानिक" में क्या अन्तर है?

अभ्यास

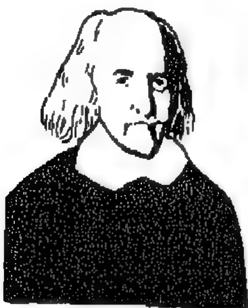
1. राजनीति विज्ञान के अर्थ और क्षेत्र का वर्णन कीजिए। राजनीति विज्ञान के अध्ययन का महत्त्व बताइए।
2. राजनीति विज्ञान के अध्ययन में वैज्ञानिकपद्धति का क्या प्रयोग है? इसके उपयोग में क्या कठिनाइयां हैं?
3. "राजनीति विज्ञान" और "राजनीति" में क्या अन्तर है।
4. राजनीति विज्ञान को "सर्वव्यापी विज्ञान" किसने और क्यों कहा है?
5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो के साथ राजनीति विज्ञान के समबन्ध बताइए :
   (क) इतिहास
   (ख) अर्थशास्त्र
   (ग) समाज शास्त्र
   (घ) नैतिक शास्त्र

अध्याय 2

राज्य, समाज और नागरिक

राज्य सामाजिक संगठन की उस अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें सामाजिक व्यवस्था और स्थायित्व आ गया हो। यदि प्रभुत्व की एक सर्वमान्य व्यवस्था को मान लिया जाए तो प्रतिदिन के अनिवार्य संघर्ष की स्थिति से ऊपर उठ कर, व्यक्ति और समूह की उच्च आवश्कताओं की ओर ध्यान देना आसान हो जाता है। सामाजिक अनुबंध सिद्धांत इस दृष्टिकोण का एक अच्छा उदाहरण है।

राज्य की उत्पत्ति कैसे हुई? सामाजिक समझौते के सिद्धांत के अनुसार लोगों ने स्वेच्छा से राज्य का संगठन किया। आपस के इसी समझौते को सामाजिक अनुबंध कहा गया। इस सिद्धांत के प्रतिपादक हैं, टामस हॉब्स, जॉन लॉक और रूसो। ये लेखक



थॉमस हॉब्स *(1588-1679 ईसवी)*

प्रख्यात अंग्रेज दार्शनिक। ब्रिटिश सम्राट चार्ल्स द्वितीय का शिक्षक। राज्य के सामाजिक समझौता सिद्धान्त के तीन प्रवर्तकों में से एक। प्रसिद्ध पुस्तक : "लेवायथन" *(Leviathan).*

इस पर सहमत हैं कि राज्य का प्रादुर्भाव अनुबंध के फलस्वरूप ही हुआ। प्राकृतिक अवस्था जो राज्य द्वारा प्रति स्थापित की गई, उसके विश्लेषण में इनके विचार भिन्न हैं। हॉब्स के अनुसार राज्य से पहले का बहुत समाज अस्थायी था और उसमें लोग स्वार्थी थे और आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे। सामाजिक अनुबंध ने इस स्थिति का अंत किया। लॉक ने जिस प्राकृतिक अवस्था को चित्रित किया वह इतनी असहनीय नहीं थी। उन्होंने उस अवस्था को आनन्ददायक बताया। न्याय को सुनिश्चित करने के लिए कानून व्यवस्था को लागू किया गया और राज्य उसके लिए उत्तरदायी हुआ। रूसो की दृष्टि में प्राकृतिक अवस्था में जीवन "स्वतंत्र, स्वस्थ, ईमानदार और खुशहाल" था। अनुबंध ने राजनीतिक समाज स्थापित किया, जिसके अंतर्गत राज्य लोगों की सामान्य इच्छा (General Will) का प्रतिनिधि है। इस विश्लेषण के आधार पर तीनों दार्शनिक इस बात पर एकमत थे कि राज्य और सरकार का प्रादुर्भाव समाज के स्वैच्छिक निर्णय के बाद ही हुआ। राज्य का क्षेत्र और कार्य नागरिकों के मान्य अनुबंध पर आधारित हुआ। यह आवश्यक नहीं कि सामाजिक अनुबंध को हम सही ऐतिहासिक घटना मान लें। यह तो राज्य की प्रकृति के बारे में एक प्रतीकात्मक दृष्टिकोण है। सत्ता के आधार पर समाज को नियंत्रित करने का अधिकार राज्य के पास होता है। फिर राज्य ऐसा कार्य कैसे कर सकता है जो समाज के लिए हितकर नहीं है? राज्य की मार्क्सवादी व्याख्या में अर्थ पर आधारित वर्गों तथा उनके आपसी संबंधों को प्रमुखता दी गई है। मार्क्सवादी और अन्य समाजवादी चिंतकों ने राज्यहीन समाज की संकल्पना तो की

है, लेकिन इसको अभी तक यथार्थ रूप नहीं दिया जा सका है। विभिन्न सिद्धांत और विचारधाराएँ राज्य को एक महत्वपूर्ण संस्था मानते हैं।

राज्य का स्वरूप

काफी समय से राज्य ही राजनीति विज्ञान के विश्लेषण का केंद्र बिंदु रहा है। फ्रैन्क गुडनाउ, हेराल्ड जे. लास्की, और जे डब्ल्यू. गारनर जैसे पहले के लेखक राजनीतिक विज्ञान की परिभाषा राज्य के अध्ययन के रूप में देते थे। गारनर के अनुसार "राज्य ही राजनीति विज्ञान की शुरुआत और अंत है।" अध्ययन का विषय क्षेत्र अब राज्य से हटकर व्यापक सामाजिक प्रक्रिया को महत्त्व देने लगा है क्योंकि राज्य के स्वरूप में बदलाव आया है।

राज्य की एक मान्य व्याख्या उसके चार तत्वों की चर्चा करती है — भूभाग, जनसंख्या, संप्रभुता और सरकार। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सात तत्व बताये गये हैं: स्वामी, आमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड और मित्र। इनमें से जनपद का अर्थ जनसंख्या और भूभाग दोनों से है। आमात्य राज्य की व्यवस्था के अधिकारी वर्ग हैं और दण्ड का अर्थ है बल द्वारा सत्ता का उपयोग। इनमें संप्रभुता राज्य का मुख्य लक्षण है: बाकी तीन (भूभाग, जनसंख्या और सरकार) पर बल इसलिए दिया जाता है कि संप्रभुता का प्रयोग प्रभावकारी हो। संप्रभुता की परिभाषा है, निर्विवाद, विधि सम्मत अधिकार। सत्ता और अधिकार ऐसे लोगों के संबंधों की चर्चा करता है जो सत्ता का उपयोग करते हैं और जिनके ऊपर इसका उपयोग किया जाता है, जो आदेश देते हैं और जो उनका अनुसरण करते हैं। सत्ता का अस्तित्व अपने आप में नहीं होता, इसका उपयोग किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के संदर्भ में ही होता है। इसी प्रकार संप्रभुता की विधि-संगत परिभाषा किसी संदर्भ में ही होगी। भूभाग और जनसंख्या ऐसे ही संदर्भ हैं। राज्य किसी जनसंख्या और भूभाग पर ही अपनी संप्रभुता का प्रयोग करता है। संप्रभुता की यह परिभाषा इसे सुनिश्चित करती है। सरकार राज्य का एक अंग है जिसके माध्यम से प्रभुसत्ता का उपभोग होता है।

भूभाग का निर्धारण और उस पर नियंत्रण राज्य के लिए आवश्यक है। सीमा की रक्षा भी उतनी ही आवश्यक है जितना उसका निर्धारण। विवादास्पद भूभाग पर परस्पर दावों से राज्यों में अक्सर लड़ाइयाँ हो जाती हैं। निर्धारित भूभाग में स्थित जनसंख्या राज्य का दूसरा तत्व है। राज्य को निर्जन भूभाग पर भी अपना अधिकार रखना पड़ता है, लेकिन किसी भी राज्य का संपूर्ण भूभाग बिना जनसंख्या के नहीं हो सकता। राज्य का भूभाग और उसकी जनसंख्या का आकार एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। एक प्रभावशाली राज्य का अभीष्ट आकार क्या होना चाहिए? प्लेटो, अरस्तू और रुसो जैसे लेखकों ने इस प्रश्न पर अपने विचार दिए हैं। लेकिन अन्य सुझावों की तरह यह भी समसामयिक स्थिति और समस्याओं को ध्यान में रखकर ही दिये गये हैं। वस्तुतः संयुक्त राष्ट्रसंघ के 159 सदस्य राज्यों में हम व्यापक विविधता पाते हैं। मालद्वीप संयुक्त राष्ट्र का सबसे छोटा राज्य है, जिसका क्षेत्र 298 वर्ग किलोमीटर है। अन्य राज्यों में वेटीकन नगर हौर मोनेको हैं, जिनका क्षेत्र 0.44 और 1.5 किलोमीटर और जनसंख्या क्रमशः 1000 और 26000 है। दूसरे सिरे पर, सोवियत संघ का क्षेत्रफल 22,402,200 वर्ग किलोमीटर और चीन की जनसंख्या 100,775,500 है और इनके बीच में भूभाग और जनसंख्या की दृष्टि से विभिन्न आकार वाले राज्य हैं। एक राज्य के लिये महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं है कि भूभाग का आकार क्या है,



प्लेटो (लगभग 427-347 ई॰पू॰)

प्रख्यात यूनानी दार्शनिक। अरस्तु का गुरू। राजनीतिक दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों और विचारों की नींव डाली। "आदर्श राज्य" और "दार्शनिक राजा" से सम्बन्धित विचार से जुड़े हुए हैं। प्रसिद्ध पुस्तकें: रिपब्लिक (Republic), "दी स्टेट्समैन (The Statesman), "दी लॉज" (The Laws)

अधिक महत्त्व का विषय भूभाग पर प्रभावकारी नियंत्रण है। *यातायात और संचार के उन्नत साधनों से आधुनिक राज्यों को* इस प्रकार के नियंत्रण रखने में सहायता मिली है। कृषि और *उद्योग में आधुनिक प्रोद्योगिकी के व्यवहार से भूभाग का अभीष्ट* उपयोग संभव हुआ है। आकार के अलावा, भूभाग के अन्य *महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं, भौगोलिक स्थिति, साधन और जलवायु।* ये तत्व एक प्रभावकारी राज्य के लिये महत्त्वपूर्ण हैं। भूभाग के स्थूल अर्थ की तुलना में उसका उचित उपयोग और प्रभावकारी नियंत्रण अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अतीत में जब शारीरिक शक्ति ही उत्पादन प्रक्रिया और देश की सुरक्षा का मुख्य आधार थी, तब जनसंख्या निश्चय ही राज्य के लिये सम्पत्ति थी। अभी भी जनसंख्या के महत्व को कम करके नहीं देखा जा सकता। लेकिन साधन की दृष्टि से असंतुलित जनसंख्या राज्य के लिये निश्चय ही एक दायित्व है। एशिया और अफ्रीका के जो राज्य पिछले चार दशकों में स्वतंत्र हुए हैं, खास कर उनके लिये यह संतुलन बनाये रखना एक मुख्य समस्या है। जनसंख्या का दबाव आधुनिक राज्यों के लिये एक कठिन समस्या है। इसीलिये जनसंख्या-नियंत्रण सरकारी नीतियों में इतना महत्त्वपूर्ण हो गई है। जनसंख्या के अलावा, नागरिकों के चरित्र के गुण और उनकी देशभक्ति राज्य के क्रियाकलाप पर अपना असर डालती है।

आकार की भिन्नता, चाहे वह भूभाग की हो या जनसंख्या की, राज्य की कानूनी स्थिति को प्रभावित नहीं करती हैं। अपने भूभाग के अंदर रहने वाली जनसंख्या और दूसरे राज्यों द्वारा छोटे या बड़े राज्यों को भी एक संप्रभुता संपन्न राज्य माना जाता है। वेटीकन सिटी जैसे छोटे और सोवियत संघ जैसे बड़े, दोनों को कानूनी स्थिति की दृष्टि से संप्रभुता सम्पन्न राज्य माना जाता है।

राज्य और अन्य सामाजिक संगठनों में संप्रभुता के आधार पर ही भेद किया जाता है। राज्य के अधिकार में सर्वोच्च और *अंतिम कानूनी सत्ता होती है। राज्य के अलावा किसी अन्य* के पास कानूनी सत्ता नहीं होती है। राज्य का एक कानूनी *अस्तित्व होता है। राज्य कानून बनाता है, तथा वह कानून द्वारा* नियंत्रित भी होता है। यह आवश्यक है कि राज्य की सर्वोच्चता देश के अंदर के लोगों और संस्थाओं द्वारा मानी जाए जिनके ऊपर इस सत्ता का उपयोग होता है। हर राज्य यह चाहता है कि *मान्यता स्वेच्छा से हो, लेकिन इसे बल प्रयोग द्वारा सिद्ध* करने के लिये भी हरदम तैयार रहना पड़ता है।

वैदेशिक *मान्यता संप्रभुता का दूसरा पक्ष* है। एक राज्य यह घोषणा करता है कि उसकी संप्रभुता का फैलाव एक खास *भूभाग पर है। इसकी सीमा का संरक्षण राज्य का परम आवश्यक* कार्य है। यह आवश्यक है कि दूसरे राज्य इस घोषणा को *मान्यता दें। अगर यह मान्यता नहीं मिलती तो राज्यों में आपस* में परस्पर विवाद हो सकता है और युद्ध भी संभव है। भूभाग और जनसंख्या के ऊपर राज्य की संप्रभुता का निर्विवाद होना आवश्यक है। किसी अन्य राज्य का इस प्रसंग में हस्तक्षेप सर्वथा *अमान्य* होता है। ऐसी मान्यता राज्यों के समुदाय द्वारा दी जाती है। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था *संप्रभुता-संपन्न राज्य को सदस्यता प्रदान करती है। संयुक्त* राष्ट्र संघ की सदस्यता वाह्य संप्रभुता का एक लक्षण है। जब भी एक नया राज्य संगठित होता है, उसके लिए आन्तरिक और वाह्य दोनों प्रकार की मान्यता आवश्यक है।

संप्रभुता एक महत्त्वपूर्ण कानूनी अवधारणा है। लेकिन वास्तविक व्यवहार में तथा सही अर्थों में यह संभव नहीं है। आन्तरिक और वाह्य दोनों प्रकार की शक्तियां इसके उपयोग



जॉन लॉक (1632-1704 ईसवी)

प्रख्यात अंग्रेज दार्शनिक। प्रसिद्ध सामाजिक समझौता सिद्धान्त के तीन प्रवर्तकों में से एक। इंगलैंड में सांविधानिक राजतंत्र तथा मानव अधिकारों का महान समर्थक। उसके विचारों का संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान निर्माण पर प्रभाव पड़ा। प्रसिद्ध पुस्तक : ट्रू ट्रीटाइज़ज़ ऑन सिविल गवर्नमेंट" (Two Treatises On Civil Government).



जीन जेक्स रूसो (1712-1778 ईसवी)

प्रख्यात यूरोपीय दार्शनिक। प्रसिद्ध सामाजिक समझौता सिद्धान्त के तीन प्रवर्तकों में से एक। "सामान्य इच्छा" तथा "लोकप्रिय सम्प्रभुता" के सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया। रूसो के लेखन ने फ्रांसीसी क्रांतिकारियों को प्रेरित किया। प्रसिद्ध पुस्तकें : "सोशल कॉन्ट्रेक्ट" (Social Contract), "कनफेशन्स" (Confessions).

को सीमित करती हैं। राज्य न तो आपस में समान होते हैं, और न ही असीमित संप्रभुता संपन्न ही होते हैं। अधिक शक्तिशाली राज्य कम शक्ति वाले राज्यों पर सिर्फ प्रभाव ही नहीं, दबाव भी डालते हैं। विश्व में विभिन्न राज्य प्रभाव गुटों में बंटे हुए हैं, जिनमें अधिक ताकतवर और कम ताकतवर दोनों प्रकार के राज्य हैं। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति के विभिन्न केंद्र हैं। यह प्रभाव आर्थिक और सैनिक दोनों प्रकार के हैं। विश्व के राज्यों की परस्पर निर्भरता निरंतर बढ़ रही है, जिसके कारण नीतियों की रूपरेखा बनाने की प्रक्रिया सीमित हो जाती है। राज्यों के अंदर भी इसी प्रकार की असमानता की स्थिति होती है। कुछ व्यक्ति, समूह और संस्थाएँ अधिक शक्तिवान होते हैं। ये सरकारी कार्य पर अधिक दबाव डालने में सक्षम हैं। इस प्रसंग में आर्थिक और सामाजिक स्थिति भी महत्त्वपूर्ण हैं जिन्हें राज्य को संप्रभुता के उपयोग में ध्यान में रखना पड़ता है। संप्रभुता का उपयोग मनमाने ढंग से अधिक समय तक नहीं हो सकता।

राजनीतिशास्त्री राज्य की असीम सत्ता को संदेह की दृष्टि से देखते रहे हैं। जॉन लाक "सम्मति सिद्धांत" की बात करते हैं। जे. जे. रूसो के लिये "जनप्रिय संप्रभुता" और "सामान्य इच्छा" महत्त्वपूर्ण हैं। बेनथम और जॉन स्टूअर्ट मिल "उत्तरदायी सरकार" पर बल देते हैं। इस बात पर काफी विचार किया गया है कि कितने लोगों के हाथ में सत्ता हो? और इस प्रसंग में होना क्या चाहिये। इस तरह हम "एक का शासन", "कुछ का शासन", और "बहुत का शासन" इनमें भेद पाते हैं। सांविधानिक विशेषज्ञों ने "सत्ता का विभाजन" और "नियंत्रण और संतुलन" को लागू करने के तरीकों पर विचार किया है। हेराल्ड जे लास्की तो राज्य को मानव जाति के मूलहित से असंगत बताते हैं।

अराजकतावादी (Anarchist), बहुलवादी (Pluralist) और मार्क्सवादी विचारधाराओं को राज्य के अस्तित्व से मूलभूत आपत्ति है। अराजकतावादी राज्य की सत्ता के किसी भी रूप में विश्वास नहीं रखते। वे व्यक्ति की असीमित स्वतंत्रता और ऐच्छिक सहयोग की बात करते हैं। इनमें से कुछ सामाजिक संगठन का पूर्ण विकेंद्रीकरण चाहते हैं। बहुलवादी विभिन्न स्तरों पर मानव के समूहीकरण और सरकारी काम पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करते हैं। उनका प्रयास राजनीतिक व्यवस्था को व्यक्ति और समूह की आवश्यकता और उनकी मांगों के प्रति संवेदनशील बनाने का है। मार्क्सवादी विचारक राज्य को एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर, प्रभुत्व बनाये रखने का साधन मानते हैं। अपने मूलभूत विश्लेषण में ये मानव समाज की आदर्श स्थिति में राज्य के लुप्त होने की स्थिति में विश्वास रखते हैं।

राज्य के स्वरूप के मार्क्सवादी विश्लेषण से राज्य का सिद्धांत समृद्ध हुआ है। इस विचारधारा का मूल आधार यह है कि सामाजिक संस्थाएं उत्पादन के प्रचलित प्रक्रिया की छवि मात्र हैं जिसे वे "उत्पादन की पद्धति" (Mode of Production) कहते हैं, इसके अनुरूप ही मार्क्सवादी राज्य की व्याख्या "वर्ग विरोध" (Class autagonism) के रूप में करते हैं। उत्पादन का एक ढांचा विशेष लोगों को वर्गों में बांटता हैं। ये वर्ग एक दूसरे के विरोधी होते हैं। इसी आर्थिक वर्ग के साथ-साथ राज्य का भी प्रादुर्भाव होता है। एंगेल्स ने अपनी पुस्तक "परिवार, निजी सम्पत्ति और राज्य सत्ता की उत्पत्ति" में इसे स्पष्ट किया है : "राज्य समाज के एक खास

विकास-स्तर की उत्पत्ति है। इसमें इस बात की स्वीकृति निहित है कि समाज अपने में ही घोर अन्तर्विरोध में उलझ गया है, वह ऐसे विरोधों में बंट गया है जिसका समाधान संभव नहीं है तथा जिसे दूर करने में अपने को असमर्थ पाता है।" एक वर्ग का दूसरे वर्गों पर प्रभुत्व बनाये रखने के लिए "अधिकृत सत्ता की स्थापना" आवश्यक है। लेनिन ने इस विचार को और आगे बढ़ाया, "राजनीतिक सत्ता, सही अर्थों में, एक वर्ग के हाथ में संगठित सत्ता है जिससे दूसरे वर्ग का दमन किया जाता है।" इस तरह उत्पादन की पद्धति और उससे उत्पन्न वर्ग विरोध राज्य की प्रकृति को सुनिश्चित करते हैं। इतिहास के पृथक दौर में राज्य के विभिन्न स्वरूप होते है, लेकिन वे सभी "वर्ग राज्य" ही हैं। हर राज्य उसी ढांचे के अंदर काम करता है जिसे उत्पादन पद्धति निश्चित करती है।

जैसा राल्फ मिलीबैंड ने कहा है "संरचनात्मक आयाम (structural dimension) के कारण राज्य का श्लेषण अधिक अर्थपूर्ण हो गया है। कोई भी राज्य "उत्पादन पद्धति" और उसके बाद के वर्ग विरोध के "ढांचा सम्बन्धी प्रतिबन्ध" (structural constraints) से बाहर नहीं होता। साथ ही किसी राज्य का स्वरूप उसके ऐतिहासिक विकास पर भी निर्भर होता है। इस ऐतिहासिक प्रक्रिया के द्वारा एक राज्य प्रबल वर्गों की संरचना प्राप्त करता है। पूंजीवादी राज्य विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। ऐतिहासिक प्रक्रिया के द्वारा ही हम इस विभिन्नता को पहचान पायेंगे। इस तरह राज्य का मार्क्सवादी सिद्धांत एक राज्य के "वर्ग प्रभुत्व" के सामान्य ढांचा और, साथ ही, उसको विशेष ऐतिहासिक संदर्भ में भी स्थापित करता है। तीसरी दुनिया के देशों पर उपनिवेशवाद का व्यापक प्रभाव रहा है और इन देशों के विश्लेषण के लिये मार्क्सवादी दृष्टिकोण विशेष उपयोगी सिद्ध हुआ है।

राज्य और समाज

मनुष्य अपनी सुरक्षा और अधिक अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिये मिलकर रहते हैं। उनके संबंध अनेक प्रकार के होते हैं और हर एक सम्बन्ध का अपना लक्ष्य होता है। ये सम्बन्ध कई स्तरों पर होते हैं, जो लक्ष्य के हिसाब से ही संस्थाओं के रूप में विकसित होते हैं। इन्हीं लक्ष्यों, सम्बन्धों, और संस्थाओं की समष्टि को समाज कहते हैं। "समाज" शब्द का प्रयोग इसके पूर्ण अर्थ में होता है और आंशिक अर्थ में भी। हम "भारतीय समाज" जैसे पद का प्रयोग करते हैं और "अन्ध निवारक समाज" जैसा पद भी प्रयोग में आता है। हमारा अभिप्राय समाज के व्यापक अर्थ से है। समाज के विकास के साथ ही विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये संस्थाएं बनती हैं। समाज में विभिन्न प्रकार की संस्थाएं होती हैं: आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक। प्राय: जनसमूह और समाज में भेद किया जाता है। मनुष्य के इकट्ठा होने मात्र से समाज नहीं बन जाता। समाज की संज्ञा तभी दी जाती है जब सामूहिक इच्छा और सामूहिक लक्ष्य सामने हों। सामूहिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ही राज्य की स्थापना होती है, और इसके लिये कर्तव्य और सत्ता निश्चित होते हैं।

मनुष्य के अस्तित्व के लिये आवश्यक कार्य और क्षेत्र के विस्तार, दोनों दृष्टियों से समाज का अर्थ अधिक विस्तृत है। मानव वैज्ञानिकों ने ऐसे समाज के उदाहरण सामने रखे हैं जहाँ संगठित राज्य नहीं हैं, जैसे दक्षिण सूडान में नूएर, गोल्ड कोस्ट के उत्तरी क्षेत्र में तेलेन्सी, आंग्लमिश्र क्षेत्र में आनुक, कीकूयू, बीदोइन और पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सीमा पर स्वात पठान। इनमें *संगठित प्राधिकार व्यवस्था तो है लेकिन विधिवत* संगठित राज्य नहीं है। इसके विपरीत, समाज के बिना राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी अर्थ में कुछ विद्वान कहते हैं कि "समाज राज्य का पूर्ववर्ती है।" राज्य के दो लक्षण, सम्प्रभुता और निश्चित भूभाग, समाज के अनिवार्य लक्षण नहीं हैं। हम पहले देख चुके हैं कि राज्य के अधिकार में कानूनी सत्ता है और वह आज्ञापालन करवाने के लिये बलप्रयोग कर सकता है। समाज और सामाजिक संस्थाओं के पास ऐसी सत्ता नहीं होती। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि लोग उनका आज्ञापालन ही नहीं करते। इसके लिये जो तत्व महत्त्वपूर्ण हैं, वे हैं, प्रथा, परम्परा, लोकाचार, और सबसे बढ़कर, व्यक्ति की सुविधा और स्वार्थ। इस सिलसिले में बलप्रयोग भी होता है, लेकिन इस प्रकार के बलप्रयोग का क्षेत्र और विस्तार सीमित होता है। किसी भी हालत में सामाजिक *संस्था की प्रक्रिया राज्य की सम्प्रभुता की सीमा का अतिक्रमण* नहीं कर सकती। समाज, सही अर्थों में, किसी खास भूभाग तक सीमित नहीं रहता। सामूहिक बन्धन और लक्ष्य की चर्चा हमने पहले की है, वे राज्य के विस्तार से कम या अधिक विस्तृत हो सकते हैं। ये दोनों हर समय एक दूसरे के अनुरूप नहीं होते।

राज्य और समाज में भेद उनके विस्तार की दृष्टि से भी

करना आवश्यक है। हम पहले देख चुके हैं कि समाज के अंतर्गत अनेक प्रथाएं, संबंध और संस्थाएं हैं, लेकिन राज्य मात्र राजनीतिक पक्ष से जुड़ा है। साथ ही, राज्य के अधिकार में अधिक सत्ता है जिसका उपयोग अलग-अलग पदों पर आसीन लोग करते हैं। अगर राज्य अपने कार्य और नियंत्रण को समाज के सभी कार्यों तक बढ़ाता है तो हो सकता है कि इससे समाज का विकास अवरुद्ध हो जाए। जो राज्य संपूर्ण सामाजिक संस्था को नियंत्रित करता है उसे सर्वसत्तात्मक राज्य कहते हैं। विद्वानों ने राज्य सत्ता के क्षेत्र को सीमित करने के तरीकों की चर्चा की है और कुछ खास संस्थाओं को अनन्य रूप से सामाजिक माना है।

राज्य और समाज के पारस्परिक संबंध समय-समय पर बदलते रहे हैं और इस विषय पर कई विचार हैं। एक मत का विश्वास था, या यों कहिये कि आशा थी कि अगर व्यक्ति को अपने हित की खोज में पूर्ण स्वतंत्र छोड़ दिया जाए, तो समुदाय स्वतः ही सामूहिक हित की दिशा में आगे बढ़ेगा। इसीलिये राज्य का अधिकार क्षेत्र आर्थिक प्रक्रिया से सीमित होना चाहिये। राज्य को सिर्फ यह देखना चाहिये कि आर्थिक प्रक्रिया एकाधिकरण से बचा रहे और विनिमय की प्रक्रिया दोषपूर्ण न हो और इसके लिये दोनों में संतुलन रखें। उद्योगीकरण और पूंजीवाद के विकास के शुरू में यह विचारधारा प्रचलित थी। अहस्तक्षेप (Laissez Faire) के सिद्धांत ने आर्थिक सामाजिक प्रक्रियाओं को अधिक स्वतंत्रता और राज्य के लिये सीमित कार्यक्षेत्र की वकालत की। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के शुरू में यह विचारधारा प्रमुख थी, जिसकी मान्यता यह थी कि "जो राज्य सबसे कम शासन करता है, वह सबसे अच्छा है।"

परवर्ती सिद्धांतों और विचारधाराओं ने "स्वतंत्र बाजार" की इस क्षमता पर संदेह व्यक्त किया कि इसके द्वारा "सबके हित" की स्थिति आ सकती है। इसके बदले अव्यवस्था की स्थिति उत्पन्न हो सकती है और समाज के कुछ वर्गों के साथ अन्याय भी हो सकता है। इस विचार के अनुसार, सर्वहित की प्राप्ति स्वयंमेव नहीं हो जाती। सौदेबाजी (bargaining) और सहमति की प्रक्रिया से इसे संपादित करना पड़ता है। इसके बाद, केंद्रीय प्राधिकार का यह काम है कि उसे सुनिश्चित और सुरक्षित रखे। समाज का व्यवस्थित विकास सुनिश्चित करने के लिये इस विचार ने "बाजार का अदृश्य हाथ" के स्थान पर "राज्य नियंत्रण", और "स्वनियंत्रण" के बदले "केन्द्रीय योजना" को श्रेयकर बताया। इस विचार के अनुसार, बाजार का नियंत्रण और आय का पुनः वितरण राज्य के उचित कार्य हैं। कल्याणकारी राज्य (Welfare State) ने राज्य के कार्यक्षेत्र की व्यापकता को स्वीकार किया, जिसके अंतर्गत आर्थिक-सामाजिक समस्याओं को भी रखा गया। राज्य और समाज के इस संबंध के बारे में समाजवादी और मार्क्सवादी विश्लेषण कुछ भिन्न है। यह विचारधारा राज्य और समाज के अंतर के विचार से तब तक सहमत है, जब तक राज्य एक वर्ग का दूसरे वर्गों पर प्रभुत्व कायम रखने का एक माध्यम रहता है। एक "वर्ग राज्य" (Class State) का विस्तार सीमित होता है, और ऐसा उचित भी है। जब समाज से वर्गभेद लुप्त हो जाता है, तब आवश्यक नहीं कि राज्य का कार्यक्षेत्र सीमित रहे। राज्य को अवश्य ही समाज के एक मात्र वर्ग, जैसे सर्वहारा वर्ग, के अभिरक्षक के रूप में कार्य करना चाहिए। इस तरह जो राज्य मार्क्सवादी-साम्यवादी विचारधारा स्वीकार करते हैं, उनका कार्यक्षेत्र व्यापक है और उनके पास अधिक सत्ता है।

आधुनिक युग में राज्य के पास सत्ता काफी अधिक है। यह निष्कर्ष विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र और विभिन्न विचारधारा में विश्वास रखने वाले राज्यों पर लागू होता है। राज्यों की सत्ता में वृद्धि के विभिन्न कारण हैं। तीसरी दुनिया के राज्यों के लिये जो कारण हैं, वे अमेरिका और ब्रिटेन जैसे राज्यों से भिन्न हैं। समाजवादी राज्यों में और ही कारण हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उन्नति और सामाजिक-आर्थिक कारणों से समाज का ढाँचा अधिक जटिल हो गया है। यह राज्य सत्ता की वृद्धि का प्रमुख कारण है। इसलिये राज्य और समाज का भेद आज के युग में अधिक महत्व रखता है।

राज्य सामाजिक प्रक्रियाओं के पीछे भी चलता है (follower) और उनका दिशानिर्देशक (leader) भी है। समाज द्वारा अनुभव की हुई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया, बहुत हद तक राज्य की प्रकृति और उसके कार्य को निर्धारित करती है। 1947 ई० से पहले करीब दो शताब्दी तक भारत का उपनिवेश होना, स्वतंत्रता से पहले के दो दशक के दौरान संविधान संबंधी अनुभव, और सबसे महत्त्वपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम का स्वरूप, इन सबका भारतीय राज्य के स्वरूप पर निश्चित प्रभाव पड़ा है। इसी तरह, जो देश बीसवीं शताब्दी

के मध्य तक उपनिवेशवाद से लाभान्वित हो रहे थे, उपनिवेशों के हाथ से निकल जाने के प्रभाव से वे बच नहीं सके। फिर कुछ सांस्कृतिक कारण होते हैं जिनसे अपने कार्य के दौरान राज्य बच नहीं सकता। और सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है आर्थिक प्रक्रिया और उससे उत्पन्न समस्याओं का। राज्य को इन विभिन्न प्रक्रियाओं और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनमें से कुछ तो राज्य के कार्य के लिये गंभीर प्रतिबंध सिद्ध होते हैं। फिर भी समस्याओं के हल निकालने, अपने में लेने, या दबा देने के सिलसिले में राज्य का यह भी उत्तरदायित्व हो जाता है कि वह समाज को सही दिशा दे। राज्य द्वारा कानून बनाने की प्रक्रिया इस कठिन कार्य का एक सही उदाहरण है। कानून के लिये समाज की प्रथाओं, परम्पराओं और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। साथ ही अनपेक्षित संस्थाओं को समाज से हटाना भी आवश्यक हो जाता है। राज्य और समाज का अन्योन्य संबंध है, वे एक दूसरे का निर्धारण करते हैं और साथ ही एक दूसरे से निर्धारित भी होते हैं।

राज्य और राष्ट्र

एक समाज के व्यक्ति, समूह और संस्थाओं के लक्षणों में एकरूपता होती है। इसी एकरूपता के आधार पर वह समाज अपने को अन्य समाजों से अलग मानता है। एकरूपता के साथ-साथ विभिन्नताएँ भी होती हैं। हमने पहले देखा है कि राजनीति का संबंध इन दोनों से है : एकरूपता और विभिन्नता, संघर्ष और समन्वय। समाज में समन्वय के स्तर को उच्चतम सीमा तक बढ़ाना राज्य का मुख्य लक्ष्य होता है। राष्ट्र का भाव और राष्ट्रीयता की प्रक्रिया एकात्मकता की भावना पर जोर देती है, जिसमें कई आधारों पर एकरूपता पर ज़ोर दिया जाता है : भाषा, धर्म, जातीयता प्रथा, मिथक, मान्यता और संस्कृति। इनके द्वारा अलग-अलग या सम्मिलित रूप से, लोगों में एकता की भावना आती है।

राष्ट्र के प्रादुर्भाव में किन तत्वों से सहायता मिलती है, इस प्रसंग में अनेक तत्वों की चर्चा की जाती है। कुछ लेखक भौगोलिक और जलवायु संबंधी तथ्यों को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। अलग-थलग क्षेत्र में रहने वालों में अधिक एकात्मकता की भावना नहीं हो सकती है। अवरुद्ध क्षेत्र और खुले समुद्रतट वाले देशों के अपने विशेष लक्षण होते हैं। भाषा संचार का मूल साधन है और इसीलिए प्रसिद्ध विद्वान फिक्टे के समय से, लोगों को आपस में घनिष्ट रूप से जोड़ने के लिए भाषा को महत्त्वपूर्ण घटक माना गया है। स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही भारत में भाषा के आधार पर अंशभूत इकाइयों के संगठन को उपयुक्त आधार माना गया और 1956 ई० के राज्य पुनर्गठन के बाद वह एक मान्य नीति हो गई। किसी मत या विचारधारा में सम्मिलित होने से भी राष्ट्र के प्रादुर्भाव में सहायता मिलती है। हम अक्सर "अरब राष्ट्र" जैसे शब्द का प्रयोग सुनते हैं। सामूहिक आदर्श और "सामूहिक भवितव्यता में सम्मिलित" होने की प्रक्रिया से भी साथ रहने की भावना को बल मिलता है। ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र होने की भावना लोगों के विभिन्न वर्गों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की मुख्यधारा में ले आई। विभिन्न संस्कृति, भाषा और धर्म के लोगों ने 1917 ई० में एक सुनिश्चित भविष्य की आशा में सोवियत संघ की स्थापना की। व्यक्ति की तरह राष्ट्र भी इतिहास की उपज होते हैं। उनके अस्तित्व का हर क्षण उनके अतीत के अनुभवों का योगफल होता है। इस अनुभव के दो पक्ष हैं : वस्तुपरक और आत्मपरक। इतिहास की विभिन्न घटनाओं का अनुभव लोगों में विभिन्न प्रकार से होता है। यह अनुभव मुख्यत : आत्मपरक होता है। इसी अनुभव के आधार पर घटनाओं को समझा जाता है और उनकी व्याख्या होती है। इस प्रक्रिया में कुछ घटनाओं का चयन होता है और कुछ भुला दी जाती हैं। कुछ घटनाओं को बढ़ा-चढ़ा कर देखा जाता है और कुछ को बहुत कम महत्व दिया जाता है। आत्मपरक अनुभव का व्यवहार पर अधिक सुनिश्चित असर होता है। "इतिहास के पुनर्निर्माण" की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। "अतीत" को पुनर्जीवित किया जाता है, जिससे सामान्य पारस्परिक लगाव को बल मिलता है। बहुत से नये राष्ट्र गलत "मिथिक" और विचारों को अन्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए इतिहास का पुनर्लेखन आवश्यक समझते हैं। भारत के बारे में ब्रिटिश इतिहासकारों के बुहत से विचार और व्याख्याएं भारतीयों को स्वीकार नहीं है। एक राष्ट्र के निर्माण में "सामान्य अतीत" (common past) और "सामान्य भवितव्यता" (common destiny) का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

राष्ट्र और राष्ट्रीयता मुख्यत : "एक होने" (belonging together) की भावना से संबंध रखते हैं। राज्य एकात्मकता की इस भावना के समरूप होता भी है, और कभी-कभी नहीं

भी होता है। लेकिन राष्ट्र-राज्य के आदर्श की बहुत दिनों से, कद्र होती रही है। एकीकरण के तत्वों को एकात्मक करने में राज्य का महत्वपूर्ण योगदान होता है। लेकिन इस प्रक्रिया में राज्य के अलावा भी कई तत्व होते हैं। बहुत समय तक "एक राष्ट्र-एक राज्य" के विचार पर बल दिया जा रहा था। लेकिन ऐसे बहुत से राज्य हैं जो बहुराष्ट्रीय और बहुसांस्कृतिक हैं। स्विटजरलैण्ड, सोवियत संघ, और भारत ऐसे देश हैं जहाँ विभिन्न परिणामों में बहुस्तरीय विभिन्नताएँ विद्यमान हैं, जिसके कई पहलू हैं : संस्कृति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय इतिहास। विभिन्न संस्कृतियों के सहअस्तित्व से एक प्रकार की सामाजिक संस्कृति (composite culture) उत्पन्न हुई है, जो इन देशों में अनुपम है।

राष्ट्र राज्य के कार्य के लिये एक मानक व्यवस्था और सांस्कृतिक ढाँचा प्रस्तुत करता है। एक निश्चित भूभाग में रहने वालों का सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषागत परिचय हो सकता है जो एक क्षेत्र तक सीमित हो। उनमें ऐसी भावना हो सकती है कि वे एक खास समूह के सदस्य हैं जो दूसरे समूहों से भिन्न हैं। एक राष्ट्र के अंदर समूह की विशेष भावना को ही उपराष्ट्रीयता की संज्ञा दी जाती है। लेकिन किसी सीमित वर्ग, या क्षेत्र की उपराष्ट्रीयता एक मिश्रित वरदान है। कुछ विद्वानों का मत है कि एकात्म भावना नई आर्थिक गतिविधियों को जन्म देती है। भारत के कुछ क्षेत्रों का पिछड़ापन क्षेत्रीय परिचय के अभाव के कारण बताया जाता है। उपराष्ट्रीयता की भावना जब तक व्यापक राष्ट्रीयता के अंतर्गत काम करती है, तब तक तो राज्य के कार्य पर इसका विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन किसी भी क्षेत्र या वर्ग का बहुत अधिक अनन्य परिचय राज्य के शांतिपूर्ण कार्य के लिये प्रायः आशंका का कारण होता है। इन्हीं संभावनाओं के कारण सभी राज्यों के लिये राष्ट्र का विचार इतना महत्वपूर्ण है। इसीलिए भारत में राष्ट्रीय एकीकरण को इतना महत्व दिया जा रहा है।

क्या आप समकालीन भारत से उप-राष्ट्रवाद के दो उदाहरण दे सकते हैं?

स्वतंत्रता से पहले भारतीय उपमहाद्वीप विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों में बंटा हुआ था, जिसका एकीकरण प्रभावशाली राष्ट्रीय भावना के आधार पर हुआ। स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय राष्ट्र की नींव रखी जिसमें उपनिवेशवाद विरोधी चेतना और राष्ट्रीयता की भावना का भी योगदान था। इस दौरान, सांप्रदायिकता का एक नकारात्मक तत्व सामने आया। ब्रिटिश उपनिवेश-नीति से सांप्रदायिकता की भावना को सतत् प्रोत्साहन मिला। स्वतंत्र भारत को सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषा संबंधी, और आर्थिक भिन्नताओं की कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ा। समाज का विभिन्न जातियों में विभाजन एक और समस्या है। कुछ जनजातीय समूह अपनी अलग पहचान बनाना चाहते हैं। प्रायः ये समस्याएं एक दूसरे में मिलकर कुछ इलाकों में, प्रभावशाली क्षेत्रीय भावना का रूप ले चुकी हैं। कुछ इलाकों में "बाहर" और "अन्दर" के लोगों में प्रभेद करने के लिये धरती पुत्र (Sons of soil) का नारा लगाया जाता है। इन बहुपक्षीय समस्याओं के सामने, राष्ट्रीय एकता एक कठिन समस्या बनी हुई है। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया राष्ट्रीय कार्यसूची का एक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है।

राज्य और नागरिक

राज्य के संगठन में जनसंख्या एक तत्व माना जाता है। राज्य और लोगों के संदर्भ में ही राज्य सत्ता की सार्थकता होती है। भूभाग में रहने वाले सभी लोगों के सम्बन्धों पर राज्य सत्ता का प्रभाव होता है, क्योंकि यह सत्ता सर्वोपरि होती है। समाज में सत्ता-मूलक संबंध के और भी स्तर होते हैं, लेकिन ये सभी राज्य सत्ता के अंतर्गत होते हैं। राज्य के कार्यक्षेत्र में वृद्धि के साथ ही, लोगों और राज्य के बीच सम्पर्क में भी वृद्धि हुई है। लोग राज्य पर सिर्फ कानून और व्यवस्था, और सुरक्षा के लिए ही निर्भर नहीं हैं। डाक-तार, बिजली, सिंचाई सुविधा, यातायात आदि बहुत सी सामान्य सामाजिक सुविधाएं राज्य के द्वारा दी जाती हैं। अतः राज्य और लोगों के संबंध महत्वपूर्ण हैं।

एक राज्य के भूभाग में निवास करने वाले सभी लोग उसके नागरिक नहीं होते। नागरिकता की कानूनी परिभाषा राज्य द्वारा की जाती है। प्राकृतिक नागरिकता की व्यवस्था में जिनके माता-पिता राज्य के नागरिक होते हैं, उन्हें नागरिकता स्वतः प्राप्त होती है। कुछ देशों में, उन्हें नागरिक माना जाता है जिसका जन्म उसी देश में होता है। इसके लिए यह आवश्यक नहीं कि माता-पिता भी उस देश के ही नागरिक हों। कोई भी राज्य की नागरिकता के लिए प्रार्थना कर सकता है, जिसका निर्णय वह राज्य लेता है। हर एक राज्य में जनसंख्या का एक हिस्सा उन लोगों का होता है जो नागरिक नहीं हैं और कभी-कभी

ऐसे लोगों की संख्या बड़ी होती है। दूसरे देशों के राजनयिक प्रतिनिधियों के अलावा हर देश में विभिन्न प्रकार के प्रवासी होते हैं। कभी-कभी ये प्रवासी बहुत दिनों तक रह जाते हैं। भूभाग में रहने वाले सभी, नागरिक और प्रवासी दोनों प्रकार के लोगों को राज्य से कुछ अपेक्षाएं रहती हैं, जैसे सुरक्षा। लेकिन नागरिक राज्य से और कई प्रकार के अधिकारों की मांग कर सकते हैं। जब वे अनुभव करते हैं कि राज्य द्वारा दिये गये अधिकारों से वे वंचित हैं, तो वे "न्याय" के लिए न्यायालय के पास भी जा सकते हैं। सभी अधिकार समान नहीं होते और उनकी वैधता में भी असमानता होती है। कुछ अधिकार ऐसे होते हैं कि अगर नागरिकों को उनसे वंचित किया जाता है, तो न्यायालय हस्तक्षेप कर सकता है। कुछ और अधिकार आदर्श के रूप में होते हैं जिन्हें राज्य कानून बनाने और निर्णय लेने के समय तो ध्यान में रखता है, लेकिन उनकी मांग न्यायालय में नहीं की जा सकती। ये अधिकार क्रमशः न्याय योग्य और न्याय अयोग्य कहलाते हैं। भारतीय संविधान मूलाधिकार और राज्य के निर्देशक सिद्धांत के रूप में दोनों प्रकार के अधिकार प्रदान करता है। कौन से अधिकारों को कहाँ तक वैधता दी जाए, यह कई बातों पर निर्भर करता है — विचारधारा पर, विश्वास, राज्य की क्षमता खास कर आर्थिक और वह ऐतिहासिक स्थिति जिसमें अधिकारों का घोषणा-पत्र निर्धारित हुआ। अधिकारों का जो भी स्वरूप हो, उन सभी में नागरिकों के कुछ कर्तव्य अन्तर्निहित होते हैं। कुछ कर्तव्य तो अधिकारों का ही दूसरा पक्ष होते हैं। उदाहरण के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा के अधिकार में यह कर्तव्य निहित है कि हम दूसरों को इस अधिकार से वंचित न करें। दूसरों को अधिकार से वंचित न करना ही कर्तव्य होता है। दूसरे प्रकार के कर्तव्य वे हैं जो राज्य के प्रति होते हैं। राज्य के अपने निर्धारित कार्य करने के लिए यह आवश्यक है कि नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करें। कर अदा करना नागरिकों का ऐसा ही एक कर्तव्य है। राज्य और नागरिक के बीच संबंधों की परिधि अधिकार और कर्तव्यों द्वारा निर्धारित की जाती है।

नागरिकता का एक और पक्ष है, भागीदारी। नागरिकों से राज्य के कार्य में भागीदार होने की अपेक्षा की जाती है। नागरिक और प्रजा का विभेद इसी संदर्भ में किया जाता है। लोकतंत्र से पूर्व के राज्य के स्वरूप में, जैसे राजतंत्र, भूभाग में निवास करने वाले सभी लोगों को प्रजा के नाम से जाना जाता था। राज्य के निर्णयों से वे प्रभावित तो होते थे, लेकिन निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनका कोई हाथ नहीं होता था। चुनाव में भागीदारी का अधिकार लोकतंत्र में नागरिकों का एक अनन्य और महत्त्वपूर्ण अधिकार है। लेकिन सभी नागरिकों की भागीदारी की मात्रा समान नहीं होती और वे राज्य के सभी कार्यों में हिस्सा नहीं ले पाते। लोकतंत्र के मूल्यांकन में भागीदारी की विशेषता को महत्त्वपूर्ण समझा जाता है।

राज्य की प्रकृति ही ऐसी होती है कि वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति और वर्ग को संतुष्ट नहीं कर सकता। इसके निर्णय और कानून अधिकतम लोगों का हित और अभिरुचि ध्यान में रखते हैं। लेकिन इसमें संपूर्ण जनसंख्या को सम्मिलित करना संभव नहीं हो सकता। राज्य के कानून लोगों के विभिन्न वर्गों के लिए होते हैं, जिनमें विधि का उल्लंघन करने वाले एवं ऐसे लोग भी होते हैं जिनका राज्य से मौलिक मतभेद है। उसके अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक असमानता के कारण कुछ विकृतियां आ जाती हैं, जो राजनीतिक प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। ऐसे कार्य कुछ व्यक्ति और वर्ग विशेष के लिए ही लाभदायक हैं, जो दूसरों की कीमत पर ही होते हैं। इन समस्याओं के बावजूद, हम देखते हैं कि अधिकतर नागरिक बहुधा राज्य का आज्ञापालन करते हैं। राजनीति वैज्ञानिकों का ध्यान इस प्रश्न पर अक्सर गया है कि आखिर नागरिक राज्य का आज्ञापालन क्यों करते हैं? इस प्रश्न का स्वाभाविक परिणाम यह है कि राज्य को ऐसे कौन से कार्य करने चाहिए जिससे नागरिक उसका सहज रूप में आज्ञापालन करें।

"आज्ञापालन" के प्रश्न का राजनीतिक विचारकों ने अपने अपने ढंग से अर्थ लगाया है, उसकी व्याख्या की है, और उसी के अनुसार कार्य का आदेश दिया है। रूसो ने अधिकारों की गारंटी के महत्व पर बल दिया है। लेकिन राज्य जिन अधिकारों की गारंटी देता है उन पर विचारधारा और अन्य अनेक तत्वों का प्रभाव होता है। जे डब्ल्यू वर्गसा की धारणा है कि आज्ञापालन उन कानूनों की विशेषता पर निर्भर होता है, जो मूलतः "अच्छे" होते हैं। "अच्छे" और "बुरे" का निर्णय आसान नहीं। प्रश्न यह है कि यह कानून किन लोगों के लिए "अच्छा" है? समाज में विभिन्न प्रकार के सामाजिक-आर्थिक समूह होते हैं, और जो एक समूह के लिए "अच्छा" है वह दूसरे के लिए भी "अच्छा" हो यह आवश्यक नहीं है। दरअसल, कुछ स्थितियाँ

ऐसी हो सकती हैं जब एक के लिए "अच्छा", दूसरे के लिए "बुरा" होता है। समाज में परस्पर विरोधी आर्थिक स्वार्थ होते हैं। लास्की के अनुसार नागरिकों की "न्याय की अनुभूति" उन्हें प्रेरणा देती हैं। लेकिन न्याय का प्रश्न ही ऐसा है जिसका समाधान आसान नहीं। हाब्स कहते हैं कि नागरिक आज्ञापालन अवज्ञा के परिणाम के डर से करता है। यह कथन उनके विचारधारा के समग्र ढाँचे के अनुरूप ही है। यह एक प्रधान कारण है। लेकिन यह उन अल्पसंख्यक लोगों पर ज्यादा लागू होता है जो सांधारणतया आज्ञापालन नहीं करते। अगर बहुत से लोगों के आज्ञापालन के लिए अक्सर बल प्रयोग किया जाए, तो राज्य के लिए अपने को कायम रखना कठिन हो जायेगा। राज्य उन बहुसंख्यक लोगों पर निर्भर करता है जो अभ्यासवश आज्ञापालन करते हैं। जब एक संगठन को किसी अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता नहीं होती और अपने मानदण्ड और कार्यविधि का पालन अभ्यास के आधार पर करवा लेता है, तभी उसे संस्था की संज्ञा दी जाती है। लेकिन, ऐसे अभ्यास का स्रोत क्या है? किसी जनसंख्या में अधिकतर लोग ऐसे होते हैं जो अनुमोदन करते हैं, शंका नहीं। फिर, वैधीकरण की प्रक्रिया की भी बात की जाती है, जिसमें लोगों में यह सच्चा विश्वास होता है, या विश्वास करवा दिया जाता है, कि राज्य के अधिकार में जो सत्ता है वह उसी के पास होनी चाहिए,



राबर्ट डाल (1915 ईसवी)
एक अमरीकी राजनीतिक वैज्ञानिक जिसका नाम आधुनिक बहुलवाद के विचार से जुड़ा हुआ है। प्रसिद्ध पुस्तकें : "कांग्रेस एन्ड फारैन पोलिसी" (Congress and Foreign Policy)", मार्डन पोलिटिकल एनालेसिस (Modern Political Analysis).

कि राज्य विधिपूर्ण है। यह प्रक्रिया राज्य के निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण है और अनेक राजनीतिक सिद्धांतों का ध्यान इस ओर गया है।

राबर्ट ए॰डाल के शब्दों में वैधता उस स्थिति को कहते हैं जब "वे लोग, जो आदेशों के लक्ष्य होते हैं, यह विश्वास करते हैं कि सरकार की संरचना, कार्य विधि, कार्य निर्णय, नीति, अधिकारी, और नेता, सभी न्यायसंगत उपयुक्तता. या नैतिक अच्छाई, जैसे गुणों से युक्त हैं। संक्षेप में उन्हें बाध्यकारी नियम बनाने का अधिकार है।" हर एक राज्य वैधता का ऊँचा स्तर प्राप्त करने का विशेष प्रयास करता है। जो प्रक्रिया राज्य को वैधता प्रदान करती है उसकी व्याख्या मैक्स वेबर, और आधुनिक लेखक, डेविड ईस्टन, ने की है। राज्य के कानून वैधता की भावना के कारण ही मान्य होते हैं। इस प्रक्रिया में विचारधारा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। हम यहाँ "वैध" और "कानूनी",



मैक्स वेबर (1864-1920 ईसवी)
जर्मन समाजशास्त्रीय। उसने समाज के अध्ययन में "मूल्य-निरपेक्ष' दृष्टिकोण पर बल दिया। "नौकरशाही" और "करिश्मों पर आधारित सत्ता पर" उसके विचार राजनीति शास्त्र में विशेष रूप से पाये जाते हैं। प्रमुख पुस्तकें : "दी प्रोटेस्टेन्ट एथिक एन्ड दी स्पिट ऑफ कैपिटेलिज्म" (The Protestent ethic and the spirit of Capitalism), "जनरल इकॉनामिक हिस्ट्री" (General Economic History).

इन दोनों में भेद करना चाहेंगे। वैधता के स्तर में स्थिति के अनुसार विभिन्नता आती है जिस पर इस बात का प्रभाव पड़ता है कि राज्य अपना कार्य किस प्रकार करता है। लेकिन, जब हम "कानूनी" शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसमे निर्णयात्मकता

होती है। कानून का पालन तो होना ही चाहिए और जो उसका आज्ञापालन नहीं करते उनके विरुद्ध दंडात्मक कार्यवाई की जानी चाहिए।

इस प्रकार नागरिकों की सहमति ही राज्य सत्ता की निर्णायक गारंटी है। राज्य व्यवित और समाज के सभी क्रियाकलापों को अंतर्विष्ट नहीं कर सकता, और यह होना भी नहीं चाहिए। राज्य सत्ता की सीमा क्या है? व्यक्ति और समाज के कौन से क्रियाकलाप राज्य में अंतर्विष्ट होने चाहिए? इस प्रसंग में व्यक्तिवाद और समष्टिवाद इन दो सिद्धांतों के विचार परस्पर विपरीत हैं। पहला दृष्टिकोण व्यक्ति को प्राथमिकता देता है और राज्य के कार्य को सीमित रखना चाहता है। दूसरे सिद्धांत के मत में सामूहिक हित का अर्थ पूरे समाज से है और इस सामूहिक हित के निष्पादन के लिए राज्य का कार्यक्षेत्र व्यापक होना चाहिए। इन दोनों दृष्टिकोणों के और भी अल्पांतर विभिन्न विचार हैं। कल्याणकारी राज्य इन दोनों विचारों को अभिसरण करता है और इस तरह विकास कार्यों पर उसका बल है।

अभ्यास

1. राज्य से आप क्या समझते हैं?
2. राज्य के किन्हीं दो तत्वों का वर्णन कीजिए।
3. क्या निम्नलिखित को राज्य कहा जा सकता है? कारण दीजिए :
   (क) नेपाल (ख) संयुक्त राष्ट्र संघ (ग) उत्तर प्रदेश
4. राज्य के लिए सम्प्रभुता क्यों अनिवार्य है?
5. निम्नलिखित में अन्तर स्पष्ट कीजिए :
   (क) राज्य और समाज
   (ख) राज्य और राष्ट्र
6. राष्ट्रवाद की भावना को प्रोत्साहित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।
7. लोकतंत्रीय राज्य में नागरिक की भूमिका का वर्णन कीजिए।
8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (क) राज्य सप्तांग सिद्धांत
   (ख) उपराष्ट्रवाद
   (ग) न्याय योग्य तथा न्याय अयोग्य अधिकार

अध्याय 3

राज्य और संघ

मानव समाज में व्यक्ति आपस में विभिन्न प्रयोजनों के लिए संगठन का निर्माण करते हैं। परिवार की तरह कुछ समूह प्राकृतिक रूप से बन जाते हैं। ऐसे समूह भी होते हैं जिन्हें कुछ विशेष उद्देश्यों के लिए विशेष रूप से प्रयत्न पूर्वक बनाया जाता है। कुछ समूहों का एक सुनिश्चित ढाँचा होता है, जिसमें लोग उन समूहों और उसके प्रतीकों के प्रति सचेत होते हैं। ऐसे समूहों के उदाहरण हैं: परिवार, गाँव, राष्ट्र, श्रमिक संघ, और राजनीतिक दल। उनकी सदस्यता, सीमाएँ, आपसी सम्बंधों के आधार, एक दूसरे से अपेक्षाएँ जैसी बातें सदस्यों को न्यूनाधिक रूप में मालूम होती हैं। इसके अलावा, कुछ अर्ध समूह ऐसे होते है, जिनकी परिभाषा अस्पष्ट होती है। इनके मापदण्ड और इनसे क्या अपेक्षा है, ये सभी अपरिभाषित होते हैं और सदस्य इसे सम्मिलित रूप से समझते भी नहीं। सामाजिक वर्ग, प्रतिष्ठा के आधार पर बने समूह, अवस्था और लिंग पर आधारित समूह, और जन समूह ऐसे समूहों के उदाहरण हैं। लेकिन समूह और अर्ध समूह की सीमा रेखा अनिश्चित सी है और ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब अर्ध समूह एक क्रमबध्द परिभाषा अपना लेता है और एक निश्चित दिशा में अग्रसर होता है। एक सामाजिक वर्ग जागरूक हो सकता है और वह अपने हित के लिए प्रतिबध्द हो जाता है। किसी खास अवस्था मूलक समूह के सदस्य, जैसे युवा-वर्ग, कुछ सुधारों के लिए अग्रणी हो सकते हैं। नारीवादी संगठन अक्सर महिलाओं के विशेष अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं। कभी-कभी एक जनसमूह प्रेरित होकर सम्मिलित रूप से किसी खास दिशा में बढ़ता है। लेकिन अर्ध समूह की प्रक्रिया में यह बदलाव प्रायः स्वतः प्रवर्तित और अस्थाई होता है। संघ की परिभाषा इस तरह की जा सकती है कि यह व्यक्तियों का एक समूह है जिसका संगठन एक हित के साधन के लिए होता है। संघ को एक नहीं कई हितों का ध्यान रखना पड़ता है।

समुदाय और संघ

संघ और समुदाय मे अक्सर अंतर किया जाता है। इसका चिरसम्मत विवरण 1887 में एफ़० टोनीज़ द्वारा दिया गया। सदस्यों के संबंधों के स्वरूप पर आधारित यह भेद जर्मन भाषा के इन शब्दों द्वारा किया गया — गेमेन शाफ्ट और गेशेल शाफ्ट। पहले का मतलब समुदाय से है और दूसरा संघ की ओर इशारा करता है। इनके लक्षणों की व्याख्या में समुदाय को इस तरह समझाया गया है, "अन्तरंग व्यक्तिगत और सम्मिलित अनन्य जीवन"। किसी संघ की स्थापना उस समय होती है जब व्यक्ति जानबूझकर और सचेतन रूप से इस प्रकार के संगठन का निर्णय लेता है। फिर, एक समुदाय अक्सर व्यक्ति के सम्पूर्ण क्रिया-कलाप को प्रभावित करता है। इसकी सदस्यता भी अनन्य होती है। व्यक्ति एक संघ से अपनी सभी आवश्यकताओं की नहीं, कुछ विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति की अपेक्षा करता है। सामूहिक अस्तित्व के दो स्वरूपों की परिभाषा यही है, किन्तु मुख्य भेद उन शक्तियों से संबंध रखता है जो इन्हें आपस में बाँध कर रखता है। समुदाय व्यक्ति के ज्ञान और भावना पर आधारित होता है। संघ सदस्यों द्वारा परिभाषित हित के बारे में तर्क युक्त सहमति पर निर्भर रहता

है। लोग स्वेच्छा से संघ के सदस्य बनते हैं और वर्ण,परिवार जैसे समुदाय की सदस्यता जन्म के आधार पर होती है। व्यक्ति एक परिवार और वर्ण में ही जन्म लेता है, लेकिन संघ के साथ ऐसा नहीं होता। किसी राजनीतिक दल से कोई जन्म से नहीं बंधा होता। व्यक्ति पर संघ की सदस्यता बाध्य नहीं होती।

ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ समुदाय और संघ एक-दूसरे का स्वरूप और कार्य ग्रहण कर लेते हैं। वर्ण जाति में समुदाय के सभी लक्षण हैं। लेकिन कुछ विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे जाति संघ बना सकते हैं। ऐसे बहुत से संघ शिक्षा संस्थाओं में स्थान और सरकारी नौकरियों में आरक्षण की माँग करते हैं। राजनीतिक दल जैसे संघ और संगठन अपनी लक्ष्य की पूर्ति के लिए समुदायों का उपयोग करते हैं। बहुत से राजनीति दल, परिवार, जाति, वर्ण, और धर्म को प्रधानता देते, हैं। समुदाय की भावना से संघ को अक्सर अधिक मान्यता मिल जाती है। बदले में संघ से समुदाय को एक संगठन का लाभ होता है, जिससे सामाजिक आदान-प्रदान और सुविधाओं की प्राप्ति में सहायता मिलती है।

> आपके क्षेत्र में सक्रिय किन्हीं दो ऐसे संघों के नाम बताइये जो जाति पर आधारित हैं।

व्यक्ति अनेक स्तरों पर सम्मिलित होते हैं और आपस में सहयोग करते हैं। परिवार एक मूल इकाई के रूप में सर्व व्यापक है यह सभी समाज में और विकास के सभी स्तर में होते हैं। परिवार एक संस्था ही है, लेकिन यह व्यक्ति और समाज दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह शिशु, बूढ़े, और अक्षम सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करती है। भारत में संयुक्त परिवार सामाजिक आधार के रूप में काम करता है। सम्मिलित रहन-सहन, आपसी सहायता और सहयोग की भावना को सुदृढ़ करता है, जो एक स्वस्थ समाज के लिए महत्त्वपूर्ण है। अपने गुरुजनों के अवलोकन से शिशु संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठकर व्यापक उद्देश्यों के बारे में सोचता है। पारिवारिक वातावरण के प्रारंभिक ढाँचे में व्यक्ति का स्वभाव अपना रूप ग्रहण करता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में यह पाया है कि व्यक्ति का मूल स्वभाव शिशु काल के आदि अनुभवों से सुदृढ होता है। महात्मा गाँधी, लेनिन और इन्दिरा गाँधी जैसे प्रभावशाली नेताओं की राजनीतिक शैली का विश्लेषण उनके बाल्यकाल के अनुभवों के आधार पर किया गया है। समाजशास्त्रियों द्वारा समाजों में बच्चों के लालनपालन के अध्ययन को उचित महत्व दिया जाता है। व्यक्ति को प्राधिकार की व्यवस्था का प्रथम अनुभव परिवार में ही होता है। आज्ञापालन का आधार और अवज्ञा के परिणाम का ज्ञान परिवार में प्राधिकार युक्त लोगों से होता है। समाजीकरण की इस सामान्य प्रक्रिया के अलावा, राजनीतिक व्यवस्था के बारे में विशेष सूचना परिवार में मिलती है। व्यक्ति को राजनीतिक दृष्टि और विचार के निर्माण में परिवार में राजनीति के विषय में संयोग से या विस्तृत विचार-विमर्श का महत्वपूर्ण असर होता है। निर्वाचन व्यवहार के अध्ययनों से परिवार के महत्त्वपूर्ण योगदान का पता चलता है।

व्यापक दृष्टि से, वर्ण, जाति, और धर्म सम्मिलित अस्तित्व का एक दूसरा स्तर है। ये आदिकालीन तत्व व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, फलस्वरूप कुछ संघ इन पर आधारित होते हैं। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया जहाँ एक ओर इन शक्तियों को अंशतः नष्ट करती है, वहीं ऐसे अवसर भी प्रदान करती है जहाँ राजनीतिक और अन्य लाभ के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। वर्ण भारतीय समाज में एक महत्त्वपूर्ण संस्था है, जिसके ढाँचे में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। साथ ही, संचार सुविधा, शिक्षा के अधिक अवसर, और प्रजातांत्रिक राजनीति जैसी आधुनिकीकरण की कुछ प्रक्रियाओं से वर्ण समूह अधिक संघटित हुए हैं। धर्म पर भी यह प्रक्रिया लागू होती है, जो सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रिया के लिए अक्सर महत्त्वपूर्ण होते हैं। आधुनिकीकरण के अनुरक सिद्धान्त (Linear. Theory) की मान्यता यह है परिवर्तन की प्रक्रिया की एक साफ सुथरी, सीधी, सुनिश्चित रेखा होती है। इस सिद्धान्त ने यह सुझाव दिया कि आदिकालीन तत्व आधुनिकीकरण प्रक्रिया के फलस्वरूप धीरे-धीरे अपना प्रभाव खो देंगे। विद्वानों में यह सिद्धान्त अब मान्य नहीं रहा। समाज पर आधुनिकीकरण का प्रभाव जटिल है।

संघ के विविध रूप और आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था

व्यक्ति अपनी विशेष आवश्यकताओं की तुष्टि के लिए कई संघों का निर्माण करता है। संगीत प्रेमी संगीत क्लब के सदस्य हो जाते हैं। जिन्हें खेलकूद पसन्द है वे क्रीडा क्लब बना लेते हैं। जो किसी विशिष्ट विचारधारा को वरीयता देते हैं उनके लिए कुछ राजनीतिक समूहों की सदस्यता अर्थ रखती है।

किसी विशेष व्यवसाय में लगे लोग व्यावसायिक संघ की स्थापना करते हैं। ऐसे समूहों की सूची का कोई अन्त इसलिए नहीं है कि विभिन्न व्यक्तियों की आवश्यकताएँ पृथक-पृथक होती हैं। लेकिन इन ऐच्छिक संस्थाओं की यह बात सामान्य है कि स्वेच्छा से ही लोग इसके सदस्य बनते हैं। ऐसी संस्थाओं के सदस्य होने के बाद वे चाहें तो अपनी सदस्यता वापस ले सकते हैं।

राज्य को भी राजनीतिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक संघ की दृष्टि से देखा जा सकता है। लेकिन राज्य का क्षेत्राधिकार अपने भूभाग में सर्वव्याप्त होता है। उस भूभाग में रहने वाले सभी लोग अनिवार्य रूप से उसके सदस्य होते हैं। उससे बाहर रहना उनकी इच्छा पर निर्भर नहीं है। व्यक्ति एक साथ अनेक संघों का सदस्य हो सकता है लेकिन राज्य की सदस्यता एक मात्र राज्य तक ही सीमित रहती है। राज्य का कार्यक्षेत्र भी व्यापक होता है। संघ का क्षेत्र सीमित रहता है। राज्य विभिन्न संघों के कार्यों में समन्वय स्थापित करता है। राज्य अक्सर एक उच्च संघ की तरह समाज में दूसरे संघों की गतिविधियों का निरीक्षण करता है। अर्नेस्ट बार्कर का मत है कि "जीवन के सामान्य और समाविष्ट आयोजन के अधिकारी के रूप में राज्य का यह एक आवश्यक कार्य है कि विभिन्न संघों का संबंध राज्य के साथ, आपस में और अेनक सदस्यों के अनुकूल बनाये रखें।"

संघ विभिन्न उद्देश्यों के लिए बनाए जा सकते हैं। ये विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं जैसे आर्थिक, सामाजिक, शिक्षा संबंधी, सांस्कृतिक, मनोरंजन संबंधी और व्यावसायिक। कुछ और संघ राज्य जैसे शक्तिवान तत्वों द्वारा प्रेरित होते हैं, जिनका काम सामान्य या किसी विशेष विषय पर जनमत संगठित करना होता है। कुछ संघ किसी विशेष विचारधारा से प्रतिबद्ध हो सकते हैं, और अपने विचार के लिए लोगों का समर्थन पाने का प्रयास कर सकते हैं। राजनीतिक दल लोगों का समर्थन पाने के लिए उनके समक्ष अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। फिर, कुछ संघ मुख्यत: कल्याण कार्यक्रम से प्रेरित होते हैं। रेडक्रास, शारीरिक अक्षमता, समाज, अंध निवारण संस्था, पशुओं के प्रति क्रूरता निवारण संस्था आदि कल्याणकारी संगठन के कुछ उदाहरण हैं। समान हितवाले लोग हितसमूह का निर्माण कर सकते हैं। ये संघ सदस्यों के पक्ष में लोकनीति और सरकारी प्रक्रिया को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। इसी कार्य के आधार पर इन्हें दबाव समूह की संज्ञा दी जाती है। वस्तुत: सांस्कृतिक, मनोरंजन संबंधी, और कल्याणकारी समूह भी कभी-कभी दबावसमूह की तरह काम करते हैं। राजनीतिक दल का लक्ष्य इससे भिन्न होता है। दल अपने राजनीतिक कार्यक्रम के आधार पर सत्ता प्राप्त करना चाहता है। हित समूह और दबावसमूह का लक्ष्य सीमित होता है। ये किसी विचारधारा को वरीयता दे सकते हैं, और कुछ समूहों में ऐसा होता भी है। लेकिन इस आधार पर सत्ता प्राप्त करना इनका ध्येय नहीं होता। ये अपने सदस्यों के हित में सरकार पर दबाव डालने तक ही अपने कार्य को सीमित रखते हैं। ये विधायिका जैसी राजनीतिक संस्थाओं को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने का प्रयास कर सकते हैं, पदासीन लोगों पर, जैसे अधिकारी, दबाव डाल सकते हैं। हित समूह और दबावसमूह सरकार में निर्वाचित पद पर बैठना नहीं चाहते। लेकिन निर्णय लेने वाली संस्थाओं में इनके प्रवक्ता पदासीन हो सकते हैं। कुछ समूह अपने कार्य की परिभाषा सरकार पर दबाव डालने के रूप में ही करते हैं। अन्य समूह ऐसे होते हैं जो सरकारी निर्णय पर दबाव डालने के अलावा कुछ दूसरे कार्य भी करते हैं। भारतीय उद्योग एवं वाणिज्य संघ (Federation of Indian Chamber of Commerce and Industry) ऐसी ही व्यापक कार्यों वाली संस्था है।

आधुनिक युग में विशेष प्रयोजन के लिए बने समूहों के महत्व में वृद्धि हुई है और फलस्वरूप इनकी संख्या भी अधिक हुई है। दूर संचार के साधनों के कारण लोगों में संपर्क का दायरा बढ़ गया है। यूनान के नगर राज्य या भारतीय गांवों जैसे सरल समाजों की तरह ये सीमित नहीं हैं। इनमें बहुत से संपर्क किसी विशेष स्थिति या संदर्भ के लिए होते हैं। ये संपर्क संपूर्ण नहीं आंशिक होते हैं। ये आंशिक और अस्थाई संपर्क शहरीकरण की वृद्धि से और अधिक हुए हैं। शिक्षा जैसे परिवर्तन से शहरी लोगों में अपने हित के प्रति अधिक जागरूकता आई है। इससे अपरिचित भी आपस में मिल जाते हैं। आधुनिक युग में लोगों की जिंदगी में अफरा-तफरी बहुत अधिक है जो दिनों-दिन मशीनी होती जा रही है। इस स्थिति में संघ एक दूसरे को प्रभावित करने के अवसर प्रदान करता है। जो लोग एक संघ में सम्मिलित होते हैं उनके हित समान होते हैं, जिस आधार पर वे एक नजदीकी सामाजिक समूह का रूप धारण कर लेते हैं। उनमें एक साथ होने की भावना आ जाती है।

संघ सदस्यों के अनुसार ही काम करते हैं। जब व्यक्ति आधुनिक औद्योगिक समाज में संक्रामित अनुभव करता है, तो संघ उनके लिए आत्म-अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है।

आधुनिक राज्य के बढ़ते हुए क्षेत्र और अधिकार के कारण भी ये मध्यस्थ समूह आवश्यक हो गये हैं। प्रजातंत्रीकरण की प्रक्रिया से व्यक्ति का महत्व तो बढ़ा है, लेकिन साथ ही वह राज्य के विराट रूप से आतंक महसूस करता है। अपने मूल हित के संदर्भ में संगठित होकर लोग सामूहिक रूप से राज्य का सामना कर सकते हैं। राज्य के हाथ मे सत्ता के केंद्रीकरण में वृद्धि के समक्ष संगठित समूह व्यक्ति के लिए बचाव का काम करते हैं। संगठित समूह बहुत से हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, और विचारधारात्मक। समूह जब समुच्चय के प्रतिनिधि के रूप में राज्य के सामने मांग रखते हैं तो ये प्रभावकारी होते हैं। कुछ समुदाय यह सोच सकते हैं कि समाज में प्रचलित अन्यायों का प्रतिरोध होना चाहिए। इसके लिए एक संगठन का निर्माण लाभकारी हो सकता है। भारत में दलितों का समूह इसका उदाहरण है। इस तरह के समूह, उस समुदाय के हित का ध्यान रखते हैं और उनकी रक्षा अधिक प्रभावकारी रूप से करते हैं। सरकारी निर्णय में ऐसे समूहों की बहुत सी मांगों को समायोजित करना पड़ता है। समूहों का एक और कार्य होता है, सरकार और लोगों के बीच कड़ी की तरह काम करना। आधुनिक प्रजातांत्रिक राज्य समय-समय पर होने वाले चुनाव में लोक सहभागिता के आधार पर ही वैधता सुनिश्चित करते हैं। इस सहभागिता का महत्व समझना लोगों को आवश्यक है। उनमें यह भावना होनी चाहिए कि उनकी सहभागिता प्रभावकारी है। चुनाव की तरह लोक सहभागिता के साधन से सीधे संबद्ध करने की दृष्टि से राज्य एक सुदूर संस्था है। मध्यस्थ समूह व्यक्ति और राज्य के बीच कड़ी का काम करता है। समूह एक ओर लोगों की अभिलाषाओं और मांगों को सरकार तक पहुँचाते हैं और साथ ही लोगों में सरकारी निर्णय को स्पष्ट करते हैं। यह स्पष्टीकरण अभिव्यक्ति की ऐसी भाषा में होते हैं जिससे लोग आसानी से उन निर्णयों के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकें।

मध्यस्थ समूह राज्य और सरकार के कार्य के विभिन्न स्तरों के लिए उपयोगी हैं। विभिन्न हितों, कार्यों, मतों, और विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले समूहों के माध्यम से काम करने में राज्य को आसानी होती है। व्यक्ति कई स्तरों पर सम्मिलित होते हैं। किसी विशेष लक्ष्य प्राप्ति के लिए छोटे समूह मिलकर बड़े समूह का निर्माण कर सकते हैं। मजदूर संघ किसी विशेष मजदूर समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। सभी उद्योगों में ऐसे संघ होते हैं और किसी-किसी उद्योग में तो एक से अधिक संघ होते हैं। फिर, कुछ संघ मिलकर बड़ी संस्थाएँ बनाते हैं, जैसे भारतीय राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस, भारतीय मजदूर कांग्रेस, भारतीय मजदूर संघ, हिन्द मजदूर संघ, सेंटर आफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स (सीटू) आदि। इस तरह के कई अखिल भारतीय संघ हैं। फिर, ये बड़े समूह विभिन्न विचारधाराओं में विश्वास रखने वाले राजनीतिक दलों से संबद्ध होते हैं। अखिल भारतीय संघ (एटक) का संबंध भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से है, भारतीय मजदूर कांग्रेस को कांग्रेस पार्टी का समर्थन प्राप्त है, और भारतीय मजदूर संघ भारतीय जनता पार्टी से संबद्ध है। ऐसे सभी समूह किसी न किसी राजनीतिक दल से जुड़े होते हैं। विभिन्न स्तरों पर हितों को इस तरह मिलाने की प्रक्रिया सरकार के लिए सुविधाजनक होती है। अगर समस्त जनसंख्या की अनगिनत माँगें सरकार के समक्ष सीधे प्रस्तुत की जाएं, तो इनके परिमाण मात्र से सरकारी तंत्र का कार्य ठप हो जाएगा। फिर, इन मांगों में विभिन्न स्तरों पर प्रतिस्पर्धा और विरोध रहता है। इसलिए सरकार के सामने प्रस्तुत करने से पहले उन्हें छाँटना आवश्यक हो जाता है। ये महत्वपूर्ण कार्य मध्यस्थ समूह ही करते हैं, जिससे सरकारी तंत्र, डेविड ईस्टन के शब्दों में, "अतिभार" (Overload) से बच जाता है निर्णय लेने वाली संस्थाओं तक पहुँचने से पहले मध्यस्थ समूह विभिन्न माँगों की प्रस्तुति के लिए "तैयार करते हैं" (process) और "विरोधों को छाँट लेते हैं" (sorted out)। इस तरह माँग और उनमें आपसी विरोध, संख्या और जटिलता, दोनों दृष्टियों से संचालनीय हो जाते हैं।

इस संबंध में माँगों की अभिव्यक्ति का प्रकार और सरकारी संस्थाओं द्वारा निश्चित की हुई कार्यविधि का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संस्थाओं से ही सरकार संगठित होती है। सरकार की तीन मुख्य शाखाओं के बारे में तो हम जानते ही हैं, विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। इनके विभिन्न कार्य हैं और उन कार्यों के लिए उपयुक्त कार्यविधि निश्चित की गई है। मध्यस्थ समूहों को इन संस्थाओं और उनकी कार्यविधि की पूरी जानकारी होती है,

जिसका ध्यान वे किसी विशेष हित का प्रतिनिधित्व करते समय रखते हैं। विधायिका के सामने जो मांग रखी जाएगी और उसके लिए जो कार्य विधि आवश्यक है, वह न्यायपालिका के समक्ष मांग प्रस्तुत करने से सर्वथा भिन्न होगी। मांगों के "स्वरूप" और "कार्यविधि" की दृष्टि से समूह उन्हे छांटते हैं और यह भी देखते हैं कि वे उपयुक्त हैं या नहीं। यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। वस्तुत: सरकार यह चाहती है कि समूह लोगों को न सिर्फ संस्थाओं और कार्यविधि के बारे में बल्कि उनके औचित्य और मूल्य के बारे में भी सूचना दे और शिक्षित करें।

भारत जैसे विकासशील देश के लिए विभिन्न प्रकार की संस्थाओं की विशेष आवश्यकता है। इस तरह के देशों में प्रजातांत्रिक संस्था अपेक्षाकृत नई हैं, जिसमें मध्यस्थ समूह लोक सहभागिता को विभिन्न प्रकार से अर्थपूर्ण बनाते हैं। इन सब की चर्चा पहले की जा चुकी है। इन समाजों में विभिन्न प्रकार की असमानताएं भी हैं जो अक्सर चरम स्थिति में होती हैं। आधुनिक प्रजातांत्रिक व्यवस्थाओं द्वारा घोषित "खुली प्रतियोगिता" वस्तुत: असमान प्रतियोगिता सिद्ध होती है। इस स्थिति में समूह और संघ सामाजिक न्याय की प्राप्ति में उपयोगी होते हैं। विकासशील देशों में राज्य कई संघ और ऐच्छिक संस्थाओं को अपने कार्य के अनुपूरक के रूप में देखते हैं। भारत में सरकार सहकारी संस्थाओं का समर्थन करती है और उनकी सहायता भी करती है। वे महत्त्वपूर्ण आर्थिक कार्य करते हैं। चीनी और दूध जैसी चीजों के उत्पादन का वे एक अनिवार्य हिस्सा बन गए हैं।

ये संस्थाएं उस समय समस्या उत्पन्न करती हैं जब ये सत्ता और निष्ठा के स्वतंत्र केंद्र का रूप ले लेती हैं। इसी कारण संघ और ऐच्छिक संस्थाओं के मार्गदर्शन और उन पर नियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया जाता है। आधुनिक समाज में संघ और समूह द्विविधा की स्थिति में हैं।

निष्ठा की प्रमुखता का प्रश्न

कुछ ही लोग संघ और अन्य मध्यस्थ समूह के सदस्य होते हैं, जिनकी कुछ मांगों का ध्यान ये रखते हैं। सदस्यता की दृष्टि से ये अपूर्ण तो हैं ही, साथ ही उनके हितों का एक हिस्सा ही उनका उत्तरदायित्व होता है। वे लोगों के विशेष समूहों और उनके विशेष हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हीं के लिए उत्तरदायी होते हैं। लेकिन बहुत से संघों का संबंध ऐसी निष्ठा और मांगों से होता है जो लोगों की भावना से घनिष्ट रूप से जुड़े होते हैं। ऐसे संघ और समूह भी होते हैं जिनकी निष्ठा वर्ण, धर्म, जनजाति, भाषा, और क्षेत्र पर आधारित होती है। समाज में व्यावसायिक संघ और हित-समूह भी होते हैं। ये निष्ठा प्रधान होते हैं जिनसे लोगों का लगाव होता है। यह लगाव व्यक्ति में प्रारंभ से ही होते हैं और लोग इनसे पूर्ण परिचित होते हैं। संघ और समूह के प्रति निष्ठा में परस्पर विरोध कई स्तरों पर हो सकता है और होता भी है। निष्ठा का द्वंद्व सर्वप्रथम व्यक्ति के अपने स्तर पर होता है। विविध हितों के लिए व्यक्ति कई संघों का सदस्य होता है। एक व्यक्ति एक ही समय में वर्ण पर आधारित संघ, क्षेत्रीय संघ, मनोरंजन संघ, कल्याण संगठन, और विचारधारा आदि का सदस्य हो सकता है। इन विविध निष्ठाओं को व्यक्तिगत स्तर पर तर्कपूर्ण तरीके से व्यवस्थित करना पड़ता है। विभिन्न निष्ठाएं एक दूसरे के विरोधी हो सकती हैं।

संघ और समूह आपस में सम्मिलित होकर बड़े संघ और संगठन बनाते हैं। मजदूर संघों का विभिन्न विचारधाराओं में विश्वास रखने वाली राजनीतिक पार्टियों के साथ जुड़े होने का उदाहरण पहले ही दिया गया है। समूह विभिन्न स्तरों पर काम करते हैं और इनके अपने प्रतिबंध और अपनी विवशताएं होती हैं। एक उद्योग में काम करने वाले मजदूरों के हित की सुरक्षा में लगे मजदूर संघ, ऐसे संगठनों का संघ, और जिन राजनीतिक दल से ये जुड़े होते हैं, इन तीनों स्तरों पर विभिन्न प्रकार के सोचविचार को ध्यान में रखना पड़ता है। संघ और संगठन के क्षेत्र के विस्तार के साथ ही, समस्याओं के महत्व में भी विस्तार होता है। एक दृष्टिकोण से जो तर्कपूर्ण स्थिति मालूम पड़ती है, वह दूसरे स्तर में नहीं भी हो सकती है। विभिन्न स्तरों के कार्यों को एक तर्कपूर्ण दृष्टि से सजाना आसान काम नहीं। कौन सा स्तर मुख्य है और कौन सा गौण? किन स्थितियों को दूसरों की अपेक्षा प्राथमिकता दी जाए? पूर्णतया तर्कसंगत और युक्तिपूर्ण दृष्टिकोण आसान नहीं होता है। संगठनों के इस तरह जुड़ी हुई कड़ी में व्यक्ति, किसे अपनी प्राथमिक निष्ठा प्रदान करे? व्यक्ति की दृष्टि से संगठन का जो स्तर उसके सबसे नजदीक है, वही महत्वपूर्ण है। लेकिन संगठन की दृष्टि में संगठन जिस उच्चतम स्तर से जुड़ा है वही औचित्य प्रदान करता है। इसलिए प्राथमिक निष्ठा का पात्र वही है।

राज्य के प्रति निष्ठा की दृष्टि से इस तरह के द्वंद्व विशेष महत्व के होते हैं। राज्य अपने नागरिकों से अटल निष्ठा की आशा करता है। राज्य के प्रति असीमित निष्ठा इसका आदर्श और सभी प्रकार की निष्ठा इसकी अनुगामी होनी चाहिए। लेकिन ऐसे भी उदाहरण देखने में आते हैं जब अन्य निष्ठाएं अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। भारत में कुछ धार्मिक समूह ऐसे है जो धार्मिक निष्ठा को अधिक महत्व देते हैं। कुछ क्षेत्रीय निष्ठाएं राज्य से श्रेष्ठ होने का दावा करती हैं। कुछ जातीय संघों ने अपना पृथक अस्तित्व कायम करने का प्रयास किया है।

निष्ठा में ये टकराव उन देशों में अधिक दिखाई पड़ते हैं जिन्हें क्लीफोर्ड गर्टज् ने "पुराना समाज और नया राज्य" की संज्ञा दी है। एशिया, अफ्रीका, और लैटिन अमेरिका के जो देश वर्तमान शताब्दी के उत्तरार्ध में स्वतंत्र हुए हैं, वे बहुत दिनों तक उपनिवेशवादी शासन के अधीन रहे हैं। उपनिवेशिता की अवधि में, सत्ता में सरकार द्वारा जाति, वर्ण, धर्म, और भाषा जैसे समाज में विभाजन के तत्वों को अधिक महत्व दिया गया। यह "फूट डालो और राज्य करो" वाली नीति का ही एक हिस्सा था। उपनिवेशों में इन विभाजक निष्ठाओं पर जोर देने का योजनाबद्ध प्रयास किया गया। एक विदेशी राज्य के लिए किसी प्रकार की स्वाभाविक निष्ठा के अभाव में पृथकतावादी निष्ठा प्रबल हो गई। उपनिवेशवादी शासन ने इन देशों का विकास सतत अपूर्ण रखा और आधुनिकीकरण की शक्तियों का परंपरावादी संस्थाओं पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ सका। फिर जब लम्बे समय तक चलने वाले राष्ट्रवादी संघर्ष के बाद इन "नए राज्यों" का निर्माण हुआ, तो यही विभाजक तत्व सामने आए। भारत को सांप्रदायिक समस्या का सामना करना पड़ा, और कई दशकों के अविरल विरोध के बावजूद उसका पूर्ण हल नहीं निकल पाया है। राज्य जिन कार्यविधियों और संस्थाओं की सहायता से प्रजातांत्रिक व्यवस्था कायम करना चाहते थे, वह लोगों के लिए अपेक्षाकृत नयी थी। एक तरफ परंपरावादी संस्था के लिए निष्ठा पूर्ण संस्थापित थी, और दूसरी ओर प्रजातंत्र की नई संस्थाएं और कार्यविधि लोगों की निष्ठा की तलाश में थीं। इस प्रक्रिया में अक्सर प्रक्रियाओं ने परंपरावादी निष्ठाओं को और सुनिश्चित किया। स्वतंत्र भारत में चुनाव की राजनीति का कुछ ऐसा ही प्रभाव हुआ।

विभिन्न स्तरों पर काम कर रहे संगठनों की निष्ठा में समन्वय स्थापित करने के लिए राज्य सर्वोच्च स्थिति में होता है। लेकिन निष्ठाओं को उपयुक्त अनुक्रम में रखने का उत्तरदायित्व इन संगठनों के ऊपर भी है।

प्रारंभिक स्तर पर संघों की नई अवधारणा

किसी भी समाज और राज्य के लिए ऐच्छिक संस्थाएं एक संपत्ति मानी जाती हैं। सामाजिक प्रक्रिया के ऐसे कई मूल्यवान क्षेत्र हैं जिनमें ऐसे संघों का महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है। भारत के सर्वत्र सम्मानित ऐसे कई व्यक्ति हैं जो ऐच्छिक संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। इनमें विशिष्ट नाम हैं, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, और मदर टेरेसा। राज्य ऐच्छिक संस्थाओं को स्वीकार करने, उनकी शुरूआत करने और सहायता देने के लिए अक्सर बहुत उत्सुक हैं।

भारत में ऐच्छिक संघों का इतिहास 1860 से शुरू होता है, जब गैरकानूनी संस्थाओं को पंजीकृत करने के लिए एक व्यापक कानून बनाया गया। यह कानून था संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860। ऐसी संस्थाओं को कानूनी हैसियत देने के लिए दूसरे संविधि बाद में आए: भारतीय ट्रस्ट अधिनियम, सहकारी संस्था अधिनियम, धर्मार्थ और दान संस्था अधिनियम, कम्पनी अधिनियम 1956, और बम्बई धर्मार्थ ट्रस्ट अधिनियम। विस्तृत सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय आन्दोलन के समय ऐच्छिक संस्थाओं ने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए जैसे शिक्षा को प्रोत्साहन, सामाजिक सुधार, दान कार्य इत्यादि। स्वतंत्रता के बाद ऐच्छिक संस्थाओं की संख्या और उनके कार्य क्षेत्र में वृद्धि हुई। इन्होंने सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन इनका कार्य प्रायः राज्य के माने हुए क्षेत्र और प्रचलित राजनीतिक पद्धति के अंतर्गत ही था। इनके आकार और कार्य की परिभाषा ब्रिटिश शासन के समय 1860 ई० अधिनियम द्वारा की गई थी। साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन की राजनीतिक विचारधारा ने और कई संस्थाओं को जन्म दिया। स्वतंत्रता के बाद ऐच्छिक संस्थाओं के संगठन और उनके कार्य भी प्रचलित राजनीतिक प्रक्रिया और विकास के कार्यक्रम में सम्मिलित हो गए। 1970 ई० तक राजनीतिक संस्थाओं और विकास कार्यक्रमों की प्रक्रियाओं को अविश्वास की दृष्टि से देखा जाने लगा। "वैकल्पिक विकास" की चर्चा होने लगी और प्रारंभिक स्तर पर कुछ नई संस्थाओं का जन्म हुआ। इस प्रसंग के विचारों की चर्चा नीचे की जा रही है।

राज्य और सरकार के बनाने में चाहे जो भी राजनीतिक

प्रक्रिया और संस्था सक्रिय हों, सत्ता संघर्ष का क्रम कुछ ऐसा होता है जिससे संस्था या जनता, किसी का हित नहीं होता। सत्ता की प्राप्ति ही मुख्य उद्देश्य हो जाता है। इस प्रक्रिया में असमान समाज से जो नेतृत्व उभर का आता है, वह अनन्य रूप से समाज के ऊंचे वर्ग का ही होता है। इन सामान्य प्रक्रियाओं के अलावा, कांग्रेस पार्टी जैसी संस्थाओं के क्रमिक क्षय से भी वर्तमान भारतीय राजनीति से मोहभंग हुआ। विकास की प्रक्रिया और कार्यक्रम को असमानताओं को बनाए रखने के रूप में देखा गया, उन्हें घटाने की दिशा में नहीं। विकास का प्रचलित प्रतिमान पुरानी समस्याओं को हल करने के क्रम में नई समस्याओं को जन्म देता है, जिससे सामाजिक और आर्थिक कल्याण को खतरा हो जाता है। वस्तुत: वर्तमान राजनीति की प्रकृति और विकास का प्रचलित प्रतिमान एक दूसरे को सुदृढ़ करते हैं। इस तरह "राजनीतिक पद्धति" का अर्थ है *असमान सामाजिक समूहों में सत्ता के लिए संघर्ष।* और "विकास की पद्धति" का अर्थ है समाज के उच्च वर्ग के नेतृत्व में विकास के कार्यक्रम। इन दोनों के बारे में लगातार संदेह व्यक्त किया गया है।

"राजनीतिक पद्धति" की और "विकास की पद्धति" की आलोचना की पृष्ठभूमि में कुछ जन-आन्दोलन जनता को व्यापक और विशेष, दोनों प्रकार के विषयों पर संगठित करने की आवश्यकता पर जोर देते हैं। ऐसी बहुत सी संस्थाएं स्वत: प्रवर्तित हैं, और इनका कोई औपचारिक संगठन भी नहीं है। इनका कार्यक्रम कई सवालों पर हो सकता है, जैसे अणुविरोधी शांति आंदोलन, पर्यावरण की रक्षा, कुछ वर्ग विशेष जैसे नारी के लिए आवश्यक अधिकार। उत्तर प्रदेश के पहाड़ों में चलाया गया "चिपको आंदोलन" इसका एक अच्छा उदाहरण है, जिसका मुख्य उद्देश्य है पहाड़ों पर पेड़ों को काटने से बचाना और पारिस्थिकीय संतुलन (Ecological Balance) बनाये रखना। ये संघ इस अर्थ में भिन्न हैं कि ये सार्वजनिक नीति को प्रभावित करने का प्रयास तो करते हैं, लेकिन सत्ता के पद के लिए प्रतियोगिता में शामिल नहीं होते। ये "सत्ता के संघर्ष" के बाहर हैं। शांति आंदोलन, नारी आंदोलन, और पारिस्थिकीय संतुलन आंदोलन समूह के अलावा एक और क्षेत्र जिसमें इस तरह के आंदोलन प्रमुख रहे हैं, वह है मानव अधिकार की सुरक्षा।

> महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले किसी एक भारतीय संगठन का पता लगाइये। यह भी पता लगाइये कि पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने कौन कौन से मुद्दे उठाए हैं।

ये वैकल्पिक दृष्टिकोण गरीबी जैसी सामाजिक समस्या को समाज में अंतर्निहित कारणों की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए विकास के बावजूद, ऐसा हो सकता है कि गरीबी में कोई कमी न हो पाए। वस्तुत: ऐसा देखने में आया है विकास और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के साथ-साथ गरीबी और व्यापक हो गई है। इसलिए दलित, जनजाति, गरीब, नारी, अल्पसंख्यकों के प्रति आशंकित समूह जैसे "लक्ष्य समूह" को सम्मिलित कारवाई के लिए संगठित किया जाए। ये वैकल्पिक संगठन सतत नई समस्या प्रकाश में लाते हैं और नए समूहों को कारवाई के लिए संगठित करते हैं। लक्ष्य, संगठन और कार्य इन सभी दृष्टियों से ये संगठन भिन्न हैं।

कुछ करने को

आपने अपने विद्यालय, कस्बे या नगर में कार्यरत भिन्न-भिन्न संघों जैसे अध्यापक-संघ, जाति-संघ इत्यादि के बारे में अवश्य सुना होगा। अपने अध्यापक की सहायता से एक ऐसे संघ का अध्ययन कीजिए। संघ का अध्ययन करते समय निम्नलिखित बातों पर विचार कीजिए:

(क) इसका किसी राजनीतिक दल से सम्बन्ध।

(ख) इस संघ के लक्ष्य और उद्देश्य।

(ग) इस संघ की गतिविधियाँ तथा यह संघ किस प्रकार के कार्य करता है?

(घ) यदि अध्यापक-संघ का अध्ययन करें तो इस संघ ने हाल ही में अध्यापकों की सेवा शर्तों जैसे मुख्य मुद्दों पर किस प्रकार कार्य किया। इन मुद्दों का अनुसरण करते समय इस बात का भी अध्ययन करें कि इस संघ ने किन पद्धतियों का प्रयोग किया तथा यह संघ किसी सीमा तक अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल हुआ।

अभ्यास

1. समुदाय और संघ में भेद कीजिए।
   समुदाय कब और किस प्रकार एक संघ के रूप में कार्य करता है?
2. आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में दबाव समूहों की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए तथा राजनीतिक दलों से उनका भेद स्पष्ट कीजिए।
3. विकासशील समाज में ऐच्छिक संघों के महत्व का वर्णन कीजिए।
4. संघ की परिभाषा कीजिए और राज्य तथा अन्य संघों में भेद बताइये।
5. पाँच विभिन्न प्रकार के संघ बताइये और सामाजिक जीवन में उनकी भूमिका का वर्णन कीजिए।
6. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (क) अर्ध-समूह
   (ख) परिवार के मुख्य कार्य
   (ग) प्रारम्भिक स्तर पर संघ
   (घ) निष्ठाओं में संघर्ष।

अध्याय 4

राज्य और सरकार

राज्य अपने भूभाग और जनता के ऊपर संप्रभुता से संपन्न होता है। अपनी इस सत्ता का उपयोग सरकार के द्वारा प्रभावकारी ढंग से किया जाता है। सरकार राज्य की ही प्रतिनिधि है। विद्वानों ने सरकार के विभिन्न स्वरूपों की चर्चा की है और इनमें से अनेक रूप विभिन्न देशों द्वारा अपनाए भी गए हैं। सरकार के स्वरूप का सही वर्णन उस देश के संविधान में होता है। संविधानवाद का विचार सरकार द्वारा सत्ता के उपयोग के लिये संगठन को ब्योरेवार तैयार करने का तरीका बताता है और साथ ही नागरिकों की स्वतंत्रता भी सुनिश्चित करता है।

राजनीतिक प्रक्रिया की व्यापक परिभाषा ने एक नये शब्द, राजनीतिक व्यवस्था, को प्रवर्तित किया है। इसमें सरकारी संगठन और राजनीतिक प्रक्रिया की संस्थाओं के आपसी संबंधों का समन्वय किया गया है। राज्य, सरकार और राजनीतिक व्यवस्था, ये तीनों शब्द संस्थाओं के कार्य के विभिन्न स्तरों की ओर संकेत करते हैं। इन नए शब्दों के प्रयोग से राजनीति के विद्वानों का यह प्रयास रहा है कि राजनीति के सार का पता लगाएं और इसकी परिभाषा को और व्यापक बनाएं। इस सिलसिले में मानव ज्ञान की दूसरी शाखाओं की सूक्ष्मदृष्टि से राजनीति विज्ञान लाभान्वित हुआ है।

राज्य और सरकार

राज्य और सरकार प्रायः समानार्थक रूप से प्रयोग किये जाते हैं। राज्य सामाजिक संबंधों और संस्थाओं की व्यापक आकृति का प्रतिनिधित्व करता है, और सरकार उसका एक अंग है। हमने ऊपर राज्य के लक्षणों की चर्चा की है, जिसमें भूभाग और जनता भी शामिल हैं। राज्य अपनी संप्रभुता का इन्हीं के संदर्भ में प्रयोग करता है। राज्य का मार्क्सवादी विचार संप्रभुता का प्रयोग वर्ग स्वरूप के आधार पर करता है। इस अवधारणा के दूसरे तत्व हैं राज्य पर किन सामाजिक वर्गों का अधिकार है, उनका स्वरूप क्या है और वे किनके हित में कार्य करते हैं। राज्य की अवधारणा इन संबंधों की चर्चा अमूर्त रूप से करती है। लेकिन अपनी संप्रभुता और सत्ता के उपयोग के लिये यह आवश्यक होता है कि राज्य सत्ता के प्रत्यक्ष संबंधों और संस्थाओं के द्वारा अपने को प्रगट करे। संप्रभुता की परिभाषा इस आधार पर करनी पड़ेगी कि "किसको, किस प्रकार की सत्ता किसके ऊपर उपयोग के लिए होनी चाहिए।" इस तरह राज्य मूर्त रूप में हमारे सामने आ जाता है। राज्य के इसी मूर्त एवं प्रत्यक्ष पक्ष का प्रतिनिधित्व सरकार करती है। राज्य लोगों को अपने अस्तित्व का अनुभव सरकार के द्वारा ही करवाता है। सरकार राज्य के कार्य करने का एक उपकरण है। इसका संगठन ऐसे सरकारी पदाधिकारियों के द्वारा होता है जिनका अधिकार क्षेत्र कानूनी ढंग से परिभाषित होता है और जिनके क्रियाकलाप की प्रक्रिया सुनिश्चित होती है। सरकार के आधुनिक स्वरूप में सत्ता और प्रक्रिया की इस परिभाषा को महत्वपूर्ण माना जाता है, इसकी चर्चा हम नीचे करेंगे। विभिन्न संस्थाएं, पदों पर आसीन व्यक्ति, संस्थाओं का संगठन और सत्ता के उपयोग की विधि से ही सरकार की रचना होती है। ऐसा संभव है कि दो राज्यों के लक्षण समान हों, लेकिन सरकार स्वरुप भिन्न हो। सरकारी संस्थाओं के एक ही नाम हो सकते हैं, लेकिन उनकी सत्ता और कार्य की परिभाषा

पूर्ण रूप से भिन्न हो सकती है। सरकार की परिभाषा यह भी निर्धारित करती है कि पदों पर लोगों का निर्वाचन या चयन किस प्रकार हो, और वे कितनी अवधि तक पदासीन रहें। इस तरह भारत में हर पांचवे वर्ष आम चुनाव होते हैं और हर चुनाव के बाद सरकार बनती है। यह सर्वथा संभव है कि एक ही राज्य के अंतर्गत विभिन्न दलों की सरकार सत्ता में आए। संस्थाओं में भी फेरबदल किए जा सकते हैं। परंतु ये परिवर्तन संविधान में संशोधन द्वारा ही किए जा सकते हैं। दूसरी ओर, राज्य के स्वरूप में परिवर्तन अधिक कठिन है। यह कार्य क्रांति द्वारा संभव है, जिस तरह रूस में 1917 में और चीन में 1949 में हुआ। क्रमिक विकास द्वारा भी राज्य में परिवर्तन संभव है, जैसे ब्रिटेन में हुआ। कुछ नये राज्यों की स्थापना विदेशी सरकार को शांतिपूर्ण तरीके से सत्ताच्युत करके की जा सकती है, जैसे 1947 में भारत में हुआ। राज्य के स्वरूप के इस तरह के परिवर्तन के साथ सरकार के स्वरूप में भी परिवर्तन होता है। जब एक नए राज्य की स्थापना होती है तो वह राज्य के स्वरूप की परिभाषा अपनी प्राथमिकताओं के आधार पर करता है। एक बार परिभाषित करने के बाद भी इनमें परिवर्तन किया जा सकता है। इस तरह राज्य सरकार का पूर्ववर्ती है। सरकार के स्वरूप में परिवर्तन राज्य की अपेक्षा आसान है और ऐसा बार-बार हो सकता है। अतः सरकार की अपेक्षा राज्य में अधिक स्थायित्व है।

राज्य की संप्रभुता का अर्थ असीम सत्ता होता है, लेकिन सरकार कानून द्वारा निर्धारित सीमा के अंतर्गत ही सत्ता का उपयोग कर सकती है। कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका जैसी सरकारी संस्थाओं के अधिकारों और कार्यों को संविधान द्वारा परिभाषित किया जाता है। इसी तरह विभिन्न पदों पर आसीन व्यक्तियों की क्षमता का क्षेत्र भी सीमित होता है। जहां एक ओर नागरिकों द्वारा राज्य के विरोध को "राजद्रोह" की संज्ञा दी जाती है, वहाँ दूसरी ओर विरोधी दल एक स्वस्थ प्रजातांत्रिक सरकार का अभिन्न अंग माना जाता है।

राज्य और सरकार अपने कार्य के सिलसिले में प्रायः एक से मालूम पड़ते हैं । फिर भी इन दोनों में प्रभेद आवश्यक और उपयोगी है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जो एक नया शब्द प्रयोग में आया है, वह है राजनीतिक व्यवस्था। इसमें राज्य और सरकार की अवधारणा निहित है। यह इनके क्रियाकलापों और अनेक तत्वों की परस्पर निर्भरता की ओर इशारा करता है।

राजनीतिक व्यवस्था

राजनीति विज्ञान के विद्वानों में अध्ययन क्षेत्र को औपचारिक और कानूनी संस्थाओं तक ही सीमित करने के बारे में बेचैनी रही है। यह धारणा बलवती होती जा रही है कि इन संस्थाओं के निर्माण में सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं जैसे विभिन्न तत्वों का संयुक्त प्रभाव होता है। इसलिए राजनीतिक प्रक्रिया पर बल दिया जाना चाहिए। जिसमें इन तत्वों के जटिल पारस्परिक प्रभाव का पूर्ण ध्यान रखा जाए। इससे राजनीति विज्ञान के अध्ययन को कानूनी और सांविधानिक संस्थाओं तक ही सीमित न रखकर राजनीतिक "प्रक्रिया जहाँ कही भी है" का समावेश किया गया है। इसी बीच सामाजिक — आर्थिक समूहों और विभिन्न क्षेत्रों के राजनीतिक संस्थाओं के कार्यों का ब्यौरा विश्लेषण का मुख्य विषय बन गया है। आनुभविक अध्ययनों द्वारा कार्यों के विशेष क्षेत्रों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। डब्ल्यू.जे.एम. मेकेन्जी के शब्दों में अब यह आवश्यक हो गया है कि सर्वाच्छादन सिद्धांत (Overarching Theory) का प्रतिपादन किया जाए, जिसमें विभिन्न निष्कर्षों और जटिलताओं को विश्वसनीय ढंग से समाविष्ट किया जा सके। सामान्य व्यवस्था सिद्धांत (General Systems Theory) भी इसी प्रकार का ढांचा प्रस्तुत करता है।

व्यवस्था सिद्धांत का संबंध आस्ट्रीया के जीवविज्ञानी, लुडविग बॉन बर्टालनफलाई की कृति से है। यह सिद्धांत विज्ञान को संकीर्ण वर्गों में विभक्त करने के प्रतिवाद के रूप में उभरा और इसने विज्ञानों के एकीकरण पर बल दिया। उपयुक्त अवधारणा और व्यवस्था सिद्धांत की भी चर्चा की गई। यह आंदोलन अपने विस्तार में सिर्फ जीवविज्ञान की अंतर्दृष्टि से ही समृद्ध नहीं हुआ। इसमें मानव ज्ञान की जिन शाखाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा वे हैं, मनोविज्ञान, मानवशास्त्र, गणित और विद्युत प्रौद्योगिकी। अगर हम मात्र रूपरेखा की चर्चा करें, तो व्यवस्था उपागम में यह सुझाया गया है कि पदार्थ और विभिन्न तत्वों के बीच सतत संबंध बना रहता है। इन संबंधों की एक सुनिश्चित आकृति (ढांचा) होती है और ये एक विशिष्ट प्रक्रिया का अनुसरण करते हैं। इस तरह पारस्परिक संबंध के तीन पक्ष हैं, (अ) तत्वों की पहचान, (ब) संबंधों के ढाँचे की रूपरेखा, और (स) उन तत्वों के ढाँचे की विशेष प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन।

राजनीति विज्ञान में व्यवस्था सिद्धांत के प्रयोग से तीन उपागम प्रगट हुए: (अ) संरचनात्मक-कार्यात्मक विश्लेषण (ब) निवेश निर्गमन विश्लेषण (Input-Output Analysis) और (स) संचारण उपागम (Communications Approach)। ब्रिटेन के मानवशास्त्री ब्रोनीसला मेलीनोवस्की और ए. आर. रेडक्लिफ ब्राउन, से आरंभ होकर, संरचनात्मक-कार्यात्मक उपागम राजनीतिशास्त्र में अमरीकी समाजशास्त्री मेरिओन लेवी, टालकॉट पारसन और राबर्ट के मार्टन की कृतियों द्वारा समृद्ध हुआ। ग्रेबीयल आलमंड द्वारा इस उपागम का उपयोग राजनीति विज्ञान में किया गया। जैसा कि इसके शीर्षक से ही स्पष्ट है, इस उपागम के दो मुख्य सूत्र हैं — संरचना और कार्य। "कौन सी संरचना किन अवस्थाओं में कौन से मूल कार्य संपादित करती है," यही इस विश्लेषण की मुख्य विषय वस्तु है। आलोचनाओं के बावजूद, राजनीति विज्ञान में यह एक महत्वपूर्ण उपागम है। डेविड ईस्टन का निवेश निर्गमन विश्लेषण का मुख्य प्रेरणा श्रोत पारसन्स का लेखन ही रहा है। तथापि यह राजनीति तथ्यों के विश्लेषण का सबसे विस्तृत "व्यवस्था निषादन" है। विभिन्न दबावों के अंदर राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया और सरकारी प्राधिकार के आधार पर लोगों से उन्हें मनवाना, इस उपागम में विश्लेषण का मुख्य विषय है। समाज में "मूल्यों का आधिकारिक विनियोजन" राजनीतिक प्रक्रिया कहलाता है। राजनीति विज्ञान में आधुनिक उपागमों के विकासक्रम में डेविड ईस्टन का एक प्रमुख स्थान है। राजनीति विज्ञान में संचारण उपागम का संबंध कार्ल डब्ल्यू. डायच की कृतियों से रहा है। यह उपागम सरकार द्वारा निर्णय लेने की वास्तविक प्रक्रिया का विश्लेषण सूचना-प्रवाह को मूल इकाई मानकर करता है। विभिन्न उपागमों और समाज शास्त्रीयों की कृतियों के आधार पर राजनीति व्यवस्था की अवधारणा के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं:

(अ) राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न घटक एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं और कोई भी घटक पृथक रूप से कार्य नहीं करता। व्यवस्था के किसी भी भाग में हुए परिवर्तन का प्रभाव दूसरे भागों पर और अंत में व्यवस्था पर पड़ता है।

(ब) विभिन्न घटक एक-दूसरे से संबंद्ध तो होते ही हैं, लेकिन अपने आप में भी एक व्यवस्था का रूप ले लेते हैं। इस तरह "व्यवस्था" और "उप-व्यवस्था" की कल्पना की जाती है। इन सीमाओं को अंकित करना और सीमा-पार के विनिमत, ये विश्लेषण के मुख्य विषय हैं। आओ भारतीय राज्य को एक राजनीतिक व्यवस्था मान कर इस उपागम को स्पष्ट रूप से समझें।

एक व्यवस्था के रूप में भारतीय राज्य और इसकी उप-व्यवस्थाएँ

आज के विश्व में सभी देश एक दूसरे पर निर्भर हैं तथा सर्वथा पृथक अस्तित्व नहीं बनाए रख सकते हैं। भारत राष्ट्रों की एक बड़ी व्यवस्था का सदस्य है। वस्तुतः यह इस तरह की कई व्यवस्थाओं का भाग है। यह संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य है और इस पर अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक, जैसी एजेंसिओं का प्रभाव हर समय संभव है। भारत राष्ट्र मंडल (Commonwealth of Nations), दक्षिण एशिया क्षेत्रीय संगठन (SAARC) और गुट निरपेक्षता आन्दोलन, जैसे अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संघों से भी जुड़ा हुआ है। इन संगठनों का सदस्य होने के नाते, भारतीय राज्य को इनकी नीतियों और उद्घोषणाओं को ध्यान में रखना पड़ता है। इन सामूहिक अभिकरणों (एजेंसियों) के अतिरिक्त, अन्य देशों से द्विपक्षीय और बहु-पक्षीय आधार पर भी भारत के संबंध अन्य देशों से हैं। इस तरह भारतीय राज्य अंतर्राष्ट्रीय संघों के विभिन्न स्तरों से जुड़ा है, जिसकी कई परतें हैं और जिसमें विभिन्न प्रकार के संबंध निहित हैं। अपनी नीतियों को मूर्त रूप देते समय इसे जटिल अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण को ध्यान में रखना पड़ता है। भारत जैसे तृतीय विश्व के देशों की नीतियों पर बहुधा अंतर्राष्ट्रीय ऐजेसियों का और अन्य राष्ट्रों का प्रभाव पड़ता है।

भारतीय राज्य विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और इनसे भी अधिक राजनीतिक उपव्यवस्थाओं से संगठित है। इनमें सभी की अपनी, अपनी विशेषताएं हैं। अर्थव्यवस्था के अंदर कृषि और उद्योग जैसे कई क्षेत्र हैं और इनके कई पहलू और प्रक्रियाएं होती हैं। राज्य इन प्रक्रियाओं पर नियंत्रण रखने का प्रयास तो करता है, लेकिन ये राज्य के कार्यों के लिये बहुधा महत्त्वपूर्ण प्रतिबंध सिद्ध होते हैं। इस तरह का प्रभाव उप-व्यवस्थाओं के आपसी संबंधों में भी देखने में आता है। आर्थिक तत्व सामाजिक तत्वों को प्रभावित करते हैं और साथ ही उससे प्रभावित भी होते हैं। आर्थिक क्षेत्र में हुए परिवर्तन, राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण होते हैं। हरित क्रांति से अन्न के उत्पादन में वृद्धि के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में एक

वर्ग का उदय हुआ, जिसका सीधा प्रभाव राजनीतिक शक्तियों के संतुलन पर पड़ा। विभिन्न शक्तियों के पारस्परिक प्रभाव के इस तरह के कई उदाहरण दिए जा सकते हैं।

राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत अनेक उपव्यवस्थाएँ आ जाती हैं। इनमें कुछ हैं - संविधान, संसद, मंत्रिमण्डल, उच्च न्यायालय, राजनीतिक दल, अधिकारी वर्ग, चुनाव व्यवस्था, आदि। इन सबकी अपनी अलग कार्य प्रणाली है और साथ ही ये एक दूसरे से जुड़े हुए भी हैं।

अनेक दबावों और प्रतिबंधों के बीच और अनेक स्तरों पर कार्यरत संस्थाओं और प्रक्रियाओं की भूलभुलैयों में भारतीय राज्य का विश्लेषण सचमुच जटिल है। राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा इन विभिन्न तत्वों के विश्लेषण को साफ सुथरे वैचारिक रूप के स्तरों में सजाने में मदद करती है।

सामाजिक-उपव्यवस्था तथा आर्थिक-उपव्यवस्था से भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाला एक-एक उदाहरण दीजिए।

संविधानवाद और संविधान

संविधानवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मूल स्तंभ रहा है। राज्य और सरकार के क्षेत्र को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में इसका ध्येय यह रहा है कि सत्ता और उसके उपयोग को सीमित किया जाए। राज्य को समाज की संगठित सत्ता का प्रतीक और सरकार को राज्य का एक महत्वपूर्ण अनिवार्य और उपयोगी अंग माना गया है। लेकिन हर समय यह चेतना रही है कि सत्ता सीमित होनी चाहिए और उस पर नियंत्रण आवश्यक है। प्राकृतिक विधि के सिद्धांत (Natural Law) द्वारा राज्य सत्ता पर रोक लगाने पर बल दिया गया है जिससे इस विचार में गति आई है। साथ ही, व्यक्ति की स्वतंत्रता को एक मूल्यवान अवधारणा माना गया है। संविधानवाद ने राज्य सत्ता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में सामंजस्य स्थापित करने के लिये राज्य को संगठित करने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया तथा इसका अर्थ सत्ता का विभाजन और उसके उपयोग में प्रतिरोध है। यह विचार रखा गया कि अगर राज्य का स्वरूप, उसकी संस्थाएं, और कार्यविधि किसी व्यापक विधि के अंतर्गत हों तो राज्य सत्ता स्वयं ही उन विधियों द्वारा सीमित हो जाएगी। चर्च और राज्य के बीच संघर्ष से शुरू होकर, राजा और सामंतवाद के बीच संघर्ष, विभिन्न क्रांतियों (फ्रांस, अमेरिका और सोवियत संघ), तृतीय विश्व के देशों में उपनिवेश शासन की समाप्ति तक, संविधानवाद की अवधारणा की जड़ें गहरी हो गईं। आधुनिक राज्यों के लिए एक संविधान का निर्माण स्वाभाविक हो गया है।

संविधान ऐसे विश्वास की अभिव्यक्ति है जिसमें लोगों की राज्य से आशाएं और भविष्य के लिये उनकी वचनबद्धता सम्मिलित होती है। मानव अधिकारों के 1789 ई० के घोषणा पत्र ने केवल फ्रांस का ही नहीं, उस समय के सभी देशों के संविधानों का मार्ग दर्शन किया है। भारतीय संविधान अपनी प्रस्तावना में घोषणा करता है कि वह एक "संप्रभुता संपन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रीय गणराज्य" है, जो ऐसे ही विश्वास के सिध्दांत की अभिव्यक्ति है। राज्य के नीति निर्देशक सिध्दांत भी ऐसी भावना को व्यक्त करते हैं। संविधान निर्माताओं के एक महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार करते समय की कल्पनाशक्ति की रूपरेखा संविधान में देखने को मिलती है। राज्य के दार्शनिक और वैचारिक ढांचा की स्पष्ट अभिव्यक्ति संविधान में होती है। भारतीय संविधान जब यह कहता है कि उसका अभिप्राय सभी नागरिकों के लिये न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व सुनिश्चित करना है, तो लक्ष्य स्पष्ट हो जाता है। प्रश्न यह है कि इन संकल्पों और दार्शनिक अभिव्यक्तियों को मूर्त रूप कैसे दिया जाय। संथाओं के ढांचे और उनकी कार्यविधि के विस्तार के द्वारा इन्हें सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है। भारतीय संविधान के संदर्भ में, लक्ष्यों को प्राप्त करने के कुछ साधन वयस्क मताधिकार, समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार और सांविधानिक उपचारों के अधिकार हैं। इस तरह संविधान नागरिकों के लिये कुछ अधिकार सुनिश्चित करता है, और साथ ही उनके कर्तव्य भी निर्धारित करता है। भारतीय संविधान के तीसरे भाग में मूलाधिकारों का व्यापक वर्णन किया गया और बयालिसवें संविधान संशोधन ने मूल कर्तव्यों की व्यवस्था की है। सरकारी तंत्र के अधिकार-क्षेत्र की भी परिभाषा की गई है। संविधान में राज्य और लोगों के आपसी संबंध को परिभाषित किया गया है। एक दूसरे से क्या अपेक्षा की जाए, इसका भी पता चलता है। आधुनिक प्रजातंत्रीय संस्थाओं का प्रयास एक उत्तरदायी सरकार को व्यवस्थित करना है। चुनाव

व्यवस्था, विधायिका के कार्य, न्यायपालिका का संगठन, इन सब का लक्ष्य यही होता है। संविधान द्वारा राज्य सत्ता पर नियंत्रण रखने के साथ एक न्यायसंगत राज्य की स्थापना का भी प्रयास किया जाता है। राज्य का संगठन और उसके कार्य की परिभाषा इस तरह की जाती है कि न्याय के लक्ष्य की प्राप्ति हो।

जिन महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों की चर्चा पहले की गई है उनकी प्राप्ति संविधान में दिए गए संगठन पर निर्भर करती है। हमने पहले देखा है कि सरकारी ढाँचे के माध्यम से ही राज्य अपनी सत्ता का उपयोग करता है। विभिन्न सरकारी संगठन सभी लक्ष्यों की प्राप्ति का माध्यम हैं। सरकार की कौन सी संस्थाएं उपयुक्त हैं? उनका संगठन कैसे हो? उन्हें कौन से अधिकार दिए जाएं? संविधान इन महत्त्वपूर्ण विषयों से संबद्ध होता है। भारतीय संविधान संघीय ढांचे के अंतर्गत एक संसदात्मक सरकार की व्यवस्था करता है। इसके अनुसार विभिन्न स्तरों की संस्थाओं के अधिकारों और कार्यों का प्रतिवेदन किया गया है। कुछ ऐसे सिद्धांत शासनतंत्र को परिभाषित और नियंत्रित करते हैं। सत्ता के विभाजन का प्रभाव इस बात पर निर्भर है कि उनको कैसा कार्य रूप दिया गया है। संघीय व्यवस्था में सत्ता का विभाजन अधिक जटिल होता है और इसमें संविधान का अधिक महत्व होता है। इसकी चर्चा हम बाद में करेंगे। संस्थाओं के बीच, जैसे कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका, और विभिन्न स्तरों में जैसे संघीय व्यवस्था में सत्ता के विभाजन की विस्तृत चर्चा संविधान में होती है।

संविधान भविष्य की दृष्टि से दार्शनिक और संगठन संबंधी ढांचे का निर्माण करता है। इसलिए यह एक जीवन्त दस्तावेज़ होता है। संविधान राज्य और सरकार को संगठित करता है, लेकिन उन्हें समाज की परिवर्तशील आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकताओं का सामना करना पड़ता है। संस्थाओं में परिवर्तन की इन प्रक्रियाओं को सम्मिलित करना आवश्यक हो जाता है। परिणामस्वरूप सरकार के सिद्धांत, संगठन, सत्ता और कार्यक्षेत्र में भी परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। सभी जीवंत संविधान संशोधन द्वारा परिवर्तन की कार्यविधि की व्यवस्था करते हैं। संविधान संशोधन आवश्यक भी है और अनिवार्य भी। सरकारी पदों पर आसीन लोगों के स्थान पर दूसरे लोगों की नियुक्यिताँ करना भी आवश्यकता होता है। समाज के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूह सत्ता के लिए प्रतियोगी होते हैं और इन प्रतियोगिताओं का नियंत्रण और समाधान सांविधानिक तरीकों से किया जाता है। सभी सरकारी संस्थाओं में कार्यकर्ताओं के नवीनीकरण की आवश्यकता होती है। पदों पर आसीन कुछ लोग सत्ता का दुरुपयोग भी करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को पद से हटाने के लिए सांविधानिक तरीके होते हैं। लोगों को पद से हटाने का एक सामान्य तरीका चुनाव है, और अंतिम तरीका महाभियोग है। संशोधन और अन्य कार्यविधियों के द्वारा शासन में परिवर्तन की व्यवस्था संविधान द्वारा ही की जाती है।

राज्य के वैचारिक आधार और संस्थाओं को निर्णायक वैधता संविधान के द्वारा प्राप्त होती है। इस तरह स्थापित राज्य की संस्थाएं निर्णायक रूप से वैध होती हैं। संविधान राज्य के दार्शनिक और वैचारिक आधार, और संस्था के पद, अधिकार एवं उपलब्धि के लिये लक्ष्य की तर्कसंगत व्यवस्था के बीच की एक कड़ी के रूप में काम करता है।

अधिकतर देशों के संविधान एक दस्तावेज़ की आवश्यकता के संचेतन निर्णय के बाद बने हैं। अमेरिका के संविधान को 1787 में अंतिम रूप दिया गया। सोवियत संघ ने 1918 में अपना प्रथम संविधान बनाया। भारतीय संविधान का निर्माण 9 दिसम्बर 1946 और 26 नवंबर 1949 के बीच संविधान सभा के 308 सदस्यों द्वारा लम्बे विचार विमर्श के बाद हुआ। इन लिखित संविधानों में संस्थाओं और कार्यविधियों की व्यवस्था की गई है। कुछ संविधान दूसरों की अपेक्षा अधिक विस्तृत होते हैं। भारतीय संविधान एक विस्तृत संविधान है। इसके 22 भागों में 395 धाराएं हैं और 9 अनुसूचियां संलग्न हैं। इसकी तुलना में, अमेरिका के संविधान में सिर्फ 7 धाराएं हैं, जिनमें 2 धाराएं बहुत ही छोटी हैं। ब्रिटेन का संविधान अलिखित संविधान का एक पुराना उदाहरण है, जहाँ 1688 की "गौरव पूर्ण क्रांति" से शुरू होकर, संविधान का विकास कई शतकों में शनै : शनै : हुआ। ब्रिटेन के संविधान का कोई एक दस्तावेज नहीं है। सांविधानिक परंपरा (constitutional convention) द्वारा संस्थाओं के कार्यों के पूर्वनिर्णय की श्रृंखला से ही संविधान निर्मित है।

लिखित संविधान की आवश्यकता कई कारणों से होती है। जो राज्य क्रांति जैसे सशक्त परिवर्तन के फलस्वरूप बनते हैं, उनके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि सरकार के इच्छित स्वरूप की ओर नए सिरे से अग्रसर हों। लोगों की

आकांक्षा और नेताओं की दूरदृष्टि का समावेश संविधान में हो जाता है,जैसे अमेरिका, सोवियत रूस, चीन और भारत के संविधानों में हुआ है। यह मात्र संयोग नहीं है कि संघीय सरकारों के लिए जैसे,(अमेरिका, सोवियत संघ, स्विटजरलैंड, कनाडा, भारत आदि) एक लिखित संविधान की आवश्यकता अनुभव हुई। सत्ता का विभाजन-संघीय व्यवस्था का एक प्रमुख लक्षण है और यह आवश्यक है कि किसी दस्तावेज़ में विभाजन का विस्तृत वर्णन हो। अमेरिका में प्रारंभिक 13 राज्य सत्ता विभाजन के एक सर्वसम्मत व्यवस्था पर ही सम्मिलित होने के लिए सहमत हुए थे। मतभेद की संभावनाओं के कारण एक दस्तावेज़ की उपयोगिता होती है जो विभिन्न घटकों के अधिकार क्षेत्र की साफ-साफ व्यवस्था करे। भारतीय संविधान का भी वह भाग जिसमें केन्द्र-राज्य संबंधों की चर्चा की गई है, संविधान के इस महत्वपूर्ण कार्य का उदाहरण है।

कठोर और लचीला संविधान

संविधान निसंदेह एक राजनीतिक दस्तावेज है। इसका स्वरूप एक विशेष राजनीतिक वातावरण में सुनिश्चित होता है, जिसमें उस समय के विचारों और संस्थाओं के बारे में वरीयता का निश्चित प्रभाव पड़ता है। साथ ही वह शासन के ढांचे और कार्यविधि की व्यवस्था करता है जो भविष्य में भी लागू रहेगा। किसी भी देश की राजनीतिक स्थिति पूर्णतया स्थिर नहीं रहती, इसमें निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं। नए सामाजिक और राजनीतिक समूह उभर आते हैं जिनके विचार और मांगें भिन्न होती हैं। परिवर्तन के ये तत्व राजनीतिक प्रक्रिया और संस्थाओं पर अपना प्रभाव डालते हैं और राजनीति की संस्थापित व्यवस्था के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह परिवर्तन के तत्वों के बारे में अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट करे। निरंतर परिवर्तनशील तत्वों के बीच सांविधानिक ढांचा एक स्थायित्व की स्थिति प्रदान करता है। प्रत्येक संविधान के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि संशोधन कार्यविधि के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन का प्रावधान करे। संविधान की संशोधन प्रक्रिया और उसकी विभिन्न संस्थाओं की प्रकृति से ही यह पता चलता है कि संविधान कठोर है या लचीला। लिखित संविधान की कुछ कठोर होने की निहित प्रवृति होती है, क्योंकि इसमें संशोधन की एक विशेष कार्यविधि का प्रावधान होता है।

ब्रिटिश राजनीतिक व्यवस्था विधायिका द्वारा पारित नियमों द्वारा संविधान में परिवर्तन की अनुमति देती है। वह साधारण नियम और संवैधानिक नियम में भेद नहीं करता। ब्रिटेन के संविधान का कोई एक विस्तृत दस्तावेज नहीं है, इसीलिये वहां की सर्वोच्च संस्था विधायिका द्वारा ही परिवर्तन लाये जा सकते यह परिवर्तन लाने की सबसे लचीली व्यवस्था का उदाहरण है। इससे यह लाभ होता है कि राजनीतिक व्यवस्था स्वेच्छा और आसानी से अपने को नये वातावरण और बदली हुई परिस्थितियों के अनुकूल बना लेती है। लेकिन यह व्यवस्था ऐसे राष्ट्रों के लिए ही उपयोगी है जहाँ की राजनीतिक परम्पराएँ बहुत समय से कार्यरत हों। ब्रिटेन की द्विदलीय व्यवस्था महत्त्वपूर्ण विषयों पर स्वस्थ वाद-विवाद सुनिश्चित करती है और राजनीतिक नियंत्रण का भी उपयोग करती है। राजनीतिक व्यवस्था में किसी भी प्रबल परिवर्तन का प्रस्ताव आम निर्वाचन के मुख्य विषय के रूप में रखा जाता है और उसका समाधान भी निर्वाचन के माध्यम से ही होता है। ब्रिटेन में राजनीतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं को सामाजिक परिवर्तन के अनुकूल बनाने के लिये लम्बा समय मिला है। फलस्वरूप परंपराओं की जड़ें मजबूत हुई हैं और ये द्रुत और प्रबल परिवर्तनों के लिये प्रहरी का काम करती रही हैं।

कार्ल जे. फ्रेडरिक् कठोर संविधान के वर्णन के लिए दृढ़ शब्द पसंद करते हैं। उनका कहना है कि "कठोर का गुणसूचक विशेषण जानबूझकर या संयोगवश, प्रतिवेदन पर प्रतिकूल असर डालता है।" इस प्रकार का संविधान ऐसी संस्थाओं का प्रावधान करता है जो लोगों के राजनीतिक अनुभवों की दृष्टि से अपेक्षाकृत नए होते हैं। सामाजिक संस्थाओं और राजनीतिक प्रक्रियाओं को नई संस्थाओं और व्यवहारों के अनुकूल होने में समय की आवश्यकता होती है। समन्वय की इस अवधि में जल्दी में या बार-बार किए गए परिवर्तन उचित नहीं होते। संविधान संशोधन के लिए विशेष प्राविधान के पक्ष में तर्क देते हुए एलेक्स डी. टाकीयावेली कहते हैं कि इससे "बहुमत की तानाशाही" से बचाव मिलता है। प्रजातंत्रीय व्यवस्था में विधायिका में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि होते हैं। अनिवार्यतः विधायिका में कुछ दलों के अधिक प्रतिनिधि होते हैं और कुछ अल्पमत में होते हैं। विधायिका में निर्णय बहुमत के आधार पर लिए जाते हैं, जिससे इस बात की सतत् संभावना रहती है कि ऐसे निर्णय अल्पमत के विचार और हित को पूर्ण सुरक्षित नहीं रख पायेंगे। बहुमत दल विधायिका के निर्णय अपने पक्ष

में करवाने में प्रायः सफल रहता है। यह स्थिति संवैधानिक धाराओं में परिवर्तन जैसे महत्त्वपूर्ण निर्णयों के लिए मान्य नहीं हो सकती है। इसी कारण से सामान्य विधि और सांविधानिक विधि में भेद किया जाता है, जिसमें पहली विधि के लिये बहुमत का सामान्य नियम मान्य होता है, लेकिन दूसरे प्रकार की विधि के लिए विशेष प्रावधान किया जाता है। यह कार्यविधि ऐसे समाज के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है जहां परिवर्तन द्रुत गति से हो रहा है और परंम्पराएं निरंतर परिवर्तनशील हैं। जिस समाज में सामाजिक विभाजन विषम हो और विविधताएं अधिक हों, वहां राजनीतिक स्थिति में स्थिरता श्रेयस्कर होती है। विविधता और परिवर्तन की ऐसी परिस्थिति में सांविधानिक संरचना के मूल सिद्धांत पर बल देना अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। एक परिभाषित ढांचे के अंदर संविधान संस्थाओं का प्रावधान करता है। इसमें कुछ प्रावधान मूलभूत होते हैं और कुछ परवर्ती। ऑलीवर क्रामवेल ने राजनीतिक स्थिति के "आधारभूत (fundamental) और "पारिस्थितिक" (circumstantial) पक्षों का प्रभेद बहुत समय पहले किया था। भारतीय संविधान के संदर्भ में यह भेद उस समय प्रकाश में आया जब उच्चतम न्यायलय ने 1973 ई. के केशवानंद भारती के और 1980 के मिनर्वा मिल्स केस के निर्णयों में भारतीय संविधान के मूल स्वरूप के सिद्धांत की स्थापना की। इस निर्णय के अनुसार संसद का संशोधन संबंधी अधिकार भारतीय संविधान के मूल स्वरूप में परिवर्तन लाने के लिए नहीं किया जा सकता। भारतीय संविधान के प्रावधानों के परिवर्तन के लिए जो विभिन्न कार्यविधियाँ दी गई है वे ऊपर दिए गए विधि भेद की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। भारत में सांविधानिक संशोधन तीन प्रकार से किया जा सकता है। कुछ प्रावधानों में संशोधन संसद के दोनों सदनों के सामान्य बहुमत द्वारा किया जा सकता है। धारा 3, 4, 169 और 293(अ) ऐसी धाराएं हैं जिनमें राज्यों का सीमा निर्धारण, उनका नामांकन और राज्य और केंद्र-शासित प्रदेशों में द्वितीय सदन की स्थापना और उनके हटाये जाने की चर्चा की गई है। संविधान के प्रावधानों में अधिकांश ऐसे हैं जिनमें संसद के दो-तिहाई बहुमत द्वारा परिवर्तन किये जा सकते हैं। कुछ और प्रावधान ऐसे भी हैं जिनमें परिवर्तन के लिए दो-तिहाई बहुमत के साथ आधे से अधिक राज्यों की विधायिकाओं का अनुमोदन आवश्यक है। जिन प्रावधानों के लिए यह कार्यविधि आवश्यक है वे हैं:

राष्ट्रपति के निर्वाचन की प्रक्रिया, केंद्र और राज्य के कार्यपालिका के अधिकार, उच्चतम और अन्य न्यायालय संबंधी प्रावधान, केंद्र और राज्यों के बीच विधायी अधिकारों का विभाजन, संसद के दोनों सदनों में राज्यों का प्रतिनिधित्व और धारा 368 जिसमें संशोधन कार्यविधि का प्रावधान है। केन्द्र व राज्यों के पारस्परिक विधायी संबंधों के अंतर्गत जिस संशोधन की चर्चा की गई है उसके लिये कुछ कड़ी कार्यविधि का अनुसरण इसलिए आवश्यक समझा गया क्योंकि इन प्रावधानों का संबंध केन्द्र और राज्य दोनों से है। इस तरह प्रावधानों के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रावधानों के लिये अलग-अलग संशोधन कार्यविधि दी गयी है। विभिन्न प्रावधानों के दार्शनिक आधार भी इस विभिन्न संशोधन प्रक्रिया में लक्षित होते हैं।

अभ्यास

1. राज्य और सरकार में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. राजनीतिक व्यवस्था से आप क्या समझते हैं? भारतीय राजनीतिक व्यस्था के संदर्भ में इसका वर्णन कीजिए।
3. सांविधानवाद का वर्णन कीजिए तथा इसका महत्त्व बताइए।
4. कठोर संविधान किसे कहते हैं? कठोर तथा लचीले संविधान में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (क) राज्य सरकार से अधिक स्थायी है
   (ख) सामान्य विधि एवं सांविधानिक विधि

अध्याय 5

सरकार का स्वरूप

सरकार राज्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। कई बार राज्य और सरकार में भेद करना कठिन हो जाता है क्योंकि आमतौर पर नागरिक केवल सरकार के संपर्क में ही आते हैं। राज्य एक अमूर्तअवधारणा (Abstract concept) है, जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है। राज्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति सरकारी संस्थाओं और कार्यविधियों के रूप में ही होती है। सरकार के संगठन द्वारा ही सत्ता का प्रयोग होता है। पहले हम राज्य और सरकार के भेद की चर्चा कर चुके हैं। सरकार के कई रूप हो सकते हैं। विभिन्न देशों में विभिन्न प्रकार की सरकारें होती हैं। सरकार के स्वरूप का वर्गीकरण समझने के लिए सरकार की सत्ता के आधार, उसकी मात्रा और उसके लक्ष्यों को समझना आवश्यक है। सरकार के विभिन्न रूपों, विभिन्न क्रिया-विधियों के द्वारा हम उनकी विभिन्नताओं को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं। सरकार की पूर्ण व्याख्या उनके विविध कारकों द्वारा ही हो सकती है, जैसे सरकार का ऐतिहासिक विकास, देश की सामाजिक-आर्थिक अवस्था, अन्य देशों से संबंध,इत्यादि। इस तरह सरकारों का वर्गीकरण उनकी संवैधानिक संस्थाओं तक ही सीमित नहीं होता। इसमें संस्थाओं के वास्तविक कार्यों पर भी विचार किया जाता है। कोई भी वर्गीकरण स्थायी नहीं हो सकता। उस पर बदलती हुई सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का भी प्रभाव पड़ता है।

वर्गीकरण की समस्याएं

सरकारों और उनकी संस्थाओं को किन वैचारिक इकाइयों की सूची में रखा जाए, यह वर्गीकरण के किसी भी प्रयास में निहित है। इस के दो तरीके हैं — (1) हम राज्य और सरकार के विस्तृत वैचारिक रूप की अवधारणा के आधार पर सरकारों का वर्गीकरण कर सकते हैं। (2) दूसरा तरीका यह है कि विभिन्न सरकारों की व्याख्या करें और यह देखें कि सत्ता के वास्तविक विभाजन और उनके कार्य की दृष्टि से कौन से मुख्य स्वरूप उभर कर आते हैं। अरस्तु का सर्वविदित वर्गीकरण जिसमें 150 संविधानों की व्याख्या के आधार पर सरकार के तीन मुख्य स्वरूपों की व्याख्या की गई है, वर्गीकरण का एक अच्छा उदाहरण है। तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में कुछ आधुनिक अध्ययनों में इसी प्रकार का प्रयास किया गया है। वर्गीकरण का स्वरूप कुछ भी हो, उसके वैचारिक रूप की व्याख्या आवश्यक है। वर्गीकरण में जब किसी एक बात को अन्य बातों की अपेक्षा वरीयता दी जाती है तो अध्ययन के झुकाव का प्रश्न उठ सकता है इसका कारण अध्ययनकर्ता या सैद्धान्तिक उपागम के सांस्कृतिक या विचारधारा संबंधी पूर्वाग्रह हो सकता है। पूर्णतया वस्तुपरक (Objective) या झुकाव-रहित वर्गीकरण आसान नहीं है। जिन लोगों की अन्य वरीयताएं हैं उनके द्वारा किया गया वर्गीकरण भी अलग होगा। लोकतंत्र को सरकार का एक अच्छा स्वरूप माना गया है, लेकिन इसकी विभिन्न परिभाषाएं दी जाती हैं। अमरीका के विद्वानों द्वारा किये गये सरकार के कुछ वर्गीकरणों में सोवियत संघ को लोकतांत्रिक राज्यों की सूची में शामिल नहीं किया गया। दूसरी दृष्टि से, सोवियत संघ और अन्य सामाजवादी राज्य लोकतंत्र के अच्छे उदाहरण माने जाते हैं। हमने पहले अध्याय में देखा कि वैज्ञानिक प्रणाली मूल्य-मुक्त (Value free) व्याख्या पर बहुत

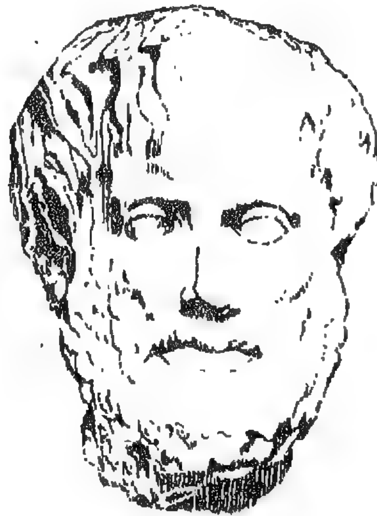
बल देती है, किन्तु पूर्ण रूप से मूल्य-मुक्त अध्ययन सम्भव नहीं है।

वर्गीकरण की एक समस्या यह भी है कि परिभाषिक शब्दों के अर्थ विभिन्न प्रसंगों और भाषाओं में अलग-अलग होते हैं। संस्थाओं के अर्थ भी अलग हो जाते हैं। अमरीका, फ्रांस, सोवियत संघ और भारत, इन सभी देशों मे राष्ट्रपति पद है। लेकिन इस संस्था का अर्थ सभी देशों में भिन्न-भिन्न है। ब्रिटेन और भारत में नौकरशाही को विभिन्न अर्थों मे समझा जाता है। संसद, प्रधान मंत्री, न्यायपालिका जैसी संस्थाओं के अर्थ भी विभिन्न होते हैं। संविधान मे संस्थाओं को किसी विशेष मान्यताओं और अपेक्षाओं के आधार पर सम्मिलित किया जाता है। लेकिन वास्तविक कार्यप्रणाली में ये संस्थाएं भिन्न हो सकती हैं। संस्थाओं का सांविधानिक स्वरूप और उनके वास्तविक कार्यों में भेद, वर्गीकरण और उनके वास्तविक कार्यों में भेद, वर्गीकरण की एक समस्या है। सिद्धांत और व्यवहार में अंतर हो सकता है।

इस तरह वर्गीकरण की कोई भी रूपरेखा अंतिम और स्थिर नहीं होती। प्रारंभिक वर्गीकरण के बाद, सरकार के प्रत्येक प्रारूप (framework) का वर्णन आवश्यक होता है। सरकार *के लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक स्वरूपों में विभाजन लोकतंत्र* के वर्णन में सहायक सिद्ध होता है। इसके बाद यह आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार के लोकतंत्रों को उनके कार्यों के आधार पर वर्गीकरण किया जाए। सरकार के इस तरह के वर्गीकरण के विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग विषयों का विस्तार किया जाता है। सरकार के विभिन्न स्वरूपों को समझने के लिए *वर्गीकरण महत्त्वपूर्ण है।*

राज्य और सरकार का स्वरूप

राज्य और सरकार एक दूसरे से इस तरह जुड़े हैं कि उनकी विशिष्टताओं और लक्ष्यों को समान मान लिया जाता है। जो विशिष्टताएं राजनीतिक प्रक्रिया के मूल सामाजिक-आर्थिक संबंधों की ओर इंगित करती हैं, उनका संबंध मूलतः राज्य से है। एक पूंजीवादी राज्य की विशिष्टता उसके मूल आर्थिक संबंधों में है जैसे व्यक्तिगत संपत्ति, सामाजिक समूहों के हित में राज्य सत्ता का प्रयोग इत्यादि। समाजवादी राज्य की परिभाषा आर्थिक संबंधों और संस्थाओं के पुनर्गठन के रूप में होती हैं। इस व्यवस्था में, व्यक्तिगत संपत्ति पर नियन्त्रण होता है। राज्य ही आर्थिक प्रक्रियाओं का संरक्षक होता है। सामाजिक वर्ग और उनके संबंधों का भी पुनर्गठन होता है। लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक राज्यों का भेद भी इन्हीं मूल अधारों पर होता है, जो राजनीतिक प्रक्रियाओं तक सीमित नहीं रहती। इसका विस्तार सामाजिक संबंधों तक होता है। इसका अर्थ अक्सर उन आदर्शों से होता है जिन्हें राज्य प्राप्त करना चाहते हैं। समाजवाद और लोकतंत्र आधुनिक राज्यों के इसी तरह के आदर्श हैं।



अरस्तु (लगभग 384-322 ई० पू०)

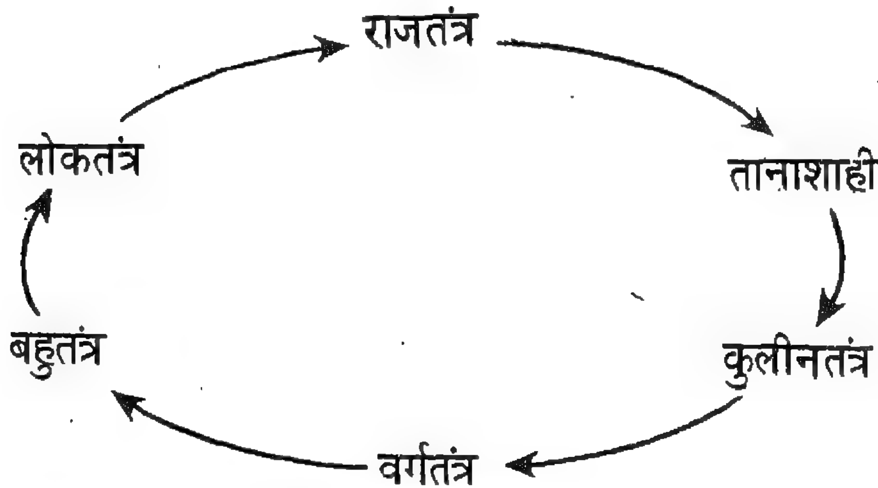
प्रख्यात यूनानी दार्शनिक। सिकन्दर महान का गुरू। राजनीति, दर्शन, विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान जैसे विषयों पर व्यापक रूप से लिखा। प्रसिद्ध पुस्तकें : "पालिटिक्स" (Politics), "कॉन्सटीट्यूशन्स" (Constitutions).

दूसरी ओर, सरकार का स्वरूप उन संस्थाओं की ओर इंगित करता है जो उन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं जो निश्चय ही सामाजिक-आर्थिक तत्वों पर निर्भर करते हैं। यहां संस्थाओं के स्वरूप पर अधिक जोर दिया गया है जिन्हें आवश्यक अधिकार और कार्य दिए जाते हैं।

सरकार का स्वरूप

सरकारों का वर्गीकरण कोई भी हो, यह निर्णय आवश्यक है कि वर्गीकरण किस आधार पर किया जाए। ऐसे प्रयासों की

शुरुआत अरस्तू द्वारा किए गए सरकारों के वर्गीकरण से हुई। जिन 150 संविधानों का विश्लेषण उन्होंने किया उनके वर्गीकरण के लिए दो मापदण्डों के मिश्रण को उपयोगी माना। एक आधार तो यह था कि कितने लोगों के हाथ में सत्ता निहित है। इस तरह राजतंत्र, कुलीनतंत्र और बहुतंत्र में इस आधार पर भेद किया गया कि इन तीनों में क्रमशः एक, कुछ, और बहुत लोगों के हाथ में सत्ता होती है। अरस्तू द्वारा प्रयुक्त दूसरा मापदण्ड यह था कि सत्ता का उपयोग किनके हित में होता है। ऊपर दिए गए सरकार के तीन स्वरूप समाज के हित में कार्य करते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि वे मात्र उन लोगों के हित में कार्य करें जिनके हाथ में सत्ता है, अरस्तू ने ऐसी सरकार को उनका विकृत रूप माना। सरकार के तीन प्रकार के विकृत रूप हैं क्रमशः तानाशाही, वर्गतन्त्र और लोकतंत्र या भीड़तंत्र। अरस्तू ने लोकतंत्र का प्रयोग भीड़तंत्र अथवा सरकार के विकृत स्वरूप को दर्शाने के लिए किया। अरस्तू परिवर्तन के ऐसे चक्र की भी चर्चा करते हैं जिसमें एक विशेष प्रकार की सरकार में विकृति आने के बाद वह दूसरे शुद्ध प्रकार में बदल जाती है। ऐसे परिवर्तन का क्रम निम्न चित्र में दिया है।



अरस्तू द्वारा सरकारों का वर्गीकरण

लोगों की संख्या जिनके पास सत्ता है	*सामाजिक हित में कार्य*	*विकृत रूप*
एक	राजतंत्र	तानाशाही
कुछ	कुलीनतंत्र	वर्गतंत्र
बहुत	बहुतंत्र	लोकतंत्र या भीड़तंत्र

आधुनिक "राज्य कार्य क्षेत्र व व्यवस्था" और "कार्य की सैद्धांतिक व्याख्या", दोनों ही दृष्टियों से जटिल हैं। वर्गीकरण के आधार भी व्यापक हो गए हैं। कुछ तो सरकार के संगठन तक ही सीमित हैं और अन्य अधिक व्यापक रूप से प्रक्रियाओं को भी सम्मिलित कर लेते हैं। सरकार के संघात्मक और एकात्मक स्वरूपों में भेद सत्ताकेन्द्र की दृष्टि से किया जाता है। जब संपूर्ण क्षेत्र के प्रशासन की सत्ता का एक ही केंद्र होता है, तो उसे एकात्मक सरकार की संज्ञा दी जाती है। ब्रिटेन, फ्रांस, घाना,आइवरी कोस्ट और चिली ऐसी सरकारों के उदाहरण हैं।

संघीय व्यवस्था में क्षेत्र का विभाजन खंडों में किया जा सकता है जिसमें अपनी सरकारों की स्थापना होती है। इस व्यवस्था में एक केंद्रीय सरकार के साथ-साथ कुछ क्षेत्रीय सरकारें भी होती हैं। इस तरह संघीय व्यवस्था में सरकार दो स्तरों पर होती है — एक पूरे क्षेत्र के लिए और दूसरी छोटे-छोटे क्षेत्रों के लिए। भारत में केंद्रीय सरकार और राज्यों की सरकार से हम परिचित हैं। इस प्रकार के द्विस्तरीय सरकार के उदाहरण हैं — अमरीका, सोवियत संघ, स्विट्जरलैंड, नाइजीरिया, ब्राजील, मलेशिया और भारत।

संसदीय और अध्यक्षीय सरकारों का भेद विधायिका और कार्यपालिका के संबंधों की दृष्टि से किया जाता है। संसदीय व्यवस्था में विधायिका में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधित्व के आधार पर कार्यपालिका का संगठन होता है। विधायिका में जिस दल का बहुमत होता है, कार्यपालिका पर भी उसी का नियंत्रण होता है। ब्रिटेन इस पद्धति का उदाहरण है। जिन नए देशों में संसदीय सरकार का संगठन हुआ है, वे हैं घाना, इजिप्ट और तंज़ानिया। अध्यक्षीय सरकार में कार्यपालिका और विधायिका एक दूसरे से पृथक होते हैं। अक्सर इन पर अलग-अलग राजनीतिक दलों का नियंत्रण होता है। अमरीका के अतिरिक्त, चिली और ब्राज़ील इस पद्धति के उदाहरण हैं। कुछ और ऐसे उदाहरण भी हैं जिनमें दोनों के लक्षण हैं। भारत और फ्रांस ऐसे उदाहरण हैं जहां राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं।

सरकार के वर्गीकरण में तीसरा प्रभेद लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक या निरंकुशतावादी सरकारों में किया जाता है। लोकतांत्रिक आदर्शों में निष्ठा होते हुए भी लोकतंत्र की परिभाषा कई प्रकार से की जाती है, जिनमें विभिन्न विचार महत्त्वपूर्ण होते हैं। हम इन विषयों का विस्तृत उल्लेख आगे चल कर करेंगे। यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि इस प्रसंग में जनता के प्रति सरकार का उत्तरदायित्व महत्त्वपूर्ण मापदण्ड होता है। इस उपागम में इस बात को महत्व दिया जाता है कि सरकार में लोक-सहभागिता (Popular Participation) किस हद तक है। सरकार में जितने अधिक लोगों की जितनी अधिक सहभागिता होगी उसे उतना ही लोकतांत्रिक माना जायेगा।

तालिका

राजनीतिक व्यवस्थाओं का वर्गीकरण

वर्गीकरण का आधार	*प्रथम प्रकार*	*द्वितीय प्रकार*
1. राज्य का स्वरूप (लक्ष्य, विचार धारा, नीति की दृष्टि से)	पूंजीवादी	समाजवादी
2. सत्ता के प्रयोग का स्वरूप (व्यक्तिगत अधिकार और स्वतंत्रता की दृष्टि से)	लोकतांत्रिक	अलोकतांत्रिक
3. सत्ता का क्षेत्रीय विभाजन	एकात्मक	संघात्मक
4. संविधान का स्वरूप	कठोर-लचीला	लिखित-अलिखित
5. कार्यपालिका का स्वरूप	संसदीय	अध्यक्षीय

विचाधारा के आधार पर भी सरकारों का वर्गीकरण किया जा सकता है जैसे कि *समाजवादी, पूंजीवादी, निरंकुशतावादी,. लोकतांत्रिक इत्यादि।*

ऊपर दिए गए चार प्रकार के वर्गीकरणों में यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि ये व्यापक वर्ग हैं और उनके कार्यों का निकट से परीक्षण आवश्यक है। सरकार के स्वरूप के चार जोड़ों में कई ऐसे हैं जिनमें आपस में समानता है। दूसरी ध्यान रखने योग्य बात यह है कि किसी भी प्रकार की सरकार किसी सुस्पष्ट और अनन्य वर्ग के अंतर्गत नहीं आती। विभिन्न सरकारों के परीक्षण से यह स्पष्ट हो जाएगा कि उनमें अधिकतर मिश्रित हैं जिनमें कई प्रकार की सरकारों के लक्षण होते हैं।

कुछ आधुनिक विद्वान "वर्गीकरण" (classification) के स्थान पर "प्रारूपीकरण" (typology) और राज्य (State) के स्थान पर *"राजनीतिक व्यवस्था" (Political System)* का प्रयोग करते हैं। हम ऊपर देख चूके हैं कि राजनीतिक व्यवस्था की अवधारणा का संबंध राजनीतिक प्रक्रियाओं से अधिक है। 1960 ई. के बाद दिए गए "राजनीतिक व्यवस्था के प्रारूपीकरण" में सिर्फ सरकारों को ही सम्मिलित नहीं किया गया है, समाज में सत्ता के विभाजन के विभिन्न विषयों को भी सम्मिलित किया गया है। उनका बल सांविधानिक संगठन के अतिरिक्त संस्थाओं के वास्तविक कार्यों पर भी है। जिन विद्वानों ने इस प्रकार का कार्य किया है उनके कुछ उल्लेखनीय नाम हैं — एडवर्ड शिल्स, रावर्ट ए. डाल, गेब्रीयल ए. आलमण्ड, एस. एन. आईजेंन्डाट और ए. लिज़फार्ट।

वर्गीकरण और तीसरी दुनिया की सरकारें

उरोक्त वर्गीकरण का विकास मूलतः यूरोप और अमरीका जैसे क्षेत्रों के उन समाजों के परिप्रेक्ष्य में हुआ जहाँ राजनीतिक स्थायित्व (Stability) था। यहां सरकारी व्यवस्था का विकास अपनी सुविधा के अनुसार क्रमशः और अधिकतर विकास की अवस्था में हुआ। दूसरे महायुद्ध के उपनिवेशवाद। (colonialism) के अंत के फलस्वरूप एशिया और अफ्रीका के जिन देशों को स्वतंत्रता मिली, उनकी सरकारों को स्पष्ट वर्गों में नहीं रखा जा सकता। इन देशों की मुख्य समस्या यह है कि परिवर्तन की विभिन्न शक्तियां और प्रक्रियाएं एक ही समय में या बहुत थोड़े समय में सक्रिय हैं। इसको "अल्पकालिक परिवर्तन" की संज्ञा दी जाती है। ये देश उपनिवेशवादी व्यवस्था का बहुत दिनों तक हिस्सा रहे हैं इसी कारण इन्हें अपने आर्थिक कार्यक्रमों के संपादन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यहाँ समाज और सरकार में अस्थिरता की स्थिति दिखाई देती है। कभी-कभी ये अस्थिरताएं अन्य देशों और अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों के कारण भी होती हैं। इन्हीं कारणों से इन देशों में सरकार लगातार बदलती रहती है। ऐसे कई उदाहरण हैं जब किसी एक सरकार के स्थायित्व प्राप्त करने से पहले ही बदलाव आ जाता है।

ये नए स्वतंत्र देश उन्हीं देशों के उपनिवेश रहे हैं जहाँ सरकार के उपरोक्त स्वरूपों का क्रमिक विकास हुआ। उपनिवेशवादी देशों की कई संस्थाएँ उपनिवेशों के स्वतंत्र होने के पहले ही अपनी जड़ें जमा चुकी थीं। नव स्वतंत्र देशों में कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने विकसित देशों की कुछ संस्थाओं को अपना लिया। लेकिन जहां इन संस्थाओं को थोपा (impose)गया, उन देशों की स्थिति भिन्न थी। इसका परिणाम यह हुआ कि संस्थाओं का स्वरूप तो बना रहा, लेकिन कार्य की दृष्टि से उनका वास्तविक अर्थ बदल गया। ऐसे बहुत उदाहरण हैं जिनमें संस्थाओं के पारिभाषिक नाम स्पष्ट रूप से भ्रामक हैं।

वर्गीकरण के दो मापदण्डों के आधार पर, विशेषतः तीसरी दुनिया के देशों के परिप्रेक्ष्य में बल दिया है — (1) सरकार द्वारा प्रमुख आर्थिक नीतियों का अनुसरण, और (2) सरकार पर असैनिक /या सैनिक नेतृत्व का नियंत्रण। पहले मापदण्ड के अनुसार उन देशों में भेद किया जाता है जो विकास का पूंजीवादी रास्ता अपनाते हैं और दूसरे जो समाजवादी रास्ते पर चल रहे हैं। ब्राजील और मैक्सिको पहले प्रकार के उदाहरण हैं, और क्यूबा दूसरे प्रकार का। बहुत से देशों ने मिश्रित नीति को अपनाया है। तीसरी दुनिया के देशों में भेद इस दृष्टि से भी किया जाता है कि कहाँ की शासनप्रणाली असैनिक है और कहां की सैनिक। सैनिक शासन के देशों के उदाहरणों की कमी नहीं है। इनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो बारीबारी से सैनिक और असैनिक शासन के अंदर रहे हैं। तीसरी दुनिया के देशों में सेना की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है।

तीसरी दुनिया के उन राष्ट्रों की सूची बनाइए जिनमें सैनिक शासन हैं।

अभ्यास

1. उन कारकों की व्याख्या कीजिए जो किसी भी देश की सरकार के स्वरूप को निर्धारित करते हैं।
2. सरकार के वर्गीकरण में कौन-कौन सी कठिनाइयां हैं?
3. तृतीय विश्व के देशों की सरकारों के स्वरूप में बार-बार परिवर्तन के लिए कौन-कौन से कारक उत्तरदायी हैं? आप तृतीय विश्व के देशों की सरकारों का वर्गीकरण किस प्रकार करेंगे।
4. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी कीजिए :

   क. सरकार के दो स्वरूप —

   (1) लोकतान्त्रिक तथा (2) निरंकुशतावादी

   ख. वर्गीकरण और प्रारूपीकरण

अध्याय 6

लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक सरकार

वर्तमान शताब्दी में लोकतंत्र सरकार का एक स्वरूप ही नहीं, बल्कि सर्वमान्य स्वरूप है। आज शायद ही कोई ऐसा देश है जो अपने को अलोकतांत्रिक घोषित करता है। यहाँ तक कि हम लोकतंत्र को ही स्वीकार्य मानते हैं। लेकिन यह ध्यान रखने की बात है कि बहुत से देश बीसवीं शताब्दी में ही लोकतंत्र के आदर्शों को पूर्णतया प्राप्त कर सके हैं — वयस्क मताधिकार का आरंभ जर्मनी में 1919 ई. में, स्वीडन में 1920 ई. में, फ्रांस में 1945 ई. में और ब्रिटेन में 1948 ई. में हुआ। भारत जैसे तीसरी दुनिया के देशों में लोकतांत्रिक आदर्श की जड़ें स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ही जम चुकी थीं, जो इनकी संस्थाओं में परिलक्षित होती हैं। लोकतंत्र शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों "डेमोस" और "क्रेशिया" का संयुक्त रूप है, जिसका अर्थ है लोक प्राधिकार।

सरकार के एक स्वरुप से अधिक, लोकतंत्र रहन-सहन का एक तरीका है। यह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का आदर्श है जिसका ध्येय मानव के पूर्ण विकास के द्वारा सामाजिक कल्याण की प्राप्ति है। यह तभी संभव है जब व्यक्ति को अपने क्रियाकलापों के लिए पूर्ण और समान स्वतंत्रता प्राप्त हो और वह अनावश्यक प्रतिबंधों से मुक्त हो। ऐसी स्थिति प्राप्त करने में लोकतंत्र सहायक होता है।

लोकतंत्र का सिद्धांत तीन मुख्य आदर्शों पर आधारित है। इसमें व्यक्ति को महत्वपूर्ण और मूल इकाई माना गया है। व्यक्तिगत अधिकार और स्वतंत्रता को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। सभी व्यक्तियों की योग्यता को उचित महत्व दिया जाता है। किसी भी प्रकार का भेद, यथा वय, जाति, शिक्षा या लिंग के आधार पर, लोकतंत्र के आदर्शों के प्रतिकूल है। व्यक्तिगत अधिकार और स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए सरकार के कार्यों में लोक सहभागिता आवश्यक है। वयस्क मताधिकार सहभागिता का सबसे प्रत्यक्ष रूप है, जिसके द्वारा सरकार बनती है और नेता चुने जाते हैं। लेकिन सहभागिता का अंत यह नहीं है। इसकी पहुंच सरकार द्वारा निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहभागिता तक होनी चाहिए। सरकार के संगठन और कार्यों पर लोगों का निरीक्षण और नियंत्रण होना चाहिए। सरकार के प्राधिकार को स्वीकार करने के साथ ही, व्यक्तिगत अधिकार और स्वतंत्रता को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है।

सत्ताधारी सरकार लोकतांत्रिक मानदण्डों से रहित होती हैं। सरकार के लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक स्वरूपों में लोक सहभागिता और लोक उत्तरदायित्व की दृष्टि से भेद किया जाता है। अलोकतांत्रिक सरकारों के लिये जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे हैं सत्तावादी, अधिनायकवादी और सर्वसत्तात्मक। इन तीनों शब्दों में पाया जाने वाला लक्षण है सत्ता का असीमित उपयोग। जहाँ एक ओर सभी प्रकार की सरकारों को प्राधिकार की आवश्यकता होती है और वे उसका उपयोग भी करती हैं (अर्थात् नागरिकों द्वारा अभ्यासवश आज्ञापालन), सत्तावादी सरकार के पास असीमित सत्ता होती है।

अलोकतांत्रिकता

लोकतांत्रिक और अलोकतांत्रिक सरकारों में भेद उनके लक्ष्य और उन्हें प्राप्त करने के साधन की दृष्टि से किया जा सकता है। सत्तावादी सरकार यह निर्णय लेती है कि व्यक्ति के लिए क्या

अच्छा है? व्यक्ति के पास अधिकार या स्वतंत्रता हो अथवा नहीं? सरकार स्वयं ही निर्णय लेती है कि किन नीतियों का अनुसरण किया जाए। जब राज्य और सरकार के कार्य समग्र व्यक्ति को आच्छादित कर लेते हैं, तब उसे सर्वसत्तात्मक राज्य की संज्ञा दी जाती है। समाज के सभी समूहों और क्रियाकलापों पर केंद्रीय प्राधिकार का नियंत्रण होता है। इस तरह की सरकार लोगों के चिंतन और विचार को भी नियंत्रित करने का प्रयास करती है। सरकार के पास अनियंत्रित सत्ता होती है। इसी तरह के एक और शब्द का प्रयोग किया जाता है वह है, अधिनायकवाद। एलफ्रेड कॉबेन के शब्दों में, "अधिनायकवादी सरकार एक व्यक्ति की सरकार को कहते हैं, जिसने अपना पद, वंशानुक्रम में नहीं, शक्ति प्रयोग या सहमति, या फिर इन दोनों के मिश्रण के आधार पर प्राप्त किया है। उसके पास परम संप्रभुता होती है जिसका प्रयोग वह अपनी इच्छानुसार करता है।" इस तरह की सरकार पर कभी-कभी एक राजनीतिक दल का अधिकार भी होता है। शक्ति इसका आधार होती है, जिसमें अधिनायक के अधिकार में असीमित सत्ता होती है।

एक सत्तावादी सरकार शीघ्रता से निर्णय लेने में सक्षम होती है। इस सरकार का एक गुण जिसका जिक्र किया जाता है, वह है कार्यकुशलता। यह देश के लिये समय पर शक्तिशाली और स्थाई सरकार प्रदान करती है। तीसरी दुनिया के कुछ देशों के सैनिक शासक अपनी सरकार का यही औचित्य बताते हैं। सत्तावादी सरकार अपने नागरिकों से उच्च देशभक्ति की भावना भी सुनिश्चित करती है। दूसरा पक्ष यह है कि देश के शासन में यह सरकार व्यक्ति को कोई महत्त्व नहीं देती। उन्हें कोई भी नागरिक या राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं होते। सत्तावादी सरकार शक्ति पर आधारित होती है और इसलिए अधिक बलप्रयोग कर सकती है। सत्ता के केंद्रित होने के कारण सरकार या नेतृत्व का परिवर्तन निर्विघ्न और शांतिपूर्ण नहीं होता। इस प्रकार का परिवर्तन, आकस्मिक शासन परिवर्तन (coup d' etat) या क्रांति के फलस्वरूप होता है। दोनों ही अवस्थाओं में सरकार को सत्ताच्युत करने में शक्ति का प्रयोग होता है। अन्य देशों से संबंध में भी सत्तावादी सरकार आपसी समझबूझ की कमी दिखाती है। इस तरह की सरकार दूसरे देशों के साथ अपने संबंधों में अक्सर अधीर हो उठती है, जो अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए सहायक नहीं।

सत्तावादिता एक प्रकार की प्रवृत्ति है जिसमें सत्ता का केंद्रीकरण होता है। कभी-कभी लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी सत्तावादी प्रवृत्ति आ जाती है। फिर, कुछ ऐसे नेता होते हैं जो अधिक सत्तावादी होते हैं, जिनका असर उनके कार्य करने के तरीके पर पड़ता है। लोकतंत्र में भी इस तरह के नेता होते हैं। तीसरी दुनिया के कई देशों में लोकतांत्रिक और सत्तावादी सरकार सत्ता में बारी-बारी से आती रहती है। इसलिए, लोकतांत्रिक और सत्तावादी इन्हें एक गुण के रूप में देखना चाहिए जो सरकार और नेताओं में कम या अधिक मात्रा में पाई जाती है। अक्सर देखने में आता है कि कुछ सरकार लोकतंत्र का स्वरूप तो रखती हैं, लेकिन वास्तविक कार्य में सत्तावादी होती हैं। वस्तुतः लोकतंत्र एक ऐसा आदर्श है जिसकी प्राप्ति आसान नहीं है।

लोकतंत्र के रूप : प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष

जनता का प्रत्यक्ष शासन लोकतंत्र का शुद्धतम रूप है, जिसमें सभी लोग सरकार के कार्य में हिस्सा लेते हैं। प्लेटो द्वारा वर्णित नगर-राज्य में इस तरह की व्यवस्था दिखाई गई है। प्राचीन भारत के ग्रामीण गणराज्य में प्रत्यक्ष सहभागिता की व्यवस्था थी। जनमत संग्रह (Referendum) और उपक्रमण (Initiative) जैसे कुछ साधन स्विट्जरलैंड और अमरीका के कुछ राज्यों में प्रचलित हैं। लेकिन प्रत्यक्ष प्रजातंत्र के ये साधन वहीं संभव हैं जहां की जनसंख्या थोड़ी हो। नगर-राज्य स्वयं ही छोटे थे और फिर सहभागिता का अधिकार नागरिकों को ही था — दास और औरतें उनसे वंचित थीं। आधुनिक राज्य आकार और जनसंख्या दोनों ही दृष्टि से विशाल हैं और इनमें प्रत्यक्ष प्रजातंत्र संभव नहीं है। कुछ राज्य ऐसे हैं जो छोटे हैं, और कुछ ऐसे कार्य भी हैं जो सीमित हैं लेकिन इनमें सभी की सहभागिता प्रभावकारी नहीं हो पाती। आधुनिक युग में लोकतंत्र का अर्थ लोगों द्वारा अप्रत्यक्ष शासन ही है। निर्वाचन या चयन द्वारा एक छोटे समूह का गठन होता है, जो जनता की ओर से कार्य करता है। इसी को प्रतिनिधि-व्यवस्था कहते हैं। लेखकों और दार्शनिकों में उचित और प्रभावकारी प्रतिनिधित्व वादविवाद का विषय रहा है, जिसमें कई प्रकार के प्रश्न उठाए गए हैं। किन लोगों का प्रतिनिधित्व होना है? किन तत्वों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए? प्रतिनिधि समूह कितना बड़ा होना चाहिए? जनता के प्रति प्रतिनिधियों का उत्तरदायित्व किस प्रकार सुनिश्चित किया जाए? इन प्रश्नों के उत्तर में ही संस्थाओं और

प्रक्रियाओं के बारे में सुझाव दिए गए हैं। अंततः नियमित अंतराल से प्रतिनिधियों के चुनाव को श्रेयस्कर माना गया है।

- जनमत संग्रह तथा उपक्रम के अतिरिक्त वापस बुलाना (Recall) भी प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक अन्य साधन है। इसका अर्थ मालूम कीजिए।
  विशिष्ट जनमत संग्रह (Plebiscite) का अर्थ बताइये।

लोकतांत्रिक सरकार की विशेषताएं

उपरोक्त आदर्शों के आधार पर प्रजातांत्रिक सरकार स्वतंत्रता और समानता के मूल सिद्धांतों की प्राप्ति सुनिश्चित करती है। सरकार जनता की सामान्य स्वीकृति पर आधारित होती है, जिसे जनमत की संज्ञा दी जाती है। इस स्वीकृति को प्राप्त करने और प्रभावकारी बनाने के लिए सरकार एक विशेष अवधि के लिए चुनी जाती है। ब्रिटेन में हर पांच वर्ष में आम चुनाव होते हैं। अमरीका में राष्ट्रपति का चुनाव चार वर्ष के लिए होता है। सोवियत संघ की विधायिका, सुप्रीम सोवियत, चार वर्षों की अवधि के लिए चुनी जाती है। भारत में संसद सदस्यों और राज्यों के विधान सभा के सदस्यों का चुनाव हर पांच वर्ष में होता है। ये चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर होते हैं, जिनमें हर वयस्क नागरिक को चुनाव में हिस्सा लेने का अधिकार है। हर व्यक्ति के मत का समान महत्त्व होता है। स्वतंत्र और निष्पक्ष निर्वाचन ही लोकतांत्रिक सरकार का आधार है। इस तरह से चुने हुए प्रतिनिधि कानून बनाते हैं जो पूरे देश में लागू होते हैं। इस व्यवस्था के औचित्य के लिए यह तर्क दिया जाता है कि जो कानून निर्वाचित प्रतिनिधि द्वारा बनाए जाते हैं उनके लिए लोगों के व्यापक हित का ध्यान में रखना आवश्यक है। लोकतांत्रिक सरकार लोगों के सरकारी पद के लिए प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए समान अवसर प्रदान करती है। इस तरह मताधिकार के साथ ही निर्वाचन प्रतियोगिता में भाग लेने का अधिकार भी होता है।

जब लोग वोट के ज़रिए अपना मत प्रगट करते हैं तो यह स्वाभाविक है कि उनमें प्रतिनिधियों और वादविवाद के विषयों के बारे में मतभेद होगा। प्रतिनिधियों में भी निर्णय लेते समय मतांतर हो सकता है। कुछ एक कानून का पक्ष लेंगे तो दूसरे उसके विपक्ष में होंगे। ऐसी स्थितियों को सुलझाने के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था में बहुमत का सिद्धांत अपनाया जाता है। जिस विचार को बहुमत मिलता है वह मान लिया जाता है। जिस प्रतियोगी को बहुमत मिलता है उसे निर्वाचित घोषित कर दिया जाता है। लेकिन जब निर्वाचन संपन्न हो जाता है तो अल्पमत, जिन्होंने विपक्ष में मत दिया था, बहुमत द्वारा लिए गए निर्णयों से बाध्य होते हैं। बहुमत सिद्धांत का प्रतिपादन सर्वप्रथम ईसा के पांच शताब्दी पहले एथेंस के प्रसिद्ध नेता पेरिक्लिस ने किया था। दूसरी तरफ, अल्पमत विचार और उनका पक्ष लेने वाले मतदाताओं को लोकनीति के निर्णय में महत्त्व दिया जाता है। बहुमत का निर्धारण किस प्रकार किया जाए? साधारण बहुमत (Simple Majority) को सबसे अधिक स्वीकृति प्राप्त है। इस व्यवस्था के अनुसार जो विचार या जिस प्रत्याशी को सबसे अधिक लोगों का समर्थन प्राप्त होता है उसे मान्य घोषित किया जाता है। कहीं-कहीं आनुपातिक प्रतिनिधित्व (Proportional Representation) का सिद्धांत अपनाया जाता है। इसके अनुसार किसी मत या प्रत्याशी को जिस अनुपात में समर्थन मिलता है, वह प्रतिनिधि सभा के संगठन में परिलक्षित होता है। पूर्ण बहुमत (Absolute Majority) के सिद्धांत के अनुसार आधे से अधिक मतदाताओं का समर्थन आवश्यक है। बहुमत निश्चित करने के इन तरीकों में सामान्य बहुमत सबसे सरल है और इसीलिए इसे अधिक स्वीकार किया जाता है।

लोकतांत्रिक सरकार के जिन मानदण्डों की चर्चा हुई है उन सबके पीछे यह प्रयास है कि सरकार को उत्तरदायी बनाया जाए। सरकार की सत्ता सीमित करने की दृष्टि से लोकतांत्रिक व्यवस्था कुछ कानून और अधिनियम प्रतिपादित करती है जो सरकार के कार्य के लिए पथ प्रदर्शन करती हैं। उपरोक्त सिद्धांत और कार्यविधि जैसे स्वतंत्रता, समानता, नियमित अंतराल पर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, समान अवसर, बहुमत का सिद्धांत, आदि देश के मूल कानून में प्रतिस्थापित किए जाते हैं। उनका अनुसरण सरकार की स्वेच्छा पर नहीं छोड़ा जाता। ये मूल कानून अक्सर संविधानिक प्रथाओं या समाज की परंपरा के मानदण्डों में भी निहित होते हैं। इन सभी अवस्थाओं में लोकतांत्रिक सरकार के लिए कानून का शासन (Rule of Law) एक मानदण्ड के रूप में स्वीकार्य है।

क्षमताएं और कमजोरियां

लोकतंत्र आधुनिक युग के चिंतन का एक हिस्सा बन चुका है। कोई भी देश यह घोषित करने को तैयार नहीं कि उसकी

सरकार अलोकतांत्रिक है। लेकिन लोकतंत्र का अर्थ विभिन्न विचारधाराओं के अनुसार अलग-अलग दिया जाता है। लोकतांत्रिक सरकार की क्षमताओं और कमजोरियों पर विचार इस दृष्टि से नहीं किया जाता कि उसकी तुलना सरकार के दूसरे स्वरूपों से करें। इसका ध्येय यह है कि इस तरह की सरकार के कार्य, उससे अपेक्षाएं, और उनकी सीमाओं को अच्छी तरह समझें। इस विचारविमर्श से लोकतंत्र का कार्य और अच्छा हो सकता है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था जिन सिद्धांतों पर आधारित है, जैसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, स्वतंत्र और न्यायसंगत चुनाव, बहुमत का नियम, उनका ध्येय शासक और शासित के बीच सुदृढ़ कड़ी स्थापित करना है। इसके लिए जिन साधनों को अपनाया जाता है उसका लक्ष्य यह स्पष्ट करना होता है कि सरकार लोगों के समर्थन के आधार पर पदासीन होती है, और लोगों को सरकार के कार्य का पुनर्विवेचन करने का मौका मिलेगा। अगर कोई कमी पाई गई तो मत द्वारा सरकार को पद से हटाया जा सकता है। लोगों में इस तरह का विश्वास सरकार को स्वाभाविक वैधता प्रदान करता है। वस्तुतः लोकतंत्र की संपूर्ण प्रक्रिया वैधता को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है। लोकतांत्रिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं द्वारा पारित कानून आसानी से स्वीकार कर लिए जाते हैं और लोग स्वेच्छा से उनका पालन करते हैं।

लोकतंत्र लोगों में विभिन्नताओं की अपेक्षा समानताओं पर अधिक बल देता है। यह प्राकृतिक अधिकार (Natural Rights) के सिद्धांत का अनुमोदन करता है, जिसके अनुसार सभी व्यक्तियों को समान अधिकार प्रदान किया जाता है। इससे सबको समान अधिकार और अवसर प्राप्त होता है। लोगों की सहभागिता से राजनीतिक प्रक्रिया और संस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी मिलती है और उनमें सम्मिलित होने की भावना आती है। लोग सरकारी संस्थाओं और उनके कार्य के बारे में अधिक अवगत और प्रशिक्षित हो जाते हैं। उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जानकारी मिलती है और वे उसके प्रति सजग हो जाते हैं। लोकतंत्र अपने नागरिकों को प्रभावकारी प्रशिक्षण देता है। अपने ऊपर शासन करने की क्षमता पर जो विश्वास दिखाया जाता है उससे लोगों में स्वाभिमान और गौरव की भावना आ जाती है। इन सब कारणों से राजनीतिक व्यवस्था को अंततः अधिक एकीकरण और सफलता प्राप्त करने में सहायता मिलती है। जे. एस. मिल के शब्दों में प्रजातंत्र "किसी भी राजतंत्र की अपेक्षा बेहतर और उच्चतर राष्ट्रीय चरित्र को प्रोत्साहन देता है।"

सरकार के दृष्टिकोण से लोकतांत्रिक प्रक्रिया उसे लोगों की इच्छाओं, आकांक्षाओं, आवश्यकताओं और मांगों के प्रति स्वाभाविक रूप से संवेदनशील बना देती है। सरकार इस बात के प्रति सजग रहती है कि उसका कार्य लोगों के हित और कल्याण के अनुकूल हो। चुनाव प्रक्रिया में समाज के सभी वर्गों का महत्त्व होता है। इस तरह लोकतांत्रिक सरकार लोगों के कल्याण के प्रति अधिक संवेदनशील होती है। इससे सरकार को बेनथम द्वारा प्रतिपादित लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता मिलती है, "अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख।"

समाज और सरकार में आपस में सामंजस्य आवश्यक है। दोनों में परिवर्तन आता है, जिनका प्रकार और परिमाण अलग-अलग होता है। समाज सतत् परिवर्तनशील है जिसमें नई शक्तियां, नए विचार, और लोगों के नए समूह, पुराने की जगह लेना चाहते हैं। अक्सर ये नई शक्तियां प्रचलित सरकार में परिवर्तन लाना आवश्यक समझती हैं। लोकतांत्रिक प्रक्रिया के अंतर्गत चुनाव की स्वाभाविक प्रक्रिया में निर्विघ्न परिवर्तन आ सकता है। इन मानदण्डों के अंदर ही अधिक प्रबल परिवर्तन भी लाए जा सकते हैं। इस तरह विभिन्न दल सत्ता प्राप्ति के लिए प्रतियोगी होते हैं और दलों के अंदर भी लोगों में प्रतियोगिता होती है। निर्वाचित संस्था और प्रतिनिधि परिवर्तनशील सामाजिक शक्तियों के प्रति संवेदनशील होते हैं और ये सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों में दिखाई पड़ते हैं। लोकतांत्रिक व्यवस्था आसानी से अपने को बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल बना लेती है। वैधता का स्तर और परिवर्तन के अनुकूल होने की क्षमता, ये दोनों लोकतांत्रिक सरकार को स्थायित्व प्रदान करते हैं।

लोकतांत्रिक सरकार की कुछ कमजोरियों पर ध्यान देना आवश्यक है। इसमें सभी लोगों को समान समझा जाता है और इस तरह व्यक्तिगत प्रतिभा की अवहेलना हो जाती है। फलतः लोकतंत्र सर्वोत्तम लोगों को नहीं, औसत लोगों का शासन होता है। जिस सरकार पर सतत् दबाव और प्रत्युत्तर में दूसरे दबाव पड़ते रहेंगे, वे अपनी इच्छित दिशा में असानी से अग्रसर नहीं हो पाएगी। हर समय इस बात की संभावना रहती है कि सरकार अभीष्ट निर्णयों के स्थान पर लोकप्रिय निर्णय ले लेगी। मूल हित और वरीयता की दृष्टि से समाज के विभिन्न वर्गों में अंतर तो होता ही है। संघर्षों और संघर्ष

की परिस्थितियों के बीच, सरकार द्वारा लिए गए निर्णय समाज के सभी वर्गों को मान्य नहीं हो सकते। कुछ ऐसे निर्णय भी हो सकते हैं जो सरकार के लिए अभीष्ट हों, लेकिन जिसे लोगों का समर्थन प्राप्त नहीं हो। ऐसी स्थिति में लोकतांत्रिक सरकार, जो आम जनमत पर सर्वथा निर्भर है, इस विचार के सामने झुक जाती है कि निर्णय लोगों को स्वीकार होगा या नहीं।

चुनाव प्रणाली के जरिए लोकतंत्रीय सरकार का गठन होता है। इसकी मुख्य मान्यता यह है कि मनुष्य समान होते हैं। किसी भी समाज में पूर्णतया समानता की स्थिति नहीं होती है। असमानताएं कई प्रकार की होती हैं और इनमें कई अनिवार्य होती हैं। आर्थिक असमानता एक ऐसी सुस्पष्ट असमानता है जिसका निर्वाचन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। धनी लोगों का निर्वाचन व्यवस्था पर अधिक असर होता है। गरीब लोगों का मत देने का निर्णय अक्सर उन लोगों से प्रभावित होता है जिनके पास अधिक साधन हैं। निर्वाचन पर विभिन्न प्रकार की असमानताओं का असर होता है, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, जातीय, लैंगिक। स्वतंत्र और न्यायसंगत निर्वाचन का संपादन हर समय संभव नहीं हो पाता। निर्वाचन पर प्रभाव के संदर्भ में लोकमत (Public opinion) निर्माण की चर्चा होती है, जिसे तीसरे दशक में वाल्टर लिपमैन ने सामने रखा था। समाचार पत्र, रेडियो, और टेलीविज़न जैसे संचार और प्रचार के साधन समाज के कुछ आर्थिक रूप से प्रमुख लोगों के प्रभाव में होते हैं। कई देशों में उन पर सरकार का पूरा नियंत्रण होता है। निर्वाचन पर जो लोकमत परिलक्षित होता है वह इन्हीं तत्वों द्वारा परिचालित होता है। हित समूहों और दबाव समूहों की भी इस प्रसंग में अपनी भूमिका होती है। आम जनता के मत पर उत्तेजक भाषण करने वालों का भी प्रभाव पड़ता है।

बहुमत का सिद्धांत जिसकी चर्चा हमने पहले की है, कभी-कभी "बहुमत निरंकुशता" की तरह काम करता है। इस शब्द का प्रयोग डी. टाकियावेली ने किया था। आम चुनाव और निर्णय लेने की स्थिति, इन दोनों में हर समय एक अल्पमत होता है जो इन प्रक्रियाओं पर अपना प्रभाव नहीं डाल पाता। सरकार आखिर बहुमत के समर्थन पर ही सत्ता में आती है। ऐसा भी हो सकता है कि जो दल चुनाव में अल्पमत में है, उसे संसद में इतना स्थान मिल जाए कि उसे बहुमत प्राप्त हो जाए। सामान्य बहुमत (Simple Majority) व्यवस्था में अक्सर ऐसा होता है। भारत में कांग्रेस पार्टी इसका एक अच्छा उदाहरण है, जिसके पक्ष में मत 1977 में 34.5 प्रतिशत और 1984 में 49.10 प्रतिशत के बीच घटता-बढ़ता रहा है। यही बहुमत दल और उसके प्रतिनिधि पूरे समाज के लिए कानून बनाते हैं।

चुनाव की प्रक्रिया और लोकतांत्रिक संस्थाएं खर्चीली होती हैं। आम चुनाव में बड़ी संख्या में लोग हिस्सा लेते हैं और उसके संगठन और संचालन में राज्य को काफी व्यय करना पड़ता है। भारत में मतदाताओं की संख्या 1952 में 173, 213, 635 थी, जो 1984 तक बढ़कर 235, 184, 209 हो गई। 1984 के आम चुनाव में 4, 79, 012 मतदान केंद्र थे, जिनमें चुनाव संपादन में 23, 95676 राज्य कर्मचारी तैनात थे। इस पैमाने पर चुनाव करवाने में अगर अधिक खर्च होता है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। भारत सरकार ने 1984 ई० में 20 राज्यों में चुनाव करवाने में 856, 358 रु० खर्च किया। फिर, एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में आम चुनाव के अलावा ऐसे कई अवसर आते हैं जब चुनाव करवाए जाते हैं। भारत में संसद और राज्य विधायिका के पंचवर्षीय चुनाव के अलावा और कई चुनाव होते हैं, जैसे राष्ट्रपति का चुनाव और नगर निगम और ग्राम पंचायत जैसी स्थानीय संस्थाओं के चुनाव। ऐसे अवसरों पर खर्च आखिर समाज के साधन से ही होता है। चुनाव के बाद जो संस्थाएं बनती हैं उनके रख-रखाव और कार्य में भी काफी खर्च होता है। लोकतांत्रिक सरकार के साथ जो उपकरण जुड़े हैं, वे समाज के साधन पर बोझ बन जाते हैं। आलोचकों का कहना है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में फिजूलखर्ची होती है। यह ध्यान देने योग्य विषय है कि लाभ खर्च के आनुपातिक नहीं है।

लोक-उत्तरदायित्व की व्यवस्था में यह आवश्यक है कि सरकार के कार्य पर नियंत्रण हो और उसकी वैधता लोगों की स्वीकृति पर आधारित हो। विधायकों और मंत्रियों द्वारा नियंत्रण से निर्णय लेने में अक्सर देरी हो जाती है। विधायी प्रक्रिया में ही काफी समय लग जाता है। लोगों द्वारा निर्वाचित नेताओं का पद पर होने का अर्थ है कि प्रशासन पर अव्यवसायी लोगों का अधिकार। लेकिन आधुनिक राज्य के बहुत से निर्णय ऐसे होते हैं जिनकी विषयवस्तु और कार्यविधि जानने के लिए विशेष-ज्ञान की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति हो सकती है जब तकनीकी और प्रशासनिक दृष्टि से अभीष्ट निर्णय इसलिए ताक पर रख दिए जाएं कि उनके लोकप्रिय होने में

संदेह है। यह आरोप अक्सर लगाया जाता है कि लोकतांत्रिक सरकार हर समय कार्यकुशल शासन नहीं दे पाती।

सफल लोकतंत्र के लिए अनुकूल वातावरण

सरकार के सभी स्वरूपों का निर्धारण समाज के द्वारा होता है, लेकिन लोकतांत्रिक सरकार पर इसका असर ज्यादा होता है। इसका स्पष्ट कारण यह है कि लोगों की सहभागिता के आधार पर ही सरकार की स्थापना होती है। निर्वाचन पद्धति हर व्यक्ति को महत्व देती है। इसीलिए यह आवश्यक है कि लोग "वांछनीय" और "अवांछनीय" के बीच भेद पहचानें। प्रभावशाली सामान्य बुद्धि और राज्य के कार्य के बारे में चैतन्य भी सहायक होते हैं। इस दृष्टि से शिक्षा महत्त्वपूर्ण है। लेकिन स्कूल और कॉलेज में प्राप्त औपचारिक शिक्षा और राजनैतिक शिक्षा में भेद किया जाता है। औपचारिक शिक्षा के बगैर भी राजनीतिक शिक्षा संभव है। भारत जैसे देशों में इसका प्रचुर प्रमाण मिलता है, जहाँ साक्षर और शिक्षितों की संख्या थोड़ी है। इसका यह अर्थ नहीं कि औपचारिक शिक्षा की कोई भूमिका है ही नहीं। यह तो मानव के व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। लोकतंत्र के लिए शिक्षा आवश्यक है क्योंकि व्यक्ति और उसका विकास ही लोकतंत्र का आधार है।

इस प्रसंग में जे॰ एस॰ मिल ने कुछ विशेष बातों का ज़िक्र किया है। लोकतांत्रिक सरकार लाने के लिए लोगों की क्षमता और वास्तविक इच्छा इसकी सफलता के लिए आवश्यक है। लोकतंत्र जब संकट की स्थिति में हो तो उसे बचाने के लिए तैयार रहना चाहिए। नागरिकों द्वारा कर्तव्यों का पालन भी महत्त्वपूर्ण है।

चुनाव में हिस्सा लेना तो महत्त्वपूर्ण है ही, साथ ही सरकार के कामकाज में सतत् दिलचस्पी भी आवश्यक है। चुनाव राजनीतिक दल और हित समूह जैसी संस्थाओं द्वारा लिए गए निर्णयों की जटिल श्रृंखला का चरम बिंदु है। विभिन्न प्रतियोगियों में से चुनाव के लिए उम्मीदवारों को चुनना पड़ता है। राजनीतिक दल और उम्मीदवार लोगों का समर्थन प्राप्त करने के लिए व्यापक प्रचार करते हैं। निर्वाचक मण्डल उम्मीदवारों के गुण-अवगुण की विवेचना करते हैं। यह सभी प्रक्रियाएं चुनाव से पहले होती हैं। इन सभी क्रियाकलापों में अधिक लोगों का भाग लेना महत्त्वपूर्ण होता है। चुनाव जहां इन प्रक्रियाओं का अंतिम छोर है, वहीं दूसरी प्रक्रियाओं की शुरुआत भी है। इसके आधार पर नेताओं का चुनाव होता है और निर्णय लेने के लिए संस्थाओं का संगठन किया जाता है। एक सजग लोकमत द्वारा निर्णयों की समालोचना और उनके विभिन्न पहलुओं पर सुझाव, उन्हें समाज के लिए अधिक उपयुक्त बनाते हैं। निर्णयों की विषय वस्तु और उनके परिणामों में लोगों की दिलचस्पी महत्त्वपूर्ण है। ऐसी सतत् दिलचस्पी से निर्णय लेने वाली संस्थाएं लोगों की आवश्यकताओं और मांगों के प्रति अधिक संवेदनशील को जाती हैं। ऐसे निर्णय लोग आसानी से स्वीकार करते हैं। इसका कारण सिर्फ यह नहीं कि ये निर्णय सरकार द्वारा लिए गए हैं और उन्हें लागू किया जाएगा। एक कारण यह भी है कि जिन लोगों को इन्हें स्वीकार करना है वे यह समझते हैं कि ये निर्णय क्या हैं और उनका आशय क्या है।

लोकतांत्रिक सरकार के लिए लोगों में अपने अधिकार और कर्तव्य के बारे में उच्च कोटि की चेतना इसलिए आवश्यक है कि लोक-इच्छा इसका आधार है। सरकार का चुनाव करना महत्त्वपूर्ण है। इसमें सरकार में परिवर्तन लाने का अधिकार भी निहित है। इसके अतिरिक्त नागरिकों के बहुत से व्यापक अधिकार हैं जिनके उपयोग में नियंत्रण की आवश्यकता होती है। उदाहरणस्वरूप, नागरिकों को सरकार और उसके निर्णयों का प्रतिवाद करने का अधिकार है। फिर, नागरिकों को विभिन्न प्रकार की स्वतंत्रता के अधिकार दिए जाते हैं। इन अधिकारों का सावधानी से और नियंत्रित रूप से व्यवहार करना चाहिए। नागरिकों में अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में चेतना आवश्यक है। हम ऊपर देख चुके हैं कि अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक व्यक्ति का अधिकार तभी प्राप्त होता है जब दूसरे अपने कर्तव्य का पालन करें। स्वतंत्रता का अधिकार तभी तक सुरक्षित रह सकता है जब तक दूसरे उस अधिकार में दखल न देने का कर्तव्य निभाएं। लोकतांत्रिक सरकार अपने नागरिकों को अधिक अधिकार देती है और इसीलिए अधिक कर्तव्य की भावना की प्रत्याशा की जाती है। अपना मतदान करने जैसे कुछ कर्तव्यों का पालन करना आवश्यक है, जिससे चुनाव करने के अधिकार का प्रयोग हो सके और सरकार पर नियंत्रण रखा जा सके। अपने अधिकारों और कर्तव्यों का समुचित प्रयोग करने के लिए लोकतंत्र में नागरिकों को अपनी इच्छा व्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। निर्वाचन के समय लोग अपनी पसंद के अनुसार मत देने की स्थिति में होने चाहिए। व्यक्तिगत स्वतंत्रता लोकतांत्रिक

सरकार का मूल आधार है। जिस समाज में सामाजिक और आर्थिक समानता न हो वहाँ स्वतंत्रता का पूर्ण निर्वाह कठिन हो जाता है। असमानता की स्थिति में जो लोग सामाजिक या आर्थिक रूप में पिछड़े हैं, वे चुनाव की स्वतंत्रता का उपयोग नहीं कर पाते। चुनाव के खर्चे में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। इसलिए केवल धनवान ही चुनाव में भाग ले सकते हैं। गरीबों पर धनी लोगों का वैसे भी प्रभुत्व रहता है और वे धनी लोगों के प्रभाव में अपना मतदान करते हैं। इसी प्रकार का प्रभाव तथा कथित ऊंची जातियाँ समाज के पिछड़े वर्गों पर भी डालती हैं। वे वर्ग जो कि सामाजिक और आर्थिक रूप से अधिक सम्पन्न हैं, मतदान की प्रक्रिया में अन्य वर्गों पर प्रभाव डालते हैं,। भारत में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोग तथा भूमिहीन मजदूर, जो आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े हैं, अपने अधिकारों की प्राप्ति में कठिनाई का अनुभव करते है।

प्रजातंत्र चुनाव के समय और अपने काम में बहुमत सिद्धांत का पालन करता है। जिस उम्मीदवार या दल को बहुमत मिलता है, वह पदासीन होता है। विधायिका जैसी संस्थाओं में बहुमत के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं। ये कार्यविधि समाज के बहुमत वर्ग को महत्व देती है। लेकिन प्रजातांत्रिक सरकार को समाज में मतैक्य (consensus) के आधार पर कार्य करना चाहिए। सिर्फ बहुमत का ही नहीं, अल्पमत का भी ध्यान रखना चाहिए। वास्तव में, लोकतंत्र में अल्पमत के हितों को सुरक्षित रखने के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। लोकतंत्र में अल्पमत के अधिकारों का आदर आवश्यक है।

लोकतंत्र में सामान्यत: विभिन्न विचारों, दृष्टिकोण, दलों और सिद्धांतों के प्रति उदारता आवश्यक है। विभिन्न आदर्श और विचार आखिर समाज में ही उत्पन्न होते हैं। इस उदारता के फलस्वरूप प्रतिद्वंद्वी समूहों में स्वस्थ प्रतियोगिता होती है, जिससे लोकतंत्र को बल मिलता है।

अल्पमत के प्रति उदारता और सम्मान के कारण विरोधी पक्ष लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। संसदीय व्यवस्था में जिस दल का बहुमत होता है वह पदासीन हो जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ दल अल्पमत में होते हैं, जिन्हें प्रतिपक्ष कहते हैं। यह सरकार के कार्य के प्रति सतत् सतर्क रहते हैं। ये कार्य के बारे में प्रश्न पूछते हैं और वैकल्पिक सुझाव रखते हैं। चुनाव में ऐसा सर्वथा संभव है कि जो दल एक समय में अल्पमत में है उसे दूसरे समय में बहुमत मिल जाए। ऐसे समय में विपक्षी दल में यह क्षमता होनी चाहिए कि सरकार का निर्माण कर सके। ब्रिटेन और भारत जैसे देशों की संसद के कार्य में विपक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये सरकार पर प्रभावकारी नियंत्रण रखते हैं। विपक्ष के अभाव में लोकतंत्र पर एक दल या एक व्यक्ति का अधिकार हो सकता है और वह एक अधिनायकवादी सरकार में बदल सकता है।

तीसरी दुनिया और लोक सहभागिता का विरोधाभास

लोकतांत्रिक व्यवस्था अपने अस्तित्व और कार्य दोनों के लिए लोगों की सहभागिता पर निर्भर रहती है। इसके विशेष माध्यम हैं चुनाव, वयस्क मताधिकार, निर्वाचित विधायिका, राजनीतिक दल और दबाव समूह। जहां एक ओर लोकतंत्र की संपूर्ण प्रक्रिया सहभागिता पर आधारित है, वहीं इससे सरकार के कार्य में कठिनाई भी उत्पन्न हो सकती है। कुछ वर्ग सहभागिता की प्रक्रिया से अलग रह सकते हैं, तो कुछ अन्य वर्गों की अति-सहभागिता हो सकती है।

कोई भी लोकतंत्र राज्यकार्य में शत प्रतिशत लोगों की सहभागिता सुनिश्चित नहीं कर पाया है। फिर, सहभागिता समान मात्रा में नहीं होती। अगर हम सहभागिता के सबसे प्रत्यक्ष तरीके, मतदान को ही लें, तो हम पाएंगें कि पुराने और अधिक विकसित देशों में भी मतदाताओं का प्रतिशत कम रहा है। जो लोग वास्तविक मतदान करते हैं उनकी औसत प्रतिशत ब्रिटेन में 74, अमेरिका में 59, और स्विट्जरलैंड में 53 है। भारत में यह संख्या लगभग 60 रही है। सहभागिता के अन्य माध्यमों में ये प्रतिशत और भी कम है। असहभागिता के कई कारण हो सकते हैं। असमानता के कारण कम आमदनी या कम वैभव वाले लोग अपनी इच्छा प्रकट करने में कठिनाई का अनुभव कर सकते हैं। ऐसे समूहों में यह भावना हो सकती है कि उनकी सहभागिता का कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि निर्णय हर हालत में उन्हीं लोगों के पक्ष में होगा जिनका प्रभुत्व है। लोकतंत्र में निष्ठा का अभाव इस भावना से भी हो सकता है कि व्यवस्था संवेदनशील नहीं है, उनकी सहभागिता का कोई प्रभावकारी असर नहीं होगा। कुछ लोग यह भी समझते हैं कि मत का कोई मूल्य नहीं होगा। इस प्रसंग में विभिन्न विषयों के बारे में या सहभागिता के अधिकार के बारे में, अनभिज्ञता की भी चर्चा की जाती है। ऐसी स्थिति भी हो सकती है कि लोग विभिन्न दबावों के कारण यह निर्णय न ले पाएं कि किसका पक्ष लिया जाए। सहभागिता का अर्थ अगर निर्णय

पर प्रभाव डालना ही है, तो कुछ लोग यह सोच सकते हैं कि हर हालत में निर्णय उनके पक्ष में ही होगा। इस तरह असहभागिता समाज के विभिन्न वर्गों में हो सकती है और हर वर्ग का अपना कारण हो सकता है। ये विभिन्न असहभागी वर्ग सर्वथा पृथक भी नहीं होते, ये एक दूसरे के साथ होते हैं। इन वर्गों के अतिरिक्त कुछ राजनीतिक समूहों की प्रचलित राजनीतिक व्यवस्था से असहमति होती है, और वे आमूल परिवर्तन चाहते हैं।

जो लोग हिस्सा लेते हैं, उनकी सहभागिता की मात्रा अलग-अलग होती है। न्यूनतम स्तर पर तो वे होते हैं जो चुनाव में सिर्फ अपना वोट डाल देते हैं। ऐसा हो सकता है कि चुनाव की प्रक्रिया से इनका कोई लगाव न हो और इन्हें चुनाव के मुद्दों और उम्मीदवारों के बारे में कुछ भी पता न हो। कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो वोट तो नहीं डालते लेकिन राजनीतिक दलों के अन्य कार्यों में हिस्सा लेते हैं। कुछ प्रतियोगी उम्मीदवारों के पक्ष में सक्रिय हो सकते हैं। कुछ स्वयं उम्मीदवार हो सकते हैं। अगर हम दल, दबाव समूह, और हित समूह में हिस्सा लेने की बात करें, तो ऐसे लोगों की संख्या कम होती है। इस तरह हम देखते हैं कि सहभागिता के कई स्तर होते हैं।

सहभागिता का अभाव पहलू का एक ही रुख है। बहुत से लोगों द्वारा अतिसहभागिता भी कभी-कभी समस्या का कारण बन जाती है। समाज में विभिन्न प्रकार के समूह होते हैं और उनके हित भी अलग-अलग होते हैं। सहभागी समूह अपना हित सामने रखते हैं और इस बारे में सरकार से उनकी कुछ अपेक्षाएं होती हैं। ऐसा हो सकता है कि सरकार के समक्ष ऐसी बहुत सी माँगे हों और उन सबको संतुष्ट करना संभव न हो। ऐसी स्थिति में सहभागी समूहों की अपेक्षाएं अपूर्ण रह जाती हैं। ऐसे समूहों के सामने, सरकार कुछ उपायों को आवश्यक समझ सकती है जिससे विभिन्न समूहों और मांगों में समन्वय स्थापित हो सके और उन पर नियंत्रण हो सके। अक्सर ये उपाय सत्तावादी व्यवस्था की शुरुआत होते हैं। तीसरी दुनिया के कई देशों ने सहभागिता के इस फैलाव के सामने अपने को निरुत्तर पाया और सैनिक शासन का सहारा लिया।

असहभागिता और अतिसहभागिता की समस्याएं बहुलवादी (Pluralists) विद्वानों के विचार के मुख्य विषय हैं। ऐसे कुछ विद्वानों के नाम हैं: डेविड टूमन, राबर्ट ए. डाल, चार्ल्स ई. लिंडबॉम, नेलसन डब्ल्यू. पोलसबी, डेविड ई.एप्टर और आर्न्ड लिज़फार्ट। इनकी व्याख्या और उन पर आधारित समाधान दो प्रकार के हैं: उदार बहुलवादी और उग्र बहुलवादी। पहले विचार के लेखक मुख्य रूप से सत्ता में प्रभावकारी हिस्सेदारी को आवश्यक मानते हैं और समाज में ऐसे प्रतियोगी सत्ताकेंद्रों की स्थापना चाहते हैं, जिससे सामाजिक समूहों में पारस्परिक संबंध स्थापित हो सके। विभिन्न समूहों के प्रतियोगी विशिष्ट वर्ग सत्ता के पदों पर आसीन होने चाहिए। समूहों और विशिष्टवर्गों की आपसी प्रतिस्पर्धा ही लोगों को अधिक और प्रभावकारी सहभागिता के अवसर प्रदान करती है। इससे लोकतंत्र भी सुनिश्चित होता है। इस तरह राबर्ट ए. डाल के बहुतंत्र (Polyarchy) का अर्थ है बहुत से लोगों का शासन, जिसमें लोकतांत्रिक पद सोपान की व्यवस्था हो। ये तर्क और सुझाई गई व्यवस्था, ऐसे समाज की व्याख्या पर आधारित है जहां स्थायित्व है और जिसमें सामाजिक विभाजन तीखा नहीं है, उदाहरण के लिए अमेरिका जैसे औद्योगिक रूप से विकसित देश। उदार बहुलवादी समाधान की सफलता के लिए प्रायः मतैक्य आवश्यक है। तीसरी दुनिया के देशों में सामाजिक विभाजन और संघर्ष तीखा है और प्रतियोगिता असमान समूहों और व्यक्तियों में है।

उग्र बहुलवादी समाधान जनता और सरकार के बीच कोई बिचौलिया नहीं चाहता। उनके अनुसार एक मात्र प्रभावकारी समाधान है, लोगों की प्रत्यक्ष और प्रभावकारी सहभागिता। उचित रूप से संगठित छोटी राजनीतिक इकाइयों से इस लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है, जिसमें लोग प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा ले सकें। संस्थाओं को पद सोपान के रूप में सजाने से कुछ समाधान नहीं हो सकता। सत्ता समुदाय के पास ही होनी चाहिए। इस व्यवस्था के कुछ प्रयोगों के उदाहरण जो दिए जाते हैं, वे हैं यूगोस्लाविया में कारखाने के स्तर पर स्वप्रबंध, तंजानिया के उजामा गांव, और स्वीडन के मोटर कारखाने में मज़दूर समूह। भारत में प्रारंभिक स्तर पर पहल की जो चर्चा हमने पहले की है वह प्रभावकारी सहभागिता के इसी प्रकार के समाधान का उदाहरण है।

इस तरह लोकतांत्रिक सरकार और उसके उदात्त आदर्श और लक्ष्य कदापि ही आसान विकल्प नहीं है। इसकी सफलता के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्था का निरूपण अत्याधिक सावधानी से किया जाना चाहिए।

अभ्यास

1. लोकतांत्रिक सरकार किसे कहते हैं? लोकतांत्रिक सरकार का सत्ताधारी और सर्वसत्ताधारी सरकार से अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. लोकतांत्रिक सरकार के गुण बताइए।
3. लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए कौन सी दशाएं आवश्यक होती हैं?
4. आधुनिक युग में प्रत्यक्ष लोकतंत्र क्यों नहीं संभव है?
5. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (क) लोकतंत्र में जन संचार साधनों की भूमिका
   (ख) "बहुतंत्र" क्या है?
   (ग) लोकतंत्र की प्रक्रिया और "असहभगिता" और "अतिसहभगिता

अध्याय 7

संसदीय और अध्यक्षीय सरकार

सरकार के तीन मुख्य कार्य हैं: कार्यकारी, विधायी और न्यायिक। ये कार्य विभिन्न संस्थाओं को सौंपे जाते हैं। संसदीय और अध्यक्षीय सरकारों में भेद इस दृष्टि से किया जाता है कि कार्यपालिका और विधायिका के बीच क्या संबंध है और ये किस सीमा तक एक दूसरे से स्वतंत्र हैं। अध्यक्षीय शासन में ये दोनों पृथक होते हैं, लेकिन संसदीय व्यवस्था में कार्यपालिका का उद्गम स्थान विधायिका है। "सत्ता का विलय" संसदीय सरकार की विशेषता है और "सत्ता का पृथक्करण" अध्यक्षीय सरकार की। इनमें दूसरा अंतर यह है कि कार्यकारी सत्ता का स्थान निर्धारण। संसदीय व्यवस्था में "सरकार का प्रधान" तथा "राज्य का प्रधान" पृथक-पृथक होता है। भारत का राष्ट्रपति और ब्रिटेन का सम्राट राज्य के प्रधान हैं और इन दोनों देशों में सरकार के प्रधान हैं, प्रधान मंत्री। अध्यक्षीय सरकार में ऐसा कोई भेद नहीं होता। यहाँ समस्त कार्यकारी अधिकार एक व्यक्ति को सौंपे जाते हैं। अमेरिका का राष्ट्रपति वहां की कार्यपालिका का प्रतिनिधित्व करता है। ब्रिटेन और अमेरिका संसदीय और अध्यक्षीय व्यवस्था के सर्वमान्य उदाहरण हैं। कुछ अन्य व्यवस्थाएं ऐसी हैं जिनमें दोनों की विशेषताएं मौजूद हैं।

संसदीय व्यवस्था

संसदीय व्यवस्था में विधायिका का गठन मुख्यत: निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है। जिस राजनीतिक दल को बहुमत प्राप्त होता है उसके नेता को प्रधान मंत्री के पद के लिए आमंत्रित किया जाता है। प्रधान मंत्री, मंत्री-परिषद का गठन करता है जिसके सदस्य वे सांसद होते हैं जो उसी के दल के हों। इस तरह संपूर्ण कार्यपालिका बहुमत दल के सदस्यों से निर्मित होती है। मंत्रिपरिषद के अंदर ही एक छोटा समूह होता है जिसे मंत्रिमंडल (Cabinet) कहते हैं। भारत की मंत्री परिषद में केबिनेट मंत्रियों के अतिरिक्त राज्य मंत्री और उपमंत्री, और कभी-कभी ससदीय सचिवों का स्थान भी होता है। मंत्रिमंडल के सदस्यों को अधिक महत्व दिया जाता है और प्रधान मंत्री उनसे नियमित मंत्रणा करता है। उनके पास सरकार के महत्त्वपूर्ण विभागों का स्वतंत्र कार्य भार होता है। राज्यमंत्री केबिनेट मंत्री के साथ संलग्न होकर किसी सरकारी विभाग का काम देखते हैं। उन्हें विभागों का स्वतंत्र कार्य भार भी दिया जा सकता है। उपमंत्री केबिनेट मंत्री और राज्य मंत्री के साथ जुड़े होते हैं, और कार्य संपादन में उनकी मदद करते हैं। वित्त जैसे महत्त्वपूर्ण विभाग के मंत्री के साथ कई उपमंत्री होते हैं। संसदीय सचिव का कार्य मंत्रियों को उनके संसदीय मामलों में सहायता करने तक ही सीमित रहता है। भारतीय संविधान की धारा 74 (1) में राष्ट्रपति द्वारा प्रधान मंत्री और धारा 75 (1) में मंत्रीपरिषद की नियुक्ति की प्रस्तावना है। मंत्रियों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधान मंत्री की सिफारिश पर की जाती है। प्रधान मंत्री अपने सहयोगी मंत्रियों का चुनाव करता है और अगर प्रधान मंत्री चाहता है तो उन्हें इस्तीफा देना पड़ता है। प्रधान मंत्री अगर विधायिका में विश्वास खो देता है तो उसे अपने मंत्रिपरिषद के साथ त्यागपत्र देना पड़ता है। ऐसा उस हालत में भी होता है जब उसी दल का कोई अन्य नेता पद संभालता है। नया नेता फिर से अपने मंत्रिपरिषद का गठन करता है।

विधायिका में राजनीतिक दलों की स्थिति के आधार पर ही प्रधान मंत्री की नियुक्ति होती है। अगर विधायिका में दल की स्थिति के अनुसार किसी दल को स्पष्ट बहुमत हो तो। प्रधान मंत्री की नियुक्ति स्वत: सिद्ध होती है। दल-स्थिति स्पष्ट न होने की स्थिति में प्रधान मंत्री की नियुक्ति से संबंधित निर्णय राज्य के प्रधान द्वारा लिया जाता है।

पदासीन हो जाने पर मंत्रिपरिषद्, प्रधान मंत्री और सरकार के सभी कार्यों के लिए सामूहिक रूप से उत्तरदायी है। सामूहिक उत्तरदायित्व का अर्थ यह है कि मंत्रिपरिषद के सभी सदस्य उसके सभी निर्णयों का प्रकट रूप से समर्थन करें। जैसे हेरी ई० एक्सटाइन कहते हैं, "एक का कार्य हर एक का है और वे एक साथ पद पर बने रहते हैं या पदच्युत होते हैं।" अगर कोई मंत्री, मंत्रिमंडल के निर्णय से असहमति प्रकट करता है, तो उसे त्यागपत्र देना पड़ता है। इस व्यवस्था में यह भी प्रावधान है कि अगर प्रधान मंत्री संसद में विश्वास खो देता है तो उसे अपने मंत्रियों के साथ त्यागपत्र देना होगा। मंत्रिमंडल के सभी निर्णयों के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व के साथ-साथ मंत्री अपने विभागीय कार्य के लिए व्यक्तिगत रूप से भी उत्तरदायी होता है। भारत में मंत्रियों को दिए जाने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण विभाग –गृह, विदेश, वित्त, उद्योग, कृषि आदि हैं। हर मंत्री अपने विभाग की नीतियों और कार्यों के लिए उत्तदायी होता है। मंत्री अपने विभागों के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होते हैं। मंत्रिमंडल के सामने वही विषय लाए जाते हैं जो राजनीतिक रूप में विवादास्पद हों। साधारण स्थिति में मंत्री अपने विभागों और संबंधित विषयों के बारे में निर्णय लेते हैं। वे इन विभागों के लिए पूर्णतया उत्तरदायी होते हैं। इस तरह मंत्रितयों का उत्तरदायित्व व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार का होता है। यह उत्तरदायित्व विधायिका के प्रति होता है जहां विश्वास खो देने पर प्रधान मंत्री और मंत्रियों के पास एक महत्त्वपूर्ण अधिकार यह होता है कि वह विधायिका की अवधि पूरी होने से पहले ही उसे विघटित करने की सिफारिश कर सकते हैं।

संसदीय व्यवस्था उत्तरदायी सरकार सुनिश्चित करती है और उसके लिए पूरी सावधानी बरतती है। यह विधायिका के प्रति उत्तरदायित्व के माध्यम से होता है, जो अंतत: लोकमत पर आधारित होता है। इस कड़ी के अभाव में मंत्री और प्रधानमंत्री तानाशाही तरीके अपना सकते हैं। विधायी उत्तरदायित्व सरकारी विभाग की नीतियों और कार्य पर प्रभावकारी नियंत्रण रखते हैं।

अध्यक्षीय व्यवस्था

यह व्यवस्था विधायी और कार्यकारी सत्ताओं के पृथक्करण के सिद्धांत पर आधारित है। हम अमेरिका का उदाहरण लें जहां राष्ट्रपति और विधायिका, जिसे कांग्रेस कहते हैं, इन दोनों का चुनाव अलग-अलग होता है। कांग्रेस के दो सदनों, प्रतिनिधि सभा और सीनेट, का चुनाव विभिन्न निर्वाचन सिद्धांतों के आधार पर और अलग अवधि के लिए होता है। राष्ट्रपति का चुनाव जनता द्वारा एक निश्चित अवधि के लिए होता है और वह जनता से सीधी वैधता प्राप्त करता है। राष्ट्रपति विधायिका का सदस्य नहीं होता। राष्ट्रपति और कांग्रेस एक दूसरे से पृथक् रूप से कार्य करते हैं। राष्ट्रपति के कार्य पर विधायिका का कोई नियंत्रण नहीं होता और सामान्य रूप से वह राष्ट्रपति को पद से हटा भी नहीं सकती है। ऐसा पदच्युति के अंतिम तरीके,महाभियोग से ही हो सकता है। राष्ट्रपति विधायिका के दोनों सदनों को संबोधित करता है और अगर चाहे तो, संदेश भेज सकता है, लेकिन वह कांग्रेस को विघटित नहीं कर सकता।

अमेरिका का राष्ट्रपति परामर्श देने के लिए एक मंत्रिमंडल का गठन करता है। ये विधायिका के सदस्य नहीं होते। अगर कोई विधायक मंत्रीपद के लिए चुना जाता है, तो उसे विधायिका से त्यागपत्र देना पड़ता है। मंत्रिपरिषद के सदस्य कांग्रेस के प्रति उत्तरदायी नहीं होते। वे पूर्णतया राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

सरकार और राज्य के प्रधानों में कोई भेद नहीं होता, राष्ट्रपति के पद में ही दोनों सम्मिलित होते हैं। विधायिका में बहुमत दल के आधार पर कार्यपालिका की नियुक्ति के बारे में स्वनिर्णय का कोई प्रश्न ही नहीं।

सत्ता के पृथक्करण का सिद्धांत सरकार के तीन अंगों को भिन्न और स्वतंत्र रखता है। लेकिन अगर इस सिद्धांत का अक्षरशः पालन किया जाए तो सरकार के काम में बाधा पड़ेगी। एक ही सरकार के अंग होने के कारण उनके कार्यों से समन्वय आवश्यक है। इनमें से किसी को दूसरे अंगों को ध्यान में रखे बगैर, अपने निर्णय को लागू करने का असीमित अधिकार नहीं होना चाहिए। ऐसा होने से तीनों अंग एक दूसरे के विरुद्ध काम कर सकते हैं। उनमें संघर्ष की स्थिति भी हो सकती है। इसीलिए संविधान में सत्ता के पृथक्करण को बहुत कठोर नहीं होने दिया जाता है। सत्ता को पृथक तो किया जाता है लेकिन

संस्थाओं के बीच मिलने वाली कड़ियां भी होती हैं जिससे वे एक दूसरे पर नियंत्रण रख सकें और उनके काम में समन्वय हो सके। इसको नियंत्रण और संतुलन की व्यवस्था (checks and balances) कहते हैं। इस प्रकार के प्रावधान अमेरिका के संविधान में पाये जाते हैं। कांग्रेस का द्वितीय सदन, सिनेट, राष्ट्रपति द्वारा की गई नियुक्तियों का अनुमोदन करता है। इस तरह कार्यपालिका के कार्य में उसका कुछ अधिकार है। राष्ट्रपति को विधायिका द्वारा पारित विधयेक पर निशेषाधिकार भी प्राप्त है, जिससे कांग्रेस के कार्यों में राष्ट्रपति का नियंत्रण बना रहता है। जिस विधेयक पर राष्ट्रपति अपना निशेषाधिकार का प्रयोग करता है, वह अगर कांग्रेस द्वारा दो तिहाई बहुमत से पुनः पारित कर दिया जाता है तो राष्ट्रपति की स्वीकृति के बगैर भी कानून मान लिया जाता है। न्यायाधीशों की पदावधि पूरे जीवन की होती है, लेकिन उन्हें पदच्युत किया जा सकता है। संविधान एक स्वतंत्र न्यायपालिका का प्रावधान करता है, लेकिन न्यायाधीशों की संख्या और उनका वेतन विधायिका द्वारा निर्धारित किया जाता है। इसी प्रकार राष्ट्रपति दूसरे देशों के साथ संधि वार्ता कर सकता है, लेकिन सिनेट द्वारा दो-तिहाई बहुमत से उनका अनुमोदन आवश्यक है। इस तरह कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के पृथक अधिकार हैं, लेकिन वे एक दूसरे के कार्य पर नियंत्रण रखते हैं और संतुलन बनाए रखते हैं।

भारत और फ्रांस का उदाहरण

संसदीय और अध्यक्षीय सरकारों के जिन लक्षणों की चर्चा ऊपर की गई है, वे उनके शुद्ध स्वरूप के लक्षण हैं। कुछ ऐसे देश हैं जिनमें निर्वाचित राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों पदों का प्रावधान है। भारत और फ्रांस ऐसे ही उदाहरण हैं। भारत में प्रधानमंत्री का पद अधिक शक्तिशाली बनाया गया है और फ्रांस का संविधान राष्ट्रपति के पद को अधिक महत्वपूर्ण मानता है।

ब्रिटेन के प्रतिमान (Model) पर आधारित भारत की सरकार-व्यवस्था राष्ट्रपति को राज्य का प्रधान मानती है। यह विधायिका में बहुमत दल के नेता को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करता है। लेकिन राष्ट्रपति का निर्वाचन, केंद्र और राज्यों के निर्वाचित विधायकों द्वारा होता है। भारत का राष्ट्रपति एक सांविधानिक प्रधान बन कर रह जाता है और सत्ता प्रधानमंत्री के हाथ में होती है, जिसका प्रयोग वह संसद में बहुमत दल के नेता होने के कारण करता है। राष्ट्रपति के चुनाव के लिए निर्वाचक मंडल (Electoral College) विधायकों द्वारा संगठित होती है, जिसके लिए दलों की स्थिति महत्वपूर्ण है। राज्याध्यक्ष के रूप में राष्ट्रपति के अधिकार महत्वपूर्ण मालूम पड़ते हैं, लेकिन प्रधानमंत्री की राजनीतिक स्थिति के कारण वास्तविक सत्ता उसी के पास होती है।

फ्रांस की व्यवस्था भिन्न है। अक्तूबर 1946 ई. के चतुर्थ गणराज्य (Fourth Republic) के अंतर्गत बनी सरकार काफी समय तक अस्थाई रही। 1958 ई. में चार्ल्स डी गाल के नेतृत्व में सशक्त परिवर्तन द्वारा पांचवे गणराज्य (Fifth Republic) की स्थापना हुई। इस संविधान में राष्ट्रपति के चुनाव के लिए एक बड़े निर्वाचक मंडल का गठन हुआ, जिसके सदस्य, सांसद नहीं, स्थानीय पार्षद होते थे। 1962 ई. में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन यह आया कि राष्ट्रपति के प्रत्यक्ष निर्वाचन की व्यवस्था की गई। वह प्रधानमंत्री को मनोनीत करता है, जो मंत्री-परिषद् की स्थापना करता है। वे विधायिका के सदस्य नहीं हो सकते। अगर वे विधायक होते हैं तो उन्हें विधायिका से त्यागपत्र देना पड़ता है। मंत्रिपरिषद का सभापतित्व राष्ट्रपति करता है। यही सरकार के निर्णयों का मुख्य स्रोत भी होता है।

प्रधानमंत्री और अन्य मंत्रियों का विधायिका से कोई सीधा संबंध नहीं होता, जो उन्हें उस प्रकार का महत्व दे सके जो एक संसदीय व्यवस्था में दिया जाता है। एक प्रभावशाली कार्यपालिका स्थापित करने के प्रयास में, फ्रांस की विधायिका एक कमजोर संस्था बन कर रह गई है। वास्तविक सत्ता राष्ट्रपति के हाथों में है।

इस प्रकार की व्यवस्था के लिए राज्याध्यक्ष और सरकार के प्रधान, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के बीच उचित संतुलन रखना पड़ता है। इन दो संस्थाओं की सांविधानिक स्थिति और सत्ता देशों के राजनीतिक अनुभव पर निर्भर करती है। वास्तविक कार्य में राजनीतिक प्रक्रिया के कारण, उनके तुलनात्मक सत्ता के विषय में समय-समय पर विवाद होते रहते हैं।

> कुछ व्यक्ति भारत में अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली का समर्थन करते हैं। इस समर्थन के पीछे दिए जाने वाले तर्कों एवं तथ्यों का पता लगाइए।

गुण और दोष

संसदीय व्यवस्था में कार्यपालिका और विधायिका में अच्छा समन्वय रहता है। जिस दल का विधायिका में बहुमत होता है, उसका नेता प्रधानमंत्री होने के नाते कार्यपालिका पर अधिकार रखता है। वास्तव में विधायी-प्रक्रिया पर कार्यपालिका का नियंत्रण होता है। यह व्यवस्था दोनों संस्थाओं के निर्विघ्न रूप में काम करने में सहायता करती है। लेकिन साथ ही इससे कार्यपालिका संबंधी और विधायी सत्ता का केंद्रीकरण भी होता है। कार्यपालिका के कार्य पर विधायिका का सीमित नियंत्रण नियंत्रण होता है। अध्यक्षीय व्यवस्था के सत्ता के पृथक्करण के सिद्धांत के अंतर्गत दोनों संस्थाओं का एक-दूसरे पर नियंत्रण होता है। इस व्यवस्था में विधायिका और राष्ट्रपति के बीच संघर्ष की स्थिति भी हो सकती है।

निर्वाचन के बाद, अध्यक्षीय व्यवस्था में, राष्ट्रपति निर्विघ्न रूप से अपनी अवधि तक पद पर बना रह सकता है। इस बीच उसके लोकनियंत्रण का कोई प्रावधान नहीं है। संसदीय व्यवस्था में विधायिका के साथ संबंध होने से, वह अधिक संवेदनशील बना रहता है। मंत्री विधायिका के कार्यों में भाग लेते हैं, उन्हें विधायिका के सामने प्रतिदिन सरकारी नीतियों के बारे में सफाई देनी पड़ती है। वे संसदीय वादविवादों में उपस्थित रहते हैं। विधायक होने के नाते उनका अपने चुनाव-क्षेत्र से सतत् संपर्क भी बना रहता है। दूसरी ओर अध्यक्षीय व्यवस्था में कार्यपालिका और विधायिका में इस प्रकार का पारस्परिक संपर्क नहीं होता।

संसदीय व्यवस्था में मंत्री पद संभालने से पहले ही नेताओं को प्रशिक्षण मिल जाता है। इस प्रकार का प्रशिक्षण उन्हें विधायिका और कार्यपालिका के संबंधों के आधार पर मिलता है। सामूहिक उत्तरदायित्व यह सुनिश्चित करता है कि सत्ता और उत्तरदायित्व मंत्रियों के एक समूह में निहित हों और विधायिका के प्रति अंतिम रूप से और सतत् उत्तरदायी रहे। अध्यक्षीय व्यवस्था में कार्यपालिका-सत्ता एक व्यक्ति में निहित होती है, जिस पर विधायिका का नियंत्रण नहीं के बराबर होता है। अध्यक्षीय व्यवस्था के सत्तावादी शासन में बदलने की अधिक संभावना होती है। इस व्यवस्था का दूसरा पक्ष यह है कि इसमें निर्णय जल्दी लिए जा सकते हैं। इसका कारण यह कि निर्णय एक ही व्यक्ति को लेना होता है और वही उसके लिए उत्तरदायी भी होता है। संसदीय व्यवस्था में यह प्रक्रिया कुछ बिखरी सी होती है और निर्णय लेने में अधिक समय लग जाता है।

दोनों ही व्यवस्थाओं में कार्यपालिका एक निश्चित अवधि के लिए चुनी जाती है। ब्रिटेन और भारत के प्रधानमंत्री पांच वर्षों के लिए चुने जाते हैं और अमेरिका के राष्ट्रपति की अवधि चार वर्षों की होती है। ऐसी स्थिति आ सकती है जब इस अवधि के अंतर्गत ही नेतृत्व का परिवर्तन आवश्यक हो जाए। इसके लिए युक्तिसंगत् राजनीतिक कारण हो सकते हैं। संसदीय व्यवस्था में इस प्रकार का परिवर्तन विधायिका में बहुमत सिद्ध करने के सामान्य क्रम में संभव है। अध्यक्षीय व्यवस्था में यह परिवर्तन निर्विघ्न रूप में नहीं हो पाता। संविधान में पदच्युति का प्रावधान होता है, लेकिन यह एक अंतिम कदम है और अक्सर इसकी कार्यविधि जटिल और कठिन होती है। अध्यक्षीय व्यवस्था में नेतृत्व का परिवर्तन अवधि के बीच में सामान्य क्रम में नहीं हो सकता।

पदावधि की निश्चितता का सकारात्मक पक्ष भी है। इससे स्थायी सरकार की स्थापना होती है। एक बार चुन लिए जाने पर राष्ट्रपति बगैर किसी अनुचित हस्तक्षेप के, राजनीतिक निर्णयों पर अपना ध्यान दे सकता है। संसदीय व्यवस्था में कार्यपालिका का ध्यान और समय अपना विधायी बहुमत बनाए रखने में लगा रहता है। वे अक्सर ऐसे निर्णय नहीं ले पाते जिसमें समाज के किसी समूह द्वारा प्रतिवाद की संभावना रहती है। सत्ताधारी दल को, संसद में कम बहुमत होने की स्थिति में संसदीय सरकार के अस्थायी होने की संभावना रहती है और बार-बार परिवर्तन हो सकता है। ऐसा उन देशों में होता है जहाँ बहुदलीय व्यवस्था है और मतैक्य कम मात्रा में है। यह तर्क अक्सर दिया जाता है कि अध्यक्षीय सरकार मज़बूत और प्रभावकारी होती है। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को बदल कर एक अध्यक्षीय व्यवस्था बनाने का सुझाव इसी आधार पर दिया जाता है।

सरकार के दो स्वरूपों की क्षमताओं और कमज़ोरियों की जो चर्चा ऊपर की गई है उसमें मुख्यतः सांविधानिक और कानूनी पक्ष पर ध्यान दिया गया है। इसका एक अधिक महत्वपूर्ण पक्ष है राजनीतिक प्रक्रिया और राजनीतिक दल जैसी संस्थाओं का कार्य। देश में राजनीतिक परिपक्वता की मात्रा भी दोनों प्रकार के सरकारों के कार्य को निर्धारित करती है। ब्रिटेन और अमेरिका में जिस प्रकार की द्विदलीय व्यवस्था का

का विकास हुआ, उसका प्रभाव उन देशों की संसदीय और अध्यक्षीय व्यवस्थाओं पर पड़ा है। अन्य देशों में जहां राजनीतिक बहुमत स्पष्ट नहीं रहा है, वहां संसदीय व्यवस्था स्थायी सरकार नहीं दे पाई है। फ्रांस इसका एक अच्छा उदाहरण है। चार्ल्स द गाल के नेतृत्व में पांचवे गणतंत्र में फ्रांस के राष्ट्रपति के पद को अधिक शक्तिशाली बनाया गया। भारत में बहुत से दल होने के बावजूद, कांग्रेस की विचारधारा पर आमतौर पर मतैक्य रही है। केंद्र में 1977 ई.–1980 ई. और कुछ राज्यों में 1967 ई.–1969 ई. की अवधि को छोड़ कर, भारत में संसदीय व्यवस्था संतोषजनक रूप से कार्य करती रही है। इस तरह संसदीय और अध्यक्षीय व्यवस्थाओं के कार्य को समझने के लिए आवश्यक है कि हम देश की राजनीतिक पृष्ठभूमि और राजनीतिक दलों के कार्य को अच्छी तरह समझ लें।

कार्यपालिका के नेतृत्व की प्रवृत्ति

वर्तमान समय में सरकार के कार्यपालिका प्रधान की प्रमुख भूमिका मानी जाती है। ब्रिटेन और अमेरिका जैसी पुरानी राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक प्रक्रिया के प्रवाह के परिणाम स्वरूप ऐसा हुआ। फ्रांस जैसे अन्य देशों में एक सशक्त कार्यपालिका की आवश्यकता का अनुभव किया गया और संविधान में उसकी व्यवस्था की गई।

ब्रिटेन की संसदीय व्यवस्था वास्तविक रूप में प्रधान मंत्री व्यवस्था में परिणत हो गई है। प्रधान मंत्री और मंत्रिमंडल पूरी राजनीतिक व्यवस्था का केंद्र बिंदु बन गया है। विधि निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया बहुमत वाले दल के नियंत्रण में होती है, जिसका प्रतिनिधि प्रधान मंत्री और मंत्रिपरिषद को माना जाता है। 1920 ई. के दशक में जेम्स बी. ब्राइस ने अपनी पुस्तक "मार्डन डेमोक्रेसीज", में "विधायिका के ह्रास" की चर्चा की थी। दूसरे शब्दों में के.सी. ह्वीयर इसे "कार्यपालिका की सत्ता में महान वृद्धि" कहते है, जिसका मुख्य कारण है आधुनिक राज्य के कार्यों का प्रसार। आर्थिक योजना जैसे कार्य राज्य के कामों में सम्मिलित हो गए हैं जिसमें कार्यपालिका को सशक्त कार्यवाही की आवश्यकता होती है। इन कार्यों के औद्योगिक और तकनीकी पक्ष को संभालने के लिए कुछ विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है। विधि निर्माण (Delegated legislation) का बढ़ता हुआ प्रयोग, कार्यपालिका को और सशक्त बना देता है। अंतरराष्ट्रीय स्थिति से देशों की सुरक्षा नीति को जो महत्व मिलता है, उससे भी कार्यपालिका के प्रभाव में वृद्धि हुई हैं।

अध्यक्षीय व्यवस्था स्पष्टतः एक व्यक्ति के नेतृत्व पर आधारित है। संसदीय व्यवस्था एक समूह के नेतृत्व पर बल देती है, लेकिन उसमें भी प्रधान मंत्री का पद अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। आम चुनाव के समय प्रधान मंत्री के पद के लिए प्रतियोगी उम्मीदवार एक मुख्य विषय होते हैं। हर चुनाव एक तरह से जनमत संग्रह का रूप ले लेता है। ऐसा सिर्फ ब्रिटेन में ही नहीं, भारत में भी होता है। पं. जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इंन्दिरा गांधी और अभी हाल में, श्री राजीव गांधी का नेतृत्व आम चुनावों में सबसे महत्वपूर्ण विषय रहा है।

तीसरी दुनिया के देश विकास की प्रक्रिया और प्रजातंत्र दोनों ही आदर्शों के प्रति सजग हैं। वे एक ऐसी कार्यपालिका चाहते हैं जो सशक्त, प्रभावकारी और साथ ही सीमित भी हो। इसलिए ऐसे बहुत से देश अध्यक्षीय व्यवस्था की ओर आकर्षित होते हैं।

कुछ करने को

कक्षा को दो समूहों में बाँट लीजिए। विद्यार्थियों का एक समूह भारत में अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली का समर्थन करे। दूसरा वर्तमान संसदात्मक व्यवस्था का समर्थन करे। छात्रों को पहले से ही बता दिया जाए कि वे इस विषय पर वाद विवाद के लिए तैयार रहें।

अध्यापक के निर्देशन में इस विषय पर कक्षा में वाद विवाद की एक प्रतियोगिता आयोजित की जाए।

अभ्यास

1. संसदीय प्रणाली से क्या अभिप्राय है? इसकी प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
2. अध्यक्षीय प्रणाली किसे कहते हैं? इसकी मुख्य विशेषताएँ लिखो।
3. संसदीय तथा अध्यक्षीय प्रणालियों में से कौन सी श्रेष्ठतर है और क्यों?
4. भारत द्वारा संसदीय प्रणाली को अपनाये जाने के कारण बताइए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए:
   (क) सामूहिक उत्तरदायित्व
   (ख) व्यक्तिगत उत्तरदायित्व
   (ग) शक्तियों का पृथक्करण
   (घ) नियंत्रण एवं सन्तुलन
   (ङ) सांविधानिक अध्यक्ष

अध्याय 8

एकात्मक और संघात्मक सरकार

सरकार अपने अधिकार का प्रयोग एक निश्चित भूभाग पर करती है। यह भूभाग आकार में बड़ा भी हो सकता है और छोटा भी। सरकार का एकात्मक और संघात्मक स्वरूप इस पर निर्भर करता है कि केंद्रीय सरकार, जिसका अधिकार क्षेत्र पूरे भूभाग पर है, और क्षेत्रीय इकाइयों के सरकारों के बीच क्या संबंध हैं। एकात्मक व्यवस्था में क्षेत्रीय इकाइयाँ केंद्रीय सरकार के अधीन होती हैं। संघीय व्यवस्था में कोई किसी के अधीनस्थ नहीं होता और केंद्रीय और क्षेत्रीय सरकार एक दूसरे के समकक्ष होती हैं। एक तीसरी व्यवस्था होती है परिसंघ (confederation), जिसमें केंद्रीय सरकार क्षेत्रीय सरकार के अधीन होती है। एकात्मक और संघात्मक सरकारों में भेद सत्ता के क्षेत्रीय विभाजन के आधार पर होता है।

एकात्मक सरकार

इस व्यवस्था में सरकार का एक ही स्रोत होता है, जिसका अधिकार पूरे समाज पर होता है। प्रशासकीय सुविधा और सुगमता के लिए भूभाग को छोटी इकाइयों में बाँट दिया जाता है, जहां की सरकार के वही सीमित अधिकार होते हैं जिन्हें केंद्रीय सरकार निर्धारित करती है। ब्रिटेन के "काउंटी" और फ्रांस के "डिपार्टमेंट" इस तरह के स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों के अच्छे उदाहरण हैं, जो केवल प्रदत्त (delegated) अधिकारों का प्रयोग कर सकते हैं। वास्तविक सत्ता सरकार की उस केंद्रीय इकाई में निहित होती है जो यह निर्धारित करती है कि स्थानीय शासन के कार्य और अधिकार क्या हों। स्थानीय संस्थाएं केंद्रीय सरकार के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करती हैं। केंद्रीय सरकार उनका अधिकार कम या ज्यादा कर सकती है, और चाहे तो छीन भी सकती है। केंद्रीय सरकार इन संस्थाओं का निर्माण भी कर सकती है, और आवश्यकता पड़ने पर समाप्त भी कर सकती है। स्थानीय संस्थाओं का केंद्रीय सरकार से अलग कोई अस्तित्व नहीं होता।

> एकात्मक शासन प्रणाली वाले देशों की एक सूची तैयार कीजिए।

संघीय सरकार

इस व्यवस्था में सरकार के दो स्तर होते हैं–केंद्रीय स्तर और इकाइयों का स्तर। इकाइयां केंद्र के अधीन नहीं होतीं। दोनों के अधिकारों का स्रोत एक ही होता है और वह है लिखित संविधान, जो देश का सर्वोच्च कानून होता है। संविधान के द्वारा ही केंद्र और इकाइयों के अधिकार-क्षेत्र का निर्धारण होता है। विभिन्न संघों में सत्ता का संतुलन विभिन्न प्रकार का है। अमेरिका के संविधान में इकाइयों (राज्यों) को अधिक महत्व दिया गया है, और कनाडा का संविधान सशक्त संघ (केंद्र) की स्थापना करता है। भारतीय संविधान में केंद्र और राज्यों के विधायी अधिकार तीन सूचियों में विभक्त किए गए हैं: संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची। पहले दो सूचियों में वे विषय दिए गए हैं, जिन पर क्रमशः केंद्रीय संसद और राज्य विधायिका कानून बना सकती हैं। समवर्ती सूची के विषयों पर दोनों स्तर की विधायिकाओं का "समवर्ती" अधिकार

होता है। अधिकारों के इस बंटवारे के अतिरिक्त भारतीय संविधान के कुछ अन्य प्रावधान ऐसे हैं जो केंद्र को अधिक शक्तिशाली बनाते हैं। इस तरह संघीय व्यवस्थाओं में सत्ता का विभाजन तो होता है, लेकिन सत्ता का संतुलन विभिन्न प्रकार का होता है। यह संतुलन संघ बनने से पहले की ऐतिहासिक प्रक्रिया पर निर्भर करता है।

परिसंघीय सरकार

स्वतंत्र राज्य किसी विशेष प्रयोजन के लिए संघ बना सकते हैं। इस तरह के संघ में केंद्रीय सरकार का अधिकार क्षेत्र सीमित होता है। स्विट्ज़रलैंड इस तरह का परिसंघ है, जहां के कैंटॉन को अधिक अधिकार प्राप्त हैं। मार्च 1957 ई. में रोम की संधि के परिणाम स्वरूप यूरोपीय आर्थिक समुदाय (जिसे यूरोपियन कामन मार्केट कहते हैं) का निर्माण हुआ। व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध एक विशाल क्षेत्र के 12 देश इसके सदस्य हैं जिन्हें इस संन्धि के अंतर्गत कुछ अधिकार प्राप्त हैं। कम्युनिस्ट फारम फ़ार म्युचुयल इकानोमिक एसिसटेंस (कामेकोन) भी कुछ देशों का ऐसा ही एक परिसंघ है। ऐसे और भी कई संगठन हैं, जिसमें किसी विशेष क्षेत्र के या किसी विचारधारा के देश किसी खास सहकारी कार्य के लिए परिसंघ बना लेते हैं।

परिसंघीय व्यवस्था को प्रायः पूर्ण विकसित संघीय व्यवस्था का पूर्वरूप माना जाता है। जो देश किसी सीमित प्रयोजन से संघ बनाते हैं वे अपने अधिकार सम्मिलित सरकार को समर्पित करने में सावधानी दिखाते हैं। उदाहरणस्वरूप, आरंभिक 13 राज्यों ने अमेरिका में परिसंघ के निर्माण का निर्णय लिया और अंत में 1787 ई. के संविधान द्वारा इसे संघीय प्रणाली मे परिवर्तित कर दिया। अतः परिसंघीय व्यवस्था को अक्सर संघ का परिवर्ती माना जाता है।

संघीय सरकार के निर्माण एवं संगठन के लिए अनेक तत्व उत्तरदायी होते हैं। जैसे, किन कारणों से छोटी इकाइयां आपस में मिलती हैं या बड़ी इकाइयां छोटी इकाइयों में बंटती है? किन स्थितियों में संघों की स्थापना होती है? संघीय संगठन को समझने के लिये इन विषयों पर विचार महत्वपूर्ण हैं।

कुछ राज्य बाहरी शक्तियों से आशंका और दूसरे राज्यों द्वारा आक्रमण के भय के कारण, आपसी विलय का निर्णय ले लेते हैं। स्विट्ज़रलैंड का संघ 1848 ई. में बना। उससे पहले यह प्रदेश तेरहवीं शताब्दी से लगातार पड़ोसी देशों से आतंकित रहता था। कई अवसरों पर आक्रमण की आशंकाएं वास्तविकता में बदल गईं और यही संघीय व्यवस्था का आधार बन गया। राष्ट्रीयता संघों के आविर्भाव का एक महत्वपूर्ण कारण रहा है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य महत्वपूर्ण तत्व हैं : किसी सामूहिक लक्ष्य प्राप्ति के लिए साथ होना, एक सामूहिक संस्कृति, एक सम्मिलित परंपरा की भावना आदि। कुछ भौगोलिक इकाइयां और उनमें निवास करने वाले लोगों के कुछ समूह पृथक दीखते हुए भी उपरोक्त कारणों से एकीकरण की भावना से प्रेरित हो सकते हैं। यह भावना भी संघ के निर्माण का आधार बन जाती है। बीसवीं शताब्दी में उपनिवेशवादी शासन से मुक्त होने वाले तीसरी दुनियाँ के बहुत से देशों में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीयता की भावना जागी। ऐसे कुछ संग्राम काफी दिनों तक चले और इसी समय में लोग अपनी संस्कृति और परंपरा के बारे में सतर्क हुए और उनमें सामूहिक गौरव की भावना आई। भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और भाषा बोलने वालों में राष्ट्रीयता की भावना आई। इस एकीकरण की भावना के साथ ही विभिन्नताएं इतनी महत्वपूर्ण थीं कि संघीय शासन उपयोगी माना गया।

संघ या परिसंघ का निर्माण करने वाली इकाइयाँ कभी-कभी आर्थिक कारणों से भी प्रेरित होती हैं। सम्मिलित हो जाने से अनेक महत्त्वपूर्ण आर्थिक लाभ होते हैं। कुछ लेखकों ने सरकार के स्वरूप के "आर्थिक आधार" की चर्चा की है। यूरोपीय आर्थिक समुदाय (E. E. C.) और (CMECON) जैसी कुछ संस्थाओं का मुख्य ध्येय आर्थिक सहयोग ही है।

द्वितीय महायुद्ध के बाद उपनिवेशवादी साम्राज्यों के विघटन के बाद जो देश बने उनमें से बहुतों ने संघीय व्यवस्था को अपनाया है। ये देश विश्व के विभिन्न भागों, एशिया, अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका, मध्यपूर्व और करेबियन द्वीप समूह में हैं। ये क्षेत्र विभिन्न देशों के उपनिवेश थे। इनमें बहुत से क्षेत्रों का उपनिवेशवादी शासन के दौरान ही एकीकरण कर दिया गया। अपने अधिकारक्षेत्र का और आर्थिक विस्तार करने के प्रयास में, विभिन्न प्रदेशों को एक उपनिवेशवादी शासन के ही अधीन कर दिया गया। ये मुख्यतः प्रशासनिक इकाइयाँ थीं और विभिन्न प्रकार के क्षेत्र इनके अंतर्गत थे। विभिन्न जाति, धर्म, भाषा और संस्कृति के लोग प्रशासनिक कारणों से एकता के सूत्र में बंध गए। विभिन्न उपनिवेशवादी राज्यों के

विस्तार में ऐसा भी हुआ कि एक ही प्रदेश विभिन्न साम्राज्यों के अधिकार में आकर बंट गया। भारतीय भूखंड पर सिर्फ ब्रिटेन का अधिकार नहीं था। इसके कुछ प्रदेश फ्रांस और पुर्तगाल के अधिकार में भी थे। इनमें से कुछ तो ब्रिटिश साम्राज्य की समाप्ति के बाद भी बने रहे। उपनिवेशवादी प्रशासन के संगठन के लिये भी क्षेत्रों की विभिन्नताओं को स्वीकार किया गया। एक उपनिवेश के लोगों ने जब स्वतंत्रता संग्राम शुरु किया तो उन्होंने संघीय व्यवस्था को ही स्वाभाविक व्यवस्था मान लिया। बहुत से देशों में उपनिवेशवादी सरकारों ने ही देश के प्रशासन में उचित हिस्सा लेने के लिए बेचैन समूहों के दबाव का अनुभव किया और अपने प्रशासन में एक प्रकार की संघीय व्यवस्था स्वीकार की। उपनिवेशवादी शासन के अंतिम चरणों में कई देशों की सरकारों ने ही संघीय व्यवस्था की शुरूआत कर दी। ऐसा भी हुआ कि उपनिवेशवादी शासन और राष्ट्रवादी संग्राम के नेताओं के बीच वार्ता के दौरान संघीय व्यवस्था को अपनाने पर सहमति हो गई। भारतीय संघीय व्यवस्था का मूल ढांचा 1935 ई० में ही लागू किया गया था। इस प्रक्रिया से और जिन देशों में संघीय व्यवस्था की स्थापना हुई वे हैं : मलाया, नाइजीरिया, वेस्टइंडीज और इंडोनेशिया। ये विभिन्न उपननिवेशवादी साम्राज्यों के अधीन थे। संघीय व्यवस्था राष्ट्रीय आंदोलन और राष्ट्रीय राजनीतिक दल के संगठन में भी परिलक्षित होती थी, जैसे भारत में कांग्रेस पार्टी का संगठन। जब ये देश स्वतंत्र हुए तो इनमें से बहुतों ने स्वाभाविक रूप से संघीय व्यवस्था को अपना लिया। नव स्वतंत्र राज्यों के लिए इस तरह एकता और विभिन्नता के विपरीत तत्वों का सम्मिश्रण संभव हुआ।

> भारतीय संविधान द्वारा भारत के किस राज्य को विशिष्ट दर्जा दिया गया है और क्यों?

संघीय व्यवस्था की विशेषताएं

संघीय व्यवस्था में सरकार के दो स्तर होते हैं : एक सरकार जिसका अधिकार क्षेत्र पूरे भूभाग पर होता है, जिसमें सभी इकाइयां सम्मिलित होती हैं और दूसरा प्रत्येक इकाई की सरकार जिसका अधिकार क्षेत्र उस इकाई तक ही सीमित होता है। भारत में पहले को "केंद्रीय" या "संघीय सरकार" कहते हैं, और दूसरे को राज्य सरकार। भारत में केंद्रीय सरकार के अतिरिक्त 25 राज्यों की अपनी-अपनी सरकार है। अन्य संघों में भी ऐसा ही है, जैसे अमरिका के 50 राज्य, कनाडा के 10 प्रांविस, आस्ट्रेलिया के राज्य और सोवियत संघ के यूनियन रिपब्लिक, आटोनामस रिपब्लिक और आटोनामस रीजन। संघीय संविधानों के लिए इन दोनों स्तरों के बीच शक्ति का विभाजन एक महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। विभिन्न देशों ने अपनी-अपनी तरह से इस विभाजन की रूपरेखा बनाई है।

इन दोनों स्तरों की सरकार एक साथ ही काम करती हैं। इसलिए इनके अधिकार और कार्य का स्पष्ट उल्लेख आवश्यक है। प्रथा और परंपरा महत्त्वपूर्ण तो हैं, लेकिन अधिकार का विभाजन समय और सुविधा पर नहीं छोड़ा जा सकता। इसके लिए एक लिखित संविधान की आवश्यकता होती है जिसमें सत्ता विभाजन के सिद्धांत और दोनों स्तरों की सरकार के कार्यों का स्पष्ट उल्लेख हो। भारतीय संविधान में केंद्र और राज्य के बीच कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका संबंधी अधिकारों के बंटवारे की व्यवस्था है। विधायिका संबंधी विषय संविधान की सातवीं अनुसूची में दिए गए हैं, जिसमें संघीय सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची में क्रमश : 97, 66, और 47 विषयों का वर्णन किया गया है। इसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि दोनों ही स्तरों की सरकारों के अधिकारों का स्रोत संविधान ही है।

संघीय व्यवस्था में सरकार की विभिन्न इकाइयों के क्षेत्र और अधिकार का संविधान एक कानूनी दस्तावेज होता है। ऐसी स्थिति आ सकती है जब सरकारें अपने अधिकारों की व्याख्या अलग-अलग ढंग से करें। विभिन्न स्तर की सरकारों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अत : किसी एक ऐसी संस्था की आवश्यकता होती है जो संविधान की प्रामाणिक व्याख्या कर सके, जिसकी सभी सरकारों के लिए बाध्यता हो। यह कार्य स्वतंत्र न्यायपालिका द्वारा किया जाता है। न्यायपालिका के कार्य और अधिकार संविधान में दिए होते हैं और उसी के द्वारा उसकी व्याख्या की सरकारों पर बाध्यता होती है। उसके संगठन, अधिकारों और कार्यों की परिभाषा इस तरह की जाती है कि न्यायपालिका सरकार की अन्य शाखाओं से और तत्कालीन सत्ता में जो सरकार है, उसके प्रभाव से स्वतंत्र रहे।

राष्ट्र की एकता और क्षेत्रीय इकाइयों की विविधता, ये दोनों सिद्धांत संघों में विभिन्न रूप से परिलक्षित होते हैं। कुछ संघीय

व्यवस्थाओं में नागरिकों को दोहरी नागरिकता प्रदान की जाती है — एक देश की, और दूसरी क्षेत्र की। अमेरिका का प्रत्येक नागरिक साथ ही किसी राज्य का भी नागरिक होता है। भारत जैसे अन्य संघों में इकहरी नागरिकता का सिद्धांत माना जाता है।

सरकार के दो स्तर केंद्रीय विधायिका के प्रतिनिधित्व के सिद्धांत में भी लक्षित होते हैं। विधायिका का एक सदन पूरे देश का प्रतिनिधित्व करता है और दूसरा सदन क्षेत्रीय इकाइयों का। अमेरिका में कांग्रेस के निम्न सदन, प्रतिनिधि सभा, में पूरे देश से चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं तथा उच्च सदन, सिनेट, के संगठन के लिए हर एक राज्य को एक ही दर्जा और महत्व दिया जाता है, चाहे उसका क्षेत्रफल और जनसंख्या कुछ भी क्यों न हो। हर एक राज्य सेनेट के लिए दो प्रतिनिधि चुनता है। स्विट्जरलैंड की कांउसिल आफ स्टेट्स कैंटनों का समान प्रतिनिधित्व करती है। सोवियत संघ में सुप्रीम सोवियत में दो सदन हैं। सोवियत आफ यूनियन के लिए जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधि चुने जाते हैं। करीब 300,000 की जनसंख्या के लिए एक प्रतिनिधि होता है। दूसरी ओर उच्च सदन सोवियत आफ नेशनालिटिज़ में हर यूनियन रिपब्लिक से 32, हर आटोनामस रिपब्लिक से 11, आटोनामस रीजन से 5 और आटोनामस एरिया में एक प्रतिनिधि भेजा जाता है। भारतीय संसद के दो सदन उसी सिद्धांत पर आधारित हैं। लोक सभा के सदस्य पूरे देश में निर्वाचन क्षेत्रों से प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं। राज्य सभा राज्यों और संघीय प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करती है। उसके सदस्यों का निर्वाचन राज्य विधान सभाओं के प्रतिनिधियों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से होता है। हर राज्य या संघीय प्रदेशों से चुने जाने वाले प्रतिनिधियों की संख्या वहां की जनसंख्या के आधार पर निश्चित की जाती है। निर्वाचित सदस्यों के अतिरिक्त, राष्ट्रपति 12 सदस्यों को राज्य सभा के लिए मनोनीत करता है। इन सदस्यों को साहित्य, कला, विज्ञान और समाज सेवा के क्षेत्रों में उनके विशेष ज्ञान या व्यावहारिक अनुभव के लिए मनोनीत किया जाता है। इस प्रकार सामन्यतया संघीय विधायिका समान प्रतिनिधित्व के सिद्धांत का अनुसरण करती है, लेकिन उनके संगठन में भिन्नता हो सकती है।

लिखित संविधान के लिए संशोधन की प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वह देश का सबसे महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। संघीय व्यवस्था की जिन विशेषताओं की व्याख्या पहले की गई है, उसका वर्णन संविधान में ही होता है। संघीय संविधान के संशोधन की किसी भी प्रक्रिया में इकाइयों की सुस्पष्ट भागीदारी आवश्यक मानी जाती है।

संघीय संतुलन

संघीय व्यवस्था के जिन मूल लक्षणों की व्याख्या ऊपर की गई है उससे संगठन के सिद्धांत की रूपरेखा का पता चलता है। केंद्र और इकाइयों को महत्व दिए जाने की दृष्टि से संघों में भिन्नताएं हैं। सरकार के दो स्तरों में शक्तियों का विभाजन विभिन्न प्रकार से किया गया है। अमेरिका में राज्यों को और भारतीय संविधान में केंद्र को अधिक महत्व दिया गया है। संघों के रूपों में भिन्नता के कई कारण हैं। संघीय व्यवस्था के आविर्भाव की ऐतिहासिक प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण है। जिन देशों में संघ की स्थापना का निर्णय इकाइयों द्वारा लिया जाता है, वहां इसका निर्णय भी इकाइयां ही लेती हैं कि केंद्र को कौन से अधिकार दिए जाएँ। दूसरी ओर, जहां संघ के निर्माण के लिए एक क्षेत्र को इकाइयों में बांट दिया जाता है वहां केंद्र यह निर्णय लेता है कि इकाइयों को क्या अधिकार दिए जाएँ। पहली स्थिति में पहल इकाइयों द्वारा की जाती है, और दूसरी स्थिति में केंद्र द्वारा। इन दोनों प्रक्रियाओं का उदाहरण अमेरिका और भारत में संघीय व्यवस्था की स्थापना है। 1787 ई० में अमेरिका के तेरह राज्यों ने संघीय व्यवस्था की स्थापना का निर्णय लिया और उसी के अनुसार वहां का संविधान बना। स्विट्ज़रलैंड में भी इसी प्रकार की प्रक्रिया अपनाई गई थी। भारत में केंद्रीय स्तर पर संघ स्थापित करने का निश्चय किया गया और देश को राज्यों में पृथक बांटा गया। राज्यों की सीमा में कई बार फेर-बदल किया गया है और समय-समय पर नए राज्यों की रचना भी की गई है।

संघ की सफलता के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ

संविधान केवल सरकार का ढांचा व्यवस्थित करता है। लेकिन संस्थाओं के वास्तविक कार्य में और बहुत से विषयों का भी प्रभाव पड़ता है।

संघ की विभिन्न इकाइयाँ एक दूसरे से भौगोलिक दृष्टि से अलग नहीं, अपितु वे एक दूसरे के समीप होनी चाहिए। दो ऐसे देश जहां इसकी वजह से कठिनाई आई है वे पाकिस्तान और वेस्टइंडीज़ हैं। पश्चिम और पूर्वी पाकिस्तान एक दूसरे से अलग थे और बीच में लगभग 19600 किलोमीटर का भारतीय

क्षेत्र था। जनवरी 1950 ई० में वेस्टइन्डीज़ में संघ की स्थापना हुई, जिसमें द्वीप या द्वीपसमूह सम्मिलित थे। इन दोनों देशों में संघीय व्यवस्था निर्विघ्न रूप से काम नहीं कर सकी। पूर्वी पाकिस्तान 1971 ई० में बंग्लादेश नाम का एक स्वतंत्र देश बन गया और 1962 ई० में जमैका और ट्रीनीडाड के हट जाने से कैरीबियन द्वीप समूह को संघीय प्रयोग समाप्त कर देना पड़ा। इसका यह अर्थ नहीं कि संघीय सरकार दूरस्थ प्रदेशों को संभाल नहीं सकती। ब्रिटिश कोलंबिया कनाडा का हिस्सा है और अमेरिका में अलास्का और हवाई के राज्य मुख्य भूभाग से अलग होने पर भी वहाँ के संघ में सम्मिलित हैं। महत्त्पवूर्ण बात यह है कि निर्माण के आरंभिक दौर में जब संघ की संस्थाएं अपनी जड़ें जमा रही हों, क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से सुसंबद्ध होना चाहिए।

एकता और विभिन्नता की शक्तियों का संतुलन भी महत्त्वपूर्ण है। संघों की स्थापना तभी होती है जब इकाइयों में भिन्नता होती है, लेकिन वे एक सरकार व्यवस्था को स्वीकार करते हैं। ऐसी सरकार उसी स्थिति में सफल हो सकती है जब एकता की भावना सशक्त हो। इकाइयों में विभिन्नताओं के होते हुए भी कुछ ऐसे समान लक्षण होने चाहिए जिससे एकता की भावना को बल मिले। ऐसे बांधने वाले कुछ तत्व हैं : समान संस्कृति, भाषा और सामूहिक परंपरा। इस प्रक्रिया में राष्ट्रीयता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में राष्ट्रीय आंदोलन द्वारा समान लक्ष्य प्रदान किया और संघीय व्यवस्था उसका चरम बिन्दु बनी।

संघ बन जाने के बाद नीति निर्माण में इकाइयों की विभिन्नताओं का ध्यान रखना आवश्यक है। इकाइयां प्राय : आकार, जनसंख्या और आर्थिक प्रगति की दृष्टि से असमान होती हैं। इन असमानताओं के होते हुए भी इकाइयों को समानता की दृष्टि से देखना चाहिए। इस तरह की समानता विधायिका में प्रतिनिधित्व के सिद्धांत द्वारा देखने में आती है। सामाजिक-आर्थिक विकास के कार्यक्रमों में उन्हें महत्व देना आवश्यक है, जिससे कम विकसित क्षेत्रों मे किसी प्रकार से बंचित होने की भावना न रहे। संघीय व्यवस्था के अंतर्गत केंद्रीय सरकार को विभिन्न क्षेत्रों और इकाइयों में संतुलित विकास का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

संघीय व्यवस्था में न्यायपालिका का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह संविधान की संरक्षक होती है और संविधानिक प्रावधानों की प्रामाणिक व्याख्या उसका विशेष उत्तरदायित्व होता है। विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों का हल निकालना भी उसका ही काम है। अत : संघीय व्यवस्था के लिए एक तटस्थ और स्वतंत्र न्यायपालिका महत्त्वपूर्ण है।

विधायिका का एक सदन संघीय इकाइयों का प्रतिनिधित्व करता है। अमेरिका की सीनेट, स्विट्जरलैंड की कांउसिल आफ स्टेट्स, सोवियत संघ में सोवियत आफ नेशनालिटिज, और भारत मे राज्य सभा, इस तरह की विधायी प्रतिनिधित्व का प्रावधान करती हैं। संघीय व्यवस्था में संतोषजनक प्रतिनिधित्व आवश्यक है, जिससे विधायिका के विचार विमर्श में इकाइयों का दृष्टिकोण परिलक्षित हो सके। कार्यपालिका के संगठन में भी अकसर इसी तरह के संतुलन का प्रयास किया जाता है। भारत में केंद्रीय मंत्रिमंडल में विभिन्न क्षेत्रों से मंत्रियों को सम्मिलित कर के क्षेत्रीय संतुलन का ध्यान रखा जाता है।

एकात्मक और संघात्मक सरकारों के गुण और दोष

एकात्मक सरकार में सत्ता एक ही स्तर पर स्थित होती है, और उनके लक्ष्यों के बारे में किसी प्रकार का कोई भ्रम नहीं होता। इससे एक कार्यकुशल सरकार का निर्माण होता है। प्रशासन में अधिक एकरूपता आती है। यह निर्णय लिया जा सकता है कि सत्ता का उपयोग किस प्रकार किया जाए और कौन से अधिकार अन्य स्थानीय संस्थाओं को दिए जाएं। इसकी कार्य प्रणाली में अधिक लचीलापन होता है। इसका दूसरा पक्ष यह है कि एकात्मक सरकार मे केंद्र पर अधिक बोझ होता है। स्थानीय इकाइयों को सांविधानिक मान्यता नहीं होती, लेकिन ऐसा हो सकता है कि ये संस्थाएं स्थानीय समस्याओं का प्रबंध अधिक प्रभावकारी ढंग से कर सकें। अधिक भिन्नताओं वाले देशों के लिए यह सरकार बहुत उपुक्त नहीं है। सत्ता के एक ही स्तर पर केंद्रित होने के कारण एकात्मक सरकार का एकतंत्र अथवा अधिनायकवादी शासन में बदल जाने की अधिक संभावना रहती है।

संघात्मक सरकार में सत्ता के विभाजन का एक स्पष्ट विवरण होता है। जो संस्था सत्ता के लिये सुयोग्य समझी जाती है, उसको शक्तियों के उपयोग का अधिकार दिया जाता है। जिन विषयों के लिए निर्णय लेने की प्रक्रिया में एकरूपता की आवश्यकता होती है, जैसे देश की सुरक्षा और विदेश विभाग वे केंद्रीय सरकार के अधीन होते हैं। जिन विषयों पर स्थानीय

स्थिति का अधिक प्रभाव होता है और स्थानीय पहल की आवश्यकता रहती है, वे संघ की इकाइयों के अधिकार में दिए जाते हैं। इस तरह संघात्मक व्यवस्था एकता और स्थानीय भिन्नता के संमिश्रिण का अच्छा उदाहरण है। सरकार की यह व्यवस्था उन देशों के लिए आदर्श हैं जिनका आकार बड़ा है और जहां सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विभिन्नताएं विद्यमान होती हैं। विभिन्नताओं को मान्यता देने से स्थानीय पहल के अधिक अवसर मिलते हैं, जो प्राय : आर्थिक विकास में सहायक होते हैं। स्थानीय संस्थाओं को अपने महत्व के कार्य करने का अधिकार और लोगों को उत्तरदायित्व निभाने के अधिक अवसर मिलते हैं। लोग स्थानीय महत्व के विषयों से अधिक परिचित होते हैं और उनमें अधिक दिलचस्पी लेते हैं। इस तरह की साझेदारी से लोगों को सरकार के कामकाज के बारे में अधिक जानकारी हो जाती है। संघात्मक व्यवस्था में सत्ता का विभाजन विस्तृत रूप में नियोजित होता है। सत्ता केंद्रित नहीं होती, बँटी हुई होती है, जो सरकार के एकतंत्रीय होने की प्रवृत्ति के लिए प्रतिबंध सिद्ध होती है।

संघात्मक व्यवस्था की कुछ कमियां भी हैं। इकाइयों की केंद्र के साथ सत्ता में साझेदारी कभी-कभी उसके कार्य को सीमित कर देती है। सुरक्षा और आर्थिक विकास के कार्यक्रमों में यह लक्षित होता है। यह भी देखने में आता है कि संघीय व्यवस्था में कुछ विशेष स्थितियों मे केंद्रीय सरकार को अधिक अधिकार दिए जाते हैं, जैसे भारतीय संविधान में आपत्कालीन स्थिति। सरकार के दो स्तरों के बीच शक्तियों के विभाजन के कारण कभी-कभी संघर्ष की स्थिति भी हो जाती है। इन संघर्षों को हल करने का उत्तरदायित्व न्यायपालिका के ऊपर होता है। न्यायपालिका को सामान्य कार्यों के साथ कुछ और महत्त्वपूर्ण कार्य दिए जाते हैं, जैसे संविधान के संरक्षक के रूप में काम करना भी उसका उत्तरदायित्व है। न्यायपालिका के इस महत्व से संघीय व्यवस्था में संघर्ष का एक और स्तर जुड़ जाता है वह है न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका जैसी संस्थाओं के बीच टकराव की स्थिति। संघ में विभिन्न क्षेत्रों को सरकार और प्रशासन की इकाई के रूप में मान्यता दी जाती है। प्राय : लोग क्षेत्र के साथ अपनी पहचान बना लेते हैं। ऐसी स्थिति में लोगों की निष्ठा देश और क्षेत्र के बीच बँट जाती है। इस प्रकार संघात्मक व्यवस्था में क्षेत्रीयता की आशंका बनी रहती है।

लाभ और गुण की दृष्टि से एकात्मक और संघीय सरकारों की तुलना उपयोगी है। इन सैद्धांतिक विषयों से अधिक महत्त्पूर्ण है, देश की सामाजिक-आर्थिक विशेषता, आकार और सांविधानिक विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया। हमने पहले पढ़ा है कि देश के लिए सरकार के स्वरूप की उपयुक्तता आकार और विभिन्नताओं पर निर्भर करती है। संस्थाओं और व्यवहारों का स्वरूप कालक्रम में निर्धारित होता है और सरकार के स्वरूप पर उनका प्रभाव पड़ता है। अमेरिका और भारत में संघीय व्यवस्था के विकास में इन प्रक्रियाओं के योगदान की चर्चा पहले की जा चुकी है।

केंद्रीकरण की प्रवृत्ति और संघीय समाधान

हमने ऊपर देखा है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास और राज्य के कार्य विस्तार के कारण, सत्ता के केंद्रीकरण की प्रवृत्ति को बल मिला है। कल्याणकारी राज्य के आदर्शों की मान्यता से, आर्थिक विकास एक मुख्य विषय हो गया है और नियोजन सरकार का एक महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाने लगा है। सैनिक और सुरक्षा का संगठन जिस अनुपात में बढ़ा है उससे सरकार की शक्तियों में और वृद्धि हुई है। इन तत्वों का असर संघात्मक सरकारों पर भी पड़ा है और केंद्रीय सरकार अधिक शक्तिशाली हो गई है। बहुत से कार्यक्रम केंद्रीय स्तर पर नियोजित होते हैं और राज्य सरकार मात्र कार्यान्वयन की संस्था बन कर रह गई है। सरकार के दोनों स्तरों के बीच बराबर की साझेदारी नहीं है।

आधुनिक राजनीतिक व्यवस्थाओं पर लोगों की बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना का भी प्रभाव पड़ा है। प्रजातंत्र और उसके मानदण्डों के कारण लोग अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग हो गए हैं। उनमें यह चेतना भी आई है कि राज्य से उन्हें क्या सुविधाएं मिलनी चाहिए। इस तरह की मांगें सिर्फ व्यक्तियों द्वारा ही नहीं की जातीं, अपितु सामाजिक समूह और विभिन्न क्षेत्र भी सरकार से अनेक प्रकार की मांग करते हैं। संघीय व्यवस्था में संस्थाओं की बनावट कुछ ऐसी होती है कि ये समस्याएं सामने आती हैं। इन समस्याओं के समाधान की दृष्टि से संघीय व्यवस्था सरकार का एक व्यावहारिक स्वरूप है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि "नए संघों" के एक अध्ययन के विचार में "पिछले 150 वर्षों की अवधि में संघीय समाधान सबसे लोकप्रिय रहा है।"

अभ्यास

1. संघात्मक व्यवस्था से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख लक्षणों की व्याख्या कीजिए।
2. संघात्मक एवं एकात्मक शासन प्रणालियों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. संघात्मक व्यवस्था की सफलता के लिए आवश्यक परिस्थितियों का वर्णन कीजिए।
4. संघात्मक व्यवस्था को अपनाने के लिए उत्तरदायी कारणों का परीक्षण करो।
5. संघात्मक शासन प्रणाली के गुण एवं दोषों की व्याख्या कीजिए।
6. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (क) परिसंघ
   (ख) शक्तियों का विभाजन
   (ग) संघात्मक व्यवस्था में न्यायपालिका की भूमिका

अध्याय 9

समाजवादी सरकार

समाजवादी सरकार और समाज के आविर्भाव से बहुत पहले सेंट साइमन, लुडविग फायरबाख और राबर्ट ओवन जैसे विद्वानों ने समाजवादी आदर्श का समर्थन किया था। राजनीतिक विचारों के इतिहास में विभिन्न विचारधाराओं ने जबतब समाजवादी आदर्शों का समर्थन किया। 1789 ई. के फ्रांस की क्रांति में स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व जैसे आदर्शों के द्वारा समाजवादी आदर्शों के व्यवहार की एक झलक मिलती है। लेकिन इस विचारधारा की विस्तृत व्याख्या कार्ल मार्क्स और लेनिन ने की। 1917 की रूसी क्रांति के बाद ही समाजवाद आदर्शों की दुनिया से बाहर निकल कर आया। इसके बाद राज्य और सरकार को इस प्रकार से संगठित करने का अवसर मिला जिससे समाजवाद के आदर्शों की प्राप्ति हो सके। समाजवादी राज्य के संगठन में 1949 ई. की चीन की क्रांति एक और सीमा-चिन्ह है। यह उन राज्यों के लिए एक प्रतिमान थी जो समाजवादी सरकार चाहते थे।



कार्ल मॉक्स (1818-1883 ईसवी)

जन्म से जर्मन यहूदी। वैज्ञानिक समाजवाद का जन्मदाता। साम्यवादी विचार धारा के प्रवर्तक के रूप में उसके लेखन ने सम्पूर्ण विश्व में समाजवादी आंदोलनों को प्रेरित और प्रभावित किया है। प्रसिद्ध पुस्तकों : "दास कैपिटल" (Das Capital), "कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो" (Communist Manifesto).

रूसी और चीनी क्रांतियाँ और उपनिवेशवाद की समाप्ति लगभग एक ही अवधि में हुई। एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका के देश, जो यूरोपीय राज्यों के उपनिवेश थे, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे और अनेकों ने इसी अवधि में स्वतंत्रता प्राप्त की। मार्क्सवादी विचारधारा और रूसी तथा चीनी प्रयोगों ने सरकार के एक नए स्वरूप का प्रतिमान सामने रखा और कई नए देश इसकी ओर आकर्षित हुए। इनमें से अधिकतर देशों में स्वतंत्रता प्राप्ति के बहुत पहले ही समाजवादी विचारधारा अपनी जड़ें जमा चुकी थीं। अधिकतर उपनिवेशवादी राज्य पूंजीवादी व्यवस्था के भागीदार थे और भूतपूर्व उपनिवेश उस व्यवस्था से संबंध विच्छेद चाहते थे। ऐसी अवस्था में समाजवादी विकल्प आकर्षक लगा। आंतरिक पिछड़ापन और कई अन्य आर्थिक समस्याएं अनिवार्य रूप से उनके पहले के उपनिवेश की स्थिति से जुड़ी थीं। आर्थिक पुनर्गठन की दृष्टि से भी "समाजवादी समाधान" आकर्षक था।

समाजवादी सरकार कहलाने वाले राज्यों की संख्या में 1917 के बाद वृद्धि हुई है। ये विश्व के प्रायः सभी महाद्वीपों में फैले हैं। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सैनिक प्रगति

के आधार पर कई समाजवादी राज्यों ने अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की है। सरकारों के वर्गीकरण में समाजवादी सरकार का प्रयोग नया है। सरकार के इस स्वरूप पर विचार दो दृष्टियों से किया जा सकता है। इस विचारधारा के मुख्य विषयों की विवेचना के बाद, यह देखा जा सकता है कि कौन सी संस्थाएं इन आदर्शों की प्राप्ति में सहायक हो सकती हैं। एक दूसरा तरीका यह है कि हम उन देशों की सरकारी संस्थाओं पर विचार करें, जो समाजवादी होने का दावा करते हैं। ये दोनों दृष्टिकोण एक दूसरे से सर्वथा भिन्न नहीं हैं। इन दोनों का सम्मिश्रण हमारे विचार के लिए अच्छा होगा।

समाजवाद के आदर्शों के बारे में सामान्य सहमति के बावजूद विभिन्न देशों में इसकी व्याख्या अलग-अलग तरीके से की जाती है। यह विभिन्नता विचारधारा के प्रति वचनबद्धता और इस दृष्टि से है कि ये देश किस सीमा तक समाजिक-आर्थक संस्थाओं में मूलभूत परिवर्तन करने के लिए तैयार हैं। कुछ ऐसे उदारवादी प्रजातांत्रिक देश (Liberal Democratic Countries) हैं जो समाजवाद के आदर्शों में अपना विश्वास प्रकट करते हैं और उसकी प्राप्ति के लिये इमानदारी से प्रयास भी करते हैं। कुछ अन्य देश ऐसे हैं जो अपने को ग्रातांत्रिक समाजवादी (Democratic Socialist) कहते हैं। इनका समाजवाद और प्रजातंत्र दोनों आदर्शों में समान रूप से विश्वास है, और ये किसी एक को दूसरे की प्राप्ति के लिये त्यागने के लिये तैयार नहीं हैं। ये देश उन साम्यवादी देशों की आलोचना करते हैं जहाँ उन्हें कुछ कमी दिखाई देती है। तीसरे प्रकार के समाजवादी देश वे हैं जो अपने को साम्यवादी कहते हैं, जैसे सोवियत संघ और चीन। इन देशों में क्रांति के बाद सामाजिक-आर्थिक संबंधों का पुनर्गठन हुआ। यहां के संविधान में ऐसी संस्थाओं का प्रावधान किया गया है, जो इनके विचार में समाजवादी आदर्शों की प्राप्ति में सहायक होंगी। नीचे हम उन समाजवादी राज्यों और सरकारों के विशेष लक्षणों पर विचार करेंगे, जो मार्क्स और लेनिन के विचार को मानते हैं।

समाजिक-आर्थिक शक्तियों का पुनर्गठन

सामाजिक प्रक्रिया के समाजवादी और साम्यवादी (मार्क्सवादी) विश्लेषण में आर्थिक शक्तियों को प्राथमिकता दी जाती है। संपत्ति और उत्पादन के संबंध समाज के स्वरूप का निर्धारण करते हैं। इन संबंधों का स्वरूप और उनकी स्थिति से सामाजिक वर्ग निर्धारित होते हैं, जो प्रभुत्व के लिए सतत् एक दूसरे से प्रतियोगिता करते रहते हैं। अन्य सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं के साथ राज्य का स्वरूप भी इन वर्गों के अंतर्विरोधों से निर्धारित होता है। इस स्थिति पर काबू पाने के लिए समाज का, मुख्यतः आर्थिक संबंधों का, पुनर्गठन आवश्यक है। निजी संपत्ति की समाप्ति तथा उत्पादन और वितरण की प्रक्रिया पर व्यक्ति के बदले समाज का स्वामित्व, का इसमें विशेष महत्व है। इस प्रकार पुनर्गठन का सामाजिक वर्ग भेद पर प्रभाव पड़ेगा। कोई भी वर्ग शासक और शोषक नहीं होगा। वर्ग-अंतर्विरोध समाप्त हो जाएगा। उत्पादन के साधनों पर मजदूरों का नियंत्रण होगा और समाजवादी समाज में एक ही वर्ग होगा : सर्वहारा वर्ग। राज्य समाज में एक वर्ग का दूसरे वर्गों पर प्रभुत्व का प्रतिरूप नहीं होगा। यह संपूर्ण समाज के हित का प्रतिनिधि होगा और इस पर सर्वहारा वर्ग का नियंत्रण रहेगा। इस प्रक्रिया का प्रारंभ आर्थिक संबंधों के पुनर्गठन से होगा।

क्रांति के कारण समाजवादी राज्यों को नई संस्थाओं और संबंधों को संगठित करने का अवसर मिला, लेकिन पुनर्गठन का यह काम सरल नहीं। सोवियत संघ ने 1936 ई. में अपने को समाजवादी राज्य घोषित किया। अक्तूबर 1977 ई. में संविधान का पुनर्निर्माण हुआ, जिसमें सँघीय व्यवस्था में आस्था प्रकट की गई और व्यक्तिगत अधिकारों को और मज़बूत किया गया। उत्पादन प्रक्रिया पर राज्य का नियंत्रण इन राज्यों की वास्तविक उपलब्धि रही है। समाजिक-आर्थिक प्रक्रियाओं की केंद्रीय परियोजना इन राज्यों का विशेष लक्षण है।

समाजवाद में राजनीतिक दल

समाजवादी व्यवस्था में राजनीतिक दलों की संख्या और उनकी विचारधारा आर्थिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। समाजवादी व्यवस्था में वर्गों की विविधता के बदले एक ही वर्ग, सर्वहारा वर्ग, होगा और इसीलिए कई दलों का कोई प्रश्न ही नहीं। इसके अतिरिक्त इस समाज में एक ही विचारधारा का अनुसरण होता है। समाजवादी व्यवस्था में अधिकतर एक ही दल होता कुछ राज्यों में एक से अधिक दल भी रहे हैं। कम्युनिस्ट पार्टी के अतिरिक्त बुलगारिया में एक (बुलगेरियन एग्रेरियन पीपुल्स यूनियन), पौलैण्ड में दो (यूनाइटेड फार्मरस् पार्टी और डेमोक्रेटिक पार्टी), और जर्मन प्रजातांत्रिक गणराज्य में चार (क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी यूनियन, डेमोक्रेटिक फार्मरस्

पार्टी, नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी आफ जर्मनी, लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी आफ जर्मनी), राजनीतिक दल थे। लेकिन ये दल मुख्य दल की विचारधारा का विरोध नहीं करते थे।

राजनीतिक दल की गतिविधि चुनाव में सफलता के अल्पकालिक लक्ष्यों तक सीमित नहीं रहती। विचारधारा का उच्च लक्ष्य इनकी गतिविधियों का मुख्य आधार होता है। अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इन दलों को एक सुदृढ़ नेतृत्व की आवश्यकता होती है। अपनी विचारधारा की सफलता और समाज के हित के लिए दल को एक अनुशासित संगठन की भी आवश्यकता होती है। पार्टी का अखंड़ित(Monolithic) ढांचा होता है।

> सोवियत संघ में एक-दलीय व्यवस्था के औचित्य के पक्ष में दिए जाने वाले तर्कों का पता लगाइए।

लोकतांत्रिक केंद्रीयता और दलीय ढांचा

दलीय ढांचे की आवश्यकता और सदस्यों की भागीदारी का सामंजस्य लेनिन द्वारा प्रतिपादित लोकतांत्रिक केंद्रीयता (Democratic Centralism) के सिद्धांत द्वारा किया जाता है। सुदृढ़ नेतृत्व और एकीकृत दलीय ढांचे का यह अर्थ नहीं है कि सदस्यों की भागीदारी किसी भी अर्थ में सीमित है।



निकोलाय लेनिन (1870-1924 ईसवी)

एक महान् रूसी नेता। मार्क्सवाद को व्यवहारिक राजनैतिक विचारधार का रूप दिया। उसने 1917 की रूसी क्रांति का नेतृत्व किया। प्रसिद्ध पुस्तकें : "स्टेट एन्ड रिवोल्यूशन" (State and Revolution), "व्हाट इज टू बी डन" (What is to be done), "इम्पीरियलिज्म- दी हाएस्ट स्टेट ऑफ कैपिटेलिज्म" (Imperialism the highest state of Capitalism).

सोवियत संघ के साम्यवादी दल (सी. पी. एस. यू.) का औपचारिक संगठन लोकतांत्रिक केंद्रीयता के सिद्धांत का एक अच्छा उदाहरण है। दल की सर्वोच्च संस्था, सी. पी. एस. यू. दल की इकाइयों के सुसंगठित पद सोपान पर आधारित है। इस पद पर सोपान के सबसे नीचे कारखानों, राज्य फार्मों, स्कूलों; सैनिक दलों, और गांव जैसे आवासीय खंडों, में स्थित मूल इकाइयां हैं। इन स्तरों पर मूल इकाइयों की शाखाएं भी हो सकती हैं। इन मूल इकाईयों द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि क्षेत्रिय सम्मेलन (Regional Conference) का चुनाव करते हैं। क्षेत्रीय सम्मेलन द्वारा गणतंत्रीय कांग्रेस (Republican congress) सी.पी.एस.यू. का चुनाव होता है। इन सभी स्तरों पर पूर्णकालिक अधिकारी होते हैं। जहां एक और दल की नीचे की इकाई अपने से उत्तरोत्तर ऊपर की इकाइयों के सदस्यों का चुनाव करती हैं, वहीं ऊपर लिए गए निर्णय नीचे की इकाइयों के लिए बाध्य होते हैं। ऊपर की संस्थाओं द्वारा किए गए निर्णयों और नीति निर्देशों का नीचे की इकायों को पालन करना पड़ता है। दल की हर संस्था अपने से नीचे की इकाइयों के कार्य के लिए उत्तरादायी होती है। उनसे कार्य के बारे में सूचना मांगी जाती है और नए नीति निर्देश जारी किए जाते हैं। साथ ही साथ निचली इकाइयों द्वारा की गई नियुक्तियों की स्वीकृति भी दी जाती है, जो उपर की इकाइयों के नियंत्रण को प्रभावकारी बनाती है। इस तरह दलीय संगठन में सदस्यों और इकाइयों की भागीदारी कठोर अनुशासन और एकीकृत ढांचों में सामंजस्य पाया जाता है।

चुनाव की प्रक्रिया

चुनाव का संगठन और उसका संचालन इस बात पर आधारित है कि इस प्रक्रिया के औचित्य की व्याख्या किस तरह की जाती है। समाजवादी समाज यह दावा करता है कि वहां एक मात्र सर्वहारा वर्ग ही है, इसलिए विभिन्न आर्थिक वर्गों में प्रतियोगिता का प्रश्न ही नहीं उठता। एक मात्र वर्ग के हितों की रक्षा एक मात्र विचारधारा द्वारा की जाती है। इसलिए चुनाव की प्रक्रिया दलीय संगठन के विभिन्न इकाइयों के अंदर ही सीमित रहती है। यह सुनिश्चित हो जाने पर, विधायिका जैसी सरकारी संस्थाओं का चुनाव दल के उम्मीदवारों के बीच ही होता है। विभिन्न दलों के उम्मीदवारों में प्रतियोगिता नहीं होती।

सोवियत संघ में दल के अंदर उम्मीद्वारों के नामांकन के

समय चुनाव की प्रक्रिया सामने आती है। इसका निष्पादन दल के विभिन्न स्तरों पर होता है। जो उम्मीदवार नामांकित होते हैं, वे समर्थक संस्था के उम्मीदवार के रूप में क्षेत्रीय निर्वाचन आयोग (District Election Commission) के पास पंजीकृत होते हैं। नामांकन के बाद उम्मीदवारों के लिए निर्वाचकों के समक्ष उपस्थित होना आवश्यक है। इस तरह निर्वाचन की प्रक्रिया में भी दल की प्रधानता रहती है।

सरकारी संस्थाएं

समाजवादी व्यवस्था में विभिन्न संस्थाओं की सत्ता का पृथक्करण महत्वपूर्ण नहीं है। सत्ता का संगठन एक मात्र विचारधारा के प्रति वचनबद्धता पर आधारित है और इसलिए सत्ता के केन्द्रीकरण का भय नहीं रहता। कार्यपालिका, विधायिका, और न्यायपालिका जैसी सरकारी संस्थाएं होती तो हैं, लेकिन केंद्रीय समन्वय का काम दल द्वारा किया जाता है।

न्यायपालिका व्यवस्था

सांविधानिक विशेषज्ञों ने न्यायपालिका के दो कार्यों की चर्चा की है: अधिनिर्णय (adjudication) और नियम प्रवर्तन (Rule Enforcement)। पहले कार्य का संबंध नागरिकों के लिए न्याय सुनिश्चित करना है। हमने पहले पढ़ा है कि प्रायः देश के संविधान में न्यायपालिका को कार्यपालिका और विधायिका जैसी संस्थाओं से ऊंचा पद और मान्यता दी जाती है। ऐसी व्यवस्था विशेषकर संघों में पाई जाती है। न्यायपालिका के ऐसे कार्य का यह पक्ष भी है कि वह सरकार के संभावित अतिक्रमण के खिलाफ व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भी रक्षा करे। समाजवादी-साम्यवादी विचारधारा के अनुसार न्यायपालिका का यह कार्य अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। राज्य और दल ही नागरिक के अधिकारों के संरक्षक हैं और सरकारी संस्थाएं समाज के हितों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

न्यायपालिका का दूसरा कार्य यह है कि सरकार जो भी कानून और नियम बनाती है उन्हें ठीक से लागू किया जाए। न्यायपालिका भी अन्य सरकारी संस्थाओं की तरह समाजवादी व्यवस्था के संरक्षण के लिये उत्तरदायी है। इस तरह न्यायपालिका के नियम प्रवर्तन के कार्य पर बल दिया जाता है।

सरकार के संगठन के सिद्धांत के अनुरूप, उच्चतम न्यायालय और उसके अधीनस्थ न्यायालय में निर्वाचित सदस्य होते हैं। सोवियत संघ के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश सुप्रीम सोवियत द्वारा निर्वाचित होते हैं। युगोस्लाविया के संघीय न्यायालय (Federal Court) में भी यही व्यवस्था है। न्यायाधीशों का निर्वाचन उसी अवधि के लिए होता है जो अवधि निर्वाचक संस्था की होती है और उन्हें किसी भी समय वापस बुलाया जा सकता है। सोवियत संघ के यूनियन रिपब्लिक के सर्वोच्च न्यायालय के मध्यवर्ती न्यायालयों के न्यायाधीशों का भी निर्वाचन ही होता है। इस श्रृंखला में सबसे नीचे जनता के न्यायालय (People's Court) में व्यावसायिक न्यायाधीश और निर्धारक होते हैं, जिनका "कारखानों कार्यालयों और व्यावसायिक कार्यकर्ताओं" की आम सभा से प्रत्यक्ष चुनाव किया जाता है।

उदारवादी प्रजातंत्रों में समाजवादी आदर्श

मार्क्स और लेनिन के सिद्धांतों में प्रत्यक्ष रूप से आस्था रखने वाले देशों के अलावा, ब्रिटेन और भारत जैसे उदारवादी लोकतंत्र भी समाजवादी आदर्शों को मानते हैं। ऐसे बहुत से राज्यों में समाजवादी और साम्यवादी दल आम चुनाव में भाग लेते हैं। ब्रिटेन में कम्युनिस्ट पार्टी के अतिरिक्त लेबर पार्टी काफी महत्वपूर्ण रही है। लेबर पार्टी कई बार सत्ता में भी आ चुकी है। फ्रांस में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 1920 ई. में हुई थी और अब वह एक सुव्यवस्थित पार्टी मानी जाती है। इसके अतिरिक्त फ्रांस में सोशलिस्ट पार्टी और रेडिकल सोशलिस्ट पार्टी भी हैं। तीसरी दुनिया के करीब सभी देशों में इस तरह की विचारधारा वाले दल हैं।

बहुत से देशों का घोषित आदर्श समाजवाद है। 42वें संविधान संशोधन द्वारा "समाजवाद" भारतीय संविधान की प्रस्तावना में जोड़कर इस आदर्श पर बल दिया गया।

कल्याणकारी राज्य के आदर्श राज्य के उद्देश्यों को समाजवाद के अधिक निकट ले आए हैं। हमने ऊपर पढ़ा है कि विचारधारा चाहे जो भी हो, हर राज्य लोककल्याण को ध्यान में रखता है। आर्थिक योजना के कार्यक्रम और संस्थाएं, समाजवादी सरकार तक ही सीमित नहीं हैं। सामाजिक-आर्थिक योजना आधुनिक राज्यों का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है और बहुत से देशों में इसके लिए केंद्रीय संस्था की स्थापना की गई है। भारत में योजना आयोग ऐसी ही एक संस्था है। उत्पादन की प्रक्रिया और संस्थाओं पर सामाजिक नियंत्रण की भी यही स्थिति

है। बहुत से राज्यों में सार्वजनिक निवेश में वृद्धि हो रही है। भारत में आर्थिक योजना में सार्वजनिक निवेश को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

समाजवादी सरकार का मूल्यांकन

समाजवादी व्यवस्था के जहां एक ओर कुछ पक्के समर्थक हैं, वहां दूसरी ओर कुछ आलोचक भी हैं। हमने ऊपर पढ़ा कि समाजवाद बहुत सी राजनीतिक व्यवस्थाओं का आदर्श रहा है। समाजवादी आधार पर सरकारों के सुसंगठित होने के साथ ही, समर्थकों का विचार है कि एक आदर्श लोक की प्राप्ति हो गई है। आलोचक समाजवादी व्यवस्था के वास्तविक कार्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहते हैं कि समाजवादी लक्ष्य तथा विचारधारा और उसके व्यवहार में बहुत अंतर है। उनका कहना है कि जिस विचार धारा का प्रतिपादन मार्क्स और लेनिन ने किया, वह समाजवादी और साम्यवादी राज्यों में सही रूप में परिलक्षित नहीं होती। इन व्यवस्थाओं को समझने के लिए हमें इन दोनो अतिवादों से बचना होगा। जैसा हमने देखा जिन देशों में मार्क्सवादी विचारधारा अपनाई गई है, वहां प्राथमिकताओं की परिभाषा भी उसी के अनुसार की गई है, जिसका आभास हमें सरकार के संगठन और उसकी नीतियों से मिलता है। इस विचारधारा से असहमति संभवतः समाज और राज्य के अन्य पहलुओं पर बल देगी। समाजवादी राज्य और सरकार का किसी अन्य विचारधारा के मानदण्ड पर मूल्यांकन युक्तिसंगत नहीं है। कोई भी समाजवादी राज्य यह दावा नहीं करता कि उसने अपने आदर्शों की पूर्ण प्राप्ति कर ली है। उनका कहना यह है कि वे समाजवादी आदर्शों की प्राप्ति के पथ पर हैं और उन्होंने राज्य और सरकार का जो संगठन अपनाया है उससे उन्हें उस दिशा में अग्रसर होने में आसानी होगी। समाजवादी मार्ग निश्चय ही एक ऐसा विकल्प प्रस्तुत करता है, जो विशेषतः तीसरी दुनियाँ के देशों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

> इन दिनों सोवियत शासन व्यवस्था में कुछ महत्त्वपूर्ण सुधार किए जा रहे हैं। इस संदर्भ में "पेरेस्ट्रोइका" (Perestroika) और "ग्लासनोस्ट" (Glasnost) नामक दो शब्द विशेषतः प्रचलित हैं। इनका अर्थ पता लगाइए।

अभ्यास

1. सोवियत संघ जैसे समाजवादी राज्य में न्यायपालिका की भूमिका का वर्णन कीजिए।
2. समाजवादी राज्यों में राजनीतिक दलों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
3. प्रजातांत्रिक केन्द्रीकरण से आप क्या समझते हैं? सोवियत संघ का उदाहरण देते हुए इसकी व्याख्या कीजिए।
4. समाजवादी व्यवस्था में राजनैतिक दलों के बीच कोई प्रतियोगिता नहीं होती। सोवियत संघ में साम्यवादी दल जैसे राजनैतिक दलों में चुनावों के महत्त्व की चर्चा कीजिए।
5. भारत के संदर्भ में उदारवादी लोकतंत्रों के समाजवादी उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

अध्याय 10

भारत में सांविधानिक विकास के विभिन्न चरण

भारतीय संविधान में जिन राजनीतिक संस्थाओं को प्रतिष्ठापित किया गया उनका विकास उससे पहले के एक शताब्दी के दौरान धीरे-धीरे हुआ। 31 दिसंबर 1600 ई॰ को ईस्ट इंडिया कंपनी को राजकीय चार्टर द्वारा भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापार करने की अनुमति दी गई। कंपनी का संगठन और ब्रिटिश सरकार से उसका संबंध समय-समय पर दी गई अनुमति से निर्धारित हुआ। सरकार और कंपनी के बीच सदा संघर्ष की सी स्थिति बनी रही। ब्रिटेन की सरकार भारत की गतिविधियों पर निरंतर अपना नियंत्रण बढ़ाती गई और कंपनी की ओर से उसके कार्यों में स्वायत्तता पर बल दिया जाता रहा। अधिक से अधिक भारतीय प्रदेश पर बढ़ते हुए अधिकार से ब्रिटेन की सरकार के इस इरादे का साफ पता चलता है कि वह शुरू से ही भारत में सरकार की स्थापना चाहती थी। 1857 ई॰ के जन विद्रोह ने ब्रिटेन की सरकार को भारत पर प्रत्यक्ष शासन का मौका दिया।

1857 ई॰ का जन विद्रोह उस जन असंतोष का चरम बिन्दु था जो ब्रिटेन के प्रभुत्व के खिलाफ उभर रहा था। भारत और ब्रिटेन के लोकमत का शासन में सुधार लाने के लिए दबाव बना हुआ था। इसी दबाव का प्रतिनिधित्व करने के लिए 1885 ई॰ में ए॰ ओ॰ ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की आवश्यकता का अनुभव किया जो ब्रिटेन के शासन के लिए "सुरक्षा वाल्व" की तरह काम करे। यह असंतोष को, खासकर शिक्षित वर्ग के, सांविधानिक सुधारों की धारा में बांध कर रखेगा। इसके अतिरिक्त यह एक ऐसा मंच होगा जिसके द्वारा ब्रिटेन की सरकार को जन असंतोष की सूचना मिलेगी। लेकिन बाद के बर्षों में कांग्रेस लोक चेतना के प्रसार के लिए एक अग्रणी संस्था बन गई। कालक्रम में जो सांविधानिक सुधार लाए गए वे कांग्रेस द्वारा व्यक्त किए हुए दबावों की प्रतिक्रिया स्वरूप ही थे।

भारत सरकार अधिनियम 1858

इस अधिनियम के अनुसार भारत ब्रिटेन की संसद के प्रत्यक्ष शासन के अंतर्गत आ गया। भारत के कारोबार पर इंग्लैंड की साम्राज्ञी का निरपेक्ष शासन स्थापित हुआ। इस नियंत्रण का उपयोग सेक्रेटरी आफ स्टेट के माध्यम से होना था, जो ब्रिटेन के संसद के प्रति उत्तरदायी था। उसकी सहायता के लिए एक कांउसिल आफ इंडिया की स्थापना हुई। कांउसिल के सदस्यों की संख्या 15 थी, जिसमें 8 का मनोनयन ब्रिटेन के क्राउन (सम्राट/साम्राज्ञी) द्वारा किया जाता और ईस्ट इंडिया कंपनी का बोर्ड आफ डायरेक्टर बाकी 7 सदस्यों को मनोनीत करता था। कांउसिल का सदस्य होने के लिए भारत में काम करने का अनुभव आवश्यक था। गवर्नर-जनरल भारत में क्राउन के प्रतिनिधि के रूप में काम करता था। कार्यकारिणी कांउसिल का काम गवर्नर-जनरल की सहायता करना था। हर प्रांत में गवर्नर, या लेफ्टिनेंट गवर्नर होता था, जिसकी सहायता के लिए उस स्तर पर एक कार्यकारिणी कांउसिल होती थी। इस तरह आदेश की रेखा (Line of Command) स्पष्ट थी। प्रांतीय गवर्नर, गवर्नर-जनरल के अधीन काम करता था, जिसके ऊपर भारत सचिव का नियंत्रण था। अंतिम नियंत्रण ब्रिटिश क्राउन और संसद का था। इस साम्राज्यिक शासन व्यवस्था में भारत के लोकमत का कोई स्थान नहीं था। बाद में जो ब्रिटिश संसद द्वारा सांविधानिक सुधार लाए गए उसमें भारतीय लोकमत का प्रश्न ही प्रमुख था।

भारत काउंसिल अधिनियम 1861

इस अधिनियम ने सांविधानिक विकास को एक कदम आगे बढ़ाया। इसके अनुसार कार्यकारिणी काउंसिल के विधायी कार्य के लिए कुछ गैरसरकारी (non-official) सदस्यों के लिए स्थान रखा गया। गवर्नर-जनरल के अधिकार क्षेत्र में कोई अंतर नहीं लाया गया। काउंसिल के सामने कोई विधेयक पेश होने के पहले गवर्नर जनरल की पूर्व स्वीकृति आवश्यक थी। ऐसे समय वह विशेषाधिकार का प्रयोग कर सकता था। गवर्नर-जनरल को अध्यादेश जारी करने का अधिकार था। प्रांतों में भी विधायी काउंसिल की स्थापना की गई। इसके लिए भी गवर्नर-जनरल की पूर्व स्वीकृति आवश्यक थी।

भारतीय काउंसिल अधिनियम 1892

1861 के अधिनियम के अंतर्गत गैरसरकारी सदस्य या तो बड़े जमींदार होते थे या अवकाश प्राप्त अधिकारी या भारत के राज परिवारों के सदस्य। प्रतिनिधित्व की आम आकांक्षा की तुष्टि इससे नहीं हुई। इसी बीच, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिक महत्वपूर्ण हो गई थी और उसने अधिक प्रतिनिधित्व की मांग करना शुरू कर दिया। यूरोपीय व्यापारियों की ओर से भी भारत सरकार को इंग्लैंड में स्थित इंडिया आफिस से अधिक स्वतंत्रता की मांग की जाती रही। सर जार्ज चिसनी की अध्यक्षता में एक कमेटी बनी जिसके सुझावों का समावेश 1862 ई. के अध्यादेश में किया गया। इस अधिनियम की विशेषता यह थी इसके द्वारा (Imperial Council) और प्रांतीय विधायिका, दोनों में "अतिरिक्त सदस्यों" की संख्या बढ़ा दी गई और उनके निर्वाचन का भी विशेष उल्लेख किया गया। यद्यपि इसके द्वारा सीमित चुनाव की ही व्यवस्था हुई, लेकिन भारत के मुख्य सामाजिक वर्गों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। गैर सरकारी सदस्यों का निर्वाचन चैम्बर आफ कामर्स, यूनिवर्सिटी, नगर पालिका, जिला बोर्ड जैसी संस्थाओं द्वारा किया गया। काउंसिल के अधिकारों में वृद्धि की गई। वार्षिक आय और बजट का ब्यौरा काउंसिल में प्रस्तुत करना आवश्यक हो गया। सदस्यों को कार्यपालिका के काम के बारे में प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया। इस तरह 1892 ई. के अधिनियम द्वारा विधायिका के सदस्य के निर्वाचन की शुरुआत तो की गई लेकिन यह सीमित थी।

भारतीय काउंसिल अधिनियम 1909

1892 के अधिनियम की यह आलोचना की गई कि इसके प्रावधान लोगों की आकांक्षाओं को संतुष्ट नहीं करते। साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन पर उग्रवादी नेताओं का प्रभाव अधिक हो गया। बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल, और लाला लाजपत राय जैसे नेताओं ने ब्रिटिश सरकार के ऊपर अधिक दबाव डालना शुरू कर दिया। सेक्रेटरी आफ स्टेट, लार्ड मारले और भारत में वाइसराय लार्ड मिंटो, दोनों ही सहमत थे कि कुछ सुधारों की आवश्यकता है। सर अरून्डेल कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर फरवरी 1909 ई. में नया अधिनियम पारित किया गया।

कुछ और गैरसरकारी सदस्यों के साथ केंद्रीय विधायिका का विस्तार किया गया। उनका चुनाव सीमित और अप्रत्यक्ष रखा गया। इसमें प्रांतीय विधायिका, जमींदार वर्ग, व्यापारी संघ और मुस्लिम वर्ग, अपने प्रतिनिधि भेज सकते थे। प्रांतीय विधायिका के लिए इसी प्रकार के प्रावधान किए गए। इसके लिए विश्वविद्यालय, नगर पालिका, जिला बोर्ड और मुस्लिम वर्ग को निर्वाचन क्षेत्र माना गया।

विधायिका के कार्य क्षेत्र में विस्तार किया गया। सदस्यों को बजट प्रस्ताव करने और जनहित के विषयों पर प्रश्न पूछने का अधिकार दिया गया। जिन विषयों को विधायिका के क्षेत्र से बाहर रखा गया था वे थे सशस्त्र सेना, विदेश संबंध और देशी रियासतें।

1909 ई. के अधिनियम ने विधायिका में गैरसरकारी सदस्यों की संख्या बढ़ा दी। अब विधायिका में इन सदस्यों का बहुमत था। निर्वाचन का सिद्धांत स्पष्ट रूप से माना गया, यद्यपि यह अभी भी सीमित और अप्रत्यक्ष था। विधायिका का कार्यक्षेत्र बढ़ाया गया। लेकिन इस अधिनियम द्वारा न सिर्फ मुस्लिम वर्ग को पृथक् प्रतिनिधित्व दिया गया, यह प्रतिनिधित्व उनकी जनसंख्या के अनुपात में अधिक था। इससे राष्ट्रीय आंदोलन की स्थायी क्षति हुई। पं. जवाहरलाल नेहरु ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "डिस्कवरी आफ इंडिया" में लिखा है, "इन्हें (मुस्लिम वर्ग को) भारत के अन्य वर्गों से अलग-थलग कर दिया गया और सदियों से चले आ रहे एकीकरण और एकसूत्र में जोड़ने की प्रक्रिया को विपरीत दिशा में मोड़ दिया। इसके (अधिनियम के) द्वारा मुस्लिम वर्ग के चारों ओर राजनीतिक अवरोध खड़ा कर दिया गया।"

मुस्लिम वर्ग के प्रतिनिधित्व से सांप्रदायिकता की शुरूआत हुई और साथ ही दूसरे संप्रदायों से भी उसी प्रकार की मांग उठने

लगी। 1919 ई. में सिक्खों को पृथक् प्रतिनिधित्व दिया गया। हरिजन, भारतीय क्रिश्चियन और यूरोपीय समुदायों से इसी तरह की मांग हुई। बाद में आने वाले (सांविधानिक) सुधारों में सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व ही मुख्य विवाद का विषय बन गया।

भारत सरकार अधिनियम 1919

अंग्रेजों द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में फूट डालने की पूरी कोशिश की गई, लेकिन मुस्लिम लीग और राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच अंग्रेजों के राज्य के अंत की मांग के बारे में एकता बनी रही। सांप्रदायिक तत्वों की तुलना में राष्ट्रीय आंदोलन को कहीं अधिक महत्व मिला। इन प्रक्रियाओं का चरम बिंदु था 1919 ई. में लखनऊ में लीग और कांग्रेस का सम्मिलित अधिवेशन जहां लखनऊ समझौता हुआ। इस समझौते के द्वारा दोनों संगठनों के कार्यक्रम में एकता की स्थापना हुई। इसके द्वारा सांविधानिक सुधार के लिए सम्मिलित प्रस्ताव रखा गया। एनी बेसेंट का होम रूल आंदोलन, विदेशों में गदर पार्टी के कार्यक्रम, और प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन की स्थिति, इन सभी कारणों से ब्रिटेन भारत की स्थिति के पुनरवालोकन के लिए बाध्य हुआ। सेक्रेटरी ऑफ स्टेट, मॉंटग्यू ने अगस्त 20, 1917 ई. को एक वक्तव्य दिया, जिसमें ब्रिटेन के इरादे का बयान किया गयाः- "शासन की सभी शाखाओं में भारतीयों को शामिल करना और स्वायत्तशासी संस्थाओं का क्रमिक विकास, जिससे ब्रिटिश भारत के अभिन्न अंग के रूप में उत्तरदायी सरकार की उत्तरोतर उपलब्धि हो सके। "मॉंटग्यू नवंबर 10, 1917" ई. को भारत आए और उन्होंने वाइसराय लार्ड चेम्सफोर्ड और कांग्रेस और लीग के नेताओं से विचार विमर्श किया। सुधार के जो प्रस्ताव सामने आए वे मॉंटग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट में दिए गए। यही 1919 ई. अधिनियम का आधार बना।

इस अधिनियम ने सेक्रेटरी आफ स्टेट के अधिकार को कम कर दिया। गवर्नर-जनरल के प्रतिनिधि के रूप में हाई कमिश्नर आफ इन्डिया (High Commissioner of India) के पद का निर्माण हुआ। केंद्रीय कार्यकारिणी और प्रांतीय काउंसिल के संगठन और कार्य में फेर बदल किया गया। कार्यकारिणी कांउसिल में भारतीय सदस्यों की संख्या कुछ बढ़ा दी गई। प्रशासन के लिये विषयों को दो सूचियों में बाँट दिया गया : केंद्रीय और प्रांतीय। केंद्र में एक सदन के स्थान पर दो सदनों की स्थापना हुई, काउंसिल आफ स्टेट और केंद्रीय विधान एसेंबली। विधायिका में सदस्यों के चुनाव के लिए सम्पत्ति योग्यता रखी गई। सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व को रहने दिया गया।

प्रांतीय शासन व्यवस्था में अधिक व्यापक परिवर्तन किए गए। प्रांतीय सूची के विषयों को दो भागों में बांटा गया: सुरक्षित विषय और हस्तांतरित विषय। सुरक्षित सूची के विषय गवर्नर के अधिकार क्षेत्र में थे, और वह इन विभागों को अपने कार्यकारिणी के नामज़द सदस्यों में बांट देता था। इस सूची के कुछ विषय थे : कानून और व्यवस्था, न्याय, सिंचाई, भूमि कर, कारागार इत्यादि। हस्तांतरित विषय भारतीय मंत्रियों के अधिकार में थे, जिनकी नियुक्ति भारतीय सदस्यों में से होती थी। शिक्षा, लोक निर्माण, स्थानीय स्वायत्तशासन, और लोक स्वास्थ्य जैसे विषय इस सूची में थे। सरकार की इस व्यवस्था को द्वैध शासन प्रणाली (Dyarchy) की संज्ञा दी गई।

प्रांतीय विधायी काउंसिल के आकार में वृद्धि हुई और लगभग 70 प्रतिशत सदस्यों के निर्वाचन की व्यवस्था हुई। प्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली को स्वीकार किया गया, लेकिन उच्च संपत्ति योग्यता, सांप्रदायिक निर्वाचन क्षेत्र और कुछ समुदायों को विशेष महत्व जैसे कुछ सिद्धांतों को भी स्वीकार किया गया।

इन सुधारों के पश्चात् भी महत्वपूर्ण अधिकार अभी भी गवर्नर जनरल और प्रांतीय गवर्नर के हाथों में ही थे। द्वैध शासन प्रणाली व्यवस्था की तीव्र आलोचना हुई। सुरक्षित और हस्तांतरित सूचियों में विषयों का विभाजन अक्सर मनमाने और असंगत ढंग से किया गया। ये असंगतियां उस वक्त सामने आई जब अधिनियम को क्रियान्वित किया गया। इसके अलावा आर्थिक विषयों जैसे महत्वपूर्ण विषयों को सुरक्षित सूची में रखा गया। कार्यकारी काउंसिल के सदस्य, जिनके अधिकार में सुरक्षित सूची के विषय थे, और मंत्री जो हस्तांतरित विषय के अधिकारी थे, इन दोनों में शासन की प्रक्रिया के समय मतभेद के कई उदाहरण सामने आए। फिर, मंत्री गवर्नर के प्रति उत्तरदायी थे, न कि विधायिका के प्रति। अधिनियम के प्रावधान लोगों की आकांक्षाओं से अभी भी बहुत दूर थे।

साइमन कमीशन 1927

1919 के अधिनियम की धारा 84 के अनुसार स्थापित संस्थाओं के कार्य का मूल्यांकन करने के लिए एक आयोग की स्थापना का प्रावधान था। राष्ट्रीय आंदोलन और ब्रिटेन में तत्कालीन राजनीतिक स्थिति के फलस्वरूप इस आयोग की स्थापना 1927 ई. में की गई। सर जान साईमन की अध्यक्षता में इस आयोग में लेबर पार्टी के दो और लिबरल और कन्जर्वेटिव पार्टियों के

एक-एक सदस्य शामिल थे। आयोग का संगठन, जिसमें एक भी भारतीय सदस्य नहीं था, उसके विरोध का एक मुख्य विषय हो गया। फरवरी 3, 1928 ई. को आयोग भारत पहुंचा। उसके विरोध में पूरे भारत में हड़ताल का आह्वान किया। दिसंबर 1928 ई. में कलकत्ता अधिवेशन के समय कांग्रेस के नेता आपस में बंटे हुए थे। कुछ नेताओं को भारत की, औपनिवेशिक स्थिति (Domimion Status) मान्य थी, जिसका अर्थ था ब्रिटेन के नियंत्रण में सीमित स्वतंत्रता। दूसरी तरफ कांग्रेस के ज्यादातर वाम पक्ष के नेता थे और उनकी मांग थी तत्काल स्वतंत्रता। पं. जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस इसी विचारधारा में शामिल थे। जिस समय साइमन आयोग भारत का भ्रमण कर रहा था, उस समय चारों ओर विरोध उभर आया और सारा भारत "साइमन वापस जाओ" के महाघोष से गूंज उठा। ब्रिटिश सरकार भी दमनकारी व्यवहार अपनाने में नहीं हिचकिचाई। आयोग की रिपोर्ट अंततः जून 1930 ई. में प्रकाशित हुई।

साइमन रिपोर्ट ने केंद्र और प्रांतों की कार्यपालिका और विधायिका की व्यवस्थाओं में परिवर्तन का प्रस्ताव रखा। केंद्रीय विधायी एसेंबली का नया नाम रखा गया संघीय एसेंबली, जिनके सदस्यों का निर्वा- प्रांतों से सदस्यों का चुनाव प्रांतीय काउंसिल के सदस्यों - अनुपातिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत पर हो। प्रांतो में द्वैध शासन प्रणाली की व्यवस्था का अंत किया जाए। विधायिका में जिस दल का बहुमत हो उसके सदस्यों में से मंत्रियों की नियुक्ति गवर्नर द्वारा हो, और शासन के सभी विषयों पर मंत्रियों का अधिकार हो। प्रांतीय विधायिका के निर्वाचकों की संख्या को बढ़ाकर तिगुना कर दिया जाए। सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व में कोई अंतर नहीं हो। आयोग ने काउन्सिल फ़ार ग्रेटर इण्डिया (Council for Greater India) नाम की एक नई संस्था का प्रस्ताव रखा, जिसमें प्रांतों और देशी रियासतों जैसे अन्य क्षेत्रों के सदस्य हों। आयोग ने एक संघ की कल्पना की, लेकिन उसकी तत्काल स्थापना का प्रस्ताव नहीं रखा।

नेहरू रिपोर्ट

कांग्रेस पार्टी ने सेक्रेटरी आफ स्टेट, लार्ड बर्कनहेड की इस चुनौती को स्वीकार किया कि एक ऐसे संविधान की रचना की जाए जो भारत के हर दल को स्वीकार हो। इसके लिए फरवरी 28, 1928 ई. को दिल्ली में एक सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया गया। पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में नौ सदस्यों की एक समिति बनाई गई। नेहरू रिपोर्ट ने एक धर्म निरपेक्ष संविधान और सभी संप्रदायों का सम्मिलित निर्वाचन क्षेत्र का प्रस्ताव किया। सांप्रदायिक निर्वाचन क्षेत्र को अस्वीकार कर दिया गया। कुछ मूल अधिकारों का प्रस्ताव किया गया। प्रधान मंत्री के नेतृत्व में एक संसदीय व्यवस्था का प्रस्ताव किया गया। केंद्रीय विधायिका में दो सदन हो प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित निम्न सदन और प्रांतीय विधायिका के सदस्यों द्वारा निर्वाचित उच्च सदन। प्रांतों की स्थापना के लिए भाषा को आधार माना जाए। रिपोर्ट ने संसदीय व्यवस्था को स्वीकार किया जिसमें केंद्र और प्रांतों की परिभाषा स्पष्ट रूप से हो। प्रांतों के लिए मुख्य मंत्री के नेतृत्व में केबिनेट व्यवस्था का प्रस्ताव था। रिपोर्ट में देशी रियासत, उच्चतम न्यायालय, लोक सेवा कभी प्रस्ताव किया गया था।

नेहरू रिपोर्ट लखनऊ के सर्वदलीय सम्मेलन में स्वीकार की गई, लेकिन दिसंबर 1928 ई. कलकत्ता के सर्वदलीय सम्मेलन मे इस पर गंभीर आपत्ति उठाई गई। नेहरू रिपोर्ट के "सांप्रदायिक समझौता" के प्रस्ताव पर एम.ए. जिन्ना ने आपत्ति की।

गोल मेज सम्मेलन, 1930-1932

साइमन आयोग की रिपोर्ट के प्रकाशित होने से पहले ही भारत के गवर्नर-जनरल लार्ड इरविन ने घोषणा की कि रिपोर्ट के सुझाव विभिन्न भारतीय और ब्रिटिश हित समूहों के प्रतिनिधियों के गोल मेज सम्मेलन में विचार के लिए रखे जाएंगे। पहला सम्मेलन नवंबर 12, 1930 को हुआ, जिसमें मुख्यतः ब्रिटेन द्वारा मनोनीत सदस्यों ने भाग लिया। संघीय व्यवस्था के प्रश्न पर सहमति हुई, प्रांतों को स्वायत्तता दी गई। लेकिन धार्मिक और अन्य वर्गों के लिए विशेष प्रतिनिधित्व एक ऐसा विषय था जिस पर सदस्यों में असहमति थी। पहले सम्मेलन में कांग्रेस ने भाग नहीं लिया था। फरवरी 1931 ई. के गांधी-इरविन समझौते के फलस्वरूप दूसरे गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के एक मात्र प्रतिनिधि थे महात्मा गांधी। श्रीमति सरोजनी नायडू और पं. मदन मोहन मालवीय ने ब्रिटिश सरकार के मनोनीत प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। दूसरे समुदायों के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया। इस सम्मेलन से ही "सांप्रदायिक अधिनिर्णय" (Communal Award) और पूना समझौता का आविर्भाव हुआ, जिसके द्वारा धार्मिक समूहों और हिंदुओं

के विभिन्न वर्ण समूहों को विशेष प्रतिनिधित्व दिया गया। कांग्रेस और अन्य राष्ट्रीय समूहों ने इन प्रावधानों का घोर विरोध किया। तीसरा और अंतिम गोल मेज सम्मेलन नवंबर 1932 ई. में हुआ। एक श्वेत पत्र जारी किया गया, जिस पर ब्रिटेन की संसद की संयुक्त प्रवर समिति (Joint Select Committee) ने विचार किया। इस समिति के अध्यक्ष थे लार्ड लिनलिथगो। इसके सुझावों के आधार पर 1935 ई. का अधिनियम बनाया गया था।

भारत सरकार अधिनियम 1935

इस अधिनियम द्वारा कुछ महत्वपूर्ण सांविधानिक सुधार लाए गए। यद्यपि ब्रिटेन के क्राउन और संसद के समग्र नियंत्रण को रखा गया, सेक्रेटरी आफ स्टेट के अधिकारों में कमी की गई, विशेष रूप से प्रांतो के अधिकारों में। संघीय व्यवस्था को स्वीकार किया गया, जिसमें 11 प्रांत, 6 चीफ कमिश्नर के प्रांत और विदेशी रियासतें सम्मिलित होंगी जो संघ में आना चाहें। सरकार के कार्यों को तीन सूचियों में बाँट दिया गया — संघीय सूची, प्रांतीय सूची और समवर्ती सूची। अवशिष्ट विषय, जिनकी चर्चा इन प्रांतीय सूचियों में नहीं थी, और कुछ आपातकालीन अधिकार, गवर्नर-जनरल को दिए गए। केंद्रीय कार्यपालिका के अधिकार गवर्नर-जनरल और मंत्रियों में निहित हों। इस अधिनियम ने केंद्र में द्वैध शासन प्रणाली की स्थापना की। सुरक्षित विषय गवर्नर-जनरल और हस्तांतरित विषय मंत्रियों के अधिकार क्षेत्र में दिए गए। सुरक्षित विषयों के प्रशासन में परामर्श देने के लिए गवर्नर-जनरल काउंसिलर की नियुक्ति कर सकता था। केंद्र और प्रांतों दोनों की विधायिकाओं के लिए दो सदनों की स्थापना की गई। निर्वाचकों में वृद्धि तो हुई लेकिन वयस्क मताधिकार के सिद्धांत को पूरी तरह नहीं माना गया। सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व का विस्तार हुआ और छोटे समुदायों को भी विशेष प्रतिनिधित्व दिया गया। इस अधिनियम ने प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली को समाप्त कर दिया, और प्रांतीय स्वायत्तता के सिद्धांत को स्वीकार किया। प्रांतों को प्रशासन के लिए स्वायत्तशासी इकाई माना गया। मंत्री का उत्तरदायित्व प्रांतीय विधायिका के प्रति था और वे प्रशासन के विभिन्न विषयों के अधिकारी थे। गवर्नर के पास स्वनिर्णय के अधिकार अभी भी थे।

इस अधिनियम के अनुसार संघीय व्यवस्था उसी हालत में लागू होनी थी जब आधे से अधिक देशी रियासतें संघ में सम्मिलित होने के लिए सहमत हों। रियासतें संघ में सम्मिलित होने के लिए सहमत नहीं हुई और इस प्रावधान को स्थगित रखा गया। अधिनियम का तीसरा भाग जिसमें प्रांतीय स्वायत्तता का प्रावधान था, अप्रैल 1, 1937 ई० को लागू किया गया। चुनाव में कांग्रेस पार्टी को 5 प्रांतों में पूर्ण बहुमत मिला और 3 प्रांतों में इस पार्टी के सर्वाधिक प्रतिनिधि चुने गए। मुस्लिम लीग के लिए चुनाव परिणाम अच्छा नहीं रहा। चुनाव परिणामों के द्वारा एक बार फिर भारतीय समाज का धर्मनिरपेक्ष आधार सामने आया। कांग्रेस पार्टी की 8 प्रांतों में सरकार बनी जो अक्तूबर 1939 ई० तक सत्ता में रही। जब सितंबर 1939 ई० में यूरोप में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ तो कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के मतभेद तीव्र हो गए। कांग्रेस नहीं चाहती थी कि भारत युद्ध में भाग ले। लेकिन मुस्लिम लीग ने इस विषय पर कांग्रेस का साथ नहीं दिया गया। वाइसराय लार्ड लिनलिथगों ने अक्तूबर 17, 1939 ई० के अपने बयान में ब्रिटिश नीति की घोषणा की। इसके बाद प्रांतों के कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दे दिया।

इधर कांग्रेस के नेतृत्व में आंदोलन तीव्र हो रहा था, और वाइसराय ने आगस्त 8, 1940 को बयान जारी किया, जो "अगस्त प्रस्ताव" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह स्वीकार किया गया कि संविधान निर्माण मुख्यतया भारतीयों का उत्तरदायित्व है, जो भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन की अवधारणा पर आधारित होना चाहिए। बचन दिया गया कि यह काम युद्ध के तुरंत बाद शुरू किया जाएगा। यह भी कहा गया कि गवर्नर-जनरल के कार्यकारी परिषद में कुछ और भारतीय प्रतिनिधि शामिल किए जाएंगें।

अगस्त प्रस्ताव को सर्वथा असंतोषजनक माना गया और महात्मा गांधी ने व्यक्तिगत असहयोग आंदोलन की घोषणा कर दी। कांग्रेस सत्याग्रही बड़ी संख्या में बंदी बनाए गए, जिनमें बहुत से महत्त्वपूर्ण नेता भी थे। इस बीच युद्ध की स्थिति और भी बिगड़ चुकी थी। ब्रिटेन पर भारत समस्या सुलझाने के लिए मित्र राष्ट्रों का भी दबाव पड़ा। ब्रिटेन के प्रधान मंत्री सर विंसटन चर्चिल ने मार्च 1942 ई० में घोषणा की कि भारत में सांविधानिक समाधान के लिए सर स्टैफोर्ड क्रिप्स भारत का दौरा करेंगे।

क्रिप्स मिशन 1942

सर क्रिप्स ने भारत में विभिन्न दलों और जनता के प्रमुख प्रतिनिधियों से विचारविमर्श के बाद अपने प्रस्ताव रखे। युद्ध के बाद प्रांतीय विधायिका एक संस्था निर्वाचित करेगी, जिसका काम संविधान निर्माण होगा। इस संस्था के सदस्यों की संख्या सभी विधायिकाओं के निचले सदन (Lower House) के दसवें हिस्से के बराबर होगी, और इनका चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर होगा। इसमें देशी रियासतों के प्रतिनिधि भी होंगें। प्रांतों और देशी रियासतों को यह स्वायत्ता दी गई कि वे संविधान को स्वीकार करें या नहीं। इन प्रस्तावों ने "अगस्त प्रस्ताव" को ठोस आकार दिया, लेकिन भारतीय जनमत के सभी वर्गों ने इन प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया। कांग्रेस, मुस्लिम लीग और लोकमत के अन्य वर्ग, सबने अपने-अपने कारणों से क्रिप्स प्रस्ताव को अस्वीकार किया। देशी रियासतों के प्रतिनिधियों का राजाओं द्वारा मनोनयन कांग्रेस को मान्य नहीं था। कांग्रेस,प्रांतों और रियासतों के इस अधिकार के भी खिलाफ थी कि संविधान को स्वीकार करें या नहीं। लीग को यह शिकायत थी कि क्रिप्स प्रस्ताव ने पृथक मुस्लिम राष्ट्र को स्वीकृति नहीं दी। लीग पृथक निर्वाचक क्षेत्र भी चाहती थी। अन्य दलों को यह आपत्ति थी कि क्रिप्स ने भविष्य के लिए प्रस्ताव रखा था, जबकि उन्होंने तत्काल सुधार की आवश्यकता पर बल दिया था। अप्रैल 11, 1942 ई० को क्रिप्स प्रस्ताव एकाएक वापस ले लिया गया।

अगस्त 1942 ई० में कांग्रेस ने इसका जवाब "भारत छोड़ो" आंदोलन से दिया और उसके सभी अग्रणी नेता बंदी बना लिए गए। यह अभूतपूर्व जनक्रांति कई स्थानों पर हिंसक हो उठी। सरकार ने दमन नीति का खुल कर प्रयोग किया। महात्मा गांधी ने 21 दिन का उपवास रखा और उन्हें मई 6, 1944 ई० को रिहा कर दिया गया। उन्होंने जिन्ना के साथ अपनी वार्ता जारी रखी। लार्ड वेवेल ने 1945 ई० में नए प्रस्तावों की घोषणा की।

वेवेल योजना ने वाइसराय की कार्यकारी परिषद् को विभिन्न समुदायों की अधिक "प्रतिनिधि" संस्था बनाने का प्रस्ताव रखा। विदेश विभाग भारतीय मंत्री के अधिकार में कर दिया गया। वाइसराय के कार्यकारी परिषद् में भारतीय सदस्यों के नाम का सुझाव देने के लिए शिमला सम्मेलन बुलाया गया। जिन्ना के कठोर रवैए के कारण यह सम्मेलन सफल नहीं हुआ। लेकिन इससे कांग्रेस के नेता पाकिस्तान के निर्माण की अनिवार्यता के कायल हो गए।

1945-1946 ई० का वर्ष बहुत कारणों से महत्त्वपूर्ण रहा। नवंबर 1945 ई० में भारतीय राष्ट्रीय सेना के अधिकारियों पर मुकदमा चला और लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। इसके तीन अधिकारियों, पी० के० सहगल, शाहनवाज़ खां और गुरूबक्श सिंह ढिल्लों का बचाव कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता भूलाभाई देसाई ने किया। इनको मृत्युदंड दिया गया था जिसे लोगों के विरोध के कारण स्थगित करना पड़ा। फरवरी 18-23, 1946 ई० के बीच बंबई में नौसैनिक विद्रोह उभरा। इसी बीच ब्रिटेन में कंजर्वेटिव पार्टी के विंसटन चर्चिल के स्थान पर लेबर पार्टी के क्लीमेंट एटली प्रधान मंत्री बने। नई सरकार ने घोषणा की कि 1945-46 ई० की शीत ऋतु में एक संसदीय प्रतिनिधि मंडल भेजा जाएगा जो भारत की स्थिति पर अपनी रिपोर्ट पेश करेगा। इसका मुख्य उद्देश्य होगा "भारत को यथासंभव शीघ्र और पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति में सहायता करना।" इस केबीनेट मिशन (Cabinet Mission) के अध्यक्ष हुए तत्कालीन सक्रेटरी आफ स्टेट, लार्ड पेथिक लारेन्स। ए० वी० एलेक्जेंडर और सर स्ट्रैफोर्ड क्रिप्स को सदस्यों के रूप में रखा गया। केबिनेट मिशन मार्च 24 को भारत पहुंचा और इसने मई 16, 1946 ई० को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

केबिनेट मिशन के प्रस्ताव ने मुस्लिम लीग के पाकिस्तान निर्माण की मांग को अस्वीकार कर दिया। इसने भारतीय संघ (Union) की स्थापना का सुझाव दिया जिसमें अवशिष्ट अधिकार प्रांतों के पास हों। इस रिपोर्ट में संविधान सभा के संगठन के बारे में यह सुझाव दिया गया कि इसके सदस्य विभिन्न समुदायों द्वारा उनकी जनसंख्या के आधार पर चुने जाएं। इस परिषद् के काम के बारे में भी सुझाव दिए गए। जब तक संविधान का निर्माण होगा, उस समय के लिए अंतरिम सरकार की स्थापना अविलंब की जाएगी।

अंतरिम सरकार के संगठन के लिए जब शिमला में वार्ता आरंभ हुई तो कांग्रेस और मुस्लिम लीग में उनके प्रतिनिधियों की संख्या के प्रश्न पर मतभेद था। एक प्रभारी (Care taker) सरकार की स्थापना की गई, जिसका मुख्य उत्तरदायित्व था संविधान सभा के चुनाव का निरीक्षण करना। संविधान सभा में कांग्रेस और लीग के निर्वाचित सदस्य थे। लेकिन लीग ने उसकी बैठक के बहिष्कार की घोषणा की। अंततः संविधान

सभा की बैठक दिसंबर 1946 ई० में हुई, जिसमें डा० राजेन्द्र प्रसाद इसके अध्यक्ष चुने गए।

अंतरिम सरकार और संविधान सभा दोनों के कार्य में मुस्लिम लीग के बहिष्कार से अनिश्चितता की स्थिति बनी रही। इस बीच ब्रिटेन की सरकार ने ऐसे कदम उठाए जिससे घटनाक्रम में तेजी आई। प्रधान मंत्री एटली ने फरवरी 20, 1947 ई० को यह घोषणा की कि "जून 1948 ई० से पहले उत्तरदायी भारतीय हाथों में सत्ता हस्तांतरण के इरादे को कार्यान्वित करना है।" इस घोषणा को कार्यरूप देने का काम नए वाइसराय, लार्ड लुई माउण्टबेटेन के ऊपर छोड़ा गया। उनका मुख्य काम था एक मुस्लिम देश के निर्माण के बारे में कांग्रेस और लीग के नेताओं से बातचीत करना।

माउण्टबेटेन प्रस्ताव की घोषणा जून 3, 1947 ई० को की गई, जिसमें भारत के विभाजन को अनिवार्य माना गया। इसमें विभाजन की विस्तृत प्रक्रिया के बारे में प्रस्ताव था। पंजाब और बंगाल की विधान सभा समान्य बहुमत से यह निर्णय लेगी कि इन प्रांतों का विभाजन होगा या नहीं। सिलचर और उत्तर पश्चिमी प्रांत जैसे अन्य क्षेत्र मतगणना के द्वारा यह निर्णय लेंगे।

पाकिस्तान की अलग संविधान सभा जुलाई 26, 1947 ई० को स्थापित हुई। जुलाई 4 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम को संसद में प्रस्तुत किया गया और उसे जुलाई 18, 1947 ई० को राजकीय स्वीकृति दे दी गई। इसके द्वारा 1935 ई० के अधिनियम के संशोधन द्वारा भारत और पाकिस्तान के लिए अंतरिम सरकार की स्थापना की गई।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947

यह अधिनियम एक छोटा और सीधा सादा दस्तावेज था, जिसमें 20 धाराएं थीं। इसके अनुसार अगस्त 15, 1947 ई० को भारत और पाकिस्तान को सत्ता हस्तांतरित की जाएगी। उनकी संविधान सभाओं द्वारा दोनों देशों के लिए संविधान का निर्माण किया जाएगा। ये सभाएं अंतरिम समय में विधायिका का कार्य भी करेंगी। देशी रियासतें इसका निर्णय स्वयं करेंगी कि वे स्वतंत्र रहेंगी या दोनों में से किसी एक देश में सम्मिलित होंगी। सेक्रेटरी आफ स्टेट का पद समाप्त कर दिया गया। गवर्नर-जनरल और प्रांतों के गवर्नर सांविधानिक प्रधान के रूप में काम करेंगे। वे मंत्रिपरिषद् के परामर्श पर काम करेंगे।

मुस्लिम लीग के हट जाने के बाद, संविधान सभा में 299 सदस्य रह गए थे। इसकी बैठक एक बार फिर अक्तूबर 31, 1947 ई० को हुई और पूरे उत्साह और गंभीरता के साथ संविधान निर्माण का कार्य शुरू हुआ। सभा ने अपना कार्य विभिन्न समितियों में बांट दिया : संघ संविधान समिति, संघ अधिकार समिति, मूल अधिकार समिति आदि। डा० बी०आर० अंबेडकर की अध्यक्षता में एक प्रारूप समिति की स्थापना की गई। संविधान का प्रारूप फरवरी 1948 ई० में तैयार हो गया। इस पर पूर्ण रूप से आम वाद विवाद होने के बाद, संविधान सभा की बैठक नवंबर 1948 में फिर हुई और संविधान की एक-एक धारा पर विचार किया गया। संविधान पर द्वितीय वाचन अक्तूबर 1949 में और तृतीय वाचन नवंबर 1949 ई० में सपन्न हुआ। भारत का नया संविधान जनवरी 26, 1950 ई० को लागू किया गया।

भारतीय संविधान की बहुत सी संस्थाओं का विकास सांविधानिक विकास के लंबे समय में हुआ, जिसकी चर्चा हमने ऊपर की है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण उदाहरण है संघीय व्यवस्था। यह कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा 1916 ई० के लखनऊ समझौते में स्वीकार की गई थी। साइमन कमीशन ने भी संघीय व्यवस्था पर बल दिया और 1935 ई० के अधिनियम ने संघीय व्यवस्था की स्थापना की, जिसमें प्रांतों के अधिकार ब्रिटेन के क्राउन द्वारा प्राप्त हुए थे। जब भारत स्वतंत्र हुआ तब तक राष्ट्रीय आंदोलन के नेता संघीय व्यवस्था के लिए वचनबद्ध हो चुके थे। संसदीय व्यवस्था, जो कार्यपालिका और विधायिका के संबंधों की परिभाषा करती है, भारत में अपरिचित नहीं थी। इस तरह भारतीय संविधान, संविधान निर्माताओं की बुद्धिमानी और सूक्ष्मदृष्टि और कालक्रम में विकसित संस्थाओं और कार्यविधियों का एक अपूर्व सम्मिश्रण है।

इस अध्याय को पढ़ने के बाद, आप क्या सोचते हैं कि भारत में साम्प्रदायिक समस्या की उत्पत्ति के लिए कौन उत्तरदायी है—ब्रिटिश सरकार अथवा स्वयं भारत? इस प्रश्न पर अपने शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए।

अभ्यास

1. भारत सरकार अधिनियम 1919 के द्वारा लागू की गई द्वैध शासन प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए?
2. भारत सरकार अधिनियम 1935 से पूर्व प्रमुख राजनीतिक घटनाओं का वर्णन कीजिए?
3. अधिनियम 1935 के द्वारा लागू की गई "प्रान्तीय स्वायत्तता" का विवेचन कीजिए? अधिनियम की अन्य धाराओं का भी उल्लेख कीजिए?
4. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी कीजिए :
   (क) नेहरू रिपोर्ट
   (ख) अधिनियम 1909 की प्रमुख विशेषताएँ
   (ग) केबिनेट मिशन
   (द) भारतीय संविधान सभा

अध्याय 11

राष्ट्रीय आंदोलन : एक धरोहर

स्वतंत्रता के बाद के भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के मूल लक्षण राष्ट्रीय आंदोलन की लंबी अवधि में विकसित हुए। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य की आरंभिक स्थिति से आंदोलन जैसे-जैसे आगे बढ़ा, नए क्षेत्र और नए सामाजिक समूह उसमें सम्मिलित होते गए। आंदोलन का प्रभाव बंगाल, बंबई और पंजाब में तो था ही, वह गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, केंद्रीय प्रांत और आंध्र क्षेत्र में भी फैल गया। बंगाल, बंबई, मद्रास के प्रेसीडेंसी क्षेत्र, और प्रांतों के अलावा, देशी रियासतें भी आंदोलन से आच्छादित हो गई। इस प्रकार विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों में बँटा हुआ पूरा क्षेत्र राष्ट्रीय भावना के एक सूत्र में बंध गया। इससे एक क्षेत्रीय एकात्मकता आई जो एक राष्ट्र के लिए आवश्यक होती है।

विस्तृत सामाजिक आधार

राष्ट्रीय आंदोलन सिर्फ नए क्षेत्रों में ही नहीं फैले, विभिन्न सामाजिक समूह भी इसमें सम्मिलित होते गए। भारतीय समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विभिन्नताएं रही हैं। यहां विभिन्न धार्मिक समूह भी हैं। ब्रिटिश शासन के समय यह विभिन्नता अधिक थी। समाज हिंदू और मुसलमानों में बंटा था। मुसलमानों में भी सामाजिक विभाजन था। समाज में विभिन्न आर्थिक समूह थे, जिसमें बहुत विषमता थी। शिक्षा की दृष्टि से भी असमानता थी। इन समूहों के सामाजिक और आर्थिक हित भिन्न थे। राष्ट्रीय आंदोलन में अधिकाधिक समूह सम्मिलित होते गए। बीसवीं शताब्दी तक कांग्रेस एक जन आंदोलन का रूप ले चुकी थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन इसका चरम बिंदु था, जिसमें सामाजिक-आर्थिक विभिन्नता को भुला कर, सभी सामाजिक समूह सम्मिलित हुए। विदेशी शासन से स्वतंत्रता के लक्ष्य ने विभिन्न समूहों को एक कर दिया। विभिन्न समूहों में लक्ष्य की एकता की भावना लाने में राष्ट्रीय आंदोलन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस आंदोलन ने एक ऐसे लक्ष्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि विभिन्न आर्थिक समूह एक मंच पर इकट्ठे हो गए। भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों में बहुत दिनों से असंतोष की भावना थी, जिसके कई कारण थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पहले भी जनता के विरोध के उदाहरण मिलते हैं। बंगाल में जमींदारों के खिलाफ़ भूमि संबंधी संगठन (Agrarian League), महाराष्ट्र के दक्षिण क्षेत्र में साहूकारों के खिलाफ दंगा, आंध्र प्रदेश के "रंपा" क्षेत्र में जन जातियों का विद्रोह, ऐसे कुछ विद्रोहों के उदाहरण हैं। किसानों और औद्योगिक श्रमिक वर्गों का अपना संगठन था। उनका विद्रोह अपने निकटतस्थ दमनकारी वर्गों के खिलाफ़ था — जमींदार, साहूकार और उद्योगपति। राष्ट्रीय आंदोलन ने इनके समक्ष "ब्रिटिश राज्य को उखाड़ फेंकने" का एक उच्च लक्ष्य रखा। इस लक्ष्य के द्वारा किसान और जमींदार, श्रमिक और उद्योगपति, सभी राष्ट्रीय आंदोलन में सम्मिलित हो गए। भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों का आपसी संघर्ष ब्रिटिश सरकार के लिए निश्चय ही लाभकारी था। लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन ने इसके स्थान पर विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों में एकता की भावना को स्थापित किया।

सामाजिक आंदोलन

कोई भी आंदोलन विशेष सामाजिक-आर्थिक समूहों के हितों की उपेक्षा नहीं कर सकता। किसान, श्रमिक, उद्योगपति, जमींदार — इन सभी वर्गों का अपना-अपना हित था, जिसे वे अग्रसित और सुरक्षित रखना चाहते थे। राष्ट्रीय आंदोलन ने इन वर्गों को संगठित करने के साथ ही उनके हितों का भी ध्यान रखा। महात्मा गांधी ने 1917-1918 ई. में बिहार में गरीब किसानों के हितों की रक्षा के लिए चंपारण सत्याग्रह किया। इसके बाद ही 1919 ई. में "खेदा सत्याग्रह" हुआ। उत्तर प्रदेश के रायबरेली और फ़ैजाबाद क्षेत्र में 1920 ई. में किसान आंदोलन अधिक व्यापक थे। 1921 ई. में मालाबार क्षेत्र में "मोपला विद्रोह" में जो कृषि श्रमिक और काश्तकार सम्मिलित हुए, वे अधिकतर मुसलमान थे। किसान सभाओं की स्थापना हुई, जो बंगाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश, और बिहार क्षेत्रों में सक्रिय थीं।

औद्योगिक क्षेत्र में श्रमिक संगठनों की स्थापना हुई। उद्योगों की स्थापना, और व्यापार बैंकों के विस्तार के साथ ही भारतीय मध्य वर्ग उभर आया, जिसका संबंध व्यापार और उद्योग से था। बंगाल के व्यापार संगठन (Chamber of Commerce) की स्थापना 1887 में, और भारतीय व्यापारी संघ (Indian Merchants Chamber) की स्थापना बंबई में 1907 ई. में हुई। कलकत्ता में 1900 ई. में मारवाड़ी व्यापार संगठन और मद्रास में दक्षिण व्यापार संगठन की स्थापना की गई। अंततः 1925 ई० में एक भारतीय व्यापार संघ की स्थापना हुई। स्वदेशी आंदोलन ने ब्रिटेन में बनी वस्तुओं के बहिष्कार पर बल दिया, जिसके द्वारा भारतीय उद्योगपति, विशेषकर कपड़ा उद्योग, आकर्षित हुए। बिड़ला, बजाज, अंबालाल, साराभाई, कस्तूरभाई जैसे उद्योगपतियों का कांग्रेस को समर्थन मिलने लगा। हितों की रक्षा के लिए संगठन जोर पकड़ रहे थे और साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन के मंच पर वे सम्मिलित भी हो रहे थे। आंदोलन विशेष हितों की रक्षा और स्वतंत्रता की प्राप्ति, दोनों ही लक्ष्यों के लिए प्रभावकारी था।

समाज सुधार

स्वतंत्रता संग्राम के नेता समाज के विभिन्न वर्गों के समर्थन के प्रयास के साथ ही समाज सुधार के बारे में सजग थे। स्वतंत्रता संग्राम के कई नेता सर्वमान्य समाज सुधारक थे। राजा राममोहन राय ने, जिन्हें "भारतीय राष्ट्रीयता का पिता" कहा जाता है, 1828 ई. में ब्रह्म समाज की स्थापना की। यह आंदोलन हिन्दू समाज की सती प्रथा और बालविवाह जैसी बुराइयों के निषेध के लिए उत्तरदायी था। ब्रह्म समाज ने विद्यालयों की स्थापना और पत्रिकाओं और पुस्तकों के प्रकाशन के माध्यम से शिक्षा के प्रसार का भी काम किया। एम. जी. रानाडे ने 1867 ई. में बंबई में प्रार्थना सभा की स्थापना की। दयानन्द सरस्वती ने 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की थी। 1886 ई. में पहला दयानंद आंग्ल वैदिक कालेज की स्थापना के बाद डी. ए. वी. स्कूल और कालेजों की श्रृंखला प्रसिद्ध हो गई। ए. आर. देसाई का कहना है, "राष्ट्रीय आंदोलन के आरम्भ में आर्य समाज ने एक प्रगतिशील भूमिका निभाई थी"। स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित राम कृष्ण मिशन का लक्ष्य था "भारत को पश्चिमी सभ्यता के भौतिकवादी प्रभाव से बचाना।" श्रीमति एनी बेसेंट द्वारा स्थापित थियोसाफीकल सोसाइटी मुख्यतः एक आध्यात्मिक आंदोलन था। इसका घनिष्ट संबंध बालविवाह, पर्दाप्रथा, और निरक्षता, जैसी कुरीतियों को मिटाने से था। कांग्रेस के कार्यक्रमों में, विशेषतः होम रूल (Home Rule) और स्वदेशी आंदोलन में इसका योगदान था। मुस्लिम समुदाय में जिन संस्थाओं द्वारा सुधार लाए गए वे थे अहमदिया आंदोलन, अंजुमन-ए-हिमायते इस्लाम, नवदख्त उल उलेमा, अलीगढ़ आंदोलन, अब्दुल गफ्फार खाँ का खुदाई खिदमतमार आंदोलन, और खाकसार आंदोलन। सिक्खों द्वारा शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक सुधार आंदोलन और सिंह सभाओं की स्थापना की गई। राष्ट्रीय आंदोलन के सभी नेता समाज सुधार के कार्य के लिए भी प्रसिद्ध थे। ऐसे कुछ नेताओं के नाम हैं — राजा राममोहन राय, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, अरविन्द घोष, लाला लाजपत राय, मुहम्मद इक़बाल, और महात्मा गांधी।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रगतिशील विचार सुधार के तीन कार्यक्रमों से स्पष्ट होते हैं — वर्ण व्यवस्था, स्त्रियों की स्थिति, और अस्पृश्यता। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, और आर्य समाज सबने समाज के विभिन्न वर्णों में बटवारे का विरोध किया। महाराष्ट्र में जोतिबा फूले के "सत्याशोधक समाज" और मद्रास के "स्वसम्मान आंदोलन" (Self Respect Movement) ने उच्च वर्ण के प्रभुत्व के खिलाफ़ आवाज उठाई।

सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बालविवाह, देवदासी, और विधवाओं की दयनीय स्थिति, जैसी कुरीतियों का विरोध नारी मुक्ति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम थे। नेताओं ने नारी शिक्षा पर भी जोर दिया। 1919 ई. के बाद राजनीति में अधिक महिलाओं ने भाग लेना शुरू कर दिया। महिलाओं को राजनीति की मुख्यधारा में लाने में महात्मा गांधी की विशेष भूमिका रही है। महिलाएं किसान आंदोलनों में भी सक्रिय थीं।

छुआछूत वर्ण व्यवस्था की सबसे प्रमुख विकृति के रूप में प्रकट हुई। समाज सुधार आंदोलनों और कांग्रेस ने छुआछूत दूर करने पर बल दिया। महात्मा गांधी ने, जिन्होंने इस समूह को हरिजन की संज्ञा दी, इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। बी.आर. अंबेडकर को इनका प्रवक्ता माना गया। अछूतों के लिए आवाज उठाने में अखिल भारतीय दलित वर्ण संघ (All India Depressed Classes Federation) का योगदान महत्वपूर्ण था। प्रांतों में 1937 ई. की कांग्रेस सरकारों ने भी इस ओर विशेष ध्यान दिया। राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं द्वारा ये प्रश्न समानता और प्रजातांत्रिक अधिकार के सिद्धांतों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण थे। ये सिद्धांत ब्रिटेन के शासन से स्वतंत्रता की उनकी मांगों का आधार था।

धर्म निरपेक्षता

भारतीय समाज के विभिन्न धार्मिक समूहों का एकीकरण स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक चिंता का विषय था। ब्रिटेन ने भारतीय समाज को धार्मिक समूहों में बाँट देने की नीति अपनाई। बहुत से सांप्रदायिक संगठन ब्रिटेन के समर्थन के आधार पर ही जीवित थे। इस नीति से एक समुदाय को दूसरे के खिलाफ भड़का कर, राष्ट्रीय आंदोलन को नियंत्रित रखने में आसानी होती थी। सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व 1909 ई. के "भारतीय कांउसिल्स अधिनियम" द्वारा आरंभ किया गया और बाद के संवैधानिक सुधारों में उसका विस्तार हुआ। इसके साथ ही स्वतंत्रता संग्राम के नेता इस बात पर वचनबद्ध थे कि राष्ट्र का निर्माण धर्म के आधार पर नहीं हो सकता, और ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसे कई मौके आये जब किसी खास विषय पर कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहमत थे। 1911 - 20 ई. का खिलाफत आंदोलन भी दोनों समुदायों में सहयोग का उदाहरण है। मांटेग्यूचेम्सफोर्ड सुधारों के समय कांग्रेस और लीग ने 1916 ई. में लखनऊ समझौता किया। कांग्रेस में हर समय मुसलमान नेताओं को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। धर्म निरपेक्षता कांग्रेस विचारधारा का मुख्य आधार था। 1947 ई. में सत्ता हस्तांतरण के बाद धर्म निरपेक्षता भारतीय संविधान का एक आधार स्तंभ माना गया।

समाजवादी विचार

स्वतंत्रता संग्राम के नेता उदार विचारधारा और कार्यक्रम को महत्वपूर्ण मानते रहे। कुछ समूहों तक ही सीमित संकीर्ण विचारों का कोई स्थान नहीं था। नेताओं में मतभेदों की अभिव्यक्ति इस तरह हुई-नरमदल, उदारवादी और उग्रवादी, परिवर्तन न चाहने वाले, स्वराजवादी, कांग्रेस समाजवादी पार्टी आदि। कांग्रेस समाजवादी पार्टी के निर्माण के बाद आंदोलन का समाजवाद की ओर स्पष्ट झुकाव हो गया। इस विचारधारा को जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे प्रभावशाली नेताओं का समर्थन प्राप्त था।

सर्वसम्मति की राजनीति

स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न सामाजिक आर्थिक समूहों, विभिन्न व्यवसायों, विभिन्न क्षेत्रों, और विभिन्न विचारधाराओं के लोग शामिल थे। आंदोलन की एकता की दृष्टि से कांग्रेस के लिए सभी विभिन्नताओं में सामंजस्य स्थापित करना आवश्यक था। कांग्रेस में ऐसे व्यक्ति और समूह थे जिनमें विचारधारा के आधार पर मतभेद था। इनकी चर्चा हमने पहले की है। निर्णय लेने के लिए सर्वसम्मति का निरापद रास्ता बहुमत-अल्पमत के तरीके की तुलना में अच्छा समझा गया। निर्णय जब सर्वसम्मति के आधार पर लिया जाता है, तो विभिन्न दृष्टिकोणों में सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश की जाती है। इससे निर्णय अधिकाधिक व्यक्तियों और समूहों को मान्य होता है। महात्मा गांधी जैसे चिंतकों ने सर्वसम्मति की नीति को ठोस आधार दिया।

मूल मान्यताएं

भारतीय संविधान की मूल मान्यताओं का आकार स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सुनिश्चित हो गया था, जैसे धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के सिद्धांत और संघीय व्यवस्था जैसे संवैधानिक प्रावधान। इस चिरकालिक विकास से विभिन्न मानदण्डों को वैधता प्राप्त करने में आसानी हुई। स्वतंत्रता के बाद संविधान में इन आदर्शों के प्रावधान से पहले ही ये राष्ट्र द्वारा माने जा चुके थे। इस बात के लिए किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता

नहीं हुई कि लोगों को इन सिद्धांतों को मानने के लिए राजी किया जाए। 1952 ई॰ में पहला चुनाव होने से बहुत पहले ही लोग निर्वाचन प्रणाली और निर्वाचित प्रतिनिधि के कार्यों से परिचित हो चुके थे। स्वतंत्रता आंदोलन ने लोगों को लोकतांत्रिक संस्थाओं और कार्यविधियों से परिचित करवा दिया था।

सांविधानिक पद्धति

स्वतंत्रता आंदोलन ने परिवर्तन की संवैधानिक पद्धति को हर समय महत्त्वपूर्ण माना था। आंदोलन के नेताओं ने अंग्रेजी प्रशासन के प्रति असाधारण धैर्य का प्रदर्शन किया था। उन्होंने अपनी मांगों को मनवाने के लिए हर समय मान्य कार्यविधि और संस्थाओं का ही सहारा लिया। सत्याग्रह और असहयोग विरोध के गांधीवादी अनुपम तरीके से अंग्रेज प्रशासक चकरा जाते थे। गवर्नर की कार्यकारी काउंसिल, विधायिका, सरकारी नौकरी, जैसी संस्थाओं में सुधारों से पूर्णतया असंतुष्ट रहते हुए भी, नेताओं ने उग्र तरीका नहीं अपनाया। विरोध और शांतिपूर्ण प्रदर्शन ही सबको मान्य थे। कांग्रेस अपने प्रस्तावों द्वारा ही सुधार के सुझाव देती रही। अंग्रेजों के साथ वार्ता के रास्ते हर समय खुले रखे गए। इन सबसे, बाद के वर्षों में संस्थाओं के कार्य को ठोस आधार मिला।

दलीय व्यवस्था

लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए राजनीतिक दल महत्त्वपूर्ण होते हैं। ये लोकतांत्रिक संस्थाओं और आम जनता के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं। कांग्रेस पार्टी जैसी सशक्त संस्था का निर्माण स्वतंत्रता आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस विशाल पार्टी के विकास से भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को स्वतंत्रता के बाद की निर्णायक अवधि में स्थायित्व प्राप्त करने में सहायता मिली। स्वतंत्रता के बाद भी कांग्रेस ने अपनी प्रधानता कायम रखी। स्वतंत्रता आंदोलन के मूल सिद्धांतों से बहुत बल मिला। इस स्थायित्व की अवधि में भारतीय लोकतंत्र को अपनी जड़ जमाने का अवसर मिला। रजनी कोठारी के शब्दों में, "कांग्रेस व्यवस्था" द्वारा भारतीय लोकतंत्र के लिए एक सुदृढ़ ढांचा तैयार हो गया।

लोकतंत्रीय नेतृत्व

स्वतंत्रता आंदोलन ने जिस प्रकार के नेतृत्व को जन्म दिया वह भारतीय लोकतंत्र के लिए मूल्यवान सिद्ध हुआ। इससे आदर्शों और संस्थाओं का ढांचा तैयार हुआ और साथ ही ऐसे लोग भी तैयार हुए जिन्हें इन आदर्शों के अनुकूल काम करने का अनुभव था। नेताओं के नामों की सूची निश्चय ही प्रभावोत्पादक है — महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, राजेंद्रप्रसाद, और बी॰ आर॰ अम्बेडकर। इन्होंने एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए सही दिशा प्रदान की। चोटी के इन नेताओं के अलावा प्रांत, जिला, और गांव के स्तर पर भी नेताओं की कमी नहीं थी। स्वतंत्रता आंदोलन के समय में ही प्रतिबद्ध नेतृत्व सामने आ गया था। ये समाज के भिन्न वर्गों से आए और इनकी पृष्ठिभूमि भी भिन्न थी। स्वतंत्रता के बाद जब संस्थाओं का संगठन किया गया तो पदों को सम्भालने के लिए प्रशिक्षित और प्रतिबद्ध नेता मौजूद थे। स्वाधीनता आंदोलन नेताओं और जनता, दोनों के लिए विशाल प्रशिक्षण माध्यम बन गया।

लोक चेतना

स्वतंत्रता आंदोलन के विस्तार के साथ ही भारत की जनता के विभिन्न समूहों में राजनीतिक चेतना आती गई। यह चेतना कई दिशाओं में थी और इसके कई स्तर थे। भारतीय राष्ट्र के अलावा, लोगों में अपने अधिकारों के प्रति भी चेतना आई। जनता लोकतंत्र के नेताओं और कार्यविधि से परिचित हो गई। नागरिकता की इस चेतना के साथ ही, उसमें किसान, श्रमिक, और उद्योगपति जैसे वर्गीय हितों के बारे में भी चेतना आई। हम पहले पढ़ चुके हैं कि इन हितों पर आधारित आंदोलन स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्यधारा का एक भाग था। समाज सुधार के आंदोलन इस चेतना के अन्य स्तरों की ओर संकेत करते हैं। जैसे सामाजिक बुराईयों की ओर ध्यान दिलाया गया, जहाँ विभिन्न वर्गों में विभिन्न प्रकार के सुधारों की आवश्यकता थी। स्वतंत्रता आंदोलन ने ऐसे स्तर पर चेतना को जन्म दिया कि वह भारतीय लोकतंत्र के लिए प्रेरक शक्ति सिद्ध हुआ।

अभ्यास

1. 1920 के पश्चात् स्वतंत्रता आन्दोलन में आए प्रमुख परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए?
2. स्वतन्त्रता आन्दोलन में समाजसुधारकों की भूमिका का वर्णन कीजिए?
3. निम्नलिखित विषय पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए :
   (अ) स्वतन्त्रता आन्दोलन में धर्मनिरपेक्ष विचार
   (ब) स्वतन्त्रता आन्दोलन में लोकतांत्रिक नेतृत्व का उदय
   (स) सर्वसम्मति की राजनीति

अध्याय 12

भारतीय संविधान की प्रस्तावना

संविधान की प्रस्तावना मूल आदर्शों और दार्शनिक अभिधारणाओं को मुख्यत: नैतिक रूप में व्यक्त करती है। संस्थाओं, पदों, और कार्यविधियों के विस्तार में इन आदर्शों पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाता है। यह सांविधानिक प्रावधानों को औचित्य प्रदान करते हैं।

भारतीय संविधान में निहित आदर्श स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विकसित हुए और विख्यात नेताओं से प्रेरित थे। राष्ट्रीय भावना से इस बात को बल मिलता रहा कि भारत के संविधान का निर्माण स्वयं भारतीयों द्वारा ही होना चाहिए, बाहर से नहीं थोपा जाना चाहिए। भारत की जनता की संप्रभुता पर हर समय बल दिया गया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय समाज की विभिन्न प्रकार की असमानताओं और शोषण के खिलाफ भी आवाज़ उठाई गई। हमने पहले पढ़ा है कि स्वतंत्रता आंदोलन ने समाज सुधार की ओर भी ध्यान दिया और इसके अधिकांश नेता प्रसिद्ध समाज सुधारक भी थे। सुधार के प्रयासों से स्वतंत्रता आंदोलन के आदर्शों का पता चलता है। ऐसा ही एक आदर्श था सांविधानिक पद्धति जिस पर हमेशा बल दिया गया। मई 1946 ई० के केबिनेट मिशन की रिपोर्ट के बाद कांग्रेस को संविधान निर्माण के प्रयास का अवसर मिला। कांग्रेस कार्य समिति (Working Committee) ने 24 जून 1946 ई० के प्रस्ताव में अपने लक्ष्य की घोषणा की, "तत्काल स्वतंत्रता और आम जनता की आर्थिक और सामाजिक प्रगति का पथ प्रशस्त करना"। इन आदर्शों की और अधिक व्याख्या संविधान सभा की बैठक के कुछ ही समय पूर्व कांग्रेस के नवंबर 1946 ई० के अधिवेशन में हुई। इस प्रस्ताव में कहा गया कि "इसका लक्ष्य है प्रभुता संपन्न स्वतंत्र एक गणतंत्र की प्राप्ति, जिसमें सत्ता और प्राधिकार जनता से प्राप्त किए हों और एक ऐसे संविधान का निर्माण जिसमें भारत की जनता के लिए स्वतंत्रता, प्रगति, और समानता के अवसर प्रदान करने के आदर्श निहित हों........."

संविधान सभा के सामने सबसे पहला कठिन काम था अपने मूल लक्ष्यों को स्पष्ट करना। राष्ट्रीय एकता के आदर्शों को सर्वोपरि महत्व दिया गया, क्योंकि संविधान सभा देश के विभाजन की काली छाया से त्रस्त थी। 13 दिसंबर 1947 ई० को जवाहरलाल नेहरू ने अति भावपूर्ण शैली में संविधान सभा में उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया, जो संविधान सभा के सदस्यों की दृढ़ता का परिचय देता है। इस प्रस्ताव के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रावधान इस प्रकार हैं:

(1) यह संविधान सभा भारत को एक स्वतंत्र प्रभुता संपन्न घोषित करने की ओर उसके भावी प्रशासन के लिए एक संविधान के निर्माण करने की, दृढ़ और पवित्र प्रतिज्ञा करता है,

(2) जिसमें प्रभुता संपन्न स्वतंत्र भारत और उसके सभी हिस्सों और सरकार के अंगों को सभी प्रकार की शक्ति और प्राधिकार जनता से प्राप्त होंगे,

(3) जिसमें भारत के सभी लोगों को सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक न्याय, पद, अवसर, और कानून के समक्ष समानता कानून और सार्वजनिक नैतिकता के अंतर्गत विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, निष्ठा, पूजा,

व्यवसाय, संगठन, और कार्य की स्वतंत्रता की गारंटी दी जाएगी,

(4) जिसमें अल्पसंख्यकों, पिछड़े और जन जाति वा क्षेत्रों और दलित और अन्य वर्गों के लिए सुरक्षा के समुचित उपाय होंगे ....

इस प्रस्ताव का संविधान सभा में स्वागत हुआ और इस पर दिसंबर 1946 ई० के मध्य में विचार हुआ। जिन दो कमियों की सदस्यों ने बार-बार चर्चा की, वह थी मुस्लिम लीग की अनुपस्थिति और देशी राज्यों की अनिश्चित स्थिति। इससे सदस्यों में हिचकिचाहट की भावना आ गई। वादविवाद के बाद सभी ने 22 जनवरी 1947 ई० को यह प्रस्ताव पारित कर दिया।

इस प्रस्ताव पर आधारित प्रस्तावना बी० एन० राव ने प्रारूप समिति के सामने विचार के लिए रखी। इस चरण में संप्रभुता जैसी अवधारणाओं पर और सूक्ष्मता से विचार कि[illegible] गया और "बंधुत्व" जैसे कुछ शब्द जोड़े गये। ल[illegible]तंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, और समानता जैसे शब्दों पर विस्तार से विचार हुआ और इन अमूर्त शब्दों को ठोस आधार दिया गया। विचार के हर चरण में डा० बी.आर. अंबेडकर का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। संविधान सभा के कार्य के अंतिम चरणों में प्रस्तावना पारित की गई, जिससे वह संविधान के प्रावधानों के सर्वथा अनुकूल हो। करीब तीन दशकों के बाद, "समाजवाद","धर्मनिरपेक्षता", और राष्ट्र की "अखंडता", ये शब्द 1976 के बयालिसवें संशोधन द्वारा जोड़े गये। भारतीय संविधान की मौजूदा प्रस्तावना इस प्रकार है,

हम, भारत के लोग, भारत को एक
सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी,
पंथ-निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक गणराज्य
बनाने के लिए तथा उसके समस्त
नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक
और राजनैतिक न्याय, विचार
अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना
की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की
समता प्राप्त करने के लिए, तथा उन
सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की
एकता तथा — अखण्डता सुनिश्चित करने
वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प
होकर अपनी इस संविधान सभा में आज
तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० (मिति
मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् 2006
विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान
को अंगीकृत, अधिनियमित और
आत्मार्पित करते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के संविधानों की प्रस्तावना प्राप्त कीजिए। इनकी प्रस्तावना की तुलना भारतीय संविधान की प्रस्तावना से कीजिए।

प्रस्तावना में संवैधानिक ढाँचे के आधार स्वरूप सिद्धांतों की व्यापक अभिव्यक्ति की गई है। प्रस्तावना के विभिन्न भागों में उन स्रोतों की चर्चा की गई है जिससे संविधान प्राधिकार प्राप्त करता है। सरकार का स्वरूप और राजनीतिक व्यवस्था के लक्ष्यों की रूपरेखा भी दी गई है। संविधान एक कानूनी दस्तावेज़ है, इसलिए प्रस्तावना में इसके अंगीकरण की निश्चित तिथि दी गई है।

प्रस्तावना में घोषणा की गई है कि "भारत की जनता" संविधान के प्राधिकार का स्रोत है। संविधान सभा के प्रस्ताव में जन इच्छा को अभिव्यक्त किया गया है। यह भी स्पष्ट है कि जनता ने संविधान के अंगीकरण का निर्णय स्वयं ही किया। यह किसी बाहरी शक्ति द्वारा थोपा नहीं गया है।

संविधान में सरकार के स्वरूप की परिभाषा इस तरह की गई है– प्रभुता संपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक, और गणतांत्रिक संप्रभुता। हमने पहले पढ़ा है कि संप्रभुता राज्य का अनिवार्य तत्व है। इसका अर्थ है, अपनी सीमा के अंतर्गत और अन्य सरकारों द्वारा राज्य संप्रभुता की निर्विवाद मान्यता। इसके द्वारा भारतीय राज्य का हर निर्णय यहां के नागरिकों को मान्य होगा। इसी प्रकार दूसरे प्रभुता संपन्न राज्यों को यह स्वीकार होगा कि भारत राज्य का अपने भूभाग और जनसंख्या पर वैध प्राधिकार है।

समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष, यह शब्द प्रस्तावना में 42वें संशोधन द्वारा जोड़े गए जो संसद द्वारा 1976 ई. में पारित किया गया। हमने पहले देखा कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान नेताओं द्वारा इन आदर्शों पर बार-बार बल दिया गया। संविधान सभा में विचार के समय भी इन शब्दों को संविधान में रखने का सुझाव दिया गया। के.टी. शाह ने दो अवसरों पर इस संशोधन का प्रस्ताव रखा था। इसके उत्तर में कहा गया कि संविधान के प्रावधानों में दोनों आदर्श निहित हैं। संविधान में सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक न्याय के उपबंधों से समाजवादी आदर्श सुनिश्चित होते हैं। मूल अधिकारों में जो समानता के अधिकार और शोषण के खिलाफ अधिकार दिए गए हैं, उनसे भी इन आदर्शों की पुष्टि होती है। सामाजिक और आर्थिक न्याय राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के प्रमुख प्रावधान हैं। इसी तरह, विश्वास, निष्ठा और आराधना की स्वतंत्रता की और पद और अवसर की समानता इन से धर्म-निरपेक्षता के सिद्धांत की पुष्टि होती है। साथ ही, अनुच्छेद 25 से 28 धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करते हैं। फिर भी 1976 ई. में इन आदर्शों पर बल देना आवश्यक हो गया। कांग्रेस के संवैधानिक परिवर्तन समिति के अध्यक्ष स्वर्णसिंह ने कहा कि समाजवादी शब्द राष्ट्र द्वारा "एक नए सामाजिक-आर्थिक प्रस्ताव" की प्राप्ति के संकल्प को स्पष्ट करता है।

संविधान सभा में लोकतंत्र के आदर्शों पर वादविवाद में जवाहरलाल नेहरू और डा. बी.आर. अंबेडकर जैसे महत्वपूर्ण नेताओं ने भाग लिया। लोकतंत्र के राजनीतिक और आर्थिक दोनों पक्षों के महत्व पर बल दिया गया। नागरिकों के लिए मत देने का अधिकार आवश्यक है, लेकिन पर्याप्त नहीं। इस अधिकार पर आर्थिक लोकतंत्र के साथ विचार होना चाहिए। डा. बी.आर. अंबेडकर ने सामाजिक लोकतंत्र की व्याख्या इस प्रकार की, "ऐसी जीवन पद्धति जो स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व को जीवन के सिद्धांत के रूप में स्वीकार करती हो।" इस प्रकार संविधान सभा ने लोकतंत्र के आदर्शों को व्यापक दृष्टि से देखा। वयस्क मताधिकार ने लोकतंत्र को मूल आधार प्रदान किया। संविधान में स्वतंत्र और न्यायोचित चुनाव कराने के लिए निर्वाचन आयोग जैसे स्वतंत्र और निष्पक्ष संस्था की व्यवस्था की गई। विधायिकाओं के सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा किया जाता है, और केंद्र और राज्यों की सरकारें इन प्रतिनिधि सभाओं के प्रति उत्तरदायी होते हैं। राज्याध्यक्ष का पद भी निर्वाचन व्यवस्था पर ही आधारित है। इस तरह सांविधानिक प्रावधानों द्वारा लोकतंत्रीय गणतंत्र के आदर्शों की पूर्ति होती है।

न्याय, स्वतंत्रता, समानता, और बंधुत्व — ये आदर्श भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के लक्ष्य निर्धारित करते हैं। संविधान सभा में इन विषयों पर विस्तार से वादविवाद हुआ। न्याय के विभिन्न पक्षों पर विचार हुआ-सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक। कल्याणकारी राज्य के आदर्शों की प्राप्ति और वर्ण, समुदाय, जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव का अंत आदि आदर्शों पर विशेष बल दिया गया। राजनीतिक न्याय का प्रतिपादन स्वतंत्रता के विभिन्न पक्षों के आधार पर किया

गया। समानता की परिभाषा डा. अंबेडकर द्वारा इस प्रकार दी गई, "सभी भारतीयों में सामूहिक बन्धुत्व की भावना।" डा. अंबेडकर ने बंधुत्व शब्द को प्रस्तावना में सम्मिलित करने का प्रस्ताव किया। उन्होंने कहा कि, "बंधुत्व के बगैर, समानता और स्वतंत्रता अर्थहीन हैं।" स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व, इन तीनों आदर्शों का एकीकृत "इस त्रिमूर्ति का सम्मिश्रण होगा, जिसमें एक का दूसरे से अलग होने का अर्थ है लोकतंत्र के लक्ष्य की पराजय।" यह आदर्श संविधान के तीसरे और चौथे भाग में निहित हैं, जहाँ मूल अधिकार और राज्य के निर्देशक सिद्धांतों का प्रावधान है। अनुसूचित जातियों और जनजातियों और अन्य कमज़ोर वर्गों के हितों की रक्षा के लिए विशेष प्रावधान हैं। राज्य के निर्देशक सिद्धांत सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना के प्रश्नों पर ध्यान देते है। विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास और आराधना की स्वतंत्रता की गांरटी मूल अधिकारों द्वारा दी गई है। पद और अवसर की समानता का भी प्रावधान है। अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभावों और असमानता की द्योतक पदवियों का अंत बंधुत्व के आदर्शों की ओर इशारा करता है।

प्रस्तावना में व्यक्ति की प्रतिष्ठा और राष्ट्र की एकता और अखंडता की चर्चा एक साथ की गई है। इससे यह पता चलता है कि व्यक्ति को भारतीय लोकतंत्र की मूल इकाई के रूप में कितना महत्व दिया गया है। मूल अधिकार के अनुच्छेद 19 में विभिन्न प्रकार की स्वतंत्रताओं की गारंटी दी गई है। लेकिन साथ ही इस अनुच्छेद की धारा (2) और (6) में इन स्वतंत्रताओं पर कुछ "तर्क संगत" नियंत्रणों की व्यवस्था है। ये नियंत्रण देश की संप्रभुता, अखंडता और व्यवस्था के बारे में हैं। सरकार द्वारा आरोपित "नियंत्रण" "तर्कसंगत" है या नहीं, इसका निर्णय न्यायालय द्वारा किया जाएगा। 42वें संशोधन द्वारा प्रस्तावना में राष्ट्र की "अखंडता" शब्द जोड़ा गया। भारतीय लोकतंत्र समय-समय पर असहमति (dissension) की समस्याओं का सामना करना पड़ा है और इसीलिए देश की अखंडता पर ज़ोर देना आवश्यक हो गया।

प्रस्तावना के अंत में संविधान को अंगीकार करने की निश्चित तिथि दी गई। यहाँ एक बार फिर जनता की संप्रभुता के सिद्धांत पर बल दिया गया है, जिसने संविधान अंगीकृत किया। जनता की ओर से यह घोषणा की गई है कि वह "संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।" इससे वैधता के सिद्धांत को एक ठोस आधार मिला है। इस तरह यह स्वनिर्मित और स्वआरोपित संविधान है।

यह तर्क अक्सर सुनने में आता है कि प्रस्तावना संविधान का हिस्सा नहीं है। यह कुछ सिध्दांतों का अनुसरण करने का संकल्प का सामान्य वक्तव्य मात्र है। संविधान सभा में महावीर त्यागी ने यह विचार व्यक्त किया था। इस विचार की पुनरुक्ति भारत के उच्चतम न्यायालय ने 1960 ई. में बेरूबारी केस के प्रसंग में की। न्यायालय का निर्णय 1973 ई. के केशवानंद भारती केस में भिन्न था। इसमें यह कहा गया कि प्रस्तावना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें संविधान के "मूल ढांचे" की रूपरेखा दी गई है। संविधान का संशोधन उन प्रावधानों को परिवर्तित नहीं कर सकता जिसे "मूल ढांचा" कहा जा सके।

> क्या प्रस्तावना भारतीय संविधान का हिस्सा है? इस पर कक्षा में विचार विमर्श कीजिए।

अभ्यास

1. भारतीय संविधान की प्रस्तावना में दिए गए मार्गदर्शक सिद्धांत कौन से है? संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए:
   (अ) संविधान में प्रस्तावना की आवश्यकता
   (ब) 1947 का लक्ष्य प्रस्ताव

अध्याय 13

भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएं

भारतीय संविधान का स्वरूप कई तत्वों द्वारा निर्धारित हुआ है। इनमें कुछ महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं-भारतीय समाज का स्वरूप, स्वतंत्रता आंदोलन का लक्ष्य और आदर्श, संविधान सभा का स्वरूप, और संविधान निर्माण के समय की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति। भारतीय समाज में विभिन्न धर्मों और समूहों के लोग शामिल हैं और बहुत से वर्ण और जन-जाति समूह हैं। आर्थिक असमानता भी है। इन्हीं तत्वों को ध्यान में रख कर संविधान में धर्म निरपेक्षता, समाजवाद, समानता, और समाज के कमज़ोर वर्गों के संरक्षण, जैसे सिद्धांतों पर बल दिया गया है। भारतीय उप महाद्वीप में ब्रिटेन द्वारा शासित विभिन्न प्रकार के प्रांत थे, और साथ ही देशी रियासतें भी थीं। संविधान निर्माताओं का ध्यान सबसे पहले देश के एकीकरण की ओर गया।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इन विभिन्नताओं में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया गया। कुछ आदर्शों का विकास हुआ, जिनका मुख्य लक्ष्य था सामाजिक-आर्थिक सुधार। ऐसे कई आदर्श मूल अधिकार और राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत में सम्मिलित किए गए। कुछ संविधानिक सुधार और संस्थाएं विशेषतः 1919 ई. के बाद राजनीतिक परंपरा का ऐसा हिस्सा बन चुकी थी कि उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। संविधानावाद ऐसा ही एक सिद्धांत था। संसदीय व्यवस्था और संघीय ढांचा इन प्रभावों के अन्य उदाहरण हैं।

स्वतंत्र भारत के संविधान के निर्माण का कार्य जिस संविधान सभा के जिम्मे था, उसका गठन कुछ विशेष परिस्थितियों में हुआ था, और उसके सदस्य विभिन्न वर्गों के लोग थे। उसमें कुछ समुदायों और समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि थे, जैसे "सामान्य वर्ग," मुस्लिम, और पूर्वी पंजाब के सिक्ख। कांग्रेस पार्टी का ज़बर्दस्त बहुमत तो था, लेकिन दूसरे दलों के प्रतिनिधि भी थे जैसे मुस्लिम लीग, युनियनिस्ट, युनियनिस्ट मुस्लिम, युनियनिस्ट अनुसूचित जाति, कृषक प्रजा, अनुसूचित जाति फेडरेशन, सिक्ख गैर कांग्रेसी, साम्यवादी, और कुछ निर्दलीय। फिर प्रांतों और देशी रियासतों का भी प्रतिनिधित्व था। इस विविधता में संविधान सभा को सामंजस्य स्थापित करना था। प्रतिनिधियों के अपने-अपने हितों के साथ ही आदर्श भावना के प्रति सजग होने से ही यह संभव हो सका। कुछ प्रतिष्ठित नेताओं की उपस्थिति से आदर्शों पर सभा का ध्यान बना रहा। स्वतंत्रता आंदोलन के बड़े नेता, सर्वमान्य कानूनी और संविधान के विशेषज्ञ, आदर्शों के प्रति वचनबद्ध लोग, और उत्कृष्ट प्रशासनिक अनुभव वाले, इसके सदस्य थे। संविधान सभा की प्रारूप समित के 17 सदस्यों में से कुछ नाम यह हैं-डा. बी.आर. अंबेडकर, के.एम. मुंशी, अलादि कृष्ण स्वामी अय्यर, ए. गोपाल स्वामी आयंगर, टी.टी. कृष्णमाचारी, बल्लभ भाई पटेल, जे.बी. कृपलानी, जवाहर लाल नेहरू, और वी. पट्टाभि सीतारम्मय्या। इस विशिष्ट मंडल के सदस्यों के ज्ञान, विशेषता और अनुभव से संविधान समृद्ध हुआ। संविधान के प्रावधानों में उस समय के अन्य देशों के संविधानों का प्रचुर ज्ञान परिलक्षित होता है।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय ही सांप्रदायिकता एक विराट समस्या बन गई थी। सांविधानिक सुधार के हर मोड़ पर यह एक मुख्य समस्या के रूप में उभर आती। देश का विभाजन

और उसके साथ हुई सांप्रदायिक हिंसा, राजनीतिक प्रक्रिया पर एक स्थाई धब्बा बन गई। इससे संविधान निर्माताओं को विश्वास हो गया कि विभिन्नताओं को संभालना भारतीय राजनीतिक व्यवस्था के लिए आसान नहीं होगा। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि संघीय व्यवस्था का, जिसमें विभिन्नताएँ परिलक्षित होती है, एक शक्तिशाली केंद्र की ओर झुकाव है। इन विभिन्न प्रभावों के कारण संविधान की कुछ विशेषताएं देखने में आती हैं।

संविधान की मुख्य विशेषताओं की चर्चा में कुछ समस्याएं सामने आती हैं। संविधान में इनकी घोषणा नहीं की गई है। इनकी व्युत्पत्ति का आधार संविधान के प्रावधान और संस्थागत ढांचा है। इनमें कौन से ऐसे हैं जिन्हें मूल मुख्य विशेषताएं माना जाए? इस प्रश्न पर मतभेद हो सकते हैं। लेकिन, कुछ विशेषताओं के बारे में आम सहमति है कि उन्हें मुख्य विशेषताएं कहा जा सकता है।

अनेक स्रोत

संविधान निर्माताओं में एक सर्वोत्तम दस्तावेज तैयार करने की प्रेरणा इतनी प्रबल थी कि उन्होंने विभिन्न देशों के संविधानों के प्रावधानों और संस्थाओं को पूर्णतया ध्यान में रखा। संविधान सभा में डा. बी. आर. अंबेडकर और बी. एस. राव जैसे संविधान विशेषज्ञों की उपस्थिति इसके लिए सर्वथा अनुकूल थी।

गवर्नमेंट आफ इण्डिया एक्ट 1935 ई. ही भारतीय संविधान का सबसे बड़ा स्रोत था, क्योंकि करीब दो तिहाई प्रावधान दोनों में समान है। हमने पहले देखा है कि ऐसे बहुत से प्रावधानों का विकास पहले के अधिनियमों के क्रम में हुआ। संविधान ने ग्रेट ब्रिटेन से जिन संस्थाओं को उध्दृत किया वे थे, संसदीय सरकार व्यवस्था, विधि निर्माण की प्रक्रिया, विधायिका के अध्यक्ष का पद और एकल नागरिकता। संघीय व्यवस्था अमरीकी संस्थाओं से ग्रहण किया गया सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण है। अन्य कुछ प्रावधान भी अमेरिका से लिए गए हैं, जैसे संविधान की सर्वोच्चता, स्वतंत्र न्यायपालिका, न्यायिक पुनरीवलोकन (Judicial Review), निर्वाचित राज्याध्यक्ष, राष्ट्रपति पर महाभियोग की प्रक्रिया, संविधानिक संशोधन की प्रक्रिया में राज्यों को विधायिकाओं द्वारा अनुमोदन। संविधान के तीसरे भाग में वर्णित मूल अधिकार अमेरीका के संविधान के बिल ऑफ राइट्स के समान हैं। चौथे भाग के राज्य निर्देशक सिद्धांतों के लिए संविधान सभा ने आयरलैंड के संविधान पर निर्भर किया। आयरलैंड के संविधान की झलक हमें दूसरे प्रावधानें में भी मिलती है, जैसे राष्ट्रपति के चुनाव की प्रक्रिया, और साहित्य, कला, विज्ञान, समाज सेवा आदि में योगदान के लिए राज्य सभा में सदस्यों का मनोनयन। भारतीय संघ की "राज्यों के एक संघ" के रूप में परिभाषा, और केंद्र में निहित अवशिष्ट शक्तियां कनाडा के संविधान के समान हैं। संविधान के अनुच्छेद 245-255 के अंतर्गत सातवीं अनुसूची की समवर्ती सूची का प्रेरणा स्रोत आस्ट्रेलिया की संघीय व्यवस्था है। अनुच्छेद 21 में वर्णित "विधि द्वारा निर्धारित प्रक्रिया" जापान के संविधान के प्रावधान के समान है।

अन्य देशों के संविधानों से इन समानताओं के कारण संविधान सभा के विचार के समय और उसके बाद भारतीय संविधान की आलोचना की गई। संविधान को "उधार लिया हुआ", "जोड़-जाड़ का काम" और "कट-जोड़ का काम", "पश्चिम की दासवत् नकल" और लोगों की प्रतिभा के उपयुक्त नहीं– इन संज्ञाओं द्वारा आलोचना की गई। इन आलोचनाओं के बावजूद, यह देखने में आता है कि संविधान निर्माताओं ने जब भी किसी अन्य देश के प्रावधान को अपनाया, तो उसमें आवश्यक संशोधन अवश्य किया। विभिन्न प्रावधानों के समिश्रण ने भारतीय संविधान को एक अनन्य स्वरूप प्रदान किया। ये संस्थाएं संविधान सभा में विकसित आदर्शों और बचनबद्धताओं के सर्वथा अनुकूल हैं।

एक बृहद् दस्तावेज

भारतीय संविधान के 22 भागों, 395 अनुच्छेदों और 8 अनुसूचियों के पारित करने में संविधान सभा को करीब तीन वर्ष लगे। संविधान कई कारणों से लंबा हो गया। संविधान सभा के सदस्यों का सामाजिक परिवर्तन का एक भविष्य का स्वप्न था, जिसे वे संपूर्ण रूप से कानूनी दस्तावेज में परिलक्षित करना चाहते थे। राज्य के निर्देशक सिद्धांत ऐसे ही एक दर्शन का उदाहरण हैं। दूसरे देशों के विचार और संस्थाएं जो आकर्षक लगीं, उनका भी समावेष करना था। दो ऐसी संस्थाओं का ढांचा जिनका समन्वय करना पड़ा, वे थे ब्रिटेन और अमेरिका की राजनीतिक व्यवस्थाएं। संसदीय सरकार का अध्यक्षीय व्यवस्था के साथ समन्वय करना पड़ा। फिर संघीय व्यवस्था और एकात्मक सिद्धांत का समन्वय भी आवश्यक था। इकाइयों

की विभिन्नता से राजनीतिक क्षेत्रीय-विभिन्नता को बल मिला। संविधान निर्माताओं ने कोई भी ऐसी कमी नहीं छोड़नी चाही जो बाद में समस्या बन जाए। इन जटिल परिस्थितियों को सुलझाने की दृष्टि से उन्होंने एक विस्तृत दस्तावेज बनाना अच्छा समझा। संविधान के वृहद आकार के कारण ही प्रसिद्ध संविधान विशेषज्ञ, सर आइवर जेनिंग्स, ने भारतीय संविधान को एक कठोर संविधान बताया है। लेकिन इसमें अभी तक 60 से अधिक संशोधन हो चुके हैं जिससे यह पता चलता है कि भारतीय संविधान अमेरिका, आस्ट्रेलिया और स्विट्जरलैंड के संविधानों की तरह कठोर नहीं। साथ ही यह ब्रिटेन की व्यवस्था की तरह लचीला भी नहीं। भारतीय संविधान में कठोर और लचीले दोनों विशेषताओं का समिश्रण है।

संविधान में संशोधन की प्रक्रिया

संविधान एक जीवंत दस्तावेज है, और उसे समाज की बदलती हुई सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल चलना पड़ता है। संशोधन की प्रक्रिया से इस अनुकलन में सहायता मिलती है। एक लिखित विस्तृत संविधान, संघीय व्यवस्था और मूल अधिकारों का प्रावधान-ये भारतीय संविधान को एक कठोर संविधान के लक्षण प्रदान करते हैं। संविधान सभा में इसके कट्टर समर्थक भी थे। कुछ अन्य सदस्यों ने संविधान के लचीलापन के पक्ष में अपना मत रखा। उनके विचार में परिवर्तनशील भारतीय समाज में सामाजिक-आर्थिक प्रगति के लिए बड़े पैमाने पर कार्यक्रमों की आवश्यकता थी। इसलिए संविधान को उनके सतत् अनुकूल होने के लिए लचीला होना चाहिए। संविधान ने मध्यमार्ग अपनाया और संशोधन की दृष्टि से संविधान के अनुच्छेदों को तीन हिस्सों में बांटा और उनके लिए अलग-अलग संशोधन प्रक्रिया का प्रावधान किया।

संविधान के लगभग 36 अनुच्छेद ऐसे हैं जिनका संशोधन संसद में उपस्थिति और मत देने वाले सदस्यों के सामान्य बहुमत से पारित होता है और उसके बाद राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए भेज दिया जाता है। जिन प्रावधानों का संशोधन इस प्रकार होता है वे हैं-राज्यों के नाम और उनकी सीमाओं में फेर बदल, राज्यों में विधान परिषद का निर्माण या समापन, संसदीय विशेषाधिकार का संहिताकरण, संसद में कोरम का निर्धारण, राष्ट्रपति, राज्यपाल, उच्च और उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों के वेतन और भत्ते का निर्धारण। संशोधन की यह प्रक्रिया बहुत ही आसान है।

दूसरे वर्ग के सांविधानिक अनुच्छेदों में संशोधन के लिए विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है। यह संशोधन संसद के प्रत्येक सदन के कुल सदस्यों के बहुमत से पारित होता है। यह बहुमत सदन के उपस्थित और मत देने वाले सदस्यों के दो-तिहाई बहुमत से कम नहीं होना चाहिए। दूसरे विधेयकों के समान इसे भी राष्ट्रपति के अनुमोदन के लिए भेजा जाता है। संविधान के अधिकतर अनुच्छेदों पर यह प्रक्रिया लागू होती है।

संशोधन की तीसरी विधि को पारित करना अधिक कठिन है। इसके लिए ऊपर दिए गए विशेष बहुमत के अतिरिक्त आधे से अधिक राज्यों की विधायिकाओं द्वारा अनुमोदन आवश्यक है। इसके बाद ही राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए भेजा जा सकता है। जो प्रावधान इस प्रक्रिया से संशोधित हो सकते हैं वे हैं: भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन की प्रक्रिया, केंद्र और राज्यों के कार्यकारी अधिकार, अनुसूचित जाति और जनजाति संबंधी सांविधानिक प्रावधान, सातवीं अनुसूची में संघ सूची और राज्य सूची में परिवर्तन, संसद में राज्यों का प्रतिनिधित्व, अनुच्छेद 368 जिसमें संशोधन प्रक्रिया का प्रावधान है।

संविधान के लागू होने के चालीस वर्षों में 59 संशोधन पारित हुए हैं। इन वर्षों में संशोधन लाने की गति में तीव्रता आई है। 1950-1960 ई. के पहले दशक में सिर्फ 9 संशोधन ही हुए, लेकिन 1960-1970 ई. में इनकी संख्या 15 हो गई। देश में राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के साथ ही, अधिक संशोधनों की आवश्यकता हुई। ये संशोधन भारतीय समाज के महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक विषयों के संबंध में हैं, जैसे संपत्ति का अधिकार, विशेषतः उद्योगों से संबंधित, भूमि सुधार, पिछड़े वर्गों के लिए गारंटी और केंद्र-राज्य संबंध। न्यायपालिका द्वारा सांविधानिक प्रावधानों की व्याख्या के कारण भी कुछ संशोधन आवश्यक हो गए।

> उनसठवें संविधान संशोधन के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए। यह संशोधन विवादास्पद विषय बन गया है। इसके बारे में अपने अध्यापक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

न्यायिक व्याख्या के अनुसार संसद को संविधान में संशोधन करने का असीमित अधिकार नहीं है। उच्चतम न्यायालय ने 1973 ई., में केशवानंद भारती केस के निर्णय में कहा कि संसदीय संशोधन द्वारा संविधान के ''मूल ढांचा'' में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। 1976 ई. के बयालिसवें संशोधन में कहा गया कि संविधान में संशोधन लाने का संसद का अधिकार सीमित नहीं है। संविधान का कोई भी अनुच्छेद ऐसा नहीं है जिसमें संशोधन न किया जा सके। यह भी कहा गया कि संसद के किसी भी संशोधन को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। सर्वोच्च न्यायालय ने 1980 ई. में मिनर्वा मिल केस के निर्णय में स्थिति को उलट दिया और एक बार फिर ''मूल ढांचा'' के तर्क का प्रतिपादन किया।

संघीय व्यवस्था

भारतीय संविधान में एक संघीय व्यवस्था के सभी लक्षण हैं- लिखित सविधान, संघ और राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन, और स्वतंत्र न्यायपालिका। संघ और राज्यों के बीच विधायी और प्रशासनिक शक्तियों के विभाजन का प्रावधान विस्तार से किया गया है।" संविधान के संरक्षण के लिए न्यायपालिका के अधिकार स्पष्ट रूप से दिये गये हैं। लेकिन संविधान निर्माताओं ने भारत के लिए कहीं भी संघात्मक (Federation) शब्द का प्रयोग नहीं किया। भारत को, अनुच्छेद 1 में, राज्यों का संघ (Union of States) कहा गया है। राज्यों का संघ पर जो बल दिया गया है, वह दूसरे प्रावधानों से भी परिलक्षित होता है-केंद्र की पहल पर नए राज्यों का निर्माण और उनकी सीमाओं में फेर-बदल, केंद्र और राज्यों के लिए एक ही संविधान, राज्य के कार्यकारी के मुख्य राज्यपाल की केंद्र के द्वारा नियुक्ति, और भारत के राष्ट्रपति के आपत्कालीन अधिकार। कुछ विद्वानों का मत है कि भारतीय संविधान में संघीय व्यवस्था से अधिक एकात्मक व्यवस्था के लक्षण पाए जाते हैं। प्रसिद्ध विद्वान, के.सी. व्हीयर का मत है कि भारतीय संविधान अर्धसंघीय है। संविधान निर्माता एक सशक्त केंद्र की आवश्यकता के लिए जिन बातों से प्रभावित हुए वे थे, भारतीय समाज की विविधता, विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति और देश के विभाजन के समय दंगों के कारण कानून और व्यवस्था की समस्या।

संसदीय सरकार

1919 ई. और 1935 ई. के अधिनियमों के बाद ही सरकार का मूल स्वरूप ब्रिटेन की तरह की संसदीय व्यवस्था के रूप में उभर आया। इस व्यवस्था में वास्तविक सत्ता प्रधान मंत्री के हाथ में होती है और वही सरकार का मुखिया होता है। प्रधान मंत्री और मंत्रिपरिषद् के सदस्य संसद में बहुमत दल के सदस्य होते हैं। कार्यकारी अधिकार मंत्री परिषद् और प्रधानमंत्री के पास होते हैं। राष्ट्रपति मात्र सांविधानिक राज्याध्यक्ष है। राज्यों में भी मंत्री परिषद् और मुख्यमंत्री के साथ सत्ता की ऐसी ही व्यवस्था है।

मूल अधिकार और कर्त्तव्य

हमने ऊपर देखा है कि भारतीय संविधान की प्रस्तावना में ''व्यक्ति की प्रतिष्ठा'' पर बल दिया गया है। संविधान के भाग III में नागरिकों के अधिकार दिए गए हैं। ये अधिकार हैं, समानता के अधिकार, स्वतंत्रता के अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार और सांविधानिक उपचारों का अधिकार। 1976 ई. के बयालिसवें संशोधन द्वारा संपत्ति के अधिकार में परिवर्तन लाया गया। यह अब मूल अधिकार नहीं, एक 'कानूनी अधिकार' है। धारा 300-ए के अनुसार किसी भी व्यक्ति को, कानून के अधिकार के अलावा, संपत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा।

मूल अधिकारों को सांविधानिक गारंटी प्राप्त है और अगर उनका उल्लंघन होता है तो नागरिक उच्चतम न्यायालय में अपील कर सकते हैं। संविधान का संरक्षण न्यायालय की जिम्मेदारी है। इन अधिकारों को सिर्फ संवैधानिक संशोधन से ही वापस लिया जा सकता है। लेकिन ये अधिकार असीमित नहीं हैं। सार्वजनिक व्यवस्था और नैतिकता की दृष्टि से इसकी कुछ सीमाएँ निर्धारित की गई हैं।

1976 ई. के बयालिसवें संशोधन ने संविधान में भाग IV-अ संलग्न किया; जिसमें नागरिकों के 10 कर्त्तव्यों की सूची दी गई है। ये कर्तव्य हैं, संविधान का सम्मान और पालन; उन आदर्शों का पालन जिनसे स्वतंत्रता आंदोलन में लोगों को प्रेरणा मिली; भारत की संप्रभुता और एकता का संरक्षण; देश की सुरक्षा के लिए प्रस्तुत रहना; समुदायों में मैत्री और बन्धुत्व बनाए रखना, देश की सामाजिक संस्कृति की रक्षा; प्राकृतिक परिवेश की सुरक्षा; वैज्ञानिक मिजाज (Scientific Temper)

और मानविकी का विकास; सामाजिक संपत्ति की सुरक्षा और हिंसा का त्याग; और सभी व्यक्तिगत और सामूहिक कार्य में श्रेष्ठता प्राप्त करना। अधिकारों की तरह, इन कर्तव्यों के लिए न्यायालय के अनुसमर्थन (sanction) की गारंटी नहीं है। ये नागरिकों के पथ निर्देशक आदर्श हैं और इनके द्वारा यह याद दिलाया गया है कि नागरिकों से क्या मूल अपेक्षाएं हैं।

राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत

संविधान के भाग IV में नागरिकों के लिए कुछ गारंटी दी गई है। लेकिन ये 'न्याय योग्य' (Justiciable) नहीं है। इन सिद्धांतो को लागू करने के लिए नागरिक न्यायालय की सहायता नहीं ले सकते। सर्वप्रथम ये सिद्धांत तेज बहादुर सप्रू कमेटी के 1944-45 के संवैधानिक प्रस्तावों में प्रतिपादित किए गए। संवैधानिक सलाहकार बी.एन.राव, ने ऐसे अधिकार जो न्याय योग्य है और वे जो न्याय योग्य नहीं हैं, ऐसे अधिकारों के बीच भेद करते हुए कहा, "कुछ अधिकार ऐसे होते है जिनके लिए राज्य के प्रत्यक्ष कार्यवाही की आवश्यकता होती है, और जिनकी गारंटी उसी हद तक दी जा सकती है जो व्यावहारिक हो। दूसरे अधिकार सिर्फ इसलिए हैं कि राज्य कोई ऐसा काम न करे जो इनके सर्वथा विरुद्ध हो।" संविधान सभा द्वारा नियुक्त 'मूल अधिकार की उपसमिति' ने अधिकारों की सूची तैयार की, जिसमें नीति निर्देशक सिद्धांत भी शामिल थे, जो न्याय योग्य नहीं हैं।

नीति निर्देशक सिद्धांत कल्याणकारी राज्य के आदर्शों की उपलब्धि के लिए विधायिका और कार्यपालिका का नीति निर्माण में पथ प्रदर्शन करते हैं। इनमें आर्थिक और सामाजिक न्याय तथा विश्व-शांति के सिद्धांत शामिल हैं। इन्हीं विस्तृत सिद्धांतों के अनुसार नीति निर्देश दिए गए हैं। संविधान के इसी भाग में ग्राम पंचायतों का निर्माण और प्रोत्साहन, प्रबंध में मज़दूरों की सहभागिता, और परिवेश और वन्य जीवन का संरक्षण, जैसे सिद्धांत भी दिए गए है।

मूल अधिकारों और नीति निर्देशक सिद्धांतों के बीच प्राथमिकता के विषय पर कुछ वाद-विवाद रहा है। इनमें कौन अधिक महत्वपूर्ण है? अगर इन दोनों प्रावधानों में विरोध हो, तो किसे प्राथमिकता दी जाएगी? पहला राजनीतिक अधिकारों पर बल देता है, और दूसरे में सामाजिक और आर्थिक लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।

इन दोनों में इस दृष्टि से भी अंतर है कि एक न्याययोग्य है, और दूसरा न्याययोग्य नहीं है। लेकिन नीति निर्देशक तत्व का नैतिक आधार है और वे राष्ट्रीय विवेक के प्रतीक हैं, जिन्हें भारतीय राज्य को सदैव ध्यान में रखना पड़ेगा। संविधान के अनुसार नीति निर्देशक सिद्धांत "देश के शासन के लिए मूलभूत सिद्धांत हैं, जिन्हें राज्य को कोई भी कानून बनाते समय ध्यान में रखना आवश्यक होगा।" 1951 ई. के चंपकम दोराइराजन केस के समय से ही उच्चतम न्यायालय के समक्ष यह प्रश्न रहा है कि मूल अधिकार और नीति निर्देश सिद्धांतों में किस का अधिक महत्व है। उच्चतम न्यायालय ने इस प्रश्न की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की है। पहली व्याख्या यह थी कि मूल अधिकार अधिक महत्वपूर्ण हैं, लेकिन नीतिनिर्देशक सिद्धांतों की जिम्मेदारी निभाने के लिए मूल अधिकारों में संशोधन किया जा सकते है। 1967 ई. के गोलकनाथ केस से एक मोड़ आया जब उच्चतम न्यायालय ने यह फैसला दिया कि मूल अधिकारों में संशोधन नहीं किए जा सकते। 1972 ई. के चौबीसवें और पचीसवें शोधन ने इस व्याख्या की पुष्टि की कि मूल अधिकारों में संशोधन संभव हैं। 1976 ई. के बयालिसवें संशोधन में नीति-निर्देशक सिद्धांतों को कुछ मूल अधिकारों से अधिक महत्वपूर्ण माना गया। 1980 ई. के मिनर्वा मिल्स केस में सर्वोच्च न्यायालय ने एक बार फिर मूल अधिकारों के महत्व को स्थापित कर दिया।

विभिन्न व्याख्याओं और वाद विवादों से मूल अधिकार और नीति निर्देशक सिद्धांतों के महत्व का ही पता चलता है। इन दोनों भागों के कार्यान्वयन में जो समस्या सामने आई, उनके बारे में संविधान निर्माता पूर्ण अभिज्ञ थे। न्यायमूर्ति जे. चन्द्रचूड़ के शब्दों में, 'ये दोनों (सिद्धांत) अलग-अलग नहीं एक साथ मिलकर संविधान के सार रूप में है, अलग-अलग नहीं, साथ-साथ मिलकर ही ये सच्चे विवेक के प्रतीक है।'

आपतकालीन प्रावधान

संविधान के भाग XVIII के नौ अनुच्छेद राष्ट्रपति को आपतकालीन अधिकार प्रदान करते हैं। तीन स्थितियों में राष्ट्रपति आपतकालीन स्थिति की घोषणा कर सकता है — युद्ध, बाह्य आक्रमण अथवा सशस्त्र विद्रोह, राज्यों में संविधान की विफलता, और आर्थिक संकट। उनसठवें संशोधन के द्वारा 'आंतरिक अशांति' को भी आपातकालीन स्थिति की घोषणा

का आधार माना गया था।

तीन प्रकार की आपतकालीन स्थितियों का राज्यों के अधिकार और मूल अधिकारों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। राज्य स्तर की संस्थाओं के विधायी और अन्य अधिकारों से संबंधित बहुत से प्रावधान निलंबित हो जाते हैं। कुछ मूल अधिकार, विशेषतः स्वतंत्रता के अधिकार आपतकालीन स्थिति की अवधि के लिए निलंबित कर दिए जाते हैं। इस तरह आपतकालीन समय में भारतीय सरकार का केंद्रीकरण हो जाता है।

न्यायपालिका की स्वतंत्रता और न्यायिक पुनरावलोकन

हमने अध्याय 8 में पढ़ा है कि स्वतंत्र न्यायपालिका संघीय व्यवस्था का एक मुख्य लक्षण है। इस व्यवस्था में न्यायपालिका का एक महत्वपूर्ण काम यह है कि वह संविधान के संरक्षक के रूप में काम करे और विवाद की स्थिति में प्रमाणिक व्याख्या दे। इस तरह, विधायिका का कानून बनाने के अधिकार का न्यायपालिका संविधान की दृष्टि से पुनरावलोकन कर सकती है। न्यायपालिका की दृष्टि में अगर विधायिका द्वारा पारित कोई कानून संविधान के प्रावधानों के विरुद्ध है तो वह उसे निरस्त कर सकती है। इसको न्यायिक पुनरावलोकन का अधिकार कहते हैं। उच्चतम न्यायालय को यह अधिकार जिन स्थितियों में प्राप्त हैं वे हैं, (अ) केन्द्र और राज्यों के बीच संघर्ष, (ब) विधायिका द्वारा पारित ऐसे कानून जो संविधान के अनुकूल नहीं हैं, (स) मूल अधिकारों का संरक्षण, और (द) के उन प्रावधानों की व्याख्या और स्पष्टीकरण जिनके बारे में संशय और मतभेद हो। ऐसे सभी प्रकार के केस भारत के उच्चतम न्यायालय के समक्ष आ चुके हैं।

भारतीय न्यायपालिका के अधिकार अमेरिका की न्यायपालिका के 'कानून की यथोचित प्रक्रिया' (Due Process of Law) के सिद्धांत की तुलना में सीमित हैं। इस सिद्धांत के अनुसार न्यायालय प्राकृतिक विधि (Natural Law)जैसे *व्यापक सिद्धातों के आधार* पर कानूनों की समीक्षा करता है। भारतीय संविधान 'कानून द्वारा स्थापित कार्य विधि,' (Procedure established by law) के सिद्धांत को मानता है, जिसमें विधायिका कानून के क्षेत्र को प्रतिस्थापित करती है। इससे कानून के स्वरूप को निश्चित करने का अधिकार विधायिका के पास होता है। इससे कानून के स्वरूप को निश्चित करने का अधिकार विधायिका के पास होता है।

जवाहरलाल नेहरू ने यह स्पष्ट मत व्यक्त किया कि "न्यायपालिका को विधायिका के तीसरे सदन के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।" पहले संशोधन द्वारा संविधान में तीसरी सूची को जोड़ा गया, जिसमें यह प्रावधान था कि जो भी कानून इस सूची में सम्मिलित होंगे उन्हें न्यायालय के सामने नहीं लाया जा सकता। राज्यों की नदियों के पानी के बँटवारे को भी न्यायालय के अधिकार क्षेत्र से बाहर रखा गया है। भारतीय संविधान में संस्थाओं के अधिकार और कार्य की चर्चा विस्तार से की गई है। इससे न्यायालय के अधिकार स्वत: कुछ सीमित हो जाते हैं। इसके अलावा, दूसरी संघीय व्यवस्थाओं की तुलना में, भारतीय संविधान में संशोधन अधिक आसानी से किया जा सकता है। विधायिका बदलती हुई स्थितियों को दृष्टि से अधिक आसानी से परिवर्तन ला सकती है। इस तरह भारतीय संविधान ने संघीय व्यवस्था और संसदीय सरकार की आवश्यकतों के बीच सामंजस्य स्थापित किया है, और विधायिका को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

संविधान की उन अन्य विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कीजिए जिनका वर्णन अन्य पुस्तकों में किया जाता है।

अभ्यास

1. भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. संविधान के किन्हीं दो स्रोतों का वर्णन कीजिए। भारतीय संविधान में जो प्रावधान इन स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं उनका संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

3. भारतीय संविधान में संशोधन किस प्रकार किया जाता है?
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए:
(क) न्यायिक पुनरावलोकन
(ख) राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों की न्याय-अयोग्यता

अध्याय 14

भारतीय संघ : सांविधानिक प्रावधान और कार्य

किसी भी देश के संविधान का निर्माण जिन परिस्थितियों में होता है, उनका संविधान पर स्पष्ट प्रभाव होता है। ऐतिहासिक विरासत, सामाजिक आर्थिक और भौगोलिक स्थिति, संविधान निर्माण संस्था का स्वरूप और समसामयिक परिस्थिति, इन सब का सामंजस्य उन आदर्शों के साथ करना पड़ता है जिनका समावेश संविधान निर्माता उस दस्तावेज में करना चाहते हैं। इन्हीं सब कारणों से संविधान निर्माण की प्रक्रिया जटिल हो जाती है। भारतीय संविधान में संघीय व्यवस्था का स्वरूप इसी प्रकार के दबावों से प्रभावित है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक इकाइयों की विभिन्नताओं के कारण ही भारत में संघीय व्यवस्था अपनाई गई। ब्रिटिश प्रांतों और देशी रियासतों को मिलाकर स्वतंत्र भारत का निर्माण हुआ। ये विभिन्न प्रकार की प्रशासनिक व्यवस्थाएं थीं और इनकी कानूनी व्यवस्था भी भिन्न थीं। फिर देशी रियासतों में भी आपस में विभिन्नताएं थीं। इनमें विभिन्न भाषाएं बोली जाती थीं और ये सांस्कृतिक दृष्टि से भी अलग थीं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का संगठन संघीय आधार पर किया गया। संविधान सभा का गठन भी विभिन्न इकाइयों और समुदायों के प्रतिनिधियों द्वारा ही हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं ने इन विभिन्नताओं को एकीकृत करने का प्रयास किया, लेकिन साथ ही वे विभिन्नताओं के प्रति भी सजग थे। समय-समय पर जो सांविधानिक सुधार लाए गए उनमें संघ का विचार परिलक्षित था। संविधान निर्माण से पहले ही, 1935 ई० के अधिनियम ने संघीय व्यवस्था की नींव रख दी थी। 1942 ई० का क्रिप्स मिशन, 1947 ई० से प्रतिपादित "लक्ष्य प्रस्ताव" इन सब में संघ के सिद्धांत को माना गया था। अंत: इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि भारतीय संविधान में संघीय व्यवस्था को अपनाया गया।

इसके साथ ही कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कारण थे जिससे एक सशक्त केंद्रीय सरकार की आवश्यकता अनुभव की गई। द्वितीय महायुद्ध के बाद जो भारतीय अर्थव्यवस्था ब्रिटेन ने पीछे छोड़ी, उसमें अनेक कमियाँ थी। अन्न की कमी अत्यंत चिंताजनक थी। सांप्रदायिक स्थिति पहले से ही समस्या थी, लेकिन जैसे-जैसे देश का विभाजन अनिवार्य होता गया, वैसे वैसे और भी तीव्र हो गई। विभाजन के समय जो सांप्रदायिक दंगे हुए उससे देश में कानून और व्यवस्था और देश की एकता की समस्या गंभीर हो गई। देशी रियासतों की स्थिति अनिश्चित बनी हुई थी। भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ने देशी रियासतों को यह छूट दे दी थी कि वे स्वयं ही इस बात का निर्णय लेंगी कि वे स्वतंत्र रहेंगी या फिर भारत या पाकिस्तान राज्य में सम्मिलित होंगी। आर्थिक पुनर्निर्माण की आवश्यकता, देशी रियासतों की अनिश्चित स्थिति, और सांप्रदायिक स्थिति जिसकी परिणति 1947 ई० के दंगों में हुई, ये सभी ऐसे कारण थे जिनके फलस्वरूप संविधान निर्माताओं ने भारत में संघीय व्यवस्था के बनाए रखते हुए सशक्त केंद्रीय सरकार को आवश्यक माना।

इस तरह संविधान सभा एक ओर संघीय व्यवस्था और दूसरी ओर सशक्त केंद्रीय सरकार को आवश्यक मानती थी। इन दो विचारों में सामंजस्य स्थापित करने में संविधान निर्माताओं का झुकाव केंद्र की ओर अधिक था। भारतीय संघ के स्वरूप के बारे में कई विचार व्यक्त किए गए। कुछ लोग इसका

वर्णन एक ऐसे संघ के रूप में करते हैं, जिसका केंद्र की ओर निश्चित झुकाव है। कुछ अन्य लोगों का मानना है कि इसका स्वरूप संघात्मक से ज्यादा एकात्मक है। प्रसिद्ध विद्वान के० सी० व्हीयर इसे एक अर्धसंघीय व्यवस्था मानते हैं।

भारतीय संघीय व्यवस्था के मूल्यांकन में अकसर अमरीका जैसे पुराने संघों को ध्यान में रखा जाता है। संघीय व्यवस्था के सिद्धांत को सब से पहले प्रतिपादित करने वाले विद्वान,जैसे ए० वी० डाइसी ने अमरीका के अनुभव पर ही निर्भर किया। वहाँ की संघीय व्यवस्था को अकसर दूसरे संघों के मूल्यांकन के लिए आदर्श मान लिया जाता है। लेकिन संघ के निर्माण की प्रक्रिया विभिन्न देशों में भिन्न होती है। जो व्यवस्था अमेरिका के लिए उपयुक्त है वह, हो सकता है, दूसरे देश के लिए अच्छी न हो। स्विट्जरलैंड, आस्ट्रेलिया, कनाडा और सोवियत संघ,इन देशों में अपने-अपने प्रकार की संघीय व्यवस्थाएं हैं। इसके अलावा तीसरी दुनिया के देशों की संघीय व्यवस्थाओं की अपनी विशेषताएं हैं। अध्याय 8 में इनकी चर्चा की जा चुकी है। इसलिए संघीय व्यवस्था के किसी भी "आदर्श स्वरुप" की बात करना बहुत तर्कसंगत नहीं है। सभी संविधानों की अपनी-अपनी विशेषता होती है। संविधान निर्माताओं ने जिस संघीय व्यवस्था को भारत के लिए सबसे उपयोगी समझा, उन्होंने उसका प्रावधान संविधान में किया।

भारतीय संघ का स्वरूप

भारतीय संविधान सरकार के दो स्तरों को स्वीकार करता है — केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार। समस्त भारत 25 राज्यों और 7 केंद्र शासित प्रदेशों में बांटा गया है। राज्यों के अपने अधिकार और कार्य संविधान से प्राप्त हैं और अपने क्षेत्र पर शासन के लिए राज्यों में सरकार स्थापित की जाती है। केंद्रीय सरकार का अधिकार क्षेत्र भारतीय भूभाग पर है। संविधान में विधायी, कार्यकारी, और वित्तीय अधिकारों का केंद्र और राज्य के बीच विभाजन विस्तार से दिया गया है। इस तरह अधिकार का विभाजन क्षेत्रीय और विषय मूलक दोनों है। संविधान इन अधिकारों का सर्वोच्च स्रोत है। संविधान के संरक्षण और उसकी व्याख्या का उत्तरदायित्व स्वतंत्र न्यायपालिका के ऊपर है। इस प्रकार भारतीय संविधान में एक संघीय सरकार के मूल लक्षण विद्यमान है।

विधायी अधिकार

संविधान के भाग XI के अध्याय 1 में विधायी अधिकारों का विभाजन किया गया है। सातवीं अनुसूची में विषयों की तीन सूचियाँ दी गई हैं — संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची। संघ सूची में 97, राज्य सूची में 66 और समवर्ती सूची में 47 विषय दिए गए हैं। सातवें (1956) और बयालिसवें (1976) संशोधनों द्वारा कुछ परिवर्तन किए गए जब तौल और परिमाण (Weights and measures), वन, जंगली जानवर और चिड़ियों का संरक्षण और शिक्षा, को राज्य सूची से हटा कर समवर्ती सूची में डाल दिया गया। विषयों के एक सूची से दूसरी सूची में परिवर्तन करने पर भी विषयों की संख्या और क्रम बद्धता कानूनी कारणों से वही की वही रहती है। संघ की सूची के विषयों पर केंद्रीय संसद कानून बना सकती है और राज्य सूची के विषयों पर कानून बनाने का अधिकार राज्य विधायिका को है। समवर्ती सूची के विषयों पर केन्द्र राज्य दोनों ही कानून बना सकते है। लेकिन दोनों द्वारा बनाए गए कानून में अगर किसी प्रकार का विरोध होगा तो केंद्र द्वारा बनाया कानून ही मान्य होगा। संघ सूची अधिक विस्तृत है, और उसमें राष्ट्रीय महत्व के विषय जैसे प्रतिरक्षा, पर-राष्ट्र विषय, मुद्रा, बैंक, तथा ऐसे विषय जिसमें एक से अधिक राज्यों का हित है, जैसे अंतर्राज्य वाणिज्य और व्यापार, अंतर्राज्यीय नदी और नदियों की घटियों का विकास और उनका नियमन, अंतर्राज्य स्थानांतरण, चुनाव, लेखा और लेखा परीक्षा इत्यादि कुछ विषय हैं। राज्य सूची में ऐसे विषय हैं जिनका क्षेत्रीय महत्व है। इनमें कुछ महत्त्वपूर्ण विषय हैं, — राज्य कर, निर्यात शुल्क, स्थानीय स्वायत्त शासन, स्वास्थ्य विभाग, कृषि,जंगलात, मत्स्य पालन उद्योग, पुलिस इत्यादि। केंद्रीय संसद इनमें से कुछ विषय अपने अधिकार में ले सकती है। समवर्ती सूची में सामान्य कानून और कानूनी कार्यविधि के विषय जैसे दण्ड विधि, दण्ड कार्यविधि, विवाह, तलाक, सम्पति कानून, संविदा और कुछ ऐसे विषय हैं जिनका संबंध समाज कल्याण से है जैसे मज़दूर संघ, सामाजिक सुरक्षा, व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण, कानूनी और चिकित्सा संबंधी शिक्षा। आर्थिक और सामाजिक योजना भी इसी सूची में है। ये विषय ऐसे हैं जिनमें किसी वक्त तो केंद्रीय संसद को कानून बनाने के लिए पहल करनी पड़ेगी और कभी राज्य विधायका को। दोनों स्तरों की विधायिका का समवर्ती सूची के

विषयों के बारे में कानून बनाने का अधिकार होने से ऐसी स्थिति हो सकती है जब दोनों द्वारा पारित कानून विरोधी हों। ऐसी स्थिति में संसद के कानून को प्राथमिकता दी जाएगी। यद्यपि सूचियों में विषयों का विस्तृत वर्णन है, फिर भी कुछ ऐसे विषय हो सकते हैं जिनकी चर्चा तीनों सूचियों में नहीं है। धारा 248 ने संसद को अवशिष्ट अधिकार दिए हैं और उसके अंतर्गत ऐसे विषयों पर केंद्र कानून बना सकता है।

प्रशासनिक अधिकार

केंद्र और राज्यों के प्रशासनिक अधिकार विधायी अधिकारों के विभाजन के समानांतर हैं। संघ सूची के विषयों से संबंधित कार्यकारी अधिकार केंद्रीय सरकार के क्षेत्र में हैं। राज्य के विषयों के कार्यकारी अधिकार राज्य सरकार के पास हैं। सामान्य स्थिति में समवर्ती सूची के विषयों से संबंधित कार्यकारी अधिकार राज्य सरकार के पास होते हैं। लेकिन संसद केंद्र सरकार को समवर्ती विषय पर कानून बनाने के लिए राज्य सरकार को आदेश देने का अधिकार दे सकती है।

संविधान के भाग XIV में केंद्र और राज्य के अंदर लोकसेवा का प्रावधान है जिसके अनुसार दो सरकारी ढांचों का प्रारूप दिया गया है। इसमें से एक का संगठन और नियंत्रण केंद्रीय सरकार द्वारा होता है, और दूसरे का राज्य सरकार द्वारा होता है। प्रशासन की यह दोहरी व्यवस्था भारतीय संविधान के संघीय व्यवस्था के अनुकूल ही है, जिसमें केंद्र और राज्यों के अधिकार क्षेत्र निश्चित किए गए हैं। अखिल भारतीय सेवा राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में समान रूप से काम करती है। भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा जैसी कुछ सेवाओं का संगठन सांविधानिक प्रावधानों के अंतर्गत हुआ है। धारा 312 के द्वारा राज्य सभा को यह अधिकार है कि दो तिहाई बहुमत से किसी नई अखिल भारतीय सेवा को स्थापित करे।

वित्तीय अधिकार

संविधान के भाग XI के 264 से 300 तक 37 अनुच्छेदों में केंद्र और राज्य सरकारों के बीच वित्तीय साधनों के विभाजन का ब्यौरा दिया गया है। संघ और राज्य सूची, जिनमें कानून बनाने के विषय दिए गए हैं, वित्तीय साधनों का भी प्रावधान करती है। संघ सूची में 12 और राज्य सूची में 19 विषय वित्तीय अधिकारों के बारे में है। राज्य सूची में दिए गए वित्तीय विषयों पर राज्य सरकार द्वारा कर लगाए जाते हैं, उन्हीं के द्वारा एकत्रित किए जाते हैं, और उनका उपयोग भी राज्य सरकार ही करती है। इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं, भूमि कर, शराब और अफीम, उत्पादक शुल्क, मुहरें, कृषि आय कर, भूमि और इमारत पर कर, बिजली के उपभोग और बिक्री पर कर, वाहन, मनोरंजन और जुआ कर। संघ सूची में भी कई प्रकार के राजस्व के स्रोत हैं। इनमें से कुछ तो सिर्फ केंद्र के पास रहते हैं, और कुछ अन्य ऐसे हैं जिनका बंटवारा केंद्र और राज्यों के बीच होता है, जैसे आय कर। कुछ और स्रोत ऐसे हैं जिनपर कर केंद्र द्वारा लगाए और वसूल किए जाते हैं, लेकिन समस्त वसूली को राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में बांट दिया जाता है। कुछ ऐसे स्रोत हैं जिन पर कर लगाये तो केंद्र द्वारा जाते हैं लेकिन राज्य उनकी वसूली अपने पास रख लेते हैं। ऐसा कहा जाता है कि राज्य सूची के स्रोत "कठोर" हैं और उनमें वृद्धि की गुंजाइश नहीं है। लेकिन संघ सूची के स्रोत "लचीले" हैं जिन्हें बढ़ाया जा सकता है।

एक अन्य वित्तीय स्रोत जिसकी चर्चा आवश्यक है, वह है ऋण और अनुदान। केंद्र सरकार विकास कार्यक्रमों के लिए राज्यों को अनुदान दे सकती है। राज्यों के बजट में घाटा पूर्ति के लिए भी धनराशि दी जा सकती है। इसके अलावा राज्य सरकार केंद्र से ऋण भी ले सकती है। इस प्रकार से धनराशि आवंटन का केंद्र सरकार के पास विस्तृत अधिकार है।

केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय साधनों के बंटवारे के लिये वित्त आयोग एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। संविधान के अनुच्छेद 270, 273 और 275 के द्वारा वित्त आयोग का प्रावधान किया गया है। राष्ट्रपति हर पांच वर्षों में आयोग का गठन करता है। इस आयोग के मुख्य कार्य हैं, ऐसे आधारों की सिफारिश करना जिसके अनुसार केंद्र और राज्यों और राज्यों के बीच वित्तीय साधनों का बंटवारा किया जाय। वित्त आयोग द्वारा सुझाये गये फार्मूला के अनुसार ही राज्यों को अनुदान राशि दी जाती है। सुदृढ़ वित्तीय व्यवस्था के हित के अन्य विषय भी वित्त आयोग के पास भेजे जा सकते हैं। जून 1987 ई० में नौवें वित्त आयोग की नियुक्ति की गई थी।

इस प्रकार संविधान में केंद्र और राज्यों के विधायी, प्रशासनिक और वित्तीय अधिकारों का विभाजन विस्तृत रूप से दिया गया है। एक संघीय व्यवस्था के लिए अधिकारों का

सीमांकन आवश्यक भी है। लेकिन संस्थाओं के प्रावधान में केंद्रीय सरकार के अधिकारों पर अधिक बल दिया गया है। हमने अध्याय 6 और 8 में पढ़ा है कि आधुनिक राज्यों में बढ़ते हुए केंद्रीयकरण की सामान्य प्रवृत्ति है। जिन परिस्थितियों में संविधान सभा ने सशक्त केन्द्रीय सरकार की आवश्यकता पर बल दिया, उसकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

भारतीय संघ के एकात्मक लक्षण

संविधान भारत को राज्यों का संघ (Union of States) घोषित करता है। केंद्र सरकार को नए राज्य बनाने और राज्यों की सीमा में परिवर्तन करने का अधिकार है। संविधान के लागू होने के पांच वर्षों के अंदर 1956 ई॰ में भाषा के आधार पर राज्यों में व्यापक परिवर्तन किए गये। उसके बाद कई नये राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की स्थापना की गई और कई स्थानों पर उनकी सीमाओं में परिवर्तन किया गया। मई 1987 ई॰ में गोआ को एक राज्य का दर्जा दिया गया जो इस तरह के परिवर्तन का एक उदाहरण है। इस तरह राज्यों की भौगोलिक सीमाएं केंद्र सरकार पर निर्भर हैं।

विधायी, प्रशासनिक, और वित्तीय विषयों में भी संविधान ने केन्द्र को व्यापक अधिकार दिए हैं। यद्यपि तीन सूचियों में विधायी अधिकारों का वितरण किया गया है, लेकिन राज्य सभा दो-तिहाई बहुमत से पारित प्रस्ताव द्वारा राज्य सूची के विषयों पर संसद को राष्ट्र हित में कानून बनाने का अधिकार दिया जा सकता है। राज्य विधायिका से पारित किसी भी विधेयक को राज्यपाल राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए सुरक्षित कर सकता है। एक या अधिक राज्यों की विधायिकाओं की सहमति से संसद राज्य सूची के किसी भी विषय पर कानून बना सकती है। आपातकालीन स्थिति में संसद को विशेष विधायी अधिकार होते हैं। राज्य में सांविधानिक सरकार की विफलता की स्थिति में जब राष्ट्रपति शासन लागू किया जाता है, तो राज्य पर केंद्र का पूर्ण नियंत्रण होता है। राज्यपाल राज्य सरकार की कार्यकारी सत्ता का प्रतिनिधि है, लेकिन उसकी नियुक्ति केंद्रीय सरकार के हाथ में है। राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने में राज्यपाल की मुख्य भूमिका होती है।

संसद के कानून पूरे देश में लागू होते हैं। उन्हें कार्यान्वित करने की ज़िम्मेदारी केंद्र सरकार पर होती है। राज्य सरकारों को इस प्रकार काम करना पड़ता है कि केंद्रीय कानून का अनुसरण हो और केंद्र के कार्यकारी अधिकार के उपयोग में बाधा न पड़े। राष्ट्रीय महामार्गों के निर्माण और अनुसूचित जातियों और जनजातियों के कल्याण जैसे विषयों पर केंद्र सरकार राज्यों को निर्देश दे सकती है। अखिल भारतीय सेवा, जिसका निर्माण और नियुक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा होती है, केंद्र की एक महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक संस्था के रूप में काम करती है। इनमें अधिकतर अधिकारी राज्यों में काम करते हैं, लेकिन उनकी नियुक्ति और सेवा शर्तों पर केंद्र का नियंत्रण होता है।

अधिकारों का यही रूप वित्तीय विषयों में भी देखा जाता है। राजस्व के जो स्रोत संघ सूची में हैं, वे "लचीले" हैं, और राज्य सूची में "कठोर" स्रोत हैं। केंद्र सरकार के पास राजस्व का एक बड़ा भाग होता है, जिसका वितरण वह राज्यों में करता है। ऋण और अनुदान राज्यों के लिये एक मुख्य वित्तीय साधन हो गये हैं, लेकिन इन पर भी केंद्र का पूर्ण अधिकार है। वित्त आयोग, जो साधनों के बंटवारे के सिद्धांत की सिफारिश करता है, उसकी नियुक्ति भी केंद्रीय सरकार द्वारा की जाती है। राज्य की वित्तीय स्थिति पर निगरानी का उत्तरदायित्व भारत के नियंत्रक व महालेखा परीक्षक पर है।

इन संवैधानिक प्रावधानों के अतिरिक्त, केंद्र का महत्त्व पांचवें दशक में आरंभ किए गए परियोजना की प्रक्रिया के फलस्वरूप बढ़ा है। योजना आयोग, जिसका गठन 1950 में किया गया, पूरे देश में विकास के कार्यक्रमों को बनाने के लिए एक केंद्र बिंदु हो गया है। इस आयोग की चर्चा संविधान में नहीं की गई है, फिर भी यह एक अत्यन्त शक्तिशाली केंद्रीय संस्था बन गई है। राज्यों में विकास कार्यक्रमों के लिए वित्तीय साधनों का आवंटन योजना आयोग की सिफारिश पर किया जाता है। विकास के कौन से कार्यक्रम शुरू किये जाएँ, उनका प्रशासन किस प्रकार हो, इनके लिए कितनी धन राशि दी जाये — ऐसे सभी महत्त्वपूर्ण निर्णय योजना आयोग द्वारा ही लिये जाते हैं। राष्ट्रीय विकास परिषद् जैसी संस्थाएं भी हैं, जिसमें सम्बद्ध केंद्रीय मंत्रियों के अलावा राज्यों के मुख्य मंत्री और केंद्र शासित प्रदेशों के कार्यकारी प्रमुख, सदस्य होते हैं और जो योजना प्रक्रिया के विषय में परामर्श देते हैं। लेकिन इस विषय में मुख्य पहल योजना आयोग की होती है।

संविधान में केंद्रीय व्यवस्था का ढांचा दिया गया है। अपने कार्य के सिलसिले में संस्थाओं पर राजनीतिक शक्तियों का प्रभाव होता है। संवैधानिक प्रावधानों को समझने के लिए राजनीतिक प्रक्रिया विशेषतः दलीय राजनीति को समझना आवश्यक है।

अभ्यास

1. राज्य और सरकार में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. राजनीतिक व्यवस्था से आप क्या समझते हैं? भारतीय राजनीतिक व्यस्था के संदर्भ में इसका वर्णन कीजिए।
3. संविधानवाद का वर्णन कीजिए तथा इसका महत्त्व बताइए।
4. कठोर संविधान किसे कहते हैं? कठोर तथा लचीले संविधान में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (क) राज्य सरकार से अधिक स्थायी है
   (ख) सामान्य विधि एवं संविधानिक विधि

अध्याय 15

केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव का प्रश्न

एक संघीय संविधान में सरकार के दो स्तरों का प्रावधान किया जाता है। इन दो स्तरों, केंद्र और इकाइयों के संबंध संविधान के अंतर्गत वर्णित होते हैं। सांविधानिक प्रावधानों में इनके पारस्परिक संबंधों में संभावित तनावों का ध्यान रखा जाता है। भारतीय संविधान की कुछ संस्थाएं निरंतर तनाव का कारण रही हैं। इन संबंधों की वास्तविक प्रक्रिया में परिवर्तनशील राजनीतिक प्रक्रिया का भी प्रभाव पड़ता है। यह प्रक्रिया आम चुनावों में लक्षित होती है, जिसमें विभिन्न राजनीतिक दल सत्ता के लिये भाग लेते हैं। केंद्र-राज्य संबंधों की यह गतिशील प्रक्रिया राजनीतिक प्रक्रिया का एक अंग है। 1952 ई. के पहले आम चुनाव से लेकर भारत की दलीय राजनीति में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। यह परिवर्तन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में अधिक लक्षित होता रहा है। दलीय राजनीति के स्वरूप का विचार भारत में केंद्र-राज्य संबंधों को समझने के लिये उपयुक्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है।

दलीय राजनीति की स्थिति

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात प्रारंभिक दो दशकों में देश में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को व्यापक समर्थन प्राप्त था। केंद्र और राज्यों दोनों में यही दल सत्ता में था। इस अवधि में सिर्फ केरल में, 1957-1959 ई. में गैरकांग्रेसी सरकार बनी। जवाहरलाल नेहरू का नेतृत्व 1964 ई. में उनकी मृत्यु तक, देश में राजनीतिक स्थायित्व के लिये महत्त्वपूर्ण था। केंद्र के अन्य नेताओं में भी स्वतंत्रता आंदोलन के समय के आदर्शों के बारे में उत्साह था। सरकार के विभिन्न स्तरों पर एक ही पार्टी सत्ता में थी, जिससे केंद्र राज्य संबंध निर्विघ्न चलते रहे। केंद्र और राज्यों के बीच संघर्ष की स्थितियों का समाधान पार्टी के अंदर हो जाता था। यह केंद्र और राज्यों के बीच सहयोग की अवधि थी।

1967 ई. के चतुर्थ आम चुनाव में एक राजनीतिक मोड़ आया और कांग्रेस दल की पराजय हुई। उड़ीसा, केरल, पश्चिम बंगाल, पंजाब, बिहार, उत्तर प्रदेश और मद्रास में गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं। केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली पर भारतीय जनसंघ का नियंत्रण हो गया। संसद में भी कांग्रेस का बहुमत क्षीण हो गया। यही समय था जब राज्य सरकारों को दलबदल की समस्या का सामना करना पड़ा और कुछ विधायक अपना समर्थन एक दल से दूसरे दल के बीच बदलते रहे। यह एक अस्थायित्व की स्थिति थी। 1969 ई. के मध्यावधि चुनाव में बहुत से राज्यों में कांग्रेस फिर सत्ता में आई। केंद्र में कांग्रेस और राज्यों में गैरकांग्रेसी सरकार होने के कारण, संघीय व्यवस्था में तनाव की स्थिति आ गई। केंद्र राज्य संबंधों के बारे में नए प्रश्न उठाए गए। राज्य सरकारों के अस्थायित्व से इन समस्याओं ने और ज़ोर पकड़ा।

1971 ई. के मध्यावधि आम चुनाव होने तक कांग्रेस का पुनर्गठन हो चुका था। "अनुभवी प्रहरियों" (Old guards) का पार्टी में प्रभाव कम हो गया था। इंदिरा गांधी के नेतृत्व में नई कांग्रेस को चुनाव में भारी बहुमत मिला। लेकिन इस दौर में राजनीति पर व्यक्तिगत प्रभाव बढ़ गया। राज्यों में सरकार के गठन के बारे में अधिकतर निर्णय श्रीमती गांधी ही लेती थीं। कांग्रेस की स्थिति सुदृढ़ हो गई, लेकिन केंद्र-राज्य संबंधों में बदलाव आ चुका था। राज्य केंद्र से अधिक अधिकार

और साधन के लिए मोलतोल (bargain) करने की स्थिति में नहीं थे। *1975 ई. में आपत्कालीन स्थिति की घोषणा कर* दी गई। 1976 ई. में तमिलनाड और गुजरात की गैरकांग्रेसी सरकारों को निलंबित कर दिया गया और राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया।

1977 ई. आम चुनावों में कांग्रेस पार्टी को संसद में बहुमत नहीं मिला। उत्तरी भारत के राज्यों में भी कांग्रेस की भारी हार हुई। नव संगठित जनता पार्टी ने केंद्र में सरकार बनाई। जून 1977 ई. के राज्यों के चुनाव में भी जनता पार्टी को बहुमत मिला लेकिन यह पार्टी केंद्र या राज्यों में स्थायी सरकार नहीं बना पाई। 1980 ई. में कांग्रेस फिर से केंद्र में सत्ता में आई और 1985 ई. के आम चुनाव में संसद में कांग्रेस के बहुमत में और वृद्धि हुई। लेकिन इस अवधि में ध्यान देने योग्य यह बात है, कि क्षेत्रीय पार्टियों का प्रभाव बढ़ता गया जैसे आंध्रप्रदेश में तेलुगु देशम, तमिलनाडु में द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, पंजाब में अकाली दल, और जम्मू-कश्मीर में नेशनल कानफरेंस। जनता पार्टी, लोकदल और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी जैसे कुछ राष्ट्रीय राजनीति दलों का प्रभाव भी कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहा। इनमे से कुछ दल राज्यो में सत्ता में आए।

1989 में हुए नवें आम चुनाव में यह स्थिति बदल गई थी। लोकसभा में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था। राष्ट्रीय मोर्चा ने वामपंथी दलों तथा भारतीय जनता पार्टी के समर्थन से केंद्र तथा कुछ राज्यों में भी सरकार बनायी। कांग्रेस का उदय प्रमुख विरोधी दल के रूप में हुआ था। राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को नवंबर 1990 में त्यागपत्र देना पड़ा क्योंकि भारतीय जनता पार्टी ने उसे समर्थन देना बन्द कर दिया था। कुछ समय के लिए केंद्र में कांग्रेस के सहयोग से समाजवादी जनता पार्टी ने सरकार बनाई। मई-जून 1991 में दसवीं लोकसभा के चुनावों के बाद केंद्र तथा कुछ राज्यों में कांग्रेस तथा उसके सहयोगी दलों ने सरकार बनाई हैं। कुछ अन्य राज्यों में अन्य राष्ट्रीय दलों या क्षेत्रीय दलों की सरकारें हैं जिनकी विचारधारा और कार्यक्रम भिन्न हैं।

जटिल स्थिति से केंद्रराज्य संबंधो में नई समस्याएँ सामने बनी हुई हैं। राज्यों के लए अधिक स्वायत्ता की मांग पहले भी उठाई जाती रही है, लेकिन अब यह प्रश्न अधिक प्रभावशाली ढंग से उठाया जा रहा है। केंद्र और राज्यों के बीच मनमुटाव और तनाव की स्थिति ने और भी नई समस्याओं को जन्म दिया है।

स्वतंत्रता के बाद चार दशकों ने कुछ संस्थाएं केंद्र-राज्य *संबंधों में बार-बार विवाद का कारण रही हैं। अब हम तनाव* संबंधी इन विषयों की चर्चा करेंगे।

आपात्कालीन प्रावधान

संविधान के अनुच्छेद 356 के अंतर्गत केंद्र सरकार राज्य की विधायी एवं प्रशासनिक सत्ता अपने हाथ में ले सकती है। इस प्रावधान का प्रयोग राज्य में सांविधानिक सरकार की विफलता की स्थिति में होता है। राज्य विधायिका में विभिन्न दलों के प्रतिनिधित्व की स्थिति ऐसी हो सकती है कि किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत न मिले। अगर विभिन्न दल सरकार बनाने के लिए इकट्ठे हो भी जाते हैं तो संभव है कि सरकार स्थायी न रहे। 1967 ई. चौथे आम चुनाव के बाद बहुत से राज्यों को सरकार की अस्थाई स्थिति का सामना करना पड़ा। ऐसी अस्थायित्व की स्थिति में, राज्य में राष्ट्रपति शासन की घोषणा कर दी जाती है। केंद्र यह कदम, राज्यपाल की रिपोर्ट के आधार पर उठाता है, जिसमें राष्ट्रपति शासन की घोषणा की सिफारिश होती है। जुलाई 1959 ई. में पहली बार केरल में ई.एम.एस. नंबुदिरिपाद की सरकार को निलम्बित करके राष्ट्रपति शासन लागू किया गया था। उसके बाद प्रायः सभी राज्यों को किसी न किसी समय राष्ट्रपति शासन के अंतर्गत रहना पड़ा है। ऐसे राज्यों में जिन दलों की सरकार रही है, उन्होंने केंद्र पर प्रायः पक्षपात का आरोप लगाया है। जब केंद्र और राज्यों में अलग-अलग दल की सरकार होती है, तो ऐसे आरोपों की संख्या अधिक हो जाती है। जैसा हमने ऊपर कहा है, कि 1967 ई. के बाद बहुत से राज्यों में कांग्रेसी सरकारें सत्ता में आईं। जब भी केंद्र की कांग्रेस सरकार ने राज्य को गैर-कांग्रेसी सरकार को पदच्युत करके आपात्कालीन स्थिति की घोषणा की है, इस प्रावधान को लेकर तनाव की स्थिति आई है। यही स्थिति 1977 ई. में भी आई जब केंद्र की जनता पार्टी की सरकार ने बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा की विधान सभाओं को भंग कर दिया। राज्य सरकारों ने प्रायः यह कहा है कि "सांविधानिक तंत्र की विफलता" के प्रावधान की व्याख्या केंद्र ने समय-समय पर विभिन्न प्रकार से की है, जिसके आधार पर राष्ट्रपति शासन की घोषणा की जाती है।

राज्यपाल की भूमिका

संविधान के अनुच्छेद 154 (1) के अंतर्गत राज्यों की कार्यकारी सत्ता राज्यपाल को दी गई है। राज्यपाल की नियुक्त प्रधानमंत्री

के परामर्श के आधार पर राष्ट्रपति करता है। वह केंद्रीय सरकार द्वारा मनोनीत किया जाता है। राज्यपाल की नियुक्ति और उसका कार्य दोनों के विषय में केंद्र और राज्यों के बीच तनाव रहा है। राज्य सरकारों ने अक्सर यह आग्रह किया है कि राज्यपाल की नियुक्ति के संबंध में अनेक विवाद हुए हैं और उनमें तीव्रता भी आई है।

संविधान में राज्यपाल के जो व्यापक अधिकार दिए गए हैं उनमें दो के बारे में केंद्र-राज्य संबंधों में विशेष तनाव रहा है। वे हैं — राज्य में "सांविधानिक तंत्र की विफलता" के बारे में राज्यपाल की रिपोर्ट और राज्य विधायिका द्वारा पारित किसी विधेयक को राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति के पास विचार के लिए भेजना। यदि राज्यपाल यह अनुभव करता है कि राज्य सरकार संविधान के प्रावधानों के अनुसार संचालित नहीं हो रही है, तो वह राष्ट्रपति के पास राज्य में सांविधानिक तंत्र की विफलता मूलक रिपोर्ट भेज सकता है। इसी रिपोर्ट के आधार पर राष्ट्रपति शासन की घोषणा की जाती है। राज्यपाल जिस आधार पर अपनी रिपोर्ट भेजता है उसका सामान्य कारण दिया जाता है, कोई सुस्पष्ट आधार नहीं दिया जाता है। राज्यों ने यह शिकायत की है कि राज्यपाल, केन्द्र में सत्तारूढ़ दल की सहायता के लिये पक्षपातपूर्ण व्यवहार करता है। उनका कहना है कि राज्यपाल केंद्र के प्रतिनिधि के रूप में काम करता है, राज्य के कार्यकारी प्रधान के रूप में नहीं।

राज्यपाल के विधायी अधिकार भी केंद्र और राज्यों के बीच विवाद का विषय रहे हैं। अनुच्छेद 201 के अंतर्गत राज्यपाल विधायिका द्वारा पारित विधेयक को राष्ट्रपति के विचार के लिए सुरक्षित रख सकता है। ऐसे कुछ विधेयकों की स्पष्ट चर्चा की गई है, जैसे उच्च न्यायालय के अधिकारों और कार्यों पर प्रतिकूल असर डालने वाले विधेयक (अनुच्छेद 200), समवर्ती सूची से संबंधित ऐसे विधेयक जो संसद द्वारा पहले से पारित किसी कानून का अतिक्रमण करते हों (अनुच्छेद 254 (2), और ऐसे विधेयक जिनके द्वारा किसी भूसंपत्ति का अधिग्रहण या किसी राज्य द्वारा लोक हित की दृष्टि से एक सीमित अवधि के लिए किसी संपत्ति का अधिग्रहण का प्रावधान (अनुच्छेद 31 (अ), 31 (ब) 31 (स)। राज्यों की शिकायत है कि राज्यपाल प्राय : इस अधिकार का प्रयोग राज्यों द्वारा विधेयकों के पारित होने की प्रक्रिया में विलंब करने के लिए करता है। ऐसे विधेयक राष्ट्रपति के पास बहुत दिनों तक पड़े रहते हैं। विशेषत : उन राज्यों से जिसमें ऐसी पार्टी की सरकार होती है जो केंद्र में सत्ता में नहीं है। यह शिकायत भी की जाती है कि राज्यपाल के इस अधिकार का प्रयोग ऐसे विधेयकों के लिए भी किया जाता है, जिन्हें राष्ट्रपति के पास भेजने की आवश्यकता ही नहीं है।

विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग दलों के सत्ता में होने के कारण, देश की राजनीतिक जटिलता के साथ ही राज्यपाल की भूमिका अधिक विवादास्पद हो गई है।

केंद्रीय कानूनों का कार्यान्वयन

अनुच्छेद 256 और 257 केंद्र को यह अधिकार देते हैं कि वे राज्य सरकार को संसद के कानून के अनुसार काम करने और राज्य के कार्यकारी अधिकारों के उपयोग के बारे में आदेश दें। अनुसूचित जनजातियों के कल्याण के बारे में भी आदेश दिए जा सकते हैं। ऐसे कुछ उदाहरण मिलते हैं जब केंद्रीय आदेश सरकारों ने अस्वीकार कर दिए हैं।

कानून और व्यवस्था की रक्षा और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का प्रयोग

कानून और व्यवस्था राज्य सूची का एक महत्वपूर्ण विषय है। लेकिन संघीय दोहरी व्यवस्था में केंद्र सरकार के कुछ कार्यालय और संपत्ति राज्य के भूभाग में स्थित होते हैं। हड़ताल और घेराव जैसी अशांति की स्थिति में केंद्र सरकार ने प्राय : अपने कार्यालयों और संपत्ति की रक्षा के लिए केंद्रीय पुलिस का प्रयोग किया है। सरकारों ने इसे राज्यों के कार्य में हस्तक्षेप माना है और अपनी अप्रसन्नता व्यक्त की है। बयालिसवें संशोधन (1976) में यह प्रावधान किया गया कि केंद्र सरकार केंद्रीय पुलिस बल का प्रयोग अपनी पहल पर कर सकती है और इसके लिए राज्य सरकार से परामर्श लेना आवश्यक नहीं है। दो वर्ष बाद चवालिसवें संशोधन द्वारा इस प्रावधान को हटा दिया गया।

अखिल भारतीय सेवा

आप पहले पढ़ चुके हैं कि सरकार कुछ अखिल भारतीय सेवाओं की व्यवस्था करती है। इन सेवाओं के अधिकारियों की नियुक्ति और नियंत्रण केंद्रीय संस्थाओं द्वारा होता है। राज्य के कार्यों में वृद्धि के साथ ही, ऐसी सेवाओं की संख्या भी अधिक हो गई है। ऐसे बहुत से अधिकारी राज्य सरकारों के

अधीन काम करते हैं। जिनके पास महत्त्वपूर्ण काम होते हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा, दो ऐसे महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं जिनके अधिकारियों के कार्य का आम निरीक्षण राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है। इससे कभी-कभी असंगत स्थिति का सामना भी करना पड़ता है।

वित्तीय संबंध

केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय साधनों का विभाजन वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर किया जाता है। विकास कार्यक्रमों के लिए साधनों का आवंटन योजना आयोग की सिफारिश के आधार पर होता है। ये दोनों संस्थाएं केंद्रीय हैं, जिसके कारण राज्य सरकारें साधनों के पुनर्वितरण की मांग करती हैं। केंद्रीय ऋण और अनुदान के संदर्भ में भी राज्य सरकारें केंद्र द्वारा पक्षपात की शिकायत करती हैं। बहुत सी राज्य सरकारें केंद्र द्वारा दिए गए ऋण का भुगतान नहीं कर पातीं। इसी प्रकार, राज्य सरकारें अपनी वित्तीय कमियों की पूर्ति के लिए केंद्रीय रिज़र्व बैंक से ओवरड्राफट् भी लेती हैं, जिसकी राशि काफी बड़ी होती है। यह कहा जाता है कि राज्यों के चिरकालिक वित्तीय संकट का कारण केंद्र का पक्षपात पूर्ण व्यवहार ही है। राज्यों द्वारा केंद्र और राज्यों के बीच वित्तीय बंटवारे में सुधार के लिए अनेकों बार सुझाव दिए गए हैं।

योजना की प्रक्रिया और योजना आयोग की भूमिका

"आर्थिक और सामाजिक योजना" संविधान की समवर्ती सूची का विषय है। देश की सामाजिक-आर्थिक योजना का व्यापक उत्तरदायित्व 1950 ई० में स्थापित योजना आयोग को सौंपा गया। विकास कार्यक्रमों की रूपरेखा योजना आयोग द्वारा तैयार की जाती है और वही इन कार्यक्रमों के लिए राज्यों में वित्तीय आवंटन का निर्णय भी लेता है। राज्यों की योजनाओं का स्वरूप बहुत सीमा तक देश की प्राथमिकताओं के आधार पर तैयार किया जाता है। केंद्र और राज्यों में योजना के लक्ष्य और साधनों का बंटवारा, ऐसे विषय हैं जिनको लेकर काफी मतभेद हैं। योजना कार्यक्रमों के लिए राज्यों में वित्तीय आवंटन पर मतभेद रहता है। कई बार योजना आयोग राज्य सरकारों को ऐसे कुछ कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने का आदेश देता है जिनसे योजना के कार्यान्वयन में सहायता मिले।

इसके अतिरिक्त राज्य सरकारों ने केंद्र के पक्षपात का प्रश्न कुछ अन्य विषयों के बारे में भी उठाया है। राज्य सरकारों ने राज्य की सीमा का पुनर्निर्धारण और नये राज्यों के निर्माण के प्रश्न पर आपत्ति की है। राज्यों में सीमा के बारे में भी विवाद रहा है। राज्यों ने केंद्र द्वारा बनाई गई औद्योगिक नीति के बारे में भी शिकायत की है। नदी-जल के बंटवारे का प्रश्न भी राज्यों में विवाद का विषय रहा है। ऊपर दिए गए केंद्र-राज्य संबंधों की समस्या के कारण राज्यों की स्वायत्तता का प्रश्न भी बार-बार उठाया जाता है।

राज्यों की स्वायत्तता

राज्य सरकारें, विशेषत: 1967 ई० के बाद, अधिक स्वायत्तता की मांग करती रही हैं। राज्य में क्षेत्रीय दलों की सरकारों के सत्ता में आने के बाद इस मांग ने और जोर पकड़ा है। केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव के विषयों से, जिनकी चर्चा हमने पहले की है, इस मांग को बल मिला है। इनमें अधिकतर मांगें सांविधानिक परिवर्तन और राजनीतिक सामंजस्य की आवश्यकता पर ज़ोर देती रही हैं, लेकिन कुछ मांगें राष्ट्र के लिए खतरा पैदा करने लगी हैं। कहीं-कहीं तो क्षेत्रीयता राष्ट्र की एकता के लिए चुनौती के रूप में भी उभर कर आई है, जैसे पंजाब।

केंद्र-राज्य संबंधों का क्रमबद्ध पुनरावलोकन उस समय किया जब 1967 ई० में तमिलनाडु में डी.एम.के. सत्ता में आई। संघीय व्यवस्था के पुनरावलोकन के लिए, उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायधीश, पी. वी. राजमन्नार की अध्यक्षता में एक समिति की नियुक्ति की गई। इसके बाद 1973 ई० में पंजाब में अकालीदल ने आनंदपुर साहब प्रस्ताव पेश किया। 1977 ई० में पश्चिम बंगाल की भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (एम) ने एक विस्तृत "केंद्र राज्य संबंधों पर स्मरणपत्र" विज्ञापित किया। इसी तरह 1983 ई० में कर्नाटक की जनता पार्टी की सरकार ने केंद्र राज्य संबंधों पर एक श्वेतपत्र जारी किया। मार्च 1983 ई० में इस प्रश्न पर विचार के लिए आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और पांडीचेरी के मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन बंगलौर में हुआ। इसके बाद 1983 ई० में ही 16 गैर-कांग्रेसी दलों और मुख्य मंत्रियों की व्यापक गोष्ठी श्रीनगर में हुई, जिसमें केंद्र-राज्य संबंधों पर एक 31 सूत्री प्रस्ताव रखा गया। इन दबावों के फलस्वरूप, विशेषत: पंजाब में बिगड़ती

हुई स्थिति के कारण, मार्च 1983 ई० में केंद्रीय सरकार ने केंद्र-राज्य संबंधों के पूरे प्रश्न के पुनरावलोकन के लिए न्यायमूर्ति रंजीत सिंह सरकारिया की अध्यक्षता में एक आयोग की नियुक्ति की।

सरकारिया आयोग (1988) ने एक सशक्त केंद्रीय सरकार की आवश्यकता को दोहराया है। लेकिन इसने निर्विघ्न केंद्र-राज्य सम्बन्धों के लिए भी सुझाव दिए हैं। इसने केंद्र और राज्यों के बीच पारस्परिक विचार विमर्श की संस्थाओं (जैसे, अंत: सरकारी कांउसिल, राष्ट्रीय विकास परिषद, क्षेत्रीय काउंसिल और योजना आयोग) को पुनर्जीवित करने पर बल दिया है। साथ ही कुछ विशेष विषयों पर, जैसे समवर्ती सूची, राज्यपाल की नियुक्ति, राज्यों में सशस्त्र बल का प्रयोग, राज्यों के साथ निरंतर विचारविमर्श, आदि का सुझाव भी दिया है। धारा 356 के प्रयोग में भी सावधानी बरतने का सुझाव दिया गया है। आयोग ने राज्यों की वित्तीय आवश्यकताओं पर भी ध्यान दिया है। इस तरह सरकारिया आयोग ने केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव के मुख्य विषयों और संघर्षों पर ध्यान आकर्षित करते हुए उनके समाधान संबंधी सुझाव दिए हैं।

कुछ करने को

भारत का राजनीतिक मानचित्र लीजिए। मानचित्र में यह दर्शाइए कि भारत के विभिन्न राज्यों में कौन से दलों की सरकार हैं।

अभ्यास

1. केन्द्र-राज्य सम्बंधों के संदर्भ में भारतीय संविधान के कौन से प्रावधान विवादास्पद हैं?
2. दलीय राजनीति के विभिन्न चरणों की व्याख्या कीजिए तथा केन्द्र-राज्य सम्बंधों पर इसके प्रभावों की व्याख्या कीजिए।
3. राज्यों के लिए स्वायत्ता की मांग पर विचार कीजिए।
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (क) योजना आयोग एवं केन्द्र-राज्य सम्बंध
   (ख) सरकारिया आयोग

अध्याय 16

भारतीय संविधान में आपात्कालीन प्रावधान

भारतीय राष्ट्रपति के आपात्कालीन अधिकारों का प्रावधान महत्त्वपूर्ण और साथ ही विवादास्पद रहा है। संविधान सभा में इस प्रावधान के समालोचक और समर्थक दोनों थे। फलस्वरूप इस प्रावधान में बहुत से संशोधन किए गए। लेकिन संविधान निर्माण के समय देश में अस्तव्यस्त स्थिति के कारण ही इस प्रावधान को संविधान में रखा गया। देश के विभाजन के समय अभूतपूर्व सांप्रदायिक दंगे हुए। आंध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में राजनीतिक उथलपुथल की समस्या थी। इसी बीच नए पड़ोसी देश पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर क्षेत्र पर हमला कर दिया। इन आंतरिक कारणों के अलावा शक्ति गुटों के बीच बढ़ते हुए शीत युद्ध की स्थिति से अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी तनाव की स्थिति थी। इन समस्याओं की चर्चा हमने अध्याय 14 में की है। संविधान निर्माता इन समसामयिक समस्याओं और देश की प्रत्यक्ष विविधताओं के प्रति पूर्ण सजग थे और इसी कारण उन्होंने संघीय और एकात्मक दोनों व्यवस्थाओं की अच्छाइयों का सम्मिश्रण करना चाहा। नवंबर 4, 1948 को संविधान सभा में डा० बी० आर० अंबेडकर ने कहा, ' इसका (संविधान का) निर्माण इस प्रकार किया गया है कि सामान्य स्थिति में यह एक संघीय व्यवस्था की तरह काम करेगा। लेकिन युद्ध की स्थिति में इसका रूप एकात्मक हो जाएगा।" अंततः संविधान सभा ने संविधान में भाग 18 के 9 अनुच्छेदों में राष्ट्रपति के आपात्कालीन अधिकारों का प्रावधान किया।

राष्ट्रपति निम्नलिखित तीन स्थितियों में आपात्काल की घोषणा कर सकता है :

(अ) युद्ध, बाह्य अथवा आंतरिक अशांति (अनुच्छेद 352)

(ब) राज्यों मे सांविधानिक तंत्र की विफलता (अनुच्छेद 356)

(स) भारत या उसके किसी भाग में आर्थिक स्थायित्व अथवा साख (Financial stability or credit) को खतरा (अनुच्छेद 360)

युद्ध, बाह्य आक्रमण अथवा सशस्त्र विद्रोह के कारण आपातकालीन स्थिति

जब भी राष्ट्रपति को यह आभास हो कि देश युद्ध या किसी बाहरी आक्रमण की स्थिति में है, तो वह अनुच्छेद 352 के अंतर्गत आपात्काल की घोषणा कर सकता है। ऐसी घोषणा 1962 ई० में चीन के साथ युद्ध के समय की गई, जिसकी अवधि 1968 ई० तक रही। दूसरी बार आपात्काल की घोषणा 1971 ई० में की गई जब पाकिस्तान से टकराव हुआ।

इस अनुच्छेद का दूसरा भाग जिसमें 'आंतरिक अशांति' की चर्चा की गई है, अधिक विवाद का विषय रहा है। प्रारंभ में यह प्रावधान था कि आपातकालीन स्थिति की घोषणा उस समय की जाएगी जब आंतरिक अशांति से देश की सुरक्षा को खतरा होगा। श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1975 ई० में इसी अनुच्छेद के अंतर्गत आपात्काल की घोषणा की थी। इस आपात्काल के दो वर्ष बहुत विवादास्पद साबित हुए। 1977 ई० में पहली बार केंद्र में गैरकांग्रेसी जनता पार्टी की सरकार बनी और इसने 1978 ई० में संविधान में चवालीसवां संशोधन किया। इस संशोधन में आंतरिक अशांति के बदले 'सशस्त्र विद्रोह' शब्द का प्रयोग किया गया। इसके पक्ष में यह कहा गया कि 'सशस्त्र विद्रोह' अधिक सुस्पष्ट शब्द है और इससे आपात्कालीन

अधिकारों के दुरूपयोग की संभावना कम हो जाएगी। 1988 ई० में पारित उनसठवें संशोधन के द्वारा 'सशस्त्र विद्रोह' वाक्यांश के साथ एक अन्य वाक्यांश 'आंतरिक अशांति' जिससे भारत की अखंडता को खतरा हो', यह भी जोड़ दिया गया इसके आधार पर आपातकाल की घोषणा की जा सकती थी। उनसठवें संशोधन के साथ संलग्न वक्तव्य में सरकार ने यह साफ कहा था कि इस वाक्यांश को 'पंजाब में अशांति की स्थिति बराबर बने रहने और आतंकवादियों और राष्ट्रविरोधी तत्वों की बढ़ती हुई गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए जोड़ा गया है।' यह विवादास्पद उनसठवां संशोधन अब समाप्त कर दिया गया है।

राष्ट्रपति इन आशंकाओं के पूर्वानुमान के आधार पर भी आपात्काल की घोषणा के अधिकार का प्रयोग कर सकता है। चवालीसवें संशोधन में यह प्रावधान किया गया कि राष्ट्रपति *आपात्काल की घोषणा मंत्रिमंडल के लिखित परामर्श* के आधार पर करेगा। आपात्काल को पूरे देश में, या विशेषतः प्रभावित भाग में, लागू किया जा सकता है। आपात्कालीन घोषणा के एक महीने के अंदर संसद द्वारा उनका अनुमोदन आवश्यक है।

आपात्कालीन स्थिति का प्रभाव मूल अधिकार और केंद्र-राज्य संबंधों पर पड़ता है। मूल अधिकारों के अनुच्छेद 19 का, जिसमें 6 स्वतंत्रताओं के अधिकार का प्रावधान किया गया है, क्षेत्र सीमित हो जाता है। संविधान के भाग तीन के मूल अधिकारों के कार्यान्वियन के लिए न्यायालय में जाने के नागरिकों के अधिकार को भी राष्ट्रपति निलंबित कर सकता है। चवालिसवें संशोधन के द्वारा इस अधिकार में एक अपवाद लगाया गया कि इस का प्रयोग अनुच्छेद 20 और 21 के लिए नहीं किया जा सकता, जिसमें जीवन और स्वतंत्रता की रक्षा को सुनिश्चित किया गया है। आपात्कालीन स्थिति में संसद को राज्य सूची के किसी भी विषय पर कानून बनाने का अधिकार मिल जाता है। राज्यों के वित्तीय अधिकार भी कम हो जाते हैं। आपात्कालीन स्थिति में लोकसभा और राज्य विधान सभाओं की अवधि समान्य पांच वर्षों से आगे बढ़ाई जा सकती है।

राज्यों में सांविधानिक तंत्र की विफलता के कारण आपात्कालीन स्थिति

राष्ट्रपति की राय में यदि किसी राज्य की सरकार संविधान के प्रावधानों के अनुसार संचालित नहीं हो रही है, तो वह अनुच्छेद 356 के अंतर्गत संविधानिक आपात्काल की घोषणा कर सकता है। राज्य में 'सांविधानिक तंत्र की विफलता' का अर्थ यही है। राज्य का कार्यकारी मुख्य की हैसियत से, राज्यपाल सांविधानिक तंत्र की विफलता के बारे में अपनी रिपोर्ट भेजता है, जिसके आधार पर आपात्काल की घोषणा की जाती है। राष्ट्रपति अपने अनुमान के आधार पर भी इस अधिकार का प्रयोग कर सकता है। सामान्यतः आपात्काल की घोषणा के दो महीने के अंदर संसद के दोनों सदनों द्वारा अलग-अलग अनुमोदन आवश्यक है। इस अनुमोदन से आपात्काल 6 महीने तक लागू रह सकता है। इसकी अवधि 6 महीने और बढ़ाई जा सकती है। इस तरह अनुच्छेद 356 के अंतर्गत घोषित आपात्काल की अवधि एक वर्ष तक हो सकती है।

आपात्काल की घोषणा के बाद राष्ट्पति राज्य सरकार के सभी अधिकार अपने हाथ में ले सकता है। लेकिन उच्च न्यायालय के अधिकार इस तरह नहीं लिए जा सकते। राज्य विधायिका के कार्य संसद द्वारा संपादित किए जाते हैं। जब संसद का सत्र नहीं चल रहा हो तो राज्य की संचित निधि से व्यय करने की अनुमति राष्ट्रपति द्वारा दी जाती है। ऊपर यह कहा गया है कि अनुच्छेद 356 के अंतर्गत आपात्काल की घोषणा करीब-करीब सभी राज्यों में कभी-न-कभी की गई है। अधिकाधिक राज्यों में राजनीतिक अस्थायित्व के साथ ही इस आपात्काल की घोषणा जल्दी-जल्दी होने लगी है। हमने अध्याय 15 में देखा कि 1967 ई० के बाद बहुत से राज्यों को अस्थायित्व की समस्या का सामना करना पड़ा। बहुत से राज्यों में क्षेत्रीय दल सत्ता में आए। केंद्र और राज्यों में विभिन्न राजनीतिक दल सत्ता में रहे हैं। इसी कारण 1950 ई० और 1964 ई० के बीच आपात्काल की घोषणा सिर्फ आठ बार की गई, लेकिन 1965 ई० और 1987 ई० की अवधि में 67 बार राष्ट्रपति शासन लागू किया गया। यह आरोप लगाया जाता है कि केंद्रीय सरकार ने अनुच्छेद 356 का प्रयोग अक्सर उस दल के हित को सामने रख कर किया है जिसकी सत्ता केंद्र में है। यह कहा जाता है कि आपात्काल की घोषणा की परिस्थिति का निर्णय केंद्र ने विभिन्न अवसरों पर अलग-अलग तरीके से किया है। हमने पहले पढ़ा है कि राज्य की स्वायत्तता की माँग करते समय केंद्र-राज्य संबंधों के पुनर्परीक्षण के सभी प्रस्तावों में अनुच्छेद 356 को उत्तेजक बताया गया है। तमिलनाडु

की राजमन्नार समिति ने इस अनुच्छेद को समाप्त कर देने की सिफारिश की थी। पश्चिम बंगाल सरकार के 1977 ई० के केंद्र-राज्य संबंधों पर स्मरण' पत्र' में राष्ट्रपति के इस अधिकार को समाप्त करने का सुझाव दिया गया था। इस प्रावधान की ओर सरकारिया आयोग ने भी ध्यान दिया है। इस आयोग ने सुझाव दिया कि इस प्रावधान का प्रयोग बहुत सावधानी से और अंतिम स्थिति में होना चाहिए। राष्ट्रपति शासन लागू करने से पहले संबंधित राज्य को उचित चेतावनी देनी चाहिए, जिसमें इसका स्पष्ट उल्लेख हो कि राज्य पर वह आरोप क्यों लगाया जा रहा है कि वह संविधान के प्रावधानों के अनुसार सरकार का संचालन नहीं कर रहा है। आयोग ने इस प्रावधान के दुरुपयोग को रोकने के लिए कुछ संविधानिक संशोधनों का सुझाव दिया है।

वित्तीय आपात्‌काल

अनुच्छेद 360 के अंतर्गत राष्ट्रपति भारत या उसके किसी भाग में आर्थिक स्थायित्व अथवा साख (Financial stability and credit) को खतरे के आधार पर वित्तीय आपात्‌काल की घोषणा कर सकता है। इस स्थिति में राष्ट्रपति को राज्यों के पास वित्तीय मामलों के बारे में आदेश भेजने का अधिकार होता है। वह राज्य और केंद्र सरकारों से संबंधित अधिकारियों के वेतन को कम करने का आदेश भी दे सकता है। उच्च और सर्वोच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों के वेतन भी इन प्रावधान के बाहर नहीं हैं। राष्ट्रपति यह आदेश भी दे सकता है कि राज्य विधायिका द्वारा पारित धन विधेयक उसके विचार के लिए भेजा जाए। संविधान सभा में डा० अंबेडकर ने व्याख्या की कि इस प्रावधान द्वारा केंद्रीय सरकार को 'वित्तीय और आर्थिक' अभाव से निबटने के लिए पर्याप्त अधिकार दे दिए गए हैं। अन्य दो आपात्‌कालीन प्रावधानों के विपरीत, देश में वित्तीय आपत्‌काल की घोषणा कभी नहीं की गई है।

आपातकालीन घोषणा को कई कारणों से उपयोगी माना जा सकता है। लेकिन इसमें संदेह नहीं कि इस प्रावधान ने राष्ट्रपति को व्यापक अधिकार दे दिए हैं। हमने पहले देखा है कि संसदीय व्यवस्था में राष्ट्रपति का पद एक सांविधानिक अध्यक्ष के रूप में है। राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद के परामर्श से बाध्य होता है। वास्तविक कार्य की दृष्टि से प्रधान मंत्री की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। प्रधान मंत्री और मंत्रिपरिषद संसद में बहुमत प्राप्त दल का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए अकसर यह आरोप लगाया जाता है कि राष्ट्रपति को मंत्रिमंडल द्वारा दिया गया परामर्श दल के हित को ध्यान में रखकर ही दिया जाता है। बढ़ती हुई राजनीतिक जटिलता के साथ ही राष्ट्रपति का आपात्‌कालीन अधिकार केंद्र-राज्य संबंधों के संदर्भ में एक विवादास्पद विषय हो गया है।

कुछ करने को

ऐसे राज्यों की सूची बनाइए, जो राष्ट्रपति शासन के अंतर्गत रहे हों। राष्ट्रपति-शासन की घोषणा का तारीखे भी बताइए।

अभ्यास

1. भारतीय संविधान में वर्णित आपातकालीन स्थितियाँ कौन सी हैं? विवेचना कीजिये।
2. आपातकालीन घोषणा का केन्द्र और राज्यों के प्रशासनिक और वित्तीय सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

कठिन शब्द

अलीगढ़ आन्दोलन (Aligarh Movement) सर सैयद अहमद ख़ाँ द्वारा शुरू किया गया समाज सुधार और सांस्कृतिक आन्दोलन। इसने पश्चिमी शिक्षा के महत्व और मुस्लिम समाज में समाज सुधार की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। इस आन्दोलन के नेताओं ने 1890 में अलीगढ़ युनिवर्सिटी की स्थापना की।

अहमदिया आन्दोलन (Ahmadiya Movement) : 1889 में मिर्जा गुलाम अहमद द्वारा शुरू किया गया आन्दोलन। इसमें सभी धर्म के अनुयायियों के बन्धुत्व पर ज़ोर दिया गया। इसने मुसलमानों में पश्चिमी शिक्षा का प्रसार किया।

अहस्तक्षेप(Laissez-faire) : इसका अर्थ है व्यक्ति की आर्थिक गतिविधियों में राज्य द्वारा हस्तक्षेप न किया जाना

उपक्रमण (Initiative) : प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक साधन जिसके द्वारा मतदाता अर्ज़ी द्वारा किसी कानून या संविधान में संशोधन का प्रस्ताव कर सकते हैं। इसका प्रयोग स्विट्ज़रलैंड में और अमरीका के कुछ राज्यों के स्थानीय सरकारों में होता है।

चिपको आन्दोलन (Chipko Movement) : हिमालय के पहाड़ों के बचाव और पेड़ों को कटने से रोकने के लिये आन्दोलन। यह उत्तर प्रदेश के पहाड़ी इलाकों में शुरू हुआ। पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखने के पक्ष में यह एक प्रसिद्ध आन्दोलन है।

जन उत्तेजक (Demagogues) : इसका अर्थ उन राजनीतिक नेताओं से है जो जनहित के स्थान पर सत्ता को महत्व देते हैं। ऐसे नेता लोगों की भावनाओं को उभार कर अपने लिये समर्थन प्राप्त करते हैं।

जनमत संग्रह (Referendum) : प्रत्यक्ष लोकतंत्र का एक साधन जिसके द्वारा मतदाता नेताओं द्वारा रखे गये प्रस्ताव के प्रति स्वीकृति या अस्वीकृत व्यक्त करते हैं।

नौकरशाही (Bureaucracy) : "दफ्तर" या "अफसरों" द्वारा शासन। इसका अर्थ सरकारी अफसर वर्ग है।

प्रदत्त विधान (Delegated Legislation) : कार्यपालिका द्वारा विधिनिर्माण (कानून बनाने) का कार्य, जिसका अधिकार विधायिका द्वारा दिया गया हो।

पूना समझौता (Poona Pact) : साम्प्रदायिक अधिनिर्णय के अन्तर्गत दलित वर्गों के लिए की गयी पृथक् प्रतिनिधित्व की व्यवस्था का गाँधी जी ने विरोध किया। इसके विरोध में उन्होंने 20 सितम्बर, 1932 को अनशन शुरू कर दिया। इसलिए पूना में एक बैठक बुलायी गई जिसमें पंडित मदन मोहन मालवीय, राजगोपालाचारी, डॉ राजेन्द्रप्रसाद और डॉ अम्बेडकर जैसे नेताओं ने भाग लिया। इस बैठक में नेताओं के बीच जो समझौता हुआ उसे पूना समझौता कहते है। डॉ अम्बेडकर के नेतृत्व में दलित वर्ग ने इस समझौते के द्वारा पृथक् प्रतिनिधित्व की अपनी माँग व अधिकार को वापस ले लिया। यह सबने मान लिया कि हिन्दू और अनुसूचित जातियों का संयुक्त प्रतिनिधित्व होगा।

बहुतंत्र (Polyarchy) : यह संकल्पना राबर्ट डाल की कृतियों से जुड़ी है। इसका अर्थ ऐसे समाज से है जिसमें प्रतियोगी हित समूह हों और राज्य का कार्य उनके बीच ताल-मेल बैठाना हो।

मजदूर संघ (Trade-Union) : श्रमिकों का संघ जिसका मुख्य उद्देश्य उनकी दशा में सुधार करना और उनके हितों की रक्षा करना हो।

मूल्यों का आधिकारिक विनियोजन (Authoritative Allocation): राजनीति की डेविड ईस्टन द्वारा दी गई परिभाषा। इसका अर्थ सरकार द्वारा लिये गये निर्णयों से है, जिसके द्वारा समाज में संसाधनों का वितरण इस प्रकार हो कि वह लोगों को सामान्यतः मान्य हो।

युटोपिया (Utopia): इसका सम्बन्ध आदर्श राज्य या ऐसी स्थिति से है जिसमें किसी भी प्रकार की कमी न हो। इसका अर्थ है ऐसी आदर्श व्यवस्था जिसकी प्राप्ति आसान नहीं है। 1516 में टामस मोर ने इस नाम के एक कल्पित टापू का वर्णन किया और उसके बाद ही यह शब्द व्यवहार में आया।

विधि का शासन (Rule of Law): इसका अर्थ है स्वेच्छाचारी निर्णयों के बदले कानून की प्रधानता। यह लोकतंत्र का पर्याय सा हो गया है।

विशिष्ट वर्ग (Elite): इसका अर्थ है व्यक्तियों का वह समूह जो समाज में विशिष्ट स्थान रखता है। इस शब्द का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों के नेताओं के लिये भी किया जाता है, जैसे राजनीतिक विशिष्टवर्ग।

वैधता (Legitimacy): इसका अर्थ है राजनीतिक व्यवस्था की लोगों द्वारा सामान्य मान्यता, जिसमें संस्थाओं और शासकों के प्राधिकार को उचित माना जाता है।

व्यक्तिवाद (Individualism): इसके अनुसार स्वतंत्रता के लिये सम्पत्ति का अधिकार आवश्यक है। व्यक्तिवाद सरकार के सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं को नियमित करने के अधिकार को सीमित करता है।इस सिधान्त की धारणा है कि व्यक्ति स्वयं में एक साध्य है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की प्राप्ति के लिये अधिकार मिलना चाहिए।

व्यवहारवादी दृष्टिकोण (Behavioural Approach): यह दृष्टिकोण बीसवीं सदी के पाँचवां दशक में शुरू हुआ। राजनीति विज्ञान के विश्लेषण में व्यक्ति के व्यवहार को यह दृष्टिकोण अधिक महत्व देता है। राजनीतिक विश्लेषण में, वैज्ञानिक पद्धति से यह दृष्टिकोण जुड़ा हुआ है।

सर्वहारा वर्ग (Proletariat): गरीब श्रमिक वर्ग जो अपने निर्वाह के लिये अपने श्रम का विक्रय करते है। इनके पास पूँजी नहीं होती।

समष्टिवाद (Collectivism): आपसी फायदे और कल्याण के उद्देश्य से प्रेरित राजनीतिक सिद्धान्त जिसमें उत्पादन की प्रक्रिया और वितरण पर समुदाय का सामूहिक स्वामित्व हो।

साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व (Communal Representation): विभिन्न सम्प्रदायों के लिये अलग-अलग निर्वाचक वर्गों और उनके प्रतिनिधियों की व्यवस्था। 1909 के मार्ले-मिन्टों सुधारों द्वारा मुसलमानों को इस तरह का प्रतिनिधित्व दिया गया। बाद में सिक्ख, दलित वर्गों और अन्य अल्पमत समूहों के लिये भी यह व्यवस्था की गई। भारत सरकार अधिनियम, 1935 के द्वारा कई सम्प्रदायों के लिये इस प्रकार का प्रतिनिधित्व दिया गया। इन प्रावधानों से भारत में साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिला।

साम्प्रदायिक अधिनिर्णय (Communal Award): द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की विफलता के पश्चात् ब्रिटेन की सरकार ने 16 अगस्त, 1932 को साम्प्रदायिक अधिनिर्णय की घोषणा की। इस घोषणा के द्वारा प्रान्तीय विधायिकाओं में मुसलमान, सिख, भारतीय ईसाई और एंग्ल-भारतीय समुदायों के लिए प्रतिनिधित्व की व्यवस्था की गई। महिलाओं को भी प्रतिनिधित्व दिया गया। इसी तरह दलित वर्गों को भी कुछ क्षेत्रों में पृथक् प्रतिनिधित्व दिया गया। इस घोषणा ने विभिन्न वर्गों के बीच साम्प्रदायिकता की भावना को जन्म दिया।

संविधान वाद (Constitutionalism): इसका अर्थ है स्वतंत्र प्रतिनिधि संविधान सभा द्वारा निर्मित लिखित संविधान की प्रधानता। इसका अर्थ यह भी है कि सरकार की सत्ता पर प्रभावकारी नियंत्रण हो। कानून का शासन हो जिससे लोगों को अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त हो सकें। आधुनिक लोकतांत्रित कल्याणकारी राज्य इन मूलभूत सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

प्रश्नावली

(अ) पुस्तक के विषय में आप अपनी टिप्पणी और मत नीचे दी हुई प्रश्नावली में देने की कृपा करें। पुस्तक से ये पन्ने अलग कर लीजिए और नीचे दिए हुए पते पर भेज दीजिए: विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110 016

(ब) प्रश्नों का उत्तर देते समय यदि जगह अपर्याप्त लगे तो कृपया अतिरिक्त पन्ने पर भी उत्तर लिख सकते हैं।

(स) प्रश्नावली अध्यापक और छात्र दोनों के लिए हैं। तारांकित प्रश्न केवल अध्यापकों के लिए हैं।

1. अध्यापक/छात्र
   (क) नाम
   (ख) विद्यालय का नाम और पता

2. पाठ्य पुस्तक
   (क) पाठ्यपुस्तक का नाम
   (ख) कक्षा
   (ग) पुस्तक की भाषा

1. (अ) क्या पुस्तक की साज सज्जा एवं छपाई आकर्षक है? हां-नहीं
   (ब) क्या पुस्तक का मूल्य उचित है? हां/नहीं
2. क्या आप पुस्तक को आसानी से समझ सकते हैं? हां/नहीं
3. जो शब्द समझने में कठिन हैं उन्हें नीचे लिखिए।

(1) (2) (3) (4)

___

(5) (6) (7) (8)

___

(9) (10) (11) (12)

___

4. उन अध्यायों का नाम तथा पृष्ठ संख्या बताइये जिनकी भाषा समझने में कठिन है।

अध्याय संख्या	पृष्ठ संख्या	पंक्ति

5. क्या आप समझते हैं कि इस पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम के अनुरूप है ? हां/नहीं

6. (1) कृपया पुस्तक के उन अंशो को इंगित कीजिए, जिनमें लैंगिक, जातीय, वर्गीय, सामुदायिक, प्रादेशिक और सैद्धान्तिक पूर्वाग्रह प्रतिबिम्बित होते हैं।

पूर्वाग्रह	पृष्ठ संख्या	पंक्ति

(2) इस पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु के वे अंश बताइए जो अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द की भावना के विरुद्ध हों।

7. (1) उन अध्यायों का उल्लेख कीजिए जो आपकी राय में विषयवस्तु से अधिक बड़े हैं।

____

____

(2) उन अध्यायों का उल्लेख कीजिए जो आपकी राय में विषयवस्तु की दृष्टि से अपर्याप्त हैं।

____

____

8. क्या पाठ्यपुस्तक के अध्यायों में दिए गए चित्र विषय वस्तु को समझने में सहायक है? हां/नहीं

9. उन चित्रों का उल्लेख कीजिए जो पाठ्य सामग्री को समझने में सहायक नहीं हैं।

पृष्ठ संख्या	चित्र संख्या	शीर्षक

10 कुछ अध्यायों के अन्त में कुछ करने के लिए क्रियाएं सुझाई गई हैं। आपने अपनी कक्षा में इनमें से कितनी क्रियाएं आयोजित की हैं? बताइए?

____

____

(1) इन क्रियाओं को करते समय आपको किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

____

____

(2) क्रियाओं को आयोजित करने के लिए कुछ निर्देश दिए गए हैं। इनमें से किन क्रियाओं के लिए दिए गए निर्देश अपर्याप्त हैं।

----

11. प्रत्येक अध्याय में चौखटे के भीतर कुछ प्रश्न पूछे गए हैं।
   (1) क्या आप इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने की कोशिश करते हैं? हां/नहीं
   (2) क्या वे पुस्तक की विषय वस्तु को समझने में सहायक हैं? हां/नहीं
   (3) क्या आपको ये प्रश्न रोचक लगते हैं? हां/नहीं

12. (1) क्या आपको पुस्तक में दिए गए अभ्यास के प्रश्न रोचक लगते हैं? हां/नहीं
   (2) अभ्यास के उन प्रश्नों को इंगित कीजिए जिन्हें आपकी राय में बदला जाना चाहिए।

पृष्ठ संख्या	अभ्यास के प्रश्न की संख्या
------------------------	------------------------
------------------------	------------------------

13. पुस्तक के अंत में 'कठिन शब्द' दिए गए हैं। इन शब्दों को बताइए जिन्हें ठीक तरह से नहीं समझाया गया है।

----

14. वे शब्द भी बताइए जिन्हें कठिन शब्दों की सूची में जोड़ा जाना चाहिए।

----

15. पुस्तक में यदि मुद्रण की कोई गलती है, तो उसे बताइए।

पृष्ठ संख्या	गलती
------------------------	------------------------
------------------------	------------------------
------------------------	------------------------

16. पुस्तक के पूर्ण मूल्यांकन की दृष्टि से, कृपया बताइए
   (1) पुस्तक की अच्छाइयां

----

   (2) पुस्तक की कमियां

HANDWORK FOR THE HISTORY LESSONS

THE purpose of the following pages is to help teachers in the planning of illustrative exercises connected with the history lessons set out in the first section of this volume. We have endeavoured especially to aid the teacher who knows but little of handwork methods for illustrating the various subjects of the curriculum, and, for this reason, many of the directions may seem to err on the side of simplicity. It should be remembered, however, that the exercises in this volume are intended for children of seven years of age, and hence the necessity for including models of simple construction. Teachers will find these exercises helpful in giving a vivifying effect to their oral lessons.

In the *Handbook of Suggestions for Teachers* issued by the Board, now the Ministry, of Education it is pointed out that part of the work may conveniently consist of "the expression of ideas derived from lessons, and the representation of objects from memory or imagination" In handwork of this type "the child attempts to represent in an object, ideas which are dominant in his mind as a result of some lesson or story or some experience he has undergone For this purpose plastic materials are usually employed, since they are more readily manipulated and permanence is not required in the result. Work of this kind sometimes reaches a high degree of excellence in the junior classes of elementary schools, but teachers are often content with too low a standard of accuracy Children of this age can without undue strain reproduce faithfully in clay or other suitable plastic material all the details of a fruit or a spray of leaves or a simply fashioned object. The teacher should always try to lead the child to improve on a first attempt.

In many schools this type of handwork includes the making of models to illustrate lessons in history and geography, e.g., a Norman castle in cardboard, or a relief map in pulp of some kind"

The work indicated in the ensuing pages has been developed in the spirit of the Board's suggestions. The media selected for the construction of models is such as is usually available in the average school—paper, cardboard, clay or plasticine, kindergarten sticks, and the like. Where, however, opportunities have arisen for the use of scrap material, such as old boxes, twigs from trees, corks, cotton reels, etc., these have been utilised in the construction of the models.

The list of objects illustrated in these lessons is set out in the Contents on page xii.

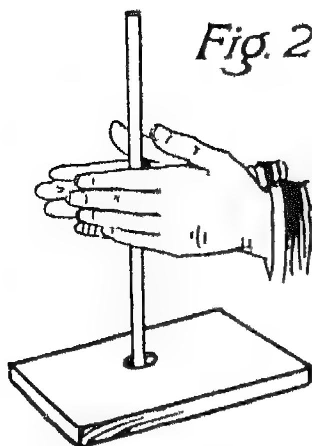
I. STICKS AND STONES

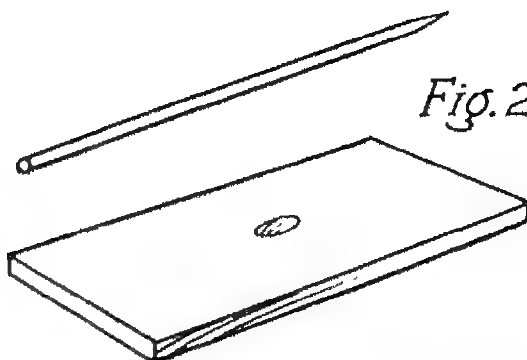
This chapter of the history section gives a review of the general conditions under which primitive Man lived Handwork exercises based on the activities of ancient man are pursued with zest by young children.

The first model is that of a sharpened flint tool. Each child should be provided with a ball of clay. Rolling this between the palms of the hands, he will produce a shape something like a carrot This is slightly flattened on the board to form the starting-point for the model. With the blade of the modelling tool, small slices of clay are removed, so giving a roughened surface with large facets as in Fig. 1 To complete the model, the work with the tool is concentrated upon the edges One or two of the best models can be saved and dried. When dry, take a palette containing paint of the following three colours,—a rather thick dark brown, dark blue and dark green Paint these colours on to the model allowing the tints to merge freely one into the other. The result will be a realistic model of a flint tool, such as may be used by the teacher for demonstration in later lessons.

Man's early discovery of the use of fire as a servant is another important matter dealt with in this lesson. A simple illustrative model may be constructed in the following manner. Six or eight rolls of clay are placed on the modelling board to form a rectangular shape, and these are smoothed over with fingers and thumb to form a rectangular block as in Fig 2 A Next, an ordinary wooden meat skewer is taken, and the point is inserted into the centre of the block of wet clay. If now the stick be inclined a little and rotated carefully between the palms of the hands a conical depression will be made in the block. The block must be dried off until hard, and then painted a dark brown colour The children can now demonstrate how fire was produced by friction (Fig. 2 B).

Young children are always most interested in animals. In this lesson they have talked of mammoths. The next project is a paper model of this animal. The mammoth has been simply sketched on generous lines (Fig 3) so that the teacher may trace it directly from the plate, going over it with hectograph ink and providing sufficient copies for the class. The model might be coloured a brownish grey, preferably with paint. The base should be tinted brown and green, and the tusks yellow. One of the flaps at the base is turned up horizontally to the front, the other to the back. The flaps should be stuck with adhesive to a small sheet of cardboard







STICKS AND STONES.

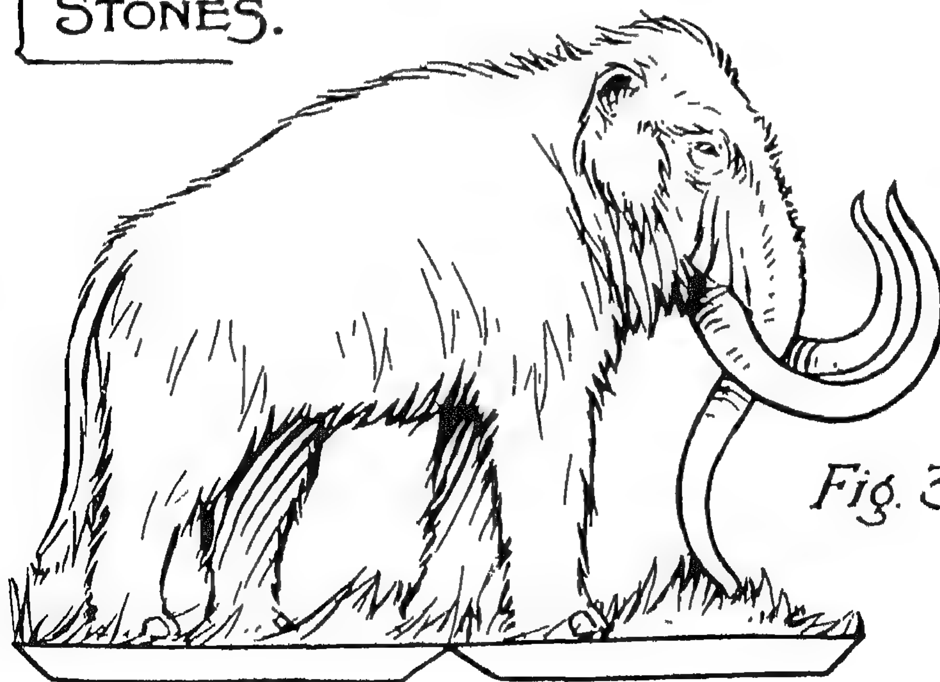


FIG I PLASTIC MODEL OF A FLINT TOOL
FIG 2 HOW FIRE WAS PRODUCED BY FRICTION
FIG. 3 PAPER-CUTTING EXERCISE—THE MAMMOTH

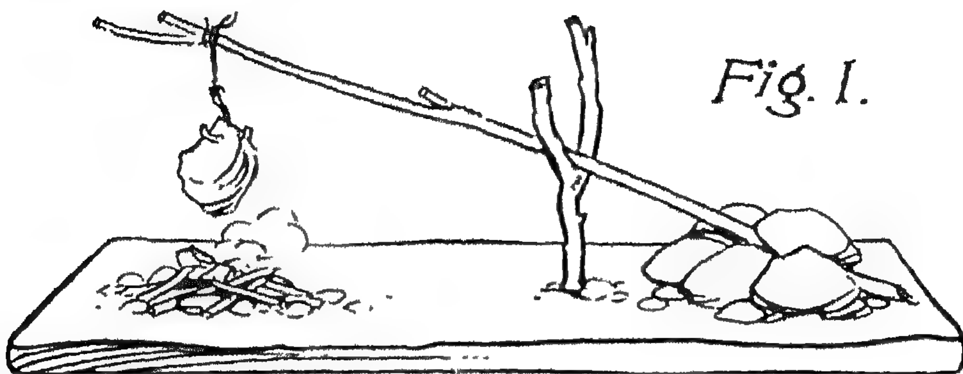
II. MAN'S BEST FRIEND

Our first illustrative model shows a primitive fire such as that by which early Man might have cooked his food. It is a simply constructed model, quite suitable for young children to make, and it looks well when finished (Fig. 1). The first stage is to smooth a mass of clay, or plasticine, on to the modelling-board, this will form a foundation upon which to build Next, a forked twig is thrust into the clay base slightly towards one end of it A long twig is rested obliquely across the fork To take the place of small boulders, irregularly shaped lumps of clay are packed upon the end of the twig, which will now be firmly held in position A small "joint" of meat is modelled, to this a short piece of cotton with a loop is fixed, and the end of the cotton is tied to the stick as shown. The children will now be able to show their ingenuity in making a fire beneath. For this, a few charred match ends, a little ash, tiny bits of brilliant red paper or wool will all be found useful For the ascending smoke, white cotton-wool may be fixed into the heap. To finish off the model the clay base may be sprinkled with fine soil, one or two small stones being added here and there

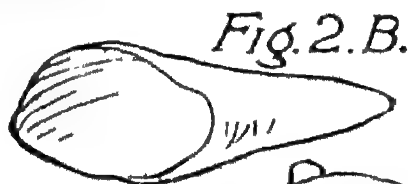
The children have been considering primitive Man's hunting implements and how he utilised sticks and stones, fashioning them into rude, yet effective weapons. The further exercises shown in the Plate offer some suggestions for handwork connected with this particular aspect of early history. The first model is that of a stone axe First of all, the handle, or haft, is made from a thick roll of clay as in Fig. 2 A One end is slightly flattened out, and with the point of the modelling tool a round hole is worked in it More clay is added to the other end to form a weighty handle. The next step is to form the axe-head from a rounded carrot-shaped mass of clay—so made that it will fit the hole in the haft (Fig. 2 B). This is a useful piece of hand and eye training. The wide end of the axe-head is smoothed between fingers and thumb to form an edge. To complete the model the axe-head is thrust through the hole in the shaft, but this is best done when the clay has hardened Two tiny wedges of wood inserted when the head is fixed will help to make it more secure (Fig. 2 C). There is danger of the brittle clay handle breaking when dry, and for this reason a thin splint of a kindergarten stick should be thrust into the handle when it is damp. The dotted line shows the position of this stick.

The next exercise shows the making of a primitive spear A narrow spear-head is made of clay in the same way as the flint tool was made in the first lesson Next a cleft stick is cut by the teacher (Fig 3 A) The head is fixed into position and is bound securely with raffia, preferably dark brown to represent leather. The teacher's demonstration model might be bound with a leather thong.

The last model, a bow and arrow, is a very simple one made from a pliable twig and a piece of thread (Fig 4).



MAN'S BEST FRIEND.



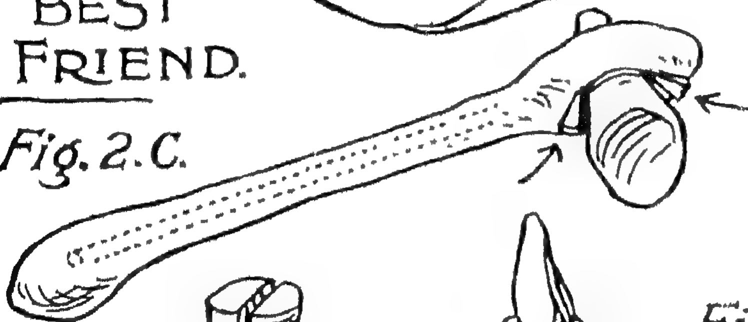


Fig. 3. A.



Fig 3. B.

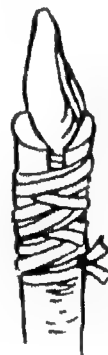
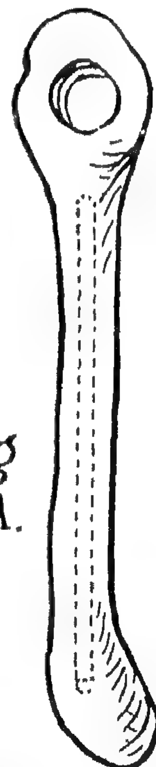


Fig 2. A.



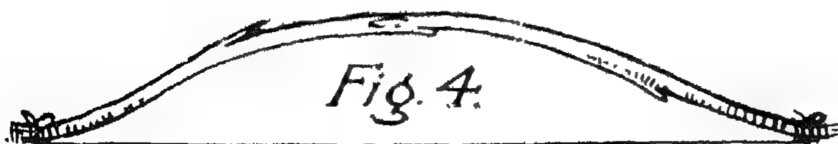


Fig. 1 Primitive Cooking—Clay and Twigs
Fig 2 Clay Model of a Stone Axe
Fig 3 Model of a Primitive Spear-Head—Clay and Twig
Fig 4. Bow and Arrow made from a Twig and a Piece of Thread

III. THE CLEVER RIVER-MEN

This lesson describes how primitive Man used his growing intelligence to fashion simple implements for the cultivation of the soil We see how a wooden hoe (which was simply a stout hooked crook cut from a neighbouring tree) made tillage possible. Later, when this hoe was modified and harnessed to a tame ox, it became a plough. The Egyptian wall paintings give us details of such implements used by the clever River-Men.

A primitive hoe makes a simple model for young children. A piece of cardboard is cut as shown in Fig. 2 A. One arm is cut fairly straight, and a little longer than the other, which latter is left rather rugged and provided with a working point. (The teacher should demonstrate with a large model, cut on generous lines in strawboard the children's exercises may be on a smaller scale and cut from thinner cardboard, or stout paper) The children will be led to see that the strengthening of such a stick would, for heavy working, be not only desirable but necessary To provide such a strengthening bar, two small holes are made and an oblique strip of card is fixed with small paper-fasteners across the angle, as shown in Fig 2 B The completed model should be tinted in washes of green and brown to represent wood.

Our next model, and one which the children will revel in making, is an Egyptian ploughing project. Although one cannot expect them to be expert draughtsmen in animal-drawing, they will find the rest of the project tolerably simple work. Fig. 1 A shows the tame bullock drawn on a large scale so that the teacher may trace it directly from the Plate, and make copies for the children. The basal flaps should be turned alternately to the front and back so that the animal will stand in an upright position. Next (Fig. 1 B), a long narrow strip of paper, or thin card, is folded, and the shape shown is cut on the fold so that it is made double, and long enough to reach from the bullock's neck in an oblique manner to the ground as in Fig 1 F. Tiny holes are made through it in the positions indicated. The next business is to plan for the coulter, or "cutter" of the plough. Again a folded sheet of thin card, or stout paper, is taken, and this is cut with the scissors so that the point comes on the actual fold as in Fig. 1 C The coulter is fixed with a paper-fastener in the fold of the previously cut strip, and another paper-fastener is inserted through the second pair of holes. The double handles are opened out a little as shown in Fig. 1 D. Arrangements must now be made to provide a collar to harness the shafts of the plough to the bullock's neck This is done with two folded strips of paper, held by a paper-fastener at back and front (Fig 1 E) In assembling the model (after the plough has been painted brown and the bullock red, brown or cream) the first step is to stick the animal, by means of the flaps, to a cardboard box lid If wished, a slit may be cut in the lid, and the flaps inserted through the slits and bent round on the under side. The harness is slipped carefully over the animal's head, and, to give a finish to the group, the base is sprinkled with soil.

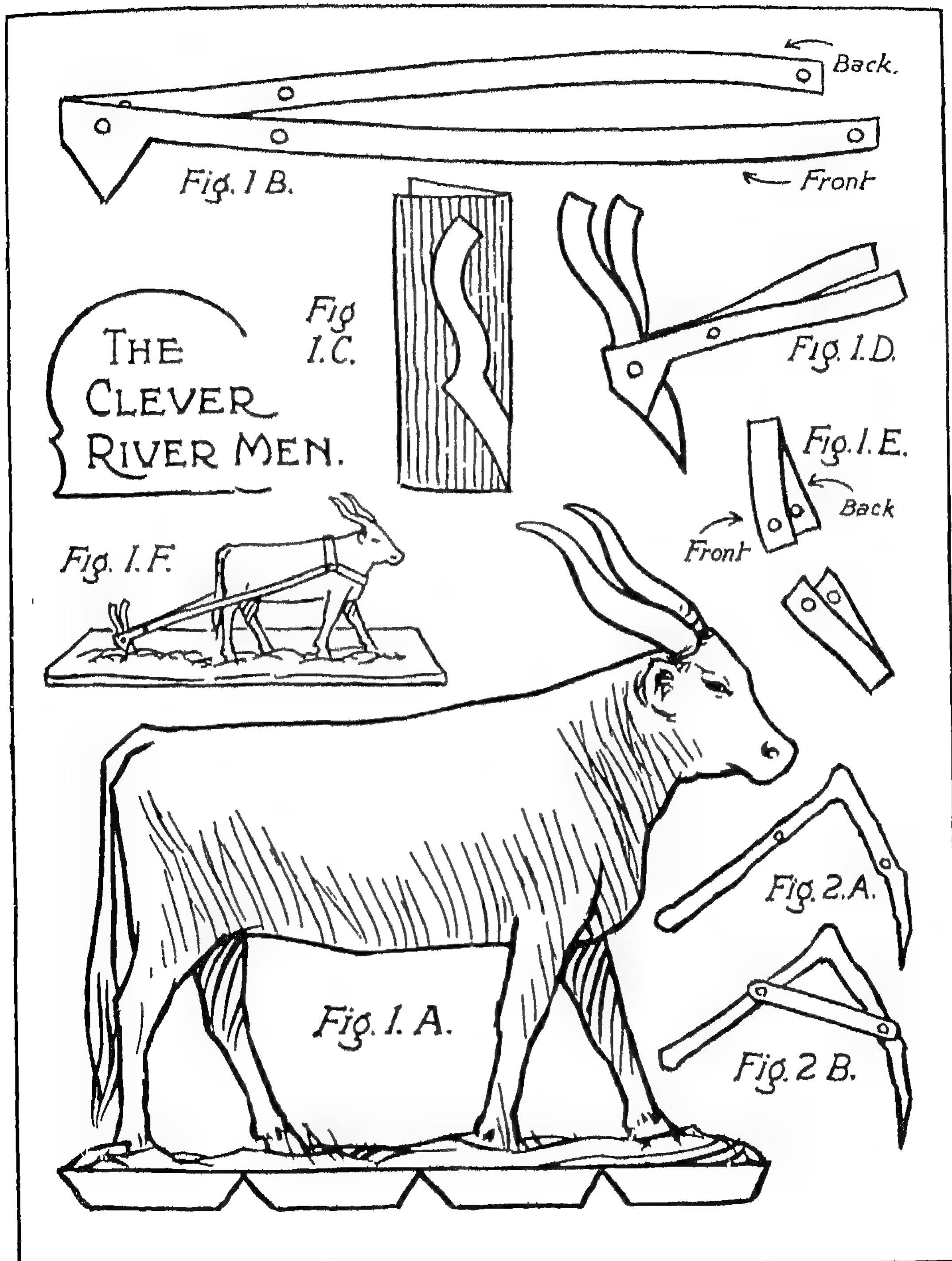


Fig 1 An Egyptian Ploughing Project to be Worked in Thin Card
Fig 2 Cardboard Model of an Egyptian Hoe

IV. THE LAND OF NO RAIN

This lesson deals with the dry lands of northern Africa, where the question of irrigation is one of paramount importance. Most children have gardens at home, and they will naturally be interested in seeing how man succeeded in constructing a primitive mechanical appliance to aid him in providing water for his crops When they have themselves made a model of a *shadoof* and played with it, they will have a much clearer conception of its working than from verbal or pictorial illustrations.

We have based our handwork on the making of a working-model of a Nile *shadoof*, and have described one suitable for the teacher's demonstration, and the other for the children's use The teacher's model will be made on a large scale, preferably in the sand tray, then, if plasticine be used, water, coloured bluish green with water-colour, may be poured around its base (Fig. 1 A). The first step is to model a mass of clay or plasticine to the shape of the bank of a river as shown in the sketch No particular care need be taken: the rougher it is, the better will be the final effect When the desired shape has been attained, two irrigation troughs are scooped out with the modelling tool or an old knife In making these, see that the one leading from the extreme edge of the river bank slopes a little down-hill, to ensure that the water shall run down this channel. A long twig is taken, and to one end of this a mass of clay, to form a counterpoise, is fixed with strands of raffia (Fig. 1 B). A little clay bucket is fixed with thread at the other end. Now, a forked twig (Fig. 1 C) is taken, and by means of a pin, which acts as a pivot, the long twig is fixed as shown so that it will swing freely up and down. The assembled *shadoof* is carefully taken, and the end of the forked twig is thrust right into the clay model of the river bank as indicated in the sketch of the demonstration model in Fig 1 A. The model is now ready for class use

For the children's model in clay, two irregularly shaped uprights are made by flattening rolls of material, of similar bulk, on to the modelling board as in Fig. 2 A. These are placed one on the top of the other, and with a knitting pin or similar tool a hole is drilled through them to receive a pivot. Next (Fig. 2 B) a kindergarten stick is taken, and this is treated in exactly the same manner as was the twig in the teacher's model Of course a twig may be used by the children if wished, though for town schools the kindergarten stick may be more easily obtained The pin is thrust through the uprights and the stick, and if the model be mounted on a box lid, it may be used on a projecting edge—e.g. a boot-box placed on a sheet of looking-glass to represent water, as in Fig 2 C. A type of bucket used by the Egyptians is shown in Fig. 2 D This might be modelled in plasticine or clay.

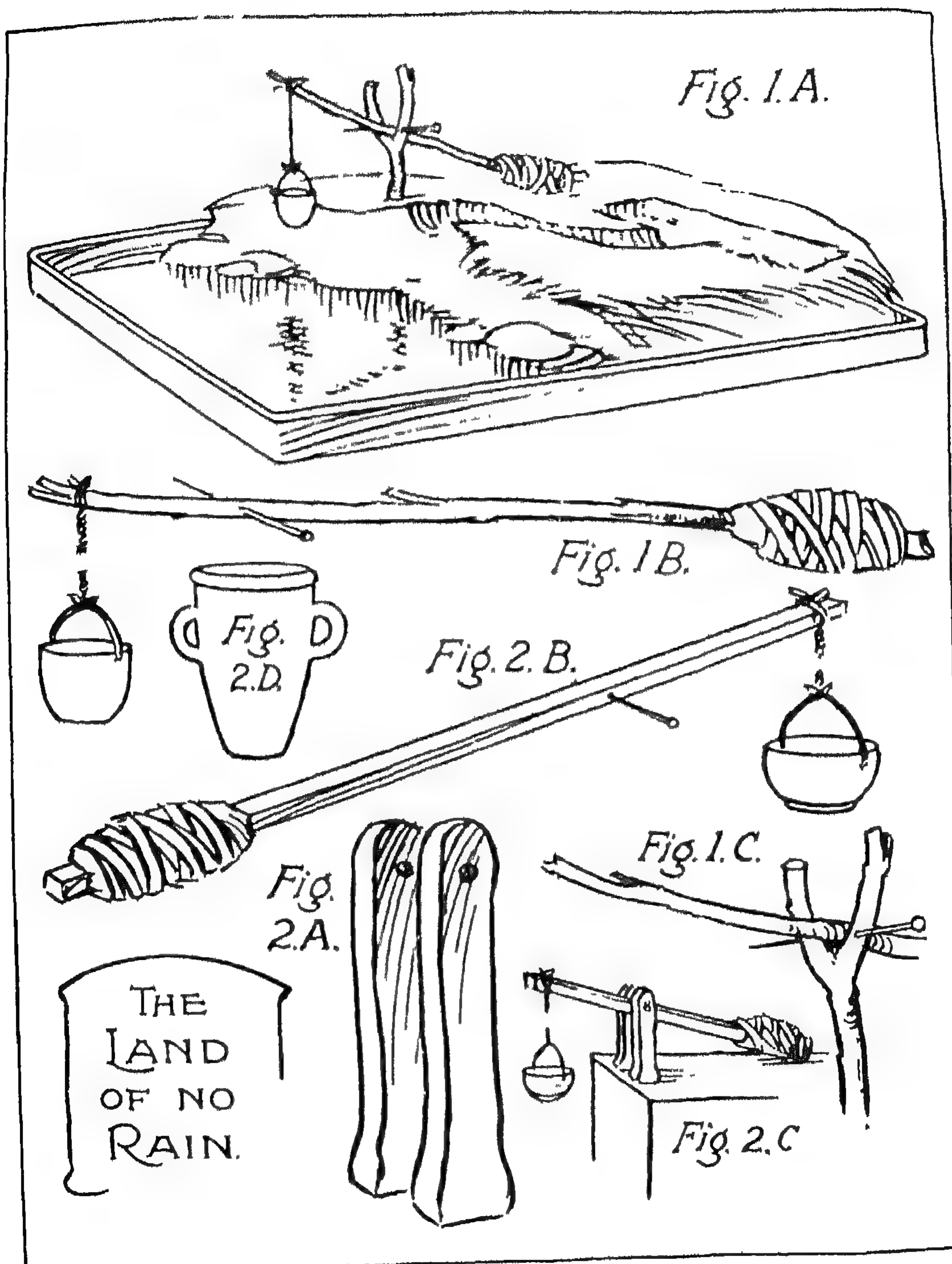


FIG 1. TEACHER'S MODEL OF NILE SHADOOF
FIG 2. CHILD'S MODEL OF NILE SHADOOF

V. CAKES WITHOUT CURRANTS

The grinding of corn depends upon pressure, which crushes the grain to liberate from the husk the flour within A study of some of the early mills, or querns, will provide useful and interesting handwork exercises for young children

One of the simplest forms of querns is shown in Fig 1 B It looks much like a pastry board and rolling-pin. Children will readily appreciate this analogy, for this is exactly the manner in which the mill was used, a cylindrical piece of stone being rolled upon a flat stone slab on which the whole grains of wheat were spread. To make this model, the children should take pellets of clay and press them together, side by side, on the modelling board to form a small slab This may be pressed down a little to form a concavity in the middle, to indicate the wear and tear on the stone that would be apparent in the course of time Next, a sphere of clay is taken, rolled between the palms of the hands and tapped at the ends on the board to form the cylindrical roller Fig 1 A shows another simple type of quern that was in vogue among the Egyptians. With this mill the worker kneeled on the flat portion, bending over a little, and rolling the stone on the oblique surface The preparatory stage of modelling is the same here as before. A slab is built up, and to this a wedge-shape is welded with fingers and thumb, a roller completes the model

A more complicated mill is shown in Fig. 1 D If this is considered too difficult for the younger children, perhaps one could be made for demonstration purposes To a circular slab of clay, a fairly regular mound-like mass of clay is added Next, a conically shaped collar is modelled so that it will fit the base like a ring. A fair amount of clearance is left at the top of the ring, for it was into this space that the grain was dropped. Into the edge of the ring, at the top, a wooden peg is fixed. The two parts are put aside to dry separately. When dry, the parts are assembled as shown in Fig 1 D.

The toy miller of Ancient Egypt will certainly appeal to the children, and seeing that it is a working toy they should be given the opportunity of making it For this purpose, thin cardboard, about the thickness of a post-card, a box-lid, a cork and a few baby paper-fasteners will be required The figure itself will receive first consideration. It is tolerably simple for the children to draw directly, but, in case the teacher wishes, it has been drawn on a large scale so that it may be traced from the plate Fig. 2 C shows the body, Fig. 2 D the arms and Fig 2 B the legs The legs are cut on double card, to fold as shown, and are provided with flaps. The holes are to receive the paper-fasteners. The assembled figure is shown in Fig. 2 E It is painted black and white, and a slice is cut from the cork and glued between the arms. A box-lid (Fig. 2 A) is provided with slits $\frac{1}{8}$ in. apart, through which the leg flaps are thrust and bent back on the under side, and a hole is made for the string, tied through the end of the body. (The dotted portions show the positions of the wedge and the cork respectively.) A wedge of clay, or of card, constructed as shown in Fig. 2 F is glued to the upper side of the lid and the remainder of the cork to the under side to form a handle.

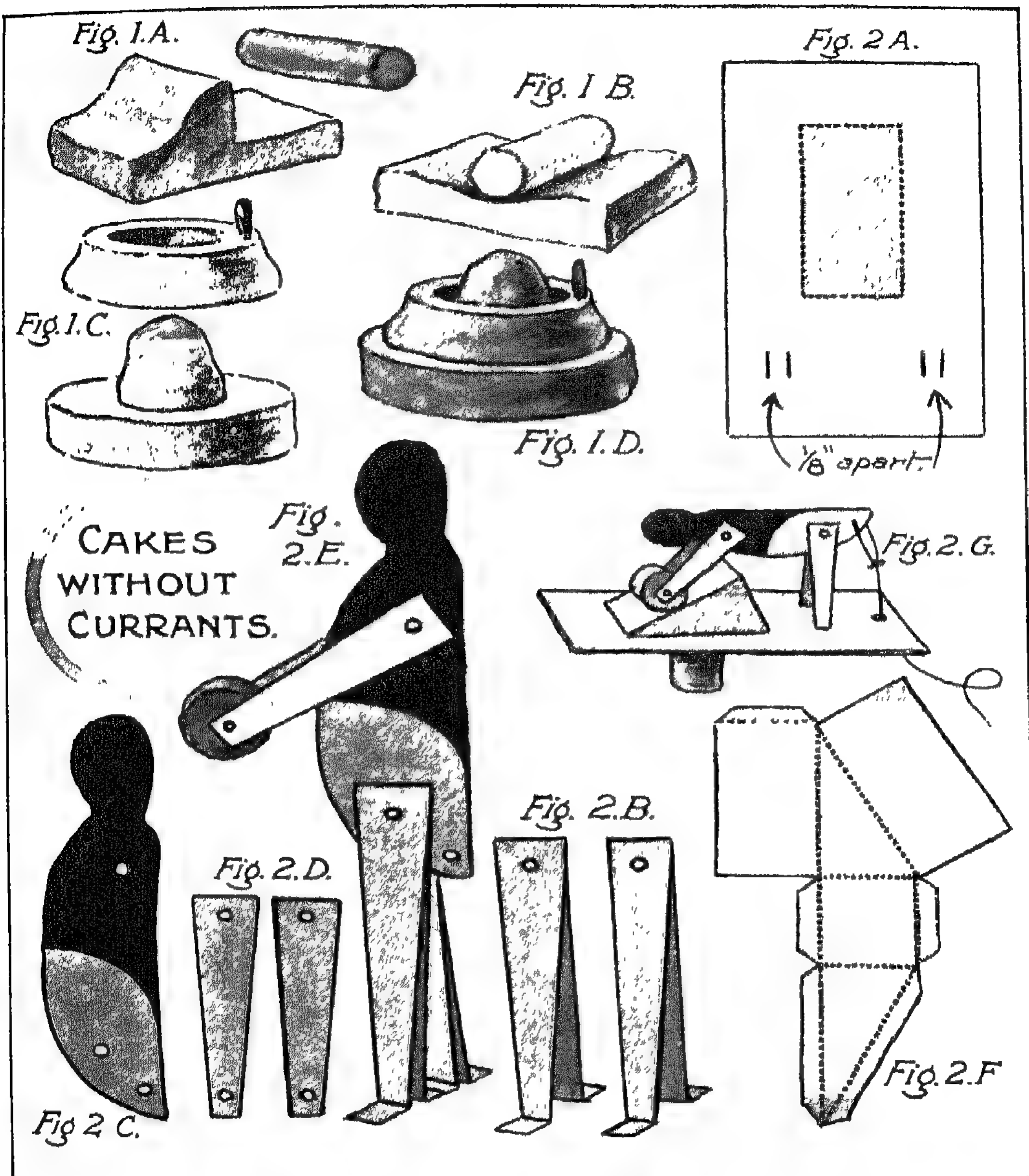


Fig 1 Primitive Mills in Clay or Plasticine
Fig 2 Working Model of Egyptian Toy Miller in Cardboard

VI. THE LAKE-MEN

This lesson deals with the Lake-Dwellers, their homes, manners and customs. The children have been told how these people cut piles of wood, drove them into the soft mud in the shallow lake waters, and went on to weave a floor, sides and roof to form their wattle dwellings, which were afterwards plastered with clay

An appropriate model for our first exercise is a simple Lake-Dweller's house, and if this be built up on a plasticine base, it may be placed in a tray of water. If plasticine is not available, clay may be used, in which case powdered blue and green pastel, or looking-glass, will serve to represent the water. For the model, a cardboard box-lid, some cardboard, raffia, bits of straw, thin twigs and clay or plasticine will be necessary. Since we must work more or less to size, we will start with the floor of the hut, which is formed by the lid of a box, with most of the face of the lid removed, leaving the sides and edges to form a simple loom. With needle and raffia, the flat surface is covered with the warp threads, working from one side to the opposite one When this is covered, the woof threads are made working over and under the warp threads (Fig 1 B). This completed, the children are ready to begin the process of house-building in real earnest A flat slab of plasticine is placed on the board, and into this are driven tiny "piles" consisting of short lengths of twigs, arranged in a roughly rectangular shape, a little smaller than the prepared floor of the house. To prevent the twigs from slipping through the floor, pellets of plasticine are fixed at the tops of the piles (Fig. 1 A). The next step is to provide for the construction of the cardboard body of the house This is shown diagrammatically in Fig 1 C It is made of thin card, with gable-ends and pointed flaps (to receive the roof) and is stuck with seccotine at the bottom to the sides of the already prepared floor. The flaps are bent inwards, and a roof consisting of a bent piece of card large enough to overhang a little on each edge is stuck to them (Fig. 1 D) The walls and roof of the house are now smeared liberally with glue or seccotine, and short lengths of brown raffia, cut straw, or fine twigs are added until the whole is covered When quite dry, the house is lifted carefully and placed upon the heads of the piles A tiny ladder at the door and a small canoe of thumb-nail dimensions, moored by means of a length of thread, complete an effective model, especially if it be placed into water (coloured with washing blue) as previously suggested (Fig 1 E) As there is a fair amount of work to be done in the construction of this model, the teacher will be well advised to allow the children to work upon it in small groups of three or four.

The lesson further tells how the early Lake-Dwellers made dugout canoes for the purpose of travelling from place to place. The making of such a canoe on similar lines provides an excellent clay-work project First of all, allow the children to roll a cylinder on the modelling board to represent the tree-trunk (Fig 2 A). Now, with the blades of their modelling-tools they should slice away the top surface and ends to make a solid boat-form as in Fig 2 B. Lastly, the point of the tool is used to remove the interior (Fig. 2 C), leaving one or two seats. When dry, the outside of the boat should be painted green and dark brown, and the interior black.

A bone harpoon, shown in Fig 3, makes another simple clay-modelling exercise.

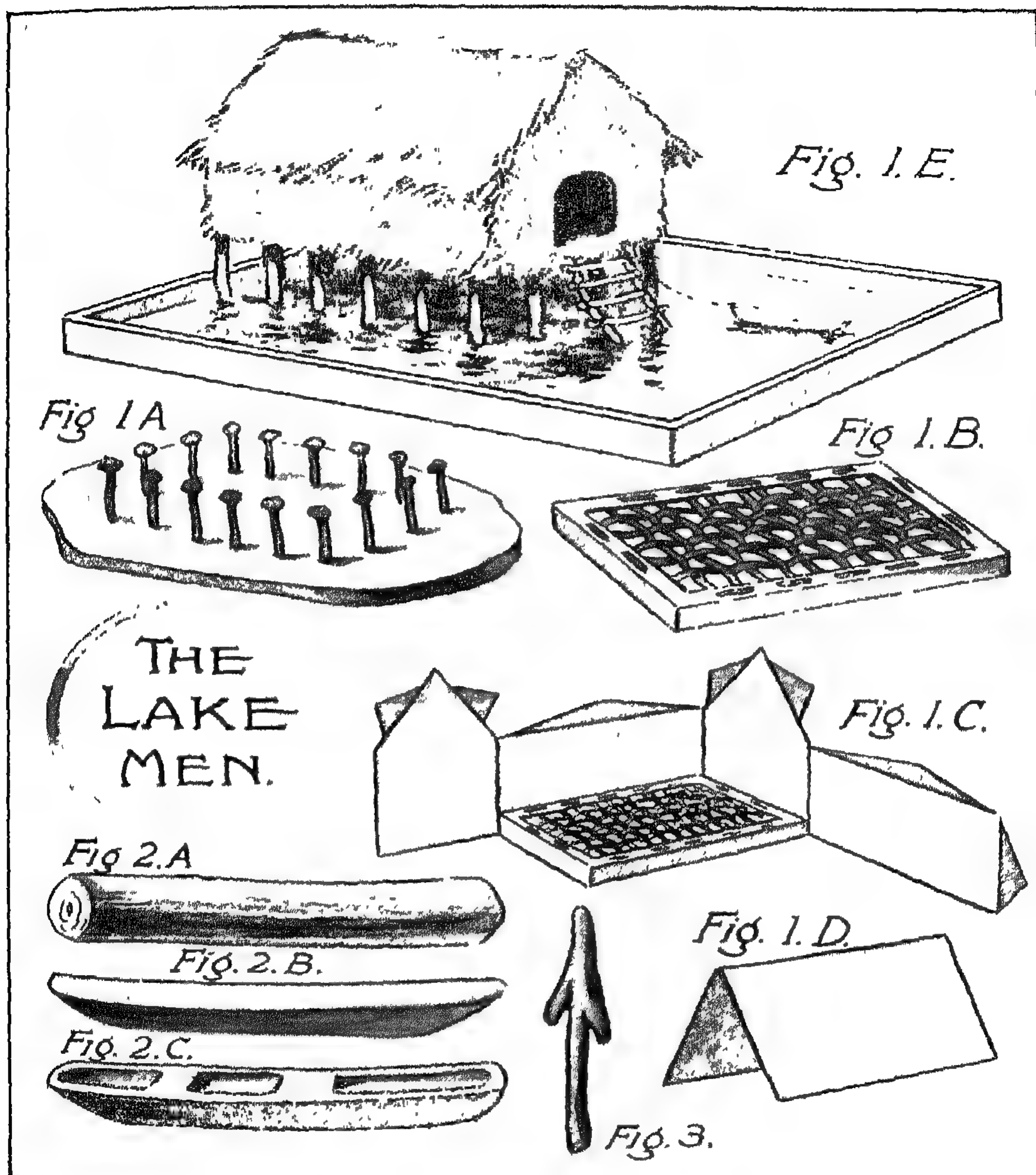


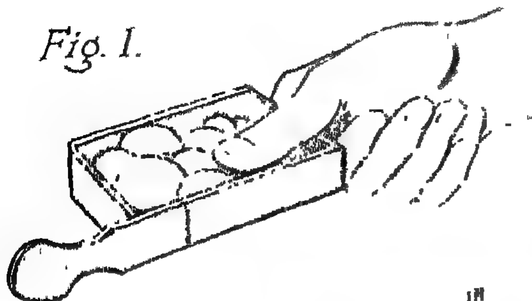
Fig 1 Model of Lake-Dweller's House
Fig 2 Dugout Canoe Modelled in Clay or Plasticine
Fig 3 Model of a Harpoon

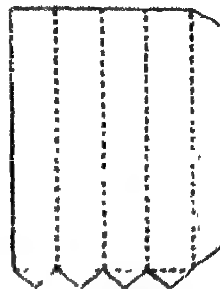
VII. THE LAND THAT NEVER CHANGES

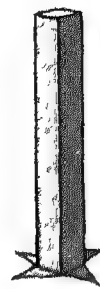
This lesson deals with Egypt in general and with the habitations of Man and his environment in particular Naturally, the first aspect is that of the early utilisation of the Nile mud for building purposes In their scripture lessons, the children will have heard of the tasks set to the Israelites during their years of captivity in Egypt, and they will have further heard how the Israelites were compelled to make bricks, and later to make bricks without straw. In the lesson under consideration, the teacher describes how the brickmakers of Egypt used a wooden brick-mould in order to secure that the sun-baked bricks should be of uniform shape and size for building purposes (A modern brick of standard size might be shown to the class) The children will gain a clearer and better conception of the process of brick-making if they are allowed to do something of the kind themselves. Fig. 1 shows how an ordinary match box with its base removed may serve as a brick-mould A small handle of thick card should be stuck on to one side of the box. Pellets of soft clay, or plasticine, are packed tightly into the box, side by side, and the top is smoothed over with the ball of the thumb If a class is at work on the exercise, a wall can be built of the bricks the children have made.

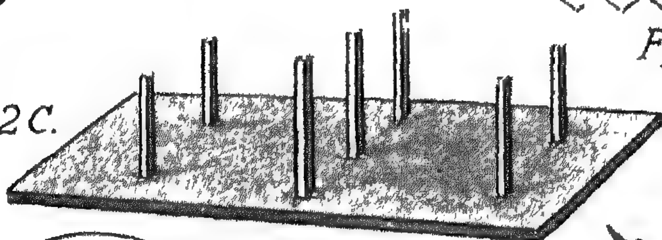
The homes of the Wanderers of the Desert are also dealt with in the lesson, and we may refer to the Biblical expression, "To your tents, O Israel!" The children will delight in making simple tents of the nomadic camel-men. A number of uprights of varying heights are constructed as shown in Fig 2 B The shape shown in Fig 2 A might be 1½ in., 2 in. or 2½ in. in height the width of each folded portion ¼ in Four triangular flaps are allowed for at the base of each upright Next, a cardboard box-lid is taken, and seven uprights are stuck on to this in irregular rows of 2, 3 and 2 as shown in Fig. 2 C (The long ones should be medially placed) Now a small piece of scrap needlework material of a light brown colour is required, this is fixed over the supports so that it will lie flat for a little way on the base board on three sides. After it has been fitted, it is cut to shape, and may be fixed down to the card by means of small paper-fasteners.

No lesson on the land of Egypt would be complete without reference to the palm tree Our last drawing on this plate shows how a realistic model of the palm tree may be constructed either by the teacher, on a large scale, or by the children working to smaller dimensions. Take a mass of clay, and roll it to the shape of the trunk of the tree. As it is liable to collapse, when in its soft state, thrust a piece of kindergarten stick, or pulp cane, down the middle (Fig 3 A). Next take a slice from a large cork, stick it to a card base, and bore a hole into it so that the projecting stick will fit into the hole Fix the tree stem into position, add small masses of clay to give the stem a roughened appearance, add stems of yew at the top and a few pellets of clay to represent clusters of dates. When dry, the stem may be painted dark brown, or, alternatively, dark brown plasticine may be used in the construction (Fig. 3 B).



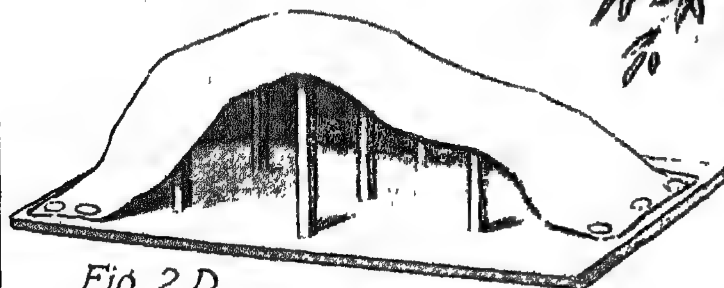






THE LAND THAT NEVER CHANGES.





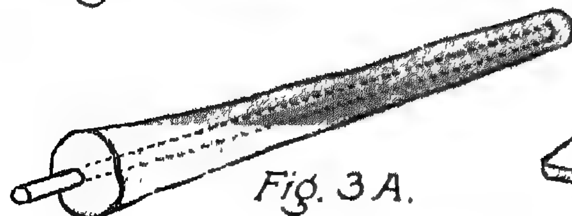


FIG 1. A SIMPLE BRICK MOULD FROM MATCH BOX
FIG 2. A DESERT-DWELLER'S TENT
FIG 3 A BUILT-UP MODEL OF DATE PALM

VIII. POTS AND PANS

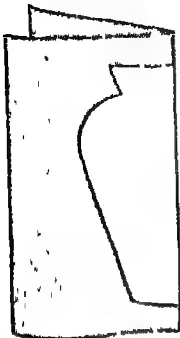
This lesson deals with the work of the early potters, how they built up their pots and pans by hand, and later, evolved mechanical means of achieving symmetrical and often beautiful results to be seen now in our museums It is only natural that this lesson should follow on from the last, showing how, after utilising clay for bricks, man progressed to construct of it implements for domestic use.

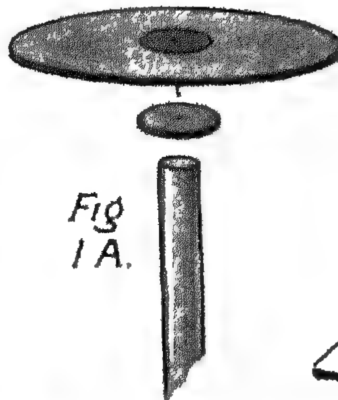
The first potters' wheels, as seen in the ancient Egyptian wall-paintings, are extremely ingenious, and the children should have an opportunity of experimenting for themselves The first handwork exercise is a simple potter's wheel on a small scale For this model an old cotton-reel and a wooden meat skewer that will fit, approximately, into the hole of the reel will be required, also a drawing-pin, some card-board, and a sheet of glass—an old photographic plate will suit admirably. The reel is stuck firmly down to the glass with seccotine Next, the meat skewer is cut to length so that when one end rests below on the glass the other end projects about ⅛ in above the reel If the skewer fits too tightly its thickness should be reduced with glass paper (This operation should be done before the skewer is cut) To minimise friction, the skewer may be rubbed with a little vaseline, or similar grease The skewer having been cut, a disc of card is fixed to the end by means of a drawing-pin, and a smaller disc is put beneath to serve as a washer (Fig 1 A). This assembled portion is now put into the reel as shown in Fig 1 B, when the top may be rotated at will

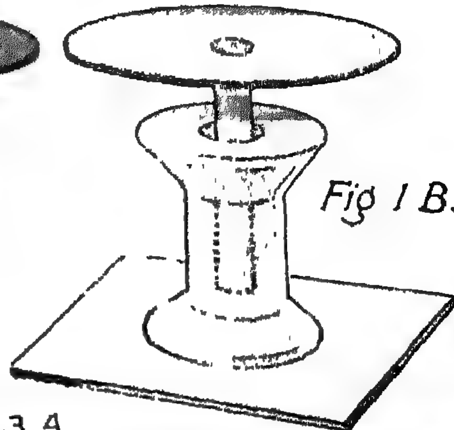
The beautiful symmetrical figures of the pottery shown in the Egyptian wall-paintings lend themselves well to free-cutting exercises that the children may work out in tinted papers. The procedure is shown in Fig. 2 A A sheet of paper is folded along the middle, and with scissors, half the vase shape is cut on the fold, so that when opened out, the symmetrical form is seen

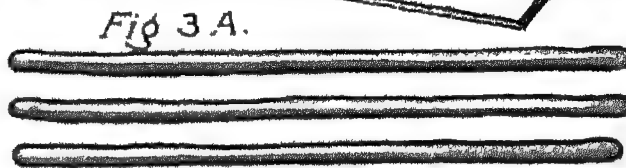
Fig. 2 B shows other shapes that might be attempted by the children If these shapes be cut on gummed paper, a pretty frieze may be built up for mural decoration by alternating figures mounted on strips of dark grey or brown paper, with borders of pastel at top and bottom (Fig 2 C).

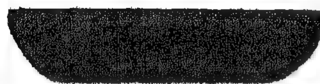
During the course of the lesson, the manner in which early Man possibly built up his pots on the lines practised by the African native potters of to-day, is described. Our last handwork exercise on this plate deals with the construction of a pot by a similar procedure The first step (Fig. 3 A) is for the children to roll out on their modelling-boards a number of thin threads or "snakes," as the children delight in calling them, of clay about ¼ in. in diameter These are stroked now and again with the sponge to keep them moist. Next a circular and spiral base is coiled on the board, as in Fig. 3 B After three or four coils have been fixed as shown, gradually the rolls are taken upwards and outwards (Fig. 3 C), new threads being fixed to the ends of those used up The hands are used inside and outside to work the clay into shape. When the requisite height has been attained, the rounded rolls are pressed with finger and thumb into the regular sides of the finished pot A simple pattern incised with the finger nail will complete the pot (Fig. 3 D).





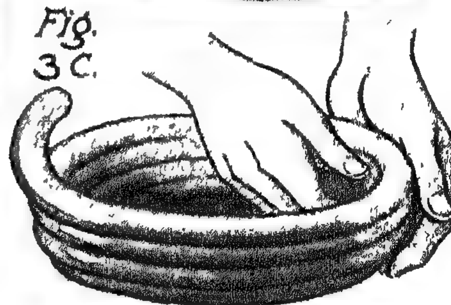


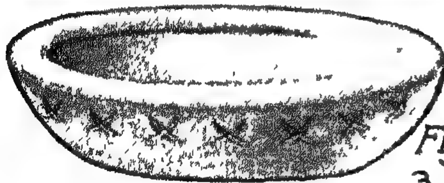










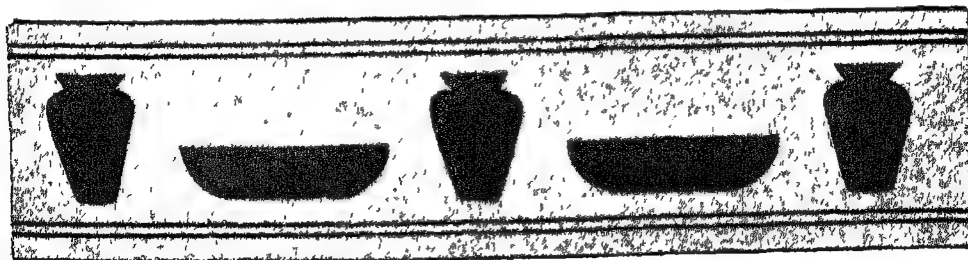


Fig. 1 A Simple Potter's Wheel
Fig. 2. Vase Shapes in Paper-Cutting
Fig. 3 A Clay Bowl made by Built-up Methods

IX. MAN'S NEW CLOTHES

We proceed in this lesson with man's early activities in the matter of providing from his environment material to be converted into clothing—for protection, and, later, for adornment. The teacher's task is to ensure that the children have a clear notion of the fundamentals of weaving, and of the way in which the woof and warp threads are woven to produce a durable material, which can be made up into garments.

The lesson opened with mention of the whorls and spindles of the early Lake-Men. Our first exercise is that of making a model spindle. A meat skewer, or any similar short length of wood, is used. This is cut to about 4 in. to 5 in. in length (Fig. 1 A). One end is sharpened a little if necessary, and at the other end, a notch is cut on one edge, as shown in Fig. 1 B. A method of constructing a whorl is shown in Figs. 1 C and 1 D. Several discs of card are cut (about 1 in. in diameter) and punched through the centre. A leather-punch is a useful tool for ensuring that the holes are regularly and neatly made. The discs are stuck together so as to form a solid disc, and this is slipped over the stick as shown in Fig. 1 D. Care must be taken to punch the holes so that the fit shall be a tight one. If this method of preparing the whorl is too complicated for young children, a ring of plasticine can be fixed round the stick in place of the cardboard disc. The children can now tie a length of wool on to their spindle and try the twisting operation described in the lesson.

A model of a distaff may be made by taking a short length of pulp cane or kindergarten stick, and twisting a mass of cotton wool (or wool from a sheep's back) round it with thread, extending the thread and fixing a tiny clay or plasticine spindle at the end (Fig. 2).

In order to impress upon the minds of the children the actual procedure of weaving, we next show a simple weaving-exercise of a paper mat. In this exercise the children may themselves experiment with the warp and woof threads (the over and under threading) and at the same time make something attractive and useful. The class should be provided with squares of 8 in. cut from brown paper. The squares are folded into halves and a margin of 1 in. is drawn round the three unfolded edges. From the fold, within the middle portion, horizontal lines are drawn at intervals of ½ in., and these are cut as shown in Fig. 3 A. The shape is turned round, and strips ½ in. wide of two contrasting colours are woven over and under as shown in Fig. 3 B. The projecting ends should be trimmed to the edge of the big square. To cover these neatly, two brown paper squares are cut so as to form a frame to be stuck at the front and back respectively (Fig. 3 C). These are cut on the folds as before. Older children should bind the edges with coloured strips ½ in. wide cut at an angle of 45 degrees to secure a neater finish (Fig. 3 D). The whole completes a useful model (Fig. 3 E).

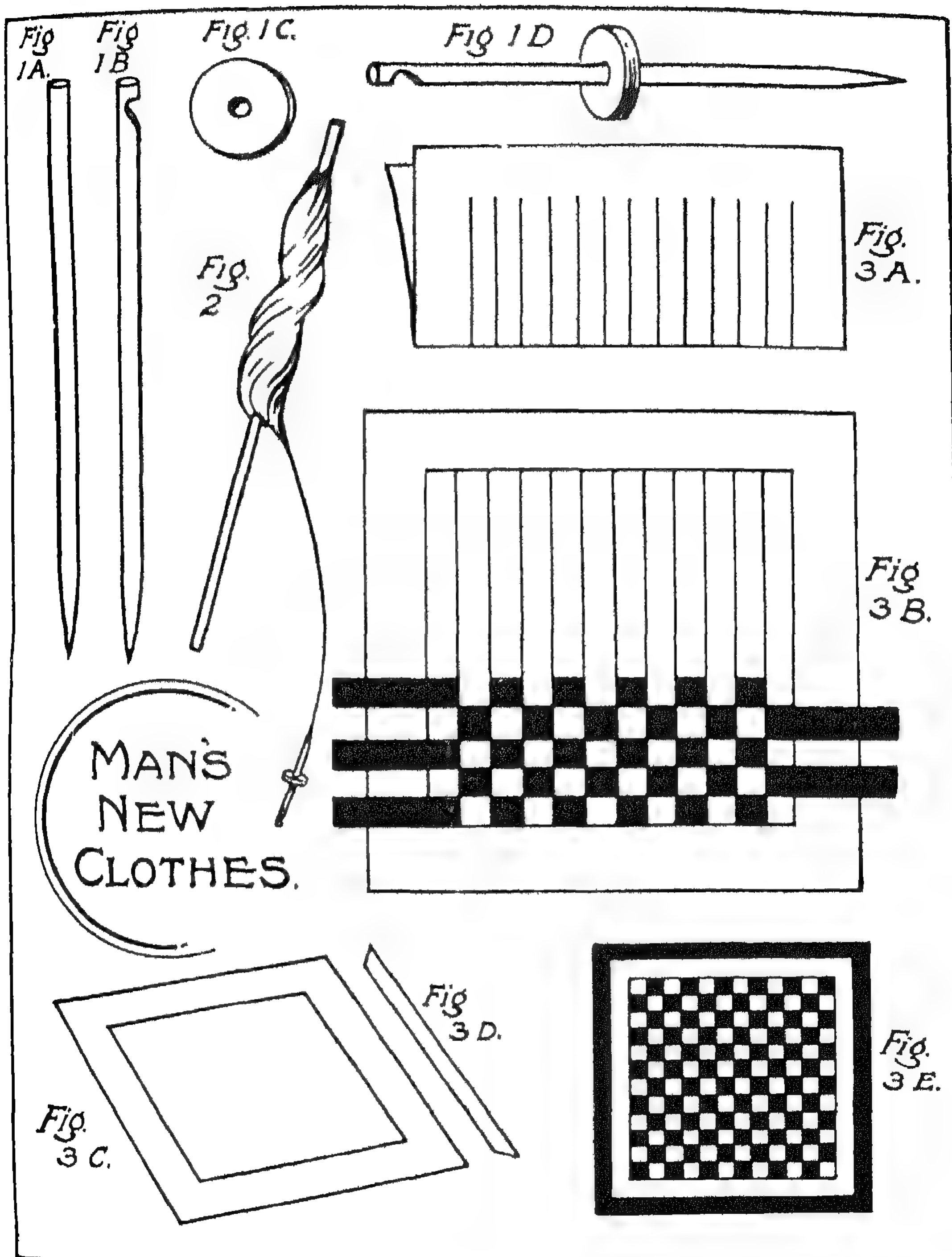


Fig 1. A Spindle and Whorl
Fig 2 Model of Distaff
Fig. 3 A Useful Mat formed by Weaving

X. EARLY DRAWING AND WRITING

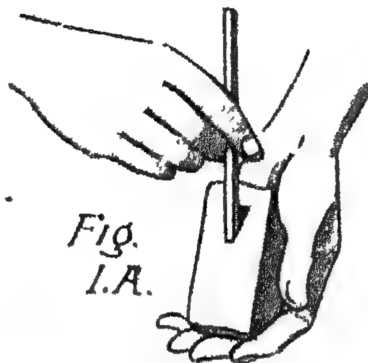
Perhaps no lesson will be more fascinating to the young child than that which deals with the beginnings of writing. The first lesson of this series, "Sticks and Stones," dealt with the primitive art of the Cave-Men, who painted pictures on the walls and ceilings of their caves. It will be noticed that the drawing of figures and animals preceded the use of an alphabet, and we therefore consider it appropriate that reference should be made to this fact in the handwork lesson

A simple yet attractive project which will appeal to young children is illustrated in Fig 3 B. It consists of a model representing a Cave-Man drawing on the wall of his cave. Take a boot-box and remove the lid and the rectangular parts of three sides. On the outside of the three rectangular openings paste pieces of red, blue and yellow paper respectively The front edges have roughly torn strips of brown paper pasted to them In one corner is fixed a brown paper "mound" and rough "wings" of brown paper are pasted within after the manner of a theatrical stage Next, a cut-out of the Cave-Man (Fig. 3 A) coloured with crayon or paint is pasted to the floor of the cave The figure has been drawn on a large scale so that it may be traced directly from the plate It is so placed in the cave that the hand may touch the wall and where it does so a rough cave-painting is sketched with pastel The floor is sprinkled with stones and soil. The brown paper front should cover the box more than is shown in the sketch, which has purposely been left open to explain construction The tinted lighting produced by the coloured papers gives a realistic effect

We next pass on to the subject of the cuneiform writings of the Babylonians Here, again, the children should practise for themselves the procedure described in the Children's Story For the actual writing, a square-ended tool is necessary A kindergarten stick will do admirably,—or a wooden meat skewer may be cut with a pocket knife to a square end Allow the children to prepare rough slabs of clay, or plasticine These slabs are held in the left hand in a semi-upright position (Fig 1 A) while the square-ended tool is manipulated in the manner shown. The angular edge is prodded into the clay and drawn along to produce the line. The children will be pleased to cover the slabs with simple cuneiform characters (Fig 1 B).

During the course of the lesson, the children are told that the Babylonians sealed their letters by means of seals, which were something like modern garden rollers in miniature. The making of such a seal provides our last handwork exercise on the plate A cylinder of clay is rolled on the board, and through this, a small kindergarten stick or wooden tooth-pick is thrust (Fig 2 A). Next, a long strip of cardboard is bent at the middle (Fig. 2 B) and fitted over the ends of the wooden axle (Fig 2 C). The roller is finally covered with cuneiform characters

EARLY DRAWING & WRITING.



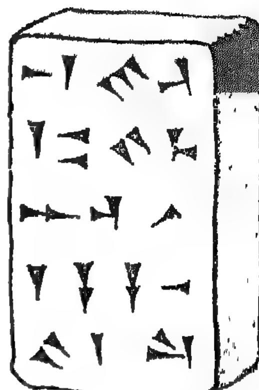
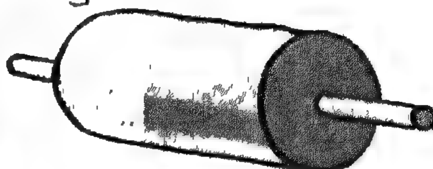


Fig. 1. B.

Fig. 2 A.



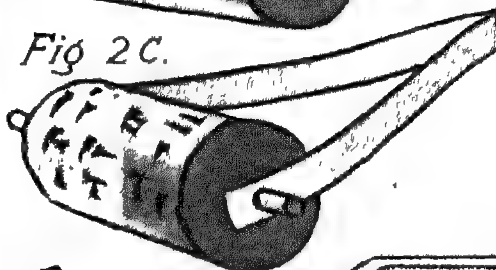




Fig. 2 B.



Fig. 3 B.

Fig. 1 Babylonian Writing on Clay
Fig 2 A Babylonian Cuneiform Seal
Fig. 3 A Cave Drawing Project

XI. PENS, INK AND PAPER

We continue with the absorbing subject of the beginnings of writing, but before approaching the matter of "Pens, Ink and Paper" we must describe one handwork exercise that really belongs to the previous lesson, but was omitted on account of exigencies of space. The lessons on writing would be incomplete without reference to an appropriate handwork model to illustrate the hieroglyphic writing of the Egyptians, which, as the children have already heard, was carved on stone. Our exercise is that of making a clay tablet bearing the name of Ptolemaios incised on it as in Fig. 3. In order to make the model doubly attractive, we have arranged that it shall be of a utilitarian character, and take the form of a paper-weight. The first stage of the model is to make a rectangular slab (Fig. 3 A). This the children take between forefinger and thumb, in an upright position, and carefully roll over, pressing slightly to round off the four corners. Next, a base is made to extend beyond two sides as shown. A match-stalk is stuck a little way into the base and the upper slab is pressed on to the upper part of the match (Fig. 3 B). This is done to hold the two parts together when dry; without the match, there would be danger of the parts separating when the model is lifted. The final decoration is done with the point of the needle-tool. A border is added to the upper portion; a number of vertical strokes, starting from the middle, are incised upon the base and, lastly, the hieroglyphic characters are marked in the damp clay (Fig. 3 C). The model is set aside to harden, and when thoroughly dry may be tinted with bright water colours, and varnished, if desired, with pale copal varnish.

In this lesson, the children learn how the Egyptians utilised the strands of the papyrus plant to produce a suitable writing surface. Fig. 1 A shows how by pasting strips of torn paper side by side, with their edges overlapping, the children may build up a continuous and fairly flat surface. The longitudinal strips are stuck first, then, when they are dry, the transverse strips are stuck down on them. Necessarily the edges will be rough. To finish the task off, a cardboard frame is stuck above the completed sheet (Fig. 1 B).

Older children might like to copy the Egyptian Scribe's "book" which was made from papyrus reed. In this instance, a frame cut to the shape shown in Fig. 2 C will be used, and finished off with a bright wool tassel. A piece of dried grass stem, frayed at one end as in Fig. 1 D, should now be used to add a few lines of Egyptian characters, which show a further development of the earlier hieroglyphic writings dealt with in the previous model.

Our last model on this plate shows a wax tablet similar to those used for writing upon by the Greeks. Fig. 4 A shows its construction in a diagrammatic fashion. Three rectangular shapes of cardboard are cut, placed together, and punched at each of the corners so that the holes correspond. One has the middle portion cut out to form a frame, the next is painted black or dark brown and is covered with candle-wax, or plasticine, the third card is left untouched. If plasticine be used there is no need for the dark surface. The three shapes are fastened together by means of tiny paper-fasteners, to form a sandwich. Next, with the aid of a knitting pin, to act as a stilus, rows of Greek characters are added.

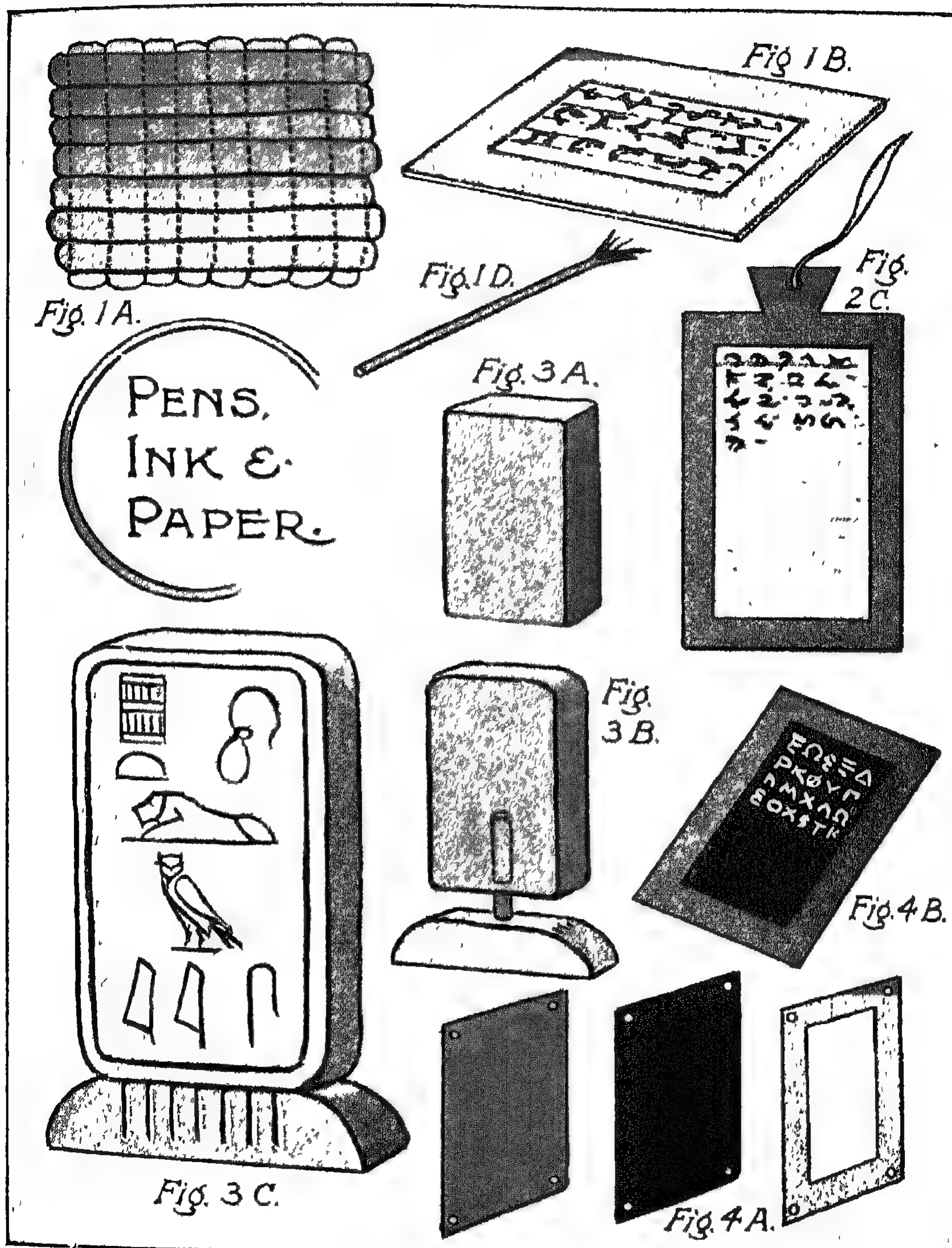


Fig 1 Egyptian Papyrus Writing
Fig 2 Egyptian Scribe's Book
Fig 3 An Egyptian Paper-Weight with Hieroglyphic Inscription
Fig 4 A Greek Wax Writing Tablet

XII. WINE AND OIL

This lesson leaves Man's accomplishments and reverts to his necessities, dealing as it does with two natural products, the fruits of the vine and the olive-tree Again and again in this lesson will the observant teacher find possibilities for correlation with the scripture lessons, for both the vine and the olive were extensively cultivated in the Holy Land

Reference is made in the lesson to the skin bottles which are common features of the East Our first handwork exercise consists of a simple model of one of these bottles to be constructed in clay, or in plasticine. Very young children might use the shape as a free-cutting exercise in brown tinted paper Our illustrations show the steps to be followed in the making of the plastic model The children, taking the portion of clay allotted to them, place it between the palms of the hands, which are cupped slightly, and by a rapid rotary movement produce a ball (Fig 1 A). This is taken between the fingers and thumb of the right hand and pressed into the shape shown in Fig 1 B, care being taken to see that one end is a little larger than the other. Next, five stunted cone shapes, one larger than the other four, are constructed and are affixed in the manner shown (Fig 1 C) to represent the neck and legs respectively of the inflated skin. The model at this stage is held in the left hand, and with the tip of the right forefinger the joins are smoothed out on to the body. A few surface markings are added with the point of the needle-tool to imitate the lacing at the neck A tiny piece of string, or thread, is tied round the end, and a clay cup completes the model (Fig 1 D)

Our next modelling exercise is the making of one of the oil jars seen in the illustration of the marble relief of Greeks employed in the process of wine production The first stage here is exactly the same as in the previously described model, for again it is begun from the sphere. When the sphere is completed and approaches something like perfection in contour, it is placed in the left hand, and the ball of the right thumb is applied in the manner shown (Fig. 2 A) The hand and the thumb are both rotated to hollow out the interior to produce a circular bowl (Fig 2 B) This procedure is doubly interesting, for it shows another method of producing a bowl. In the lesson on "Pots and Pans," the children built up the pot by means of the coil method: here they work from the solid mass, a useful teaching alternative. Next, a rounded lip is added This takes the form of a worm of clay bent round and joined at the ends to form a ring as in Fig 2 C, this is applied to the opening of the bowl (Fig. 2 D) Following this, a strip of clay, square in cross-section, is prepared (Fig. 2 E), bent to a ring and added to the rounded lip to project a little as in Fig. 2 F The completed jar is held sideways, and the round shaft of the modelling tool is placed horizontally along the rounded ring. The jar is rotated, and with very gentle pressure the concave curve in the rim is produced For the cover of the jar, a ball of clay is pressed into the mushroom shape shown in Fig 2 G, which is made large enough to cover and project a little over the jar A worm of clay is fixed round its edge to complete the model (Fig 2 H)

The last exercise illustrated is that of a Greek wine amphora cut from folded tinted paper (Fig. 3 A) This is essentially a beautiful form The rectangular portions on the neck (Fig 3 B) may be shown by sticking on narrow oblongs of a contrasting tint, or older children might remove them with the point of a knife

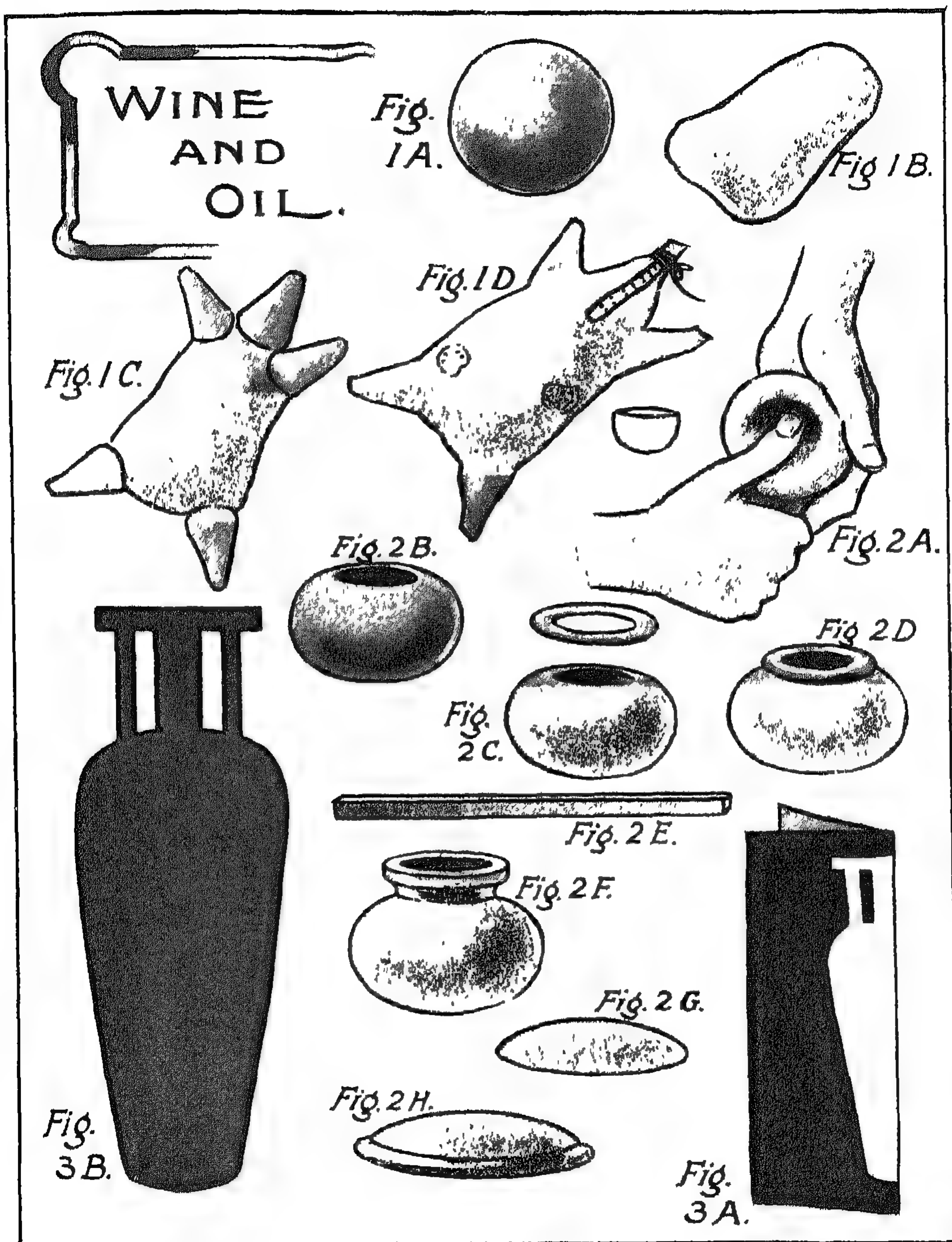


Fig 1 Plastic Model of Eastern Skin Bottle
Fig 2 A Greek Wine Jar
Fig 3 Cut-out Greek Vase

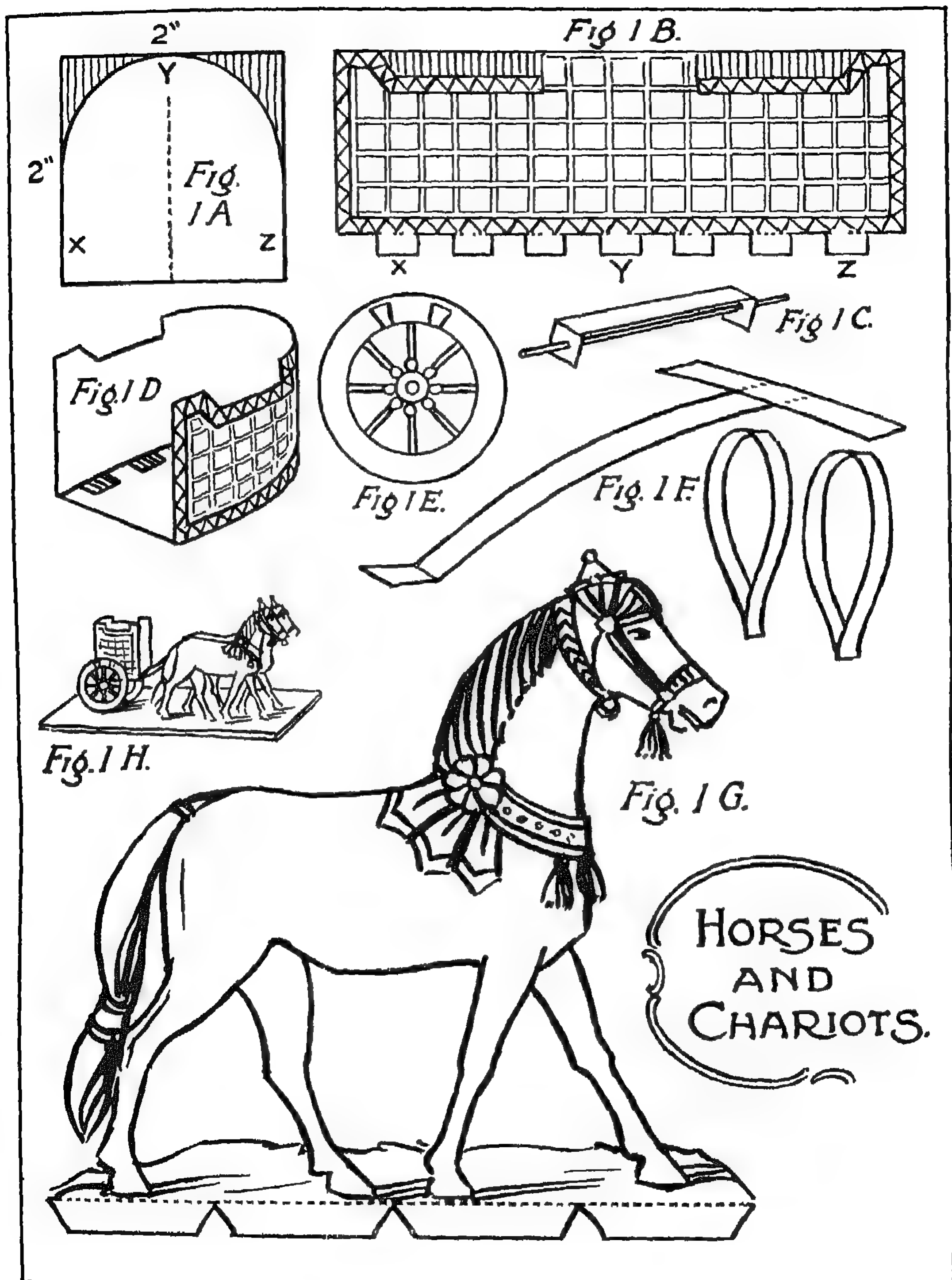
XIII. HORSES AND CHARIOTS

This lesson, the last of the historical series, deals mainly with horses and ancient chariots. Young children are always interested in horses and carts of any kind, and they usually enjoy making models of vehicles, particularly if the wheels go round. If a horse can be added, the model is made more pleasurable still to them

The sketch of the horse is simply drawn, so that the teacher may place semi-transparent paper above the plate, and go over the sketch with pencil, afterwards again outlining the shape with hectograph ink to be copied on the school duplicator In this manner, each child in the class may be readily supplied with a pair of chariot horses that may be coloured during the drawing lesson.

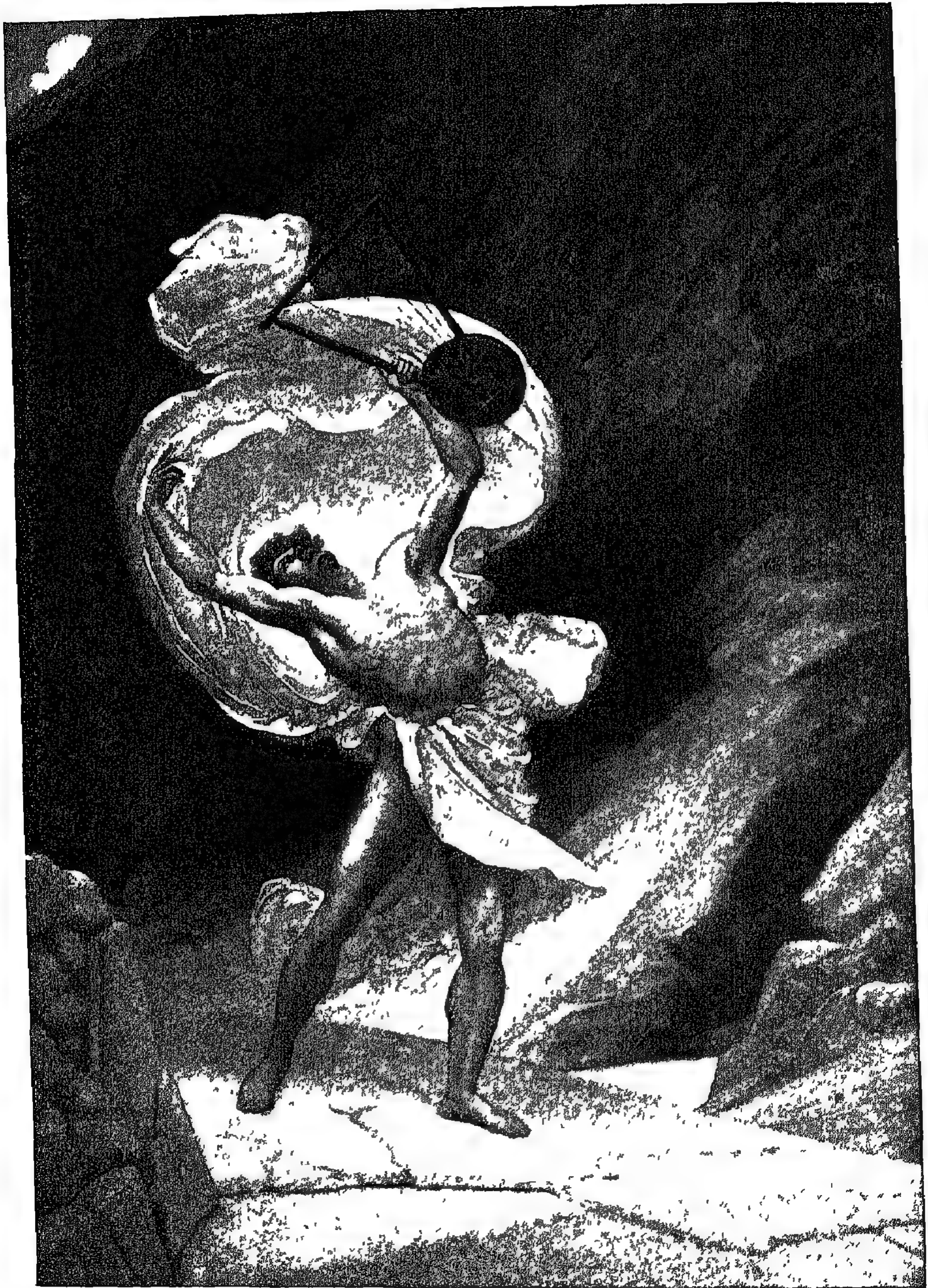
Let us next consider the planning and development of the chariot, which is a simplified copy of the one shown in the illustration of the Assyrian king's chariot in the Class Picture. In planning, allow the children to begin with the base, or floor, of the chariot This may be done in stout paper or card. If the latter be used, it will be advisable for the younger children to do their planning on 1 in squared paper, using the shapes they cut as patterns, or templates, around which they may draw with the pencil, directly on to the card Fig 1 A shows this base, which is planned on a 2 in. square. In order to ensure that the curved sides shall be exactly symmetrical, it is best to allow the children to cut the curve having the shape folded down the middle Reference to the sketch will show that we have lettered three of the four sides X, Y, Z These sides next claim our attention, for the children must measure the total length of these sides. This may present a new problem—how to measure a curved line. The matter will obviously be discussed with them before the solution is provided Measure the sides with a piece of cotton, or the edge of a piece of paper bent to fit the curve, and marked at the ends The length (which will depend upon the amount of curve) having been measured, the next task is to build up the body of the chariot. The planning of this is seen in Fig 1 B. Its total length equals the length of X, Y, Z, while its height is 2 in The top edge is cut, and small tabs or flaps are added to the lower edge as shown These flaps are bent inwards; the whole shape is rounded somewhat, and is finally stuck to the base as shown in Fig 1 D. A ¼ in. strip of fairly stout card is bent as shown in Fig. 1 C, and this is fitted with a splint of wood to form an axle, which is stuck with adhesive to the under side of the chariot base. The wheels are two cardboard discs of ¾ in. radius These may be decorated with crayons or paint. If they wobble when fitted, fix one or two small discs on the axles to act as washers.

We must now trace, draw and cut out our two horses (Fig 1 G). In colouring these, the bodies of the horses might be tinted in shades of brown, the decorations in yellow (to represent bronze) and bright red by way of contrast Having fixed our horses side by side on to a cardboard lid, our next task is to construct harness. This consists of a long strip of card, one end of which is stuck under the chariot, to the other end is attached a flat cross-piece and two cardboard collars, all stuck together. The collars are slipped over the horses' heads. The chariot should be tinted in yellow and brown



An Assyrian Chariot Project—with Cut-out Horse—Constructed in Card

THE TEACHING OF ENGLISH IN THE PRIMARY SCHOOL



From the picture by Sir William Blake Richmond R A] [*Photo W F Mansell*

ORPHEUS RETURNING FROM THE SHADES

GENERAL INTRODUCTION TO THE FOUR YEARS' COURSE

The English Lesson.—The study of English is bound up with every department of school life; this fact applies especially in the case of young children who are laying the foundations of their lifelong habits of speaking and writing In the primary school, particularly, the teaching of English cannot be confined to certain lessons or times The aim of the English lesson in itself should be to set the standard of language and to direct the progress of thought and self-expression In his four years at the primary school the child should learn to speak with fluency and good articulation, he should acquire the skill to read and understand English prose and verse suited to his age, and he should be able to express his ideas in writing on simple and familiar subjects.

True knowledge of every kind has a practical application to everyday life, and this is particularly true of the study of English It is important that from his earliest years the child should be led to regard language as a natural factor in his own life, and as a key to its secrets. Any language study, therefore, should have a direct bearing upon a subject which holds interest for the children and upon which they already possess some ideas For this reason, modern methods of teaching have discarded the use of grammatical or linguistic exercises set apart from context, in favour of a more natural means of acquiring a command of language—namely, the use of prose and verse as the basis of all language study

In the field of practical work in the English lesson there are three departments to be borne in mind training in speech, training in reading and training in writing These three aspects cannot be dissociated, they lead naturally one out of the other, and over-emphasis of any one impairs the freedom and balance of the child's outlook upon literature.

Speech training.—The first step in language study is the ability to express ideas in words which are both intelligible and pleasing to the ear. The oral work in the infant school lays the foundation of speech training, which is developed throughout the years at the primary school.

The vexed question of "standard English" demands on the part of the teacher a balanced attitude to the varying factors of accent and dialect. The general aim should be an effortless voice production, clear and natural utterance, and, as far as possible, musical vowels It is not desirable that the children should learn to speak one language at school and another at home, but rather that their own natural speech should be mellowed and purified The guiding factor is the language of the teacher himself, for correct speaking can only be assimulated, not learnt by rule of thumb

The practice of reading aloud to the class is one of great importance and one which is often neglected. The passage should first be prepared by the teacher, and the performance should be his highest attainment in pronunciation, intonation and phrasing. Such a reading may be followed by oral work by the class. Leading questions which draw out the main features of the story should be put to the children, thereby stimulating their interest and observation. Finally, certain members of the class may be asked to retell the story in parts, each child taking up the thread of the tale where the last speaker finished A high standard of utterance and expression should be kept

throughout such conversations. It is not advisable frequently to interrupt a child's answer to correct his pronunciation; a useful practice is to pick out words which give special difficulty during the lesson and to spend a few minutes in linguistic drill based on this list

The practice of reading aloud or repeating from memory passages of good English prose and verse is of great assistance to the child The traditional reading lesson, however, in which one child reads aloud while the others follow the words in their books, has lost its important place on the timetable, on account of the boredom and waste of time for the majority of the class Practice in reading aloud from standard literature may be given during lessons on all subjects, and should always be associated with the motive of giving pleasure and interest to others The reader should be given opportunity to study his passage before delivering it, for it is impossible to read well without complete understanding; mere reading aloud without study or effective criticism is of little use

The use of simple plays, both impromptu and from a textbook, furnishes a means of speech training which is specially delightful to the child In the performance of plays a high standard of utterance should be exacted, so that they form an important exercise in the development of correct speaking

The choice of prose.—In selecting material for both oral and silent reading "the literary value of the work should have first consideration" (Hadow Report, *The Primary School*, 1931), together with its suitability to the age of the child. To appreciate literature, the child must have an interest in the subject and an understanding of the language of the writer Both these factors are necessary to enable him to share with the writer that vivid sympathy which is the touchstone of true reading

As well as the literary value of the work, therefore, the following considerations should be borne in mind The vocabulary, broadly speaking, should be within the compass of a child, and the language childlike and unmannered, without the flavour of condescension. Above all, the subject matter must be of interest to the child, free from abstract thoughts, full of life and movement. The appeal to the imagination is potent with almost every child, but there are comparatively few children to whom the realm of pure fancy is the most attractive; it is the subtle blending of fancy with reality that makes the ideal child literature Children should therefore be provided with stories ranging from pure fancy to stories of actual life and natural history

Such a range of thought can be attained only by a choice of material from a range of authors, whose varying styles in themselves possess an educative value Many of the old favourites are admirably suited to children, for example *Æsop's Fables*, *Lessing's Fables*, *Grimm's Fairy Tales*, *Perrault's Fairy Tales*, and the simpler stories of Hans Andersen. Other delightful writers for children include:—Flora Annie Steel, Mrs Ewing, George Macdonald, Mrs. Craik, Maria Edgeworth, Mrs Sherwood, Mrs. Gatty, Mrs. Molesworth, Charles Kingsley, Nathaniel Hawthorne and E. Nesbit Among the most modern writers there are many excellent authors of children's books:—Kenneth Grahame, A A. Milne, Rudyard Kipling, Padraic Colum, Rose Fyleman, Hugh Lofting and others

The study of prose.—It is necessary to keep some check on the value of silent reading, and to encourage deeper thinking and comprehension, without making the task of reading wearisome or laborious. Oral discussion after the period of silent reading assists the child to formulate his ideas and to master the general substance of what he has been reading. Difficult words and phrases brought up by the children may be explained orally or by means of illustrations on the blackboard Certain phrases, for example: "exchanged

glances," "put up with the consequences," present difficulties to children and are often meaningless to them. Words or phrases of action may be dramatised by the children one to another.

Intensive study.—For the lines on which to teach language from the study of a passage of prose, we cannot do better than quote the following extract, which is taken from the section on Language Study in the *Handbook of Suggestions for Teachers* issued by the Board, now the Ministry, of Education.

"With a view to training the children in ease and accuracy in the use of language the teacher should select particular passages, as a rule in prose and preferably from a book of extracts from well-known authors. A passage so selected should not be left until the children have extracted from it, as far as they can, all that it has to give. They should understand the meaning of and use of each word that it contains and construct sentences, using some of the less familiar words appropriately. They should grasp the significance of each phrase and sentence and perceive how the ideas are related. They should recognise the general idea of the whole and summarise it in their own words. They should apply to it such grammatical knowledge as they possess, analysing it if they can into its component clauses. Finally, the whole passage should be read aloud distinctly by some of the pupils with all the rightness of phrasing, pronunciation and intonation of which they are capable.

"Practice of this kind is of the greatest importance, but it is at present far too uncommon . . . At first progress will be slow and a few sentences may occupy a whole lesson. But the value of the work will depend on its quality rather than on its quantity.

"The selection by a child of the right explanation of a phrase, whether the explanation is suggested by the context or requires recourse to the dictionary, demands from him close attention and thought. By the attempt to substitute one word or phrase for another, and by the teacher's criticism of his attempt, he can gain some elementary conception of what is meant by precision in language, of the care, on the one hand, with which a great writer uses words, and, on the other, of the vagueness of thought and disregard of shades of meaning which mark ordinary language as used by himself and others. Very careful preparation by the teacher is essential if exercises of this type are to be fully successful.

"In addition to the comprehensive exercise just described, the teacher should constantly be devising various linguistic exercises on portions of the text, to be worked by groups of scholars or the class as a whole, orally or in writing. Such exercises should involve the scrutiny of the vocabulary, form and structure of particular passages, and their object should be to render language a familiar medium, easily manipulated. It is good oral practice to conjure, as it were, with the verbal materials of a piece of English, varying the subject and object, converting short sentences into long, subordinate into principal, concrete into abstract, active into passive, direct speech into indirect and vice versa; or replacing particular words and phrases by others. For all such language experiments the material should be found in the books the children are reading rather than specially composed or taken from manuals of English. The children will thus learn while still at school to rely for progress in English on the only means which will be open to them afterwards, viz., the observation and assimilation of the language and style of what they read."

Oral composition.—In the years at the primary school the oral side of composition is the more important. Every opportunity to develop a free expression of ideas should be given. The questions should be framed to demand full and thoughtful answers, a principle which applies to all forms of oral work, the practice of encouraging "snappy"

answers and "hands up" is much to be deprecated on the ground of promoting shallow and undisciplined thinking. Care should be taken that the oral work is so graded in difficulty that each child has a fair chance to take part. It is often advisable to take sections of a large class in oral work while the other children are engaged in written exercises In connection with oral composition the natural dramatic instincts of a child should be fully utilised, by which is meant the individual's natural interpretation of certain ideas, not artificial or studied actions

The basis of the oral composition may be a story, which has been previously read aloud by the teacher, or silently by every member of the class. Suggestions for oral work based on a story are given in the section *Speech training* in this Introduction. A familiar subject—for example, *Home Life*—may be chosen as the basis on which to build the conversation between teacher and pupils Oral expression of a descriptive character should be encouraged, these descriptions may be of sounds, sights or experiences, or of a chosen picture A picture which represents a scene in a story offers a wide field for oral study.

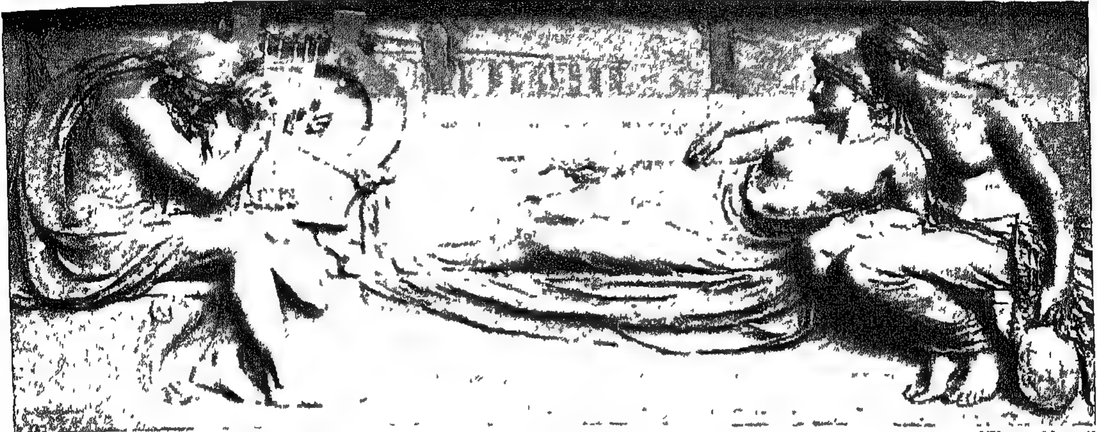
Grammar in the junior school is confined to the study of the behaviour of words in actual use; the teaching of grammar to young children is therefore inseparable from oral composition and word study The exercise may begin with the use of gapped sentences, of which all the missing words should belong to one part of speech for each exercise. Practice may be given in this way in the use of nouns, pronouns, verbs, adjectives and adverbs The use of indirect speech, division into subject and predicate, etc., afford material for further exercises on the fundamentals of grammar, while grammatical terms may be gradually introduced at the teacher's discretion

Written composition.—Written composition should not be over-encouraged in young children, as the mechanical difficulty of writing is a great handicap to them, and hinders the free flow of ideas Practice in transcription and dictation should precede the work of written composition From the start, the written work should take the form of short exercises drawn from the same source as the oral The child should possess plenty of ideas upon a subject before composing a sentence about it. The exercises should consist of sentence making, until the children have sufficient command of language and writing to compose a short essay Together with the essay should be taught the writing of simple letters on subjects which have a bearing upon the real life of the child.

Choice and study of poetry.—Nothing calls for greater taste and discrimination on the part of the teacher than the choice of poetry for young children. Over and above all other considerations, the material must be of literary merit and worthy of the name of poetry, time should never be spent on second-rate work. The qualities of lilt and rhythm appeal strongly to children; to quote again from the *Handbook of Suggestions for Teachers*—the reading and learning of English verse is "perhaps the most potent means of awakening a love for the beautiful in thought and language." Next to the literary value of the poem, both the leading idea contained in it and the style of the language must be considered The Hadow Report, *The Primary School*, ably sets out the requirements of poetry for young children: "In the study of poetry, the important thing is that the poem as a whole, whether read by the children, or to the children, should have a meaning for them. This point is sometimes overlooked, and poems of most difficult content are chosen merely because their language appears delusively easy. Whether the poem is ancient or modern, it should be excellent of its kind . . . It should not be chosen merely because it touches a sentimental chord in the heart of a grown-up person"

The child should be encouraged to select

his favourite poems and memorise them, and to recite them with all his natural feeling and expression. His delivery of his chosen poems should represent his speech at its best. Poems may be studied, like prose, with the aid of various exercises to promote understanding, but care must be taken that such exercises only increase the child's interest and enjoyment of the work. The value of poetry is rather to be felt and assimilated by young children, than to be formally studied, and the success of the poetry lesson depends primarily on the sympathetic attitude of the teacher.



By Bates [Photo Mansell

HOMER

THE FIRST YEAR'S COURSE

THE TEACHING OF LITERATURE

Scope of the Work.– Good literature is fundamental to the study of language, and all story work should be based on this principle. The material selected should be of recognised literary merit, and chosen from a variety of authors, both old and new. The stories should not be "written up" by one person, but they should preserve the varying styles of different authors, even in the simplest work. Though many of the old favourites are indispensable to child literature, a considerable body of fresh material should be included.

The exercises following the reading of the story should not be extraneous to the text, but should be framed to foster the interest and understanding of the child, and to provide for language study through the direct medium of the story. Six examples of story work treated on these lines are given in this section of *Teaching in Practice*, and each story is supplied with exercises designed to bring out its full value. All the types of exercises used, together with an explanation of the object and use of each, are given in the following pages, 136 to 138. They cover all the essential points to be considered in the study of prose.

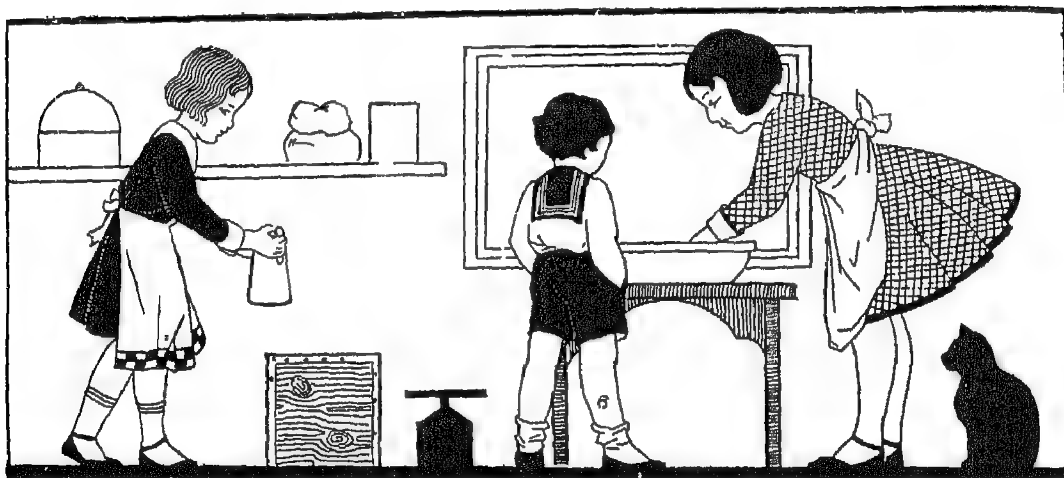
1. **Read and play.**—e g. from *Titty Mouse and Tatty Mouse:*

Play that you are a-gleaning.
Play that you are making a pudding
Play that you are hopping.
Play that you are sweeping

The aim of this exercise is to ensure a full understanding of the *actions* of the story, for thoughts of action make the first appeal to the child mind The question should be read by the children themselves, either singly or as a class, and the answer given by the appropriate action In the case of an unfamiliar word, if the teacher cannot elicit the correct action from any member of the class, she should explain the meaning of the word orally, and in some cases supplement her explanation by a drawing on the blackboard. Suitable sketches for use on the blackboard, to illustrate certain unfamiliar words which occur in the stories, are given in this book In addition to their explanatory value, these exercises will be found invaluable in promoting the children's interest and in fostering their dramatic instincts It is good and amusing training that where possible they should be allowed only to *play* and not to *speak* Both thought and care are required of a child when he is called upon to explain a word in action to other children who do not know the word Wherever possible, the teacher should elicit the action from the children themselves and not demonstrate herself

Some of the questions in *Read and Play* demand an imitative sound, or an inflexion of the voice, e.g from *Lucky and Unlucky.*

Make a chirruping noise.
Talk in a little whispering voice



2. **Do you know?**—e g from *Titty Mouse and Tatty Mouse.*

What is the colour of a mouse?
Where would you look for an ear of corn?
What scalds you?

The aim of this exercise is to encourage the faculty of visualisation that brings a story to life, and to explain any difficult words or phrases.

3. **Put together.**—e g. from *Titty Mouse and Tatty Mouse:*

The window	moulted all its gay feathers
The door	shed its green leaves.
The form	began to creak.
The bird	jarred
The broom	galloped round the house.
The walnut tree	began to sweep

This exercise is both a test of reading and a test of intelligence It gives the slower child with a good memory an equal chance with the quick-witted child. Certain children may be called upon, or the questions put one by one to the class. The division in each sentence may separate the subject and predicate, as in the above exercise, or the object and predicate, as in the following example from *The Hop About Man* :

PUT THE CARELESS THINGS STRAIGHT FOR WEE-WUN —

The door	he washed quite clean
The wood	he set on its hinges
The tables and chairs	he pulled up by the score.
The platter and spoon	he put in the woodshed.
The blue blow-aways	he put straight

By these methods the child mind is prepared for the fundamentals of analysis

4. Fill the gaps — e g from *The Hop About Man :*

Wee-Wun was a little — .

Wee-Wun saw lying upon the ground two little —— of blue and silver

The garden of the Stir-about Wife is full of golden ——.

In the spot where Wee-Wun had sown the blue seed had sprung up a huge — —.

This exercise is a test of reading, combined with opportunities for word choosing The children should supply the missing words as correctly as they can from memory, and the results should be compared with the complete sentences found in the text. The gaps in each exercise should stand for a particular part of speech, which may be given its grammatical name at the discretion of the teacher. In the above example the missing words are nouns. To emphasise the grammatical sense of the words the title may be adapted as follows.

Put in the describing words.— e g. from *Lucky and Unlucky*

The Great Plane Tree stood in the park like a —— giant

Under its great shadow —— grown-ups had rested

"We're all going to the —— lands where the sun shines all day"

5. Tell me. — e.g from *The Earthworm*

Name three things that worms eat

What do worms do in the winter ?

What creatures are the enemies of a worm ?

Why did the worm venture forth only at night ?

This exercise is purely a test of reading and comprehension

6. Marked passage : for intensive study.— e g from *Wings or Tails* .

But she had a kind heart, and not being very hungry just then, she said, "Very well," and picking him up gently in her beak she flew off with him to her home in a hollow beech tree

Who is *she* ?

Who is *him* ?

What might the Owl have done if she had not had a kind heart ? What might the Owl have done if she had been very hungry ?

What did she mean when she said, "*Very well*" ? Why are the words *Very well* placed between lifted commas ?

Which word tells you *how* she picked him up ? What word means the opposite of *gently* ?

Why should she choose a *hollow* beech tree for her home ?

Describe a *beech* Describe a *beach*.

The principles on which this method of study is based are fully set out in the General Introduction to the Four Years' Course, under the heading *Intensive Study*.

7. Make sentences telling.—e g. from *Foolish Mabel* :

(*a*) how Mabel met with an accident;
(*b*) what Mabel was like after her accident;
(*c*) what she had been like before her accident.

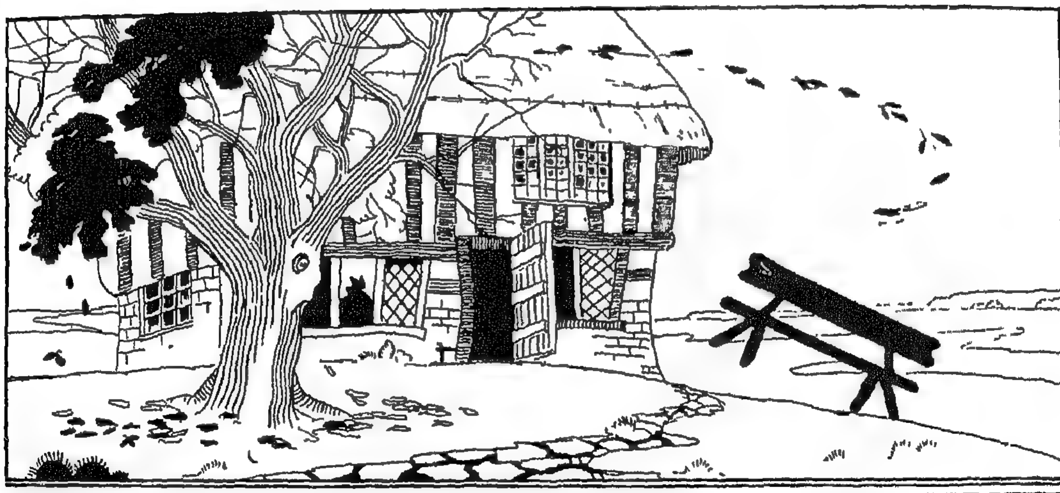
This exercise calls for original work in sentence making. The answers can be given orally or in writing according to the age and ability of the children. It is also a test of the children's knowledge of the whole story. Many more composition exercises of this character can, of course, be given at the teacher's discretion

8. Draw.—e g. from *Wings or Tails*:

A star. A field-mouse. A branch of a tree A tuft of grass

This is an additional exercise to promote the power of visualisation It is not, however, always convenient to provide the children with drawing equipment during the English lesson, but if the drawing lesson itself is made to bear on the week's story, the study of English will be felt to extend beyond the limits of the English lesson, and language discovered to be a thing of universal application.

MODEL LESSONS



TITTY MOUSE AND TATTY MOUSE

TITTY MOUSE and Tatty Mouse lived in a house

Titty Mouse went a-gleaning and Tatty Mouse went a-gleaning

So they both went a-gleaning.

Titty Mouse gleaned an ear of corn, and Tatty Mouse gleaned an ear of corn

So they both gleaned an ear of corn

Titty Mouse made a pudding, and Tatty Mouse made a pudding

So they both made a pudding

And Tatty Mouse put her pudding into the pot to boil.

But when Titty went to put hers in, the pot tumbled over, and scalded her to death, and Tatty sat down and wept

Then the three-legged stool said, "Tatty, why do you weep?"

"Titty's dead," said Tatty, "and so I weep."

"Then," said the stool, "I'll hop," so the stool hopped

Then a broom in the corner of the room said, "Stool, why do you hop?"

"Oh!" said the stool, "Titty's dead, and Tatty weeps, and so I hop."

"Then," said the broom, "I'll sweep," so the broom began to sweep.

Then said the door, "Broom, why do you sweep?"

"Oh!" said the broom, "Titty's dead, and Tatty weeps, and the stool hops, and so I sweep"

"Then," said the door, "I'll jar," so the door jarred

Then the window said, "Door, why do you jar?"

"Oh!" said the door, "Titty's dead, and Tatty weeps, and the stool hops, and the broom sweeps, and so I jar."

"Then," said the window, "I'll creak," so the window creaked.

Now there was an old form outside the house, and when the window creaked, the form said, "Window, why do you creak?"

"Oh!" said the window, "Titty's dead, and Tatty weeps, and the stool hops, and the broom sweeps, the door jars, and so I creak!"

"Then," said the old form, "I'll gallop round the house" So the old form galloped round the house.

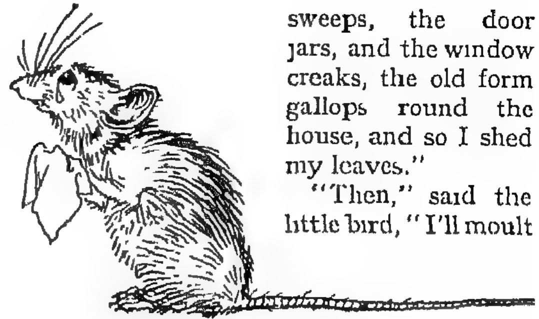
Now there was a fine large walnut tree growing by the cottage, and the tree said to the form, "Form, why do you gallop round the house?"

"Oh!" said the form, "Titty's dead, and Tatty weeps, and the stool hops, and the broom sweeps, the door jars, and the window creaks, and so I gallop round the house."

"Then," said the walnut tree, "I'll shed my leaves." So the walnut tree shed all its beautiful green leaves

Now there was a little bird perched on one of the boughs of the tree, and when all the leaves fell, it said, "Walnut tree, why do you shed your leaves?"

"Oh!" said the tree, "Titty's dead, and Tatty weeps, the stool hops, and the broom



sweeps, the door jars, and the window creaks, the old form gallops round the house, and so I shed my leaves."

"Then," said the little bird, "I'll moult all my feathers," so he moulted all his gay feathers

Now there was a little girl walking below, carrying a jug of milk for her brothers' and sisters' suppers, and when she saw the poor little bird moult all its feathers, she said, "Little bird, why do you moult all your feathers?"

"Oh!" said the little bird, "Titty's dead, and Tatty weeps, the stool hops, and the broom sweeps, the door jars, and the window creaks, the old form gallops round the house, the walnut tree sheds its leaves, and so I moult all my feathers"

"Then," said the little girl, "I'll spill the milk." So she dropped the pitcher and spilt the milk.

Now there was an old man near by on the top of a ladder thatching a rick, and when he saw the little girl spill the milk, he said, "Little girl, what do you mean by spilling the milk? Your little brothers and sisters must go without their suppers."

Then said the little girl, "Titty's dead, and Tatty weeps, the stool hops, and the broom sweeps, the door jars, and the window creaks, the old form gallops round the house, the walnut tree sheds all its leaves, the little bird moults all its feathers, and so I spill the milk."

"Oh!" said the old man, "then I'll tumble off the ladder and break my neck."

So he tumbled off the ladder and broke his neck; and when the old man broke his neck, the great walnut tree fell down with a crash and upset the old form and house and the house falling knocked the window

out, and the window knocked the door down, and the door upset the broom, and the broom upset the stool, and poor little Tatty Mouse was buried beneath the ruins

EXERCISES BASED ON THE TEXT

The plan and scope of these exercises are fully explained on pages 136–138

1. Read and play.—

Play that you are a-gleaning.
Play that you are making a pudding.
Play that you are hopping
Play that you are sweeping
Play that you are the form galloping
Play that you are carrying a jug of milk.
Play that you are burying something.

2. Do you know?—

What is the colour of a mouse?
Where would you look for an ear of corn?
What scalds you?
What is a form used for?
What is another name for a jug?
What is a rick made of?

3. Put together: selection of appropriate subject and predicate.—

The window	moulted all its gay feathers.
The door	shed its green leaves
The form	began to creak
The bird	jarred
The broom	galloped round the house
The walnut tree	began to sweep.

4. Marked passage: for intensive study The questions on this passage cover the following points: (*a*) *grammar*—pronouns, adjectives, verbs, (*b*) *word study*—use of their and *there*, words of opposite meaning, (*c*) *punctuation*—question mark—

Now there was an old man near by on the top of a ladder thatching a rick, and when he saw the little girl spill the milk, he said, "Little girl, what do you mean by spilling the milk?"

Look carefully at the words *there was*, spell the word *there.*
Which word tells you about the *man*?
What word means the opposite of *near*?
Which word tells you what the old man was doing?
Point to the thatch in the picture. What is the use of a thatch?
Who is meant by *he*?
Which word tells you about the *girl*?
Look for the mark ? and say the question Who asked the question?

"Your little brothers and sisters must go without their suppers"

Which word tells you that the *suppers* belonged to the brothers and sisters? Look carefully at the words *their suppers*, spell the word *their*. What other word have you found that sounds like *their*?

Put either *their* or *there* in the gaps in these sentences:

1. I know —— is a mouse in our house.
2. Titty and Tatty took —— ears of corn home
3. Now —— was an old form outside the house.
4. Titty and Tatty put —— puddings into the pot to boil

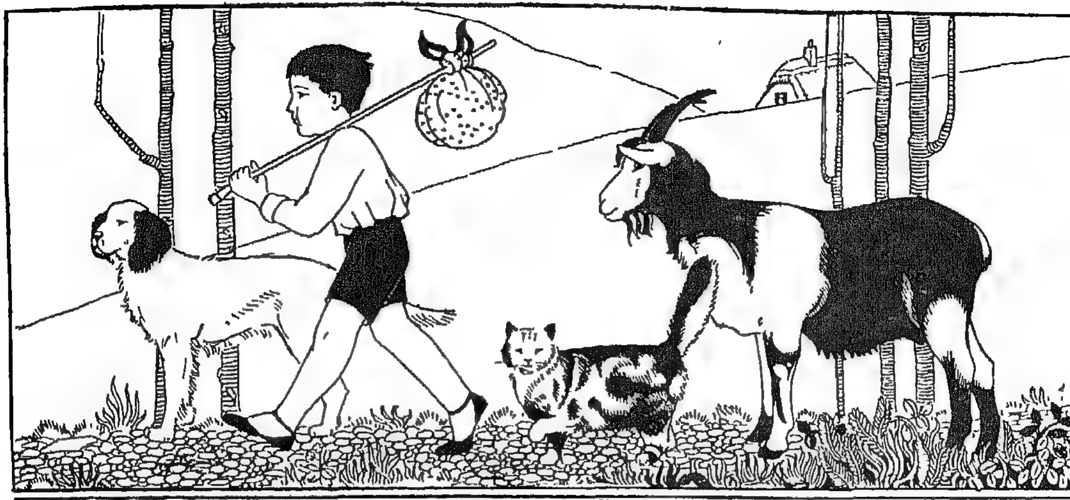
5. Make sentences telling—

(*a*) what happened to Titty Mouse; (*b*) what the old form did; (*c*) what the bird did, (*d*) what the little girl did.

6. Draw.—

A three-legged stool A bird A ladder. A pitcher

(For blackboard illustration of a Hay Rick see page 144)



HOW JACK WENT OUT TO SEEK HIS FORTUNE

ONCE upon a time there was a boy named Jack, who one morning started out to seek his fortune

He had not gone very far before he met a cat.

"Where are you going, Jack?" said the cat.

"I am going to seek my fortune."

"May I go with you?"

"Yes," said Jack, "the more the merrier"

So on they went, Jack and the cat Jiggelty-jolt, jiggelty-jolt, jiggelty-jolt!

They went a little farther and they met a dog.

"Where are you going, Jack?" said the dog.

"I am going to seek my fortune."

"May I go with you?"

"Yes," said Jack, "the more the merrier"

So on they went, Jack, the cat, and the dog! Jiggelty-jolt, jiggelty-jolt, jiggelty-jolt!

They went a little farther and they met a goat

"Where are you going, Jack?" said the goat.

"I am going to seek my fortune."

"May I go with you?"

"Yes," said Jack, "the more the merrier."

So on they went, Jack, the cat, the dog, and the goat. Jiggelty-jolt, jiggelty-jolt, jiggelty-jolt!

They went a little farther and they met a bull.

"Where are you going, Jack?" said the bull.

"I am going to seek my fortune"

"May I go with you?"

"Yes," said Jack, "the more the merrier."

So on they went, Jack, the cat, the dog, the goat, and the bull Jiggelty-jolt, jiggelty-jolt, jiggelty-jolt!

They went a little farther and they met a cock

"Where are you going, Jack?" said the cock

"I am going to seek my fortune."

"May I go with you?"

"Yes," said Jack, "the more the merrier."

So on they went, Jack, the cat, the dog, the goat, the bull, and the cock Jiggelty-jolt, jiggelty-jolt, jiggelty-jolt!

And they went on jiggelty-jolting till it was almost dark, and it was time to think of some place where they could spend the night Now, after a time, they came in

sight of a house, and Jack told his companions to keep still while he went up and looked in through the window to see if all were safe. And what did he see through the window but a band of robbers seated at a table counting over great bags of gold

"That gold shall be mine," said Jack to himself. "I have found my fortune already."

Then he went back and told his companions to wait till he gave the word, and then to make all the noise they possibly could, each in his own fashion So when they were all ready Jack gave the word, and the cat mewed, and the dog barked, and the goat bleated, and the bull bellowed, and the cock crowed, and all together they made such a terrific hubbub that the robbers jumped up in a fright and ran away, leaving their gold on the table So, after a good laugh, Jack and his companions went in and took possession of the house and the gold

Now Jack was a wise boy, and he knew that the robbers would come back in the dead of the night to get their gold, and so when it was time to go to bed, he put the cat in the rocking chair, and he put the dog under the table, and he put the goat upstairs, and he put the bull in the cellar, and bade the cock fly up on to the roof

Then he went to bed

Now sure enough, in the dead of the night, the robbers sent one man back to the house to look after their money But before long he came back in a great fright and told them a fearsome tale!

"I went back to the house," said he, "and went in and tried to sit down in the rocking chair, and there was an old woman knitting there, and she—oh, my!—stuck her knitting-needles into me."

(*That was the cat, you know*)

"Then I went to the table to look after the money, but there was a shoemaker under the table, and my! how he stuck his awl into me!"

(*That was the dog, you know*)

"So I started to go upstairs, but there was a man up there threshing, and goodness! how he knocked me down with the flail!"

(*That was the goat, you know*)



JIGGELTY-JOLT

"Then I started to go down to the cellar, but—oh dear me!—there was a man down there chopping wood, and he knocked me up and he knocked me down terribly with his axe"

(*That was the bull, you know.*)

"But I should not have minded that if it had not been for a noisy little fellow on the top of the house by the kitchen chimney, who kept calling out 'Cook him in a stew! Cook him in a stew! Cook him in a stew!'"

(*And that, of course, was the cock-a-doodle-doo*)

Then the robbers agreed that they would rather lose their gold than meet with such a fate, so they made off, and Jack next morning went gaily home with his booty

And each of the animals carried a portion of it The cat hung a bag on its tail (a cat when it walks always carries its tail stiff), the dog on his collar, the goat and the bull on their horns, but Jack made the rooster carry a golden guinea in its beak to prevent it from calling all the time.

"Cock-a-doodle-doo,
Cook him in a stew!"

EXERCISES BASED ON THE TEXT

The plan and scope of these exercises are fully explained on pages 136–138

1. Read and play.—

Make a noise like a cat
Make a noise like a hen
Make a noise like a dog
Play that you are knitting a sock
Play that you are making a shoe
Play that you are threshing wheat.
Play that you are chopping wood
Five of you play at making a hubbub.
Say the words that the cock called out

2. Do you know?—

In what way is a goat like a bull?
What is the colour of gold?
What word do you give to start a race?
How does a rocking chair rock?
Where is the cellar of a house?
What are knitting-needles made of?
What is an awl used for?

3. Tell me.—

What did the robber feel that was like knitting-needles sticking into him?
What did the robber feel that was like a shoemaker's awl?
What did the robber feel that was like a man threshing with a flail?
What did the robber feel that was like a man knocking him down with an axe?

4. Put together: selection of appropriate subject and predicate —

The cat	bleated
The dog	bellowed
The goat	crowed
The bull	mewed
The cock	barked

5. Marked passage: for intensive study The questions on this passage cover the following points: (*a*) *grammar*—pronouns, adjectives; (*b*) *word study*—meanings of words, words of opposite meaning, synonyms, (*c*) *punctuation*—capital letters, inverted commas —

Then the robbers agreed that they would rather lose their gold than meet with such a fate; so they made off, and Jack next morning went gaily home with his booty

Why is *Then* written with a capital *T*?
Why is *Jack* written with a capital *J*?
Which word tells you that the robbers all thought alike?
What word means the opposite of *lose*?
Which word tells you that the *gold* belonged to the robbers?
Who is meant by *they*?
Explain· *they made off* Why did they make off?
What was Jack's *booty*?
Why did Jack go *gaily* home? Think of another word for *gaily*
Why do you think Jack waited till the next morning to go home?
Which other word is used to mean *Jack*?

And each of the animals carried a portion of it

Name the animals
What is meant by *it*?
What is a *portion*?

The cat hung a bag on its tail (a cat when it walks always carries its tail stiff), the dog on his collar, the goat and the bull on their horns, but Jack made the cock carry a golden guinea in its beak to prevent it from calling all the time:

"Cock-a-doodle-doo,
Cook him in a stew!"

Which word tells you that the *tail* belonged to the cat?

Which other word means the *cat*?

Does a dog always carry its tail stiff when it walks?

Which word tells you that the *collar* belonged to the dog? Why does a dog wear a collar? What other animal wears a collar?

How would you hang a bag on a donkey?

Which word tells you that the *horns* belonged to the goat and the bull? Why is it wrong to write *there horns*?

Do we use golden guineas to-day?

Why would a guinea in its beak prevent the cock from calling out?

Think of another word for *prevent.*

Think of another word for *rooster*

Why do you think Jack wanted the cock to be quiet?

Why are the lifted commas " " used?

What is a *stew*?

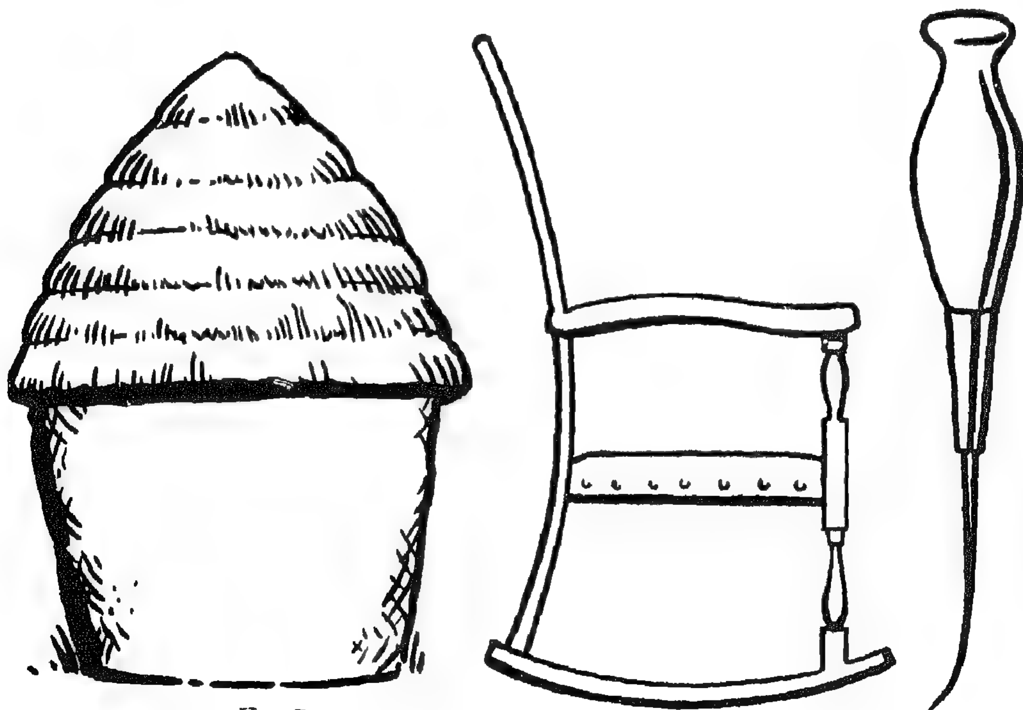
6. Make sentences telling—

(*a*) why Jack started out; (*b*) what Jack did when they first came to the house, (*c*) how Jack frightened the robbers; (*d*) why the robbers sent one man back to the house; (*e*) why the rest of the robbers did not come back

7. Draw.—

A cat A cock A bag of gold An axe A chimney

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD



HAY RICK—SEE PAGE 139
ROCKING CHAIR AND COBBLER'S AWL—SEE PAGE 142



FOOLISH MABEL

MABEL wasn't a little girl. She was a nice little motor-car—dark-grey with bits of shining metal trimming here and there and a neat bonnet. (They *do* have bonnets, you know.)

She went very nicely indeed, and her owner was very proud of her "Mabel's splendid," he used to say "She really runs by herself, *I* don't have to do anything."

And Mabel heard him say this so often that in time she began to believe that it was indeed true, and that she was quite able to do everything by herself. One day her owner had gone into a house to see some friends. There was a tiny slope in the road where Mabel stood, and no sooner was he inside than she thought she would go for a little run alone She started off very gently "Ah," she said to herself, "I can do it beautifully It is quite true, I need no one to help me." She went a little faster. She felt very proud, and was only sorry that there was no one to see her, for it was a very quiet street.

Faster, faster—she began to feel a little breathless. "I am going too quickly," she puffed. "I must slow down." But she found that this was not so easily done, she went faster than ever The houses whirled past her, everything was a bright jumble

The road made a sharp turn at the bottom and there was a big iron gate facing her.

"You can't come in here," shouted the gate, rattling all its bars excitedly. "This is private" But Mabel couldn't even hear. She dashed into the gate and crashed right through, and then collapsed in the drive When she came to herself her owner was standing over her "Oh, Mabel," he said, "I should have thought you'd have known better."

Mabel gave a sad little rattle and shed a few petrol tears. She was a pathetic sight, battered and bruised and broken, and oh, so different from her former smart self

She had to spend a month at a garage-hospital, and she was never *quite* the same after.

But she had learnt her lesson She never tried to run by herself again.

EXERCISES BASED ON THE TEXT

The plan and scope of these exercises are fully explained on pages 136–138

1. Read and play.—

Play that you are a motor-car puffing along.

Make a rattling noise on the desk with a ruler.

Play at collapsing on the floor.

2. Do you know?—

Where is a motor-car's bonnet?
What is under the bonnet?
When do houses seem to whirl past?
Where is there a hospital for people?
Where is there a garage-hospital?

3. Put together: selection of appropriate subject and predicate

Mabel's owner	gave a sad little rattle
The road	whirled past her
Mabel	was very proud of her
The houses	made a sharp turn at the bottom

4. Put in the how-words: selection by memory of adverbs used in the story, where the complete sentences may be found—

She started off very ——.

"Ah," she said to herself, "I can do it ——"

She went a little ——

"I am going too ——," she puffed "I must slow down." But she found this was not so —— done

"You can't come in here," shouted the gate, rattling all its bars ——.

5. Tell me.—

What was Mabel?

When her owner said, "Mabel really runs by herself," did he mean exactly what he said?

Why did Mabel run away?

Why could not Mabel stop?

Look at the picture and think of a name for Mabel's owner

Think of a name for the house with the iron gate

6. Marked passage: for intensive study The questions on this passage cover the following points: (*a*) grammar—adjectives, use of *different from*, (*b*) *word study*—meanings of words, words of opposite meaning, synonyms.—

Mabel gave a sad little rattle and shed a few petrol tears

Does a motor-car usually rattle? Why did Mabel rattle? Which words tell you more about the *rattle*?

Think of another word for *shed*

Why were they *petrol* tears?

What word means the opposite of *sad*?

What word means the opposite of *few*?

She was a pathetic sight, battered and bruised and broken, and oh, so different from her former smart self.

Which words tell you about Mabel?

What does *pathetic sight* mean?

Finish these sentences. 1. Laughing is different from ——. 2 Heat is different from ——.

What other things do you know that look *smart*?

Who is meant by *self*?

She had to spend a month at a garage-hospital, and she was never quite *the same after*

Why is this motor-car called *she*?

Why do people go to a hospital? Why did Mabel go to a garage-hospital? Why did Mabel have to stay such a long time at the garage-hospital?

Think of another word for *spend*

After what happening was Mabel never quite the same?

7. Make sentences telling—

(*a*) how Mabel met with an accident;
(*b*) what Mabel was like after her accident,
(*c*) what she had been like before her accident.

8. Draw.—

The bonnet of a motor-car A picture of a road with a sharp turn A notice board with the word PRIVATE on it A gate.

(For blackboard illustrations of a Radiator of a Motor-Car and a Gate see page 149)



HANS THE SHEPHERD BOY

HANS was a little shepherd boy who lived in Germany. One day he was keeping his sheep near a great wood when a hunter rode up to him

"How far is it to the nearest village, my boy?" asked the hunter

"It is six miles, sir," said Hans. "But the road is only a sheep-track. You might easily miss your way."

"My boy," said the hunter, "if you will show me the way, I will pay you well"

Hans shook his head "I cannot leave the sheep, sir," he said. "They would stray into the wood, and the wolves might kill them"

"But if one or two sheep are eaten by the wolves, I will pay you for them. I will give you more than you can earn in a year."

"Sir, I cannot go," said Hans "These sheep are my master's If they are lost, I should be to blame."

"If you cannot show me the way, will you get me a guide? I will take care of your sheep while you are gone"

"No," said Hans, "I cannot do that The sheep do not know your voice—and——" Then he stopped.

"Can't you trust me?" asked the hunter

"No," said Hans. "You have tried to make me break my word to my master. How do I know that you would keep your word?"

The hunter laughed. "You are right," he said. "I wish I could trust my servants as your master can trust you. Show me the path I will try to get to the village alone"

Just then several men rode out of the wood They shouted for joy "Oh, sir!" cried one, "we thought you were lost."

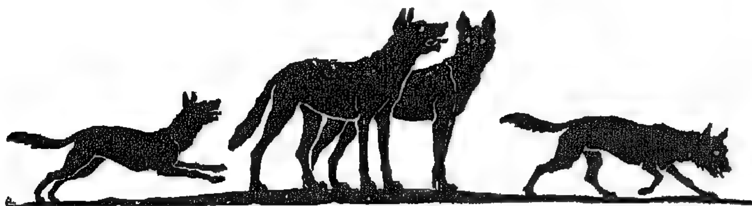
Then Hans learned to his great surprise that the hunter was a Prince He was afraid that the great man would be angry with him But the Prince smiled and spoke in praise of him.

A few days later a servant came from the Prince and took Hans to the palace

"Hans," said the Prince, "I want you to leave your sheep to come to serve me. I know you are a boy whom I can trust."

Hans was very happy over his good fortune "If my master can find another boy to take my place, then I will come to serve you," said he.

So Hans went back and tended the sheep until his master found another boy After that he served the Prince many years



EXERCISES BASED ON THE TEXT

The plan and scope of these exercises are fully explained on pages 136–138.

1. Do you know?—

What is wrong with these words: germany, france, england?

Where do sheep feed?

What has a shepherd to do?

What is a sheep-track?

What does a hunter do?

Where do wolves live?

What do wolves eat?

2. Fill the gaps: selection by memory of nouns used in the story, where the complete sentences may be found.—

Hans was a little shepherd boy who lived in ——.

One day he was keeping his sheep near a great ——

"No," said Hans "You have tried to make me break my word to my ——."

Then Hans learned to his great surprise that the hunter was a ——

A few days later a servant came from the Prince and took Hans to the ——.

3. Put right: a test of understanding of the story.—

Hans was minding his sheep in a great wood

The hunter came from the village

Hans was ready to leave his sheep

Hans trusted the hunter

The Prince was angry with Hans.

Hans left his old master at once

4. Marked passage: for intensive study The questions on this passage cover the following points: (*a*) *grammar* — pronouns; (*b*) *word study*—meanings of words, words of opposite meaning, synonyms; (*c*) *punctuation*—capital letters, inverted commas, exclamation mark —

Just then several men rode out of the wood.

What does *just then* mean?

Think of another word which means *several*. What other word means the same as *several*?

What animals do you think the men rode?

Why had they been in the wood?

What word means the opposite of *out of*?

What name is given to a very large wood?

They shouted for joy.

Who is meant by *they*?

What do you say when you shout for joy?

"Oh, sir!" cried one, "we thought you were lost."

Look for the mark ! and say why it is used in that place.

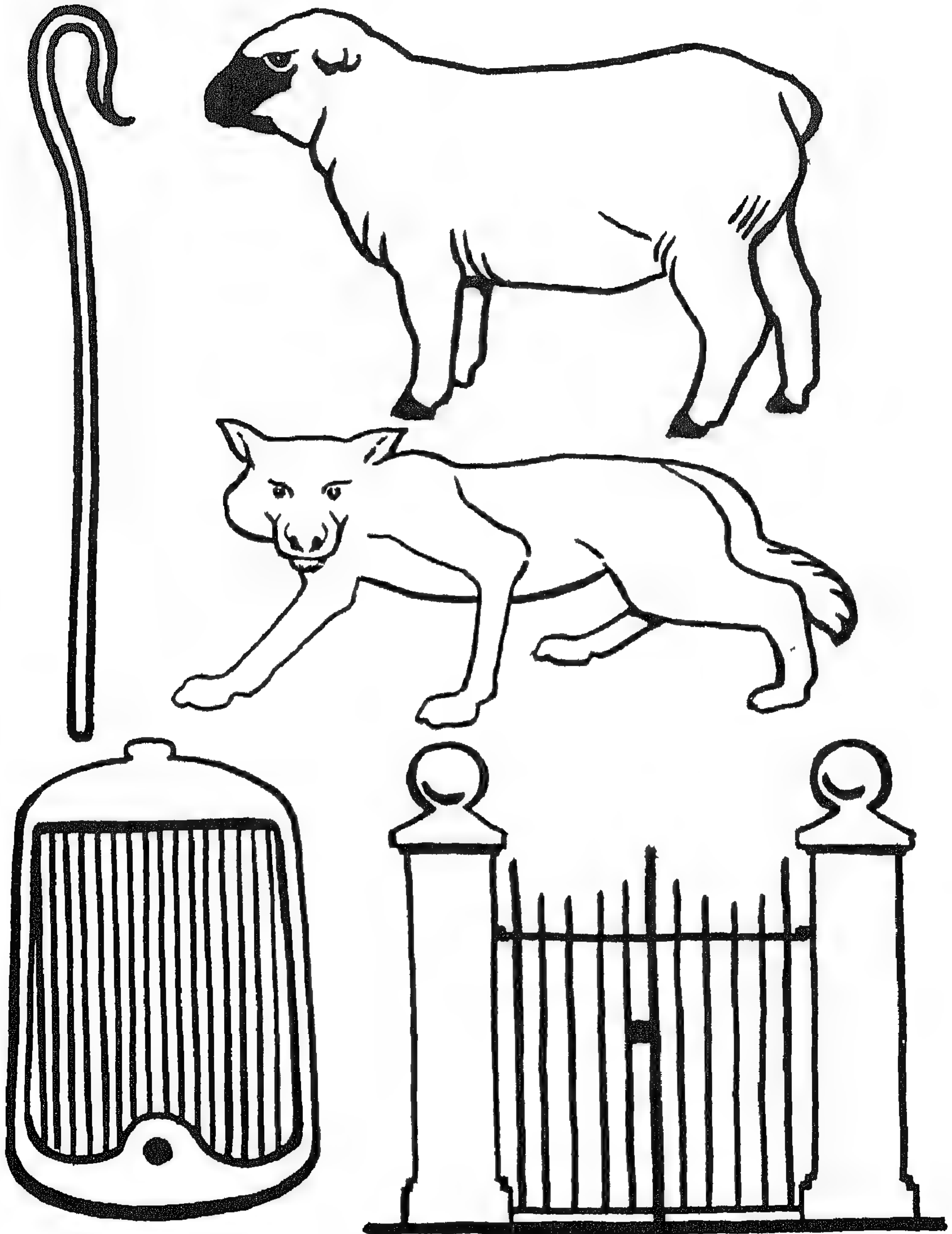
Who is meant by *one*?

Why did he call the Prince *sir*?

Who is meant by *we*? Who is meant by *you*?

Were they joyful because they thought the hunter was lost? What word means the opposite of *lost*?

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD



SHEEP, CROOK, WOLF—SEE PAGE 147
RADIATOR OF MOTOR-CAR, GATE—SEE PAGE 145

Think of another word for *cried*

Where are the commas " used? Where are the commas " used?

Then Hans learned to his great surprise that the hunter was a Prince

How do you think Hans learned this?

Do you think Hans would have behaved differently if he had known that the hunter was a Prince?

What do you do when you are surprised?

Say what is wrong with this word—*hans*; say why it is wrong.

He was afraid that the great man would be angry with him

Who is meant by the *great man*? Does *great man* mean that the Prince was a giant? Why did Hans think that he might be angry? What might the Prince have done to Hans if he had been angry? What word means the opposite of *angry*?

But the Prince smiled and spoke in praise of him.

Why did the Prince praise him?

Why did the Prince smile?

Who is meant by *him*?

Make sentences telling—

(*a*) who Hans was and what he was doing, (*b*) what the hunter wanted to know; (*c*) why Hans would not leave his sheep, (*d*) what the Prince said when he praised Hans

(For illustrations of Sheep, Wolf and Crook see page 149)



WINGS OR TAILS

ONCE, ever so long ago, about the time of Adam and Eve, a great Brown Owl sat upon the branch of an oak tree and hooted at the moon Yes, the same moon as ours And the same stars too were twinkling in the sky

She heard a rustle in the long grass under the tree, and swooping down pounced upon a Field-mouse swinging from the top of a thistle by his long, long tail.

The Brown Owl opened her beak to swallow him, but the little Field-mouse

cried out piteously, "Oh, please do not eat me"

"Why not?" asked the Brown Owl, rolling her eyes round and round and round

"Because I'm so little," replied the Field-mouse.

"Little and tender," chuckled the Brown Owl, "I must eat you"

"Please, please don't," pleaded the Field-mouse "If you will let me off I will come with you and be your servant"

The great Brown Owl laughed. But she had a kind heart, and not being very hungry just then, she said, "Very well," and picking him up gently in her beak she flew off with him to her home in a hollow beech tree.

They lived together for some time, and the Field-mouse kept the home tidy

At last, one evening, the Owl, who was now very fond of the Field-mouse, said, "It's a pity you can't fly If only you could you might come with me at night over the tree-tops and far away."

"Oh," said the Field mouse, "how I wish I could fly!"

"Do you wish it with all your heart?" asked the Owl.

"Yes, yes, with all my heart," replied the Field-mouse.

"What would you give to have wings?" asked the Owl

"Anything in the world," replied the Field-mouse

"Would you give your beautiful tail?" asked the Owl

"Very gladly," replied the Field-mouse

"Very well, then," answered the Owl. "Now go to sleep"

And when the Field-mouse slept the great Brown Owl took his beautiful tail and with her magic she made of it a pair of wonderful wings, and fastened them to his shoulders

And when he awoke she said to him, "Come along, Flitter-mouse." And off they flew together over the tree-tops and far away to see all the wondrous things under the moon.

And often enough to this very day you will find an Owl and a Flitter-mouse (or bat) sleeping together in the same old barn

EXERCISES BASED ON THE TEXT

The plan and scope of these exercises are fully explained on pages 136–138

1. Read and play.—

Make a hooting noise.

Make a rustling noise

Make a chuckling noise.

Play that you are pouncing on a little mouse

Say *piteously*, "Oh, please do not eat me"

Roll your eyes round and round

Pick up something *gently*.

2. Do you know?—

When do owls wake up?

What are the names of some of the creatures that owls eat?

What is the colour of a thistle?

Which has the longer tail, the house-mouse or the field-mouse?

What is the colour of a bat?

When do bats fly about?

3. Put in the where-words; selection by memory of adverbs used in the story, where the complete sentences may be found —

A great Brown Owl sat —— the branch of an oak tree

She heard a rustle in the long grass —— the tree

They flew together —— the tree tops and far away

You will find an Owl and a Flitter-mouse sleeping together —— the same old barn.

4. Put together; selection of appropriate subject and predicate —

A great Brown Owl	swung from the top of a thistle by his long, long tail
The stars	will find an Owl and a Flitter-mouse sleeping together in the same old barn.
The Field-mouse	hooted at the moon
You	were twinkling in the sky.

5. Marked passage; for intensive study. The questions on this passage cover the following points (*a*) *grammar*—pronouns, adjectives, adverbs; (*b*) *word study*—meanings of words, words of opposite meaning, emphasis, (*c*) *punctuation*—inverted commas, apostrophe —

"Little and tender," chuckled the Brown Owl, "I must eat you"

What did the Brown Owl mean by "*Little and tender*"? What word means the opposite of *little*? What word means the opposite of *tender*?

Why should the Owl chuckle?

Which other word is used to mean *Brown Owl*?

Who is meant by *you*?

Why are the lifted commas " " used? What did the Brown Owl say?

"Please, please don't," pleaded the Field-mouse

Say *don't* in full

Put in the two words which are understood in this sentence: "*Please, please don't* —— ——"

Think of another word for *pleaded*

Why did the Field-mouse say *please* twice?

"If you will let me off I will come with you and be your servant"

Who is meant by *you*?

Who is meant by *I*?

Which word tells you whose servant the mouse would be?

What does *let me off* mean?

The great Brown Owl laughed.

Which word tells you about the Brown Owl? What word means the opposite of *great*?

Why do you think the Owl laughed?

But she had a kind heart, and not being very hungry just then, she said, "Very well," and picking him up gently in her beak she flew off with him to her home in a hollow beech tree

Who is *she*?

Who is *him*?

What might the Owl have done if she had not had a kind heart?

What might the Owl have done if she had been very hungry?

What did she mean when she said, "*Very well*"? Why are the words *Very well* placed between lifted commas?

Which word tells you *how* she picked him up? What word means the opposite of *gently*?

Why should she choose a *hollow* beech tree for her home?

Describe a *beech*.

Describe a *beach*

6. Make sentences telling—

(*a*) where the Owl lived, (*b*) what the Mouse was doing when the Owl first saw him; (*c*) how the Owl made wings for the Field-mouse; (*d*) where the Owl and the Bat often sleep together.

7. Draw.—

A star. A field-mouse. A branch of a tree A tuft of grass

(For blackboard illustrations of Thistle, Bat and Owl see page 155)



LUCKY AND UNLUCKY

ALL through the long hot days of summer the Great Plane Tree had stood in the park like a green-robed giant.

Birds had perched upon its branches to rest, tree sparrows had built their nests in the topmost forks, and in the cool dawns had chirruped to the smiling sun.

Children had played beneath it, and under its great shadow tired grown-ups had rested from the heat of the noisy streets.

But now autumn was come with its cool nights and shorter days.

Overhead, day by day, the Great Plane Tree could hear the beating of the wings of thousands of birds. Sometimes they flew in such great flocks that their shadow swept over the park like the passing of a cloud.

And then one morning a dozen Lapwings and about twenty Starlings came fluttering down upon the Great Plane Tree.

"Thank goodness for a little rest," they twittered breathlessly. "But we can't stop long."

"Why not, indeed?" rumbled the Great Plane Tree. "Why all this hurry, and where are you off to?"

"Going south! going south!" twittered the Lapwings and the Starlings.

"Bless us all, whatever for?" cried the Great Plane Tree.

"Why, to look for the Sun," they answered.

"Sun!" laughed the Great Plane Tree. "Sun! why there he is overhead."

"Oh, yes, we know all about *that*," giggled the very littlest of the Starlings, "but he won't be there for long. We're all going to the warm lands where he shines all day. Why don't you come with us?"

At this the Great Plane Tree gave such a thundery laugh that the Lapwings and the Starlings flew off in alarm.

"A fine sight *I* should look flying through the air," chuckled the Great Plane Tree.

But all the leaves of the Plane Tree cried out in their little whispering voices, "Oh, please let us go with the birds."

"Nonsense, my dears, you stay with me," said the Great Plane Tree.

But they pleaded so hard that at last he said, "Very well, I'll ask the Wind to help."

So the Great Plane Tree shook himself, and the Wind blew ever so hard, and up into the air flew all the leaves.

But alas! they did not follow the birds,

but came tumbling down to the ground, and under the Great Plane Tree you may see them lying every year when summer has passed and chill autumn is come

EXERCISES BASED ON THE STORY

The plan and scope of these exercises are fully explained on pages 136-138

1. Read and play.—

Make a chirruping noise
Make a twittering noise
Make a rumbling noise
Give a thundery laugh
Talk in a little whispering voice

2. Do you know?—

What do we mean when we say that autumn days are shorter than summer days?

How many is a dozen?

Why do birds fly south at the end of the summer?

Do all trees shed their leaves in autumn? Where do the leaves go?

3. Put in the describing words: selection of appropriate adjectives, which may be compared with those used in the complete sentences found in the story.—

The Great Plane Tree stood in the park like a —— giant.

Under its great shadow —— grown-ups had rested.

"We're all going to the —— lands where the sun shines all day."

The leaves of the Plane Tree cried out in their little —— voices

You may see them lying every year when summer has passed and —— autumn is come.

4. Marked passage: for intensive study. The questions on this passage cover the following points: (*a*) *grammar*—pronouns, adjectives; (*b*) *word study*—meanings of words, words of opposite meaning, synonyms —

All through the long hot days of summer the Great Plane Tree had stood like a green-robed giant

Which words tell you about the *days of summer*?

Why was the tree like a *giant*? Why was it *green-robed*? What word means the opposite of *giant*?

Birds had perched upon its branches to rest, tree sparrows had built their nests in the topmost forks, and in the cool dawns had chirruped to the smiling sun

Which word tells you that the *branches* belonged to the *tree*?

Which word tells you that the *nests* belonged to the *tree sparrows*?

How do birds *perch*?

What other sparrows are there besides tree sparrows?

Why did the birds make their nests in *forked* branches? Why did they make them in the *topmost* forks?

About what time on summer mornings do birds begin to chirrup? Think of another word for *chirruped*.

When is *dawn*? Why is the dawn called *cool*? What word means the opposite of *cool*?

Why does the rising sun look as if it were *smiling*?

Children had played beneath it, and under its great shadows tired grown-ups had rested from the heat of the noisy streets

What is meant by *it*?

Why was its shadow *great*?

Who are *grown-ups*? Why should the grown-ups be *tired*?

What makes the streets *noisy*? What word means the opposite of *noisy*?

5. Make sentences telling—

(*a*) what the Plane Tree heard in the autumn; (*b*) what the Plane Tree asked the birds; (*c*) what the birds told the Plane Tree, (*d*) what the leaves wished to do, (*e*) what happened to the leaves.

(For blackboard illustrations of Bird's Nest and Lapwing see opposite page)

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD



BAT, OWL, THISTLE—SEE PAGE 150
BIRD'S NEST AND LAPWING—SEE PAGE 153



THE HOP-ABOUT MAN

WEE-WUN was a little gnome who lived in the Bye-bye Meadow, in a fine new house which he loved. To live in the Bye-bye Meadow was sometimes a dangerous thing, for all the big people lived there Wee-Wun might have lived on the other common with the other gnomes and fairies if he had liked, but he did not He liked better to be among the big people on the Bye-bye Meadow. And perhaps if he had not been such a careless fellow he might not have got into so much trouble there, but he was as careless as he could be

One day Wee-Wun was flying across the Bye-bye Meadow, with his cap at the back of his head, and his pockets full of blue blow-away seeds, when he saw lying upon the ground two little shoes of blue and silver, with upturned toes.

"Here is a find!" cried he, and he bent down over the little shoes with round eyes.

There they were, and they said nothing about how they had come there, but lay sadly on their sides, as silent as could be

"I shall certainly take them home to my fine house," said Wee-Wun the gnome, "for they must be lonely lying here. They shall stand upon my mantel-shelf and every morning I shall say, 'Good-morning, little blue shoes,' and every night I shall say, 'Good-night,' and we shall all be as happy as can be."

So he went to put the little shoes into his pockets, but he found they were already full of blue blow-away seeds

Then Wee-Wun took the blue blow-away seeds, and cast them over the wall into the Stir-about Wife's garden And he put the little shoes into his pocket, and flew away.

The garden of the Stir-about Wife is full of golden dandelions. That is because the Stir-about Wife likes best to brew golden spells that will make folk happy, and of course dandelions are the flowers you use for golden spells.

But the very next day after Wee-Wun had passed, when she came into her garden to gather every twentieth dandelion, she could hardly see a dandelion because of the blow-aways that were growing everywhere, and casting their fluff into the dandelions' eyes

When the Stir-about Wife saw this

mournful sight she wept, because her beautiful spell, which she was about to finish, was quite spoiled And after a little while she went into her house and made another spell instead.

On the morrow Wee-Wun the gnome came flying over the Bye-bye Meadow, just as careless as ever He stopped for a moment by the Stir-about Wife's garden to look at the spot where he had found the little blue shoes, to see if there were another pair there. And after he had seen that no one had dropped another pair of little blue shoes, he hung over the Stir-about Wife's wall and looked at her garden, and when he saw the blue blow-aways he laughed so much that he fell upon the ground

"That is a new kind of dandelion," said he, and he picked himself up, laughing still. Then he saw that upon the ground where he had fallen there lay a large seed that shone in the sun. It was as blue as the little blue shoes, and Wee-Wun had never seen any seed like it before He took it in his hand, and how it twinkled and shone!

"I shall plant this in my garden," said Wee-Wun, "and I shall have a plant which will have sunbeams for flowers."

So he dropped it into his pocket and flew away home. That evening he made a little hole, and when he had dropped the blue seed into it he patted the earth down

"Grow quickly, little seed," said he. Then he thought of the Stir-about Wife's garden, and he began to laugh, and he laughed now and again the whole night through

But when he awakened in the morning, alack! he laughed no more, for his fine home was so dark that he could see not a pace in front of him

"This is very odd, very odd indeed!" said Wee-Wun the gnome, and he rubbed his eyes very hard. But this was no dream, and no matter how hard he rubbed, he could not rub it away Then he heard upon the floor a clatter and a rustle, and then a stepping noise—one, two, one, two—and that was the little blue shoes that were marching round and round over the floor very steadily.

And as they marched they sang this song:

"Ring-a-ding-dill, ring-a-ding-dill,
The Hop-about Man comes over the hill
Why is he coming, and what will he see?
Rickety, rackety—one, two, three"

And they sang it over and over again.

"Well, this is a fine time to sing, when it is as dark as can be!" cried Wee-Wun. But the little shoes took no notice at all

So Wee-Wun went outside to his garden, and then he saw that the whole world was not dark, as he had supposed, but only his little home. For in the spot where he had sown the blue seed, there had sprung up a huge plant which covered over the window of Wee-Wun's fine house, and reached far above its roof

Wee-Wun began to weep, for he did not see why this thing had come to him And after he had wept awhile he went close to the fearful plant and walked round it, and looked up and down

And then he said, "Why, it is a blue blow-away!" And so it was, but far, far larger than any Wee-Wun had ever seen in his life before. And it had grown as high and as big as that in just one night.

"What will it be like to-morrow?" thought Wee-Wun, and he began to weep again But the blue blow-away took no notice of his tears, and the little shoes inside the house went on singing; so Wee-Wun had to stir his wits, and consider what was to be done. And when he had considered awhile, he set off for the house of the Green Ogre, shaking in his shoes.

The Green Ogre was planting peas, one by one When he saw Wee-Wun come along, with tears still on his cheeks and shaking in his shoes, he said.

"My little gnome, you had better keep away, lest I plant you in mistake for a pea"

But Wee-Wun said:

"Oh, dear Green Ogre, wouldn't you like a nice blue blow-away for your garden? I have one which is quite big enough for you; it is taller than my little house. You have never seen a blow-away so fine"

"And are you weeping, my Wee-Wun, because you have such a fine blue blow-away?" asked the Green Ogre, and he began to laugh

But Wee-Wun said

"I am weeping to see such a fine garden as yours without a blue blow-away in it. That is a sad sight"

himself, and he looked at the hole where the blue blow-away had been, and laughed. Then he went into his fine home, but that was no longer empty, for in the seat by the fireside sat a little man in a blue smock and feather cap And he looked quite happy and at home And above his head on the mantel-shelf were the little blue shoes, as quiet as could be.

"This is a nice thing," said Wee-Wun, opening his eyes wide "Who are you that you have come into my little house where I like to sit all alone?"



"There is something in that," said the Green Ogre, and he set down his peas, and thought. Then he said: "Very well, I will come and look at your blue blow-away." And he set off at once.

Now when the Green Ogre saw the blue blow-away in Wee-Wun's garden, he thought it was certainly the best he had ever seen, and much too fine for a little gnome like Wee-Wun. So he dug it up in a great hurry and carried it away

"There, that was managed very easily," said Wee-Wun the gnome joyously to

And the little man replied at once:

"I am the Hop-about Man, and since you have let the Green Ogre carry away the blue blow-away in which I lived, I have come to live with you."

"But my fine house is not big enough to hold two people," cried Wee-Wun

"It is big enough to hold twelve tigers," said the Hop-about Man, "so it can easily hold two little gnomes As for me, here I am, and here I mean to stay"

And not another word would he say At this Wee-Wun was in a terrible way, as you

may think But there was the Hop-about Man, and he did not seem to care, not one bit

So Wee-Wun went on his way, and when he had made a platter of porridge for his breakfast, the Hop-about Man said

"Ah, that is my breakfast, I see," and he ate it up in a twink So Wee-Wun had to make another platterful, and alack, he was careless, and let that porridge burn, and he could not eat it, though he tried hard Afterwards he went out to fetch wood for his fire, and when he had fetched it, he threw it into a corner, and he left the door wide open, so that a draught fell upon the Hop-about Man But the Hop-about Man said nothing

Then Wee-Wun went out to dig in his garden, and he dug there the whole day long, and when he came in in the evening, there was the Hop-about Man sitting in his chair When Wee-Wun looked at his blue smock and his feather cap he saw that the Hop-about Man looked just like a blue blow-away growing in the chair at Wee-Wun's fireside. But when Wee-Wun the gnome came in, the Hop-about Man flew out of his chair, and he flew all around the room, singing this song:

"Ring-a-ding-dill, ring-a-ding-dill,
Let all careless things hop about if they will"

Alack! he had no sooner sung this song than the door which Wee-Wun had left open jumped off its hinges and ran about the floor, and the wood which he had thrown into the corner flew out and rushed about too. The Hop-about Man's platter, which Wee-Wun had forgotten to wash, flew up to the ceiling, and the wooden spoon spun round like a top on the floor, and all the chairs and tables Wee-Wun had left awry began to dance

"Certainly my fine house will come down about my ears," cried poor Wee-Wun

Then he felt a tug at his hair, and that was his cap, which he had put on inside out, and which was anxious to be off and join in the fun. And his spade, which he had left lying on the ground outside, came running in at the place where the door had been, stirring everything as it came. His house was a muddle, and Wee-Wun began to weep.

"Oh, dear Hop-about Man," he cried, "do tell everything to be quiet again, please, for I can hear the walls of my fine house shaking!"

But the Hop-about Man, who was again sitting in his chair, replied

"Things will be quiet again when you have put all careless things straight"

So Wee-Wun set to work, and he wept ever so fast You see, it is difficult to put careless things straight when they are running about all the time, and you have to catch them first. But at last Wee-Wun set the door on its hinges, and put the wood in the wood cellar, and washed the Hop-about Man's platter and spoon, and set straight all the chairs and tables, and put the spade in the place where it ought to be, and he was so tired that he could hardly move another step. But the Hop-about Man did not notice him at all, and when Wee-Wun cried out to the little blue shoes:

"See how hard I am working," they were quite silent. And you do not know how silent blue shoes can be.

The Hop-about Man was falling asleep in his chair when all was finished, and Wee-Wun again shed tears.

"Oh, Hop-about Man," he cried, "are you never going away?"

And the Hop-about Man replied

"Certainly I am very comfortable here, with half of this fine house for my own, and I can only walk away if I have a pair of little blue shoes to walk in, and I can only go when you have set all careless things straight"

Poor Wee-Wun! He took the little blue shoes in a hurry, and his tears were dropping all the time

"Good-bye, little blue shoes," he said,

but the Hop-about Man did not seem to notice And when Wee-Wun gave them to him he put them upon his feet, but he did not stir, not an inch.

Then Wee-Wun sighed a long sigh, and he flew over the Bye-bye Meadow till he reached the garden of the Stir-about Wife, which is bound about by a wall And there all night he weeded, pulling up blue blow-aways by the score. But when in the morning he went back to his fine house, the Hop-about Man was gone.

EXERCISES BASED ON THE TEXT

The plan and scope of these exercises are fully explained on pages 136–138.

1. Read and play.—

Play that you are looking with round eyes at something

Play that you are Wee-Wun planting his seed.

Make a clatter.

Make a rustle

March round the room—one, two; one, two.

March round the room and sing the song of the shoes.

Make a draught

Put your books awry.

Make a chair dance

Play that you are considering.

Play that you are shaking in your shoes.

Play that you are digging.

Play that you are weeding.

2. Do you know?—

What grows in a meadow?

What grows on a common?

What is the colour of peas?

Is burnt porridge nice to eat?

Where ought a spade to be kept?

How many is a score?

3. Put in the name-words: selection by memory of nouns used in the story, where the complete sentences may be found—

Wee-Wun was a little ——.

Wee-Wun saw lying upon the ground two little —— of blue and silver.

The garden of the Stir-about Wife is full of golden ——

In the spot where Wee-Wun had sown the blue seed had sprung up a huge ——.

The Green Ogre was planting ——, one by one

Wee-Wun made a platter of —— for his breakfast

The door which Wee-Wun had left open jumped off its ——

4. Put the careless things straight for Wee-Wun: selection of appropriate subject and predicate—

The door	he washed quite clean.
The wood	he set on its hinges
The tables and chairs	he pulled up by the score
The platter and spoon	he put in the wood-shed
The blue blow-aways	he put straight

5. Tell me.—

Where did Wee-Wun live?

What did Wee-Wun find?

What did Wee-Wun throw into the Stir-about Wife's garden?

Who do you think put the large blue seed for Wee-Wun to find?

Why did Wee-Wun's house become dark?

Whom did Wee-Wun find in his house after the large blow-away had gone?

Why did Wee-Wun have to put all careless things straight?

How did Wee-Wun lose his little blue shoes?

What was the last careless thing that Wee-Wun had to put straight before the Hop-about Man would go away?

6. Marked passage: for intensive study The questions on this passage cover the following points: (*a*) *grammar*—pronouns, adjectives, adverbs, form of the possessive, (*b*) *word study*—meanings of words, words

of opposite meaning, synonyms; (c) *punctuation*—capital letters —

Now when the Green Ogre saw the blue blow-away in Wee-Wun's garden, he thought it was certainly the best he had ever seen, and much too fine for a little gnome like Wee-Wun.

Think of another word for *Ogre*. Why do the words *Green Ogre* begin with capital letters?

Which other name-words begin with capital letters?

Why was the gnome called *Wee-Wun*? Which name do you prefer for a gnome—*Wee-Wun* or *Little-One*?

What do the lifted comma and the *s* in *Wee-Wun's* tell us? Write with a lifted comma: the peas of the Ogre; the seed of Wee-Wun.

Tell the proper names for *he* and *it*.

What word means the opposite of *best*?

What does *fine* mean? What does *fine* mean when we say *fine thread*, or *fine hair*?

Which word tells you about the gnome? Think of another word for *little*.

So he dug it up in a great hurry and carried it away

Who is meant by *he*?

What is meant by *it*?

Why did he dig it up *in a hurry*?

Think of other words for *in a great hurry*.

Where do you think he took the blow-away? From what place did he carry it away?

"There, that was managed very easily," said Wee-Wun the gnome joyously to himself, and he looked at the hole where the blue blow away had been, and laughed.

What do these lifted commas " " show?

Say *that was managed* in other words. What had Wee-Wun managed to do? Which words tell you more about how he had managed to do it?

Think of another word for *joyously*.

Who is meant by *himself*?

Who had made the hole?

Why did Wee-Wun laugh?

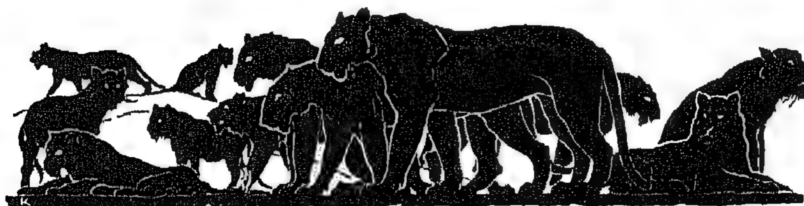
7. Make sentences telling—

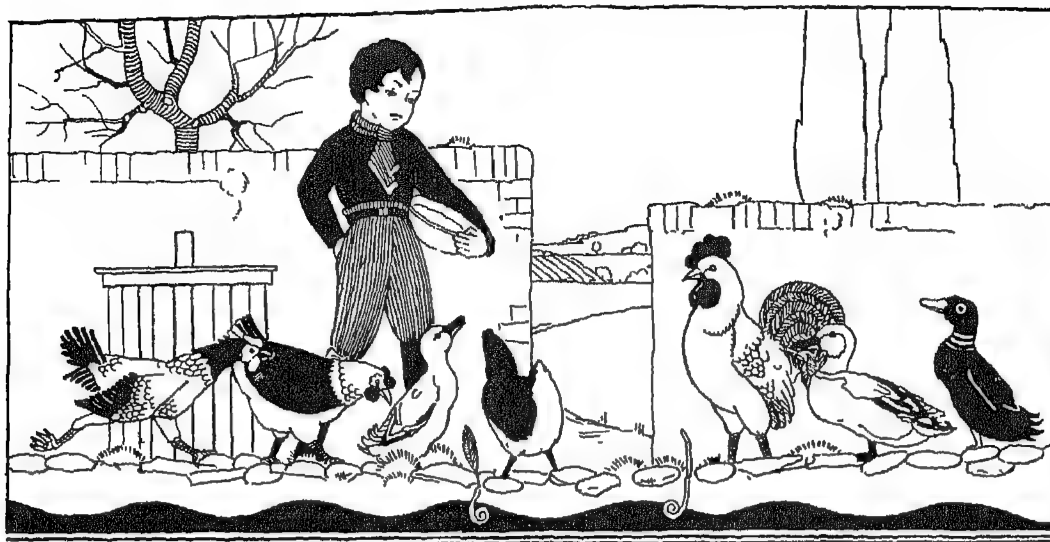
(*a*) where Wee-Wun put the shoes and what he was going to say to them every morning; (*b*) how he planted the seed he found; (*c*) what the Hop-about Man looked like; (*d*) what happened to the furniture in Wee-Wun's house

8. Draw.—

The blue and silver shoes A dandelion. A feather cap. A plate of porridge A spade.

(For blackboard illustrations of a Pair of Shoes, a Dandelion and Spade see page 165.)





THE EARTHWORM

An earthworm once lived in a beautiful meadow, where he had made a hole deep down into the ground to live in, and where he ate the earth and dead leaves.

But one day some people came, who built a house in the meadow with a yard round it. The earthworm crept down into the ground during the winter to a depth greater than the height of a man, that the frost might not reach him. Rolled up tight at the bottom of his hole, he slept the winter through, but when he awoke with the coming of spring, and crept upwards to eat the grass roots he found both grass and plants had disappeared. There was nothing to be seen but cobble stones, with which the people had neatly paved their yard, and chickens and ducks, the enemies of the worm, were marching about on the top of them.

So the good days for the little worm were over. There were no leaves left for him to eat, only the lean earth, which he swallowed down, and with this he had to content himself day after day. Like any fine lady, the worm found that the bright sunlight disagreed with him, and as he was not clever enough to get himself a sunshade, he stayed all day in the dark, hidden away beneath the cobble stones of the yard. Not till the sun had gone to bed, and the chickens and ducks had followed suit, did he venture forth.

He poked up his head from between the stones, and was glad when the soft rain drops fell upon him. Venturing out, he called upon his neighbour, a worm who lived under the nearest stone, and who was an old friend of the happy meadow days. They chatted together of the good old times, and were as cheery as ever earthworms can be. Then they looked about to see if there were any tasty morsels to be found, for earth, and nothing but earth to eat morning, noon and night becomes monotonous, even to an earthworm. One found a blade of straw lying close to his hole, and although a worm has no eyes, he took good note of it, seized it in the middle with his mouth, doubled it up, and dragged it down a good way into his house. The other found a long feather, which the cock had lost the day before, and seizing it by the quill he like-

wise pulled it into his hole. Both made up their minds to feast upon these delicacies during the next few days.

Next morning when the farmer's child came down into the yard he saw the straw and the feather standing up amidst the cobbles, as if some one had planted them, and yet he felt quite sure that they had not stood there the night before But we could have told him that the poor earthworms were preparing a feast of what was useless to anyone else.

EXERCISES BASED ON THE TEXT

The plan and scope of these exercises are fully explained on pages 136–138.

1. Read and play.—

Play that your finger is a worm making a hole.

Play that you are creeping.

Play that you are marching about

Play that you are looking for something to eat

Talk in a monotonous voice.

Seize a pencil

Double up a sheet of paper

2. Put together: selection of appropriate subject and predicate.—

An earthworm	saw the straw and the feather standing upright amidst the cobbles.
Some people	made a hole deep down into the ground
The chickens and ducks	built a house in the meadow with a yard round it.
The farmer's child	were marching about on the cobble stones

3. Tell me.—

Name three things that worms eat.

What do worms do in the winter?

What creatures are the enemies of a worm?

Why did the worm venture forth only at night?

Does a worm like rain?

What did the worm say when he met his old friend?

What did the two worms find to eat?

Can a worm see?

4. Marked passage: for intensive study The questions on this passage cover the following points (*a*) *grammar*—pronouns, adjectives, use of *there* and *their*, (*b*) *word study*—meanings of words, words of opposite meaning, synonyms —

So the good days for the little worm were over.

What were the *good days*? What word means the opposite of *good*? Why were they over?

Which word tells you more about the *worm*? What word means the opposite of *little*?

Think of another word for *over*

There were no leaves left for him to eat, only the lean earth, which he swallowed down, and with this he had to content himself day after day

Put either *there* or *their* in the gaps in these sentences 1. Some people came to the meadow to see if —— was room to build a house in it 2. The people laid cobble stones round —— house 3 The chickens and ducks went to —— beds at sundown 4 The earthworms looked about to see if —— were any tasty morsels to be found

Why were there no leaves?

What does the word *lean* mean here?

What does the word *lean* mean when we say *lean meat*?

What is meant by *which*?

What is meant by *this*?

Who is *himself*?

Think of another word for *content*

Like any fine lady, the worm found that the bright sunlight disagreed with him, and as he was not clever enough to get himself a sunshade, he stayed all day in the dark,

hidden away beneath the cobble stones of the yard

Why would a fine lady dislike the sunlight? Would *she* be able to find herself a sunshade? How did the worm shade himself from the sun?

Think of another word for *fine.*

Which word tells you more about the *sunlight*? What word means the opposite of *bright*?

What word means the opposite of *dis agreed*?

Think of another word for *beneath*

Make a sentence telling what the worm said to himself about the sunlight, begin your sentence: The worm said "——"

What are cobble stones? Are cobble stones pleasant to walk on?

Not till the sun had gone to bed, and the chickens and ducks had followed suit, did he venture forth.

When does the sun go to bed?
What does *followed suit* mean?
Who is meant by *he*?
Say *venture forth* in other words

5. Make sentences telling—

(*a*) why the worm went into the ground during the winter; (*b*) what the worm found when he woke up in the spring, (*c*) what the farmer's child saw in the yard

6. Draw.—

A worm A sunshade

(For blackboard illustrations of a Sunshade, Feather and Cobble Stones see page 165)





Pair of Shoes, Spade and Dandelion—See Page 161
Sunshade, Feather and Cobble Stones—See Opposite Page

TEACHING OF COMPOSITION IN THE PRIMARY SCHOOL



From the picture by
J W Waterhouse, R A

ECHO AND NARCISSUS

[Reproduced by permission of the Corporation of Liverpool

Narcissus, loved by the nymph Echo, did not return her love, and she died of grief As a punishment the gods caused Narcissus to fall in love with his own reflection in a spring This fruitless love made him pine away, until he was changed into the flower that now bears his name

THE FIRST YEAR'S COURSE OF COMPOSITION

INTRODUCTION

THE exercises in the section on Literature deal with the study of prose, and cover a wide field in oral and written composition. In preparing a year's course of work in English, however, it will be found advisable to devote one half of the allotted time to more systematic prose study, each lesson being narrowed down to bring out certain grammatical points These exercises for systematic study will be based on short and simple stories, or on pictures with suitable subjects A series of graduated exercises providing work for at least twenty-six weeks is set out in the following pages.

The short story.—The story should be read aloud by the teacher in a simple and natural manner. From their earliest years children should be trained to listen to a story read in a natural voice without emphasis or dramatic effect other than is necessary to make the story interesting and real. The disciplinary value of training children to listen is very great. The sense of hearing is fully developed by the age of seven, hence if any child gives evidence of being unable to hear well he should be referred to the medical officer.

The teacher then asks a few questions on the subject matter of the story, not with any intention of exhausting the matter, but merely to draw out the essential points of the plot. The first three questions asked are always the same in character—(1) What does the beginning of the story tell you? (2) What does the middle of the story tell you? (3) What does the end of the story tell you? Practically every short story can be divided into three fundamental parts—the beginning, the middle and the end If the teacher begins with the same questions on every short story the children will be alert to notice these essentials, and they will be trained to separate at a later period their own stories, letters and compositions into these three parts.

The questions should, as far as possible, be framed to require answers in complete sentences, but it is pedantic and unnatural to expect a complete sentence in reply to every question that is asked Frequently, especially in the early stages, several children will be needed to supply even one answer in an entirely satisfactory manner The last exercise is, of course, the most important —retell the story. Several children will assist in this. One or more will retell the beginning of the story What does it tell?—that is the fundamental point for them always. Others will fill in the story, one correcting another, the teacher encouraging and supplying hints by means of judicious questioning until the middle of the story is filled in The end is treated in the same way

As the children progress and gain confidence some will be able to retell the whole story, but such proficiency must not be expected too soon; it can come about only after training and much practice At first the children will join all, or most, of their sentences with "and," but the teacher will gradually train them to use subordinate clauses It is a mistake to ask too many questions about the story, as this practice will lead to answering in short, fragmentary sentences The only way to secure real advancement in continuous narrative is to encourage the children to give a connected account of the whole story.

Dramatisation and drawing.—The children should always be encouraged to ask questions

about the story, since this will afford the teacher further opportunities of correcting their vocabulary and will indicate which parts of the story are imperfectly understood Frequently, a short story lends itself admirably to dramatisation The actors should be selected, as far as possible, from those who speak badly or with little freedom The glamour of acting goes a long way to help children in expressing their own ideas. Dramatisation should, as a rule, be practised by small groups of children while the rest of the class are otherwise employed

It will frequently be advisable to allow the children to make an imaginary drawing of some incident in the story The incident illustrated should be selected by the individual If convenient, paints and pastels are the best media for work of this kind because children delight in colour work. The children's own efforts in drawing profoundly influence the development of their sense of beauty

The practice of dramatisation and free drawing is particularly necessary when children have recently left the infant school, for work of this character helps to bridge over the gap caused by transference to the primary school It must always be borne in mind that children of seven cannot concentrate for long periods on set tasks. By giving variety of work and action during the course of a lesson the children will be kept alert, interested and happy.

Composition should not be looked upon as a "subject" to be taught separately. The work may be considered from the project standpoint. The centre of interest is the story, and through questions, answers, writing, drawing and acting, the children will work together, some in groups, others individually, to explore the different avenues which diverge from that centre

Written work.—The whole of a lesson should not as a rule be devoted to oral work Ten to fifteen minutes of concentrated oral work of the kind suggested are sufficient for young children The next part of the lesson must be given to writing. In the course outlined below the writing always begins with drill This plan has many advantages. The majority of the class, often every individual, begins writing at once. There is no hesitation, no useless questioning by those children who never know what to do. The suggestions given for this drill are (1) a series of common words and phrases that every child of seven to eight should know how to write accurately and without hesitation, and (2) a short passage, perhaps merely a sentence, which is dictated by the teacher It is a good plan for all children to do some kind of written drill. It gives them confidence in the handling of the pen In a few weeks every child will write something—it may be very little—accurately This is a step forward and means a great deal to a dull child Some children can never write even a few sentences correctly, but at least they can write a few words correctly, provided they do the same thing often enough. It is an immense encouragement to them to be smiled upon for having done a little well Regular daily practice in writing short passages from dictation affords a valuable training in listening. The passage should be dictated in phrases; single words should never be repeated, and the voice of the teacher should be clear and natural.

During the writing drill the teacher can put up the exercises on the blackboard. Sometimes, when lessons are short, or the oral work has taken an unusually long time, it may not be possible to do any more writing than that of the drill; but, as a rule, and certainly in the course of a few weeks, the children will be able to write at least one set of exercises. These are carefully graded As a rule they are based on the story, and are so arranged as to cover a systematic course in the foundations of grammar, although no grammatical terms are introduced Where, however, a teacher has a bright, intelligent class there is no reason why such grammatical terms as nouns, verbs, adjectives, etc., should not

be used, for it really simplifies the work of the teacher to use such terms, provided they are clearly understood by the class.

More difficult exercises.—One set of exercises in each week's work is marked with an asterisk These exercises are a little more difficult than others in the course. They are intended for those members who are sufficiently far advanced to write simple sentences without assistance Even if only one child in a class is able to do them he should be given the opportunity; usually it will be found that several children can write the answers to these asterisked questions Naturally, the aim of the teacher will be to get the majority of the class gradually to acquire sufficient facility with the pen to answer them. From the earliest stages opportunity should be given for individual work. Even among normal children there is a wide range of ability, and it will always be found necessary during at least a part of a lesson for the children to work in groups.

A warning should be given here not to be too ambitious Until the children have been well drilled in oral answering, careful observation, writing drill, etc., they cannot be expected to write short stories or letters. Sometimes a child here and there can do these things at an early age, and he should be given opportunity to exercise his talents, but oral work has so much value in itself that every child should take a share in it When spelling is weak (as it must be in the first weeks of the school year), when a pen is an unfamiliar instrument, when capital letters are hardly known and nothing has been learnt of the difficulties of writing conversations, it is a mistake to set such questions as—"Describe this picture", "Pretend you are a fairy and tell what you would do", "Pretend that you are an animal"—and so on If there is one subject more than another the teaching of which should be governed by the maxim "Walk before you run," it is that of writing compositions

Spelling.—Spelling is mostly learned incidentally If children are trained to observe during the intensive study of the literary passages they will quickly learn to spell common words As we know from our own experience, it is the appearance of a word that governs most of our own spelling, hence the necessity for the teacher ever to be directing the children's observation. Do not allow the children to copy incorrectly from the blackboard. Some, indeed many, will do this in a perfectly light-hearted manner, and the teacher must assure himself that all words are copied accurately. Many more words, however, in common use have to be learnt in addition to those that occur in the prose reading, and means must be adopted to get these words learned. Many teachers make a practice of having two, three or more new words learned every day. Such words may be included in the writing drill, or they may be written in the child's notebook, or at the end of the exercise book. Again, they must be accurately copied or the results will be disastrous. Many names of objects can be made familiar to the children by printing them clearly with chalk on brown paper, about eight inches long by five inches wide, and hanging or sticking the papers on the objects themselves—*window*, *pane*, *glass*, *iron*, *wood*, *door*, etc. A few papers should be put up at a time and removed to make way for others at intervals of a few days.

The greatest asset to the attainment of good spelling in a class is encouragement. Some children find it an extraordinarily difficult matter to write the same word correctly twice over Keep a special list of easy words for the backward children. Let them be given the opportunity (but quite unconsciously as far as they are concerned) to look at these same words again and again. Test them when it is almost certain that every word will be written correctly The encouragement given by this plan will have a marked effect The list of words can be gradually extended, but always test when the work is known,

Nothing is more discouraging to a poor speller than to find his page scored with blue marks

For the assistance of those teachers who believe in spelling drill, a number of common words are here tabulated in associated groups The words from a group should be written on the blackboard, and the children should be required to talk about them and form sentences containing them. They should then write the words in a special place reserved for spellings in their exercise books, and they should be encouraged at every available opportunity to turn to these lists and look carefully at the words. In a few weeks the children will have in their books a useful list of words to which they should be expected to refer, as one would do with a dictionary, whenever they are at a loss to spell a word

GROUPED WORDS FOR SPELLING

1 **The Classroom:** desk, ink, pen, ruler, book, paper, pencil, seat, floor, door, window, fire.

2 **Breakfast:** milk, jug, bread, butter, tea, plate, cup, saucer, pot, sugar, basin, roll

3 **Dinner:** cloth, knife, fork, spoon, soup, meat, potato, potatoes, beans, peas, sweet, pie, tart.

4 **Tea:** cake, toast, jam, tray, stand, glass jar, honey, bun, hot water, flower, spoon.

5 **Supper:** cheese, butter, brown loaf, cress, dish, beetroot, cocoa, ham, salt, pepper.

7. **Bedroom:** bed, sheet, pillow, cover, glass, table, towel, tooth brush, soap, sponge, comb.

8 **Dining Room:** mat, rug, coals, stove, poker, chair, sill, bowl, wood, tongs, walls, carpet

9 **Kitchen:** range, gas cooker, sink, tap, board, rolling pin, tin, hook, bell, pan, pipe, drain

10 **Garden:** rose, pink, daisy, leaf, stock, pansy, sweet pea, earth, lawn, lily, box, shed

11 **Garden Tools:** hoe, spade, rake, barrow, wire, string, roller, mower, shears, stick, fork.

12 **Trees:** elm, oak, ash, birch, chestnut, willow, beech, crab, poplar, holly, yew, fir, larch

13 **Toys:** bat, ball, top, doll, train, bricks, cards, skipping rope, kite

14 **Clothes:** coat, vest, shirt, boot, sock, hat, cap, dress, skirt, shoe, scarf, tie, glove.

15 **Food:** flour, wheat, rice, fat, pork, beef, veal, mutton, chop, steak, tripe, lamb, suet.

16 **Food:** eggs, hare, duck, fowl, goose, salt, fish, sprat, cod, eel, crab.

17 **People:** man, woman, boy, girl, father, mother, wife, uncle, aunt, baby, sister, child, maid, lad

18. **The Body:** head, hair, ears, brow, eye, lash, nose, mouth, tooth, teeth, gum, lip, chin, cheek, face

19. **The Body:** neck, skin, throat, chest, arm, hand, thumb, finger, palm, nail

20 **The Body:** back, leg, side, knee, shin, ankle, foot, toe, heel, calf.

21 **The Country:** field, grass, lane, hedge, weed, corn, path, road, stile, gate

22 **Animals:** horse, mare, pony, ass, cow, bull, calf, mule, dog, cat, fox

23. **Birds:** lark, dove, wren, robin, finch, owl, thrush, swan, duck, drake, cock, hen

24 **Clothes are made of:** wool, cotton, linen, silk, lace, straw, leather, skin, fur, feathers, hides, kid

25. **The World:** sky, cloud, sun, moon, stars, rain, dew, snow, hail, sleet

26 **The World:** hill, plain, vale, brook, river, sea, beach, sand, stone, shell

27 **Things we use:** paper, book, bag, box, purse, case, scales, nail, broom, pin

28 **Verbs:** walk, run, hop, jump, creep, talk, sing, shout, call, sleep

29 **Verbs:** play, read, write, spell, think, start, stop, look, wait, find

30. **Verbs:** dance, seek, swing, throw, fall, bounce, grow, draw, sink, float

31 **Months:** January, February, March, April, May, June, July, August, September, October, November, December

32 **The Days of the Week:** Sunday, Monday, Tuesday, Wednesday, Thursday, Friday, Saturday.

33. **Names of Boys:** Tom, Dick, Harry, Peter, John, James, Joe, Will, George, Ben.

34 **Names of Girls:** Kate, Jane, Mary, Rose, Lily, Mabel, Alice, Grace, Sally, May.

35. **In the Street:** car, dray, bus, tram, motor, wagon, dust cart, shop, step

36. **Trees:** branch, twig, leaf, fruit, bark, sap, root, trunk, stem, bird, nest, eggs

37 **Names and actions:** lions roar, dogs bark, cats purr, kittens mew, sheep bleat, cows low, ducks quack, girls walk, boys race, robins hop

38 **Names and actions:** mice run, hens cluck, rooks caw, doves coo, larks sing, bees hum, frogs jump, the sun shines, rain falls, snow melts.

39 **Names and actions:** the river flows, fish swim, rats bite, the mill turns, rushes grow, sheep feed, cows graze, flies buzz, the fire burns.

40 **The House:** roof, tile, slate, smoke, wall, window, stairs, floor, rail, stool, paper, lamp, couch

A SYSTEMATIC COURSE IN ORAL AND WRITTEN COMPOSITION

IN the following pages twenty stories with graduated exercises for oral and written composition are set out. For the convenience of easy reference the stories on pictures are grouped at the end of the course, but the teacher will naturally select one for study at intervals of three or four weeks No further mention is made of the necessity for dramatisation of some of the stories or of the value of imaginative drawing of particular incidents, but these points should be considered when the teacher is preparing the lesson.

1—THE DOG AND HIS SHADOW.

Introduction

MANY children will not understand what the dog saw in the water It must not be assumed that a child calls up a clear and concrete picture of common things which are merely named to him Ask the children what they see when they look into the bath, or into a pool. If necessary, let the children look into a bowl of water. Some children may not understand "crossing a narrow plank over a stream"; here, a blackboard sketch will be needed. See that the children understand the significance of the word *narrow*,—a false step would cause the dog to fall into the water.

Story

A dog carrying a piece of meat in his mouth was one day crossing a narrow plank over a stream. Looking down into the water, he thought he saw another dog there, carrying another piece of meat. Now this was really his own shadow, but he did not know it He stopped, and the other dog stopped also. "I'd like his meat as well as my own," thought the dog, greedily He

shut his teeth tightly, and snarled The other dog snarled back. He lowered his nose, and the other dog came very near Suddenly he snatched at the other dog's meat. Alas! as he opened his mouth, his own meat fell from it into the water and sank to the bottom. The greedy dog was left with no meat at all

If you long for what you have not, you may lose what you already have

Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end tell you?

What did the dog see in the water?

Why did the dog snarl?

Why is the dog called greedy?

Retell the story.

Children ask questions



Written Work

I. Children's drill.

Write your name Write the day of the week Write the name of the story

Dictation—If you long for what you have not, you may lose what you already have

II. Exercises on name-words.

A Write the following on the blackboard *dog, plank, meat, stream, mouth, water, teeth, shadow, nose.*

1. A —— was carrying a piece of —— in his ——
2. He crossed a narrow —— over a ——.
3. He looked down into the ——
4. There he saw his own ——
5. He shut his —— tightly.
6. He lowered his ——

The children must write and complete the above sentences using words from the given list.

B Write the following on the blackboard

1. A mouse is afraid of a (horse, sheep, cat).
2. The farmer feeds his (cat, mouse, horse) on oats.

3 Sheep live in (trees, houses, meadows)
4 Elephants eat (fish, buns, meat)
5. Lions and tigers are fierce (birds, fish, animals).

The children must write and complete the above sentences with the appropriate words

III * **Sentence making.**

Tell what the dog saw in the water.
Tell why the dog snarled.
Tell how the dog lost his meat.

2—THE HARE AND THE TORTOISE

Introduction

SOME country children will have seen a hare but, probably, few will be able to distinguish a hare from a rabbit. Only a few children in a class will have seen a tortoise. Blackboard sketches of both these creatures will be needed (see illustrations on page 189), and the characteristics of each must be explained at the outset. Let a child imitate a hare running and let another imitate a tortoise crawling

Story



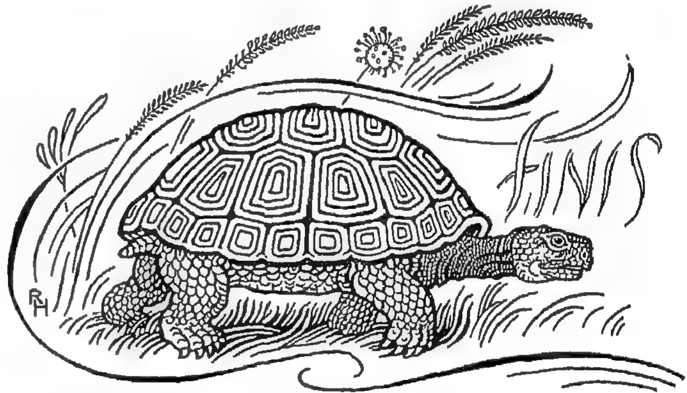
A fleet-footed hare was one day laughing at a tortoise because he walked so slowly. "Slow I may be," said the tortoise, "but I could beat you in a race any day."

"Indeed!" said the hare "Then let us run a race at once, and we will soon settle the matter"

"Very well," said the tortoise. They agreed to run as far as the hawthorn hedge, four fields away, and set out The swift hare was soon far ahead of the tortoise, who was jogging along at his usual steady pace "I will lie down and take a little nap," thought the hare "I can easily overtake the tortoise when I wake"

He lay down and fell asleep Meanwhile the tortoise plodded slowly on. Presently the hare awoke and ran like the wind across the last field, to the hedge There, sitting in front of him, he found the tortoise, who had arrived first, and so had won the race

Slow and Sure wins the race.



Oral Work

What does the beginning of the story tell you?
What does the middle of the story tell you?
What does the end tell you?
Why did the hare laugh?
Why did the hare take a nap?
Why did the hare run like the wind?
Retell the story.
Children ask questions

WRITTEN WORK

I. **Children's drill.**

Write your name Write the day of the week. Write the name of the story.

Dictation—Slow and Sure wins the race.

II **Exercises on action-words.**

A Write the following on the blackboard *laughed, walked, ran, agreed, plodded, won.*

1. A hare one day —— at a tortoise
2. The hare and the tortoise —— a race
3. The tortoise —— very slowly
4. They —— to run as far as the hawthorn hedge.
5. The tortoise —— very slowly.
6. The tortoise had —— the race

The children must write and complete the above sentences using words from the given list

B Write the following on the blackboard

1. Fishes (run, walk, swim)
2. A bird (flows, flies, burns)
3. Boys (run, shoot, fly) kites
4. A train (leaps, runs, jumps) under a tunnel
5. The sun (walks, sails, shines) in the sky
6. On the sea ships (sail, hop, gallop).
7. The farmer's horse (gallops, shouts, creeps)

The children must write and complete the above sentences with the appropriate words

III * **Sentence making.**

Tell why the hare laughed
Tell why the hare lay down for a nap
Tell why the hare ran like the wind

3—BELLING THE CAT

SOME mice lived in a house in which there was also a large fierce cat, of whom they were much afraid All day they hid in their holes for fear of being spied by her sharp eyes and pounced upon by her terrible claws Even in the dark



night they hardly dared to venture out in search of food.

At last they all met together and had a long talk Each mouse asked the other what could be done to make their lives safer

"I will tell you what to do," squeaked a young mouse. "It is very simple Let us hang a bell round the cat's neck. Then when she walks, this bell will ring The sound will tell us of her coming, and we can run away"

"What a fine idea!" cried the others, whisking their tails and squeaking for joy

"That is all very well," said a wise, quiet old fellow in their midst "But who is to bell the cat?"

The mice were silent. None was brave enough for so dangerous a task

Some things are easier said than done

Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end tell you?

Why were the mice afraid to come out at night?

Why did the mice all meet together?

What did the young mouse say they should do?

Why did the mice squeak for joy?

Why were the mice silent when the old mouse had spoken?

Retell the story.

Children ask questions.

Written Work

I Children's drill.

Write your name Write the day of the week. Write the name of the story

Dictation—Some things are easier said than done

II. Exercises on descriptive words.

A. Write the following on the blackboard: *large, sharp, fierce, terrible, dark, long, quiet, old, wise, silent.*

1 A cat has —— eyes and —— claws.
2 The cat was —— and ——
3 The mice were afraid to come out in the —— night
4 They had a —— talk together.
5 The old mouse was —— and ——.
6. When the —— mouse had spoken all the others were ——.

The children must write and complete the above sentences, using words from the given list



B Write the following on the blackboard, first letting the children select the words of opposite meaning: *large, small ; fierce, gentle ; sharp, blunt , dark, light ; long, short , wise, foolish; quiet, noisy ; old, young.*

When the words have been carefully considered clean the blackboard and proceed with the next exercise.

C. Write the following on the blackboard.

1. A cat is fierce but a mouse is ——
2. An elephant is large but a mouse is ——.
3. Claws are —— while sticks are blunt
4. At night it is ——, and in the day it is ——
5. In summer we have long days and —— nights.
6. The young mice were —— while the old mouse was wise
7. Some children are quiet, others are ——.
8. The man is old but the child is ——.

The children must write and complete the above sentences.

III.* Sentence making.

Tell what the cat was like.

Tell why the mice all met together

Tell why the mice did not put a bell round the cat's neck

4—THE KING OF THE BIRDS

Introduction

THERE are several birds mentioned in this story and most of them will be unfamiliar to children Blackboard sketches or pictures will be needed—see page 179. There must be a short preliminary talk on the different characteristics of the birds—handsome peacock; wise, solemn owl, screaming parrot, strong, fierce eagle; tiny wren

Story

All the birds of the air met together one day to choose themselves a king They chirped and twittered and sang, but they could not decide how the king should be chosen.

"He must be handsome," said the peacock, spreading out his beautiful tail.

"He must be wise," said the solemn owl.

"He must have a loud, clear voice," screamed the parrot

"You are all wrong," said the eagle. "What the king of the birds needs is to be able to fly higher than all the other birds of the air"

Because the eagle was strong and fierce and all the other birds were afraid of him, they said that he was right. The bird that flew highest ought to be king So they all ranged themselves side by side on a long fence. When the old white duck quacked, every bird was to fly up and up in the air, until he could fly no higher

"The eagle will win," they twittered to each other on the fence. "The eagle will win."

Now among the birds was a tiny wren, who thought of a clever plan When no one was looking, he seated himself gently on the eagle's back "Quack! quack!" said the old white duck Up went the birds, up and up to the sky, and up went the little wren on the eagle's back. Soon they had left all the other birds far below. Higher and higher the eagle went, till at last he was tired out, and began to come down. Then from his back the little wren flew up higher still, till he was lost to sight in the clouds

"The wren has flown highest! The wren has won," sang the birds Even the eagle had to agree that this was true So the tiny wren was crowned king of the birds.

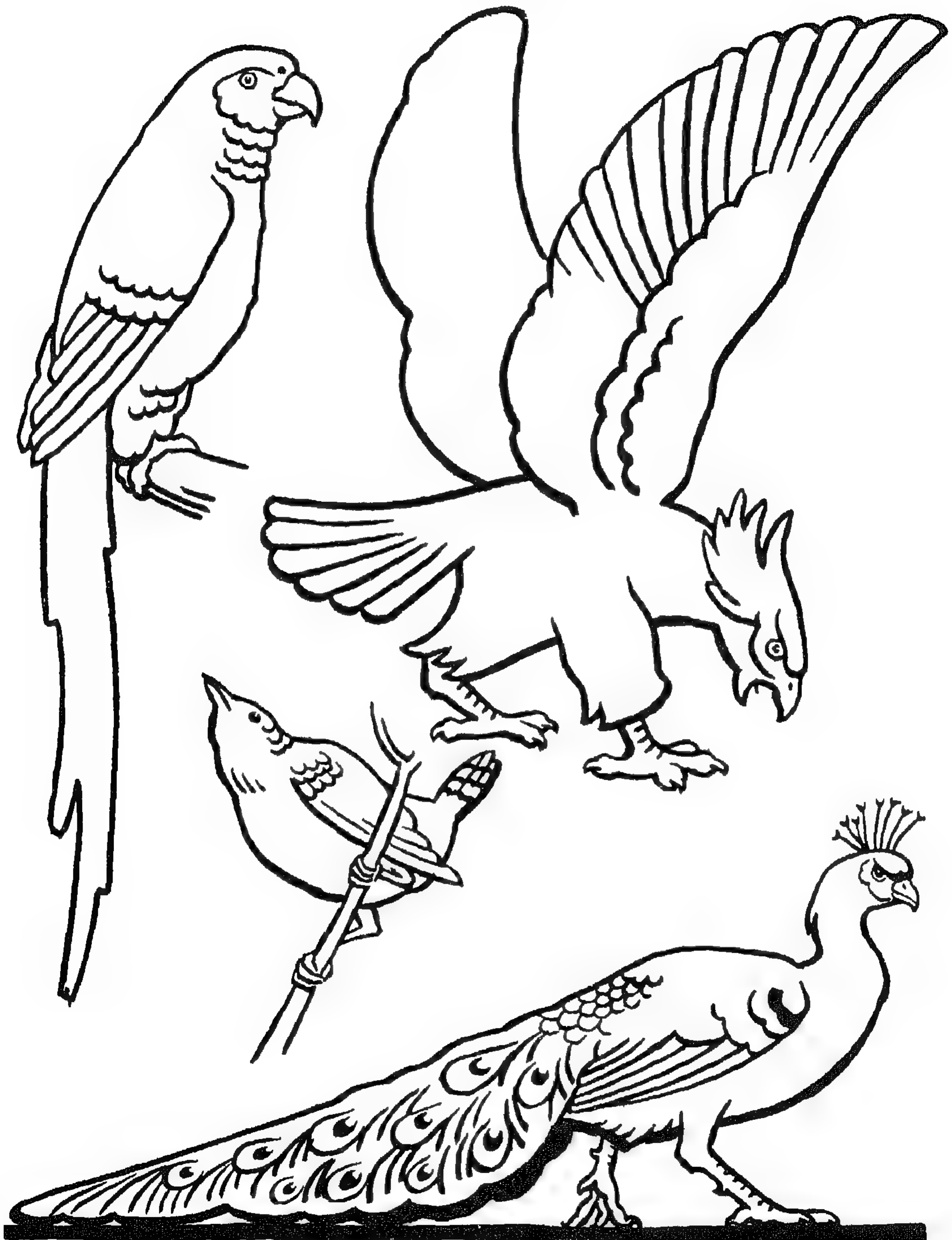
Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end tell you?

How did the birds talk to one another?



Parrot, Eagle, Wren, Peacock—See Page 178

Why were the other birds afraid of the eagle?

How did the wren show he was clever?

Retell the story

Children ask questions.

Written Work

I **Children's drill.**

Write your name Write the day of the week Write the month of the year. Write the name of the story.

Dictation—The bird that flew highest ought to be king

II **Exercises on saying and descriptive words.**

A Write the following on the blackboard: *chirp, sings, scream, quack, mew, caw, laugh, barks.*

1 A canary ——.
2 Sparrows ——
3 Ducks ——
4 Children ——
5 Parrots ——
6 Kittens ——
7 A dog ——
8 Rooks ——

The children must complete the above sentences using words from the given list

B. Write the following on the blackboard *wise, beautiful, loud, clear, fierce, strong, clever, long*

1. A peacock has a —— tail
2 An owl is a —— bird
3 The parrot screamed in a —— voice
4 The eagle was —— and ——
5 The wren was very ——.
6. The birds all sat on a —— fence

The children must write and complete the above sentences using words from the given list.

III * **Sentence making.**

Tell why the birds all met together

Tell why they were afraid of the eagle.

Tell how the wren became king of the birds

5—THE KING AND THE CAKES

Introduction

THE ancient method of baking cakes on the hearth must be explained (It always puzzled the writer in his childhood) Explain the word *peasant* and write it on the blackboard. If the children have never heard the story of the Danish invasion it must be told briefly.

Story

An old story tells that Alfred the Great, king of England, was being hunted by his enemies the Danes He dressed himself in rough clothes and hid for a few nights in the hut of a poor peasant The peasant's wife had no idea that he was the king, and thought him a lazy fellow to sit dreaming by the fire, doing nothing all day but mend his bow and arrows

"As you have no work to do," said she, "keep an eye on my cakes that are baking on the hearth while I am out See that they do not burn"

When she had gone, Alfred gazed into the fire, his head full of plans for winning a great battle against his enemies He forgot where he was He forgot the fire and the cakes, and did not even smell them burning at his feet In a short time they were nothing but hot cinders!

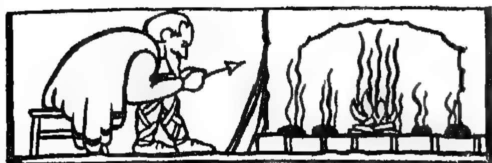
Presently the woman returned, and asked at once about her cakes "What cakes?" said Alfred, in surprise

"What! You have forgotten them?" she cried. "Ah! lazy scamp! look at them, burnt to ashes!" and, throwing up her hands in fury, she boxed the king's ears.

"Stay, wife, stay!" cried her husband, rushing in, and pulling her back "Kneel, for thy life! Thou hast struck thy lord the king."

Filled with fear, the two knelt to Alfred for mercy.

"Nay, rise, and fear not," said the king, smiling. "It was my fault for forgetting my promise." Thus he kindly forgave the box on the ear.



Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why did King Alfred have to hide in a hut?

Why did the king forget to mind the cakes?

Why did the peasant tell his wife to kneel before the king?

Retell the story.

Children ask questions.

Written Work

I **Children's drill.**

Write your name Write the day of the week Write the month of the year Write the name of the story. Write the name of the king

Dictation—In a short time they were nothing but hot cinders

II **Exercises on proper names and phrases.**

A. Write the following on the blackboard. *Alfred, Peter, John, Dick, Harry, Tom, Miss Muffet, Bo-peep, Cock Robin, Boy Blue*

1 peter and john are twins
2. where are dick's toys?
3 little miss muffet sat on a tuffet
4 little bo-peep has lost her sheep
5 who killed cock robin?
6. tom, dick, and harry have all gone to school
7 alfred was king of england.

The children must write the above sentences correctly.

B. Write the following on the blackboard:

1 fire, a, lighted, woman, The
2. put, cakes, She, the, on, hearth.
3. Shovel, made, poker, and tongs, are, of, steel.
4 wood, made, are, of, Matches
5 Cinders and ashes, from, come, coal.

The children must make these groups of words into sentences.

C. Write the following on the blackboard: *on the hearth, in the hut, at his feet, on the ear; into the fire*

1. King Alfred hid ——
2. The cakes were baking ——.
3. The king gazed ——
4 He did not smell the cakes burning ——.
5. The woman gave the king a box ——

The children must write and complete the above sentences, using phrases from the given list

III.* **Sentence making.**

Tell why Alfred the Great hid in a hut.

Tell why the king forgot to mind the cakes.

Tell why the peasant told his wife to kneel.

6—A WOLF IN SHEEP'S CLOTHING

Introduction

TELL briefly the story of the shepherd's work and explain the necessity for watching his flocks by night. Children in some city schools may never have seen a sheep There is a drawing of a wolf on page 149 After the reading let children feel a hairy fur and a woolly rug, if these or some other such articles can be obtained

Story

A hungry wolf wanted a fat sheep for supper, but did not know how to steal one without being caught by the shepherd. At last he thought of a plan. "Oho!" said he, "I will cover myself with a sheepskin, and go into the fold with the flock. Then in the dead of night, when the shepherd sleeps, I will carry the fattest lamb off to my den." So that evening, he put on a sheepskin and went into the fold with the sheep.

On that very night, a butcher called at the shepherd's house, and asked for a sheep to kill. "I will choose a fine one for you," said the shepherd, and went into the fold. He felt over each animal to pick out the best, and came upon one which had a woolly back, but hairy ears.

"This is a strange kind of sheep," cried the shepherd. He dragged the wolf out of the fold, and putting a rope round his neck hanged him from the nearest tree.

"Why are you hanging a poor harmless sheep?" asked a passer-by.

"This is no sheep," replied the shepherd, "but a wolf in sheep's clothing."

Do not pretend to be good, be really good.

Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why did the wolf put on a sheepskin?

Where are sheep sometimes kept at night?

How did the shepherd know it was a wolf when he laid his hand on him?

Retell the story.

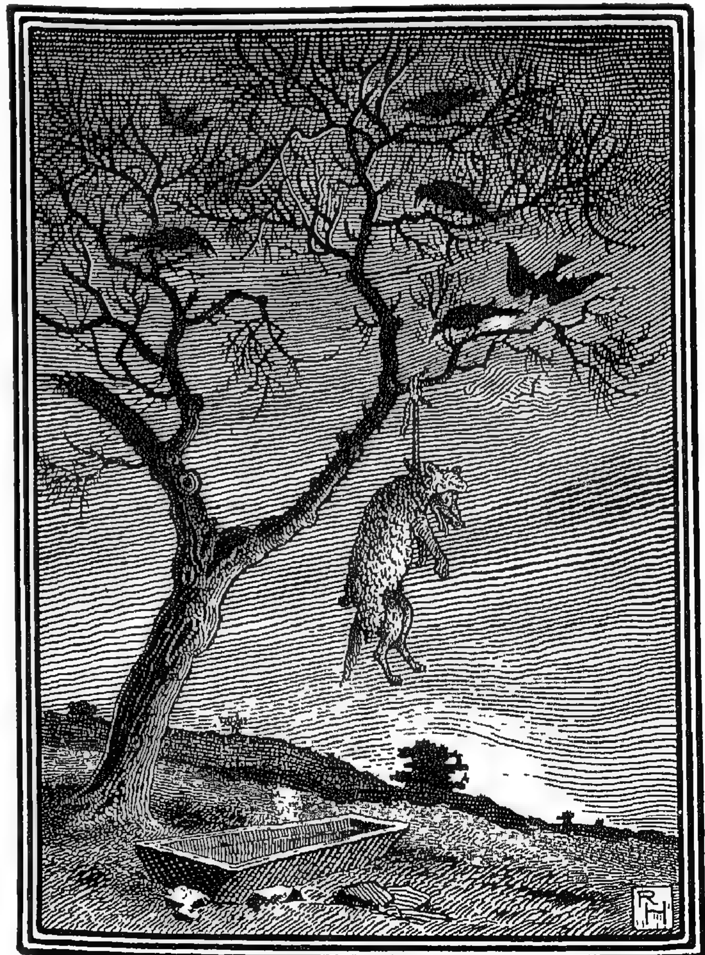
Children ask questions.

Written Work

I. **Children's drill.**

Write your name. Write the day of the week. Write the month of the year. Write the name of the story.

Dictation.—Do not pretend to be good; be really good.



II **Exercises on writing questions.**

A Write the following on the blackboard.
fat sheep, want, ask, shepherd, wolf, rope.

1 Why did the wolf want a —— ?
2. When did the —— go into the fold ?
3. What did the butcher —— ?
4. How did the —— pick out a fat sheep ?
5. Where did the shepherd put the —— ?
6 What did the passer-by —— the shepherd ?

The children must write and complete the above sentences, using words from the given list.

B. Write the following on the blackboard.
who, where, what, why, when.

1. —— is the name of your grocer ?
2. —— does a shepherd walk with his sheep ?
3 —— does a butcher wear an apron ?
4. —— does a sweep call at a house ?
5. —— makes bread ?
6. —— man sits cross-legged at his work ?

The children must write and complete the above sentences with the appropriate words.

III * **Sentence making.**

Tell why the wolf went into the sheep fold.
Tell how the shepherd found the wolf
Tell what the shepherd did to the wolf

7—THE ELVES AND THE COBBLER

PART I

Introduction

EXPLAIN the meaning of *forest.* Note that Hans is a German name In many districts wooden shoes will be unknown, the teacher should give a description of them Probably most children will know something of the cobbler, but make sure of this before beginning the story. Let a child pretend to be a cobbler

Story

Far away in a German forest lived Hans, the cobbler. He and his wife found it hard to live, for all the country people round wore wooden shoes, only a few with plenty of money bought shoes made of leather At last Hans found he had no food and no money, and only just enough leather to make one pair of shoes. Before going to bed one night he said to his wife, "I will cut out this pair of shoes ready to make in the morning" He cut out the leather very carefully and left it on the table.

When Hans came down early to work, what was his surprise to find the shoes already beautifully made, lying on his table! A customer came in and gave him a good price for the shoes. "Here, wife," said he, "take this money and go out and buy enough leather to make two pairs of shoes, and buy food with the rest of the money"

Hans cut out the two pairs, and went to bed leaving the leather on the table as before. Next morning he found the two pairs of shoes on the table finished. These he sold during the day, and bought enough leather for four pairs, which he cut out and left on the table when he went to bed. Next morning, four pairs of shoes were on the table. So it went on: Hans cut out a large number of shoes each night, and next morning they were all finished. Hans got more and more money, and at last became a rich man.



Oral Work

What does the beginning of the story tell you ?

What does the middle of the story tell you ?

What does the end of the story tell you ?

Why was Hans so poor?

Why was Hans surprised when he came down one morning?

What did he do before he went to bed?

Retell the story.

Children ask questions

Written Work

I. Children's drill.

Write your name. Write the day of the week Write the name of the month Write the date Write the name of the story.

Dictation.—When Hans came down early to work, what was his surprise to find the shoes already beautifully made, lying on his table!

II Exercises on sentence making and descriptive words.

A Write the following on the blackboard: *forest, cobbler, country, people, plenty of money, table, customer*

1. Where did Hans live?
2. What was Hans?
3. Who wore wooden shoes?
4. Who bought leather shoes?
5. Where did Hans put the shoes at night?
6. Who came to buy the shoes?

The children must write answers to the above questions

B Write the following on the blackboard *shoes, boots, leather, cobbler, nails, laces, slippers, knife, table*

Black, red, high, brown, hard-working, iron, steel, cotton, wooden.

The children write one word from the second list with an appropriate word from the first list, e g black shoes, red slippers

III * Sentence making.

Tell why Hans was poor

Tell how Hans became rich

Tell of something else you have heard about elves

8—THE ELVES AND THE COBBLER

PART II

Introduction

CHILDREN will probably have heard in the infant school a good deal about elves, and they will be ready and anxious to draw two of them Let the children repeat together the elves' words. It should be remembered that up to the age of nine children delight in simultaneous repetition (It is not now considered wrong to let children repeat the multiplication tables simultaneously)

Story

At last Hans said to his wife, "To-night we will hide ourselves behind the window curtain and watch all night, to see who makes the shoes so well"

At midnight, they saw two little elves jump on the table They began to sew the shoes so quickly that Hans could not follow the movements of their hands All the shoes were finished very quickly and the little men went away

Next day, Hans' wife said to him, "These two tiny elves have made us rich Let us do something for them I will make them little suits of clothes, and you can make them some shoes"

"Right gladly will I make shoes for the little men," cried Hans, delighted. "Wife, you always think of the right thing to do"

Both Hans and his wife worked very hard, and finished two smart little suits and two neat little pairs of shoes These they left on the table, and hid themselves again behind the curtain to watch.

When the elves came again the next night to make more shoes, they were very surprised to find on the table, instead of leather, the smart little suits, and the neat little shoes for themselves At once they put

on all their new things and danced about merrily, singing,

"Spick and span and smart are we;
Cobbler's elves no more we'll be"

They hopped about over the chairs, over the tables, over the window sill, and out of the window, and they never came back again. But Hans and his wife were well off and happy for the rest of their lives.

Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

What did the cobbler and his wife see at midnight?

What did the cobbler's wife do for the elves?

What did the elves do when they saw the clothes?

Retell the story

Children ask questions

Written Work

I. **Children's drill.**

Write your name Write the day of the week. Write the month of the year. Write the date. Write your own address

Dictation —

"Spick and span and smart are we,
Cobbler's elves no more we'll be."

II. **Exercises on conversations and name-words.**

A. Write the following on the blackboard. *hide, night, elves, shoes, suits of clothes.*

1. Hans said, "To-night we will —— ourselves."
2. Hans said, "We will see who makes the ——"
3. His wife said, "These tiny —— have made us rich"
4. His wife said, "I will make them ——"
5. Hans said, "Wife, you always think of the —— thing to do"

The children must write and complete the above sentences, using words from the given list.

B. Write the following on the blackboard

1. wear, Boys, coats
2. frocks, wear, Girls.
3. the, from, tailor, buy, Men, clothes.
4. are, of, cotton and wool, made, Shirts.
5. made, are, of, linen, Collars

The children must make the groups of words into sentences

III * **Sentence making.**

Tell what Hans and his wife saw at midnight

Tell what Hans and his wife did for the elves

Tell what the elves did when they saw the clothes and the shoes.

9—THE THREE WISHES

Introduction

Only a few children will have seen a black pudding, but this is easily explained as a large black sausage (A black pudding is made of blood, suet, chopped liver, etc, thickened with meal)

Story

One winter evening an old man and his wife were sitting by the fire, and they began to talk about fairies. "I wish a fairy would come here to-night," said the man, "and give us whatever we ask" At that instant a lovely lady appeared out of the fire "I am a fairy," she said, "and I will grant you three wishes"

"That is splendid," said the old man "Wife, let us think hard, and decide what our wishes shall be."

"Yes, indeed," said his wife, "but let us first make a good fire to warm us while we are thinking" She poked the logs into a blaze as she spoke. "That is a nice fire," she said, without thinking what she was saying. "I wish we had a yard of black pudding for our supper We could cook it easily"

She had hardly said these words when down the chimney came tumbling a yard of black pudding

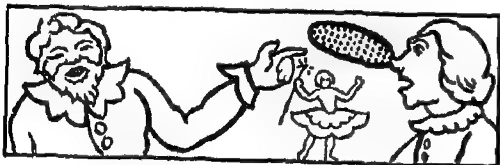
"You silly wife," cried the old man, "you have wasted one of our wishes. I am so vexed with you that I wish the black pudding would stick fast to the tip of your nose"

Up jumped the pudding, and in a second it was stuck so fast to the old woman's nose that she could not pull it off.

"Oh, you cruel old man," she cried, "your wish was even more foolish than mine Whatever shall I do?"

The old man could not help laughing to see the pudding sticking to his wife's nose When he had finished laughing he said, "There is only one thing to do I wish that the pudding may drop off again"

As he spoke, the pudding dropped off, so they cooked it and had a merry supper



Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why did a fairy come to visit the old man and his wife?

Why did a black pudding tumble down the chimney?

Why did the pudding stick to the old woman's nose?

Retell the story

Children ask questions

Written Work

I **Children's drill.**

Write your name Write the day of the week. Write the month of the year. Write the date. Write your own address. Write the title of the story.

Dictation—"I am so vexed with you that I wish the black pudding would stick fast to the tip of your nose."

II **Exercises on conversations and capital letters.**

A. Write the following on the blackboard

1 The man said, "I wish a fairy ——"
2 The lovely lady said, "I am ——."
3 The old woman said, "I wish we had a ——."
4. The old man said, "I wish the black pudding would stick ——."

The children must write and complete the above sentences.

B. Write the following on the blackboard: *man, woman; boy, girl, son, daughter; husband, wife, elf, fairy.*

The children must write a proper name for each of the above words, e g John, Mary, Jim, etc.

C. Write the following on the blackboard

1 john smith has gone to london.
2. mrs brown gave mary a doll.
3. i shall call my elf robin goodfellow.
4. mrs jones calls her son ted, and her daughter jane.
5 mr williams gave henry a book called alice in wonderland.

The children must write the above sentences correctly.

III * **Sentence making.**

Tell why the black pudding fell down the chimney

If you had three wishes for what would you wish ?

10—WASHING THE NEGRO

A RICH man once had many slaves They had to wait on him, cook his food, and keep his house clean and tidy He treated them kindly, and expected them always to keep themselves as neat and fresh as they kept the house One day a friend sent him a new slave as a gift. The new slave was a negro boy, with a black skin The master had never seen a negro before, and held up his hands in horror when he looked at him

"What a dirty boy!" he cried. "He cannot have washed for months! Slaves, put him into a tub of water, and scrub him clean and white."

The slaves carried off the black boy, and put him into a large tub of water Then they scrubbed and scrubbed him, but of course they could not make him white The poor negro shivered with cold in the bath, caught a bad chill, and died a few days later.

Many people try to do impossible things because they know no better.

Oral Work

What does the beginning of the story tell you ?

What does the middle of the story tell you ?

What does the end of the story tell you ?

Why did the rich man have the negro washed ?

Was the negro clean or dirty ?

Why were the servants unable to wash the negro white ?

Retell the story

Children ask questions

Written Work

I **Children's drill.**

Write your name. Write the day of the week Write the month of the year Write the date. Write your own address. Write your father's name Write your mother's name.

Dictation—Then they scrubbed and scrubbed him, but of course they could not make him white

II. **Exercises on descriptive words.**

A Write the following on the blackboard *rich, clean, many, tidy, neat, new, black, fresh, dirty, large, white, bad.*

1. A —— man had —— slaves.
2. They kept his house —— and ——.
3. They had to keep themselves —— and ——.
4. A friend sent him a —— slave
5. The slave had a —— skin
6. The man called him a —— boy
7. The servants tried to scrub the negro ——.
8. They put him in a —— tub of water.
9. He caught a —— cold

The children must write and complete the above sentences, using words from the given list.

B Write the following on the blackboard, first letting the children select the words of opposite meaning *rich, poor*, *many, few*, *clean, dirty*, *tidy, untidy*; *new, old*; *black, white*, *large, small.* When the words have been carefully considered clean the blackboard and proceed with the next exercise.

C Write the following on the blackboard·

1. A rich man has much money, a —— man has little.
2. Many children have brown eyes, —— have blue eyes
3. It is better to be —— than dirty
4. A tidy house looks far better than an —— one

5 New boots often squeak, —— boots do not
6 —— people live in Africa, white people live in England
7 A giant is ——, a dwarf is ——.

The children must write and complete the above sentences

III * **Sentence making.**

Tell why the rich man had the slave scrubbed.

Tell your own story of the servants scrubbing the negro.

Tell how you wash in the morning.

11—THE FOX AND THE KITTEN

Introduction

THERE is a blackboard sketch of the fox on page 189. It will be necessary to explain the reflection of the moon looking like a cheese in the water Tell the children of the characteristics of the fox, there is nothing in this story about its artfulness, so the point can be left until another occasion

Story

One bright moonlight night a hungry fox came out of his den to look for his supper He was prowling round a farmhouse when he met a tiny kitten.

"You're not much of a supper, you poor little mouthful," he said, "but since anything is better than nothing, I shall make a meal of you"

"Oh, don't eat me!" cried the kitten "I will show you where the farmer keeps his cheeses, and you can eat them instead"

The clever little animal led the fox to the edge of the well, over which hung two buckets When one bucket was let down into the water to be filled the other came up

"Now look in here," she said, "and you will see the cheeses"

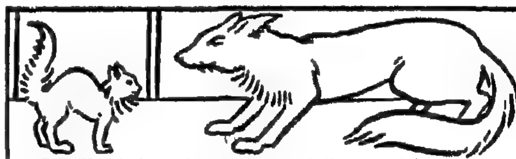
The fox looked down into the well, and saw the round face of the moon shining on the water

"I see a cheese," he said, "but how am I to reach it?"

"In this way," replied the kitten, jumping into one of the buckets The bucket at once went down into the water, but the kitten scrambled out before the water splashed in, and climbed a little way up the rope from which the bucket hung.

"Now," she called out to the fox, "you get into the other bucket."

The fox did as he was told, and as he was much heavier than the kitten, her bucket shot up again to the top of the well, while the bucket with the fox in it disappeared under the water Thus the fox was drowned, while the clever little kitten escaped.



Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why did the fox not eat the kitten?

Why did the fox go down the well?

How did the fox go down the well?

Why couldn't the fox get up again?

Retell the story.

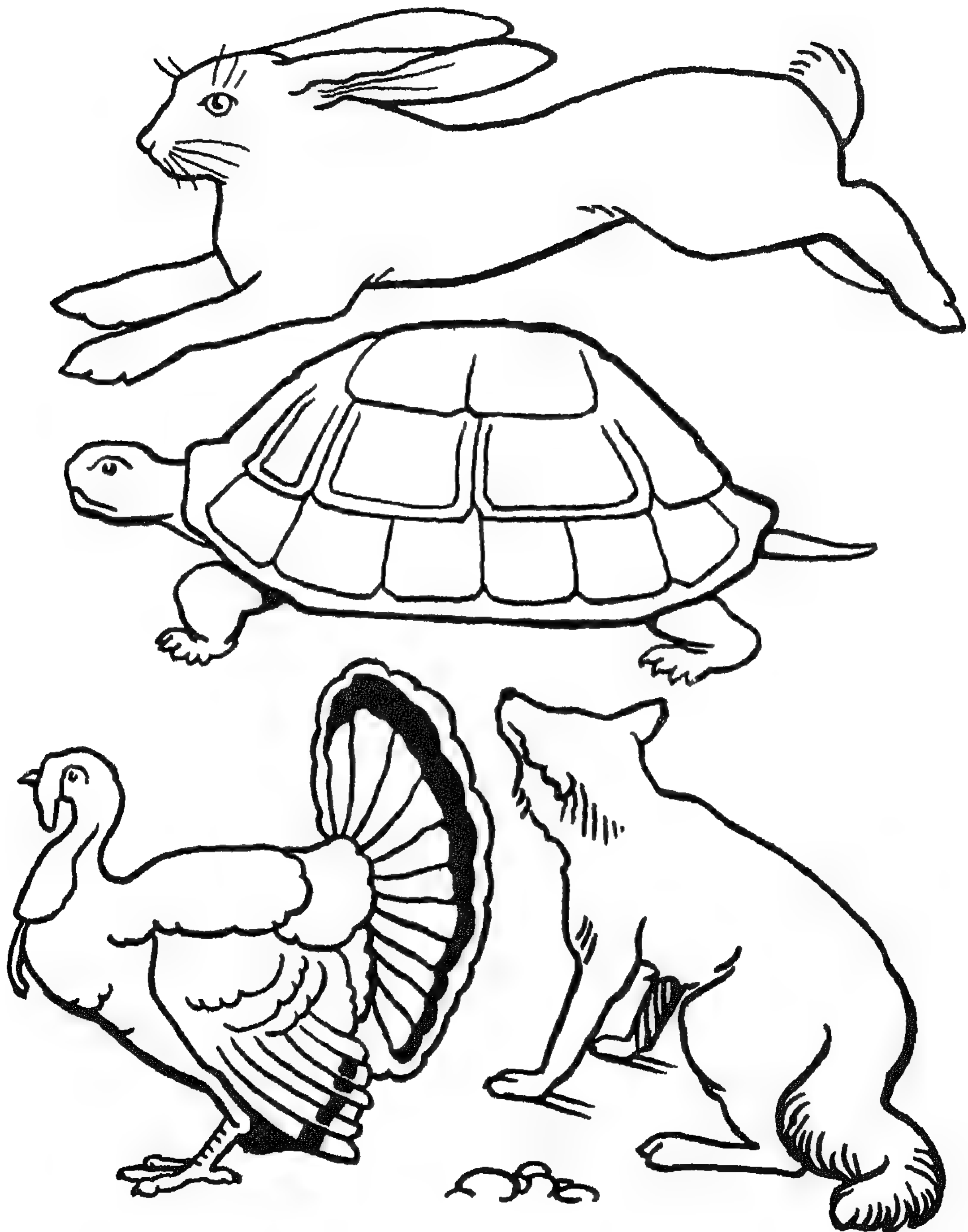
Children ask questions.

Written Work

I **Children's drill.**

Write your name Write the date Write your address Write the name of a boy Write the name of a girl. Write the name of the school.

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD



HARE AND TORTOISE—SEE PAGE 175
FOX—SEE PAGE 188
TURKEY—SEE PAGE 199

Dictation.—The clever little animal led the fox to the edge of the well, over which hung two buckets.

II. **Exercises on descriptive words and name-words.**

A Write the following on the blackboard: *night, fox, kitten, mouthful, animal, face.*

The children must put a describing-word before each of the above

Those in the story are. *moonlight* night, *hungry* fox, *tiny* kitten, *little* mouthful, *clever little* animal, *round* face

B Write the following on the blackboard. *morning, evening, night, supper, dinner, tea, breakfast, cheese, bread, butter, cabbage, meat, flour, milk*

1. Supper is eaten in the (morning, evening, night)
2. At midday many people have (supper, dinner, tea).
3. Children of ten have (cabbage, milk, meat) for breakfast
4. A round cheese is the shape of a (ball, pig, table)
5. Bread is made of (carrots, grass, flour).
6. A cow gives us (butter, cheese, milk).

The children must write and complete the above sentences with the appropriate words from the given list

III * **Sentence making.**

Tell what the kitten showed the fox

Tell why the kitten was not drowned in the well

Tell why the fox was drowned in the well

12—THE DISCONTENTED DONKEY

Introduction

THIS story can be read to country children without any preliminary remarks, but town children may know little of the seasonal occupations on a farm The different scenes offer excellent scope for imaginative drawing

Story

One cold winter's day a donkey was standing in his shed He was shivering and grumbling to himself "I wish the weather were warmer, so that I could leave this cold shed," muttered he. "It would not be so bad if only there were fresh grass to eat instead of this dry hay."

By and by the warm spring came The donkey was taken out of the shed and harnessed to his cart. He had to draw sacks of seed to the cornfield "This is hard work," he grumbled again "How I wish that the hot summer had come."

Summer came, and now the donkey had to carry hay to the stacks and vegetables to the barn from morning till night "I am worse off than ever, toiling along in this heat," he groaned. "Oh for the autumn to come!"

Autumn soon set in, but still the donkey grumbled. Now he had to carry corn to the granary, apples to the storehouse and winter fuel to the woodshed At last he began to long for the winter again "For," said he, "even if I do not have much to eat at least I am able to rest."

Some folks are never content

Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why did the donkey grumble in winter?

Why did the donkey grumble in spring?

Why did the donkey grumble in summer?

Why did the donkey grumble in autumn?

Retell the story.

Children ask questions

Written Work

I. **Children's drill.**

Write your name Write the date. Write the name of your school. Write the names of the seasons.

Dictation —Summer came, and now the donkey had to carry hay to the stacks and vegetables to the barn from morning to night

II. **Exercises on verbs and phrases.**

A. Write the following on the blackboard

1 Donkeys (lift, push, draw) carts
2. The rain (snows, falls, melts) all day
3. The sun (jumps, shines, twinkles) in the sky.
4 Apples (bloom, fall, grow) on trees.
5. Cars (run, walk, trot) down the road.
6. Donkeys (bray, bark, low) very loudly.

The children must write the above sentences correctly.

B Write the following on the blackboard: *round the field, in the shed, across the pond, down a rabbit hole; up a tree; in the meadow.*

1. The donkey was standing ——.
2 The farmer trotted on his horse ——.
3. His cat climbed ——
4. His ducks swam ——
5. His dog burrowed ——.
6 His children picked flowers ——.

The children must write and complete the above sentences with the appropriate phrases

C. Write the following words on the blackboard. *on; upon; under; over; in; out; above, below, up; down.*

The children must write sentences each containing one of the above words

III.* **Sentence making.**

Tell why the donkey is called discontented
Tell what the donkey had to do in autumn.
Tell of some work you have seen a donkey do

13—THE CRAFTY FARMER AND THE DWARF

Introduction

THE children will probably already be familiar with stories of dwarfs, but it is as well to ascertain by asking one or two questions In town schools see that children understand that the corn comes from the ears at the top of the stalks and that carrots grow below ground Unless these points are clearly fixed the story is meaningless. Corn and carrots will be excellent for drawing in colour

Story

A farmer once owned a grassy hillside and began ploughing it ready for planting corn. To his surprise, a dwarf suddenly popped up out of the ground, and said angrily, "What do you mean by stamping on my roof and waking me up?"

"Forgive me, sir," said the farmer, "I did not know your house was under this hill I am doing a good thing for us both, though, in growing crops on the hillside"

"I don't see that," said the dwarf

"Let me explain, then," replied the farmer "I will do all the work Then at the end of the first year I will take what is above the ground, and you shall have what is below the ground"

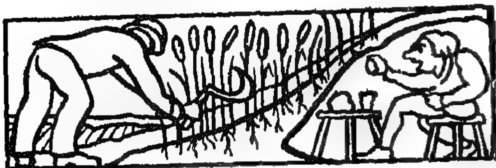
"Well, and what is to happen in the second year?" asked the dwarf.

"Oh," replied the farmer, "at the end of the second year you shall have what grows above the ground, and I will take what is below."

"That seems quite fair," said the little man. "Very well, I agree."

The cunning farmer, however, tricked the dwarf after all He planted wheat the first year, and took all the grain, which of course was at the top of the stalks, leaving only the useless roots for the dwarf When the second year came the farmer planted carrots,

and, as these grow under the ground, he carried them away for himself, while the dwarf had nothing but the green carrot tops.



Oral Work

What does the beginning of the story tell you?
What does the middle of the story tell you?
What does the end of the story tell you?
Why was the dwarf angry with the farmer?
What did the farmer promise the dwarf?
Why is the farmer called cunning?
Retell the story
Children ask questions.

Written Work

I. Children's drill.

Write your name Write the date. Write your own address. Write the name of the school Write the title of the story

Dictation —"Oh," replied the farmer, "at the end of the second year you shall have what grows above the ground, and I will take what is below"

II. Exercises on words of opposite meaning and on writing questions.

A Write the following on the blackboard *above, up, slowly, softly, gently, outside*

1 Below the ground are the roots, —— the ground are the flowers.
2. Seeds grow quickly, but trees grow ——.
3 When you climb a tree always look ——, never look down.
4. The flower was yellow inside and blue ——
5 The bees hummed ——, the dogs barked loudly
6 The dwarf spoke roughly, the farmer answered ——.

The children must write and complete the above sentences with the appropriate words

B. Write the following words on the blackboard: *what, why, who, where, which, when.*

1. "—— are you?" said the farmer to the dwarf.
2. "—— do you mean by stamping on my roof?"
3 —— did the farmer grow carrots the second year?
4. —— are you digging up your carrots?
5 —— of the flowers do you like best?
6. —— does a wild rabbit live?

The children must write and complete the above sentences with the appropriate words

C. The children must make *complete* sentences of their own to answer the questions in B

III * Sentence making.

Tell why the farmer was surprised.
Tell what the farmer promised the dwarf
Tell how the farmer cheated the dwarf.

14—A PIG

ONCE upon a time there was a big pig, who was covered with long prickly bristles and did nothing but eat from morning till night For fun he used to wallow in a muddy gutter, and when he came out again his shaggy coat was dripping with dirt, and nobody liked to have anything to do with him But this did not trouble him, for he cared for nobody, and never did a thing to try and please anyone.

"What a nasty thing he is," said a child; "he never washes himself in clean water nor uses soap. He does not brush his hair or clean his teeth, and he runs about in his dirty coat on Sundays as well as on week-days I wonder if some day he will be punished for behaving so badly."

And so he was! One day the butcher killed that pig, scalded off his coat with boiling water, and sold the bristles to the brush-maker, who was a clever man, and preached the dead beast a sermon. "You have done nothing all your life but eat—now you shall be eaten in your turn As sausages and ham you shall be smoked, as pork and chops you shall come into the kitchen, where it will be made hot enough for you You have been a pig all your days, you have always had dirty bristles, and never thought of making yourself pleasant. Now those very bristles shall help to make people clean from the top of their heads to the soles of their feet We will make of them hairbrushes, clothes brushes, tooth-brushes, and shoe brushes You would not clean yourself, but you shall help to clean others!"



Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why did the child call the pig *nasty*?

How was the pig punished?

How was the dead pig made useful to people?

Retell the story.

Children ask questions

Written Work

I. **Children's drill.**

Write your name Write the date Write your own address Write your father's name. Write your mother's name. Write the title of the story.

Dictation.—As sausages and ham you shall be smoked, as pork and chops you shall come into the kitchen, where it will be made hot enough for you.

II **Exercises on adjectives and sentence making.**

A Write the following on the blackboard.

muddy, shaggy, prickly, clean, nasty, clever

1. The pig was covered with —— bristles.
2. He used to wallow in a —— gutter
3. His —— coat was dripping with dirt.
4. "What a —— thing he is," said a child.

5. He never washes in —— water
6 The brush-maker was a —— man

The children must write and complete the above sentences, using words from the given list

B Write the following on the blackboard:

1 pig, did, The, but, eat, nothing
2 used, wallow, to, He, in, mud
3 butcher, pig, the, killed, The.
4 his, off, coat, scalded, He
5 bristles, the, He, sold
6 a, sermon, He, the, beast, dead, preached.

The children must arrange and write the above words in proper sentences

III * **Sentence making.**

Tell why the child did not like the pig.

Tell what you can about pork and chops, sausages and ham

Tell what you can about brushes.

15—THE THIEF FOUND OUT

ONCE a merchant had an only son, named Said The father wished his son to carry on his business carefully. Soon the father found out that Said trusted one of his young friends too much He felt sure that his son's friend had cheated Said several times without being found out

One day the merchant and his son had to go away on business The merchant said to Said, "Whom can we trust with our money while we are away?"

"My friend is the most honest man in the town," replied the son. "Let him take care of the money, father"

"I think you are mistaken in your friend, my son," said the merchant

"Oh no, father, you do him wrong He would never rob anyone," replied Said

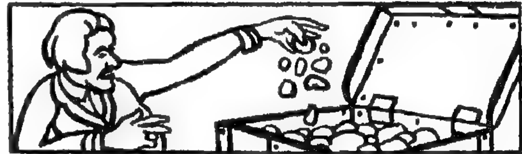
"Well," answered the merchant, "I will take your word for it, and trust your friend with the money" Then he gave to the friend a large heavy strong-box, fastened with three locks. This the friend was to take care of while the merchant and his son were away

When Said and his father came back, the merchant said to his son, "Now go and get the strong-box from your friend"

Said returned very quickly, crying, "What have you done, father? My friend is furiously angry. He says you have insulted him. You gave him only broken stones to take care of in the strong-box"

The merchant placed his hand on his son's shoulder. "How did your friend know that there were only broken stones in the strong-box?" said he "He must have forced open the three locks and searched inside Yet the box was not his. That was a thievish thing to do Now, don't you think I was right not to trust him?"

"Father, you were quite right," Said replied "I see now that you are far wiser than I am. I shall not disagree with you again"



ORAL WORK

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

What did the father think of his son's friend?

What did the son think of his friend?

Why did the father put stones into the strong-box?

How did the son know that his friend was a thief?

Retell the story.

Children ask questions

WRITTEN WORK

I. Children's drill.

Write your name. Write your address Write the date. Write the names of the seasons. Write the title of the story

Dictation—The merchant placed his hand on his son's shoulder "How did your friend know that there were only broken stones in the strong-box?" said he.

II. Exercises on conversations and capital letters.

A. Write the following on the blackboard. *strong-box, friend, stones, word, stones, money.*

1. The merchant asked, "Whom can we trust with our ——?"
2. "My —— is honest," replied the son
3. "Well," answered the merchant, "I will take your —— for it"
4. The merchant said, "Now go and get the —— from your friend"
5. Said cried, "You gave him only broken —— to take care of."

The children must write and complete the above sentences using words from the given list

B. Write the following on the blackboard:

1. have you heard about pip, squeak and wilfred?
2. little tommy tucker sang for his supper.
3. simple simon met a pieman.
4. the baby's name is kate jane smith
5. have you seen father christmas?
6. there are elephants at the zoo in london.

The children must write the above sentences correctly.

III * Sentence making.

Tell what the beginning of the story is about.

Tell why the merchant put stones into the strong-box

Tell what the end of the story is about.

16—THE MERMAID OF LIZARD HEAD

LIZARD HEAD is a great mass of rock running out into the sea off the south-west coast of England Not very far away from here there once lived a farmer, whose name was Lutey. One summer's evening he was walking by the seashore when he heard the sound of sobbing After he had searched for some time, he found a beautiful mermaid, weeping because the tide had carried her on to the rocks and left her there She wanted to get back to the sea, but could not, because her tail was useless on land Lutey took her in his arms, and carried her down to the edge of the water.

"Come with me," whispered the mermaid, "and let me show you the wonders under the sea" So sweet and coaxing was her voice that the farmer would have dived into the blue waters there and then, had not his dog barked behind him He turned and saw the smoke rising from the chimney of his farmhouse, and the green fields that lay around it, and he felt that he could not leave his home.

"Farewell then," said the mermaid, "but in ten years' time I shall come for you again"

Ten years passed, and one moonlight night Lutey went fishing in a little boat. The sea was calm, but suddenly a great wave came rolling toward him, bearing on its crest the lovely mermaid, who stretched out her white arms to him

"My time has come," said the farmer. He plunged into the sea beside the mermaid and sank with her down, down into the deep, never to be seen again.

ORAL WORK

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end tell you?

What did the farmer do to help the mermaid?

What did the mermaid say to the farmer?

Why did the farmer plunge into the sea?

Retell the story.

Children ask questions.

WRITTEN WORK

I **Children's drill.**

Write your name. Write your address. Write the date. Write the names of your grocer and milkman. Write the title of the story

Dictation —So sweet and coaxing was her voice that the farmer would have dived into the blue waters there and then, had not his dog barked behind him.

II. **Exercises on verbs and phrases.**

A Write the following on the blackboard: *carried, sobbing, walked, was rising, came rolling, whispered, plunged, stretched out*

1 The farmer —— by the seashore.
2 He heard the mermaid ——.
3. The tide —— her on to the rocks
4. "Come with me," —— the mermaid
5 The smoke —— from the chimney.
6 A great wave —— toward him
7 The mermaid —— her white arms.
8 The farmer —— into the sea

The children must write and complete the above sentences, using words from the given list.

B Write the following on the blackboard: *into the sea, by the seashore, on to the rocks, in his arms, under the sea, from the chimney, in a little boat.*

The children must write sentences each containing one of the above phrases.

III * **Sentence making.**

Tell how the farmer found the mermaid.

Tell why the mermaid was sobbing.

Tell why the farmer did not go at once with the mermaid.

Tell what you think the farmer saw at the bottom of the sea.

17—THE OLD DAME OF MOROCCO

LONG ago there lived in Morocco an old dame who had no children She found her life so lonely that she went to a wise man and asked where she could find some happy children to live with her. The wise man said, "Take your basket and fill it with the dates growing on your palm tree in the garden. Put the basket by your kitchen fire and go to church and pray."

The woman did this, and when she came back the house was full of young men and maidens and merry children. The young men went out to work and brought back money for her, the maidens swept her house, shook her mats and cooked her rice, and the children laughed and played and made her very happy.

All went well for many months Sometimes, however, the shouts and games of the children made her bad-tempered, and one day the old dame flew into a rage because the children in their play had upset a bowl of milk in her kitchen She cried out, "I wish I had never seen you, you silly children of a tree," and she rushed angrily out of the house.

When she came back the house was empty and silent The merry children had gone, the pretty girls were not there to cook her rice, and the fine young men who worked so well had all disappeared Now the woman was very sorry She went to the tree once more and there she saw the dates growing again She put out her hand to take the fruit, but jumped back again with a scream All the dates had turned into

eyes and were staring at her! The old woman was terrified She ran away howling all down the road, and never came back again



Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why did the old dame go to a wise man?

What did the wise man tell the old dame to do?

What made the old dame bad-tempered?

Why was the house empty when the old dame returned home?

Retell the story.

Children ask questions.

Written Work

I. Children's drill.

Write your name. Write the name of the school Write the date. Write the day of the week. Write the month of the year. Write the title of the story.

Dictation.—The merry children had gone; the pretty girls were not there to cook her rice, and the fine young men who worked so well had all disappeared.

II. Exercises on verbs and conversations.

A Write the following on the blackboard.
swept, shook, cooked, laughed, played, rushed, jumped.

The children must write sentences each containing one of the above words.

B. Write the following on the blackboard

1. The wise man said, "Take your – – – – dates"
2. The wise man said, "Put the basket – – – – fire."
3. The old woman said, "I wish – – – – you"

The children must write and complete the above sentences.

C Write the following on the blackboard.

1. Mother said, " ."
2. Teacher said, " "
3. My father said, " ."

The children must write and complete the above sentences in any way they like

III.* Sentence making.

Write sentences containing these groups of words: *merry children, pretty girls; fine young men.*

Tell how the old dame's house became full of children

Tell what the children did for the old dame.

Tell why the children left the house.

18—THE RICH MAN'S DIAMOND

ONCE a rich man had a very poor neighbour A fortune teller came to the rich man and said, "All your treasures and gold will one day belong to your poor neighbour"

The rich man was troubled to hear this. "What shall I do," he said to himself, "to keep all my money safe?" It was a great worry to him to think that the poor man might one day get all his gold. For a long time the rich man thought and thought over what could be done

At last he said to himself, "I will sell everything and buy the finest diamond I can find." Then he sold all he had, and

bought a splendid diamond with the money. He thought, "This gem is worth the whole of my fortune; it will be safe if I sew it in my turban" He therefore sewed it in his turban, and felt happy at last "Now my poor neighbour can never get my diamond," said he.

Some months afterwards, the rich man was at sea, and a strong wind blew off his turban into the water. He could not reach it, and as the turban sank to the bottom he said to himself, "Alas! I have lost my diamond, but at all events my poor neighbour can never get it"

A few days later the poor man went fishing and caught a fine fish. When he cut the fish open, he found the rich man's diamond which the fish had swallowed. Thus, in the end, the fortune teller's words came true

Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why was the rich man troubled?

Why did the rich man spend all his money to buy a diamond?

How did he lose his diamond?

Have you ever seen a turban?

Do Englishmen wear turbans?

In what part of the world do men wear turbans?

Retell the story

Children ask questions

Written Work

I **Children's drill.**

Write your name Write the date Write the school address Write your mother's name Write your father's name. Write the title of the story

Dictation—He thought, "This gem is worth the whole of my fortune, it will be safe if I sew it in my turban"

II **Exercises on conversations.**

A. Write the following on the blackboard:

1. a fortune teller said all your treasures will one day belong to your poor neighbour
2. what shall i do? he said to himself.
3. he said, i will sell everything and buy the finest diamond i can find.
4. he said to himself, alas! i have lost my diamond

The children must write the above sentences correctly

B Write the following on the blackboard:

1. I said to my friend, "   "
2. My friend said to me, "   "
3. The grocer said to Tom, "   "
4. Tom said to the grocer, "   ."

The children must write and complete the above sentences in any way they like.

III * **Sentence making.**

Tell what the fortune teller told the rich man

Tell what the rich man said to himself.

Tell how the rich man lost his diamond

Tell how the poor man became rich

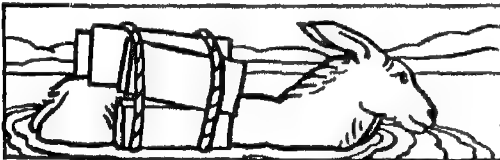
19—THE DONKEY, THE SALT, AND THE SPONGES

ONCE a man had a lazy donkey who did not like work One day his master loaded him with large blocks of salt, and began to drive him to market where the salt was to be sold. On the way, they came to a narrow wooden bridge across a stream As they were going over the bridge the donkey stumbled and fell into the water, which wetted him up to his neck The water melted the salt and washed most of it away, so that when the donkey scrambled out again, his load was all gone

His master took him home and loaded him with salt once more Then they set out a

second time. When they came to the bridge the cunning donkey thought, "I don't want to go to market I would much rather stay in the green meadow. I will get rid of this load as I did before." So he purposely slipped off the bridge into the stream, waited till the water had melted the salt and then scrambled out again.

"You bad rascal!" cried his master, who saw that the lazy donkey had tricked him "I will teach you a lesson!" He drove the donkey home again and loaded him this time with sponges. When the donkey came to the bridge, he fell into the stream as before This time, however, the sponges soaked up the water so that when the donkey scrambled out, instead of having lost his load, he found it twice as heavy This dragging, wet burden he had to carry all the way to market. The water ran along his backbone, and squirted from the sponges as they jolted. He was tired out and wretched when the market was reached. "I will never try that trick again," he promised himself; and that promise was kept



Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

Why did the donkey fall into the water the first time?

Why did the donkey fall into the water the second time?

Why did the master load his donkey with sponges?

Retell the story

Children ask questions

Written Work

I Children's drill.

Write your name Write the date Write the days of the week Write the names of the first six months of the year

Dictation—This time, however, the sponges soaked up the water so that when the donkey scrambled out, instead of having lost his load, he found it twice as heavy.

II. Exercises on words of opposite meaning and phrases.

A Write the following on the blackboard let the children select the words of opposite meaning: *lazy, hard-working; large, small, narrow, wide, bad, good, wet, dry.*

The children must now supply suitable name-words to each of the above, e g. *lazy donkey, hard-working horse*

B. Write the following phrases on the blackboard *on the way, across a stream, over the bridge, into the water; up to his neck; to the bridge; in the green meadow; off the bridge.*

The children must write sentences containing the above phrases.

III * Sentence making.

Tell what happened when the donkey fell into the water the first time and the second time

Tell what happened when the donkey fell into the water the third time.

Tell why the donkey promised never again to play tricks.

20 -ROBIN ROUND CAP

THERE was once a very naughty elf named Robin Round Cap. This elf lived in a farmer's house and played all kinds of pranks He chased the turkeys and pulled out their tail feathers, turned the milk sour, frightened the baby in its

cradle by shouting "Bo!" and even pinched the farmer's nose as he lay asleep. "Whatever shall I do?" cried the poor man "This wicked elf worries me to death!"

At last he made up his mind to move into another house, and leave Robin Round Cap behind He packed his goods on a cart, and drove away, hoping that he had rid himself for ever of the troublesome elf.

On the way, he met a neighbour who stopped to wish him good-day. "You are moving house, I see," he remarked

"Yes, indeed we are," squeaked a little voice from the back of the cart. The farmer looked round and saw Robin Round Cap's cheeky face peeping out from among the pots and pans He had jumped on to the cart when no one was looking and was moving house too

"It is of no use going on," said the farmer, "I must think out another plan" He turned his horse round, and drove home again. That night he sent for a wise man, who caught the elf and shut him up in an empty well inside the house There, so the country people tell, the naughty elf remains a prisoner till this day, and they call the place Robin Round Cap's Well

(There is an illustration of a turkey on page 189.)

Oral Work

What does the beginning of the story tell you?

What does the middle of the story tell you?

What does the end of the story tell you?

How did the elf worry the farmer?

Why did the farmer move to find another house?

Why did the farmer go back to his own house?

Retell the story.

Children ask questions.

Written Work

I **Children's drill.**

Write your name. Write the date Write the names of three boys Write the names of three girls Write the names of the last six months of the year.

Dictation.—He chased the turkeys and pulled out their tail feathers, turned the milk sour, frightened the baby in its cradle by shouting "Bo!" and even pinched the farmer's nose as he lay asleep.

II **Exercises on questions and answers.**

A. Write the following on the blackboard. *What shall I do?* The children must write six questions, each beginning with one of the following words *Who, Which, Why, When, Where, What*

B Write the following on the blackboard: *Who is the king of England? Which story do you like very much? Why do you come to school? When are you going home? Where do you live? What is your father's name?*

The children must write answers to the above questions

C Write the following verbs on the blackboard *play, chase, pull out, frighten, pinch, worry, pack, squeak, drove, caught*

The children must write sentences each containing one of the above verbs

III * **Sentence making.**

Tell of the tricks played by the elf

Tell what happened when the farmer met a neighbour on the road

Tell how the place came to be called "Robin Round Cap's Well"

TWENTY ADDITIONAL SHORT STORIES FOR ORAL AND WRITTEN COMPOSITION

THE following stories are similar in character to those included in the previous set of lessons for composition The language throughout is simple; each story, or part of a story, has been framed to show clearly the three fundamental parts of beginning, middle and end.



1. THE FOX AND THE CROW

A HUNGRY fox one day saw a crow sitting on a tree holding a piece of cheese in her beak. He at once made up his mind to obtain the dainty morsel for himself.

"Madam Crow," he said, "you are the most handsome bird I have ever seen. If your voice is as lovely as your feathers, you are the fairest creature in the world. Do let me hear you sing."

The silly crow was very proud to hear such words spoken of herself. She opened her mouth to sing and down fell the cheese. It was quickly snapped up by the cunning fox, who murmured to himself as he trotted away, "I said that she was *beautiful*, but I did not say that she was *wise*."

If we are vain and love flattery, we shall become foolish.

2. THE DOG IN THE MANGER

A MANGER is a large box into which a farmer puts hay for his cows to eat One day, the manger in a cow shed had just been filled, when a dog

jumped into it, and settled himself on the hay. Every time a hungry cow came in for a feed, the dog snarled and snapped, and drove her away.

Presently an ox walked in for a few mouthfuls "Gr-rr-rr," growled the dog, "be off! I'll bite you! Gr-rr-rr!"

"Why can't you let me eat the hay?" said the ox. "You can't eat it yourself."

"I don't care," barked the dog "If I can't eat it myself, nobody else shall have it"

To be selfish is the worst fault we can have.

3. THE DOVE AND THE ANT

ONCE a dove was drinking by the side of a brook, when she saw an ant fall into the water. Pitying the struggling insect, the dove quickly pecked up a blade of grass and threw it into the water. The ant crawled on to the grass and so was saved

Some time after this, a ragged and bare-footed tramp came along He carried a crossbow, for he was looking for food As soon as he caught sight of the dove he was very pleased, and thought, "How good she will smell cooking in my pot!" Very quietly he took aim with his arrow to kill the dove, but at that moment the watchful little ant ran up and bit his heel The man jumped with the pain, and turned round. This frightened the dove and she flew off out of danger

"There goes my supper!" thought the man as he watched the dove fly away.

One good turn deserves another

4. THE WIND AND THE SUN

THE North Wind and the Sun had a quarrel. Each thought himself stronger than the other Neither would give way until the Sun noticed a traveller wrapped in a long cloak climbing the side of a hill.

"Let us try our strength upon that man," he said. "Whichever of us can make him throw off his cloak is the stronger of the two."

"Very well," said the North Wind, "I will try first"

He puffed out his cheeks, and blew with all his might on the traveller, trying to tear his cloak from him Instead of blowing it off, however, the icy gusts only made the man wrap his cloak more closely round his body to keep out the cold

"Now it is my turn," said the Sun

He smiled down upon the traveller. The sunshine beat upon the weary man till at last he grew faint with the heat.

"This is strange!" he said to himself. "A little while ago it was so bitterly cold that I was glad of my warm cloak. Now it is so hot that I really think I must throw it off."

He did so as he spoke, and the North Wind had to own that the Sun was stronger than himself



5. THE WOODMAN AND HIS AXE

A WOODMAN was one day cutting down a tree by the riverside when his axe slipped from his hand It fell into the river and sank to the bottom of the water. This was a heavy loss to the woodman, for he was too poor to buy a new axe and now had no way of earning his living

As he was sitting sadly on the river bank, suddenly he saw a handsome young man by his side. It was Quicksilver, the messenger of the gods.

"Why are you so unhappy?" asked Quicksilver.

"I have dropped my axe into the river," said the woodman "Now I can do no work, and my children will starve"

"Never mind, I will get it back for you" said Quicksilver He dived into the river and brought up an axe made of gold

"Is this your axe?" he asked

"No, indeed," said the woodman, "my axe is made of iron"

Quicksilver dived again, and this time brought up a silver axe

"Is this your axe?" he asked

"Oh dear, no!" replied the woodman "How could a poor man such as I am buy a silver axe? My axe is made of iron"

Quicksilver dived a third time, and brought up the woodman's own axe "Is this your axe?" he asked

"Indeed it is," cried the woodman joyfully, as he grasped his old friend once more.

"You are an honest woodman," said the messenger of the gods. "You might have claimed the other axes, which were worth more than yours, but you would not take anything that did not belong to you. Here is your reward. Take the golden and silver axes as well as your own," and he handed them over to the woodman.

Honesty is the best policy.

6. THE OAK AND THE REED

A GREAT oak tree once stood beside a pool of water. Its branches stretched far and wide, and its strong roots spread all round it under the earth. The oak was nearly a hundred years old, and very proud of its great age and strength.

At its feet, beside the pool, grew a thin and slender reed It had no broad branches and no strong roots When the wind blew, the reed bent this way and that, so that the oak laughed

"You poor weak thing!" said the tree "Even a gentle breeze makes you bend over and tremble Look at me. Here I stand straight and strong, and the leaves growing thickly on my branches shield me from the cold"

One day a great gale began to blow. The reed bent down nearly to the ground, and its head dipped into the pool

"Why do you not stand up against the gale?" shouted the oak "See how firmly I stand No wind can make me bend my back"

As it spoke a wild gust howled round the tree There was an awful crash! The proud old oak that would not bend its back was torn up from the ground There it lay, stretched on the earth, with its roots in the air

When the storm had died away the thin reed stood alone beside the pool

"Ah," it murmured, "I bend, but I do not break"

7. FOOLISH NEDDY

THERE was once a man who was very fond of animals. He had two pets, a donkey called Neddy and a dog called Ruff Neddy lived in a stable where he had plenty of oats and hay. Ruff was always with his master, who took him for walks, played at ball with him and taught him at meal times to sit up and beg for titbits of food.

Now Neddy grew jealous of little Ruff. "Why should I stay in my stable all day," he thought, "while Ruff is allowed to run in and out of the house and frisk about and lick my master's face? I will bark and play, too, and behave as Ruff does, and then they will make a fuss of me as well"

So he kicked up his heels and tried to bark All that he could say was, "Hee-haw," and he looked so funny that everyone laughed When dinner time came he ran into the house and tried to beg, as Ruff did. He sat up on his hind legs and turned down

his forelegs Then he tried to romp with the children, but they were frightened and ran away. Foolish Neddy thought that this was all part of the game, and he made more noise than ever

He ran to his master and, putting out his great tongue, licked his face Then he did the strangest thing of all. He jumped into his master's lap!

The mistress screamed, the master shouted, and the servant ran in with a thick stick. The silly donkey was beaten, taken back to his stable and locked in. There he was left to think how foolish he had been, and to remember that only dogs may behave like dogs, and that donkeys must always behave as donkeys should.

8. THE FROG AND THE OX

A NUMBER of frogs once lived together in a pond. One of them was larger and fatter than all the rest. He was very proud of himself for being so big He thought that he was the biggest frog in the world

One day an ox came down to the pond to drink. As the great animal splashed into the water, all the frogs leaped away in fear The ox drank as much as he wanted, and then went back to the meadow to graze

All the frogs began talking about the ox "What a very large frog came to the pond just now!" said one

"Ah, but he was not so large as I am," said the biggest frog.

"Oh, indeed he was," cried all the other frogs "He was much larger than you are."

The big fat frog began to puff himself out by taking in large breaths of air. When he was twice as large as he had been at first he said, "Croak! croak! Was the new frog bigger and fatter than I am now?"

"Very much bigger, very much fatter," cried the other frogs.

The big frog puffed himself out once more till it seemed as if he must burst When he was three times his proper size he said, "Croak! croak! Was the new frog bigger and fatter than I am now?"

"Very much bigger, very much fatter," replied the frogs

The big frog grew very angry and puffed and swelled till he was four times as large as he ought to have been. Then he gasped out in a faint voice, "Croak! croak! Was the new frog bigger and fatter than I am now?"

"Yes! yes! still bigger and fatter than you are," croaked the frogs

The foolish frog took one more breath. Puff! bang! He burst like a balloon, and was never seen again.

9. THE GOOSE THAT LAID THE GOLDEN EGGS

A LITTLE old man and a little old woman once lived together in a little old cottage They were very poor, because the little old man was so lazy that he would not work hard enough to earn more than a few pence

One day, when the old man and his wife were sitting at home with the door wide open to let in the warm sunlight, in waddled a very large goose. It found some straw in the corner and sat down there.

"I believe it is going to lay an egg," said the little old woman.

Sure enough, when the goose got up, there in the straw lay an egg. The old man picked it up and gave a cry of joy

"Wife! wife!" he said, "this egg is made of gold!"

The next day at about the same time the goose laid another golden egg

"Our fortune is made," said the old man.

He did not go to work at all, but sat all day looking into the box in which he put the golden eggs. Every day the old man added one more egg, and he would sit counting them and chuckling over his riches.





The Frog and the Ox

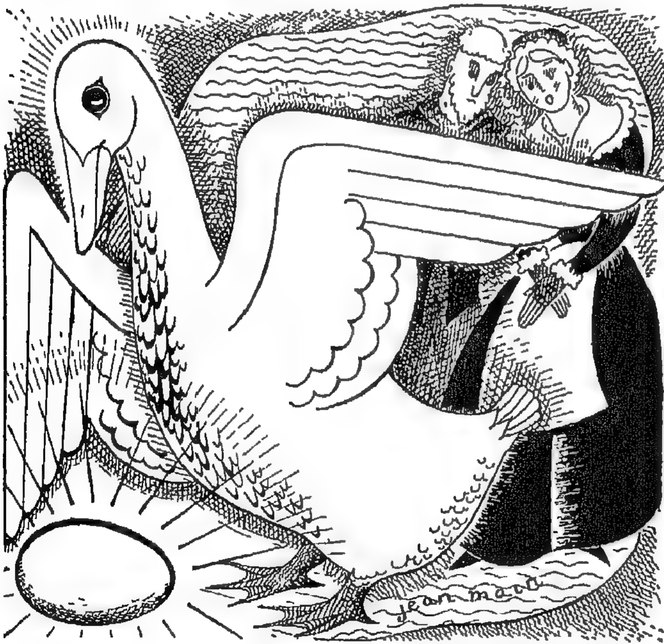
After a while he began to grumble. He thought that the eggs did not come fast enough, and he wanted more at once.

"The goose must have hundreds of eggs inside her," said he. "I will kill her and have them all without any waiting."

So he killed the goose. Alas! she was just the same inside as any other goose. Not a single golden egg was to be found.

When the wife saw the dead bird she was very angry.

"Foolish old man," she said, "now we shall never have another golden egg," and throwing her apron over her head she wept bitterly.



10. HOW TO EAT CHEESE

THERE was once an old widow who had a son named Pat. "Pat," she said to him one day, "it is time you had a wife. Why don't you find a nice girl and ask her to marry you?"

"Well, mother," said Pat, "I know three nice girls, but I like all three so well that I cannot tell which of them to choose for my wife."

"Bring them all here to supper," said his mother, "and I will help you to pick the best wife."

So Pat went round to the three pretty maids, whose names were Lily, Rose and May, and asked them to supper. Lily was tall and fair and clever. Rose was short and dark and full of fun. May was sweet and good.

"I must choose one of these three," thought Pat.

They said that they would like very much to come, and at supper time they arrived at the widow's house. Lily had a new blue dress, Rose had a new red dress, and May's new dress was white.

They had rabbit pie for supper which everyone said was very good. Then they had gooseberry tart with custard and cream. Last of all, they had cheese. Each girl took a piece and cut off the rind, and the widow watched her very carefully while she did so.

Lily took her knife and cut off the rind from her slice. She did not watch what she was doing and left a thick piece of cheese on the rind. Rose took her knife and cut the rind very thin. May took her knife and cut the rind neither thick nor thin.

When the three girls had gone home, the widow said to Pat, "Do not choose Lily, for she will be wasteful. Do not choose Rose, for she will be mean, and will not give you enough to eat. Choose May. The rind of her cheese was just right. She will make you a good little wife."

So Pat asked May to marry him, and they were happy so long as they lived.

11. THE CAT GIRL

PART I

A MAN once had a beautiful cat. It had such gentle ways that he loved it, and wished he could take it everywhere with him.

"If I could turn Puss into a little girl," he said, "then I could take her with me when I went for a walk or to visit my friends."

One day the cat's master went to a shop kept by a man who sold magic drinks.

"Can you give me a magic drink which will turn my cat into a little girl?" he asked.

"Yes," said the man, "here is some in this bottle. Pour a thimbleful into the cat's milk, and the cat will at once look like a little girl."

The man poured some of the magic drink into the cat's milk, and when it had lapped for three seconds, the cat was changed, and a pretty girl stood in its place. The man was filled with joy. He did not know that the drink had only made the cat *look* like a little girl. She was really a cat still.

"Now, my dear," he said, "you must come and visit my friends," and he took her to see a man and his wife.

"How-do-you-do?" they said, smiling kindly at the cat girl.

"Meeow," was all she could say in reply.

"What a strange girl!" thought the man and woman. "Perhaps she has a cold and cannot talk very well."

THE CAT GIRL

PART II

THEN they all sat down to tea. The cat girl took up her cup, but did not know how to drink and so began to lap.

"What a rude girl!" said everyone, and her master hung his head in shame.

Presently a little mouse came out of a hole and began to play in the middle of the room. The cat girl jumped up from her seat and ran to catch it.

"You bad girl," cried her master, "come home at once! Your manners are shocking."

"Yes, take her home," said his friends. "She is not like a girl at all. She is more like a cat."

The master took the cat girl back to the magic-drink shop.

"What can I do now?" he said to the shopman. "I have made a great mistake. I would rather have a real cat than a cat girl."

"I can easily put that right," said the clever shopman.

He gave the cat girl some blue water out of a big blue bottle, and she was soon turned into a cat once more.



12. HOPPING HARRY

PART I

THERE was once a boy who was so fond of hopping that he was called Hopping Harry. He did not walk to school as other boys do. He went along with a hop, skip and jump. Hopping Harry could not sit still in school, however hard he

tried His legs wanted to be up and away. They would not keep still and let him work at his lessons.

One morning his legs hopped him right past the school They hopped him down the lane, over the fields and on to the sea-shore He hopped over the waves and found himself in a little boat In the boat sat a queer little man His face, hair and beard were green, and he was dressed in seaweed

"Ho! ho! ho!" said he. "Why are you not at school?"

"My legs took me past the school," said Harry

"Ho! ho! ho!" said the little man. "I knew that would happen some day Now you are here, there is something you can do for me before you go back"

Harry felt frightened, but the little green man looked kind. So Hopping Harry sat as still as his legs would let him, and the little boat glided through the water.



HOPPING HARRY

Part II

At last they came to a cliff. Halfway up was the mouth of a cave "That cave is full of gold," said the little man, "but it is so high up that I cannot reach it. You must give one of your best hops, and that will take you into the cave Bring me what you find there"

Harry hopped Up he went right into the cave. There he found a sack full of gold. He put the sack on his back and stood in front of the cave Then he hopped down, and there he was back in the boat

"You are a good lad," said the green man "You may take some of the gold for yourself"

Harry quickly filled his pockets. Away went the boat, till they reached the shore again Harry hopped out, and off he went hopping, skipping and jumping, till he came to school at last.

"You are late," said the teacher, "and what have you in your pockets?"

Harry put his hand in his pocket expecting to pull out fairy gold Well, what do you think he found? Nothing but round pebbles!

13. THE PRINCESS AND THE PEA

There was once a queen who had a handsome son, and she made up her mind that this prince should marry none but a real princess So she invited all the fairest ladies of the court to the castle, and put each lady to a test which was to show whether or not she were a real princess

The test was to sleep one night in the great bed of the palace On it were piled twenty mattresses, and on them twenty feather beds, reaching nearly to the ceiling. Under the bottom mattress the queen had placed a single pea.

"A real princess," she said, "will have a skin so soft and delicate that she will feel the pea through all the feather beds and mattresses."

Whenever a lady had spent the night in the great bed, the queen would ask her how she had slept

"Beautifully," was always the reply.

"Then," the queen would say, "you are no real princess Guards, turn her out of doors"

One stormy night a maiden came to the castle gate She was poorly dressed, and her hair and clothes were streaming with rain, but she said she was a true princess. The guards would have turned her away, but the queen said, "No, let her enter I will find out whether she is speaking the truth," and herself led her to the bed-chamber.

In the morning the queen asked the princess if she had slept well

"Not a wink the whole night long," replied the maiden. "Something hard was in the mattress and, though I tossed and turned, I could get no rest. This morning I am black and blue with bruises."

Then the queen knew that she had found a real princess at last, and her wedding with the prince took place amid great rejoicings.

14. THE GREEDY WOODCUTTER AND THE FAIRY

ONE summer evening a woodcutter was on his way home. He had just carried a sackful of firewood to a farmhouse, and the empty sack was slung over his shoulder. He was a poor man and had to work very hard to earn an honest living.

As he trudged along, he grumbled to himself. "Only twopence for that great sack of firewood! I shall never get rich at this rate!"

In a moment, a dainty little fairy appeared before him.

"Would you be content, woodcutter," she asked, "if I were to fill that sack with gold for you?"

"Yes, indeed," he replied.

The fairy stretched out her wand. The woodcutter opened the sack's mouth, then suddenly closed it up again. He had thought it a very large sack when filled with wood for someone else, but now it seemed too small for himself.

"Wait a bit, wait a bit!" he cried. "I have a much larger sack at home. I will fetch it, and you can fill that instead."

He ran home as fast as he could and was soon back again with a very large sack. Alas! the fairy, disgusted at his greediness, had vanished, and the woodman was left with nothing but two empty sacks to carry home.

15. THE FOX AND THE GOAT

A FOX one day fell down a well from which he could not climb out. After he had been in the well for a long time, a goat passed by. Feeling thirsty, she came to the edge of the well, and looking in she saw the fox.

"Is the water sweet?" asked the goat.

"Yes, very," replied the fox. "It is so sweet that I cannot have enough of it. Why don't you jump in and try it too?"

The foolish goat at once jumped into the well for a drink. This was exactly what the cunning fox wanted. With one bound he was on the goat's back, and with another out of the well once more. The poor goat was left behind in the water.

"Good-bye, Madam Goat," called the fox, as he trotted off. "I hope you find the water sweet enough for you."



16. THE GOLD SHOE

Part I

ONE morning a little princess was playing in her garden. Her name was Poppy, and she wore a silk dress, a gold crown, and little gold shoes with blue bows on them She looked so pretty that a bad fairy who was passing swooped down, caught the princess up in her arms and flew away with her.

When it was found that Princess Poppy had disappeared, everyone in the palace began to search for her Her brother, Prince Hal, went out into the garden and there found a little gold shoe with a blue bow on it The shoe had fallen off as Poppy was carried away As he stood holding it in his hand and wondering how it came to be there, a golden eagle came down from the sky

"What are you seeking for, prince?" he asked "Can I help you at all?"

"Take this shoe," replied the prince, "and find my sister, Princess Poppy, to whom it belongs"



THE GOLD SHOE

Part II

NOW the bad fairy had shut the princess in a tower on a rock in the middle of the sea. She was very lonely, for no one ever came near her. Still, she hung her little gold shoe out of the window, hoping that someone might see it and come to the rescue

One day the golden eagle came flying over the sea He saw the gold shoe hanging out of the window, and shining in the sun like a tiny lamp. He at once flew down, carrying the other shoe, swooped in at the window of the tower and laid it at the princess's feet

She gave a cry of joy and slipped the shoes on to her tiny feet

"Now set me free, dear eagle," she said

"I cannot do that," said the eagle, "for you are under a magic spell Only the prince, your brother, can set you free Do not weep, however, for I will bring the prince to you"

THE GOLD SHOE

Part III

A WEEK passed by, and at last the eagle appeared again, carrying the prince on his back, and set him down at the foot of the tower.

"Now," he said, "you must go round and round the rocks for seven days Only when the sun sets may you rest. As soon as it rises again, round you must go once more. All the time you must eat no food, and as you walk you must sing."

The prince set off. As he walked he sang all the songs he knew, and when he could think of no more he sang them all over again Round and round he went, his legs getting more and more weary, and his voice more and more hoarse each time. When the last day came he was so tired that he could hardly crawl, and so hoarse that he could scarcely sing a note

At sunset on the seventh day his task was done. As the last rays of the sun lit up the tower, down it fell, splash! into the sea, and Princess Poppy was sitting on the rock beside him.

They looked up, and there was the eagle flying to them with a basket of food in his claws They had a happy meal, and when it was ended the eagle took the brother and sister on his back and flew off with them to their home

17. JACK THE GIANT-KILLER

Part I

In Cornwall, the south-west corner of England, there is a mountain with a castle on the top standing out in the sea. It is called St. Michael's Mount.

Long ago a wicked giant lived on this mountain He was as tall as a house and ten yards round. The giant's name was Cormoran He liked to say his name over and over again, and his voice rumbled like thunder Day after day he used to wade through the sea to the shore and steal the cattle from the poor Cornish farmers He would carry half a dozen oxen on his back, tuck three times as many sheep into his belt and pull up a young tree as a staff. Then he would march back to the Mount and spend the rest of the day eating and drinking.

On one of the farms lived a brave boy named Jack. As he grew older, he became more and more angry whenever the giant Cormoran came and stole his father's cattle. He set his wits to work and at last hit on a plan for killing the giant.

JACK THE GIANT-KILLER

Part II

One evening in winter Jack swam across to the Mount. Round his neck he had hung a horn and on his back were a pickaxe and a spade As he stepped on land, he could hear the giant snoring. He set to work at once to dig a great pit, and by the morning it was finished He broke long branches from the trees and laid them over the hole On top of the branches he put straw and leaves, and scattered earth over all, so that the pit was hidden and looked like solid ground. As soon as his trap was ready, Jack put his horn to his lips and blew a loud blast

The giant awoke with a roar, shouting, "Who dares to wake me?"

"I dare," Jack shouted back at the top of his voice.

"Little rabbit," the giant bawled, "I will eat you for my breakfast"

"You must catch me first," laughed Jack, and he began to run.

JACK THE GIANT-KILLER

Part III

The giant came rushing down the mountain. He had just put out his great hand to catch Jack, when he stepped on the earth which covered the pit. The branches gave way under his feet. Down he fell into the trap and broke his neck So much noise did his fall make that people for miles around came running to see what had happened They crowded round Jack, who had by this time swum back from the Mount, and he told them that the giant was dead.

The good news spread over the country, and all who heard it rejoiced to think that the terrible giant would trouble them no more. When the news reached the king, he sent for Jack. He thanked him for his brave deed, and gave him a fine sword, and a belt on which was written in letters of gold—

> "This is Jack the Cornish man
> Who slew the giant Cormoran."

Jack killed many other giants too, so men called him "Jack the Giant-Killer."

18. THE MAGIC OATMEAL

One wild winter night a Scottish farmer and his wife were sitting by a blazing fire in their farm kitchen. The wind howled in the chimney, and the

rain beat on the windows Suddenly there came a knock at the door

"Who can be out in such a night as this?" said the farmer's wife She opened the door, and there stood a little old woman dressed in a long green cloak streaming with rain

"Can you lend me a little oatmeal?" she asked. The farmer and his wife were very poor and there was only enough meal for three days left in the tub "Never mind! you are welcome to share it," said the farmer's kind wife, and she gave the old woman half

Next day the little woman came again She handed the farmer's wife a small bag. "In the bag is fairy oatmeal," she said. "Mix it with the rest of your meal and see what happens"

The farmer's wife did as she was told That night there was a terrible snowstorm So much snow fell that for thirteen weeks the roads were blocked with great snowdrifts, and no food could be brought to those in the farmhouse. But all that time they were never hungry. Though every morning they used half of their oatmeal for porridge, in the evening there was as much meal in the tub as before The magic oatmeal never grew less, and it saved them both from death

19. TRYING TO PLEASE EVERYBODY

PART I

A MAN and his son were one day driving a donkey to market to be sold The father rode on the donkey's back, while his son walked beside him.

Presently they met two men walking along. "Look at that fellow!" said one of the men "There he sits on his donkey as comfortably as you please, while his poor son has to walk on the hard road."

"Let us change places, son," said the father. He climbed down from the donkey's back The son jumped up in his place, and they travelled on.

Presently they met a group of men talking together in the roadway. "Look at that good-for-nothing lad," cried one of the party. "There he sits on his donkey, while his poor old father has to trudge along in the dust"

"It seems hard to please everyone," said the father "We had better both walk."

They had not gone far when they met some country girls "Look at those foolish men!" they cried "Fancy walking when they might both ride! That sturdy little donkey could easily carry them both"

"That is true," said the man, and he and his son both climbed on the donkey's back

TRYING TO PLEASE EVERYBODY

PART II

THEY had hardly settled themselves when a man cried out, "You ought to be ashamed of yourselves—two great fellows like you riding on one poor little donkey!"

"I will tell you what we had better do," said the man "Let us get a pole, tie the donkey to it and carry him between us"



They found a pole, tied the donkey's legs together and slung him upside down on the pole so that he hung between them. Then they staggered along under their heavy burden till at last they reached the town

As soon as they entered the streets, a crowd gathered behind them, laughing and jeering. People followed them wherever they went, shouting and throwing stones at the two men who were so foolish as to carry a donkey about.

"I'll tell you what, father," said the son, at length, "if we try to please everybody we shall end by pleasing nobody Let us only do what we ourselves think is right, and not care what other people say."

20. THE SNOW GIRL

IN the sunny land of Provence in the south of France, there is a little village, where once lived an old farmer and his wife. Though they had been married many years they had no children, and they often longed for a boy or girl to cheer their lonely old age.

Snow hardly ever falls in Provence, but one cold winter's night there was a heavy snowstorm and the farmer and his wife awoke to find the farmhouse almost buried in shining white snow "How pretty and soft it is!" said the old woman, "I shall make a little snow girl." She heaped and patted some snow into the figure of a girl and, to her surprise and delight, when it was finished the figure laughed and moved and followed her into the house.

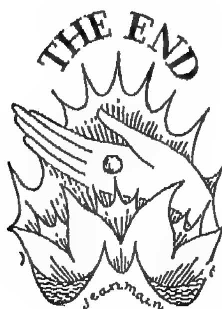
All the winter the old people were very happy with their little snow daughter She was so merry and gentle that the village children loved to play with her, and she was so pretty that people came from far and near to see the wonderful snow maiden.

When the spring came, however, the snow girl grew sad She was often seen crying, and when the bright sun shone she would slip away into the dark forest and hide from its rays One day in early summer the village children had made a bonfire, and they called to the snow girl to join them in their play.

"No, no," said she, shaking her pretty head.

"Oh do come with us It is such fun," they cried, and held out their hands to her. So she gave way, and was soon dancing round the fire with the rest.

Then the children began to leap over the bonfire. The little snow girl wished to do the same, and two big boys, holding her hands, swung her across the flames. But as the heat touched her delicate body it melted away, and two drops of water in the hands of the two boys who held her were all that was left of the little snow girl



FIVE NOTABLE PICTURES FOR ORAL AND WRITTEN COMPOSITION

1. THE FINDING OF THE INFANT SAINT GEORGE



From the picture by Charles M Gere, R W S] [*Reproduced by permission of the Corporation of Liverpool*

THE FINDING OF THE INFANT SAINT GEORGE

LET the children examine the picture (No 141 in the portfolio) in silence, and then invite them to tell all they can about it Many questions can be asked by the teacher.

Does this look like a picture of long ago? How can you tell? What English flowers can you see in it? Does it show spring, summer, autumn or winter? When do roses bloom? When do men plough the fields? What animals are used to draw the plough? How many oxen are there? How is the ploughman dressed? Why does he carry a goad? What hangs from his belt? What is in the little cask? Why does he carry it? Why does he seem puzzled? Do you think that the baby is a boy or a girl? What has he round his waist? Upon what is he lying? What pictures are on the sash and the cloth? Do you think that the baby came from a rich home or a poor one? How can you tell? What do you think the ploughman will do? What would you have done if you had found the baby?

STORY

Long ago, in the days of witches and fairies, there lived in the town of Coventry a noble lord. We do not know his name, but he must have been a great man, for the king gave him as a wife his own fair daughter, a princess as good as she was beautiful. After some time a baby son was born to them, a bonny child with blue eyes and curly golden hair Great was the rejoicing when the people of Coventry heard the news But alas! their joy was soon turned to sorrow, for a few days after the baby's birth his mother, the princess, died.

The baby was given to a nurse to be taken care of She was a careless woman, and did not trouble to look after him as his own mother would have done One night, as she was asleep with the baby in the cradle beside her, an ugly witch crept into the room. This witch had hated the princess, and she meant to steal the baby for spite. She snatched him out of the cradle, wrapped the coverlet round him to stifle his cries, and carried him away. When the careless nurse awoke in the morning, to her horror she found the baby gone The poor father was nearly mad with grief, and sent servants to search all the country round, but in vain. The little boy was not to be found.

Meanwhile, the witch had carried him away to her cottage in the forest, meaning to bring him up as her own child But the baby did not take kindly to his ugly new nurse, and he did nothing but cry He wailed and wept, and the witch could find no way to stop him. At last she grew so tired of his crying that she decided to get rid of him.

She carried him to a field where the day before she had seen a man ploughing. She laid the still weeping baby down beneath the shelter of a great stone over which a bramble bush was climbing. "Now," she thought to herself, "the ploughman will find the little brat when he comes by. He will take him back to his cottage, and so the king's grandson will be brought up as a ploughboy. Ha! ha! That will be a fine revenge" And laughing evilly to herself she hurried away.

The baby lay where she had left him, crying bitterly, for he was cold and hungry. But a fairy, who all this while had been watching him to see that no harm should befall him, touched the bramble bush It immediately became a rose bush laden with snow-white roses, which filled all the air around with their sweet scent As soon as the baby saw the roses and smelt their perfume, he forgot that he was cold and hungry and he ceased to cry He stretched out his little plump arms to the blossoms, and lay contentedly gazing at them as they swayed in the spring wind.

Presently up the hill came a sound of whistling, and soon the ploughman appeared driving before him his team of four white oxen As he drew near the stone beneath which the baby lay, he stopped in surprise, for the wind carried to him the scent of the flowers.

"Roses in spring!" he said to himself "I must surely be dreaming!"

Just then the rose bush caught his eye, and under it he saw a chubby baby, dressed only in a richly embroidered sash and lying on a silken cloth embroidered with green dragons. The babe seemed to have no fear of him as he bent over it, but looked up at him with his big blue eyes and smiled. The ploughman stooped and picked him up gently in his rough hands. He carried the little foundling home to his wife, and she, having no children of her own, took him joyfully in her arms and was soon busy feeding and dressing him

The baby lived with the ploughman and his wife, and they brought him up as their son They called him George and taught him to be good and brave. People began to whisper that the noble and handsome youth must surely be a king's son

When George had grown to manhood, he felt that he should not stay idly at home, but should go out into the world to find some work to do. He went first to the court, and

there showed himself so brave that the king made him a knight Then, dressed in shining armour and mounted on a white horse, he set out to seek adventure. On his arm he carried a snow-white shield on which was a blood-red cross This showed that he was a knight of the Cross

Many adventures befell the young knight, but he met them all as a brave man should Men began to wonder at his gentleness and goodness, and to call him Saint George. One of Saint George's adventures is known to every boy and girl In his wanderings he came to the land of Egypt, and found the people there in great distress For four-and-twenty years a fierce dragon had wasted all the land with his poisonous, fiery breath. Every year a fair maiden had to be given to this terrible monster. When Saint George arrived in the land he found the king's daughter chained to a rock waiting to be eaten by the dragon. Saint George killed the dragon with his sword and saved the princess

Saint George is the special saint of England The red cross which he wore on his shield has become part of our English flags, and the rose of England reminds us how, one spring day long ago, Saint George was found under a rose bush.

Sentence making.

1 Tell how the baby came to be in the field.

2 Tell what the ploughman thought when he found the baby.

3 Tell how the roses came to bloom in springtime.

2. CIRCE AND THE COMPANIONS OF ULYSSES



After Briton Rivière] [*Photograph Rischgitz.*

CIRCE AND THE COMPANIONS OF ULYSSES

LET the children examine the picture (No 142 in the portfolio) in silence, and then invite them to tell all they can about it. Many questions can be asked by the teacher, but the nature of the questions will to a large extent depend upon the answers of the children See that the following points are observed the pavement,

walls and carving on the walls which suggest an important house; the Greek costume; the wand, the strange fact of a lady sitting down with pigs; what the pigs are doing, the unusual feeding trough—a pretty bowl; how some pigs show that they have been well fed

Let one of the class sit down in the same attitude as Circe. Some of the pigs look at her as if pleading to be turned again into men, but she disdainfully looks on, heedless of their plight

STORY

Now you shall hear the story of the strange and beautiful lady who kept pigs in her palace garden.

You have all heard of the cunning warrior Ulysses, one of the Greek heroes who fought against the city of Troy. You remember that it was he who thought of the clever plan of building the wooden horse and filling it with soldiers The Trojans dragged the wooden horse within the city, and at night the soldiers inside the horse crept out, the rest of the Greeks joined them, and they took the city and burned it to the ground

When the fighting was over the Greek heroes set out in their ships to return to their homes in Greece. Ulysses went with them in his own ship. But fierce storms drove Ulysses' ship away from the rest, and for many weary months he and his men were obliged to sail on alone. They had many adventures and fought with many terrible monsters. At last, weary and worn with being tossed on the waves, they reached a beautiful wooded island, where they decided to stay and rest for a while.

As soon as they had cast anchor, Ulysses' men wished to land and explore the island.

"We may find nuts and berries and ripe figs," they said, "and perhaps we might kill a deer and have roast venison for supper."

You must know that these sailors were greedy fellows, always thinking of food, and grumbling at what they were given to eat. But wise Ulysses would not allow them all to go ashore.

"Remember, men," said he, "how many dangers we have met on our long journey. Perhaps in those thick woods lurk monstrous dragons or three-headed giants, and if we should all land on the island together, they would seize and eat us. Then none of us would ever return to our wives and children. But I have a plan by which we can explore the island in safety."

So saying, he divided the crew into two bands with twenty-two men in each. He appointed his friend Eurylochus captain of one band, and he took charge of the other himself. Then he took off his helmet and put into it two sea shells, on one of which he had written "Stay" and on the other "Go." While a sailor held the helmet, Ulysses and Eurylochus each drew out a shell. Ulysses' shell said "Stay", while Eurylochus' shell was marked "Go." Thus it was decided that Eurylochus and his men should land and seek food in the island, while Ulysses and his men stayed by the seashore to guard the ship. Then, if the men on the island were in danger, those on the shore could come to their rescue

Eurylochus and his men landed in the ship's boats and set off inland. As they went along, the sailors began to talk of the food which they hoped to find

"I shall look for figs," said one.

"Birds' eggs for me," said another.

"I have brought my bow and arrows," said a third, "and if I can shoot a nice tender little wild pig we will have roast pork for supper"

"Ah!" cried all the rest, smacking their lips.

Only Eurylochus said nothing, for he was thinking of the dangers which might lie ahead.

Presently they saw, above the tops of the trees, a column of smoke rising into the air

"Aha!" said one of the men, "we shall have a meal soon That smoke shows that someone is cooking his dinner"

They hurried into the wood from which the smoke came, and to their surprise found a broad pathway running through it The

pathway led them to a stately palace of white marble, in front of which lay a lawn of greenest grass

They had scarcely set foot on this lawn when to their horror they found themselves surrounded by a pack of wild animals—lions, tigers, bears and wolves These creatures, however, did them no harm, but fawned upon them like dogs, licking their hands and feet The men wished to play with these friendly animals, but Eurylochus saw a savage look in their eyes and told the men to leave them alone

Now a savoury smell of cooking from the palace made the hungry sailors hurry on As they reached the palace door, there appeared in the doorway a beautiful woman dressed in a white robe, and with long black hair hanging down her back, as you see it in the picture

"Come in, come in, weary travellers," she said smiling. "I have long been expecting you, and a feast is waiting for you"

The sailors hurried in, pushing and jostling each other to get to the food But Eurylochus remained outside, for he did not like the lady's smile, or the long black wand which she held in her hand In the picture you can see the wand lying on the terrace behind her.

When the sailors had gone in, however, he slipped in after them and hid behind a pillar to watch He saw his comrades seated on two-and-twenty golden thrones with cushions of silk at a table loaded with food, while servants brought them huge goblets filled with wine They were eating and drinking as if they never meant to stop They crammed pieces of roast meat into their mouths, and washed them down with huge draughts of wine.

"Why, they are more like pigs than men," thought Eurylochus in disgust.

It seemed as if the sailors' hunger and thirst could never be satisfied, but at last they could eat and drink no more, and leaned back in their golden seats Then Circe, who had been watching them all the while, came forward carrying her long black wand in her hand

"You greedy gluttons," she said, "you are not fit to sit at a lady's table. You shall receive a fit punishment for your greed I am Circe, the enchantress, and I have power to change men into the animals which they are most like You have behaved like pigs, and pigs you shall become. Begone to your sties!"

Circe stamped her foot and waved her wand as she spoke Lo and behold! on the two-and-twenty golden thrones sat two-and-twenty porkers, leaning against the silken cushions and with their trotters on the tablecloth Finding their seats uncomfortable, they slipped to the ground and ran to Circe. But when they opened their snouts to beg for mercy, the only sounds that came forth were grunts and squeals. Circe only laughed and drove them out of the palace to the hog pen, a dirty place full of thick mud sprinkled with straw.

Circe herself sat down on the pavement behind the palace, and laughed to see the plight of the poor sailors. Some of them had eaten so much that they lay down just as they were, unable to move Others wallowed in the mud, and seemed to enjoy being pigs instead of men But the rest crowded to Circe, and raising their snouts in the air squealed piteously as if to ask her to turn them into men once more.

Meanwhile, Eurylochus was hurrying to the seashore as fast as he could to tell Ulysses the sad news

"I will go myself to the palace," said Ulysses, the brave hero, "and see if I can rescue my poor men from this cruel spell My cunning will be a match for the magic spells of Circe."

He girded his sword on his thigh, bade farewell to his men, who greatly feared lest he should never come back, and set out alone on his adventure

As he hurried through the wood which led to Circe's palace he saw coming towards him a beautiful youth He wore winged sandals on his feet and a winged cap on his head, and in his left hand he carried a winged staff In the other hand he bore a curious plant

with a black root and a snow-white flower. Ulysses bowed his head, for he knew that this youth was Mercury, the messenger of the gods.

"Ulysses," said Mercury, "the gods love you for your courage and your wisdom, and they have sent me to tell you that you are in great danger. Circe knows that you are coming, and she intends to turn you into a fox, the most cunning of all animals But have no fear The gods send you this flower. It is called *moly*, and he who carries it need have no fear of magic Breathe its scent all the time that you are in Circe's palace, and be sure to take a deep breath before you eat her magic food and drink her enchanted wine. If you do this, no harm will come to you, and you will be able to rescue your men from Circe's power "

With these words Mercury disappeared, and Ulysses went on his way rejoicing and carrying the flower in his hand When he reached the palace the wild beasts fawned upon him, but he drew his sword and drove them off. Circe was waiting for him in the doorway

"Welcome, noble stranger," she said. "Will you not come in and rest?"

Ulysses thanked her and, taking a deep breath of the moly's scent, he followed her into the palace

A single golden throne now stood beside the table, and Circe begged Ulysses to sit down and dine. He did so, but was careful to smell the flower of the gods before either eating or drinking When he had eaten a very little of the choice food he refused to take any more

"You are a wise and cunning man," said Circe, "for you have eaten but little of my magic meat and drink. I shall change you into a fox, so that you may use your cunning to steal hens from poultry yards."

She waved her wand as she spoke, but the magic flower protected him from her spells, and, springing up, he seized her by her long hair.

"Wicked woman," he said, drawing his sword, "you shall die, unless you change my friends into men once more"

Circe was terrified at the sight of his shining sword, and promised to do as he told her. She blew a little silver whistle and in trotted the twenty-two sailors who had become pigs. As soon as they saw Ulysses they rushed to him and seemed to beg him to set them free. Then Circe waved her wand The pigs' bristles fell off, they stood upon their hind legs and became men once more.

They crowded round Ulysses and thanked him for saving them. But to Ulysses they seemed to behave like pigs still, for even while they were thanking him he saw them looking with longing eyes at the remains of the feast on the table

"At heart they are still pigs," he thought, "and so they will always be"

At this moment there was a sound of running footsteps outside, and in came the faithful Eurylochus at the head of his men Ulysses had been so long away that they had grown anxious and had come to seek him What a happy meeting then took place! Now that they were all together once more Ulysses and his comrades made themselves at home in Circe's palace, where they rested themselves after the toil and hardship of their long voyage.

As for the wolves, lions, bears and other wild animals, these, too, had once been men with fierce and savage tempers Circe offered to change them into men once more, but Ulysses said, "No, let them remain as they are. They will remind my sailors that all greedy and ill-tempered people will in the end become beasts, as they are."

Sentence making.

1. Tell why the pigs are crowding up to Circe.

2 Tell why the sailors deserved to be made into pigs

3 Tell what magic you would do with a fairy wand.

3. SIR ISUMBRAS AT THE FORD

LET the children examine the picture (No 143 in the portfolio) in silence, and then invite them to tell all they can about it Many questions can be asked by the teacher. See that the following points are observed the rich trappings of the horse, the bells, the knight's splendid armour, the peacock's feathers in the helmet, the children's bare feet; the bundle of sticks; the knight's kindly face, the trustfulness of the children, the children's dress (they are both boys), the nature of the surrounding country, the season of the year; the shallow river and the ford.

Certain points in the picture cannot be understood until the children hear the story; for instance the reason why the children are not finely dressed, why their feet are bare, why they have been gathering sticks, why they look sad, why they are crossing a ford, why one is dressed like a girl. After the story has been read these points can be cleared up by looking at the picture again The lesson should be completed by the children re-telling the story.

The MS. of the Romance of Sir Isumbras is in the library of Caius College, Cambridge The Romance is one of the Early English Metrical Romances, written probably in the early half of the fourteenth century

STORY

Once, long ago, there lived a famous knight called Sir Isumbras. He was rich and handsome, and he loved hunting and hawking, which were then the pastimes of rich men. He was strong and brave and won the prizes at many tournaments To his castle came many followers, for there was always plenty of good food to be had there, and minstrels played and sang while the people sat at meals. The wife of Sir Isumbras was very beautiful, and they dearly loved their three handsome children

It is sad to relate that this brave knight had one great fault—he was very proud He forgot that God gives all good things, and he thought that because he was such a fine person, he deserved to have a castle and many servants, and a beautiful wife and children.

One lovely morning Sir Isumbras went out hawking He rode on his favourite horse; dogs trotted behind, and on his gloved fist he carried his hawk Suddenly an angel appeared and spoke to him

"Sir Isumbras," said the angel, "the sin of pride has filled your heart, and the time has come for you to learn that you are no better than other men"

In great fear the knight sprang from his horse and fell on his knees.

"O God," he said, "forgive me for my pride, and help me bravely to bear my punishment"

For a long time Sir Isumbras kept silent, then he rose from his knees and prepared to mount his horse and go back to his castle Then the punishment began to fall on him. His horse, his hawk and his dogs fell dead before him. In fear and trembling Sir Isumbras walked slowly back to his castle. His servants, seeing him, rushed to meet him with terrible news His horses and cattle in the fields had been killed by lightning, and his hens and ducks had been stung to death by snakes.

"I will not complain," said Sir Isumbras, "it is my own fault that these things have come upon me"

Then a small page boy ran breathlessly up to the knight, and in a sobbing voice he said, "O my lord, your castle is burned to the ground and many of your servants are dead My lady and her children have only just escaped from the burning castle"

Sir Isumbras was so joyful that his wife and children had been spared that he took out his purse of gold and said to the page, "Take all the gold I have, for telling me that my lady and her children are safe"

When the knight returned, he found his wife and children shivering under a thorn bush They had lost everything in the fire, even their clothes, so they had to dress in any garments their servants and neighbours



From the picture by Sir J. E. Millais, Bt., P.R.A. [*By the courtesy of The Lady Lever Art Gallery, Port Sunlight*

SIR ISUMBRAS AT THE FORD

could spare. We see in the picture that one of the boys had to wear the clothes of a girl.

What could Sir Isumbras do to please God? He did what many men did in those days, he got ready to travel hundreds of miles to Jerusalem, where he would kneel before the holy place where Christ was buried With his sword he cut a cross on his bare shoulder Then with his wife and children he set out They had only one horse left, so they took it in turns to ride, and as they might not take any food with them they had to beg for it as they went along Sometimes, when no houses were near, they had nothing but berries to eat and they were forced to drink water from the streams Soon after they set out they came to a wide, shallow river which stopped their way Sir Isumbras carried the two eldest boys across the ford on his horse and placed them under a bush of broom to play with the flowers, while he went back for his wife and youngest son. In the picture we see that the poor children have been gathering sticks to make a fire, and that their little feet are bare While the knight went back across the ford for his wife and youngest son, a huge lion carried off the eldest boy into the deep forest and an enormous leopard carried off the second son

How sad were the hearts of the knight and lady at the loss of their two sons, and how bitterly did the youngest boy weep when he knew that he had lost his dear brothers! After many days they reached the shore of a sea where seven hundred ships were anchored The captain of these ships was king of the Saracens, who were enemies of all men who loved Christ

"Come with me, Sir Knight," said the king, "and I will give you and your family great treasure"

How could Sir Isumbras do such a dreadful thing! Boldly he answered, "I fight for my Lord the King of Heaven."

Then the Saracen king seized the lady and carried her away, leaving the knight alone with his son But before the lady was carried off, she gave Sir Isumbras a red cloak with much gold wrapped up in it, and said to him, "Do not fear, my dear husband, I know we shall meet again Follow me if you can."

As the knight stood gazing out to sea watching the ship which held his lady, a fierce unicorn rushed at the youngest boy and carried him away with lightning speed, and an eagle swooped down from the sky and flew away with the red cloak and the gold

Sir Isumbras was now alone in the world, but he did not yet lose heart. He went to work for a blacksmith, and in his spare time made for himself a new suit of armour There came a day when he needed the armour, for the Saracens descended on the land, and he had to fight to help the Christians In the battle he was sorely wounded, but when he grew well again he put on the dress of a palmer and for seven years wandered as a pilgrim in the Holy Land. Now at last, when he was no longer proud, great good fortune came to him

"As he sat about midnight
There came an angel fair and bright
And brought him bread and wine."

"Palmer," said the angel, "it is well with thee, the King of Heaven greeteth thee, and thy sin is forgiven"

Hearing this good news the knight rose joyfully and at once set out on his travels. At last he reached a fair castle where lived a kind queen who gave a gold florin, food and shelter to every poor man who came there This queen was really the wife of Sir Isumbras, but they did not know each other, for the lady wore a crown and the knight a palmer's cloak One day the knight climbed a lofty cliff and greatly to his surprise he found an eagle's nest in which was the same red cloak that his wife had given him seven years before He carried it to the castle and could not keep back the tears as he thought of his wife and sons.

When the queen saw Sir Isumbras appear carrying the red cloak, she knew at last who he was. "My husband!" she cried joyfully, as she fell into his arms After this happy meeting, husband and wife ruled together as king and queen of the land

Some time afterwards a Saracen army came against the new king. He and his men were hard pressed in the battle, when suddenly there appeared in their ranks three unknown knights. One rode a lion, the second a leopard, while the third was mounted on a unicorn. With the help of these strangers Sir Isumbras was able to win the battle. When it was over, the strangers made themselves known as the knight's lost sons, now grown into strong young men. What feasting there was that night in the castle, and what happy talk and laughter passed between Sir Isumbras and his wife and their three long-lost sons!

Sentence making.

1. Tell why Sir Isumbras is riding with his two children

2 Tell why the little boy has a bundle of sticks on his back

3 Tell what happened when Sir Isumbras went to fetch his wife and the youngest child.

4 A FLOOD



From the picture by Sir J E Millais, Bt, P R A] [*Reproduced by permission of the Manchester Corporation*

A Flood

IT may be necessary in some schools to have a short preliminary talk with the class about rivers and floods, for in many city schools the majority of the class will not have seen a river Most of them, however, will have seen a lake or a large pond, and they will know that these are full after heavy rain They will know, too,

how the rain water rushes along in the street gutters after heavy rain

Let the children examine the picture (No 144 in the portfolio) in silence, and then invite them to tell all they can about it. The following points should be observed. the season of the year (there are no leaves on the trees), the signs of the flood—the submerged fields marked by the fence, the haystacks in the water, the river lapping the windows of the houses, the willow trees almost covered, perhaps the cradle floated away from a door as the flood rose, or it may have floated out of a window, how the cradle being made like a wooden box was able to float; the happiness of the baby contrasted with the fear of the kitten which is mewing, the man in the punt hastening to the rescue, the way in which he moves his punt against the running stream, the type of houses and surrounding country suggest that the child belongs to a farm labourer or a farmer; the rushes and the jug—perhaps it contains milk

There is no particular story connected with the picture, but the children may invent one. They can give names to the child, the man and woman, and the kitten They will almost certainly suggest that the child was saved and taken back to its mother. Some of the children may remember how Moses was put in a cradle on the water.

Let one of the class demonstrate with a map pole how the man is punting.

Sentence making.

1. Tell how the cradle got into the water
2. Tell how the man saved the baby
3. Tell what the mother did when her baby was taken home.

5. OUTWARD BOUND

LET the children examine the picture (No. 145 in the portfolio) in silence, and then invite them to tell all they can about it The following points should be observed: the toy ship is sailing under the rocky arch "outward bound" for the sea beyond, the ship has been made from a walnut shell and a feather, probably the feather of a gull or other sea bird, the children are in a cave, there is a hole in the roof through which light comes, the children have probably been bathing, there are several cockle shells lying about; they intend to go fishing, one basket probably holds bait, and the other food

Boys, especially, will delight in telling about their own fishing experiences Invite them to make a walnut boat at home, or bring shells to school and make them into boats during a handwork lesson

There is no special story connected with this picture and therefore the children can allow their imaginations free rein. Let them put themselves in the places of these two little girls, and make up the day's doings. Pretend that they slept together in the tiny bedroom of a cottage by the sea When they woke up and found the sun shining they talked together eagerly and determined to spend the day by the sea Describe the dresses they put on and how they did their hair, what nice things they packed for lunch; how they dug up some worms from the garden and put them in their bait basket, how they skipped over the sands till they found this beautiful cave; what shells they picked up; what fun they had while bathing; how they ate their lunch and watched the tide creeping in higher and higher, and how they made their little boat and set it on the dancing water. What will happen to the tiny vessel ?

Sentence making.

1. Tell how you would go fishing.
2. Tell how the girls made their boat.
3. Tell why you like the seaside.



From the picture by Sir Edward J Poynter, Bt, P R A | [*By permission of the Trustees of The National Gallery*

OUTWARD BOUND

THE TEACHING OF POETRY IN THE PRIMARY SCHOOL



APOLLO

THE TEACHING OF POETRY

INTRODUCTION

Value of poetry.—To implant in children a love of good poetry is one of the highest tasks that a teacher can undertake. The study of poetry tends to elevate character, to develop a love of truth, beauty, music and rhythm, and to awaken emotions which inspire high thoughts and noble deeds

These qualities are exercised only *indirectly* on the mind of the reader. The appeal of poetry is such a delicate, intangible, wayward thing, that it needs handling with the utmost care and understanding by the teacher in the school. All joy in poetry is destroyed by insistence on the learning of pieces that mean nothing to the child; by making difficult or wearying exercises of poems, by lack of explanation; or by explanation overdone, which reduces the pure music to a jingle of commonplace words, and blurs or disfigures the exquisite pictures painted by the poet.

Choice of poems.—Many of the difficulties in the teaching of poetry are overcome in this book, and teachers who study the pages following will find valuable assistance offered them in their work of introducing poetry to the pupils of the primary school

It is obvious that the same poems will not appeal to all, so a wide choice is offered Every poem included is excellent of its kind Furthermore, all of these poems mean something to the child. They will stimulate his imagination, excite his amusement, rouse his sense of right and wrong, soothe him with familiar rhythms and beauty of sound, or delight him with stirring narrative Rightly introduced, not one of these poems but will touch a chord of response in a child's heart. The older poems have stood the test of time, and have become firmly established favourites through generations of young people, the modern poems have been put to the test, and children's love for them is indisputable

It is necessary thus to blend the old with the new from the beginning of the pupils' adventure into the realm of poetry. Childhood does not change through the ages Primitive poetry, and the old folk rhymes that delighted little mediaeval children, still hold their own with to-day's rising generation, and to omit these from the pupils' anthologies is to rob them of priceless gems, and impoverish the children's mental storehouses of treasure Modern poetry for children takes its place beside these favourites In choosing from this selection, the teacher may be assured that he will not find unsuitable, deep-thinking poems clothed in apparently easy language, whose matter is completely beyond the pupils' grasp Yet though the poems are simple, their poetry is without exception good, and will educate the children to prefer the best in literature, and unconsciously avoid the ugly and insincere.

Hints on teaching.—In the actual teaching of the poems, it is wise for the teacher to read the poem first aloud, "with feeling and appreciation," as though the poet himself were speaking to the class After that, each poem will unfold itself in its own way. The main theme will engross the pupils first, and they can open out their minds upon it General questions, as suggested in the notes, will lead up to appreciation of the more subtle points, and clear away clouds of misunderstanding. It is a common mistake on the part of the teacher to assume that the child understands too much The reading of "My Shadow" (Robert Louis Stevenson) often conveys nothing whatever

of its meaning to a young child, who has never stopped to ponder over his own shadow, and though perhaps quick to observe lights and colours, is a total stranger to the movements, or existence even, of shadows There may also be confusion of words One child, after learning the little text, "Set a watch, O Lord, before my mouth, and keep the door of my lips," protested stoutly that her daddie only set his watch beside her ear, "because I can't hear it in front of my mouth" On the other hand, although the meaning of the poem must be made clear, the music and the spirit felt, to dissect it further is to kill its attraction for the child, and weary him of it Moreover, in killing the delight in one poem, the teacher runs a risk of destroying the child's enthusiasm for all poetry. As in teaching songs, the intricate details and the learning by heart must never be done to death Questions other than those in the notes added to the poems will, of course, arise spontaneously from children and teacher during the lessons, but it is wise to avoid technicalities

The pupils should read the poems aloud many times in the course of a lesson, pausing over, or repeating, special parts under discussion, and it is an advantage to allow them free self-expression afterwards, in the form of writing, drawing, or handwork of some description

In the higher forms, the pupils should occasionally study poems silently, and write answers to questions set in the notes, either with or without reference to the poem itself. This is useful as a change of method, and also it is a sure way of finding out and correcting individual mistakes It should never completely take the place of the oral lesson, however It is always good for the members of a class to hear spontaneous opinions from each other, and spirited oral renderings of the poetry will infuse life into words that are dust and ashes to some youthful minds which become acquainted with them only through the medium of the text Poetry also is specially suitable for reading aloud, as songs are for singing The partly oral "corrective" lesson that follows written exercises can never present the poem to the child in such glowing colours as it might have worn had its introduction been oral, added to which, the oral poetry lesson is one of the best for promoting understanding between teacher and pupils, and making of the many units one harmonious whole.

Recitation.—After the pupils have read the poems aloud and silently, and have understood them as fully as possible, they should select the ones they like best for memorising and recitation It is wise to devote a portion of every poetry lesson to this important work, and occasionally a whole lesson may be profitably spent in hearing recitation There are generally a few bright youngsters eager to be heard first, and their performances quickly awaken the enthusiasm of those who are more diffident To most children, reciting and hearing recitation give delight, and a little encouragement produces earnest and joyous work. The pupils should be at pains to render the poetry as perfectly as possible in expression, speech and manner

When hearing the recitation, therefore, stand the child well back from the class, and allow no one a copy of the poem for reference. This is a performance for voice and ear Aim first at *distinctness.* It is not gained by shouting, but by opening the throat and shaping the mouth correctly. The voice production should be effortless, and may be assisted by the practice of simple breathing exercises before the recitation lesson. Children are, of course, imitative, and in their habitual modes of speech copy those of their kindred and playmates, so that the difficulties of pronunciation vary with the district and the environment of the child. Incorrect pronunciation gives "caew" for cow, "owver" for over, and "thet" or "thut" for that We also have "whyal" for whale, reminiscent of the class-visit to the Zoo, which

produced, in answer to the question, "Which of you saw the bison?" "Please sir, do you mean the bison what we washed our hands in?"

Exercises on vowels will help the children to correct the faults in their accent. They should say many times slowly, *m . . oo, m . . o, m . . aw, m . . ah, m . . ay, m . . ee,* humming the initial letter. Other good initial letters are "l" and "r". Consonants are sometimes carelessly slurred, sometimes omitted, and sometimes over-emphasized The children should say arctic, not "artic", longing not "long-ging", laughing not "larfin'" or "laffin'", little, not "li'l" or "littul". Exercise the consonants by adding them afterwards to the vowel sounds thus: *m . . oon, m . . oan, m . . orn, m . . oot, m . . oat, m . . ort, and so on*

Besides being distinct, recitation should also be *expressive.* In order to bring out the meaning of a poem the child must first thoroughly understand and appreciate it; for this reason it is wise to let him select his own poems for recitation. He should be encouraged to deliver his chosen pieces to the class with all the natural expression and gesture at his command. Faults of affectation or indolence should be firmly corrected. The "singsong" voice should be discouraged, also the misplaced emphasis on unimportant words and phrases, as in —

"More neatly than the little boys
Who do it on the land"

The gesture should represent spontaneous emotion and be as untrammelled as possible. For instance, it is not desirable to point with the finger in the following verse —

"I have a little shadow,
That goes in and out with me."

The boy with the squeaky shoes in *Do You Ever?* would naturally walk about, but do not encourage any spinning round in the "tragic story" of the sage's pigtail Self-expression in tone can be developed by practising words suggestive of their meaning, such as, "cheerily", "wearily"

"The silent snake goes *creepy-creep!*"
"Call him loudly; wake! wake up!"

Beat out strongly marked rhythms on the desks, or read the poem stressing the strong beats all through without thinking of the words. When reciting, the rhythm of the verse should never be lost

In conclusion, all pupils of the primary school, from the lowest forms upwards, should have their own anthologies for private reading. From these they can select favourite poems for their notebooks, or even favourite verses or lines. They should memorise a number of short poems rather than one or two long ones, and also be encouraged to compose poems of their own.

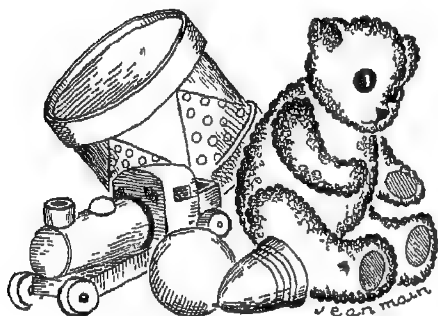
SIXTY POEMS FOR THE FIRST YEAR'S COURSE

THERE is a selection of poems suitable for the lowest forms of the primary school. The poems have been chosen for the simple excellence of their poetry, and for their appeal to the child-mind Easy modern verse and the standard favourites of little children are placed side by side. These are the first flowers along the pathways leading into the fair land of poetry. Children who pluck them will wish to continue their journey into this delightful country, where there is beauty to uplift their thoughts, to

brighten and enrich their lives, and make the world for them a larger and fairer place.

The poems are divided into five sections. Appreciative notes, short explanations, and suggestions for dramatic expression, are attached to the poems, and may prove useful to the teacher when presenting them to the class

NURSERY RHYMES



THE NORTH WIND

The north wind doth blow
And we shall have snow,
And what will the robin do then,
  poor thing ?
He'll sit in a barn
And keep himself warm,
And hide his head under his wing,
  poor thing !

Note—Here is a picture of winter, as a child knows it—biting wind and snow How does the little robin face it ? He has no warm fire or thick overcoat Where does he go ? What is a barn ? Little birds fluff out their feathers for warmth, and turn their heads from the cruel wind What does robin do with his head ? When you say the verses, try to put all you feel into the words "poor thing" Why should we have snow when the north wind blows ?

THE CROOKED MAN

There was a crooked man
  Who walked a crooked mile
He found a crooked sixpence
  Beside a crooked stile
He had a crooked cat
  Which caught a crooked mouse,
And they all lived together
  In a little crooked house.

Note—Why does this rhyme make you laugh ? Saying words many times over does not always sound amusing. What about "Up, up, and up the fairies go winging"? Try it with other words, and say whether they sound funny, or heavy, or dancing Try to say "crooked" with a different voice in every line Draw a crooked picture of the crooked man at home with his crooked cat

SOLOMON GRUNDY

Solomon Grundy,
Born on Monday,
Christened on Tuesday,
Married on Wednesday,
Took ill on Thursday,
Worse on Friday,
Died on Saturday,
Buried on Sunday,
So that was the end of Solomon Grundy



Note.—How long did Solomon Grundy live ? What does "christened" mean ? The long line of poetry at the end slows down the music Is this right or wrong ? Why ? What do you think Solomon Grundy was like ? Draw him.

Sing a Song of Sixpence

Sing a song of sixpence,
A pocket full of rye,
Four-and-twenty blackbirds
Baked in a pie

When the pie was opened
The birds began to sing
Was not that a dainty dish
To set before a king?

The king was in his counting-house
Counting out his money,
The queen was in the parlour
Eating bread and honey.

The maid was in the garden
Hanging out the clothes,
By came a little bird
And pecked off her nose.

Note—This poem is lively and bright, and full of movement. The birds, king, queen and maid are all busy. What is each doing? What is rye? What did the king have to eat? The parlour was the queen's sitting room. How do you know that the queen liked honey? Why do many children like honey? Draw a picture of the maid.



There Was An Old Woman

There was an old woman, as I've heard tell,
She went to the market, her eggs to sell,
She went to the market all on a market day,
And she fell asleep on the king's highway.

There came by a pedlar, whose name was Stout,
He cut her petticoats all round about;
He cut her petticoats up to the knees,
Which made the old woman to shiver and freeze

When the little woman first did wake,
She began to shiver and she began to shake,
She began to wonder and she began to cry:
"Oh, deary, deary me, this is none of I!

"But if it be I, as I do hope it be,
I've a little dog at home and he'll know me,
If it be I, he'll wag his little tail,
And if it be not, he'll loudly bark and wail"

Home went the little woman all in the dark,
Up got the little dog, and he began to bark;
He began to bark, and she began to cry,
"Oh, deary, deary me, this is none of I!"

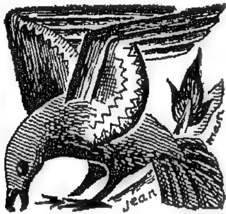
Note—The charm in this rhyme is its amusing little story What is a pedlar? Why did the little woman think that she was somebody else? What, do you think, made the little dog bark at her? The poem is full of music It has been set to a pretty tune, and you should sing it. Notice that the beginnings of some of the lines are sung twice This makes the tune stay in your mind. "The king's highway" is the main road to the town Have you ever been to a market? What have you seen there? Why did the little woman shiver when she woke up?

A Farmer Went Trotting

A farmer went trotting upon his grey mare,
Bumpety, bumpety, bump!
With his daughter behind him so rosy and fair,
Lumpety, lumpety, lump!

A raven cried croak and they all tumbled down,
Bumpety, bumpety, bump!
The mare broke her knees, and the farmer his crown,
Lumpety, lumpety, lump!

Note—First read this poem, stressing the strong beats all through, without thinking of the words Thus you feel the trot of the mare running through it. What is a mare? How do you know that the farmer's daughter was plump? Say the first verse in a lively way The second is full of trouble. Try to croak like a raven, and make it sound startling! "The mare broke her knees," means that she grazed or scratched them. What was the farmer's crown?



The Gallant Duke of York

There was once a Duke of York who was made a general, and who was put at the head of an army of ten thousand men, but this general never won a battle He took his soldiers from one place to another, and that was all that he ever did with them Many people laughed at this Duke, and somebody made up this rhyme about him

The gallant Duke of York,
He had ten thousand men;
He led them up to the top of a hill,
And he led them down again.
When they were up, they were up,
And when they were down, they were down,
And when they were only halfway up,
They were neither up nor down

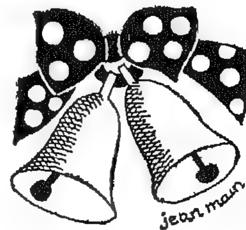
Note—There is marching in these lines Try singing them when you are walking, and you will feel their swing. Which lines do you think are amusing? What is the name of our present Duke of York? What is his father's name?

The Bells of London

Gay go up and gay go down,
To ring the bells of London town
Halfpence and farthings,
Say the bells of St Martin's
Oranges and lemons,
Say the bells of St. Clement's
Pancakes and fritters,
Say the bells of St. Peter's
Two sticks and an apple,
Say the bells of Whitechapel

Kettles and pans,
Say the bells of St Ann's
You owe me ten shillings—
Say the bells of St Helen's
When will you pay me?
Say the bells of Old Bailey.
When I grow rich,
Say the bells of Shoreditch.
Pray when will that be?
Say the bells of Stepney
I am sure I don't know,
Says the great bell of Bow

Note.—The merry chatter in this rhyme sounds like the clatter of bells How many chimes of bells are talking? Try to make your voice different for each chime Choose girls and boys with suitable voices for the different chimes—a very high voice for a light chime, and a deeper voice for the bells of Old Bailey What did the bells of St Helen's say? Which chime do you like best?



The King of Spain's Daughter

I had a little nut tree,
Nothing would it bear
But a silver nutmeg
And a golden pear

The King of Spain's daughter
Came to visit me,
All for the sake
Of my little nut tree

I skipped over the water,
I danced over the sea,
And the birds in the air
Couldn't catch me

Note—This is the song of a dainty and happy little sprite. The first verse is full of colour The second should be said with pride and delight. The third tells of the way in which a child shows happiness Dramatise it—skipping about the room. When does mother use nutmegs? What is a king's daughter called?

I Saw a Ship a Sailing

I saw a ship a-sailing,
A-sailing on the sea,
And, oh! it was all laden
With pretty things for me

There were comfits in the cabin,
And apples in the hold;
The sails were made of silk,
And the masts were made of gold

The four-and-twenty sailors
That stood upon the decks,
Were four-and-twenty white mice
With chains about their necks.

The captain was a duck,
With a packet on his back;
And when the ship began to move
The captain said, "Quack! Quack!"

Note—Here is mystery! A wonderful ship sails in, with presents for us What are they? Where is the hold? Make a painting of this pretty ship Comfits are sugary sweets What was the captain of the ship? What sailors were on board?

There Was a Little Man

There was a little man and he had a little gun,
And his bullets were made of lead, lead, lead,
He went to the brook, and saw a little duck,
And shot it through the head, head, head

He carried it home to his old wife Joan,
And bade her a fire to make, make, make,
To roast the little duck he had shot in the brook,
While he went to fetch the drake, drake, drake.

The drake was a-swimming, with his curly tail,
The little man made it his mark, mark, mark!
He let off his gun, but he fired too soon,
And the drake flew away with a "Quack! quack! quack!"

Note—This is a jolly little song, with singing rhymes. Pick out these rhymes "Quack" should copy "mark" How is a drake different from a duck? Why did the little man fail to kill the drake?

When I Was A Bachelor

When I was a bachelor, I lived by myself,
And all the bread and cheese I got, I put upon a shelf,
The rats and the mice did lead me such a life,
I had to go to London to get myself a wife.
The streets were so bad, and the lanes were so narrow,
I had to bring my wife home in a wheelbarrow,
The wheelbarrow broke, my wife had a fall,
Down tumbled wheelbarrow, little wife and all

Note—Here is a rhyme full of delightful nonsense. What is a bachelor? What do

you think the rats and mice did? What is a wheelbarrow? Where did the bachelor go to find a wife? What happened to her? Why did not the gentleman bring his wife home in a carriage?

The Mulberry Bush

Here we go round the mulberry bush,
The mulberry bush,
The mulberry bush
Here we go round the mulberry bush,
So early in the morning

This is the way we wash our clothes,
Wash our clothes,
Wash our clothes
This is the way we wash our clothes,
So early Monday morning

This is the way we iron our clothes,
Iron our clothes,
Iron our clothes.
This is the way we iron our clothes,
So early Tuesday morning.

This is the way we scrub the floor,
Scrub the floor,
Scrub the floor.
This is the way we scrub the floor,
So early Wednesday morning

This is the way we mend our clothes,
Mend our clothes,
Mend our clothes.
This is the way we mend our clothes,
So early Thursday morning.

This is the way we sweep the house,
Sweep the house,
Sweep the house.
This is the way we sweep the house,
So early Friday morning.

This is the way we bake our bread,
Bake our bread,
Bake our bread
This is the way we bake our bread,
So early Saturday morning

This is the way we go to church,
Go to church,
Go to church
This is the way we go to church,
So early Sunday morning.

Note.—This nursery rhyme lends itself to action work. Say each verse slowly or quickly as the action suggests "Mend our clothes" is a quiet verse, "scrub" is a lively one. Which day is washing-day? Which is the day for cleaning the house? What little worm is fond of the mulberry bush?

Simple Simon

Simple Simon met a pieman
Going to the fair.
Said Simple Simon to the pieman,
"Let me taste your ware."

Said the pieman to Simple Simon,
"Show me first the penny"
Said Simple Simon to the pieman,
"Indeed, I have not any"

Simple Simon went to see
If plums grew on a thistle
He pricked his fingers very much,
Which made poor Simon whistle

Simple Simon went a-fishing,
For to catch a whale
All the water he had got
Was in his mother's pail



Simple Simon made a great snowball,
And brought it in to roast
He laid it down before the fire,
And soon the ball was lost

Note—Here we have the story of a very silly boy. How many silly things did Simple Simon do? What is a fair? What should we say instead of "ware"? What happened to the snowball? What is a whale?

Milking Pails

Mary's gone a-milking,
A rea, a ria, a roses,
Mary's gone a-milking,
Gentle sweet mother o' mine.

Take your pails and go after her,
A rea, a ria, a roses,
Take your pails and go after her,
Gentle sweet daughter o' mine

Buy me a pair of new milking pails,
A rea, a ria, a roses,
Buy me a pair of new milking pails,
Gentle sweet mother o' mine

Where's the money to come from,
A rea, a ria, a roses,
Where's the money to come from,
Gentle sweet daughter o' mine?

Sell my father's feather bed,
A rea, a ria, a roses,
Sell my father's feather bed,
Gentle sweet mother o' mine

What's your father to sleep on,
A rea, a ria, a roses,
What's your father to sleep on,
Gentle sweet daughter o' mine?

Put him in the truckle bed,
A rea, a ria, a roses,
Put him in the truckle bed,
Gentle sweet mother o' mine

What are the children to sleep on,
A rea, a ria, a roses,
What are the children to sleep on,
Gentle sweet daughter o' mine?

Put them in the pig sty,
A rea, a ria, a roses,
Put them in the pig sty,
Gentle sweet mother o' mine

What are the pigs to lie in,
A rea, a ria, a roses,
What are the pigs to lie in,
Gentle sweet daughter o' mine?

Put them in the washing tubs,
A rea, a ria, a roses,
Put them in the washing tubs,
Gentle sweet mother o' mine

What am I to wash in,
A rea, a ria, a roses,
What am I to wash in,
Gentle sweet daughter o' mine?

Wash in the thimble,
A rea, a ria, a roses,
Wash in the thimble,
Gentle sweet mother o' mine.

Thimble won't hold your father's shirt,
A rea, a ria, a roses,
Thimble won't hold your father's shirt,
Gentle sweet daughter o' mine

Wash in the river,
A rea, a ria, a roses,
Wash in the river,
Gentle sweet mother o' mine

Suppose the clothes should blow away,
A rea, a ria, a roses,
Suppose the clothes should blow away,
Gentle sweet daughter o' mine?

Set a man to watch them,
A rea, a ria, a roses,
Set a man to watch them,
Gentle sweet mother o' mine

Suppose the man should go to sleep,
A rea, a ria, a roses,
Suppose the man should go to sleep,
Gentle sweet daughter o' mine?

Take a boat and go after them,
A rea, a ria, a roses,
Take a boat and go after them,
Gentle sweet mother o' mine

Suppose the boat should be upset,
A rea, a ria, a roses,
Suppose the boat should be upset,
Gentle sweet daughter o' mine?

Then that would be an end of you,
  A rea, a ria, a roses,
Then that would be an end of you,
  Gentle sweet mother o' mine!

Note.—This poem is full of sweet music Are there any rhymes? What makes the music? You will find it in the singing of the lines twice over, in the pretty words, and in the running together of words beginning with the same letter There are two very different people speaking Choose children like these people, to speak to each other. One should be quiet and gentle, and the other active and noisy One is timid. The other is bold. A truckle bed is a small, low bed on wheels. What does the daughter want from her mother? Why is the mother unwilling to give her what she wants? What would happen if the boat were upset?



Here are two riddles in rhyme:

A RIDDLE

As I was going to St Ives,
I met a man with seven wives;
Each wife had seven sacks,
Each sack had seven cats,
Each cat had seven kits,
Kits, cats, sacks and wives,
How many were there going to St. Ives?

Answer One

MY LITTLE SISTER

I have a little sister,
  They call her Peep, Peep.
She wades in the water
  Deep, deep, deep;

She climbs the mountains,
  High, high, high—
Poor little sister!
  She has but one eye

Answer A star.

Note.—The first is good practice for clear speaking, in a jolly voice The second is a tiny song When does a star seem to wade in the water? Why do you think the star is called "Peep"?

THE WORLD AROUND US



MAY DAY

Children specially delight in the poems of this section because they deal with the flowers, the birds, the tiny creatures and other wonders of nature.

Many years ago one of the jolliest days in the country was *May Day*, the first day of May The hedges were then covered with May blossom, and these the children gathered and made into a garland They carried it from house to house singing their songs and hoping to receive some pennies for showing a beautiful garland The following poem is a country rhyme such as the children

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD



BELL (*The Bells of London*)
BLACKBIRDS IN PIE (*Sing a Song of Sixpence*)
A NILE BOAT (*Boats Sail On The Rivers*)
ROBIN (*The North Wind*)
SIMPLE SIMON

used to sing about May Day Country people like to hear the cuckoo, because he comes from warm lands in early spring to tell us that *our* warm days of summer will soon be here

Good morning, lords and ladies, it is the first
of May,
We hope you'll view our garland, it is so
sweet and gay

The cuckoo sings in April, the cuckoo sings
in May,
The cuckoo sings in June, in July she flies
away

The cuckoo drinks cold water to make her
sing so clear,
And then she sings Cuckoo! Cuckoo! for
three months in the year

I love my little brother and sister every day,
But I seem to love them better in the merry
month of May

Country Rhyme.

Note —This poem has a dance-around-the-Maypole swing to it Say it quickly, and make your voice dance too A garland is a wreath of flowers, which the children hung on a pole. During which months does the cuckoo sing? Why has she a clear voice? Why should the month of May make children loving to each other?

Boats Sail On The Rivers

Boats sail on the rivers,
And ships sail on the seas,
But clouds that sail across the sky,
Are prettier far than these

There are bridges on the rivers,
As pretty as you please,
But the bow that bridges heaven,
And overtops the trees,
And builds a road from earth to sky,
Is prettier far than these

Christina Rossetti.

Note —There is a flow of water in this poem. It is made by the lovely word "sail" Say the first three lines many times, with a light voice for the "clouds that sail" What does "bridges heaven" mean? What is the name of "the bow that bridges heaven"? Why is it prettier than the bridges over the rivers? Draw a picture of the scene, and colour it

The Stately Lady

I saw a stately lady
In a green gown,
When the moon was shooting
Silver arrows down.
And the stately lady
In her gown of green,
Made the sweetest curtsey
I had ever seen.

"Little lovely lady,
You must be a queen,
In your yellow satin
And your gown of green"
But the stately lady
Bowed her gracious head,
"I was made a tulip,
Not a queen," she said

Flora Sandstrom

Note —*The Stately Lady* is a poem of fancy Have you seen the moon "shooting silver arrows down"? You will find that this lady was stately, but she was not proud—she was modest. What colours would you need to paint a picture of the stately lady? What is a curtsey?



White Fields

1

In the winter time we go
Walking in the fields of snow,

Where there is no grass at all,
Where the top of every wall,

Every fence, and every tree,
Is as white as white can be

2

Pointing out the way we came,
—Every one of them the same—

All across the fields there be
Prints in silver filigree,

And our mothers always know,
By the footprints in the snow,

Where it is the children go

James Stephens.

Note—Say this poem in a tiny voice, because of the soft snow What are "prints in silver filigree"? How does mother know where the children have gone? Name six words that rhyme with snow. Is there really "no grass at all"? What has happened to it? Why do you love the snow?



The May Song

Spring is coming, spring is coming,
Birdies, build your nest,
Weave together straw and feather,
Doing each your best.

Spring is coming, spring is coming,
Flowers are coming too,
Pansies, lilies, daffodillies,
Now are coming through.

Spring is coming, spring is coming,
All around is fair;
Shimmer and quiver on the river,
Joy is everywhere

We wish you a happy May.

Note.—This song used to be sung on May Day, by the children of Oxfordshire. What signs have they seen of the coming of spring? How are the birds getting ready? Give the names of the early flowers Do you know any other spring flowers? The river seems to have wakened from sleep just as the flowers have done. Sunlight is shining on it, and its waters tremble as if alive. What can you sometimes find in the river in spring time?

The Duck

If I were in a fairy tale,
And it were my good luck
To have a wish, I'd choose to be
A lovely snow-white duck

When she puts off into the pond
And leaves me on the brink,
She wags her stumpy tail at me,
And gives a saucy wink,

Which says as plain as words could say
I'm safe as safe can be,
Stay there, or you will drown yourself,
This pond was made for me

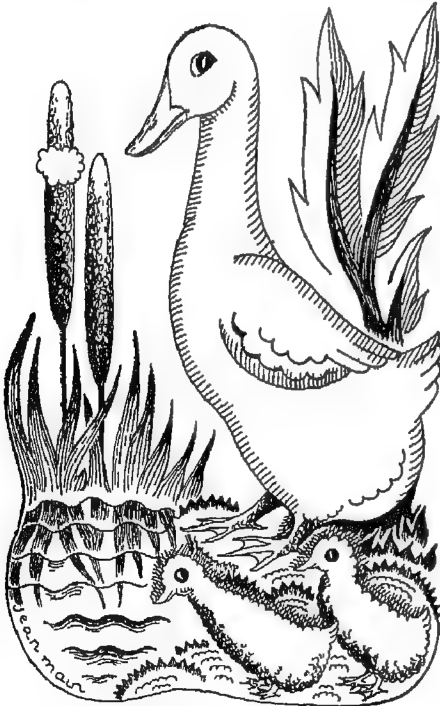
She goes a-sailing to and fro,
Just like a fishing-boat,
And steers and paddles all herself,
And never wets her coat

Then in the water, upside down,
I've often seen her stand,
More neatly than the little boys
Who do it on the land.

And best of all, her children are
The ducklings, bright as gold,
Who swim about the pond with her
And do as they are told

Edith King

Note —Here is a jolly study of Mrs Duck She is very proud of all she can do on the water Children would like to be able to do the same. What things does she do? Why does Edith King wish she were a duck? What can a duck do better than a boy? Which picture in this poem could you draw best? Of what colour are ducklings? The duck does not "wet her coat" because her feathers are a little oily, and the water runs off them What is a "stumpy tail"? What do "steers" and "paddles" mean?



JACK FROST

Look out! look out!
Jack Frost is about!
He's after our fingers and toes,
And, all through the night,
The gay little sprite
Is working when nobody knows

He'll climb each tree,
So nimble is he,
His silvery powder he'll shake,
To windows he'll creep,
And while we're asleep,
Such wonderful pictures he'll make

Across the grass
He'll merrily pass,
And change all its greenness to white,
Then home he will go,
And laugh, "Ho! ho ho!
What fun I have had in the night!"

Cecily E Pike

Note —Jack Frost is the spirit of youth He is full of fun, loves to be always busy, and has his finger in everybody's pie Which verse would you say softly? Which is a merry verse? Where does he make his pictures? Why does he laugh? What is his "silvery powder"? What does he do to the grass? What does "nimble" mean?

A FRIEND IN THE GARDEN

The next poem is about *A Friend In The Garden.* You must read to the very end of the poem before you find out who this friend is. You will be greatly surprised

He is not John the gardener,
And yet the whole day long
Employs himself most usefully,
The flower-beds among

He is not Tom the pussy-cat,
And yet the other day,
With stealthy stride and glistening eye,
He crept upon his prey

He is not Dash the dear old dog,
And yet, perhaps, if you
Took pains with him and petted him,
You'd come to love him too

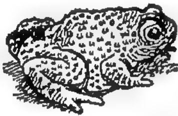
He's not a Blackbird, though he chirps,
And though he once was black,
And now he wears a loose grey coat,
All wrinkled on the back.

He's got a very dirty face,
And very shining eyes!
He sometimes comes and sits indoors,
He looks—and p'r'aps is—wise

But in a sunny flower-bed
He has his fixed abode,
He eats the things that eat my plants—
He is a friendly TOAD.

Juliana Horatia Ewing.

Note—Why is the toad a friend of the gardener? Do you know any things that eat plants? How does pussy walk? What do you think was pussy's "prey"? Where does the toad spend most of his time?



THE LADYBIRD

Ladybird, ladybird, fly away home!
The field mouse has gone to her nest;
The daisies have shut up their sleepy gold eyes,
And the bees and the birds are at rest

Ladybird, ladybird, fly away home!
The glowworm is lighting her lamp,
The dew's falling fast, and your fine speckled wings
Will flag with the close-clinging damp.

Ladybird, ladybird, fly away home!
The fairy bells tinkle afar.
Make haste, or they'll catch you and harness you fast
With a cobweb to Oberon's car.

Charlotte T. Smith.

Note—Unless you live in the country, you will not know who was the glowworm that lighted her lamp to guide the ladybird home A glowworm is a curious beetle that lives in damp banks In the evening the end of its tail glows like a tiny lamp From a distance the lamps look like twinkling stars

Oberon was king of the fairies His car was drawn through the sky by butterflies, which were harnessed to it by silken threads The poet tells the Ladybird to hurry home, or the fairies will catch her and make *her* draw the car

Why must the ladybird fly away home? What is the colour of a daisy's eye? Which creatures have gone to bed? What might the dew do to the ladybird's wings? How are the ladybird's wings described in the poem? Draw a picture of Oberon

TWINKLE, TWINKLE, LITTLE STAR

Twinkle, twinkle, little star,
How I wonder what you are!
Up above the world so high
Like a diamond in the sky.

When the blazing sun is gone,
When he nothing shines upon,
Then you show your little light,
Twinkle, twinkle, all the night

Then the traveller in the dark
Thanks you for your tiny spark,
He could not see which way to go
If you did not tremble so

In the dark blue sky you keep,
And often through your curtains peep,
For you never shut your eye
Till the sun is in the sky

As your bright and tiny spark
Lights the traveller in the dark,
Though I know not what you are,
Twinkle, twinkle, little star

Jane Taylor

Note—In this poem we feel the beauty of the star, and the power of its tiny spark to comfort the lonely traveller. What is "the

dark blue sky" said to be like? What good work does the star do? Why is the star like a diamond? A star is not really tiny. Why does it seem tiny to us?

The Silent Snake

The birds go fluttering in the air,
The rabbits run and skip,
Brown squirrels race along the bough,
The May flies rise and dip,
But, whilst these creatures play and leap,
The silent snake goes *creepy-creep*!

The birdies sing and whistle loud,
The busy insects hum,
The squirrels chat, the frogs say "croak!"
But the snake is always dumb
With not a sound through grasses deep
The silent snake goes *creepy-creep*!

Anon.

Note—Any boy or girl who reads well will love to say this little poem The verses begin brightly, but how will you recite the last lines? Pick out words that sound exactly as they mean. May flies play over the rivers in May, and live only a day How is the snake different from the other creatures? Which other creatures are spoken of? How do they talk?



Baby Seed Song

Little brown brother, oh! little brown brother,
Are you awake in the dark?
Here we lie cosily close to each other:
Hark to the song of the lark!
"Waken!" the lark says, "waken and dress you;
Put on your green coats and gay,
Blue sky will shine on you, sunshine caress you—
Waken! 'tis morning—'tis May!"

Little brown brother, oh! little brown brother,
What kind of flower will you be?
I'll be a poppy—all white, like my mother,
Do be a poppy like me
What! You're a sunflower? How I shall miss you
When you've grown golden and high!
But I shall send all the bees up to kiss you;
Little brown brother, good-bye!

E Nesbit

Note—This is a beautiful little poem in which the tiny brown seeds in the earth are spoken of as brown babies. They are just waking from sleep What has wakened them? What kind of seed is the little one talking? What joys are in store for him? What promise does he make to his "little brown brother"?

Grasshopper Green

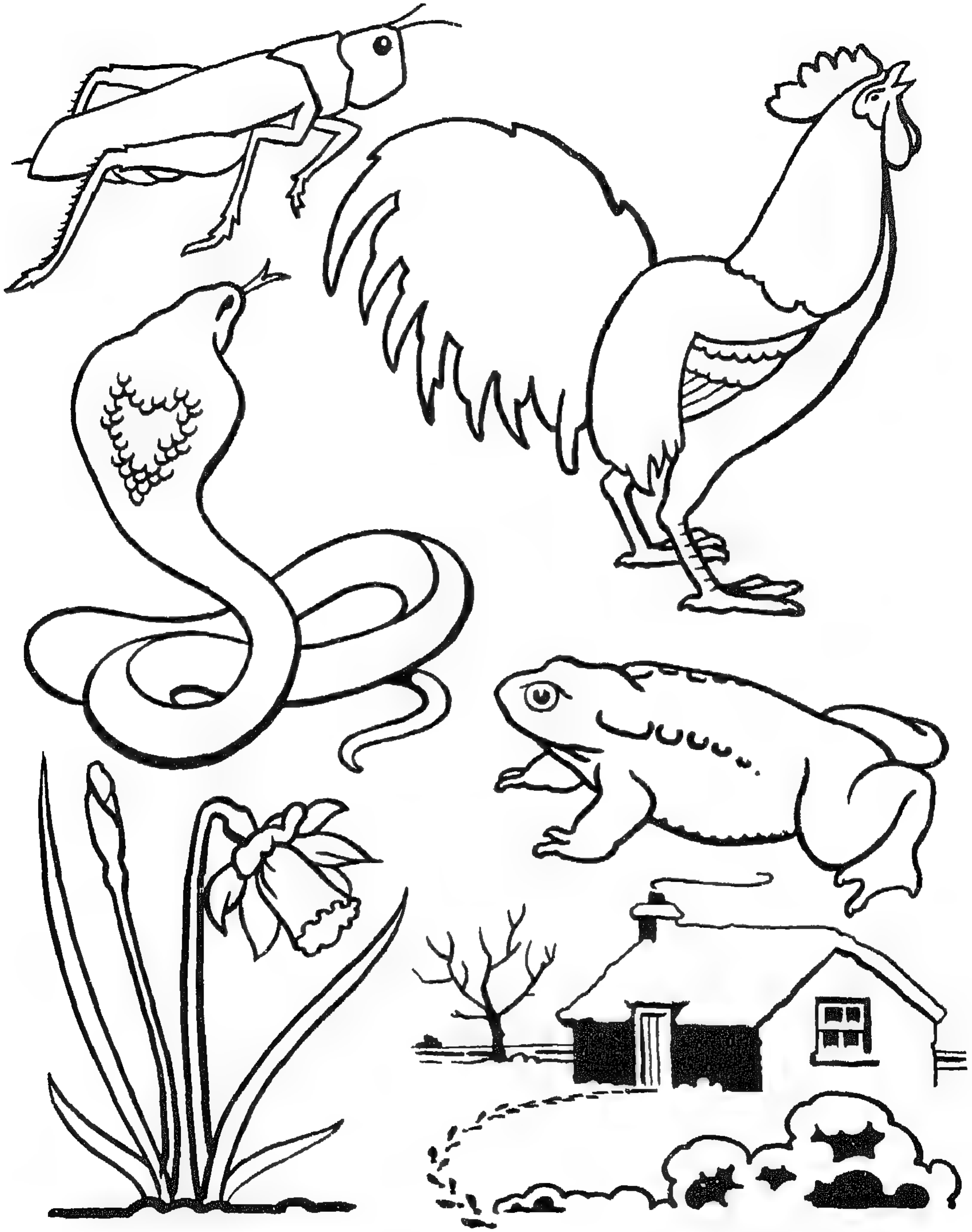
Grasshopper Green is a comical chap,
He lives on the best of fare.
Bright little trousers, jacket and cap,
These are his summer wear
Out in the meadow he loves to go,
Playing away in the sun,
It's hopperty, skipperty, high and low,
Summer's the time for fun

Grasshopper Green has a quaint little house,
It's under the hedge so gay,
Grandmother Spider, as still as a mouse,
Watches him over the way
Gladly he's calling the children, I know,
Out in the beautiful sun,
It's hopperty, skipperty, high and low,
Summer's the time for fun

Anon.

Note—Have you ever seen a grasshopper? It is a curious creature with very long hind

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD



GRASSHOPPER (*Grasshopper Green*)
SNAKE (*The Silent Snake*)
DAFFODIL (*The May Song*)

COCK (*The Cock Is Crowing*)
TOAD (*A Friend In The Garden*)
FOOTPRINTS (*White Fields*)

legs Here is a picture of one In the country one can often hear the grasshoppers chirping in the meadows. But they do not sing like birds They make their shrill noise by rubbing their hind legs against their wing covers *Grasshopper Green* having long hind legs can dance "hopperty, skipperty, high and low" How does the grasshopper dance? What "fare" do you think he eats? What is the colour of his suit? Where does he live? Why does Grandmother Spider sit "as still as a mouse"? What will she have for supper?

The Cock Is Crowing

The cock is crowing,
The stream is flowing,
The small birds twitter,
The lake doth glitter,
The green field sleeps in the sun.
The oldest and youngest
Are at work with the strongest,
The cattle are grazing,
Their heads never raising,
There are forty feeding like one.

W Wordsworth

Note—The joy of life is in this poem, and a love of beauty What is each one doing in the glorious sunshine? How does the long middle line help the words? What does "grazing" mean?



ONCE UPON A TIME POEMS



The Huntsmen

Three jolly gentlemen,
In coats of red,
Rode their horses
Up to bed

Three jolly gentlemen
Snored till morn,
Their horses champing
The golden corn.

Three jolly gentlemen,
At break of day,
Came clitter-clatter down the stairs
And galloped away.

Walter de la Mare

Note—In this poem the music gallops along, and makes one feel how fine it would be to wear a bright red coat and ride on a horse Which line sounds like horses galloping? What does "champing" mean? When did the huntsmen get up? What are the huntsmen called?



Kitty and Mousie

Once there was a little kitty,
White as the snow,
In a barn she used to frolic
Long time ago

In a barn a little mousie
Ran to and fro,
For she heard the little kitty
Long time ago

Two black eyes had little kitty,
Black as a sloe,
And they spied the little mousie
Long time ago

Four soft paws had little kitty,
Paws soft as snow,
And they caught the little mousie
Long time ago.

Nine pearl teeth had little kitty,
All in a row,
And they bit the little mousie
Long time ago

When the teeth bit little mousie,
Mousie cried out, "Oh!"
But she slipped away from kitty
Long time ago

E Prentiss

Note —How is this pretty kitty described? "Long time ago" at the end of every verse is like the refrain of a song. Different children should say it, many times, in many voices The poem becomes exciting in the middle, but ends quietly. What does "black as a sloe" mean? Which words rhyme with "ago"? What were kitty's teeth like? What were her paws like? What is a barn? What did mousie do at last?

The Two Rats

He was a rat, and she was a rat,
And down in one hole they did dwell,
And both were as black as a witch's cat,
And they loved one another well

He had a tail, and she had a tail,
Both long, and curling, and fine,
And each said, "Yours is the finest tail
In the world excepting mine"

He smelt the cheese, and she smelt the cheese,
And they both pronounced it good;
And both remarked it would greatly add
To the charms of their daily food.

So he ventured out, and she ventured out,
And I saw them go with pain
But what befell them I never can tell,
For they never came back again.

Note —This poem is very amusing, because the rats copy each other. Describe them What does "pronounced" mean? What is a witch? Why did they "venture out"? What do you think happened to them?

The Three Little Pigs

The Three Little Pigs were very foolish little pigs, as you will find out when you read the story about them

A jolly old sow once lived in a sty,
And three little piggies had she,
And she waddled about saying, "Umph! umph! umph!"
While the little ones said, "Wee! wee!"

"My dear little brothers," said one of the brats,
"My dear little piggies," said he,
"Let us all for the future say, 'Umph! umph! umph!'
'Tis so childish to say, 'Wee! wee!'"

Then these three little pigs grew skinny and lean,
And lean they might very well be;
For somehow they *couldn't* say, "Umph! umph! umph!"
And they *wouldn't* say, "Wee! wee! wee!"

So after a time these little pigs died,
They all died of *felo-de-se;*
From trying too hard to say, "Umph! umph! umph!"
When they only could say, "Wee! wee!"

MORAL

A moral there is to this little song,
A moral that's easy to see;
Don't try while yet young to say, "Umph! umph! umph!"
For you only can say, "Wee! wee!"

Sir Alfred A. Scott-Gatty

Note—The little pigs starved till they died because they worried so about saying "Umph! umph! umph!" and they had no time to eat their dinner and tea When a person dies by his own action he is called a *felo-de-se* Suppose you say you will not eat anything until you can talk like a man, what will happen? What is a mother pig called? How did she walk about? How did the little pigs become different? The "moral" is the teaching of the poem, which tells us what we may learn from the story of these three little pigs What wrong thing did the little pigs do?

GOOD NIGHT AND GOOD MORNING

A fair little girl sat under a tree,
Sewing as long as her eyes could see,
Then smoothed her work, and folded it right,
And said, "Dear Work, Good Night! Good Night!"

Such a number of rooks came over her head,
Crying, "Caw! caw!" on their way to bed,
She said, as she watched their curious flight,
"Little black things, Good Night! Good Night!"

The horses neighed, and the oxen lowed,
The sheep's "Bleat! bleat!" came over the road;
All seeming to say with a quiet delight,
"Good little girl, Good Night! Good Night!"

She did not say to the sun, "Good Night!"
Though she saw him there, like a ball of light,
For she knew he had God's time to keep
All over the world, and never could sleep

The tall pink foxglove bowed his head—
The violets curtsied and went to bed,
And good little Lucy tied up her hair,
And said, on her knees, her favourite prayer

And while on her pillow she softly lay
She knew nothing more till again it was day
And all things said to the beautiful sun,
"Good Morning! Good Morning! our work is begun!"

Lord Houghton

Note—This is not a lively poem. Its long lines have a peaceful music in them, to suit the evening time, and the gentle little girl. The poem should be said smoothly Lucy loved everything she saw and did, and so everything loved her. What was the sun doing while Lucy slept? Describe Lucy. What did Lucy say to her work? What did the rooks and sheep say? Which flowers went to sleep? How did all things greet the morning sun?

MUSTARD AND CRESS

Perhaps I had better tell you something about *Mustard and Cress.* If you go to a seed merchant and buy two-pennyworth of mustard seed or two-pennyworth of cress seed, you can plant the seed in your garden and make a letter of your name come up "green and bonny" With a stick mark out the first letter of your name like capital **B**; put the seeds rather thickly in the marks and cover them with a little soil In a few days the plants will come up making a pretty green **B.**

Elizabeth, my cousin, is the sweetest little girl,
From her eyes like dark blue pansies, to her tiniest golden curl,

I do not use her great long name, but simply call her Bess,
And yesterday I planted her in mustard and in cress.

My garden is so narrow that there's very little room,
But I'd rather have her name than get a hollyhock to bloom,
And before she comes to visit us with Charley and with Jess,
She'll pop up green and bonny out of mustard and of cress

Norman Gale

Note—How can you spell Elizabeth in four letters? What does Norman Gale mean when he says that his cousin Elizabeth will *pop up green and bonny?*

What colour was Elizabeth's hair? What were her eyes like? Have you a hollyhock in your garden? What grows in your garden? What do we do with mustard and cress?

The Boy With The Little Bare Toes

Here is a very funny story about *The Boy With The Little Bare Toes* He felt so very happy in his bare feet as he ran along the wet grass down the meadow Then, like all little boys, he wanted to climb a tree, so up he went and found a big hole Was there money in the hole? Or was there honey in the hole? Oh no! but something far nicer than these And then such a funny thing happened—but you must read the poem to find out what it was.

He ran all down the meadow, that he did,
The boy with the little bare toes
The flowers they smelt so sweet, so sweet
And the grass it felt so funny and wet
And the birds sang just like this—"chereep!"
And the willow trees stood in rows.
"Ho! ho!"
Laughed the boy with the little bare toes

Now the trees had no insides—how funny!
Laughed the boy with the little bare toes
And he put in his hand to find some money
Or honey—yes, that would be best—oh, best!
But what do you think he found, found, found?
Why, six little eggs all round, round, round,
And a mother-bird on the nest,
Oh, yes!
The mother-bird on her nest

He laughed, "Ha! ha!" and he laughed, "He! he!"
The boy with the little bare toes.
But the little mother-bird got up from her place
And flew right into his face, ho! ho!
And pecked him on the nose, "Oh! oh!"
Yes, pecked him right on the nose
"Boo! Boo!"
Cried the boy with the little bare toes

F W Harvey.

Note—What did the birds sing to this little boy? What other words sound like birds' notes? What did the little boy find in the hole? Why did the mother-bird peck him? What did he do then?



A Tragic Story

There lived a sage in days of yore,
And he a handsome pigtail wore,
And wondered much and sorrowed more
Because it hung behind him

He mused upon this curious case,
And swore he'd change the pigtail's place,
And have it hanging at his face,
Not dangling there behind him

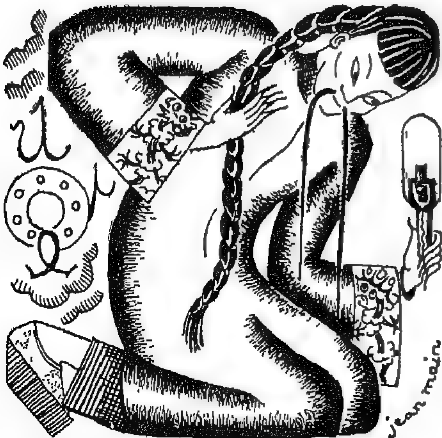
Says he, "The mystery I've found—
I'll turn me round"—he turned him round,
And round and round, and round and round,
But still it hung behind him

Then round and round, and out and in,
All day the puzzled sage did spin,
In vain—it mattered not a pin—
The pigtail hung behind him

And though his efforts never slack,
And though he twist, and twirl, and tack,
Alas! still faithful to his back,
The pigtail hangs behind him

W M Thackeray

Note—A sage is a very wise man Was this man really a sage? Is the poem really a tragic story? We see that the clever poet is laughing at his sage, while pretending to be sorry for him This makes us laugh, too Which words describe the sage's movements? Why was he puzzled? What was he trying to do? Why did he want his pigtail in front? Why is it better for a pigtail to hang behind? Find the words which rhyme in this poem Which lines help us to see the sage spinning round?



MISCELLANEOUS POEMS

The Ferryman

"Ferry me across the water,
Do, boatman, do"
"If you've a penny in your purse,
I'll ferry you"

"I have a penny in my purse,
And my eyes are blue
So ferry me across the water,
Do, boatman, do."

"Step into my ferry-boat,
Be they black or blue,
And for the penny in your purse
I'll ferry you"

Christina G. Rossetti.

Note—This poem dances like a boat on the water Boys and girls should take parts in saying it, with actions What do you notice about the rhymes? This plan makes the poem simple, and one whole, as it is meant to be A ferry-boat passes to and fro over a river. How much did the ferryman charge for the crossing? Which line is pleading?



The Scissor-Man

Sing a song of Scissor-men,
"Mend a broken plate,
Bring your knives and garden shears,
I'll do them while you wait.
Buzz-a-wuzz! Buzz-a-wuzz!
Fast the wheel or slow,
Ticker Tacker! Ticker Tack!
Rivets in a row"

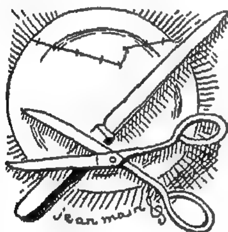
Sing a song of Scissor-men,
Sitting in the sun,

Sing it when the day begins,
Sing it when it's done
Be it hard or be it soft,
Here's a jolly plan,
Sing to make the work go well,
Like the Scissor-man

Madeleine Nightingale.

Note—Which words imitate the sounds made by the scissor-man at work? The poem has a lively swing Which Nursery Rhyme has the same tune?

How can we all be like the scissor-man? What goods will he mend? What will he sharpen? How long will he take?



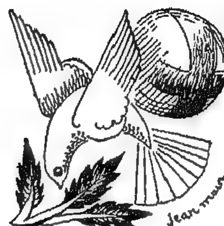
Song For A Ball-Game

Bounce ball! Bounce ball!
One—two—three.
Underneath my right leg
And round about my knee
Bounce ball! Bounce ball!
Bird—or—bee
Flying from the rose-bud
Up into the tree

Bounce ball! Bounce ball!
Fast—you—go
Underneath my left leg
And round about my toe
Bounce ball! Bounce ball!
Butt—er—fly
Flying from the rose-bud
Up into the sky

Bounce ball! Bounce ball!
You—can't—stop
Right leg and left leg
Round them both you hop
Bounce ball! Bounce ball!
Shy—white—dove,
Tell me how to find him,
My own true love

Wilfrid Thorley



Note—Learn this poem, and try to sing it while you are bouncing your ball. The music hops just like a bouncing ball Which letter begins many of the words? Why? To what creatures does the happy little girl sing while she bounces her ball?

The Little Lord Jesus

Away in a manger, no crib for a bed,
The little Lord Jesus laid down His sweet head
The stars in the bright sky looked down where He lay—
The little Lord Jesus asleep on the hay.

The cattle are lowing, the baby awakes,
But little Lord Jesus no crying He makes
I love Thee, Lord Jesus! look down from the sky,
And stay by my cradle till morning is nigh

Be near me, Lord Jesus, I ask Thee to stay
Close by me for ever and love me, I pray,
Bless all the dear children in Thy tender care,
And fit us for Heaven, to live with Thee there

From the German

Note—This is a beautiful little German cradle-song, singing of Jesus in His poor manger, and asking Him to protect other little children as helpless as He once was. What is the meaning of "no crib for a bed"?

Which line should be only whispered? What sounds woke the little Lord Jesus from sleep? What does "lowing" mean? How does the poem tell us that Jesus was a good little baby?

Matilda Jane

Matilda Jane, you never look
At any toy or picture book,
I show you pretty things in vain,
You must be blind, Matilda Jane.

I ask you riddles, tell you tales,
But all our conversation fails,
You never answer me again,
I fear you're dumb, Matilda Jane

Matilda, darling, when I call
You never seem to hear at all,
I shout with all my might and main,
But you're *so* deaf, Matilda Jane

Matilda Jane, you needn't mind,
For though you're deaf and dumb and blind,
There's someone loves you, it is plain,
And that is *me*, Matilda Jane

Lewis Carroll.

Note—Who do you think Matilda Jane is? What things will she not do? Try saying this poem to your own "Matilda Jane" and give her a big hug at the end. What does "dumb" mean? What does Matilda's mistress do to try and make Matilda hear her? What is "conversation"? Why does their conversation fail? What riddles do you know?

Choosing Shoes

New shoes, new shoes,
Red and pink and blue shoes,
Tell me, what would *you* choose,
If they'd let us buy?

Buckle shoes, bow shoes,
Pretty pointy-toe shoes,
Strappy, cappy low shoes,
Let's have some to try

Bright shoes, white shoes,
Dandy-dance-by-night shoes—
Perhaps-a-little-tight shoes,
Like some? so would I

BUT

Flat shoes, fat shoes,
Stump-along-like-that shoes,
Wipe-them-on-the-mat shoes,
That's the sort they'll buy

ffrida Wolfe

Note—A child is in need of some new shoes, so is taken to the shop She wishes she could choose her own What sort would she buy then? She cannot think of one word alone to describe the pretty shoes, so what does she do to tell you what they are like? What does "dandy" mean? The poem is dancing, dainty and light, until you reach the last verse Then you must change your voice What makes us laugh at the end? Which shoes would *you* choose if you could? Why do her parents buy "flat shoes, fat shoes" for their little girl?

Jack-Of-The-Inkpot

I suppose that sometimes, when you are writing with pen and ink, you make a blot on your book, or make your fingers black and inky And then you feel cross If it keeps on happening, perhaps you want to cry. But here is a poem which will help you to laugh about it The poem is called *Jack-of-the-Inkpot* It was written by Algernon Blackwood, a clever author who knows a great deal about fairies

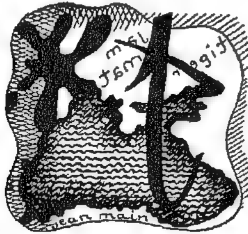
I dance on your paper,
I hide in your pen,
I make in your inkstand
My little black den,
And when you're not looking
I hop on your nose,
And leave on your forehead
The marks of my toes

When you're trying to finish
Your "i" with a dot,
I slip down your finger
And make it a blot,
And when you're so busy
To cross a big "t,"
I make on the paper
A little Black Sea

I drink blotting paper,
Eat penwiper pie,
You never can catch me,
You never need try!
I leap any distance,
I use any ink,
I'm on to your fingers
Before you can wink

Algernon Blackwood

Note—What does Jack call his house? What does he eat and drink? How quickly can he leap? There is a large sea in the world called the "Black Sea," but it is not black as Jack's "Black Sea" is What does Jack do with blotting paper? What is a penwiper? Name all the spots on which Jack jumps



DO YOU EVER?

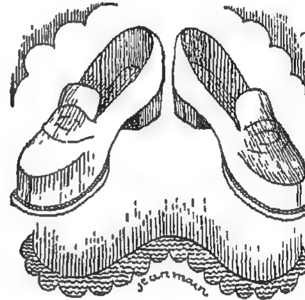
In *Do You Ever?* the child pretends that he is grown up like father and wears very squeaky boots You will see why he likes these boots when you read the poem.

I'm walking up and down the hall,
My shoes a happy squeaking make,
It *is* a lovely noise! I hope
It's not because my new shoes ache.
I walk to hear it when I can,
Turning my toes out, like a man

When I have children, I shall buy
The squeakiest shoes that I can find
And walk about the house, my hands
Clasped close together tight behind
And when my children hear, they'll say,
"Here's Daddy coming home Hurray!"

Flora Sandström.

Note—Why does the child want to be grown up like father? How does the child walk? Do you like squeaky shoes? This poem swings along at a steady walk Say it walking up and down like the boy in the picture



MY SHIP AND I

Sometimes a poem is jolly because it *sounds* jolly, and not because of the funny pictures in it. One of the jolliest poems ever written is *My Ship And I*, by Robert Louis Stevenson. The second stanza is the jolliest of all, for it makes us feel that we are sailing on the vessel that "goes a divie-divie-dive"

O it's I that am the captain of a tidy little ship,
Of a ship that goes a-sailing on the pond,
And my ship it keeps a-turning all around and all about,
But when I'm a little older, I shall find the secret out
How to send my vessel sailing on beyond.

For I mean to grow as little as the dolly at the helm,
And the dolly I intend to come alive,

And with him beside to help me, it's a-sailing
I shall go,
It's a-sailing on the water, when the jolly
breezes blow
And the vessel goes a divie-divie-dive.

O it's then you'll see me sailing through the
rushes and the reeds,
And you'll hear the water singing at the
prow,
For beside the dolly sailor, I'm to voyage and
explore,
To land upon the island where no dolly was
before,
And to fire the penny cannon in the bow.

Robert Louis Stevenson

Note—What will happen to my ship when I sail it on the sea and the jolly breezes blow? Why did Robert Louis Stevenson want to grow as little as the dolly? What do you think a "tidy little ship" is? How many are going a-sailing in the ship? The prow is the front end of the ship Why would the water sing round the prow? Where is the ship sailing? What are rushes and reeds? What does "explore" mean? What will the captain do when he lands on the island?

A CHRISTMAS VISITOR

He comes in the night! he comes in the night!
He softly, silently comes,
While the little brown heads on the pillows
so white
Are dreaming of bugles and drums

He cuts through the snow like a ship through
the foam,
While the white flakes around him whirl,
Who tells him I know not, but he findeth the
home
Of each good little boy and girl

His sleigh it is long, and deep, and wide,
It will carry a host of things,
While dozens of drums hang over the side,
With the sticks sticking under the strings

And yet not the sound of a drum is heard,
Not a bugle blast is blown,
As he mounts to the chimney-top like a bird,
And drops to the hearth like a stone

The little red stockings he silently fills,
Till the stockings will hold no more,
The bright little sleds for the great snow hills
Are quickly set down on the floor.

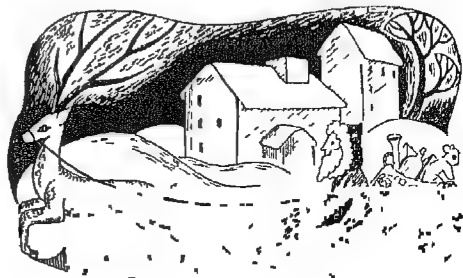
Then Santa Claus mounts to the roof like a
bird,
And glides to his seat in the sleigh,
Not the sound of a bugle or drum is heard
As he noiselessly gallops away

He rides to the East, and he rides to the West,
Of his goodies he touches not one,
He eateth the crumbs of the Christmas feast
When the dear little folks are done

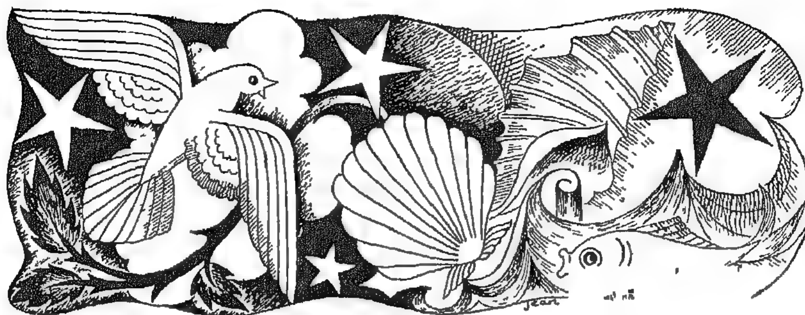
Old Santa Claus doeth all that he can,
This beautiful mission is his,
Then, children, be good to the little old man
When you find who the little man is

George Cooper.

Note—This poem dwells on the kindness of Santa Claus What kind things does he do? The poem should be said slowly and softly, because Santa Claus moves very quietly Why? What kind of children will you be if you do not obey the last two lines? What is a bugle? Why is Santa Claus like a bird? What is a sleigh? Why does Santa Claus use a sleigh instead of a motor car? What animals are supposed to pull his sleigh along? What presents has Santa Claus ever brought you?



POEMS FAIRY AND FANCIFUL



The Lamplighters

When I am snug and cosy
And all tucked up in bed,
I'm not afraid, for, when it's dark,
I hear the fairies tread

Their footsteps softly twinkle
Up the blue velvet sky,
They're lighting up the fairy lamps—
The little stars on high.

Note.—In this poem the child feels that the light of the stars protects him through the night What pretty name does he call the stars ? Who are the lamplighters ? What is the sky said to be ? How does the child feel when in bed ? Why is he not afraid of the dark? Have you ever seen the lamplighter in your road ? What does he do ?

If You See A Fairy Ring

The following poem tells us about the *Fairy Rings* which we often see in the meadows. Some people say that the rings are made by the tiny feet of the fairies as they dance round and round in the moonlight In one verse a fairy is called a *tiny fay* You must step away on tiptoe when you see a ring where the fairies have been frolicking or playing, for if you do not you will spoil their magic

If you see a fairy ring
In a field of grass,
Very lightly step around,
Tiptoe as you pass;
Last night fairies frolicked here,
And they're sleeping somewhere near

If you see a tiny fay
Lying fast asleep,
Shut your eyes and run away,
Do not stay to peep,
And be sure you *never* tell,
Or you'll break a fairy spell

Note.—Why must you not tread on a fairy ring ? What games do you think fairies play ? Try to say the poem daintily, as it is about fairies What should you do if you ever saw a fairy asleep ? Why must you never tell anybody ? Where do you think you might find sleeping fairies ?

Minnie and Winnie

Minnie and Winnie
Slept in a shell
Sleep, little ladies !
And they slept well

Pink was the shell within,
Silver without,
Sounds of the great sea
Wander'd about.

Sleep, little ladies!
Wake not soon!
Echo on echo
Dies to the moon.

Two bright stars
Peep'd into the shell
"What are they dreaming of?
Who can tell?"

Started a green linnet
Out of the croft,
Wake, little ladies!
The sun is aloft!

Lord Tennyson.

Note—Two little fairies have crept into a shell by the seashore for the night What lines catch the sound of the waves rising and falling all night long? What is a croft? Who saw Minnie and Winnie asleep? Who woke them up? What colours would you need to paint a picture of their shell? Name six words that rhyme with shell What song did the linnet sing? What did the stars say?



LADY MOON

Lady Moon, Lady Moon, where are you roving?
Over the sea
Lady Moon, Lady Moon, whom are you loving?
All that love me

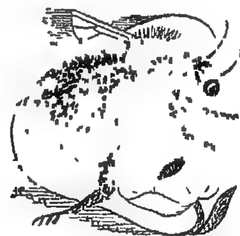
Are you not tired with roving, and never
Resting to sleep?
Why look so pale and so sad, as for ever
Wishing to weep?

Ask me not this, little child, if you love me,
You are too bold.
I must obey my dear Father above me,
And do as I'm told

Lady Moon, Lady Moon, where are you roving?
Over the sea
Lady Moon, Lady Moon, whom are you loving?
All that love me

Lord Houghton

Note—The music in this poem is like the rolling waves of the sea. Which line is a picture of the moon over the water? What kind of voice should the moon have? Try to speak her beautiful words exactly as you think she would say them Whom does the moon love? What does "roving" mean? The moon does not explain why she is always moving. Who guides her on her way?



THE FAIRY AND THE BEE

The Fairy and The Bee tells a pretty story. In one place the fairy is called a *tiny sprite* The bee was very, very cross with her because she had sipped his honey from the flower.

A fairy sat in a buttercup
To rest for a little while;
Her weary wings were folded up
In quite the latest style

The soft breeze rocked her tenderly
  Until she fell asleep;
And, by and by, a hungry bee
  Came near enough to peep.

He buzzed around the tiny sprite,
  As cross as cross could be
To think a fairy should have sipped
  His honey for her tea !

Out came his sting, but just in time
  The fairy showed her head,
And, when she raised her magic wand,
  The bee in terror fled

E.L.

Note—Can you tell the story in your own words ? Who rocked the fairy to sleep ? Why was the bee cross ? Why was the bee frightened ?



THE CUCKOO

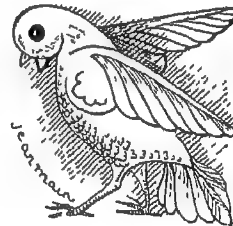
I suppose that you know what a naughty bird the Cuckoo is. She lays her eggs in the nest of another bird and never takes the trouble to look after her own eggs or her babies But Rose Fyleman says that the fairies catch them sometimes and *dock*, or clip their wings, then—but that is a secret for you to find out !

The Cuckoo is a tell-tale,
  A mischief-making bird,
He flies to East, he flies to West
And whispers into every nest
  The wicked things he's heard,
He loves to spread his naughty lies,
He laughs about it as he flies
"Cuckoo," he cries, "cuckoo, cuckoo,
It's true, it's true"

And when the fairies catch him
  His busy wings they dock,
They shut him up for evermore
(He may not go beyond the door)
  Inside a wooden clock,
Inside a wooden clock he cowers,
And has to tell the proper hours—
"Cuckoo," he cries, "cuckoo, cuckoo,
It's true, it's true" .

Rose Fyleman.

Note—What do the fairies do with the cuckoo when they catch him ? Why ? What is the cuckoo called in the poem ? How does he make mischief ? Is he sorry for this ? What does "cowers" mean ? What work must he do as punishment for his naughty ways ? Which is your favourite bird ? Have you ever seen a cuckoo clock ? When does the cuckoo come out of it ? (See blackboard sketch page 261)



THE CANARY

He used to be a fairy once,
  A little singing fairy;
He would not work, he would not play,
He only sat and sang all day—
  So now he's a canary.

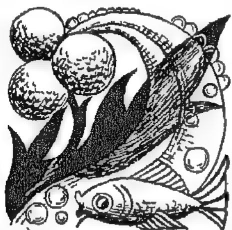
They sent him out of fairyland,
  They sent him here to me
The day that I was six years old,
His little house of shining gold
  Hangs in the nursery.

He's taught me lots of lovely things
  I never should have guessed,
He's told me what they say and do
(They all have wings—it's really true)
  And how the Queen is dressed

He flits about the house at night
  A little lonely fairy,
But nobody is there to see,
And no one knows—excepting me—
  He's not a real canary.

Rose Fyleman.

Note—Supposing the fairy canary told you his secrets, what do you think he would say? Why is he lonely at night? Why was the fairy changed into a canary? How old was the little girl when he came to her? Where does he live? What does he do in the daytime?



Queen Mab

A little fairy comes at night,
  Her eyes are blue, her hair is brown,
With silver spots upon her wings,
  And from the moon she flutters down

She has a little silver wand,
  And when a good child goes to bed
She waves her wand from right to left,
  And makes a circle round its head

And then it dreams of pleasant things,
  Of fountains filled with fairy fish,
And trees that bear delicious fruit
  And bow their branches at a wish:

Of arbours filled with dainty scents
  From lovely flowers that never fade,
Bright flies that glitter in the sun,
  And glowworms shining in the shade

And talking birds with gifted tongues,
  For singing songs and telling tales,
And pretty dwarfs to show the way
  Through fairy hills and fairy dales

Thomas Hood

Note—The Queen of the fairies has a magic wand What has it power to do? What lovely dreams have you ever had? Describe Queen Mab The lines flow gracefully because many words beginning with the same letter run along side by side, such as "fountains filled with fairy fish" Can you find others? What does Queen Mab do with her wand? What are arbours? What are hills and dales? Of what pleasant things does a good child dream?

My Toys

Read the poem, *My Toys.* When you come to the end of it, you will find the word *imagine*, and that line will help you to remember what the word means Instead of saying, "I'll *imagine* them playing," you can say "I'll *pretend* they are playing"

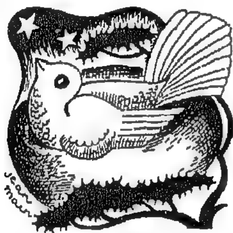
I really believe, in the nighttime
  When I am asleep in my bed,
That my toys get up out of their boxes
  And dance on the carpet instead,
For when I get up in the morning,
  They're not where I put them at night,
I'm sure that the pistol goes popping—
  I'm certain the soldier-boys fight!

The old Noah's Ark in the cupboard
  I know goes a-floating away,
Till it reaches a mountain of cushions,
  And there does it settle and stay,
And the animals march out in order—
  The lion and leopard and bear
I wish that I wasn't so sleepy,
  For I should so love to be there

The humming top hums, I am certain,
  And spins near the nursery door,
The marbles go hunting in couples,
  And go for a roll on the floor.
The picture books jump from the table,
  With pages that flutter and fly,
And the big yellow ball in the corner
  Goes creepily, creepily by!

I wish that I wasn't so sleepy,
  For then I should stay up and see
The toys that I keep in my cupboard
  Go jumping and hopping round me.
Oh ! it would be jolly to catch them,
  When they thought I was safely in bed;
But as they don't come when you watch them,
  I'll imagine them playing instead.

Note—Why can't I see my toys dancing at night ? How does my big ball roll about ? Why must I *pretend* that my toys are playing ? Name all the things that the toys do, such as "dance" or "hop" Where does the Noah's Ark sail ? What animals march out of the Ark ? What other wild animals do you know ? What toys have you at home ?



JAPANESE LULLABY

Sleep, little pigeon, and fold your wings,—
  Little blue pigeon with velvet eyes,
Sleep to the singing of mother-bird swinging—
  Swinging the nest where her little one lies

Away out yonder I see a star,—
  Silvery star with a tinkling song;
To the soft dew falling I hear it calling—
  Calling and tinkling the night along.

In through the window a moonbeam comes—
  Little gold moonbeam with misty wings,
All silently creeping, it asks, "Is he sleeping—
  Sleeping and dreaming while mother sings ?"

But sleep, little pigeon, and fold your wings—
  Little blue pigeon, with mournful eyes
Am I not singing ?—see, I am swinging—
  Swinging the nest where my darling lies

Eugene Field

Note—With what pretty bird does this Japanese mother compare her baby ? What kind of eyes do you think are velvet eyes ? There is a lovely swing in these long lines Of what does it remind you ? Find a line that is a good example of this. What verse should be said very softly ? Which word describes the music of a star ? What does "mournful" mean ? Draw a picture of a moonbeam "with misty wings", like a fairy, and colour it

WYNKEN, BLYNKEN, AND NOD

Wynken, Blynken and Nod one night
  Sailed off in a wooden shoe—
Sailed on a river of misty light
  Into a sea of dew
"Where are you going, and what do you wish ?"
  The old moon asked the three
"We have come to fish for the herring-fish
  That live in this beautiful sea,
  Nets of silver and gold have we,"
      Said Wynken,
      Blynken,
      And Nod.

The old moon laughed and sang a song,
  As they rocked in the wooden shoe;
And the wind that sped them all night long
  Ruffled the waves of dew,
The little stars were the herring-fish
  That lived in that beautiful sea.
"Now cast your nets wherever you wish,
  But never afeared are we !"
  So cried the stars to the fishermen three,
      Wynken,
      Blynken,
      And Nod.

All night long their nets they threw
  For the fish in the twinkling foam,
Then down from the sky came the wooden shoe,
  Bringing the fishermen home,

'Twas all so pretty a sail, it seemed
As if it could not be;
And some folks thought 'twas a dream they dreamed
Of sailing that beautiful sea;
But I shall name you the fishermen three
Wynken,
Blynken,
And Nod.

Wynken and Blynken are two little eyes,
And Nod is a little head,
And the wooden shoe that sailed the skies
Is a wee one's trundle-bed,
So shut your eyes while mother sings
Of wonderful sights that be,
And you shall see the beautiful things
As you rock in the misty sea,
Where the old shoe rocked the fishermen three—
Wynken,
Blynken,
And Nod

Eugene Field

Note—This is the story of a fairy voyage What was the boat? It sailed up and up on a moonbeam river, into the clouds. How many were in the boat? What were they going to do? What fish were they after? What did the moon and the stars say to them? What did this fairy voyage prove to be after all? The song has a rocking, sleepy swing Draw a picture of the "fishermen three."

THE ROCK-A-BY LADY

The Rock-a-By Lady from Hush-a-By Street
Comes stealing; comes creeping,
The poppies they hang from her head to her feet,
And each hath a dream that is tiny and fleet—
She bringeth her poppies to you, my sweet,
When she findeth you sleeping!

There is one little dream of a beautiful drum—
"Rub-a-dub!" it goeth,
There is one little dream of a big sugar-plum,
And lo! thick and fast the other dreams come
Of popguns that bang, and tin tops that hum,
And a trumpet that bloweth!

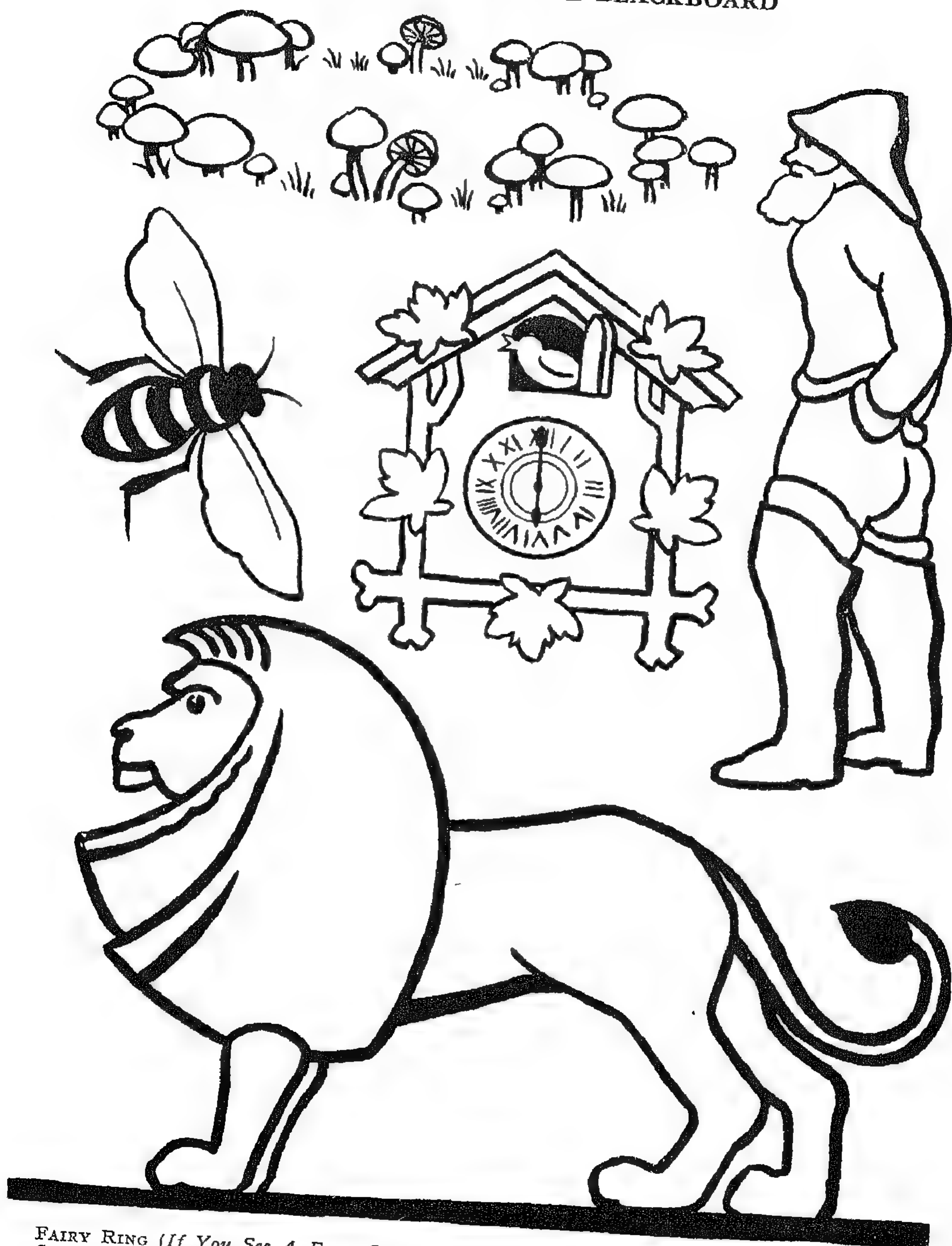
And dollies peep out of those wee little dreams
With laughter and singing,
And boats go a-floating on silvery streams,
And the stars peek-a-boo with their own misty gleams,
And up, up, and up, where the Mother Moon beams,
The fairies go winging!

Would you dream all these dreams that are tiny and fleet?
They'll come to you sleeping,
So shut the two eyes that are weary, my sweet,
For the Rock-a-By Lady from Hush-a-By Street,
With poppies that hang from her head to her feet,
Comes stealing, comes creeping

Eugene Field.

Note.—This is a pretty fairy story told by a mother to her little one, to send it to sleep "Sleep," she says, "and this lovely lady will visit you" The lady wears poppies, because their juice brings sleep Of what will the baby dream? What does peek-a-boo mean? Which lines should be said softly and sleepily? Which words have a drowsy sound? The music of the second verse runs louder and faster Why?

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD

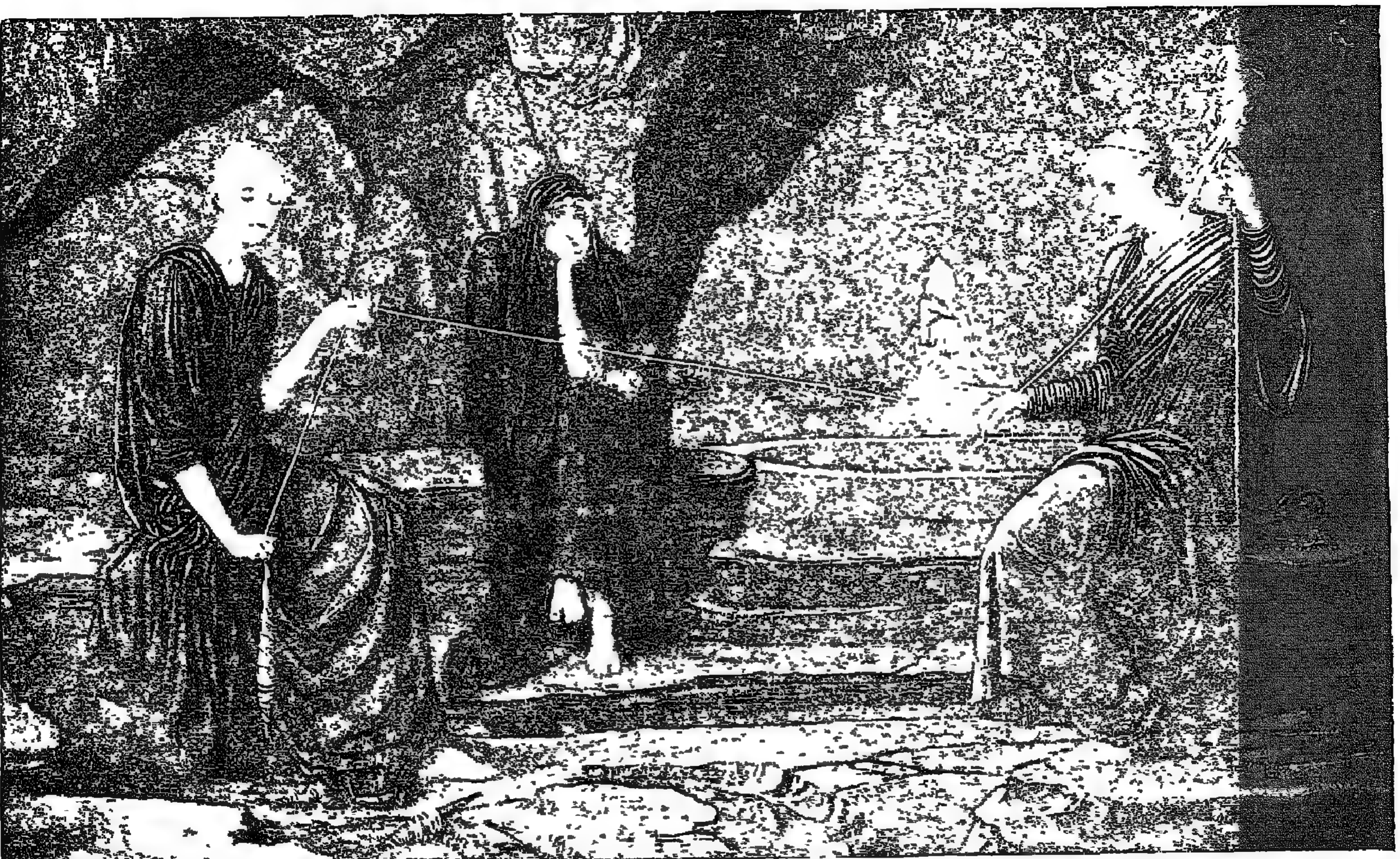


Fairy Ring (*If You See A Fairy Ring*)
Cuckoo Clock (*The Cuckoo*)
Noah's Ark Lion (*My Toys*)
Bee (*The Fairy And The Bee*)
Fisherman (*Wynken, Blynken, And Nod*)

THE TEACHING OF NEEDLEWORK

IN THE

PRIMARY SCHOOL



From the picture "A Golden Thread" by J M Strudwick in the Tate Gallery]

[*By permission of the Artist*

THE THREE FATES

These maidens of grave mien, the three daughters of Night, presided over the destinies of men Clotho, the youngest, held the distaff which spun the thread of life, Lachesis mixed good and evil fortune with it, Atropos cut the thread at the allotted moment

GENERAL INTRODUCTION TO THE FOUR YEARS' COURSE

Preliminary training in needlework—The average child, upon becoming a member of the primary department of an elementary school will have very little knowledge of needlework beyond the small amount which has been included in the handwork scheme of the infant school This has probably taken the form of raffia work of various kinds, or woolwork on canvas, or, in fact, any occupation which involves the use of a needle and thread—thread meaning any medium used in conjunction with a needle, raffia, floss, wool, etc

It is suggested, however, that a very great deal might be accomplished in the infant school towards the definite preparation of the child for the teaching it will receive in the junior school. This preparation, however, should be most informal as far as the child is concerned, although the work of the teacher must take the form of organised thought tending to develop in the child certain qualities

Faculties brought into play by the preliminary work.—First of all the teacher trains the sense of touch, by placing at the pupil's disposal many kinds of materials in small pieces, by which she can learn terms applied to textiles, such as rough, smooth, coarse, fine, thin, thick, dull and shining

Then there is the development of creative power, which is very important. This is gained by letting the child make something—what she likes and in whatever manner she wishes—from these scraps of material In this way many a child becomes thrilled and absorbed, and finds sewing as attractive at school as at home, where, as everyone knows, she finds the greatest possible delight in being allowed to sit and sew with other members of the family The teacher must be prepared to give the child absolute freedom of choice with regard to what is to be made, how it is to be made, the materials chosen, and the time to be spent upon making the article Through this encouragement the child will also gain a sense of responsibility towards the work in hand, a feeling that whatever is being done must be finished A good deal can be done, too, towards imparting a love of colour, by the banishment of crude and poor colours, and by the wise guidance of the child's taste in this direction

The manipulation of materials.—The use of scissors is important, and provided the scissors cut well and are of the right size for the child, the muscles of the hand will be developed in a natural manner, so that later on in school and at home the child will possess confidence in what is always to some people the most difficult task of "cutting out" Articles to be made will readily suggest themselves to the teacher, and anything which involves the handling of material, needles, thread and scissors can be made without any formal instruction regarding stitches, seams or decoration. Continual help in needle threading, and also encouragement to the child will be required, in order that she may move into the junior school with a feeling of pleasure towards her future needlework.

Materials used in the primary school.—All materials used in the primary school should be easily manipulated, soft but firm to the touch, not so easily frayed as to be disagreeable to use, non-wiry, and of extremely good colours The degree of texture must be carefully graded, from the coarse to the finer, no material of a finer texture than holland or zephyr being recommended for

formal needlework The colours used should also have consideration, no harsh or crude colours should be allowed, and materials of a soft cream hue should be the first used White material is recommended for use during the fourth year, and then it should be of coarse texture.

Correspondingly, coarse thread should be used in conjunction with the material chosen, and again the choice of colours is important, in order that the child may be trained constantly to cultivate that good taste and artistic sense without which the most exact and fine needlework is wasted

This care in the selection and in the grading of materials, threads and colours, is very necessary, the eyes and the hands must be gradually accustomed to the close seeing and intricate handling which finer textures demand The sizes of stitches must bear relation to the degree of coarseness of the texture upon which they are being sewn By working along these lines the whole scheme will prove to be delightfully practical, and will undoubtedly give great joy to both teacher and class.

Personal cleanliness.—In spite of numerous difficulties in this direction, cleanliness of the hands should be insisted upon, even if a few moments of a lesson seem to be wasted by taking children to wash their hands before allowing them to proceed with their needlework or knitting The wise teacher may regard this as training in personal hygiene, and in the formation of clean habits of work This problem is easier to deal with in country areas, where there are fewer children in the school and where washing facilities appear to be easier The idea of placing in the room a bowl of water and a towel, which are available for use by any and every child is distinctly horrible, but until every school possesses better facilities, this must needs continue

It would be an ideal arrangement if every room in which handwork or needlework is to take place were to have a fitted sink or bowl and tap, in order that running water should be available for the use of every individual (including the teacher) at all times.

Cleanliness in work.—Care in looking after and storing needlework should be exercised from the very first lesson, when children should be provided with some sort of covering for the desk or table at which they work; plain paper serves this purpose very well when a covering of material is not provided Every child should, however, be given a bag known as a lap bag, which serves a double purpose, that of an apron, and also a bag into which the work is placed at the end of the lesson, all children being taught to fold the work carefully and neatly, before putting it away. The bags may easily be made by the children

Desk covers and lap bags should be washed at least twice during the term, at half term and at the end of term Storage facilities usually consist of baskets, boxes, or cupboard shelves, the last mentioned being preferable in many ways. Work stored in baskets is often mishandled, and quickly becomes tumbled-looking, whereas it is easily placed on shelves and is easier to keep tidy. When new cupboards are requisitioned for this purpose, those with trays to draw out are recommended as being specially suitable.

Left-handed children.—The needlework of children who are able to sew only with the left hand is often somewhat neglected, simply because the class teacher has not the time to devote to the individual needs of such children, who are unable to follow demonstrations, however clearly given.

As it is unwise to insist upon the use of the right hand, the teacher must be prepared to teach the left-handed child individually by showing her methods of work, or by allowing her to pick up any knowledge she is able to acquire from her companions A child of this type nearly always feels discouraged, and therefore may be unable to sew when she grows up A simple device which is found distinctly helpful to both teacher and scholar, is for the teacher to place before

the child a stand measuring about nine inches by seven inches—a calendar, or photograph frame, will be quite convenient, if the face of it is covered with a sheet of paper of neutral colour to form a background The *back* of the stand should face the child, while on to the front of it is pinned a small section of the work commenced, with the needle in the right-hand position for making a stitch Opposite this and facing the child, is placed a mirror, which will reflect in it the left-handed position for work, so that the child will be able to follow the working of the stitch for herself.

This device may be used for the teaching of almost any simple process or stitch, with intricate ones the necessary steps must be worked one at a time Otherwise the teacher must use her own left hand in teaching left-handed children, and unless she has been trained to sew with both hands, great difficulty will be experienced

FOUR YEARS' COURSE

FIRST YEAR

Type of pattern.—

Squares and rectangles.

Articles made.—

Mats, doll's house carpets, curtains, doll's bed covers

Articles for child's own use, bags of all kinds, pincushions, desk covers, etc

Processes.—

1 Fringed edges.

2 Fringed ends, and sides neatened by turning hems, held in place by tacking stitch

3 Four sides neatened by turning hems, held in place by tacking

4 Four sides neatened by turning hems, held in place by running

5. Bag types of articles formed by joining two neatened pieces by oversewing, or by folding one piece and oversewing.

Stitches.—

1 Tacking for decoration.

2 Tacking for holding hems

3 Running

4 Oversewing

5. Tacking and running to form simple decorative borders

Materials.—

1 White paper

2 Slav crash

3 Unbleached calico of firm but soft texture

4 Fairly thick casement cloth

5 Thick zephyr.

Threads—1. Anchor floss.

2 *Coton à broder*

3 Stranded cotton

SECOND YEAR

Type of pattern.—

Adaptation of square and rectangular shapes, to make patterns of simple articles and garments having slanting lines and easy curves

Articles or garments made.—

1 With convex, or outer, curves —Egg cosy, tea cosy, oval cushion, tray cloth, doll's or baby's bonnet.

2. With concave, or inner, curves. —Feeders, pinafores, bags of all kinds

Experimental work—Doll dressing

Knitting—Various articles and doll's clothes in plain and purl on two needles

Processes.—

1 Turning narrow (¼ inch) hems round outer curved edges

2 Facing with ½ inch tape along inner curved edges.

3. Turning hems round inner curved edges.

4. Sewing on bag handles, made of bands of hemmed strips of material

5 Sewing on tape for strings

Stitches.—

1 Hemming

2 Adaptation of previous stitches to new requirements, decorative stitchery, etc.

3 Simple decoration by means of stick printing alone, or outlined with stitches, or by line designs in running or darning

Materials.—

As in previous year Donkey-boy cloth. Dyed Russian crash

THIRD YEAR

Type of pattern.—

Patterns made by paper folding

Bought patterns for doll's clothes, and for simple garments.

Articles or garments made.—

Pinafores, Magyar rompers and tunics for baby, one-piece drawers

Experimental work—Making doll's clothes, using bought patterns

Knitting—Using simple cyclostyled or printed directions for vests, scarves, etc.

Processes.—

1. French seams

2. Half-inch hem to form a slot for the insertion of elastic.

3 Neatening necks and ends of sleeves and legs by means of facings on the right side, cut to shape on the straight

4 Making and sewing on pockets

5 *Fastenings*—buttons, loops and cords

Stitches.—

1 Loop-stitch for several purposes

2 Back-stitch for occasional use

3 Decorative work—simple decoration to the child's own designs, or to adapted transfers; using loop-stitch, back-stitch, cross-stitch, outline-stitch.

Materials.—

Any materials previously used

FOURTH YEAR

Type of pattern.—

Paper folding and bought patterns

Articles made.—

Knickers, simple dresses for children from a bought pattern

Knitting—Making articles to learn:—(a) Knitting on four needles (b) Decreasing. (c) Turning heel (d) Finishing flat toe

Articles such as, egg cosy, doll's or baby's bonnet, purse or bag to draw up

Processes.—

1 Run and fell seam.

2. Setting a gathered or pleated skirt on to a yoke or bodice (modern method)

3. Crossway cutting, facing and binding with self or contrasting material Back opening in a child's dress

4. Fastenings—buttons and loops.

5 Decoration—simple appliqué using plain and figured material

Stitches.—

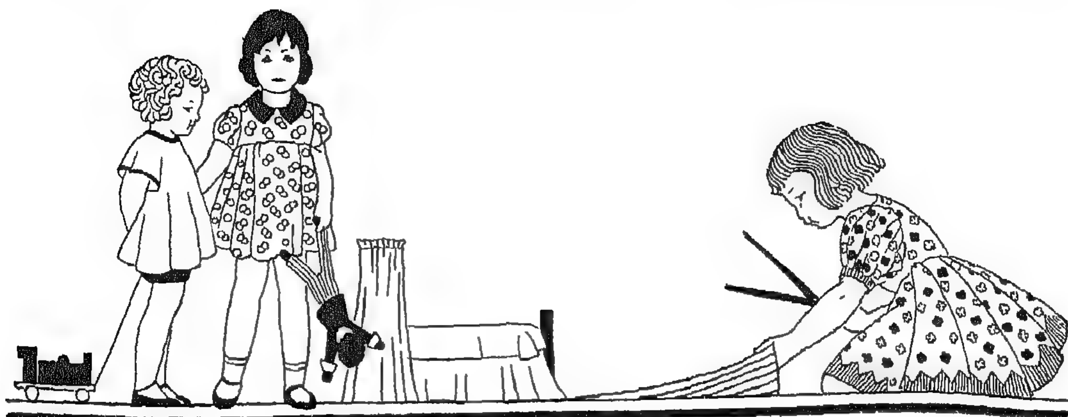
Adaptation of those already learnt to new requirements The use of running, hemming and loop-stitch for applying patches of colour according to design.

Materials.—

Those already used and also Tobralco, printed and check gingham, and zephyr

Needles size 7, and one strand of stranded cotton for finer work, No 40 Sylko

FIRST YEAR'S COURSE OF NEEDLEWORK



The aim of the teacher.—During this most important year in the child's life there are certain fundamental principles of needlework to be learnt Technique is not yet to be thought of, although if a child is found to possess this naturally, the wise teacher will do all in her power to encourage the acquisition of a still higher technique, for it is often a sign of real talent which may aid the child in the choice of a career later

A grasp of fundamental principles cannot be naturally acquired, and therefore definite teaching of some, though not a great number, of these will be necessary By "teaching" is meant some form of showing to a class, group or individual, the processes and stitches necessary for the making of garments and articles

Class teaching.—By "class teaching" is inferred demonstration, which necessitates the use of specially constructed apparatus large enough to be seen by the whole class at once This method of teaching simple processes and stitches is strongly recommended for large classes of children of this age. At first the children work step by step with the teacher, and later on, when they are accustomed to demonstrations, the whole process or stitch may be shown and clearly explained and at once followed by a practice lesson

Group teaching.—Group teaching is suitable for teaching the more difficult processes and stitches to small classes in rural schools, and for either the more forward, or the more backward pupils The number of children in a group should be as many as can conveniently see what the teacher is doing when she uses a piece of material of the same size, kind and shape as that upon which each child is working The teacher must take care to explain as she works, and to leave nothing which needs explanation to the imagination of the children, for they quickly fall into the most slipshod habits of fastening on and off, joining thread, etc , if these points are not stressed at the time of the demonstration

Individual teaching.—Individual teaching is not a particularly suitable method by which to show new processes or stitches to children, but it has often to be practised in rural or special schools. If this method is often used when dealing with a large class it leads to the formation of lazy habits in

children, and often to a positive hatred for needlework With a class of forty children for instance, when the needlework lesson is due to last for an hour, at least ten minutes is taken up in getting the work ready, and in putting it away again at the end of the lesson This leaves only fifty minutes for showing a new process to forty individuals, which means that the time allotted to each child is one minute fifteen seconds, during which time she is to be taught something which will perhaps affect all her future needlework. This means, too, that those children who have no desire to sew, never do sew, for it is easy for such children continually to evade the teacher.

Supervision of work.—Supervision of work is not to be confused with the teaching described above Supervision consists, not in showing new stages of work to individuals, but in overlooking the work in hand during the practice lesson, correcting wrong methods of holding work or tools, correcting mistakes in measurement and judgment, and above all, in giving that constant encouragement and praise where it is due, which give children the necessary contentment and pride in their achievements The work may be supervised by the teacher going to each child in turn, or by sitting at her desk, or at a table (this is less artificial) and letting each child come to her in turn—anything in the nature of a queue of children should of course be avoided. By this means the teacher may discover specially gifted children These quicker workers may be allowed to help the slower and poorer ones with advantage to both types of scholar, the better workers gaining a sense of responsibility and self-reliance, and the poorer workers benefiting by receiving help in a friendly and un-artificial way. This is also an excellent form of social training.

Principles taught in the primary school.—The explanations of the methods employed in the teaching of needlework in the primary school have now been given. The fundamental principles which have to be taught during this four years' course of needlework may be seen by reference to the syllabus They may be considered under three headings —

1. The use of patterns
2. The use of certain processes.
3. The use of certain stitches, each one of which is used in the making of an article or garment

1. The use of patterns.—A pattern of some kind is necessary for nearly every article constructed, and this fact should be emphasized during the lessons which deal with pattern-making There are various methods of pattern-making, and only the simplest of these should be used in the primary school

(*a*) *The flat pattern* —The simplest pattern is the flat pattern taken from any object chosen by the children Suggestions of articles made from a flat pattern are given in the syllabus of this course, and many more may be found in textbooks The patterns at first consist of unfolded squares and rectangles so that the whole pattern is placed, exactly as it is drawn, on the material to be cut It must be borne in mind that the pattern drawn must bear a definite relation in size to the object which it is intended to fit Children learn from such pattern-making the application of measurements to everyday things They must be taught to understand such terms as on, up, down, across, length, width and height in their relation to patterns and needlecraft before being able to take measurements They must also learn the significance of inches, feet and yards in their relation to material, patterns and objects A child who is about to make a bed cover for her doll's bed must first of all be taught that a pattern is required, and secondly, that the shape and size of such a pattern must depend upon the shape and size of the bed.

This type of flat pattern-making is not always dealt with in schools owing to the following difficulties:

(1) It is impossible for every child to bring and use her own possessions for pattern-making.

(2) Not every child possesses suitable objects from which to make patterns

(3) Even when suitable objects are forthcoming, they are of diverse kinds and often of inconvenient shapes and sizes.

(4) In town and urban districts the classes in primary schools are often too large for the individual work and supervision which is necessary.

One way of dealing with such pattern-making, which has proved very satisfactory, and which gives co-operation with the home life of the scholar, is as follows:—The teacher produces one or two flat mats in good colours and well made, together with the objects for which they were made—for example, a bed cover for a doll's bed would be shown upon the bed, and there is usually no difficulty in getting one child to produce a doll's bed The teacher then proceeds to show the class that a pattern was necessary before the cover could be cut out. She places a piece of paper upon the bed, folding it under at the edges until the right size is obtained Similarly patterns may be made for a mat for a vase or plant to stand upon, a doll's house carpet, curtains, tablecloth, and all the other flat articles which may be suggested by the children according to their own needs.

At first the practical part of the work must be done by the children in their own homes, so the teacher gives each scholar a piece of paper longer than she thinks will be required. She asks them to try to make the pattern of the thing chosen, by themselves, during the evening. Plain white or cream drafting paper is the very best kind of paper to use, newspaper should be avoided, the lines of print are very confusing to the eyes and also cause the hands to become dirty very quickly All this happens before the children have learned to use a ruler or to know what is meant by inches and feet; these aids may be applied to pattern-making later on with advantage when they have been learned in the arithmetic lesson.

(*b*) *The folded pattern*—The next stage in the making of patterns consists of the use of folded paper which is cut by the teacher into pieces of the correct size. The folding of the paper produces what are called "divisions," and any shaping of the pattern is drawn to and from the creases caused by the folding. This will be fully explained later in the course It must be noted that all lines, either folded or drawn, must have some very definite meaning and relation both to the object from which the pattern is taken and to each other. The making of doll's clothes gives excellent practice, the children using their own dolls

2. The use of processes.—Processes may be defined as the manipulation of all pieces of correctly shaped material, so as to hide or neaten all raw edges, to join the pieces together and to strengthen where necessary. A list of the processes and necessary articles which should be learnt in the junior school will be found on reference to the syllabus given

3. The use of stitches.—Stitches consist of the correct placing of threads so as to form a means whereby processes may be secured, either temporarily or permanently, also as a means of decoration

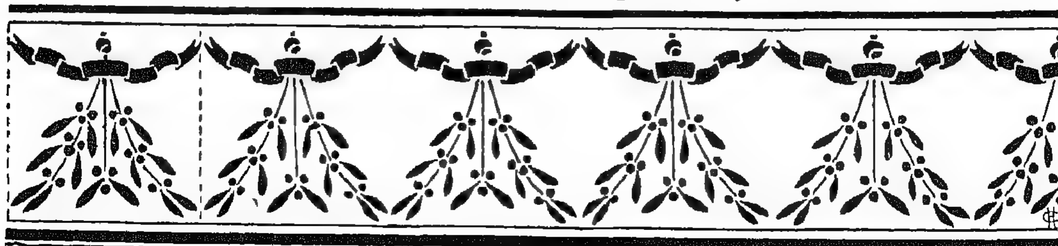
This combination of processes and stitches is generally known as "construction"; it must be emphasized that, whenever possible, any decoration should also be constructive, but not all construction need be decorative by any means If children are to be taught to make serviceable, artistic and suitable garments and articles for the home, they must be helped to realise early in their school life that plain work can be very beautiful with almost a minimum of labour. Therefore, during the first year, much attention must be paid to the choice of materials, colours, needles, threads and tools With regard to these articles, a plan which has been successfully followed by a number of

students during "school practice," is to ask every scholar to bring a medium-sized tin box (or to provide tin boxes) The teacher then gives a talk about needles, pins and scissors, and the necessity for everyone to have them if she is going to sew at all. Sometimes the telling of a story such as *The Tailor of Gloucester** will give additional interest When the children produce their boxes, the teacher gives each child two or three crewel needles, about numbers 5 or 6 at first, stuck into a small piece of woollen material (which need not be new), and about a dozen pins and a marker for measuring widths. If possible, the scholars should bring and keep in their boxes their own thimbles, and later on their own tape measures. A fairly large label with the name of the scholar clearly written upon it should be stuck on the lid of each box, and this, together with a clean linen, or crash, or unbleached calico bag in which to wrap the work, completes the outfit with the exception of scissors These must be kept in a separate box, and are always a part of the school stock A pair of scissors which will *cut* should be available for the use of every child There is nothing which gives a greater feeling of frustration to a child than to have to wait for scissors until three or four other children have used them, and then to find, when at last they arrive, that they will not cut her material or her cotton

This system of giving a small outfit of this kind to each child will assist the organisation of work They take much less time to give out than separate requirements, and the class settles down more quickly in consequence Also the children benefit tremendously by acquiring the sense of self-respect which ownership gives. They should be allowed a small quantity of thread at a time, as this saves much walking about the room and makes for a peaceful and settled atmosphere, as well as being a training in responsibility Odd pieces of material left over from cutting out should be given to every child, for practice purposes. One regular piece bag should also be kept, which will be found useful for all sorts of purposes, as well as thrilling for the children to dip into occasionally.

Organisation.—The time spent on needlework varies according to different types of school, whether rural or urban, and is dependent also upon other factors. The general allowance seems to be two periods of an hour each per week, which gives an average of about twenty-four hours per term, and thus seventy-two hours in the year This is allowing twelve weeks in the term and making no allowance for occasional holidays. It is for the teacher to decide how many of these lessons shall consist of practical work only Demonstrations must be of very short duration for at least two terms, as the child's period of endurance is short, so it is fairly safe to conclude that every lesson should contain some practical work Not every lesson necessarily contains a demonstration, however, for this should be given only when the majority of the scholars require to learn a new process. This depends largely upon the rate of work—probably in the first term three or four demonstrations only might be needed

* *The Tailor of Gloucester*, by Beatrix Potter, published by F Warne & Co



SUGGESTED COURSE OF LESSONS FOR THE FIRST TERM

LESSON 1.

Preparation for work.—The equipment should be given out, while having a short talk about tools A selection of articles which the children may make during the first year's work may be shown, to arouse their interest and observation

LESSON 2.

Pattern-making.—The demonstration of this lesson deals with the making of the pattern of a simple article A piece of paper is placed over or under the object chosen, and the surplus edges are folded under to obtain the correct size The first pattern attempted should always be square in shape, and a clear explanation should be given to the class showing that it measures the same both ways. For practice, the class may be given a rectangular piece of paper measuring about 6 ins by 8 ins, and be shown how to make it square by folding it diagonally, the surplus piece is folded over and is then cut away The teacher then gives out a similar piece of paper to each child,—seeing that the child's name is written upon it before she takes it home—to make a pattern, for example, of a mat for a vase or a plant The paper should be returned the following morning with the surplus edges folded, but not cut The teacher then corrects the pieces by straightening the creases ready for the children to cut.

The details of this lesson together with the demonstration are given on page 277

LESSON 3.

Pattern-making.—Return the corrected pieces of paper, and then show the demonstration pattern, explaining to the children that in the cases where re-folding was necessary, the folds made by the child were not straight Emphasis should be laid upon the difference between straight and crooked. The children should then cut their patterns, but as this will take some time it would be wiser to postpone the cutting out until the following lesson Children who have finished their pattern-making should be encouraged to fetch some thread and pieces from the piece bag and show the teacher any stitches they know.

LESSON 4.

Cutting out.—This is invariably difficult, for the teacher cannot afford to give each child a piece of material very much larger than is actually required, but, on the other hand, if the cutting out is done from the roll or uncut piece of material, two children only can cut out at the same time It is therefore by far the wiser plan to give out separate pieces of material, as it is better to appear to waste a small quantity of material, than to waste an opportunity of allowing the class to start well and in a thoroughly educational and realistic manner. Therefore, give them pieces of Slav crash—which is a soft, but firm material of an extremely pleasing texture, with clearly defined threads—of a size which will allow a small margin round two sides, when the pattern is placed upon it. Demonstrate placing and pinning the pattern upon the material, and then supervise this carefully. Demonstrate cutting, showing that the whole of one edge is cut along first Allow children to cut along one edge close to the pattern Demonstrate cutting the second side, explaining that a corner must *never* be cut round. Supervision should be very careful, particularly where the holding of scissors is concerned.

LESSON 5.

Tacking stitch.—The first stitchery has now to be taught. This consists of tacking stitch The teacher will require one or two well-made finished articles showing simple applications of this stitch. These will be shown to the children as an introductory measure, to awaken their interest and to set a standard of work which they will endeavour to follow. A demonstration specimen will now be required, for this, a piece of hessian of a soft cream colour, or any cream-coloured firm material, may be used. The piece should be cut sufficiently large for the whole class to see; twenty-four inches square to twenty-seven inches square is a good size for easy handling The title of the lesson should be clearly written at the top of the blackboard, and the demonstration piece fixed with pins immediately beneath it. Alternatively, a special non-rigid bar may be used, which is quickly and easily attached to or detached from the blackboard, and from which the working specimen hangs so as to be more efficiently manipulated by the teacher. Such a bar may be purchased very cheaply Rigid frames are not recommended, neither are ready-made demonstration specimens of the type containing neatened holes for the insertion of the needle Both are non-educational and artificial in use With the specimen hanging from the board, the teacher grasps the lower edge in her left hand, thus showing the correct position of hand and material for holding the work. She uses with her right hand a large demonstration needle threaded with lightly twisted rug wool, or other thick wool or knitting cotton, and every individual will be able to see exactly what takes place.

The details of this lesson and demonstration are given on page 280.

LESSON 6

Practice in tacking.—This lesson will be taken up with practical work, the children continuing with their tacking started in the last lesson. Constant supervision and help will be necessary

LESSON 7.

Knitting.—Some of the class may now begin knitting, which is unsuitable as a subject for class demonstration Its processes are intricate and are best described in detail to groups or individuals A few children may have finished the tacking stitches round their mats, and having ascertained that those who are sewing need no further help for the moment, the teacher should provide the knitters, some of whom will probably have knitted at home, with either knitting cotton, or preferably a hard, three-ply wool of good colour, and with fairly coarse steel needles. She herself will require four-ply wool, or rug wool, and wooden needles about half an inch in diameter, and will proceed to show the children the process of casting on. This they may practise for a little while, and those who already know the art may, with advantage, be allowed to help those who do not. Knitting taught in this way, gradually



DOLL DRESSED IN KNITTED OUTFIT

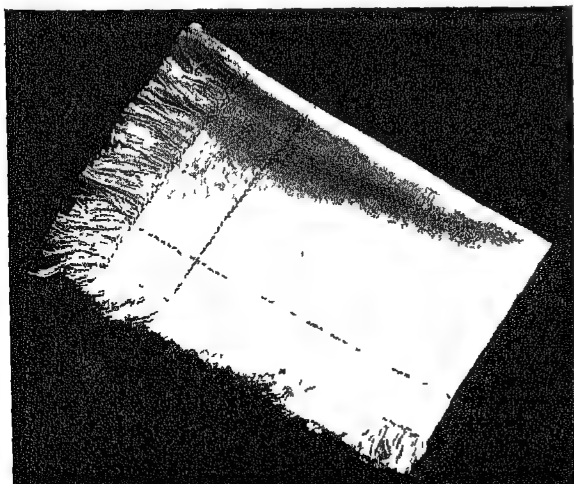
and naturally, is less laborious to both teacher and class, and will be found to take its right place as what is known as "pick-up" work, an exercise which is always at hand to be continued whenever the child requires help in her sewing which the teacher is too busy to give for a while Thus children learn to value every moment, and at the same time the muscles of the hand are being constantly trained. Garter stitch is the stitch taught, and many useful and practical articles may be made, as well as doll's clothes.

LESSON 8.

Practical work.—The teacher continues with her instruction on knitting to groups of children, and supervises the work of knitting and sewing

LESSON 9.

Fringing—The teacher explains the method of drawing out threads at the edges of mats to form a fringe, which both decorates and neatens a raw edge Threads along opposite sides are drawn out to the depth of ½ inch to 1 inch, and then again on the other opposite sides. Practical work should then be given



FRINGED TABLECLOTH DECORATED WITH TACKING STITCH

LESSON 10.

Continuation of the lesson on fringing.

LESSON 11.

Pressing.—As some of the work will now be finished, the teacher with the necessary facilities may show how to press the work. Pressing is taught in order that the finished appearance of the articles may be as perfect as possible, and that the pressing of a piece of work after it is finished may be realised as a necessity

LESSON 12.

Experimental work.—By this time, possibly every child will have finished her work. Some children may have made two or three articles, upon which they wish to make stitches they have learned at home When this is the case they may be encouraged to do so, particularly during these last few lessons. This lesson may be devoted entirely to experimental work, letting the children make whatever they wish, using any odd scraps from the piece bag By this means the teacher discovers children who show some degree of originality, either artistically or purely practically, those who are particularly accurate, and those who will require special attention during the next half term.

LESSON 13.

Making a pattern of a doll's bed cover.—This half term may be devoted to learning the method of making a doll's bed cover, or similar article with fringed ends and sides turned in to form hems of a half-inch in width, held in place by tacking This lesson, therefore, will consist of showing the class how the pattern is made, using a doll's bed as previously suggested. The children make their own patterns, leaving extra material along the sides for hems.

LESSON 14.

Cutting out the bed cover.—Give unbleached calico or Russian linen and let the children attempt to place their own patterns entirely by themselves Before the class begins to work, a few judicious questions may be asked about the placing in order to refresh the children's memories. Then let them cut out their bed covers.

LESSON 15.

Turning down hems.—This lesson is described in detail on page 282

LESSON 16.

Knitting.—Demonstrate to groups the casting off in knitting, while the rest of the class proceeds with practical work

LESSON 17.

Practical work.—Both sewing and knitting

LESSON 18.

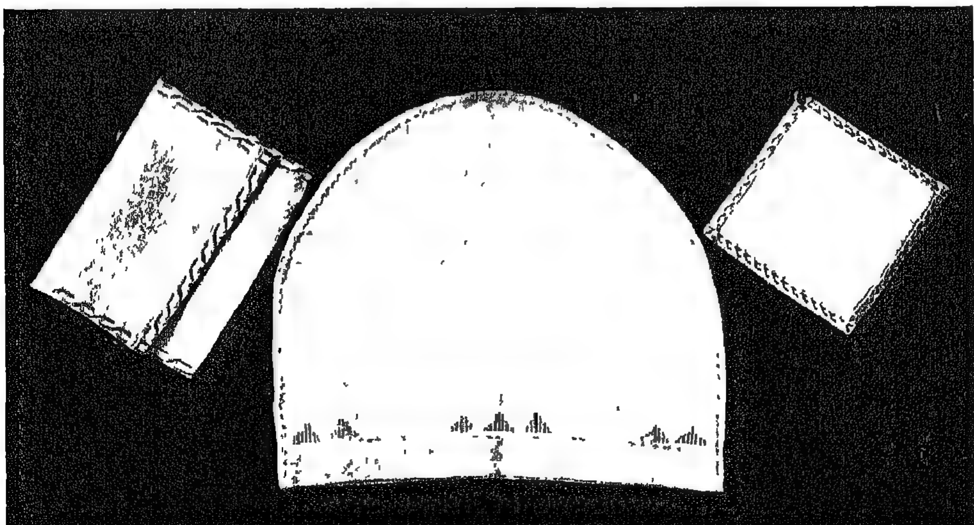
Practical work —Both sewing and knitting

LESSON 19.

Practical work.—By this time some children may have finished the tacking stitch on the hems, and their work may be pressed Further decoration may be suggested by the child herself—her initials in tacking or running, or other forms of decoration, which she should be encouraged to use in order to develop originality in her own way.

LESSON 20.

Experimental bag making.—While some children are finishing their sewing, others will require attention to their knitting As each child finishes her work, give her a fresh piece of material and ask her to make a bag of some kind for any purpose The size of the material depends upon the resources at the teacher's command This plan is largely experimental While it aims at giving the forward or talented workers full play and scope for originality and self-development, as well as great encouragement, it also encourages the slower workers who feel that they are not being harassed and over-urged beyond their powers



CASE, TEA COSY AND TABLE MAT DECORATED WITH RUNNING AND TACKING STITCH

LESSON 21.

Practical work.—Those children who have finished their articles may proceed with experimental work.

LESSON 22.

Practical and experimental work.

LESSON 23.

Finishing work.—All the children should now be finishing off their needlework and knitting.

LESSON 24.

Pressing.—The work must now be pressed ready to be taken home

This completes the term's work, and will be found to be a very satisfactory arrangement, although the number of lessons devoted entirely to practical work may need to be greater or fewer, according to the manner in which the children work, or according to the duration of the lessons

THREE LESSONS IN DETAIL FOR THE FIRST TERM

THREE lessons, the organisation and arrangement of which are set out in detail, are now given in the order in which they will be required The illustrations are of the actual material used for demonstration purposes, whether of paper or stuff Blackboard drawings and previously prepared diagrams are not required for young children's work

MAKING THE PATTERN OF A DOLL'S TABLECLOTH

(Details and Demonstration of Lesson 2.)

PREPARATION

Previous knowledge—Paper tearing and cutting.

Aim—The aim of this lesson is to teach the following points—the necessity for a pattern to be cut to the shape of the object for which it is required, to be of a suitable size and to be related in size to the object, the meaning of length and width; a simple method of making a pattern square in shape, training in observation and memory.

Teacher's requirements—A small square table of convenient size. A doll's house table with a finished cloth made of Slav crash, with frayed edges, and decorated across each side about two inches from the edges with two rows of even tacking stitches, each stitch being about ¼ inch in length A finished paper pattern of the doll's tablecloth A piece of plain cream or white paper, rectangular in shape, about 8 ins wider and 12 ins longer than the table to be used for the demonstration. A blackboard, bright red and white chalk, and three drawing or push pins

Children's requirements—Each child will require a rectangular piece of paper, 10 ins by 8 ins., with which to make a pattern to fit the doll's house table, which measures 6 ins by 6 ins, the finished cloth to measure 8 ins by 8 ins Each child will also be given a piece of paper measuring approximately 12 ins. by 16 ins from which to make a pattern to fit some object for which they wish to make a square cover or mat.

INTRODUCTION

Begin the lesson by showing the children the doll's table without the cloth, and ask them what they have seen laid upon tables. Place the little cloth upon the table, making certain that every child sees it Explain the meaning of a pattern, and question the class in order to discover whether the children have watched mothers or sisters making garments, and whether paper patterns were used. If any have an idea of this, ask them to explain to everyone why patterns are required. One or two of the more observant children are certain to know this, but their explanations will require elaboration by the teacher to the class. Explain that paper patterns are made to fit objects which may be many sorts of shapes; and that it is an easier matter to make a pattern in paper and then to place it on stuff and cut round it, than to cut out the shape straight away in stuff Paper is stiffer than stuff, and stays where it is placed upon the object, while it is folded into a pattern of the required shape Show the class the small pattern placed over the doll's table, and then on the cloth. Finally, show the cloth upon the table, thus establishing relation between pattern, cloth and table, and then tell the class that they are now to be shown how to make the pattern of a tablecloth.

PRESENTATION

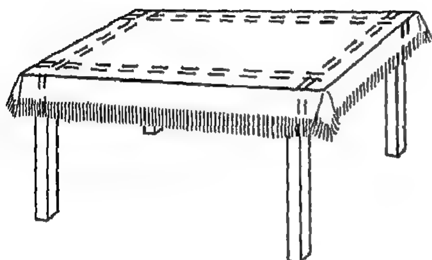
Bring forward the table to be used for demonstration purposes, explaining that the larger table is used so that everyone can see what is being done Show the large piece of paper to be used for a pattern, and ask the children what difference in shape they can see between the table-top and the paper,—the table is square, the paper oblong. Place the paper over the table so that the amount which hangs over the edge is the same on three sides Question the class again in order that they may observe the different appearance of the longer side. Then tell them that because this appearance is ugly, as everyone can see, the pattern must be made shorter on that side

Let the children examine their own papers, and then instruct each child to place her piece of paper on the desk in front of her with the longer side running from the pencil rail (or inkwell, or any other convenient point) to her body. Pin the demonstration piece upon the blackboard in a similar position (having first written up the title of the lesson). Draw attention to the position of the demonstration piece, then supervise the children's placing of their papers It is important to give definite and clear instructions regarding the placing of papers for patterns upon the desks, and to see that the teacher's demonstration piece is placed in exactly the same position. Supervision of this should be carefully, though quickly, carried out.

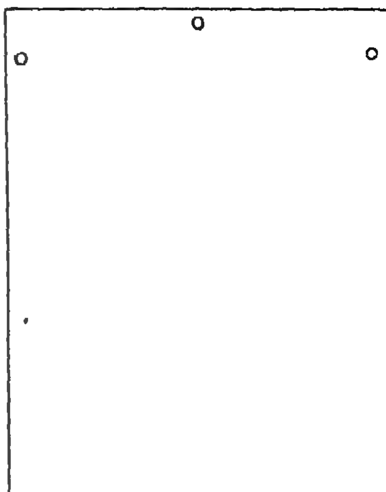
Ask the children to hold up their left hands. Then tell them to take up with the other hand the corner of the paper nearest to it, and to fold the paper so that the edge nearest the body touches the edge nearest to the left hand Show on the board how this is done, crease firmly, and ask the class to do the same. Supervision is necessary here, and will take a little time Show on the board that if the piece which is jutting out beyond the double part is folded over, and the first crease unfolded and flattened, the result is a square piece of paper.

An alternative to so much explanation is to number the sides 1, 2, 3, 4, or A, B, C, D,—this appears to be less confusing for the teacher, but actually the class is prevented from some independent thought by this method.

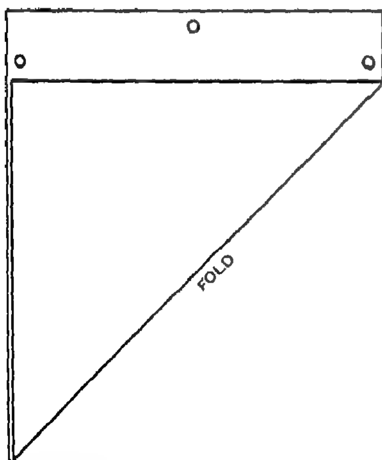
Place what has now become the square pattern on to the demonstration table, and the small pattern on the doll's table in order to show that the larger pattern now fits the table. Pin the demonstration piece on the board and instruct the class how to fold over the surplus piece at the top to make the square Supervise the work of the children and help any who find it difficult.



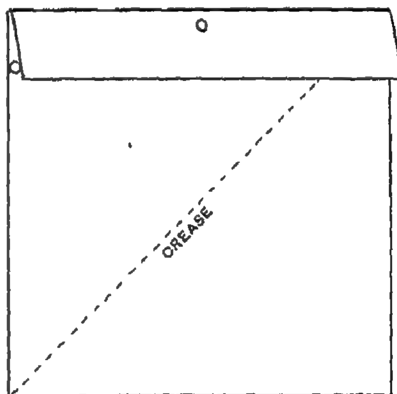
CLOTH ON TABLE



DEMONSTRATION PAPER 28" X 24"



FOLDING PAPER TO MAKE A SQUARE



SURPLUS PIECE FOLDED DOWN

Making the Pattern of a Doll's Tablecloth

APPLICATION

When every child has the pattern correctly placed and folded, ask the class to name any square flat objects of their own, from which they would like to make a pattern Let them name several objects, and write the names upon the board as suggestions for the class Give out the pieces of paper which are to be taken home, taking care that each piece has the child's name written clearly upon it Tell them that everyone is going to make an article to fit one of the objects named upon the board, or to fit some objects in use in their own homes They are each to take a paper home and try to make a pattern of whatever they like, and bring their papers back the following morning

Some of the attempts will be very rough indeed, and these must be straightened up by the teacher Then, if it is expedient to do so, she will calculate the amount of material required by each child, and cut for each a piece of material slightly larger than her pattern.

Blackboard Notes.—Suggestions for articles for which square patterns may be made —

Table centre or mat
Handkerchief
Dressing-table covers and mats.
Tablecloth for doll's house.
Doll's house blinds

TACKING STITCH

(Details and Demonstration of Lesson 5.)

PREPARATION

Previous knowledge.—Large stitchery in wool, raffia, etc.

Aim.—The aim of this lesson is to teach the following points.—the correct position of holding the needle and thread and the material when making stitches, how to make simple measurements, training in accuracy and observation

Teacher's requirements.—The doll's table-cloth on the doll's table. The demonstration table, and a demonstration specimen of cream or soft-hued hessian or similar material, previously described, with un-neatened edges, about 24 ins square A marker for measuring distances from the raw edges to the tacking stitches, this marker should be about 7 ins by 3 ins in size, one end being coloured blue for a distance of 3 ins A demonstration needle Syrian rug wool, red or orange A black-board, and drawing or push pins, with a suspension bar if desired Ordinary pins

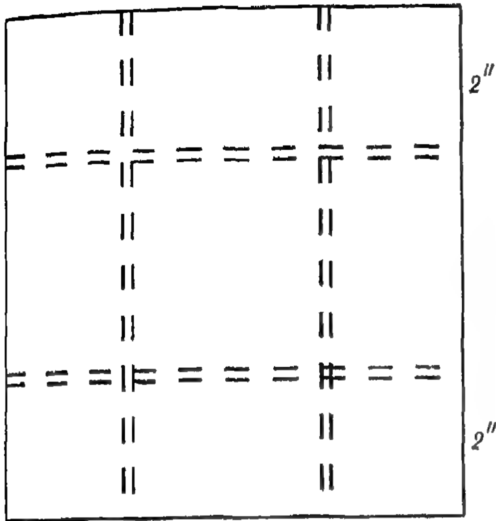
Children's requirements.—Their articles already cut out, crewel needles (size 5), *coton à broder* or Star Sylko, fine wool, etc Markers, 4 ins long and 1 in wide, with one end coloured blue for a distance of 2 ins, pins and thimbles

INTRODUCTION

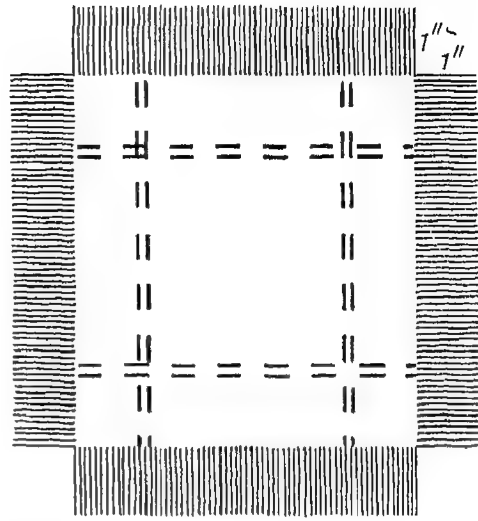
This should be very brief, as the children will be anxious to start sewing. Ask a few questions to draw the children's attention to the stitches. Show the finished cloth and tell the class that the purpose of the stitches is to make the cloth look less plain and to decorate it at the edges.

PRESENTATION

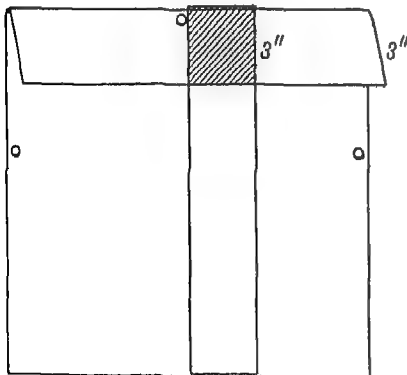
Write the title of the lesson on the black-board Pin up the demonstration piece with three pins, one in the centre of the top edge so as to be easily removable, and one at each side of the piece halfway down Show the demonstration marker, and draw the attention of the children towards their own markers, pointing out the coloured portion at the top of each Explain that the teacher's marker and the cloth on the board are both larger than those of the children, in order that they may see clearly Tell them that they are going to make a straight line of stitches, using the marker for measuring.

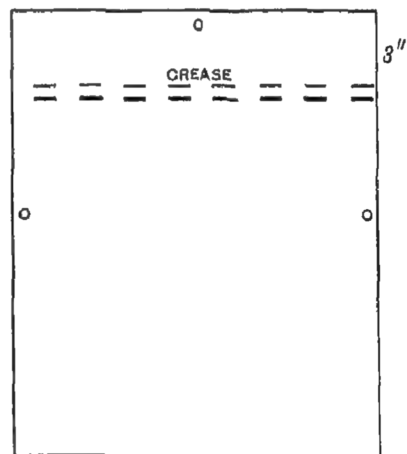


Tacking stitch border



Doll's Table-cloth





TACKING STITCH

Place the marker vertically with the blue end uppermost touching the top raw edge of the cloth on the right-hand side. Supervise to ensure that every child's marker is placed in the correct position. Then move the marker along towards the left hand and put a pin exactly in line with the edge of the blue portion. Supervise this step in the children's work Continue to move the marker along to the left, putting in one or two pins, until the left-hand edge is reached. Supervise the children's efforts, giving help where necessary.

Tell the children to take away the marker and crease the cloth firmly right along the line marked by the pins Show this step on the board, removing the top pin and replacing it in the double thickness as the crease is made Supervise the children's work, and wait until everyone has finished before demonstrating the next step.

Every child must now thread her needle. The specimen must be removed from the blackboard—and the method of holding the work should be shown as follows:—hold the cloth in the left hand, over the two first fingers, with the larger piece of cloth falling into the hand See that the children are also holding their work correctly. Put the needle into the crease and pull it through, leaving a short end of thread only. Show this on the demonstration piece and then supervise the children's efforts. Work the needle along a little way on the under side and bring it out to the top side, thus making a stitch on the under side Continue to make stitches in this way, so that the stitches and spaces are equal in length as far as possible Constant supervision and help will be necessary.

After one row of tacking has been worked another is made immediately beneath it Then the opposite side is worked and the third and fourth sides.

APPLICATION

As the class has had very little, if any, previous experience of stitching, the question of application may be left till a later lesson, probably until after the mats are finished.

TURNING IN A RAW EDGE TO FORM A HEM TO BE HELD IN PLACE BY TACKING STITCHES

(Details and Demonstration of Lesson 15.)

PREPARATION

Previous knowledge.—Tacking stitch used as a simple border, and fringing edges

Aim.—The aim of this lesson is to teach the following points:—a method of neatening a raw edge by means of a hem, and a decorative stitch to hold it in place, training in measurement, accuracy and observation, and dexterity in handling

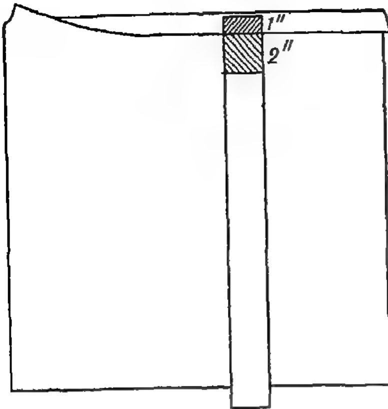
Teacher's requirements.—A finished bed cover on a doll's bed A demonstration piece, rectangular in shape, about 27 ins by 24 ins. in size Demonstration needle and wool. Marker, 7 ins by 3 ins as before, but marked in two colours, red and blue, to represent widths of ¼ inch and ½ inch.

Children's requirements.—The articles they are making, *coton à broder*, crewel needles (size 6), pins, thimbles, and markers coloured similarly to the teacher's marker.

INTRODUCTION

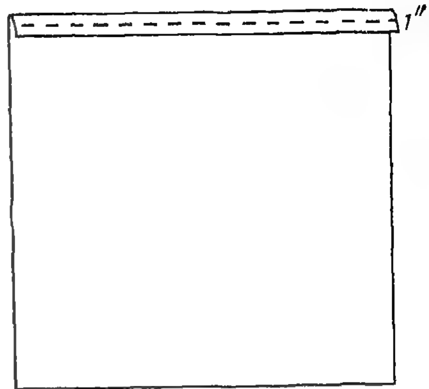
Question the children in order to remind them of what has previously been done, show the finished cover and other articles and ask them to point out any differences between what is being shown and what they have all made They will notice that in the finished cover the sides are not frayed but are turned in Explain how this makes the edges stronger and neater, so that the articles will last longer than if they were frayed all round Therefore the children will now learn how to do this.

TURNING A HALF-INCH HEM



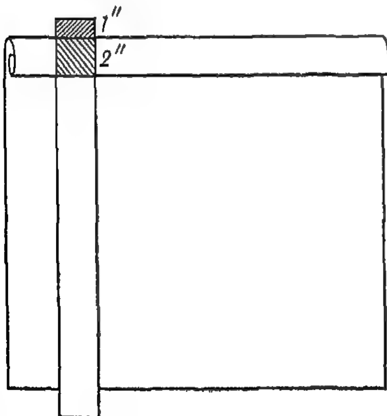
CREASING FIRST TURNING WITH MARKER

TURNING A HALF-INCH HEM

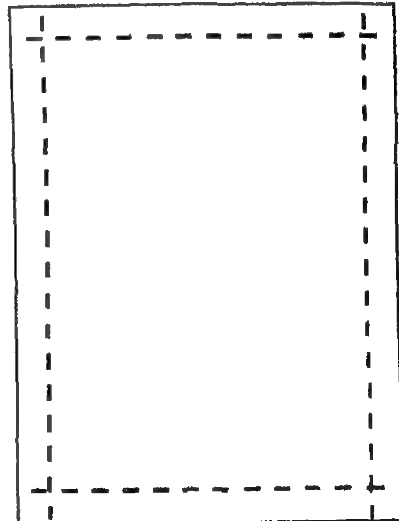


FIRST TURNING TACKED DOWN

TURNING A HALF-INCH HEM



CREASING SECOND TURNING



FINISHED BEDCOVER

Turning in a Raw Edge to Form a Hem to be Held in Place by Tacking Stitches

PRESENTATION

Write the title of the lesson on the board. Pin up the specimen piece, placing it so that the length is across the board Ask the children to place theirs in a similar position on their desks, and supervise this carefully. Place the marker vertically against the top right-hand corner of the demonstration piece and turn down the raw edge at the width of the red part of the marker Pin this corner down, and continue to do this all the way along, placing the pins in an upright position and working from the right hand towards the left hand Supervise the work of the class. Demonstrate the turning over of the second side, so as to hide the raw edge, in exactly the same way Draw out the pins from the first stage, and replace them through all the hem thicknesses Crease the fold firmly. Supervise this before the class commences tacking Revise tacking, by inviting a child to come forward and show the class where it has to be worked After this show on the demonstration piece a few properly proportioned stitches.

APPLICATION

Question the class to discover whether they have any further suggestions for using either hems or tacking stitches, and if there are any other places where either could be used on the articles which they are making

SUGGESTED COURSE OF LESSONS FOR THE SECOND TERM

SCOPE OF THE TERM'S WORK

THIS term should be mainly devoted to revision, and to further practice in pattern-making by the children's own efforts and according to their own ideas The children continue, however, to learn further processes and stitches, using somewhat finer material and thread. They should learn to use tacking cotton for tacking, which will take its proper place in sewing, whenever it is not used for decorative purposes Knitting may be continued as in the first term

The article made during this term may be a bag or a case, made from a square mat with its sides neatened by ½ inch hems held in place with running It is folded in half, or into three and joined by running together along the edges Decoration is supplied by running stitch as the child desires

LESSON 1.

Making patterns.—No demonstration is required for this lesson, but finished articles should be shown

LESSON 2.

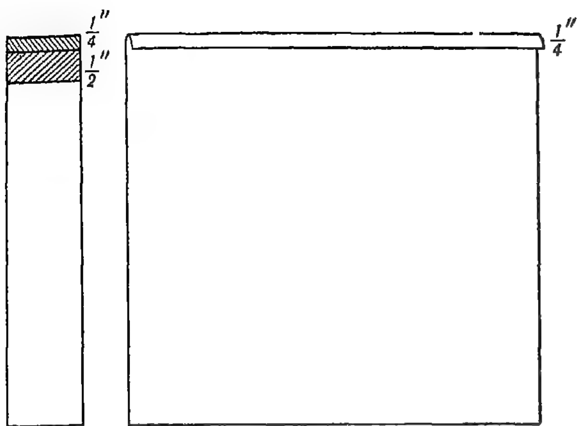
Cutting out.—This is revision work, and supervision should be given, especially where pinning is concerned

LESSON 3.

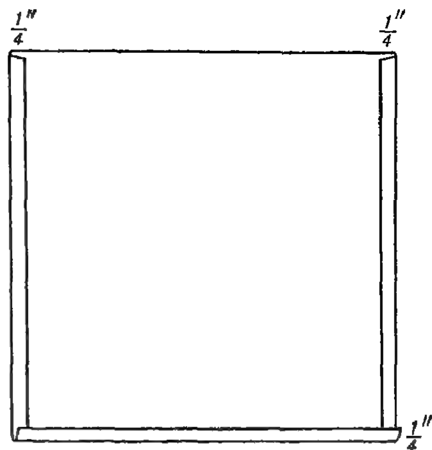
Cutting out.—The process of cutting out is continued, and knitting may be commenced with the more forward children.

LESSON 4.

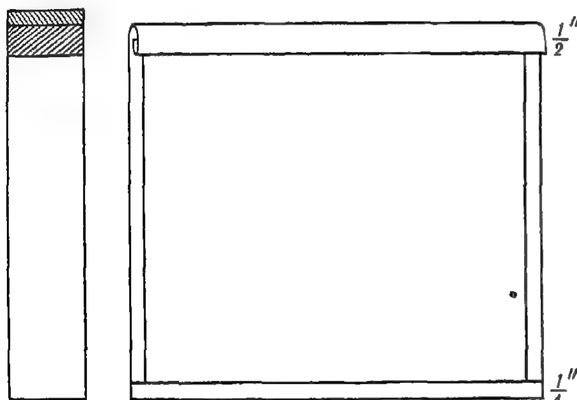
Cutting out.—During this lesson even the slowest workers should complete their cutting out



First turning 1"/4



Order of turning sides



Second turning 1"/2

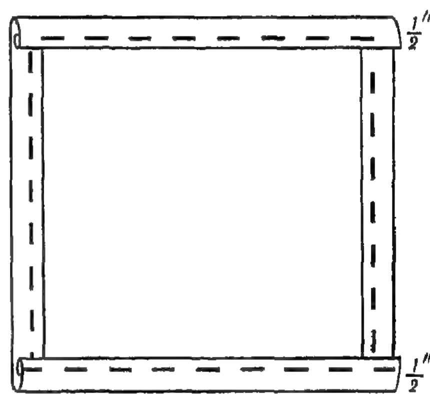
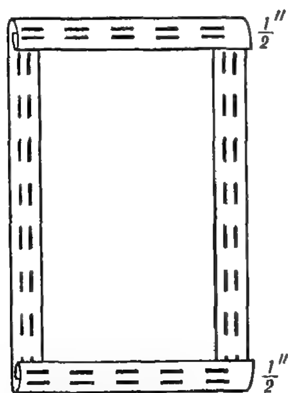
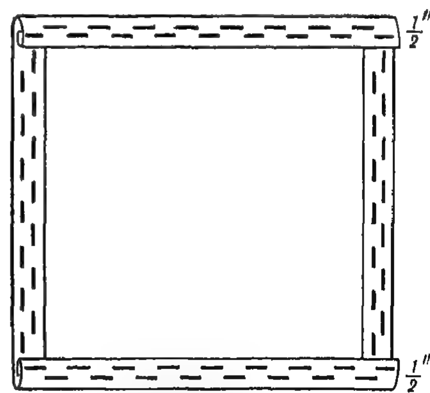


Table-cloth



Tray cloth



Bed cover

TURNING IN A RAW EDGE TO FORM A HEM TO BE HELD IN PLACE BY TACKING STITCHES

LESSON 5.

Turning down hems—This is a revision of the work done in the first term Markers are used as before for measuring, but tacking cotton is used for tacking the hems, which are turned down in pairs of sides Special attention must be given to the arrangement of corners.

LESSON 6.

Turning down hems.—This is a continuation of the previous lesson When two sides have been tacked, running stitch may be taught.

LESSON 7.

Running stitch.—For the demonstration prepare as for tacking stitch, using rug wool, or four-ply red or black wool for showing the running stitch, and finer wool in a contrasting colour for tacking. Special attention must now be drawn to ways of fastening on and off at the ends of each side, also to the fact that the stitches must show equally and clearly on the front and the back of the hem, and that their position should be just above the inner fold of the hem For this reason, the finished articles should always be in evidence, so that the class may be able to look at them from time to time.

LESSON 8.

Practical work.

LESSON 9.

Practical work.

LESSON 10.

Folding bag.—Some children will now be waiting to be shown how to fold their mats, to make them into handkerchief cases or other bags Let them observe the finished articles, and then fold the paper pattern



HANDKERCHIEF CASE DECORATED WITH RUNNING STITCH

similarly for themselves. If their folding is correct the children may fold their mats, making the fold, which composes the case, equal in length to the marker or to the uncoloured section of it, according to the width required The double part of the bag should be pinned securely and then joined by running the two edge folds together.

LESSON 11.

Practical work.—A few individuals may complete their cases, and may be allowed to make a cord from strands of *coton à broder* twisted together, which may be sewn to the centre of the flap, and will tie round it to secure its contents,—handkerchiefs, pencils, combs, etc.

LESSON 12.

Pressing.—In this lesson the work should be pressed and finished off. When pressing is done, the garments should not be damped if they are to be put away for a period, as they will develop mould.

SUGGESTED COURSE OF LESSONS FOR THE THIRD TERM

SCOPE OF THE TERM'S WORK

At this stage in the year most children should have gained a certain facility in making a simple flat pattern, (the quicker, keener and more intelligent workers will have completed twice the number of articles suggested), in manipulating material and tools and in the working of flat stitches

Oversewing (not to be confused with overcasting, which is used only for neatening inside raw edges of garments and need not be used in the junior school) is a stitch which is used very little at present, except for occasional short joinings of selvedge edges, and in sewing on tapes and other quite small pieces of neatening Nevertheless, it is a very suitable and artistic stitch to use for the decorative joining of previously neatened edges of articles made of fairly coarse materials Also the practice of this somewhat difficult stitch gives distinct advance in manipulation The working of oversewing demands a new way of holding the work and of inserting the needle, of fastening on and off, and joining the thread, and it has an entirely different appearance from the flat stitches hitherto made.

There is need now to emphasize the difference between the two sides of a material; although the contrast between the right and wrong sides is never very evident to a child, (unless there is a distinct difference in colour or texture), particularly when materials such as casement cloth are in use. Differentiation, therefore, can be made by using the terms inside and outside for such articles as bags, and this point must be made clear in connection with the turning of hems A good general rule to follow is that hems may be turned on to the right, or outer side of the work, only when they are to be held in place by decorative stitchery. This seems to be less misleading, on the whole, than to allow children to turn all hems on to the right side while in the junior school, only to be confronted with a complete reversal of this idea both in their homes and in the senior school As everyone knows, garments in general wear do not as a rule have hems turned on to the outside or right side

The child begins to realise some of the boundless possibilities which now lie before her; the realm of discovery widens, creative power becomes further developed, a dawning sense of beauty is present, and there is a need for new knowledge of stitches, and further applications of those which were first learned for decorative purposes.

The pattern-making will consist of the construction of patterns of the bag, case, or cover type, always to fit some specific object. As the work grows in difficulty, so does the scope for the making of articles become wider. The class may now be divided into groups, about six different articles being suggested to the class as possibilities for the term's work These articles may include the following pin cushions, doll's cushions, work bags, shoe bags, lunch bags, nightdress cases, music covers, book covers Experiments have shown that children are eager at this stage to make a rather larger article and something for their own everyday use.

When the teacher shows a selection of bags and cases, the objects for which they are made should be placed within. This conveys the sense of purposefulness in making them more quickly than giving the clearest explanation of their use.

Before the first lesson, it would be wise to discuss with the children the type of articles to be made during the term, in order to awaken the children's interest They may be asked to see if they have any object at home which requires to be kept in a case or a bag, and if so, to bring the object to school, so that a pattern may first be made.

LESSON 1.

Preparations for work.—The class should produce objects for which cases are to be made The children must be arranged in groups, and patterns must be made Revision of pattern-making is necessary, the teacher explaining and demonstrating that the object to be enclosed in a bag must be entirely covered

LESSON 2

Pattern-making.—When a case or bag is chosen for making, a pattern in one piece only is necessary, this should be folded before being corrected by the teacher. Correction of this kind may either take place at the child's desk, or the children may be permitted to bring both object and pattern to the teacher's table, the rest of the class being occupied with the continuation of the knitting of various articles in garter stitch

To inspect work at her own table gives the teacher more space.

LESSON 3.

Distribution of material.—The teacher gives out pieces of gaily-coloured casement cloth or gingham, which she has already cut into the approximate sizes required The children may begin cutting out.

LESSON 4.

Cutting out.—This is a continuation of the previous lesson,—cutting out bags, and knitting

LESSON 5.

Turning down side hems.—The children now turn down ½ inch hems along the sides of their bags on the inside (or wrong side) holding the hems in place by means of running They should use ordinary tacking cotton for tacking the hems The length of the stitches should not exceed ½ inch, with the same distance between them, a marker should be used for measuring the stitches.

LESSON 6.

Practical work.

LESSON 7.

Turning down end hems.—The children now turn a hem at each end of their pieces of material This hem is 1 inch wide for bags,

le for cases These hems are place, as they may be turned tside (or right side) of the held in place by decorative king stitches in *coton à broder* otton

LESSON 8.

tch borders.—The details of h the demonstration are given

LESSON 9.

ork.

LESSON 10.

Oversewing.—Oversewing is used for joining the sides of the bags. The details and demonstration of this lesson are given on page 292.

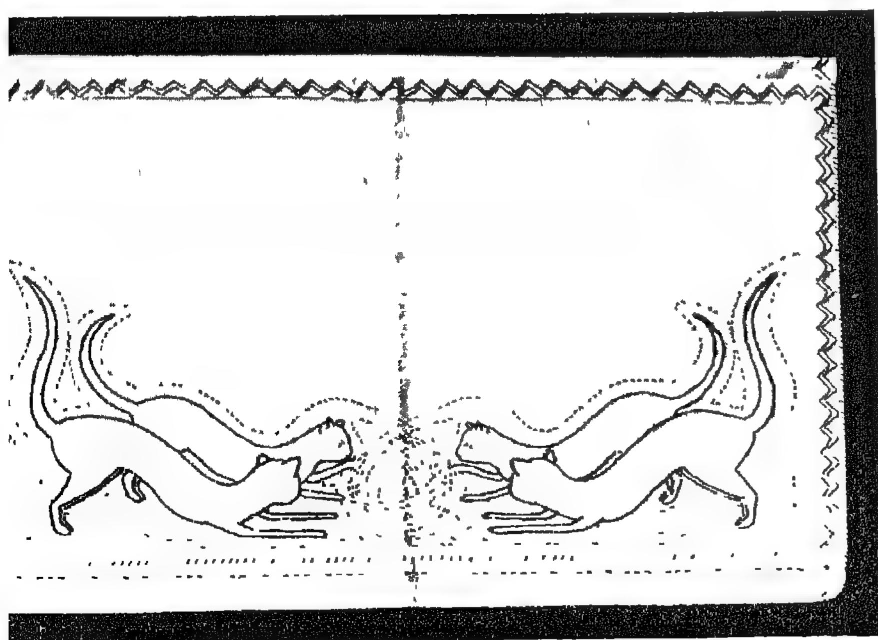
LESSON 11.

Practical work.—The children join the sides of their bags with oversewing

LESSON 12.

Finishing.—The bags are finished and pressed, and the knitting is finished At any time during the term, cords may be made to pass through the tops of the bags

This completes one year's needlework and knitting



OINED BY OVERSEWING AND DECORATED BY RUNNING, TACKING AND STEM STITCH

TWO LESSONS IN DETAIL FOR THE THIRD TERM

THESE two lessons, like the detailed lessons given at the end of the First Term's work, are now given in the order in which they will be required.

SIMPLE BORDERS TO BE WORKED IN TACKING STITCH

(Details and Demonstration of Lesson 8.)

PREPARATION

Previous knowledge.—Single lines of tacking stitch used for holding a narrow hem in place.

Aim.—The aim of this lesson is to teach the following points:—a method of adapting an ordinary, or constructive stitch, to fulfil a purpose which is both constructive and decorative, how to fill a prescribed space with a pattern composed of straight lines; to train powers of adaptability and to foster originality in children.

Teacher's requirements.—Finished articles similar to those being made by the class, the wide hems being held in place by simple tacking stitch borders A large piece of fairly coarse material,—house flannel, or cream hessian,—24 ins long and 18 ins. wide. The eighteen-inch-wide material is suggested because it can be bought in this width and will therefore have a selvedge along two edges, which is convenient for a teaching specimen A demonstration needle and suitable wool in two colours. A demonstration specimen made of similar material, showing three or four borders worked in wool upon it Blackboard and chalk, and a bar from which to suspend the demonstration specimens, which should have two rings sewn on as in the accompanying illustration, so that they may be hung on the bar.

Children's requirements.—The bags which they are making, with hems 1 inch wide tacked in position with ordinary tacking cotton. Markers coloured with ¼ inch and ½ inch bands Needles, and threads in two colours.

INTRODUCTION

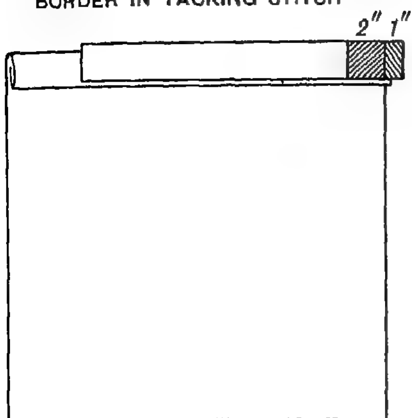
Show the children the finished articles, pointing out the borders of tacking stitch, and tell them that this shows another way of keeping a hem in position, especially a wide hem, which looks plain with only one line of stitching The border is made of two or more rows of tacking, which has to be worked very evenly, and the rows must be exactly the right width apart to suit the width of the hem

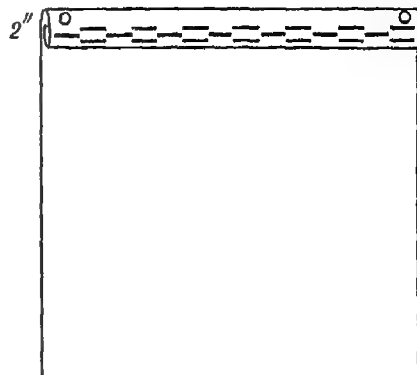
PRESENTATION

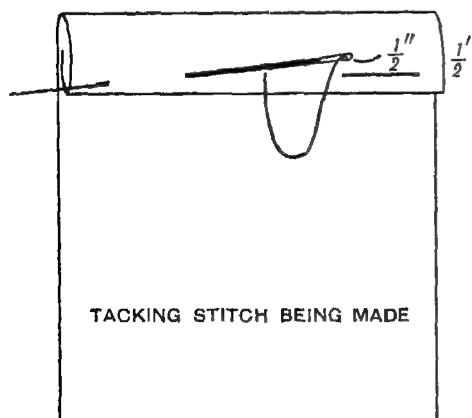
Hang up both the large specimen pieces close to each other, and tell the children that they will be shown how to work two borders only, then they can make up others for themselves Refer to the large specimen sheet of finished borders, and choose the specimen of alternate tacking. There are three rows, the length of both the spaces and the stitches being equal to ¼ inch The width of the border equals ½ inch, thus filling half the width of the hem

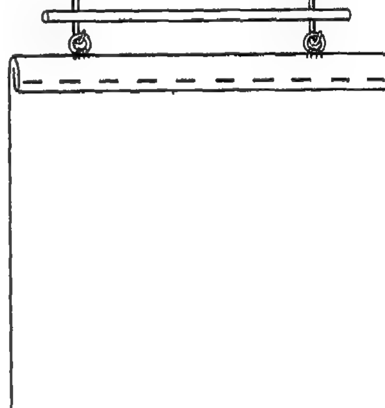
Demonstrate as follows —

First row—Tack the whole way along the hem edge, to hold it down, making the stitches as long as the blue part of the marker Measure by holding the marker and the work together in the left hand so









Simple Borders to be Worked in Tacking Stitch

that the marker comes just above where the stitch is to be made. Then put in the needle at the beginning of the blue piece, between the hem edge and the rest of the work, and tuck the end of thread under the hem edge; make the first stitch by again putting in the needle where the blue part of the marker joins the red. Move the marker along a little way, and bring the needle through from the wrong side to the right side, leaving a space equal to the blue section of the marker. Continue in this way along the length of the hem. The use of the marker may be discarded after the first row has been worked. Finish off the stitch by darning back through the thickness of the hem, bringing the needle out through the fold at the outer edge of the hem. Care must be taken not to cut the material when cutting the thread.

Second row.—Demonstrate to the class the making of stitches of the same length as before, but placed so as to come above the spaces of the first row, with the spaces above the stitches of the first row. The width between the first and second rows should be equal to the width of the red, or top part of the marker.

Third row.—Work the third row of tacking stitch in exactly the same manner as the first row. This demonstration will take less time than appears likely, as practically no explanation will be needed when the working of the stitch is clearly shown.

Show the working of the second border in the same way, using a differently coloured wool. Work along the inner edge of the hem, making a row of stitches equal in length to the red part of the marker, leaving spaces of the same length. Work a second row above the first, the stitches and spaces corresponding exactly, and the width between the rows equal in length to the stitches. Using a thread of contrasting colour, work in the same direction and join the end of one stitch along the top row to the beginning of the next stitch along the lower row. The children may now use odd scraps of material to practise these borders, and to make fresh patterns for themselves.

APPLICATION

Ask the class to suggest names of articles other than bags on which these patterns may be worked.

OVERSEWING

(Details and Demonstration of Lesson 10.)

PREPARATION

Previous knowledge.—Ability to join together two pieces of material by means of running stitch.

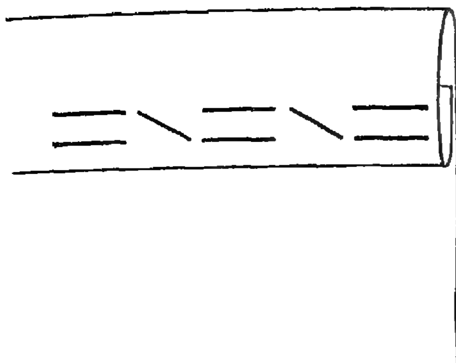
Aim.—The aim of this lesson is to teach a stitch suitable for joining previously neatened edges, to give variety to the work in hand, to give practice in a different form of handling.

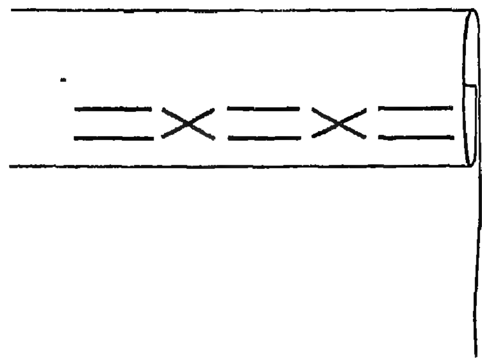
Teacher's requirements.—A working specimen in unbleached calico faced on one side with very thin yellow muslin, tarlatan or butter muslin so that the outer and inner (right and wrong) sides are easily distinguished. When finished, that is, with 2 ins. wide hems down the sides and 4 ins. wide hems at the ends, the size of the demonstration specimen measures 24 ins. by 12 ins., the side hems are turned down on the yellow side and the wider end hems on the cream side to make the finished article. Demonstration needle, and four-ply wool in red and black. Large pins.

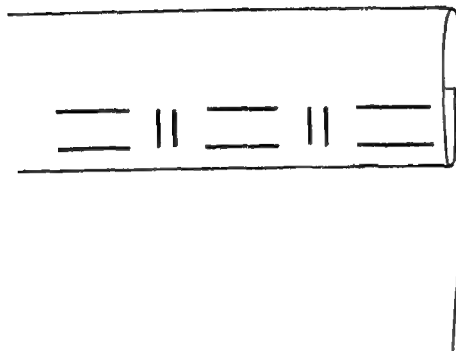
Children's requirements.—The work they have in hand. Odd scraps of material for practice purposes. Their tools.

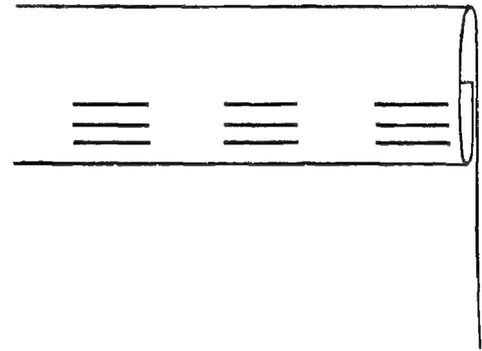
INTRODUCTION

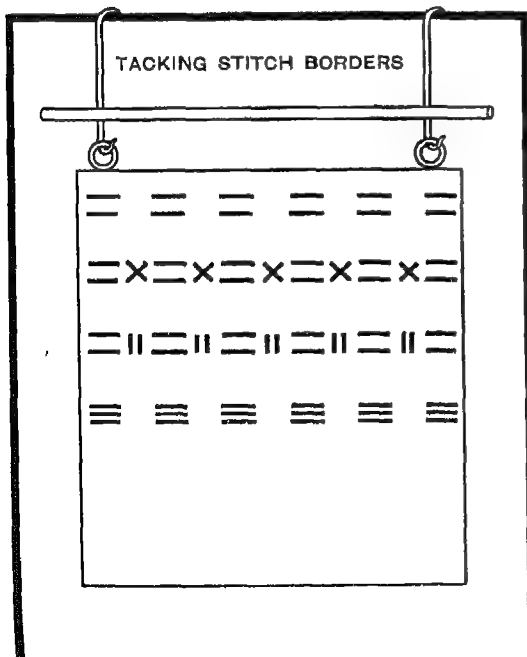
Revise, by questioning, the method previously used to join two pieces of material to make a bag. Show the finished article, and explain that there is another and

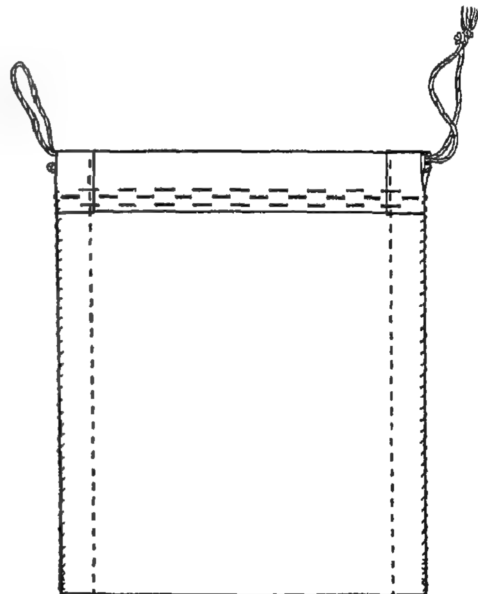












FINISHED BAG

Simple Borders to be Worked in Tacking Stitch

prettier way of joining which everyone will wish to learn.

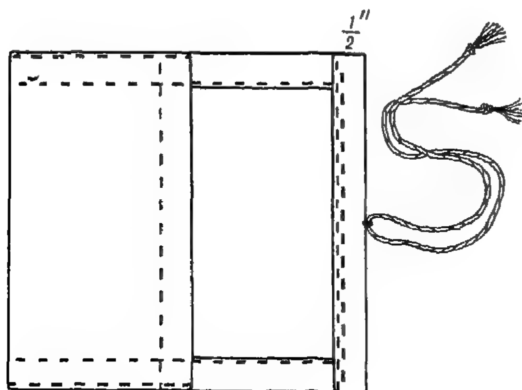
PRESENTATION

Fold the strip in half to form a bag with the edges lying exactly together and the yellow sides facing each other. Pin the work firmly, placing the pins through the hems in the opposite direction to the length, with the points towards the outside edge Pinning in this way puckers the work less and enables tacking to be more evenly done and with less twisting of the thread round the pins The work must be kept flat upon the desk during pinning When every child has the work correctly pinned, tack the hems together at half the width of the hem below the hem folds, using wool of a contrasting colour The tacking should be fastened on with a knot and fastened off with a back stitch Work from the wide hems towards the fold at the bottom of the bag Demonstrate that the work must be held as flat as possible and over two fingers to avoid puckering.

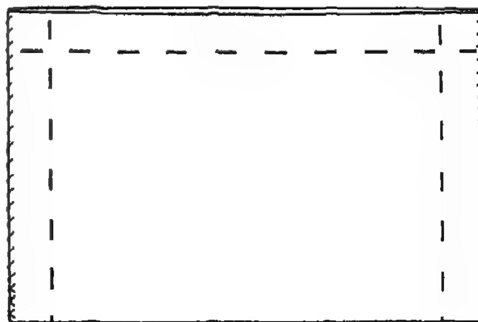
To work the stitch, hold the specimen so that every child can see, *or* suspend the work from a bar attached to the board Put the needle into the work through the back fold at the end of the wide hem, from the left hand towards the right hand, and pull the needle through until a short end of thread is left. Stroke this between the two edges until it lies along them. Then, holding the work between the thumb and first finger of the left hand, put in the needle from the back of the work towards the body, in a perfectly straight direction, just a little way along, at about half the distance between the edge and the tacking (Note that this will be actually about ⅛ inch down) This beginning of the stitch must be well supervised, after which the teacher will demonstrate the working of several stitches Joining the thread, and fastening off may be dealt with later, when the application of this lesson is discussed When the need arises, the joining and fastening off of thread may be shown upon the same demonstration specimen with wool of a contrasting colour

To join the thread, unpick half a stitch so that an end of thread about ½ inch in length lies between the folds Thread the needle with a new piece of thread and complete the other half of the stitch by inserting the needle into the front fold only, drawing the thread through until another end lies between the folds with the first end Continue to work, enclosing the ends between the stitches

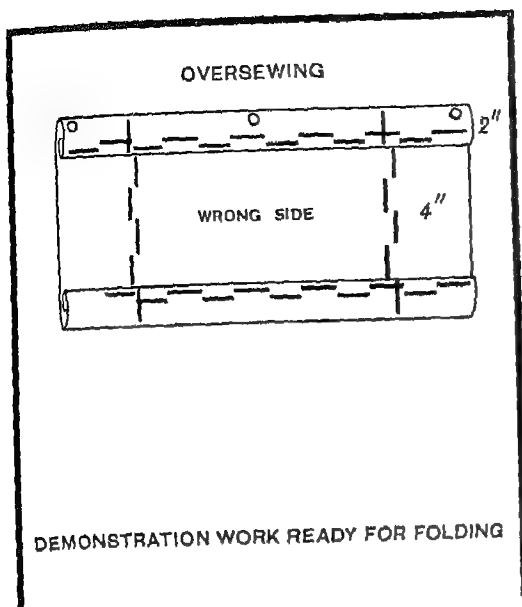
To fasten off, work three or four stitches back over the previous ones, making crosses, then place the needle into a fold a little farther along, and cut off the thread close to the work

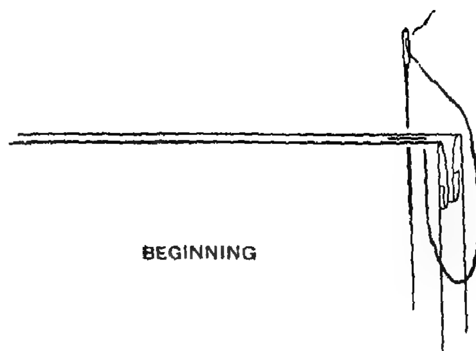


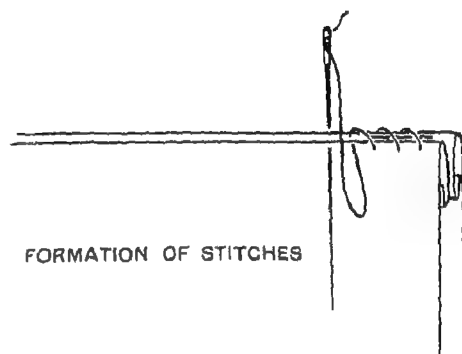
SEWING UP SIDES OF PURSE

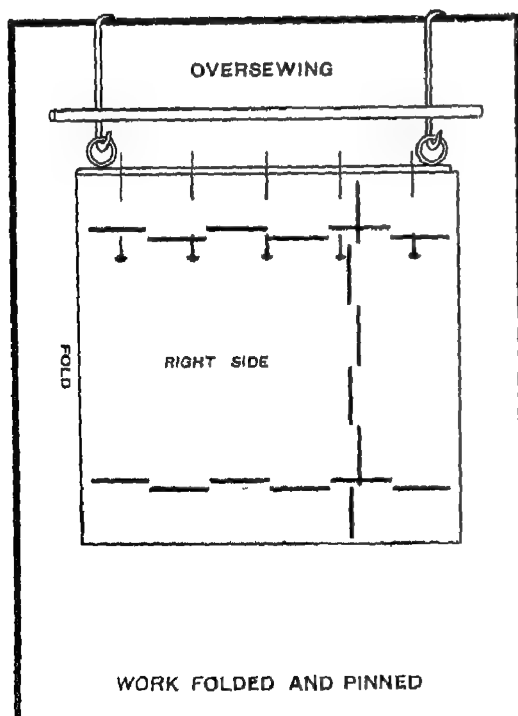


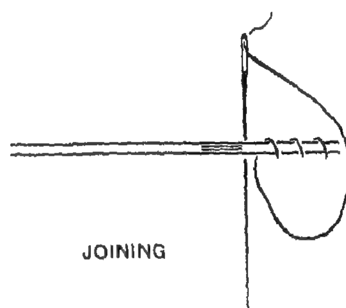
HANDKERCHIEF CASE

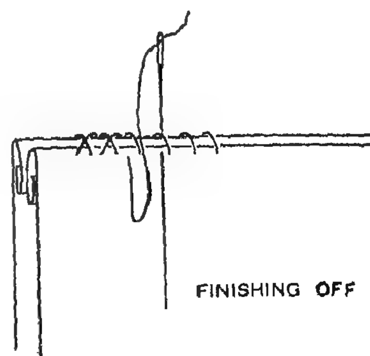

OVERSEWING
2″
WRONG SIDE
4″
DEMONSTRATION WORK READY FOR FOLDING


BEGINNING


FORMATION OF STITCHES


OVERSEWING
FOLD
RIGHT SIDE
WORK FOLDED AND PINNED


JOINING


FINISHING OFF

OVERSEWING

THE TEACHING OF NATURE STUDY IN THE PRIMARY SCHOOL

(There are 24 Class Pictures (Nos. 117–140 in the portfolio) associated with the teaching of Nature Study. They are fully described in the Reference Book)



From the picture by Lord Leighton] [*By permission of the City Art Gallery, Leeds*

THE RETURN OF PERSEPHONE—CLASS PICTURE 158

The rape of Persephone (she was carried off by Pluto, the god of the underworld) is symbolical of agriculture, her abduction representing the sowing of the seed and her return to her mother the growth of the corn. (See the story in Vol VI, page 114)

GENERAL INTRODUCTION TO THE FOUR YEARS' COURSE

THE term Nature Study is apt to have a vague connotation and can be taken to include first ideas of all Natural Sciences, since it may be applied to a method involving direct observation and simple experiment, rather than to subject matter. For the purposes of these articles it may be taken to mean the study of living creatures, leading to the more systematic and logical study of Biology at a later stage.

The use of the word *study* should mean something definite, careful, patient, continuous. It should mean that teacher and children have before their minds definite problems, definite inquiries They should not be satisfied with superficial observations or superficial conclusions. They should develop an attitude of mind which is critical, selective and truthful In our approach to Nature Study with children therefore we should guard particularly against hasty and slipshod observations, records and conclusions We must be content to go slowly, to withhold judgment, to watch patiently again and again for the things we want to find out. We must not falsify observations by detaching creatures from their surroundings, or by taking into account only one aspect of their lives, and we must not be too anxious to assign a use or purpose to everything we find

This points to the first essential condition of Nature Study. Living creatures themselves must be available for the children to watch There should be two aspects of the study, animals and plants should be watched out of doors, and for purposes of more detailed observation and records, in the classroom also In many cases the whole study of a particular creature or problem could be carried on out of doors if the teacher is prepared to take the trouble to organise it, classroom lessons need then only be spent in summarising results, formulating conclusions, and giving further suggestions or directions

There is no reason why all the children in a class should be working at exactly the same material or problem There would be certain introductory lessons, and summaries, but as children's interest varies, here is an opportunity for letting them follow their own lines, decide what to record and on what to concentrate It would be the teacher's business to make sure that, as a result of their individual experience, the children were able to draw simple conclusions from data, and had some knowledge of the course of events in plant and animal life.

The planning of a syllabus should ensure that all the children covered certain ground, and had at the end of their course an acquaintance with certain definite facts and ideas It is a good plan to choose for each term's work one or two definite ideas, and then select material to illustrate them. The same idea may recur in successive years, but be further developed and differently illustrated For instance, in the study of fruits, birds, life histories of insects, there is ample material for choice at different times, all equally valuable for illustrating such ideas as the preparation of plants for continuing the race, the effect of the habit of flight upon the lives of birds, or the means by which insects secure food for their offspring and wider distribution for their species

The first thing for the teacher of Nature Study to do is to learn to rely on her own observations Books help one to observe better, by drawing attention to the significance of habits or structures, or by correcting one's own ideas or conclusions, but their

content cannot be substituted for first-hand knowledge The power of accurate observation grows with practice, and at first it is difficult to interpret what one sees, so that a good reference shelf is essential for all those who are learning to observe living things, whether as teachers or taught. The habit of referring to books to identify creatures, and to add to knowledge, cannot begin too young, and every class needs its reference shelf.

Clear, simple drawings are a great help to observation The best way to investigate structure is to make sketches showing the arrangement and relationship of parts as one works Accurate drawings also serve as valuable records. A concisely labelled drawing will often explain a structure more clearly than a long description

At the same time, the power of clear, accurate description in words is essential and must be cultivated With young children, the training can begin with the labelling of drawings to bring out their meaning, with summarising in a short sentence or two the main points of their morning's study, or with helping to formulate a collective blackboard summary This should gradually develop into fuller, well-arranged descriptions

Collective forms of records may be kept by means of wall charts on which observations are entered, or sheets on which drawings made by different children may be mounted to illustrate different activities or phases of some plant's or animal's life.

The keeping of animals and plants in school will be dealt with in connection with detailed lessons The teacher needs a collection of old saucers, jars, glass plates bound with strips of paper or passe-partout (so that they will not cut fingers), varnished so that they can be washed, small wooden and tin boxes, odd scraps of muslin and gauze, wire and perforated zinc. A low shelf or table (old long school desks are good) is desirable, but a good deal can be done with indoor and outdoor window boxes A garden in which plants and animals can be cherished, and even weeds, snails and caterpillars welcomed and given sanctuary, should be regarded as essential It gives a real background, and reduces the time and effort required for obtaining subjects for one's studies

Any creature that is still a subject of interest and study should be kept, but it is essential to guard against overcrowding Too many things result in loss of interest Keep the "Nature Shelf" or table clear, so that everything can be easily seen. Illustrations, charts, records of any kind that are not in use at the time should be put away It is a great mistake to cover the walls with pictures. Have *only* the things that are related to the studies of the moment, though these, of course, may extend over a long period As far as possible, each child should have his own creature to watch and look after Where it is feasible let the creatures be taken home to be watched

An important factor in Nature Study is the general attitude of the school If the changing seasons are marked by little celebrations, a school spring and autumn table, a May Day garlanding or a harvest festival, perhaps a simple service, the children grow up in an atmosphere of interest in the life around them The reading of nature myths, good nature stories (such as those of Thompson Seton and Douglas English), selections from Fabre's studies of the lives of insects, accounts of animal life in other countries, general knowledge questions and the recognition and description of plants and animals from pictures, would be legitimate as part of the work in English, and a great help in supplying a background for the direct study which is the vital necessity. For Nature Study cannot be confined to certain class room periods; to be of value it must permeate a child's life

A list of useful reference books is provided, but particularly valuable are the publications of the School Nature Study Union, its quarterly journal and the reprints in the form of leaflets, a list of which can be obtained from Miss Rosamond Shore, 13 Burlington Avenue, Kew, Surrey

The B B C pamphlets on Nature Study and Rural Science, which are the records of broadcasts by eminent scientists and naturalists, also give valuable suggestions and illustrations, which could be adapted for individual needs.

The four years' scheme now to be outlined is intended as a guide to choice of material, sequences of ideas and general lines of treatment, rather than to be rigidly followed. The teacher who begins to use it, and who becomes interested, is quite likely to discard some things and add others, to spend much longer on certain parts and to amplify the illustrative material because the children are interested or the locality offers a different choice. The important thing to realise is that there *must* be underlying principles. The notes for the teacher at the beginning of each lesson are intended to suggest what these are, and to give a background of knowledge, not usually for direct use in the lesson, though parts of them may be utilised.

The very attempt to set down these lessons makes them seem more formal than they would be in practice, and the most valuable work may be done, not in these lessons at all, but in the intervening periods of individual watching and recording which will give them substance and meaning.

The lessons that follow have not been treated necessarily in the order in which they will be given, but grouped according to the underlying ideas Since there may need to be interruptions to prepare for later lessons, for instance, to plant bulbs and seeds, the approximate order is indicated below.

FOUR YEARS' COURSE

FIRST YEAR

The course has been planned on the assumption that two half-hour or forty-minute periods would be given each week, but subject matter is not indicated for every period, as time for revision, unexpected additional material bearing on the general idea of the series, showing pictures, reading stories or descriptions, book making and entering data on charts, and extra time for drawing may be needed

Autumn Term.

Preparation made by plants for next year.

Study of Fruits

1 To understand what is meant by a fruit. Snapdragon Plum
2 General knowledge of fruits in a hedge
3 Some winged a[illegible]ent fruits and their disp[illegible]

Planting of seeds

Spring Term.

I *Continuation of above idea.*
Life history of a hyacinth and study of the bulb.

II *Life in water.*
Animal studies. 1, Goldfish: 2, Frog.

III. *Spring awakening.*
1 The wakening of the hedge.
2. Horse chestnut and sycamore seedlings.

Summer Term.

Full life and flowering time.

1. Flowers' dependence upon insects The pollination of flowers as the condition of seed formation Hawthorn, Bluebell, Sycamore. (The last wind-pollinated)
2 Insects' dependence upon plants Life history of a common butterfly and a common moth.

content cannot be substituted for first-hand knowledge. The power of accurate observation grows with practice, and at first it is difficult to interpret what one sees, so that a good reference shelf is essential for all those who are learning to observe living things, whether as teachers or taught. The habit of referring to books to identify creatures, and to add to knowledge, cannot begin too young, and every class needs its reference shelf.

Clear, simple drawings are a great help to observation. The best way to investigate structure is to make sketches showing the arrangement and relationship of parts as one works. Accurate drawings also serve as valuable records. A concisely labelled drawing will often explain a structure more clearly than a long description.

At the same time, the power of clear, accurate description in words is essential and must be cultivated. With young children, the training can begin with the labelling of drawings to bring out their meaning, with summarising in a short sentence or two the main points of their morning's study, or with helping to formulate a collective blackboard summary. This should gradually develop into fuller, well-arranged descriptions.

Collective forms of records may be kept by means of wall charts on which observations are entered, or sheets on which drawings made by different children may be mounted to illustrate different activities or phases of some plant's or animal's life.

The keeping of animals and plants in school will be dealt with in connection with detailed lessons. The teacher needs a collection of old saucers, jars, glass plates bound with strips of paper or passe-partout (so that they will not cut fingers), varnished so that they can be washed, small wooden and tin boxes, odd scraps of muslin and gauze, wire and perforated zinc. A low shelf or table (old long school desks are good) is desirable, but a good deal can be done with indoor and outdoor window boxes. A garden in which plants and animals can be cherished, and even weeds, snails and caterpillars welcomed and given sanctuary, should be regarded as essential. It gives a real background, and reduces the time and effort required for obtaining subjects for one's studies.

Any creature that is still a subject of interest and study should be kept, but it is essential to guard against overcrowding. Too many things result in loss of interest. Keep the "Nature Shelf" or table clear, so that everything can be easily seen. Illustrations, charts, records of any kind that are not in use at the time should be put away. It is a great mistake to cover the walls with pictures. Have *only* the things that are related to the studies of the moment, though these, of course, may extend over a long period. As far as possible, each child should have his own creature to watch and look after. Where it is feasible let the creatures be taken home to be watched.

An important factor in Nature Study is the general attitude of the school. If the changing seasons are marked by little celebrations, a school spring and autumn table, a May Day garlanding or a harvest festival, perhaps a simple service, the children grow up in an atmosphere of interest in the life around them. The reading of nature myths, good nature stories (such as those of Thompson Seton and Douglas English), selections from Fabre's studies of the lives of insects, accounts of animal life in other countries, general knowledge questions and the recognition and description of plants and animals from pictures, would be legitimate as part of the work in English, and a great help in supplying a background for the direct study which is the vital necessity. For Nature Study cannot be confined to certain class room periods, to be of value it must permeate a child's life.

A list of useful reference books is provided, but particularly valuable are the publications of the School Nature Study Union, its quarterly journal and the reprints in the form of leaflets, a list of which can be obtained from Miss Rosamond Shore, 13 Burlington Avenue, Kew, Surrey.

The B B C pamphlets on Nature Study and Rural Science, which are the records of broadcasts by eminent scientists and naturalists, also give valuable suggestions and illustrations, which could be adapted for individual needs

The four years' scheme now to be outlined is intended as a guide to choice of material, sequences of ideas and general lines of treatment, rather than to be rigidly followed. The teacher who begins to use it, and who becomes interested, is quite likely to discard some things and add others, to spend much longer on certain parts and to amplify the illustrative material because the children are interested or the locality offers a different choice The important thing to realise is that there *must* be underlying principles. The notes for the teacher at the beginning of each lesson are intended to suggest what these are, and to give a background of knowledge, not usually for direct use in the lesson, though parts of them may be utilised

The very attempt to set down these lessons makes them seem more formal than they would be in practice, and the most valuable work may be done, not in these lessons at all, but in the intervening periods of individual watching and recording which will give them substance and meaning

The lessons that follow have not been treated necessarily in the order in which they will be given, but grouped according to the underlying ideas. Since there may need to be interruptions to prepare for later lessons, for instance, to plant bulbs and seeds, the approximate order is indicated below

FOUR YEARS' COURSE

FIRST YEAR

The course has been planned on the assumption that two half-hour or forty-minute periods would be given each week, but subject matter is not indicated for every period, as time for revision, unexpected additional material bearing on the general idea of the series, showing pictures, reading stories or descriptions, book making and entering data on charts, and extra time for drawing may be needed

Autumn Term.

Preparation made by plants for next year.

Study of Fruits

1 To understand what is meant by a fruit. Snapdragon. Plum

2 General knowledge of fruits in a hedge

3 Some winged and succulent fruits and their dispersal

Planting of seeds and bulbs

Spring Term.

I. *Continuation of above idea.*

Life history of a hyacinth and study of the bulb

II *Life in water*

Animal studies. 1, Goldfish . 2, Frog.

III *Spring awakening.*

1 The wakening of the hedge

2 Horse chestnut and sycamore seedlings

Summer Term.

Full life and flowering time.

1 Flowers' dependence upon insects The pollination of flowers as the condition of seed formation Hawthorn, Bluebell, Sycamore (The last wind-pollinated)

2 Insects' dependence upon plants. Life history of a common butterfly and a common moth

SECOND YEAR

Each year, continuation of any interests started in first year, incidentally, e.g watching for chrysalises, formation of fruits from flowers on trees, the gradual slowing down of activity in the hedge, both of plants and insects, the late flowers Tree seedlings Collecting and naming fruits

Autumn Term.

I *As last year, preparations made by plants for next year.*

Fruits ·

In the hedge: Blackberry, Hips and Haws, Hazel Nuts, either Wild Parsnip or Cow Parsley, Burdock

In the garden Hollyhock, Nasturtium, Apple

Bulbs Daffodil

II. *Hibernation of animals* Study of snails. Chrysalises

Spring Term.

Spring Awakening.

I *Birds which come inland or southward.*

(For lessons on Birds see Vol III.)

II *Animals which winter in the soil:* Earthworms

III Growth of Daffodil
Hazel catkins.
Willow catkins.
Broad Bean, Mustard and Cress, Sunflower seeds, Lesser Celandine, Wood Anemone

Summer Term.

I *Further flower study* · Buttercup, Poppy, Wild Rose, White Dead Nettle, Sweet Pea, Dandelion, Groundsel, Thistle, Goatsbeard, chiefly for their fruits

II *Climbing plants* · Sweet Pea, Runner Bean, Wild Rose

III. *Continuous study of snails* Life history Slugs

IV. *Life in water* Pond Snails, Pond insects, e g Water Beetle, Dragonfly, Caddis Worm.

THIRD YEAR

Autumn Term.

I *Preparations for continuing life of race or individual plants, other than by seeds.*

Study of a whole plant, whose life history has been watched the Wallflower.

Study of surface and underground stems Violet, Cinquefoil, Bistort

Food storage Potato. Crocus corms

Root tubers of Celandine and Wood Anemone

Non-flowering plants. Toadstools and Puffballs

II *Resident winter birds.* How they obtain food

Soft-billed Blackbird, Thrush, Starling, Robin

Hard-billed. Finches and Yellowhammer

Autumn and Early Spring Term.

III Definite gardening should begin. The children would dig and prepare their own beds, and be shown how to trim edges and divide clumps of perennials

Life of the soil Cockchafer and other beetle "grubs" and pupae Millipedes and centipedes. Woodlice. Simple soil experiments

IV. *Non-flowering plants* Mosses Lichens Moulds

V Simple experiments with seedlings to find out the best conditions for their growth

VI Life history of Crocus.

Summer Term.

Pond Life. Recognition and growth of common water plants Water insects, e g "Bloodworm," gnat and other fly larvae Water Spiders Newts

Life in the Garden Certain life histories Underground food storage, e.g. Carrot, Radish

FOURTH YEAR

Autumn Term.

I *Preparation of plants for the winter.* Tree Study Form from the mass of a tree Leaf changes and fall Evergreens Relation to climate and altitude Protection of deciduous trees in winter Recognition of winter buds and interpretation of markings of twig Simple analysis of tree form.

II Spiders—especially the Garden Spider and the House Spider.

Spring Term.

I Opening of buds. Different kinds of bud scales and leaf arrangement

II. Experiments to find out how water is drawn up a plant

Summer Term.

Study of weeds, their root and leaf systems, flowers and fruit.
Study of Woodland and Ditch
The Garden

CHILDREN'S BOOKS

The following books published by Macmillan cover the whole work in Nature Study for a four years' course in the Primary (Junior) School

Look and Find Out. Seven books by W P Westall, F L S , F S A Scot , and Kate Harvey, M Sc

Nature Study Readers Three books by Kate Harvey, M Sc.

Essentials to the Study of Nature and Simple Biology A book for the last year of the Primary School and the first year of the Secondary School, by Kate Harvey, M Sc

The Children's Nature Books Four books each with sixteen coloured plates, by Kate Harvey, M Sc , Mary Daunt and E J S Lay.

Adventures into Nature Parallel books for the "A" and "B" streams in Junior Schools Four volumes each with sixteen coloured plates, by Kate Harvey, M Sc , Mary Daunt and E. J S Lay

Macmillan's Nature Class Pictures A series of sixty-two large coloured plates with a complete Reference Book, by Kate Harvey, M Sc , and E J S Lay

FIRST YEAR'S COURSE OF NATURE STUDY

APPROXIMATE ORDER OF LESSONS

Autumn Term.

September
Snapdragon fruits (2 periods)
The Plum
Hedge fruits—preparation

October
Visit to hedge
Results of visit
Planting of bulbs
Sycamore fruits

November
Ash and Lime fruits (2 periods).
Planting seeds.
Grapes and raisins.

December
Holly.
Mistletoe.

Spring Term.

January
The Goldfish (spread over several periods, group work)
The Hyacinth plant.

February
Sycamore seedlings
The Hyacinth flowers
Horse Chestnut seedlings.

March
The wakening hedge.
Goose Grass seedlings
Frog spawn.
Honeysuckle and Elder buds.

April
Tadpoles and Frogs.

Summer Term.

May
Continue Tadpoles
Hawthorn flowers.
Bluebells
Sycamore flowers

June and July
Life history of Moths and Butterflies
Continued observations of seedlings and flowers, to see subsequent stages of development.
Climbing plants of the hedge

I. SNAPDRAGON FRUITS



POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

THE formation of seeds is one of the chief means of providing for the continuance and wider dispersal of plants. Seeds are resistant resting bodies which are able to lie dormant until the requisite warmth and water supply enable them to sprout, that is, usually throughout the winter (though many small seeds ger-

minate in the autumn in mild conditions) They are borne in the heart of flowers, hence the seed vessel or *ovary* and the pollen-bearing *stamens* are the essential structures of flowers The incipient seeds are called *ovules*. A seed is part of the result of the union of a female cell, or life unit, the *egg cell*, embedded in the ovule, with a male cell lying inside a *pollen grain*

When this union has been effected, the ovule grows into a seed It grows larger, its wall becomes hard and resistant, and it draws in from the parent plant a store of concentrated food (usually rich in protein and starch) upon which the young plant or *embryo* arising from the fertilised egg cell will feed

In addition, changes take place in the ovary wall, which also grows The ripened ovary with the seeds is called the fruit, the ripened ovary wall is called the *pericarp* (peri=around, carp=fruit). The pericarp may become either woody or succulent, remain closed or develop some mechanism for splitting open to shed the seeds Other parts of the flower usually fall away, but they may remain, change their form, and take part in the dispersal of the seeds. For instance, in the Wild Clematis, the style or stalk which separates the stigma from the ovary becomes fringed with fine hairs, forming a plume by which the fruit may be borne away on the wind, while in the Wood Avens, it becomes hooked and can be attached to the coat of animals Sometimes, e g Tormentil, the fruit stalk will bend over so that the fruit is brought close to the ground, or even pressed into it, and the seeds are planted (Plate III). In the study of fruits, stress should be laid on these mechanisms.

THE LESSON

Two half-hour periods.

Aim.—The conception of a fruit as a ripened ovary, containing seeds.

Material.—Sprays of Snapdragon with both flowers and fruits, one between two children. Some fruits cut across to show the seeds.

Introduction.—Remind the children of the Harvest Festival in which we rejoice for "the kindly fruits of the earth" which give us food—grain, apples, plums.

Name some other fruits that ripen earlier in the year

Though fruits may be formed all through the summer, yet we associate them particularly with autumn because the greater number are ripe then.

We eat a great many fruits and seeds, so do the birds; while the squirrels and mice store them for the winter—nuts, acorns, grain We store them, too, but not only to eat We set some aside to plant the seed for next year, so that we shall have new plants and more fruits next autumn. Now this is exactly what the plants themselves do They do not really grow their seeds for us, but for themselves Why do they need them? (To produce new plants next year.) Where do they grow their seeds? (Inside the flower)

Children's aim.—We are going to see how much we can find out about the way seeds grow in the Snapdragon We can see just what happens because it has flowers, unripe seeds and ripe seeds all at the same time

I. First of all, where do you think the ripe seeds are? (In the hard brown cups near the bottom of the stalk) Shake them and see. The black seeds rattle inside, and some are shot out from the two or three holes near the top, just as if you were shaking a little pepper pot These pepper pots are really the fruits, because *a fruit is something in which seeds grow.*

Collect the seeds, ready to plant later.

II. Now look at the unripe fruits, and tell me all you can about them.

(1) They are green, and not so hard as the ripe ones

(2) Those near the top of the stalk are smaller than the lower ones. (They have not grown so large. They are younger)
(3) They have no holes to let out the seeds.
(4) Those which are just opening have three holes, but the older ones have only two. The two lower holes have joined together (Plate II)
(5) The holes are formed by little flaps which curl back
(6) The younger fruits have a long, thin stalk growing out of the top, but this has dried up in the older ones. (Plate II)

These observations are made by the children, but the teacher, by questions and rejection of vague or inaccurate suggestions, should help to formulate them clearly. In this way a standard of accurate description can be attained Note that, while no technical terms are necessary, details of structure can be seen and carefully distinguished

Draw attention to the cut fruits, so that the children can see that there are two compartments with seeds in each The unripe seeds are nearly white, and fill the cavity completely Later, as the fruit dries, they become free and lie loose in the cavity

III. Now we will see where the fruits are formed Can you find out?

Squeeze the throat of one of the flowers and look inside. Can you see the tip of the thin stalk which we noticed at the top of the unripe fruits? It is bent slightly towards you, and lies under the hood of the flower Trace it down. Some of the flowers drop off as you squeeze them, and you can see that the fruit grows down at the bottom, inside the flower So you see the fruit is really part of the flower But we do not call it a fruit until the flower has withered or dropped off While it is enclosed by the flower we call it the *ovary*, and the little unripe seeds the *ovules*.

(Cut some ovaries across so that the children can have an opportunity of seeing the ovules, and leave them on the table to be looked at with a hand lens)

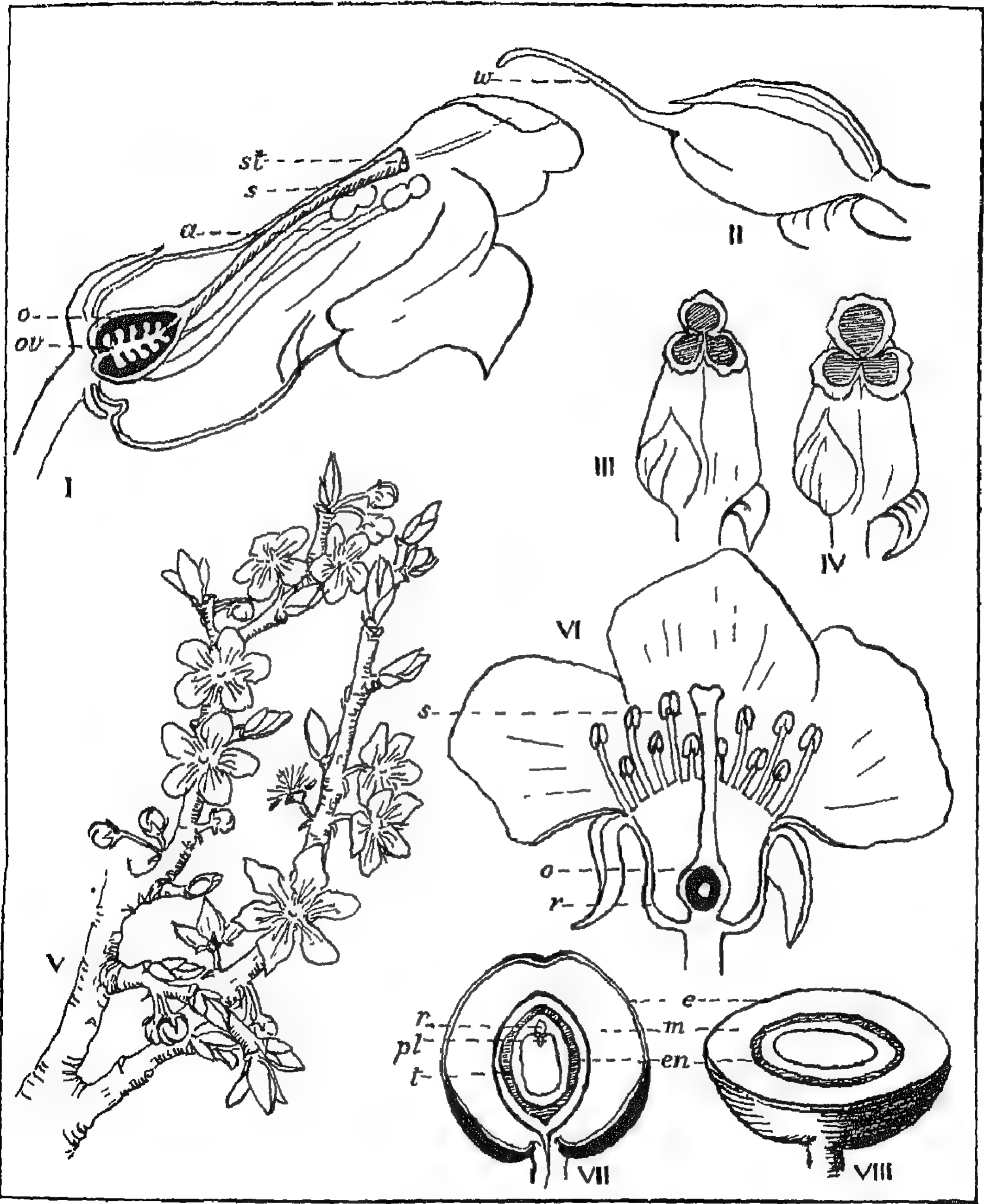
IV. Conclusion.—Now tell me exactly what we mean by a fruit. (Something in which seeds grow Something growing inside a flower.) Reject suggestions which do not apply to *all* fruits or include essential points, e g something we can eat, and build up the definition, writing it on the blackboard "A fruit is the ripened ovary of a flower, containing seeds "

The second half-hour period should be devoted to accurate record making, by means of drawing and concise labelling. Since this will be the beginning of systematic recording, it is a good thing to let the children make special books (one large sheet of drawing paper will fold into two books) with neat brown paper covers tied with coloured raffia or a twisted cord The title can be carefully printed on the cover, Autumn Nature Studies A little time should be given to explaining the need for careful drawings, well spaced and surrounded by a margin (let them look at a well-printed book for proportion of margins) Emphasise the point that every drawing is made *to show something definite*, so that we must choose carefully what we will draw, and then *label it to explain what it shows* We must make a clear, clean outline (no shading) and if the actual object is small, we may make the drawing larger, and then show the true size by a cross. When these ideas have been put before the children, insist always on having this procedure carried out

V. The record.—Ask what drawings we should choose to make, to show the growth of the Snapdragon fruit.

(Rule out the flower with the ovary, as too difficult)

(1) The unripe fruit
(2) The ripening fruit with three holes—a front view
(3) The ripe fruit with two holes



SNAPDRAGON I Vertical section of flower *o*, ovary, *ov*, ovules, *s*, style, *st*, stigma, *a*, stamens II Unripe fruit (side view) *w*, withered style III Ripening fruit (front view) showing the 3 holes by which the seeds escape IV A ripe fruit—the two lower holes merged into one (front view)

WILD PLUM V Flowering branch VI, Vertical section of flower showing where the fruit develops *o*, ovary, *s*, style, *r*, receptacle VII, VIII Longitudinal and transverse sections of fruit *e*, epicarp, *en*, endocarp, *m*, mesocarp, *r*, radicle, *pl*, plumule, *t*, testa

Half a page will be enough space Heading· Growth of Snapdragon fruit Let the children space their drawings and show by a cross the actual size, and then draw the sketch.

Then discuss the labelling of the drawings and let them write what they like beside each to describe it· e g (1) Green unripe fruit; (2) Ripening fruit. Three holes to let seeds out; (3) Ripe fruit Seeds gone By criticism of the books as they are marked you will gradually improve this

VI. Further work.—Other examples of fruits and flowers found simultaneously should be shown to the children, so that the idea of the ripening ovary receives further emphasis, e g Poppy, Viola, White Dead Nettle

A wall sheet can be made Suggest that the children shall bring *one* example of every fruit they can find These can be named and displayed Dry fruits can be pressed and mounted on a sheet of cardboard

WALL SHEET

Autumn Fruits

Date	Fruit	Where found	By whom

Later in the term, the sheet can probably be used as the basis for a lesson on the relation of the means of distribution to the habitat.

II. THE PLUM

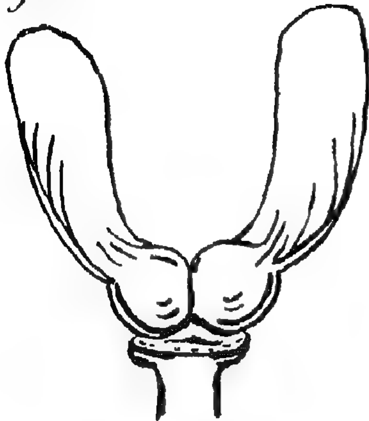


POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

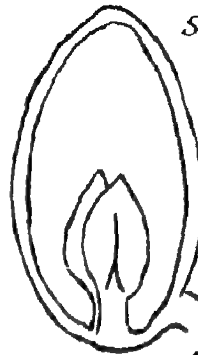
A PLUM is an example of a succulent fruit developed from a *perigynous* flower, that is to say, the ovary is partly above and partly below, and therefore surrounded by the other parts of the flower (Plate I, Diag. 6) The ovary has one cavity and one seed The Sloe is fertilised by pollen from other flowers, that is, cross-fertilised, and provides honey along the edge of the *receptacle*, to which the sepals, petals and stamens are attached Most of the other plums can be self-fertilised as well. The flower is one of the earliest of the fruit blossoms to open, the Blackthorn

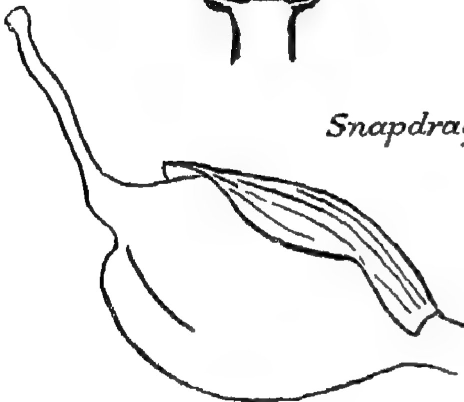
SKETCHES FOR THE BLACKBOARD

PLATE II

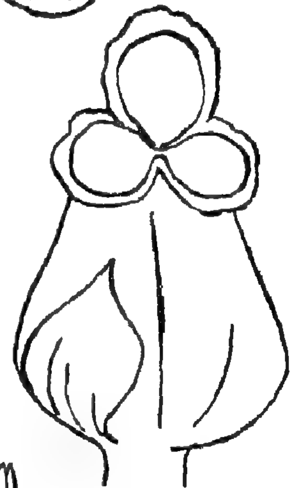


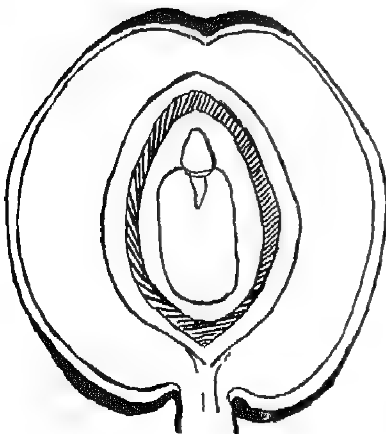














or Sloe often appearing in late February or early March. As soon as pollination is effected, the petals are scattered and the stamens begin to shrivel, but the development of the fruit is a slow process, so that it is not ripe till August or later, according to the variety. The Sloe is the commonest wild plum, but the hard yellow Bullace is still found in many parts of England, and in Cheshire and Cumberland it is common to see Damsons growing in the hedges in a semi-wild condition with very little cultivation The large edible plums have arisen from wild forms by selection and careful attention After fertilisation the ovary grows in size, and the pericarp takes up water from the stream which is always rising up the channels of the tree Sugar and some flavouring substance are formed. The outer skin, called the *epicarp*, remains thin and soft The middle layer or *mesocarp*, forms the sweet, juicy pulp, and the innermost layer of the pericarp becomes woody, forming the hard stone or *endocarp* which protects the kernel or seed inside it from being digested by animals which eat the pulp As the fruit ripens, the epicarp changes colour, from green to the attractive mellow gold, crimson or deep purple-black which announces to the blackbirds, thrushes, starlings and many other birds, that the feast is ready.

The change of colour usually takes place quite rapidly at the last, and soon after the final colour is attained, the fruit drops from the tree, often bursting open in its fall. Wasps and other insects take advantage of the broken fruits Sometimes a sweet, gum-like substance is found exuding from the punctures made by birds For the early stages of ripening, water is necessary, and when full size is reached, the colour and flavour depend upon plenty of sunshine This is true for all succulent fruits. The ripe fruit is protected by a bloom composed of fine rods of wax arranged close together like velvet pile. This throws off rain which might cause the fruit to rot.

Plums belong to the same family as the Rose, the Rosiflorae, but are more closely related to the Cherry and Almond In the Almond, the outer pericarp remains soft, but does not develop a succulent mesocarp and so does not attract birds. The Almond "nut" is the stone containing the seed The Almond, the Plum and their close relations produce a small quantity of prussic acid which gives the characteristic flavour to the seed. A fruit of this type is called a *drupe*

THE LESSON

Aim.—To become familiar with the structure of a large, simple fruit before making a wider study of fruits

Material.—Plums of any kind Sloes or Damsons would be available; sloes are good because they are hedge fruits. Some of the plums should be cut lengthwise and others across, the stone remaining in one half. A supply of stones which can be cracked open Little dishes of water and a box of matches. A picture of a branch of blossom, and a vertical section of one flower showing where the plum grows.

Introduction.—When we looked at the Snapdragon fruits, where did we find they were first formed? (Inside the flower) What part of the flower is the fruit formed from? (The part that contains unripe seeds The ovary) Then do you remember what we mean by a fruit? (A ripened ovary, containing seeds) The Snapdragon had little hard, dry fruits which split open to let out many small seeds. To-day we are going to look at some fruits which are very different.

(Material can be given out at this point or beforehand.)

I. You all know what these fruits are. Now I cannot show you the flowers to see whether they were formed inside, because the flowers were in blossom in March, but I can show you a picture of them. (Diag. of growing flowers and of vertical section.) The little cup (receptacle) has the flower

leaves growing on its edge, and the ovary, which is going to become the fruit, growing in the middle. It is drawn out on top into a little stalk just as it was in the Snapdragon, and it ends in a tiny knob

Look at your fruit and see if you can find any trace of that. (A shrivelled thread in some cases)

II. When this fruit was an ovary inside its flower, it was just a tiny hard green ball. What has happened to it since?

Points required:

(1) It has grown larger Measure with your ruler and see how long and how wide it is.

(2) It is soft.

(3) It is blue-black (or yellow, or red in other plums)

(4) It is covered with a fine white film which rubs off on your finger when you touch it. We call this the bloom Dip your plum into water. What do you notice? (The water runs off) You cannot wet it Now rub some of the bloom off, and try again. Of what use do you think the bloom is? (It prevents the plum from being made wet, and perhaps rotted, by rain)

Here the teacher might hold a lighted match close to a plum, and show that the bloom melts, then explain that it is really a coat of little sticks of wax, very close together

Now bite just a tiny bit out of your plum, and tell me how it tastes (Sweet, juicy, unless it is a sloe, which is sour and rather dry) The very big juicy plums are grown in orchards for us to eat, and the birds like them; but the wild plums are little sour things, not nearly so nice, and yet the birds seem to like them too

When you bite right into a plum, what do you come to? (The stone)

It may be, sometimes, that when a bird pecks at a little wild plum, it causes it to fall off the tree and roll a little way, or perhaps it may take the plum away, eat the pulp, and by and by drop the stone, or even swallow it and pass it out, and so the stone is carried quite a long way from the mother plant And there it will lie on the ground and get trodden into the soil or beaten in by rain. Then the hard stone will gradually be softened by the damp soil.

Crack some stones and let the children see the kernel or seed inside What is likely to happen when the hard stone becomes softened? (The seed inside will get wet, too, and will begin to grow)

III. Revision and summary.—Now tell me of what different parts a plum is made up:

The following points are essential.

(1) The thin, bright-coloured skin, which shows the birds that the fruit is ripe

(2) The soft, sweet, juicy pulp or flesh, which the birds like to eat. Give details of development and remind the children that the Snapdragon had a dry hard wall, which broke open.

(3) The hard stone, which protects the seeds from being eaten by birds The birds may take it away and drop it, or they may, by pecking at the fruit, cause it to roll away and decay somewhere.

(4) The kernel or seed from which a new plant grows. The Snapdragon had many seeds, but they were much smaller.

As this summary is made, make a column of names on the blackboard,—skin, pulp, stone, kernel or seed. With older children, a tabulated comparison of the two fruits could be constructed

Show the children the cut plums and let them make a sketch of the whole fruit and a cut one, naming and explaining the use of the parts.

IV. For continuity of interest plant some of the seeds in a box or pot of damp soil Label with name and date on a wooden plant label, and keep damp The plum stone should have its own depth of soil above it.

III. HEDGE FRUITS



THIS lesson would occupy three periods, the first given to preparation for an actual visit, the second to first-hand observation of a hedge, and the third to collecting and summarising results and drawing conclusions The first might be quite a short period, a quarter of an hour or twenty minutes, the expedition should have about an hour, exclusive of the time taken to get there and back; and the third would be a normal class period

POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

Richard Jefferies, in *Wild Life in a Southern County*, draws attention to the use made of hedges as highways, by birds and small mammals. Many of them never leave the hedge except for a daring dash across open country to shelter again, so that the hedge provides both their home, their food and their road This association with all sorts of small creatures has had its effect on the plants found in hedges, and especially we notice that many of them take advantage of birds and mammals, perhaps rabbits, voles and various mice and dormice, to distribute their seeds a little farther afield than if they were merely dropped at the foot of the plant As an example of this association, here is a list of the fruits found in Autumn in a semi-natural hedge in Essex, where the soil is a mixture of boulder clay and chalk, showing how many fruits have special devices for securing distribution in this way.

Succulent fruits, attractive to birds: Wild Rose, Dogwood, Hawthorn, Wayfaring Tree, Buckthorn, Spindle, Sloe, Elder, Cuckoo Pint (earlier), Woody Nightshade, Black Bryony, White Bryony.

Hooked fruits, becoming attached to coats of animals (and people). Wood Avens, Goose Grass or Cleavers, Hedge Parsley (Torilis), Burdock, Agrimony.

Other fruits Wild Clematis, Hedge Maple, Violet, Selfheal, Black Horehound, and a number of low-growing herbs, Wild Parsnip, and Cow Parsley.

Note that of the trees and shrubs forming the hedge or climbing over it, only two rely on the wind, Hedge Maple and Wild Clematis, all the rest are distributed by birds Of

those which grow low down in the hedge, only one (Cuckoo Pint) has bright berries which might attract birds, but several are provided with little hooks, and as they are readily detached, they are easily carried away by animals.

The only way to decide whether any particular berry is really eaten by birds, is by actually observing either the bird feeding or the berries pecked open, so that children should look for signs that the berries are really eaten Rose hips can often be found pecked open, with a few "seeds" still adhering, or quite empty Crab apples and cultivated apples, cherries, plums, show signs of the birds having pecked them, but does this result in the seeds being exposed or strewn or carried about? Very often the bird makes the first hole in the ripe fruit, which allows the entrance of flies, beetles, or organisms which set up decay, and so ultimately the seeds are set free

Sometimes, although there is no special device, small hard fruits may be scattered by birds which feed upon them I once saw five goldfinches feeding on the heads of Cow Parsley and Hardheads or Black Knapweed, and they probably jerked many of the light, easily-detached nutlets away as they alighted, swung on the stalks, and flew away again

The study of a particular hedge, its plants, birds, insect life and small mammals if the opportunity arises, is a good starting point for what is known as Ecology, the study of plants and animals in relation to their surroundings It might form the special study for the first two years' work, though that does not mean that all observations need be limited to this field Expeditions might be made to notice the characteristics of the hedge in different seasons, and the hedge should, if possible, be near enough for the children to visit it alone.

INTRODUCTORY LESSON

Aim of visit.—To find as many kinds of plants in fruit as possible, and to note where they grow, whether as bushes or trees, forming the hedge itself, or climbing over it, or nestling on the bank or in the ditch at its foot

I. This object would be explained to the children, and the time and place of the visit given them. They would each be given a postcard on which to write the names of all the fruits they find A letter beside each might indicate the nature of the plant,

T = tree,
B = bush,
C = climbing plant,
H = herb or small plant at the foot.

If preferred, a small field notebook may be inaugurated, made and covered by the children, with a stiff piece of cardboard slipped into the back cover to serve as a pad

II. The children should then be divided into a convenient number of groups (teams will serve if the team system is in use), each with a leader who will help to keep the group together, and be responsible for making a complete list of the fruits found by them. After reminding the children how the seeds of the Snapdragon are scattered through little holes, the value of planting seeds some distance from the parent plant may be discussed; the children can then look for any forms of fruit which they think might help the plant to scatter the seeds widely. The instance of succulent fruits has already been suggested, and this prepares the way for the teacher to point out other devices as they are found.

Arrange with them not to pick fruits which might serve as winter food for the birds, as the teacher can collect enough for class purposes (recognition or further study by groups of children) and only to gather *one* example of each other kind, as, if the seeds are all gathered, we shall lose our wild flowers

THE VISIT

The teacher will trust to her group organisation to keep the class working

together, comparing notes, and not wandering too far Many of the hedge fruits may be out of reach and she may have to gather examples for the children to see closely.

She will help the children to name their fruits, see that they are using their cards properly, and point out any interesting means of distribution, or signs of the activity of birds The work will be quite informal, but it will *be* work and the children should be busy making definite observations

LESSON AFTER VISIT

Aim.—To collect results, summarise and record them, and draw conclusions

I. The leaders may first of all be given a little time to compare lists with their groups, so that each can present a complete list They may need advice on how to obtain this quickly The element of competition between groups here is stimulating.

II. The teacher will then take the list from one leader, letting other leaders supplement it, and note who has the most complete list The names might be written on the blackboard under the headings already suggested

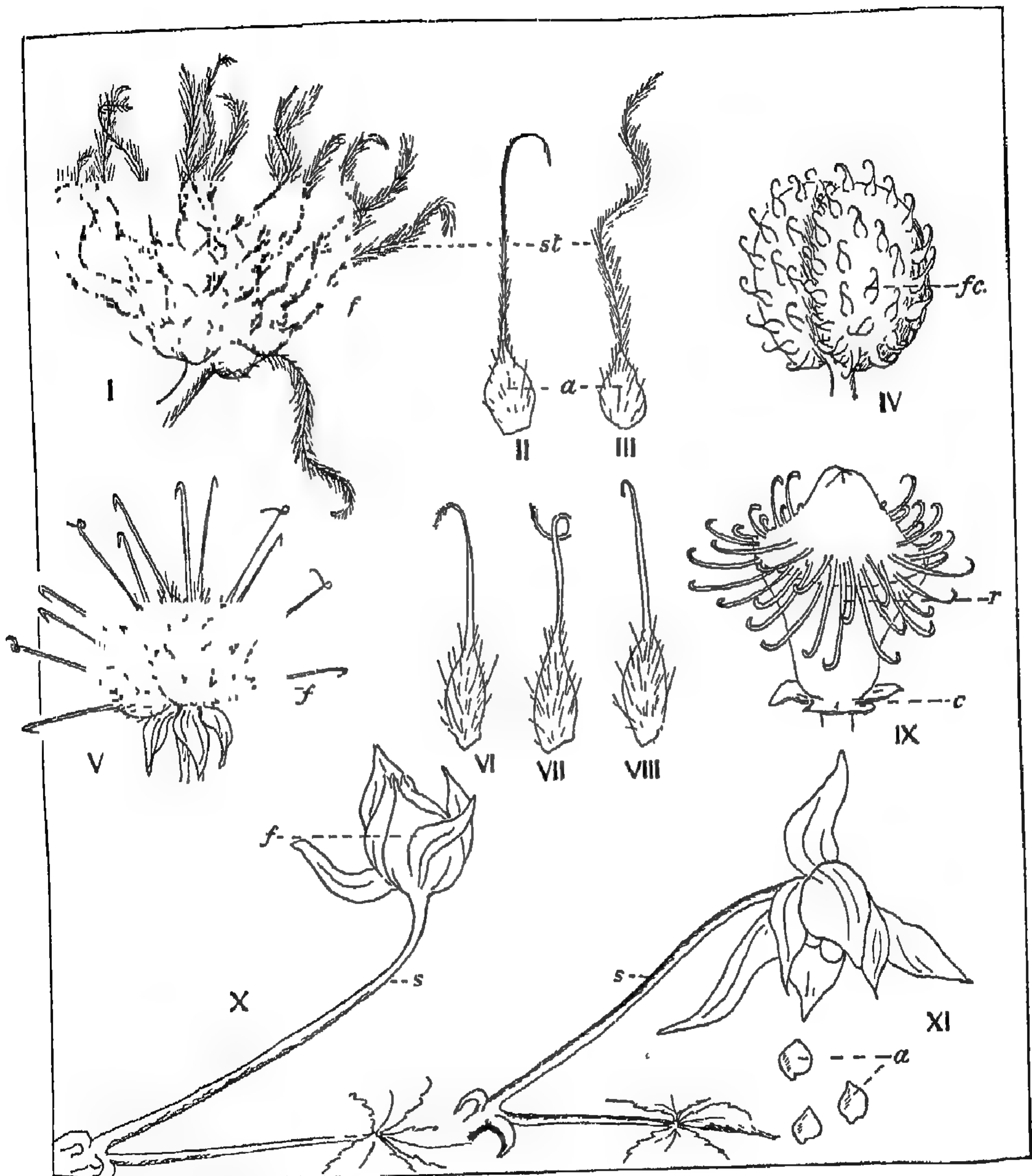
III. Those fruits which appear to be eaten by birds may be underlined in coloured chalk, and the possibility of this assisting in their distribution discussed. There are three possibilities of dispersal Either the seeds may be swallowed with the fleshy pericarp, remain undigested, and be dropped some distance away, or they may be brushed or jerked out as the bird is feeding (see previous lesson), or it is said (e g mistletoe), that they are sometimes rubbed off the beak, to which they have stuck, against a tree or fence The names of fruits which might be brushed off by sticking to the coats of animals would then be underlined in another colour, and any evidence taken The children probably found Goose Grass and Wood Avens sticking to their own coats.

IV. Conclusion.—The actual numbers of fruits possibly distributed in these ways would then be counted, and the teacher would tell the children of the ways of birds and little "beasties" living in hedges.

Children's records.—The children might copy the list arrived at by their combined efforts, with some way of marking the means of distribution, or the teacher may prefer to let them write only the shorter list, (selecting for themselves from the blackboard), of fruits dispersed by birds or animals Some children might arrange the examples brought back, and print names to attach to them, while the rest select *three* fruits to draw and write about. It would be well to remind them that each drawing must be chosen to show some definite point, and clearly labelled to explain what it shows

Note.—In town schools it may be impossible to take the children to see a hedge in autumn, although many suburbs still have remnants of country lanes, where hips and haws, woody nightshade, brambles and goose grass can be seen; London and even the outskirts of the mining towns of Lancashire show these in their clayey soils. But failing anything of the kind, it is possible, though nothing like so good, to reconstruct a hedge by selecting some good branches, explaining how they grow, and showing trails of brambles and other climbers which hold on to the hedge by down bent hooks or twisted stems. It would be desirable to supplement this by some photographs of a real hedge in autumn.

PLATE III



CLEMATIS I Fruit showing feathery style *f*, fruit II, III Achenes showing style developing and becoming hairy, *a*, achene, *st*, style

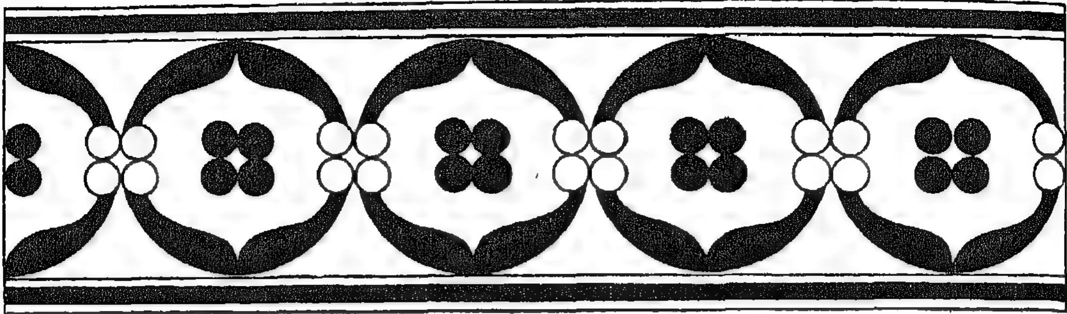
CLEAVERS IV Fruit showing hooked fruit coat (*f c*)

WOOD AVENS V Fruit showing hooked achenes (*f*) VI, VII, VIII. Achenes, showing the bending of the style to form hook

AGRIMONY. IX Fruit showing hooked receptacle (*r*); *c*, remains of calyx.

TORMENTIL X Fruit developing (*f*) The fruit stalk (*s*) gradually bends upwards, and the fruit is held in this position until dispersal takes place XI Dispersal of achenes (*a*) The fruit stalk turns, and bends downwards, and the fruit is brought in contact with the ground

IV. SYCAMORE FRUITS



POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

WE have seen that the pericarp of a fruit may play an important part in the dispersal of its seeds, in the Snapdragon it becomes woody, dries and splits open in certain weak places to emit the seeds; in the Plum it becomes succulent and attractive to animals. In a great many plants the pericarp becomes dry and woody, but does not split open to let the seed escape. Usually in such cases there is only one seed in each ovary or each chamber of the ovary, so that if the fruit itself is carried away, the seed goes too Such a fruit, if composed of one chamber only (though there may have been several in the ovary, whose seeds have not matured), is called a *nut.* If there are several distinct chambers, quite free from one another, each becomes a *nutlet* or *achene,* the whole forming a compound fruit, e g Buttercup. If several chambers attached together to form an ovary, separate without splitting open when the fruit is ripe, the fruit is called a *schizocarp* (separating fruit, cf schism) Examples are Hollyhock, Mallow, garden Nasturtium.

The Sycamore fruit develops from an ovary of two chambers or *carpels,* borne in the centre of a pale green flower. The two carpels are flat, and joined along their inner edges by a median rod or narrow plate. When the fruit is ripe, the two carpels separate by the cleavage of this plate, and fall to the ground The fruit, therefore, is a kind of schizocarp But there is a special development of the pericarp of the outer edge of each carpel, forming a wing-like expanse which can be caught by the wind. Such winged fruits are called *samaras.*

The Sycamore flowers are arranged in spiral clusters on a drooping stalk (a similar plan to the Snapdragon except that this is erect), so that the fruits hang in bunches, each pair of carpels developed from one flower having its own stalk branching from the main one. Sometimes three instead of two samaras will form one complete fruit.

THE LESSON

Aim.—To find out how Sycamore fruits are dispersed

Material.—Bunches of Sycamore fruits, if possible still attached to a twig, which can be separated so that each child has a complete fruit Soaked fruits, some split open and others with contents removed and teased out, i e. loosened

Introduction.—Show the children the branch of fruits and tell them what they are. State the aim of the lesson If there were Sycamore trees (or Hedge Maple could be substituted for this lesson) in the hedge visited, recall their position and appearance If not, a photograph might be shown

I. Notice how the whole bunch grows, the main stalk and the branches from it Point out that, like the Snapdragon, it must have had many flowers on one stalk, only these hang down Ask if the children have ever noticed green tassels, 4 or 5 inches long, hanging from the Sycamore trees This is something to look out for next April or May. (In Maples, the clusters of flowers are bright yellow-green, and flat like Hawthorn)

II. Separate and distribute the fruits. Each child should examine a pair of carpels and notice how they are arranged

Questions.—When we find the fruits lying on the ground, are they in pairs or single? (Usually single, but occasionally in pairs) When do you find them? How far away from the tree? (Sometimes quite a distance, so that no tree is in sight. Often seen blown along the streets in crowds on a windy day) Why do you suppose they can be blown so far? (Because they have a wing, something like that of a Dragonfly or Daddy-long-legs.)

III. To see *how* the fruits fly, take the class out into the playground, if possible, when it is rather windy. When the fruits are 20 or 40 feet or more high on the tree, they have a good chance of being caught by wind, so the best thing to do is to drop them from a second storey window and let the children watch how the wind catches and carries them. They may even soar over a roof and be blown out of sight If this is not possible, stand on a chair and throw them up as high as you can, and let the children in turn do the same. Try both pairs and single samaras It will be noticed that the pairs fall to the ground, but the single fruits are buoyed up. They spin round, almost horizontally, but with the wing slightly raised above the seed Let the children describe this movement It can be seen indoors if there is an upper draught from a window, but not so successfully.

IV. Return to the classroom to examine the fruits more closely. Two questions arise

(1) Why do the single fruits spin round?
(2) Why are the single fruits carried by the wind, yet the double ones are not?

Let the children examine single fruits. Can they suggest any reason? Draw attention to the strong, rigid vein that runs down one side of the wing, with other veins running from it. This stiffens the wing, so that it does not give way when the wind presses against it, but resists like a kite, and so is pushed away, and turns like a wheel or the arm of a windmill, using the heavy seed as a centre or pivot round which to swing. Show a bird's wing feather, where the stiff rod is also at one side, though not quite at the edge.

The double fruits are balanced by their two veins and so the wind presses equally on both, and cannot push one round Therefore they are not so easily moved along by the wind, and fall to the ground. If a bird or an aeroplane stopped flying it would fall; anything that is not actually lighter than air has to move to keep up.

Ask the children whether the fruit really flies It does not, because it has no movement of its own, it only rests on the air and is blown along Birds and insects and aeroplanes each have their own engines to move them (A bird's engine is its heart and muscles) The Sycamore fruit is more like a kite or a glider.

V. Ask what happens to the fruits when they fall, and in what sort of places they are

found? If they are blown into sheltered, damp places, drifting leaves will cover them Then the outer covering will gradually become soft and fibrous, and finally decay. When this happens the seed inside can take up water and begin to grow

Pass round some fruits in saucers, some with half the pericarp removed, others with the seeds shown separately and loosened a little The seed will be seen to consist of two bright green leaves and a little root, closely coiled together. It is enclosed in a fine, brown skin.

VI. Plant some of the seeds in leaf mould or soil in pots or saucers and keep damp.

VII. Records.—Let the children draw a pair of fruits and a single fruit, and name the parts, saying what purpose the wing and vein serve They should write a sentence or two explaining how the fruit flies For instance.

> Sycamore fruits usually fall separately. Each fruit has a wing, which is part of the fruit wall. It has a vein along one side which helps it to fly. When the wind lifts the fruit, it spins round, and can be carried a long way. It does not really fly, it is blown on the wind.

If preferred, the summary can be constructed collectively by the class. In either case, the children might be helped by a short series of questions, of which a copy may be given to each child to paste into his book and answer, or the questions may be written on the blackboard, e g

> How do Sycamore fruits fall off the tree?
> What helps them to fly?
> How do they fly? Do they really fly?

The records may well employ a second period

VIII.—Further work.

(1) Suggest that the children shall look for the fruits out of doors, and notice particularly where they find them, how far the spot is from the nearest Sycamore tree, and when the fruits begin to grow (Sycamore fruits will often be found in bunches, drawn into the tops of worm burrows, probably to keep out the cold The seed is drawn in first, the wing sticks out, and there is no sign of their being eaten This may quite well help them to germinate)

(2) In the following spring look for the flowers Keep a branch of Sycamore in flower in the classroom and watch the development of the fruits, which begins at once after fertilisation

V. ASH AND LIME FRUITS

THE LESSON

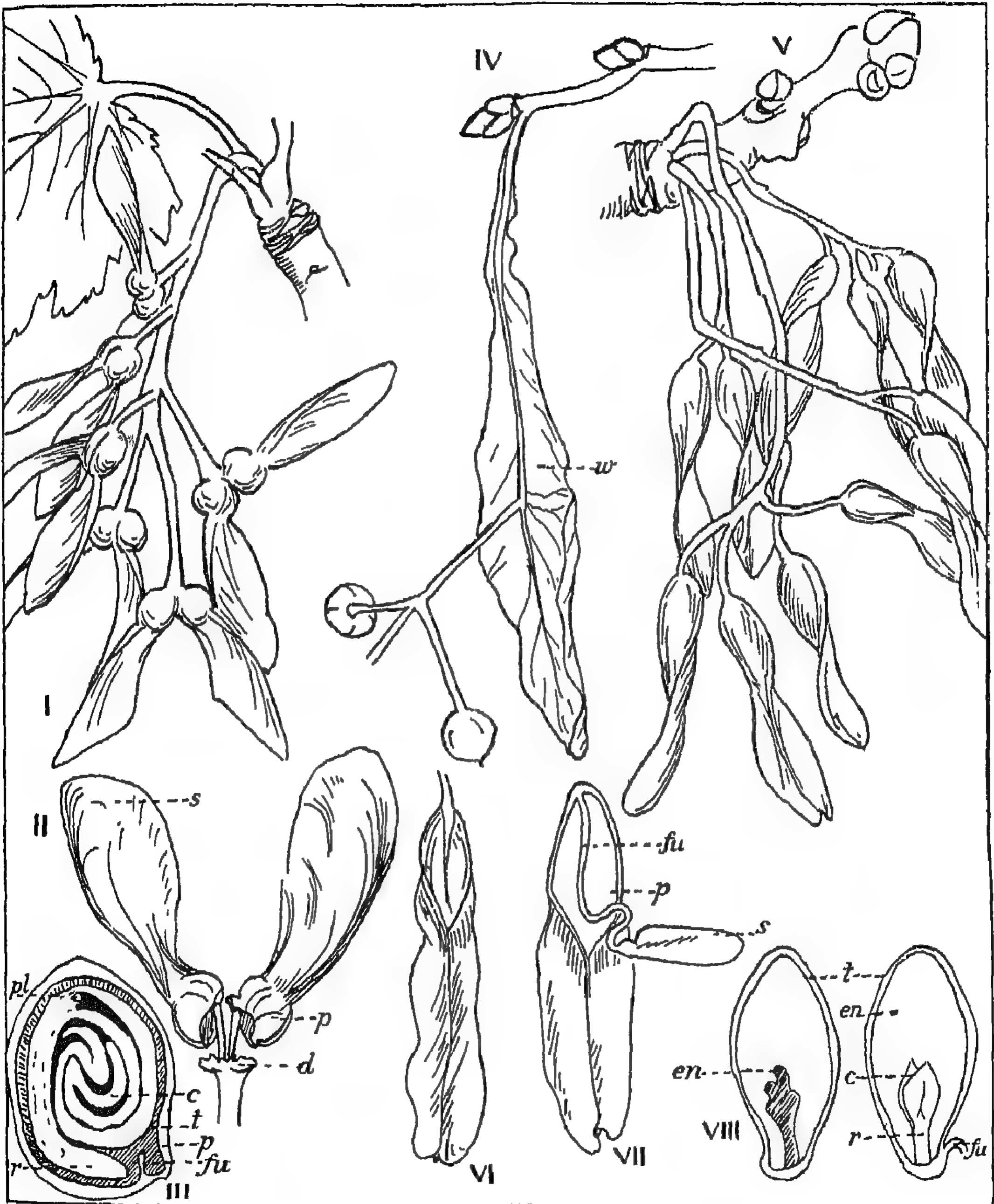
THIS should serve as an application of the preceding lesson. Two periods

Aim.—To find out whether the Ash and Lime fruits fly, and if so, how

Material.—Enough Ash and Lime fruits for the children to have two or three each They might be shown the fruits previously and asked to collect them, if these are easily obtainable.

Introduction.—Recall the main features of the Sycamore fruit, and show the Ash and Lime fruits—the Ash in bunches or "keys"

I. Let the children take the fruits out into the playground as before and try them individually. When the children are satisfied, let them come back and try to explain inde-



SYCAMORE I Bunch of fruits II Single fruit showing samaras separating *s*, samara, *d*, disk, *p*, pericarp III Vertical section of seed showing curled up embryo *p*, pericarp, *t*, testa, *c*, cotyledons, *pl*, plumule, *r*, radicle, *fu*, funicle

LIME IV Fruit on branch *w*, wing

ASH V Bunch of fruits VI Fruit VII Fruit opened to show attachment of seed to fruit wall *fu*, funicle (seed stalk), *p*, pericarp, *s*, seed VIII Dissection of seed to show young plant (embryo) embedded in endosperm *t*, testa, *c*, cotyledons, *r*, radicle, *fu*, funicle, *en*, endosperm (food for young plant).

pendently, by drawings and short descriptive sentences, how the fruits move and why they are able to do so. They may, as before, be helped by short written instructions. It is sometimes a useful plan to prepare such instructions, leaving spaces for the children to fill in drawings and answers. For instance

> Show by drawings why (1) the Ash fruit, (2) the Lime fruit can be carried on the wind. Write beside your drawings what they show
>
> (Space for drawing.)
>
> Describe what happened when you threw the fruits up in the air.
>
> (Space for answer)

This set of drawings and notes would be pasted into the Nature Study notebooks

II. In the next period, the children's answers and drawings, in the meantime carefully examined by the teacher, would be discussed.

The drawings.—Arrangement, clearness of line and convenience of size, would first be dealt with; good drawings might be shown as an example. Then ask the children whether they think their drawings really show why the wind can carry each fruit? What should they show? The point of importance is the wing in each case

The explanations.—Take the Ash first as the simpler, and make clear how it moves and why it is able to do so, incorporating in writing any thoughtful explanations the children have made. First ask what they saw happen when they threw the fruits in the air. If the wind caught them, they too spun round, quickly, with the wing tilted upward and the seed forming the pivot We found in the Sycamore that the strong rib at one side enabled the wind to catch it and push it round. Is there anything here to help it? (The thickest part is not at the edge but in the middle, but there is a slight twist on each wing so that the wind catches, and pushes, first one side and then the other and so makes it spin. Boys may know the propeller of an aeroplane or ship, with a twist on the blade)

The Lime fruit spins round, too, and again, the seed is lowest Does the seed act as a pivot again here? (Yes, for the wing can be seen turning round it.) The seed and stalk together act as a pivot. It is as if someone took hold of the top of the stalk and twisted it round, with the wing and seed hanging down. (When we speak of the seed, in each of the three cases, it is enclosed by the pericarp We cannot see the seed itself In the Lime the fruit is a nut)

Now let us look at the wing of the Lime. It is not part of the fruit itself. What do you think it really is? (A leaf) It is a leaf, of a special shape, which has become joined to the fruit stalk (or flower stalk), along part of its length It is green and soft to begin with, but becomes hard and acts as a wing. We call it a *bract.*

III. By questions compare the chief features of the three fruits, orally, writing the names on the blackboard to help in keeping the sequence clear

Sycamore.	*Ash*	*Lime*
Spins round nearly flat.	Spins round slanting	Spins round with stalk straight up
Seed as pivot, lower than wing	Same	Seed and stalk as pivot, seed at bottom
Stiff vein. Wind catches one side	Wing is twisted.	
	Wind catches each side in turn	Wind catches under wing, and lifts it

IV. Further work.—Look for Lime flowers and Ash flowers As these seeds germinate very slowly, if they are planted, the children will get no result that year, but there is no reason why they should not find this out by experience

VI. GRAPES, CURRANTS, AND RAISINS



POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

IT is essential to a true outlook that children should think of the fruits which we cultivate for our use, as having been grown in the first place for the plant's own purpose of seed dispersal The Plum gave us an example of a fruit of one carpel with a succulent mesocarp and hard endocarp. The Grape is an example of a fruit with two carpels, in which the whole pericarp, except the thin skin, becomes succulent, the dividing walls break down and the seeds are embedded in the juicy pulp This type of fruit is called a *berry* Other examples besides the small fruits commonly known as berries are oranges and lemons, tomatoes, cucumbers, marrows Bananas are seedless berries propagated by vegetative means. Any of these may be taken as additional illustrations and exercises in accurate observation, provided they are related to the whole study of fruits as means of dispersal.

THE LESSON

Aim.—To see how grapes, currants and raisins could be dispersed

Material.—A bunch of white grapes, some currants and raisins, preferably different varieties Some leaves if possible.

Introduction.—Show the grapes. Ask which of the fruits we have examined is most like them. (The Plum) In what way do they seem much the same? (They are both juicy, or succulent, both sweet-tasting, both have a thin skin, both have a bloom of wax on the skin to keep out the rain)

I. Let the children notice and describe how the grapes grow. They are arranged in a bunch on a branching stalk, so they grow rather like the Sycamore fruits They are heavy and the bunches hang down. Tell them that the wild grapes are small and sour; if we want large, sweet ones we have to manure them well, and thin out each bunch by removing some to give others more room They want a great deal of air, warmth and sunshine to ripen them They come from France, Spain, Italy, S Africa—countries much farther south than we

are, where there is plenty of sunshine, and they grow on the hillsides on long terraces or steps facing the sun The vines are trained to climb over poles Besides those that are grown to eat, far more are grown to make wine The grape harvest has from very ancient times been very important in those countries, a time of feasting and songs and dancing, when the grapes were gathered and the juice trodden out with bare feet, in great shallow tubs or vats Yet the plant does not grow its fruit for us at all, unless we help to scatter its seeds.

II. Ask the children to consider how the seeds would be dispersed in the wild grapes Let each child have a grape to look at, feel the skin, and rub a little of the bloom off Then let them draw it, and while they do so, cut some open vertically and others transversely, to show the seeds inside Let them be drawn to show the position of the seeds, pulp and skin, and labelled The children will then probably suggest that the bright colour and faint pleasant smell perhaps attract birds, who would eat the juicy pulp and the seeds But the seeds are not digested They pass through the bird's food-tube and are dropped, perhaps a long way from where they grew Let the children add to their drawings a sentence or two of their own, making this explanation. Let them taste the grapes to see what it is the birds like so much Grapes have a particular kind of sugar known as grape sugar

III. Give each child a currant and a raisin to find out what they can about them. They will see that the seeds of the raisins are very much like those of the grape, but that the currants usually have none, but are like little raisins, only black These, too, are small kinds of cultivated grapes, dried for us to use in cakes and puddings.

Fruits which have no stone, as the plum had, but have only a juicy pulp round the seeds, are called berries So grapes are berries, currants and raisins are grapes, so they are also berries, but the currants are now grown only for our food and have lost their seeds

IV. Conclusion.—Ask the children to notice in the shop windows any labels which tell us where the currants and raisins come from, e g Valencias from Valencia, in Spain. Currants originally came from Corinth, which gave them their name (These names will mean nothing to the children at present, but later they will make other associations with them)

VII. HOLLY

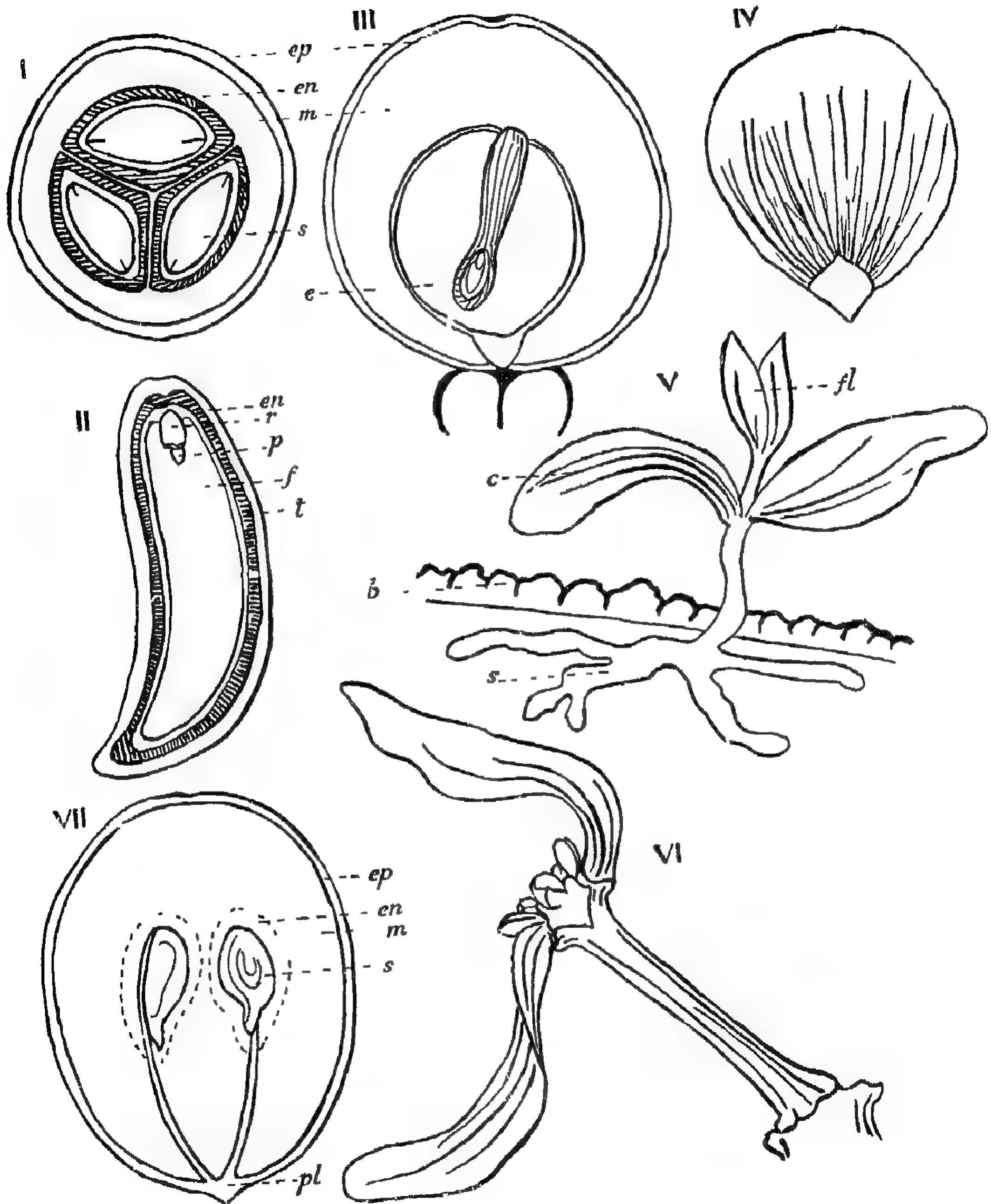
POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

CHIEF stress will be laid on the fruits of the holly, in relation to the series of lessons, but its features as an evergreen may also be taken into account. The fruit is a peculiar kind of drupe, for it has the characteristic hard endocarp, but each seed is separately enclosed, and there are usually four seeds The endocarp is so hard that it is difficult to split open, but it can be done with a sharp penknife, when a seed will be found inside which resembles the kernel of a plum stone with a thin brown coat, proving that the "stone" is endocarp and not the seed coat.

THE LESSON

Aim.—To find out all one can about the Holly as a plant which seems in full vigour in the winter, and especially to examine its fruits

PLATE V



HOLLY I Transverse section of fruit *ep*, epicarp, *m*, mesocarp, *en*, endocarp, *s*, seed II Longitudinal section of seed *en*, endocarp, *t*, testa, *f*, food for young plant, *p*, plumule, *r*, radicle

MISTLETOE III Longitudinal section of berry *e*, embryo IV Seed, front view V Seedling *fl*, first foliage leaves, *c*, cotyledons, *s*, suckers, *b*, bark VI One year's growth of mistletoe

GRAPE. VII Vertical section of grape *ep*, epicarp, *pl*, placenta, *m*, mesocarp; *s*, seeds, *en*, succulent endocarp

Material.—Small branches of holly berries. A few cut open and the seeds extracted, in a saucer. Seedlings A hand lens Needles

Introduction.—The Holly is a tree which we notice particularly about Christmas time, because usually its leaves are glossy and fresh, and its berries bright and smooth, long after most of the fruits the birds love have either been eaten or shrivelled up What do we call trees that keep their leaves all through the winter ? (Evergreens)

I. Let us see if these evergreen leaves are different in any way from those that fall in the autumn Give each child one leaf to feel Probably they will first notice the spines They will find that it is both smoother and harder than leaves like the beech or others they know Ask if they know any other leaves that are so hard and smooth. (Laurel, Rhododendron, Ivy) These also are evergreens We know that trees take water out of the soil But in the winter the soil is so cold (not frozen) that the roots find it difficult to get any water—it is too cold for them to work properly. So they must not let any of the water that is in the tree dry up The evergreen trees which keep their leaves, have them covered with a very hard, tough skin, which does not let the water through, and therefore the leaves are able to remain through even very cold winters That is why they feel so hard

Sometimes, if we have heavy snow, though that is not often, the snow might lie on the leaves and break the branches Ask if the children can see anything that would help the leaves to get rid of the snow Some people say that the little slopes between the spines act like slides, so that the snow slips off them.

Perhaps the hard skin of the leaf prevents it from being injured by rain.

II. Revise these three points But the most important is the first

III. Now look at the fruits They grow either singly or together in clusters of two to five Would they attract birds ? Are there any signs of birds having pecked at them ? How could we try to find out whether birds like to eat them ? (If there is a bird table, small branches could be hung from little hooks round the rim Or they could be hung from the branch of a tree. Mistle thrushes and redwings are very fond of them.)

Let each child scrape off the thin red skin with a needle Underneath is a thin, rather fibrous or pithy white pulp, and beneath this they will feel a stone. So it seems to be like a tiny plum Scrape the pulp away The stone can then be separated, and it will be found that there are really four, fitted together by two flat sides but rounded on the outside. Can we tell whether these are "stones" or seeds ? (If they are stones, there will be a seed inside, with a seed coat, but if they are seeds, this hard part will be the coat and there will not be another) It will be too difficult for the children to remove the "stone," so they will have to be shown those already prepared (Blackboard diagram) The children can be given the chance of looking more carefully at the stones with a hand lens after the lesson at odd times So, though this is always called a Holly berry, it is really more like a little plum, for true berries have no "stones" round their seeds

Are the seeds ever scattered and do they grow into new trees ? We think the birds probably eat them, but we cannot be sure until we have watched. They certainly grow. Show seedlings. (It is not difficult to obtain seedlings from any undisturbed copse where there are Holly trees They are often at least 5 or 6 yards from the nearest tree) Plant the seedlings in pots of soil to see if they will grow in the class room Date and measure them, and record the height

IV. Further work.—Watch what happens to the berries hung out, to those on any trees in the neighbourhood, and to the seedlings.

VIII. MISTLETOE

POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

MISTLETOE is an evergreen plant which, though able to make some food for itself through its green leaves, is parasitic on trees. Although it is traditionally associated with the Oak, it is much more commonly found on Apple, Elm, Black Poplar, and other trees It grows very slowly, from seed produced by flowers pollinated in the autumn but not fertilised till the following spring and only matured in the following November or December; that is, it takes about fifteen months for the flowers to form ripe seeds Germination is also slow For instance, where five seeds were artificially inserted into slits made with a knife in the bark of an apple tree, five years later two tiny plants appeared, each having two leaves.

The fruit is a berry, containing one seed only, covered by a viscid pulp, and a thin skin When it is crushed, the slimy contents, after a few minutes' exposure, harden into a sticky glue-like substance, which is not easily detachable from any surface, as if pulled it draws out into long, fine threads This is the birdlime used by snarers to catch small birds It is smeared on twigs, and when birds alight the birdlime entangles their feet in its mesh like a spider's web.

The berry is said to be particularly attractive to thrushes The seeds are either swallowed and possibly deposited on the bark of trees, or scraped off the beak It is said they can also fall and germinate on the tree where the plant grows. Thus the sticky pulp serves to glue the seeds to the tree. The seed is hard, flat and white with dark green and black streaks

When germination takes place, what appears to be a root emerges This is, however, the intermediate axis which joins the root, stem and seed leaves together, called the *hypocotyl* At the free end it begins to broaden out into a root-like sucker, which finds its way into the crevices of the bark, forces its way between the bark and the wood, then sends branches into the wood itself, to feed on the sap of the tree. In the meantime two seed leaves pull their way out of the seed coat and uncurl (rather like the sycamore). Between them is a tiny bud which starts the growth of a short main stem Then it stops, and growth is continued by axillary buds

From each bud is produced a stem, a pair of minute scale leaves, a pair of long narrow foliage leaves, and either one or a cluster of 3–5 flowers. These flowers are of two kinds, stamen-bearing or *staminate* on one plant, and ovary-bearing or *pistillate* on another, so that on some trees one sees plants which never can bear any berries. Wind pollination takes place, and the white berries are formed The flowers terminate the main axis, and further growth takes place from a small axillary bud at each side, giving the characteristic forked appearance of the branches. Five or six such buds may appear It takes a year to produce each internode and pair of leaves from the preceding joint or node

THE LESSON

Aim.—To examine the Mistletoe, and to learn something of its curious life story.

Material.—Bunch of mistletoe, enough to give a small spray with berries to each child Needles

Introduction.—Mistletoe is being shown in the shops for Christmas decorations, and long before there was any Christmas, our

ancestors in ancient Britain used it in connection with their religion It is a plant that has always attracted curiosity and interest because of the way it grows, and because, like the holly, it produces its pale berries when most of the others have gone. It grows high up on the branches of trees, on apple trees very often, sometimes on oak, and instead of having true roots which go into the ground to bring it water and food, it sends suckers into the wood of the tree to suck up the sap to feed it. So in time it injures and even kills the tree The tree shows that it is injured by forming swellings where the mistletoe grows

I. Show the bunch of mistletoe, hanging in a natural position, and ask the children to notice how it grows. It has only a very short main stem, and then it begins to branch. It appears always to branch into two, and in the fork of the branch is a berry, or a cluster.

Give the children sprays and let them verify this. Let them describe the leaves and the berries Ask if they notice anything just below each leaf (A tiny ridge) These are the tiny scale leaves which protected the bud before it opened. One bud is formed each year on each branch. Find out by observing and counting, how old their particular sprig is Use a blackboard diagram to help them Then with the whole class find out how old a large branch is, as nearly as you can. It may have taken ten years for the bunch to grow, so its growth is very slow Tell them of the five seedlings, and if it is possible, suggest planting some in an old tree (though the children will not see any result that year, they should see some result while in the school) In later years, the children may be told what has been done, so that they may watch for the little plants (It is best to insert the seed in a natural crevice with a penknife, and cover the spot with a small piece of fine wire netting tacked on, to mark and guard it.)

II. With a needle, let the children prick the berry and squeeze it Press the contents on to a piece of paper. Extract the seed and look at it. (Blackboard diagram) Notice its shape, marking, and hardness. Show by blackboard diagram the little plant it contains inside it. (Plate V.) How does the seed get planted? The children may suggest (1) that it drops on to a branch, (2) that birds carry it away and leave it on the branch Turn attention to the pulp that has been pressed on to the paper. Let the children touch it and notice what has happened It has hardened, and it comes away on their fingers in sticky threads that cannot easily be removed. Tell them about its use as birdlime Ask how it is likely to be useful to the berry

They will see that (1) a bird (e g a thrush) in attempting to get rid of it, will brush the seed on to a tree, (2) that if it passes through a bird's body and is dropped, or merely drops from the tree, any trace left of the sticky slime will glue it on to where it falls.

III. Show a picture of the little plant growing on a tree, with its suckers in the wood and its two seed leaves opening, and the stem which will branch to form the bushy plant

IV. Summary: Heading· How the mistletoe grows.

(1) The berries are liked by thrushes and other birds
(2) The seeds are dropped or brushed off the birds' beaks on to a branch.
(3) The pulp is like glue. It hardens and sticks the seed on to the tree
(4) The seed grows It sends suckers into the wood and feeds on sap.
(5) Each branch grows only one joint longer each year. Each joint has two leaves and some berries
(6) A bud is covered by two little scales.

V. Let the children draw a year's growth of one twig, and show the joint or *node* (give the name), the stem, two leaves, position of scale leaves and berries

IX. THE HYACINTH

POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

THE Hyacinth is a good example of a bulbous plant to start with, because it is large and has a simple type of flower

A bulb is a special kind of underground bud capable of carrying on the growth of the plant as the original stock dies down. It stores food material in the bases of leaves In many cases it can become detached from the parent stem

A stem is an organ which bears leaves. It starts in the embryo plant as an upward growth whose tip grows towards the light and away from the earth, thus being brought above the soil The tip of the stem is called its growing point. From it leaves are formed, in a definite arrangement As these expand, the growth of the stem between them separates them and places them farther back, while the growing point itself forms successive new leaves, so that it is always surrounded and concealed by them The growing point, together with the leaves just formed, is called a bud. Besides the tip, the tissue immediately above where a leaf joins a stem is capable of forming buds, called *axillary buds* because they lie in the *axil* or groove between leaf and stem.

In the late summer growth is slow, so that the space between one leaf and the next is short, and the bases overlap one another. In the formation of winter buds it happens in many trees, e g Horse Chestnut, that the last-formed leaves do not expand into leaf blades, but consist merely of woody scales, the leaf bases, enclosing the bud in a protective covering

A bulb is a bud protected in a similar way by leaf bases, only in this case they are the bases of the foliage leaves, whose green limb (thought now to be an extension of the base and not a true blade) has withered and broken off after its work was done, together in most cases with one or more sheathing bases which do not produce a green part. In a Hyacinth bulb a dark, scarred rim indicates which scale leaves are the bases of green leaves

The best preparation a teacher can make is to dissect a bulb which has not been planted, and a bulb at the end of its flowering time, leaf by leaf, cutting each one cleanly away from the stem, and noticing at the same time exactly its position Mark by two cuts in the base the position of the edges of the first leaf removed, for reference It is a help to clear understanding to make a sketch of what is left after removing each leaf. In addition it is a good plan to cut across a bulb, and then loosen each leaf in turn from the lower half, noticing on the cut surface exactly how they overlap. An ink line bisecting the surface is a help.

It will then be seen, as illustrated on Plate VII., that the leaves, in a bulb which has not been planted, fall into four groups:

(1) On the outside are one or more thin, dry scales, still remaining fleshy in places. These may not reach quite to the top Their edges are so closely pressed down that at first they seem adherent to the leaves below. These are old leaf bases.

(2) Inside these is a series of four to seven white, fleshy leaves They are much thicker than the first series, especially the inner ones which towards the base may reach $\frac{1}{4}$ inch in thickness, being thinner at the edges, and where they join the stem. It is these that form the chief bulk of the

bulb, by storing food material for the new year's growth

(3) Next is formed a series of three sheaths, the two outer either tapering to a shrivelled brown tip, or showing a thin, colourless tip veined like a short foliage leaf, followed by several leaf bases showing the withered remnant of green leaves. These enclose the bud. The outer ones are as thick as the last series

(4) The bud, ready for this year's growth, consists of a series of four or more slim, tubular-pointed white leaves, each apparently completely enclosed in the one outside it. They range from 1½ to ½ inches long. Finally, if the bulb is a good one, we find the flower. A thin, strap-shaped remnant of last year's flower may be found immediately outside the bud, showing that it is usual for the new bud to take the position of the flower in the centre

Tracing the history of the bulb backwards, and guided by this year's bud, it can be seen that each year about the same number of leaves has been formed, together with three sheathing leaves, which do not, however, emerge from the bulb as in the Daffodil or Crocus

Last year's group, the bases of the leaves developed last spring, are beginning to store food material, the outer ones having reached the thickness of those formed the previous year. Thus the chief source of food for growth this year will be the inner leaf bases of *two years ago* and the outer ones of *last year* These will be exhausted and reduced in their turn to the scaly condition of the outermost series, all that is left of the leaves of *three years ago*

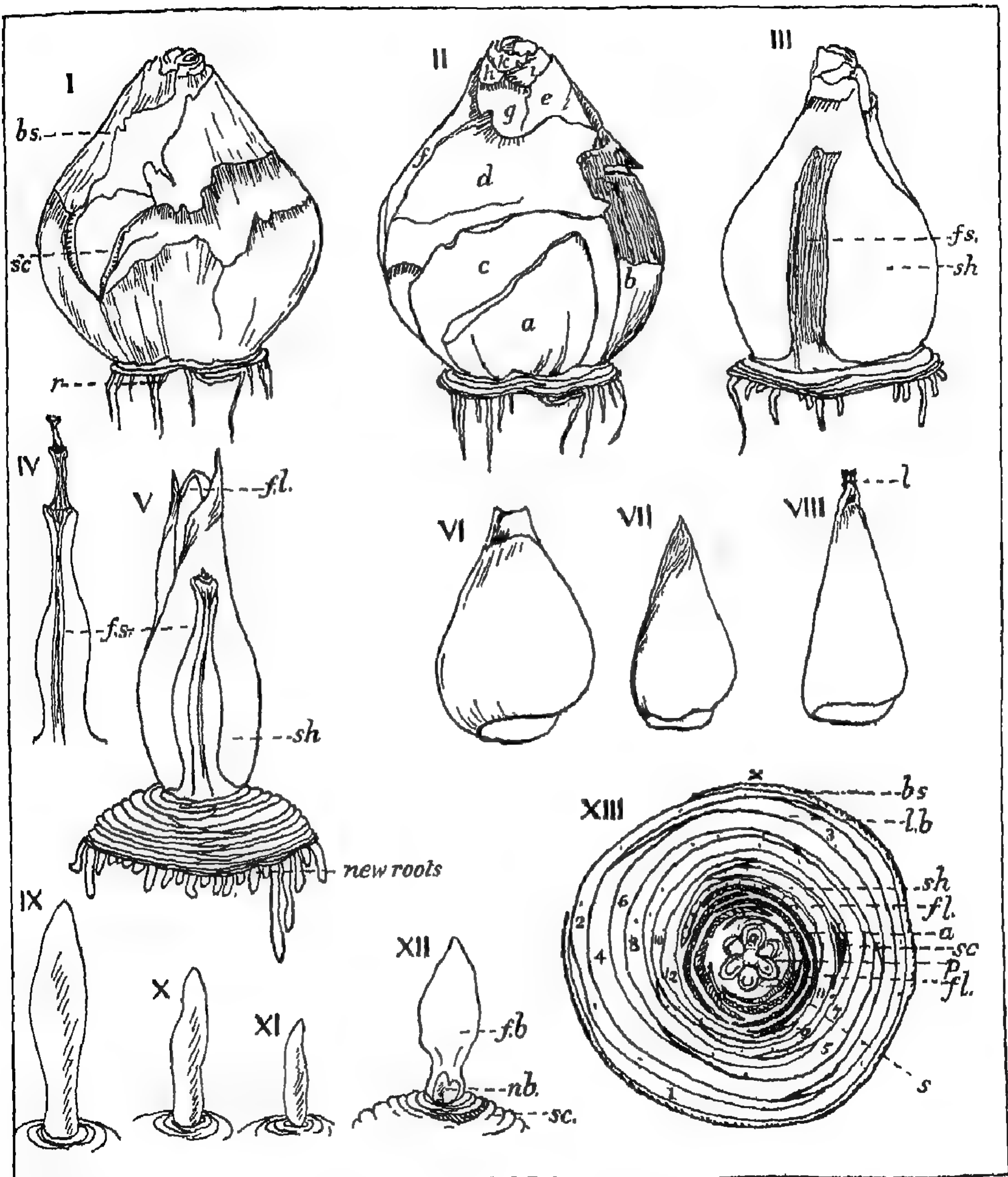
In the Snowdrop bulb, the interpretation of the structures found can be much more accurate, because each year sheathing leaves are formed first, of a different shape from the foliage leaves, so that they separate the groups from one another. The foliage leaves, too, are limited to two or three The study of a Snowdrop bulb offers a very good exercise for older children, say 10-11, and is fully described in "The Study of a Snowdrop Bulb," by Miss L. E Cox, published as a School Nature Study Union leaflet. The Hyacinth, from its size, is more suitable for a first example In the Hyacinth the appearance of the tips of the scales, and the tendency to form about the same number of leaves each year, is a guide to the structures involved

When the scale leaves which cover the bulb have all been removed, the stem should be examined It will be seen to consist of a round disc about ½ inch thick, with a diameter of 1—1½ inches It is hard and solid. From its lower edge a number of short old roots grow in three or four rings, leaving a bare central patch underneath Where each scale leaf has been removed a semi-circular scar or ridge is left Immediately below the first of these may be found a circle of tiny round projections, a new series of roots ready to take the place of the exhausted old ones

Notice the resemblance of the denuded stem to the corm (so-called bulb) of a Crocus. The difference in appearance between a Crocus corm and a Hyacinth bulb is due to the fleshy character of the scale leaves in the Hyacinth, while in the Crocus food is stored only in the stem itself The leaf scars in the bulb illustrated show that last year's leaves are attached to the flat upper surface, while the older ones are on the sides, at a lower level

Notice that at the apex of the stem is the flower bud, which therefore terminates the main axis, and so is a terminal bud Since, with the formation of the fruit, the growth ends, a new axis must take the place of the old one each year, that is to say, an axillary bud must form the new bulb. Examine the stem carefully for any signs of a bud Then cut a bulb through vertically and look between the bases of the leaves. In the

PLATE VI



HYACINTH BULB I. External view of bulb *sc*, scale splitting, *b s*, brown scales formed 3 years ago, *r*, old roots II Bulb, showing scales overlapping III Bulb showing remains of flower stalk (*f s*) formed 2 years ago *sh*, sheaths of 1 year ago, surrounding the foliage leaves of last year. IV. Remains of flower stalk of last year V Sheaths and leaf bases of last year removed to show remains of flower stalk (*f s*) *sh*, sheaths; *f l*, foliage leaves of this year VI, VII Two of three sheaths which surround last year's foliage leaf VIII. A base of a foliage leaf—withered edge (*l*) IX, X, XI. This year's foliage leaves XII Flower bud (*f b*) *sc*, scar left by flower stalk of previous year, *nb*, new bud XIII Transverse section of bulb to show fleshy leaf scales overlapping *b s*, brown scale, *l b*, leaf bases, *sh*, sheaths, *f l*, foliage leaves, *sc*, scar left by flower stalk, *s*, stem, *p*, perianth; *a*, anther

bulbs examined for the purpose of this article, buds, all *potential* bulbs, were found

(1) between the scaly outer leaves and outermost fleshy leaf,
(2) between the outer leaf bases of last year's growth,
(3) immediately outside the foliage leaves of a bulb which had just flowered,
(4) close up to the flower stalk, between it and the innermost leaf

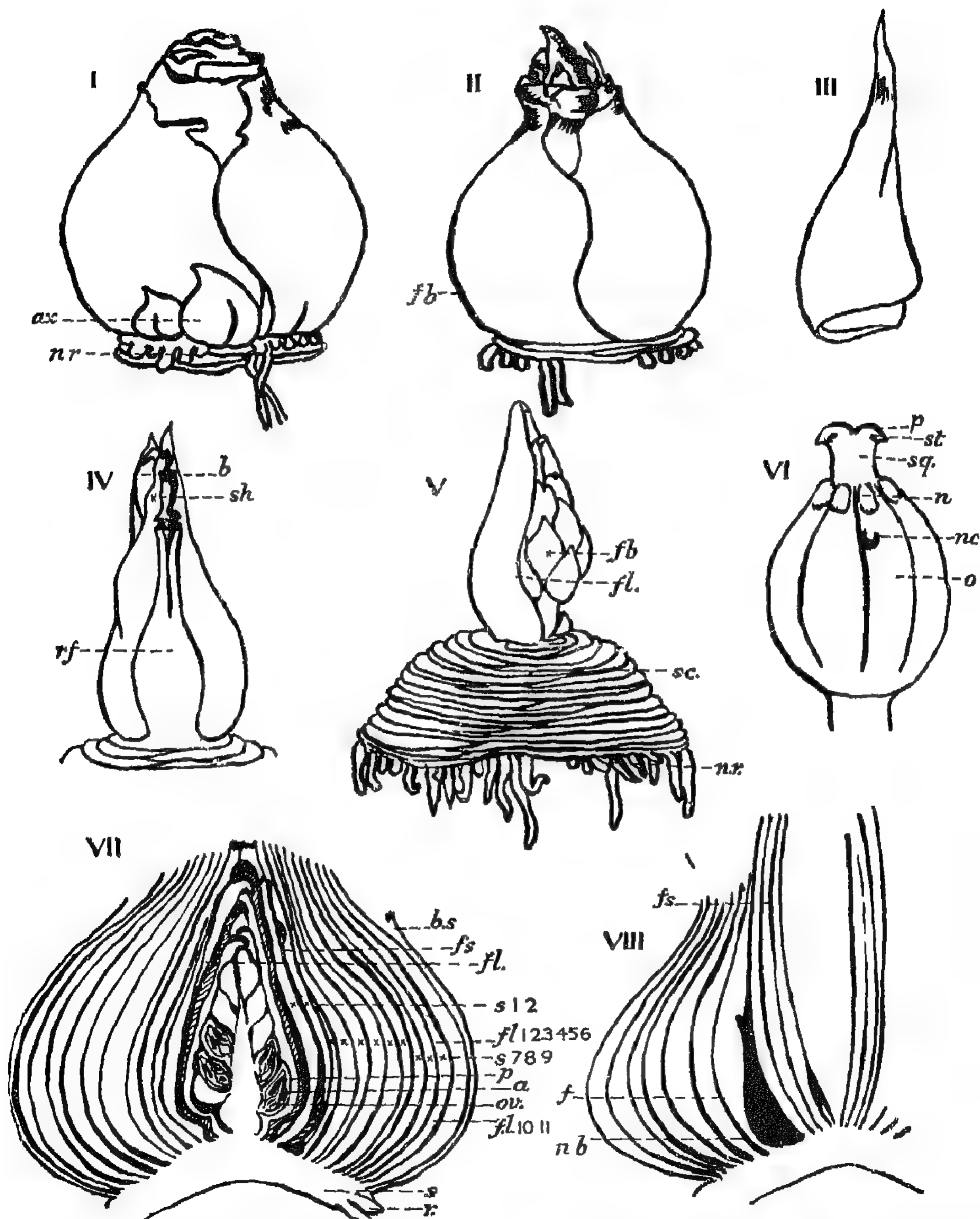
It will be observed that all these are therefore axillary buds From the position of the remains of last year's flower, already noticed, it will be inferred that the new bulb is usually formed from a bud near the centre, and close to the flower which has just bloomed Pressing aside the old flower stalk, it forms a new main axis which carries on the life of the plant.

If a bulb is planted over water and kept in a dark place, the ring of new roots will begin to grow, and above them, other rows. These will continue, straight and unbranched, until they have reached the bottom of the glass, possibly, before any signs of leaves appear. Then it will be noticed that the scales covering the apex of the bulb are being pressed slowly apart, and between them can be seen a small yellowish growth, which in a day or two reaches the rim of the scales. It becomes greener, until in a few days it has emerged as a strong, bluntly pointed, dark green bud, consisting of several leaves tightly folded one inside the other It grows slowly and steadily, a week or more may pass before there is any loosening of the leaves Then they begin to separate, and it will be seen that each is deeply hollowed out on the inner surface, while the tip forms a little hood. As has been seen in the bulb, the immature leaves are surrounded by the three sheaths and have to force their way through them to get out. The growth of the inner leaves causes each of the outer ones in turn to unfold, one edge of each leaf generally fitting into the curve of the one outside it. In a sturdy plant the leaves will grow to a length of 6 to 8 inches before the flowers open, and may be 1—1½ inches in breadth at the base. The leaf is thick and holds a good deal of liquid, if it is bruised this will be found to ooze out as a fairly dense sap. An ample water supply is therefore essential, and the roots must be well-grown so that they can obtain it, before the leaves and flowers grow. Since the flower head is heavy, the strongly developed roots are also needed to fix it firmly in soil The leaves draw up water along straight, parallel veins, converging towards the tip, which form distinct, fine ridges on the outer surface.

Presently, the flower head, or *inflorescence,* begins to appear, as a cluster of tiny balls, forcing its way out between the leaves It may be white, pale green, or already tinged with darker colour if the flower is a deeply coloured one It grows very slowly, keeping pace with the leaves, for it has to wait until the roots and the leaves together can provide it with sufficient food to nourish it, but if at this stage one is cut open, it will be found to contain already its essential parts, the stamens which bear the pollen and the ovary, although the flower leaves are not yet distinguishable As the stalk grows, and the upper part elongates, the flowers are separated from one another, and then one by one, from the lowest upwards, the beautiful bells open, becoming more deeply suffused with colour, or a purer white, as they unfold. Warm sunshine stimulates the pumping process by which leaves, stalks and flowers receive the water which distends them to their full size. The stalk goes on growing both in length and thickness until every flower is expanded.

The flowers are arranged in five rows in a clockwise ascending spiral. This can be seen by taking a piece of fine string and winding it round the stem above each flower in turn. The individual flowers are borne on short stalks of their own colour, each bent slightly downwards by the weight of the flower Immediately below each flower stalk is a tiny white or coloured leaf. A leaf formed below

PLATE VII



BULB I Brown scales removed · *ax*, axillary buds, *n r*, new roots II Fleshy bases formed last year (*f b*) III Sheath. IV Remains of flower (*r f*) *sh*, sheath, *b*, bud V. Flower bud (*f b*) *f l*, foliage leaf, *sc*, scars of leaf bases *n r*, new roots VI Ovary (*o*) *n*, nectaries, *st*, style, *sq*, stigma, *nc*, nectar VII Vertical section *s*, stem, *p*, perianth, *a*, anther, *ov*, ovary, *f l*, foliage leaves, *f s*, flower stalk, *s* 1 2, sheaths, *f l* 1 2 3 4 5 6, foliage leaves of last year, *s* 7 8 9, sheaths which surrounded last year's foliage leaves, *f l* 10 11, leaf bases formed 2 years ago, *r*, root, *b s*, brown scales VIII Vertical section of bulb after flowering *n b*, new bud, *f*, this year's leaves, *f s*, flower stalk

a flower is called a *bract*. The flower itself is a bell of six narrow, pointed floral leaves, joined about half their length to form a tube protecting the essential parts, with their free ends curved backwards These leaves are arranged in two rows They are not called petals, when all are alike, but *perianth leaves*. The tube is swollen at the base, then narrows to form a short neck

Take off one flower, with its bract, and examine it in detail. Hold the flower with the bract towards you and examine the outer ring (or *whorl*) of perianth leaves The bract lies exactly opposite to the lowest leaf of the outer row, and between the two lower leaves of the inner row, which alternate with the outer row

With a sharp penknife cut the flower tube open through the middle of the lowest perianth leaf At the mouth of the tube are six stamens, or pollen containers, each attached to one of the perianth leaves by a very short stalk just above the base Each can be seen to consist of two lobes opening inwards towards the tube They are covered with fine yellow pollen. Each grain of this pollen contains, embedded in its substance, two minute bodies called the *reproductive nuclei*. These must be conveyed to the ovules, and brought into contact with the egg inside them, before a new plant can grow One of the nuclei fuses with the egg to form the embryo plant, the other unites with a second nucleus in the ovule, and produces the food material contained in the seed, which enables it to grow.

The ovary lies in the swollen part of the flower tube It is round, and produced into a short thick stalk, the *style*, ending in three tiny ridges which together form the *stigma*, or surface upon which pollen is deposited It is the remains of the style and stigma that we have noticed in the developing Snapdragon and other fruits. The stigma, style and ovary together constitute the *pistil*. As soon as pollen grains are deposited on the stigma, they begin to grow, and absorbing food and water from the stigma, each sends a little tube down the style to the ovary, where it enters an ovule. The two reproductive nuclei then make their way down this tube to the egg and food-producing nuclei of the ovule

If the ovary is cut open lengthwise, it will be seen that a main axis or rod runs through it, which is continuous with the style and stigma It is through this that the reproductive nuclei reach the ovules, which can be seen attached to it by minute stalks This place of attachment is called the *placenta*. If an ovary is cut across, it will be seen that there are three chambers, each containing ovules attached to the central placenta

The majority of bulbs are found in the case of spring-flowering plants. Their value is that, by supplying the plant with a concentrated supply of food from their reserve, they enable it to grow and flower rapidly, so that pollination and fruit formation can take place before it is overshadowed by foliage or choked by undergrowth

THE LESSON

Four periods might be taken, one about the beginning of October for planting bulbs, a second on the plant before flowering, one on the flower and one on the bulb Between the lessons the children should have opportunities, in small groups and individually, of noticing the stages in growth and development The detailed study of the flower would be better taken from the Bluebell or Wild Hyacinth, when the flower is withering and the fruits are forming

I. Planting. Materials.—To a class of forty children at least four bulbs, having differently coloured flowers, two to be planted in a hyacinth jar over water, two in 5-inch pots of soil Small broken crocks for drainage, saucers to hold the pots, water and clean rags for washing pots Damped soil for planting

Tell the children what the bulbs are, and that if we plant them now they will flower

in the spring. We are going to plant two in pots of soil.

Let several children wash and dry the pots, saucers and crocks. If the pots have previously been used they should be scrubbed In the meantime, explain by a blackboard diagram how the bulbs will be planted (see diag) Other children can then place the crocks and soil in position, the crocks to a depth of 2 inches, about 1 inch of soil well pressed down, then the bulb, which should be packed round with soil, firmly pressed down with a thick, blunt stick, and covered to a depth of ½ inch.

Explain that bulbs would naturally grow in soil like any other plants, but in order that we can watch them grow, and especially the roots, we are going to plant some in clear glasses Let two children wash the glasses to make sure they are quite clean, others fill them with water to within ½ inch of the neck, and others place the bulbs in position A piece of charcoal in the water helps to keep it sweet Explain that if the bulb actually touched the water it would begin to soften and go mouldy, so we have a little space, but some of the water evaporates and keeps the air in it damp. Point out the old and new roots, if the new ones show Mark the level of water with a narrow strip of paper.

Other children may prepare labels on which the name and colour are printed, and the date These are attached and the plants are then put away It is explained that if we are to have healthy plants, it is best for strong roots to grow first, and that they grow better in a dark place. When we plant bulbs in the garden we put their own depth of soil over them and this keeps them dark If there are plenty of bulbs, one in a pot and one in a jar might be kept on the window ledge for comparison

An airy, dark cupboard will do for the bulbs in glasses Those in pots grow best if placed in a bed of ashes and covered to a depth of several inches, but any cool, dark place will serve Water well first, and if not buried, keep the soil well damped but drained

II. Prepare a large sheet of drawing paper by dividing it into three columns, for observations of the growth In the three columns note the date, the growth of the root, and the growth of the "shoot" (leaves and flowers) Each week the bulbs in glasses should be brought out and looked at, and any change entered The length of the roots can be judged approximately, the "shoot" can be measured with a ruler. Or squared paper can be used, a line drawn horizontally across the middle, and the length of the roots and shoot indicated diagrammatically each week, each square measuring or representing 4 in (Plate VIII.)

When the roots are well established the bulbs can be brought into the light. Opportunities should be made in arranging the Nature Study lessons, for the children in turn to make drawings showing the stages in their growth. Small groups can sit on the floor to draw them if there are no tables and the desks are not convenient to move.

When the leaves are well-grown and the flower is appearing, a second class lesson might be taken.

Material.—The children would have their own drawings, and the class record would be placed where everyone could see it. All the bulbs would be on the teacher's table.

Aim.—To recapitulate the stages of growth, and draw attention to the value of the plant's structures

III. Introduction.—Say that now we have watched our Hyacinth bulbs grow from the beginning, we will try to put together the chief things we have noticed.

IV. Ask what happened first Refer to the chart and to the children's drawings. Pick out and underline any new events. Make a blackboard summary, putting the date beside each event, and then noting how long each stage took, thus.

(1) Date. Roots began to appear.
(2) Date. Roots had reached bottom of glass.
(3) Date. Shoot, pale green.
(4) Date. Shoot had turned dark green
(5) Date Leaves began to open
(6) Date. Flower could just be seen.
(7) Date Colour of flower could be seen
(8) Date Flower stalk could be seen
(9) Date Lowest flower began to open.

The bulbs would naturally vary in the time taken

V. Questions.—Do you think it is a good thing for the plant to have its roots first? Why? How do we know that the roots take up water? Can we prove it? (Note any change of level in the water in the jar, which was marked) We noticed that the leaves grew next, and the flower grew only very slowly The flower cannot grow unless the leaves grow first, because the leaves as well as the roots feed the plant, but I cannot explain to you how they do it until you are older. Could we find out whether the leaves take up water as well as the roots? The children will probably suggest the same way as for the roots, i e. by putting some leaves in water, marking the level and noticing whether there is any change, and it should therefore be tried, but a better and quicker result may be obtained by cutting off one of the leaves and placing it in red ink, which in a day will have penetrated all the veins and coloured the leaf. The same thing can be done with a white narcissus, white hyacinth or other white flower Tell the children that the water is really forced up the plant, and by filling the leaves, stems and roots, enables them to swell out and so grow.

VI. Now notice the leaves. Let the children describe them, and the way they grew Draw attention especially to their smoothness (except for the fine ridges of the veins) and long narrow shape, and remind them how, at first, they closed over and protected the flower from rain. The narrow hooded shape enables the rain to run down them direct to the roots, not *inside* the leaves but *outside*, and so the water goes where it is wanted They are strong and not easily beaten down or injured by heavy rain. Compare them with the daffodil leaves (show if possible) and notice that here, in addition to the similar long shape, there is a bloom something like that on the plum. How would it be useful? (In helping to throw the water off, just in the same way.)

VII. Recapitulate these points by questions

The third period would be given to the flower, just as it is beginning to wither.

Material.—The pots of flowers already examined by the children, their sketches and wall sheet

VIII. Introduction.—The aim, to put together all we have noticed about the flowers, would be made clear The chart would be consulted, to see when the flower first made its appearance, and what stages it had passed through before it was fully open

IX. Ask the children what purpose a flower serves to the plant Count the flowers on each head and see how many there are Mention other flowers with many on one stalk, e g Snapdragon, Bluebell, Cowslip Explain that most flowers growing out of doors (as the Wild Hyacinths or Bluebells do) need to be visited by insects before they can ripen their seeds. Recall that, when drawing the flowers, the children could see a bunch of tiny yellow things closing in the tube of the flower Pass the pots quickly round so that they can be looked at again These are called stamens, and they contain a fine powder called pollen Remind the children of the ovary of the Snapdragon with its little ovules These ovules can ripen into seeds only if the

Date of planting | Date when roots appear | Date when shoot is 1" high | Date when bud appears | dates

Height of shoot in inches

Length of roots in inches

Sketch of bulb before planting -weight

Sketch of bulb when roots appear record weight

Sketch of bulb when shoot is 1 in high record weight

Sketch of bulb when bud appears record weight

Sketch of bulb when flower is fully open and date weight

Sketch of same bulb in Autumn following year and date

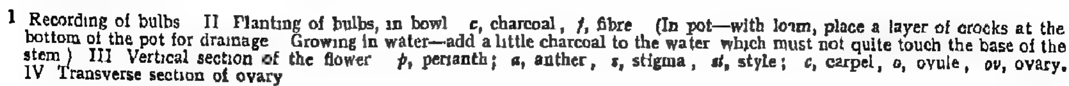
I Diagram to shew recording of Bulbs

II

III

IV

Diagram to shew planting of Bulbs



I Recording of bulbs II Planting of bulbs, in bowl *c*, charcoal, *f*, fibre (In pot—with loam, place a layer of crocks at the bottom of the pot for drainage Growing in water—add a little charcoal to the water which must not quite touch the base of the stem) III Vertical section of the flower *p*, perianth; *a*, anther, *s*, stigma, *st*, style; *c*, carpel, *o*, ovule, *ov*, ovary. IV Transverse section of ovary

pollen is brought to them, and it is better if it comes from another flower Now many insects, especially flies and bees, feed on pollen If an insect comes to a flower for pollen, it is likely that it will brush some off and carry it to another flower, and then the seeds can grow. So flowers which need insects to visit them and bring them pollen, usually have some way of attracting the insects, that is, of showing them that they have something good there. Now can you see why it is useful to the plant to have its flowers crowded together on a head? (Because many flowers clustered together are more easily seen than scattered flowers) Summarise this explanation on the blackboard, letting the children help to frame it.

Continue the explanation Many insects, especially long-tongued insects like bees, moths and butterflies, are very fond of sweet juices Some flowers make a sweet juice called *nectar* which attracts them, and in coming for the nectar (which bees can make into honey) they may also bring pollen or carry it away.

Cut open several flowers by a vertical slit down one side, to show the children the three drops of clear nectar which can be seen on the ovary, just at the base of the style These will be best seen in fresh flowers which have been bathed in sunlight for some time, and there may be no nectar under other conditions Usually it is better to avoid destroying living flowers or plants, but in this case, with plenty of bells, one can be taken from each plant without spoiling the inflorescence seriously Pin each flower on a cork mat The children can then see the ovary, the stamens, and pollen on the surface of the stamens and lying in the bottom of the flower tube Add the chief points to the blackboard summary.

Ask the children if they can think of any other way in which the Hyacinth may attract insects. They will probably mention the smell and the bright colour. Ask if they have noticed at what time of day Hyacinths smell sweetest, and tell them that flowers that smell in the evening, especially pale coloured or white flowers, are usually visited by moths Hyacinths growing out of doors would flower rather later, when there would be night-flying moths

X. Blackboard summary, formulated at the points indicated by selecting the best suggestions made by the children, somewhat as follows:

The Hyacinth flower.

Many flowers together attract insects.
Some insects eat pollen They may carry it to other flowers
The Hyacinth has nectar for insects, probably moths

The children might copy this summary

In the fourth period the bulb would be examined after flowering

Aim.—To see what a bulb is like inside, and how the plant grows from it

Material.—The bulbs An onion.

XI. The plan of the lesson would depend on how many bulbs were available If there were any to spare, some of the more responsible children might examine them for themselves, either before or after a group lesson, using blunt-ended scissors for easing and cutting away the covering leaves In any case, the examination of a bulb should be taken with a group of not more than ten children at a time, the rest being occupied with drawing or writing in connection with growing seedlings, goldfish or other nature studies which are going on

A section of ten children might be grouped either in a block of desks or in a ring, sitting round a low blackboard, so that they can all follow the teacher's dissection. The external appearance of the bulb would be noted, the three or four rings of new roots surrounding a bare patch, the irregular outer scales of the bulb, and the leaves and flower emerging from between the scales.

The teacher would then tell the children what she was going to do, and why (see Aim). She would remove the covering leaves in turn, and pin them in regular order on the blackboard, or fasten them with some strong gum to a sheet of brown paper. As each group is removed, she would draw the children's attention to their distinctive points, illustrating by blackboard diagrams Each set might be mounted in a separate row. She would draw the children's attention to the withered tips Finally she would point out the way in which the foliage leaves wrap round the flower stalk, their white, slightly swollen bases, and their position, surrounding the flower, in the centre of the bulb. If, in removing the leaves, buds are found, their position should be noticed

Children of this age cannot be expected to deduce for themselves the connection between the leaves and the bulb sheaths, nor can any process of reasoning arrive at the discovery, proved in the laboratory, that the bulb stores food The children should be told, therefore, that the leaves which have been removed are really the bases of last year's and the previous year's leaves, whose tips have withered away, leaving the brown scar they can see. They should be told that they remain to protect the bud inside from frost and rain, and that they are thickened because food is stored in them which is gradually used up by the growing plant, whose leaves in turn will form the covering and food for a new bulb. The present year's leaves will already be beginning to thicken at the base.

An onion should then be cut vertically through the middle, so that the bud in the centre can be seen A diagram of the hyacinth bulb similarly cut to show the flower stalk and the new bulb, may be shown and explained

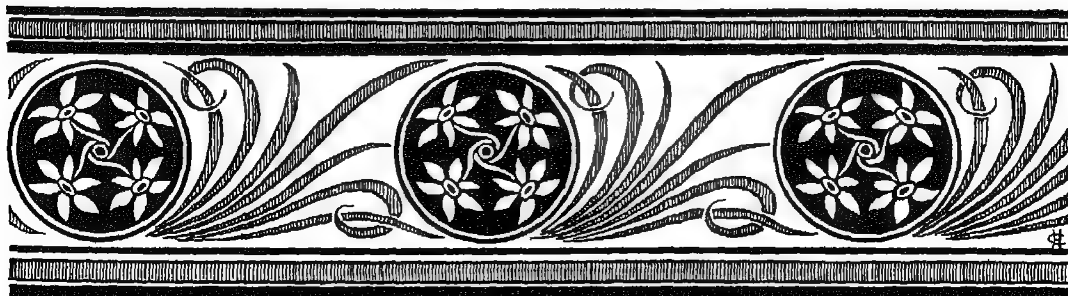
When each group has followed this dissection (probably two in one period), the main points should be recapitulated by constructing a blackboard summary as a result of questions This can be copied by the whole class.

XII. Blackboard summary.

Hyacinth bulb.

1 In the middle of the bulb there is a bud
2 It is protected by fleshy and scaly leaf bases, which have been green leaves. They contain food for the bud.
3. A new bud forms near the flower each year, and flowers the next year.

XIII. Further work.—If possible one or more of the bulbs which have flowered should be planted in soil out of doors, so that the children can see that the leaves go on growing for some time Later, a bulb can again be taken up and examined. It will be seen that the foliage leaves are becoming quite thick at the base. The children can be told that they are growing to make food, and storing it for next year's bulb. Look for thick, wrinkled roots amongst the finer ones. These are called *contractile* roots, and by their power of contraction, under natural conditions, they pull the bulb more firmly down into the soil, a little farther each year



X. THE GOLDFISH OR GOLDEN CARP



POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

FISHES belong to the lowest order of true vertebrate animals, that is, animals with an internal skeleton supporting the muscles, which consists primarily of a dorsally placed chain of small bones or *vertebrae*. The body of the Goldfish is somewhat spindle-shaped, forming a wedge which cleaves the water, then narrowing down to the tail end so that any tendency to backward suction which might be caused by the water rushing in, is reduced The chief swimming movement is made by a powerful sideways stroke of the tail and hinder part of the body, which sends it forward. Corrective movements of the tail fin, and perhaps other fins, prevent it from deviating from the straight course Gentler movements are brought about by the movements of the front pair of fins, the *pectoral* fins, which row it forwards by pressing backwards, or by "backing water," or pressing forwards, reverse the direction They are also useful in making upward and downward movements, in steering sideways, as they can move independently, and in balancing while the fish remains still. The upper or dorsal fin, the under or ventral fin, and the hinder pair, the pelvic fins, make delicate movements which seem to assist the rest The thin flanges of the tail, too, make slight movements independently of the strong main stroke The dorsal and ventral fins are concerned with keeping the body "right side up" in the water.

There is evidence that the two pairs of fins found in fish are the forerunners of the two pairs of limbs of all the higher animals In certain rivers which dry up periodically, leaving only soft mud or shallows, some of the fish use their paired fins for resting upon or shambling through the mud A Goldfish in shallow water will rest upon the bottom on its front fins.

Breathing in all animals takes place through a thin, moist membrane in contact with the exterior medium, air or water. In vertebrates this membrane is provided with numerous minute blood vessels. The red colouring-matter in the blood, *haemoglobin*, is able to extract oxygen from the air, which is circulated all over the body, where, by assisting in breaking down the tissues, it causes energy to be set free, which can be

used in the form of heat or for movement (*kinetic* energy)

In water animals, oxygen is obtained from the small quantity dissolved in the water. Fishes, which live in running water, are able to obtain a good supply, therefore if they are kept in captivity there should either be some means of aerating the water by forcing air in, or the water should be frequently changed Green submerged weeds help to supply oxygen

Breathing takes place through four pairs of much branched membranes supplied with blood vessels, called *gills*, arranged as fringes upon bony arches at the sides of the head where the mouth cavity joins the gullet Between the arches are curved slits, which pierce the gullet. Water is taken in by the mouth, which closes and forces it over the gill fringes or rays, (which extract the oxygen), then out by the gill slits. The slits are covered by a plate with a semicircular free edge directed backwards, the gill plate or *operculum* The regular opening and closing of the mouth and operculum is noticeable The inner edge of each arch is provided with sharp inwardly directed spines, the gill rakes, which act as a sieve to prevent food from passing out by the slits They direct the food down the gullet.

The fins are supported by finely jointed rods, bound together in bundles and branching out in single rows to the edge. Stretched over these is the fine membrane which, by offering a large resisting surface to the water makes their pressure effective for movement

The body is covered, except the head and fins, by rounded scales, with their hinder free edges overlapping one another, in a regular arrangement. These scales grow out from the skin, each in a tiny sac, and increase with age, so that concentric layers of growth can be recognised, as in a tree trunk or a snail's shell The outside is the last formed.

The eyes are nearly flat, placed at the sides of the head level with the surface There are no eyelids, so that they cannot be closed There are no external ears, and the internal ears are connected chiefly with control of balance, the part which is the organ of hearing in man has not yet been developed. The sense of smell is very keen, and seems to be the sense chiefly depended upon, though objects close to the fish, especially moving objects, are sighted, and they seem to be quickly sensitive to shadows.

THE LESSON

As it would be impossible to provide all the children in the class with fish to watch, those available had better be divided amongst groups of children, while others are busy with drawings and other records of bulbs and seedlings If four fish are provided, and the desks are arranged so that three or four children can watch each, a large class can have the opportunity of watching them in two half-hour periods. If more convenient the groups could sit on the floor.

An introductory lesson would deal with the making of homes for the Goldfish. Then during two periods different groups of children could watch them, helped by a slip of questions; finally, a period could be given to a class lesson

An alternative method would be for the teacher to take a group lesson with each set in turn, directing their observations by questions and discussion, and then letting them make sketches The first method is better, because it gives the children time and opportunity to make their own observations, to help themselves by drawing and to exercise their judgment in selecting what they will record

FIRST PERIOD

Aim.—To make homes for four Goldfish

Material.—Two straight-sided enamel bowls not less than 10 inches in diameter by 5-6 inches deep. A dish of sand, ready

washed Some water weed (Canadian pond weed and Starwort are readily obtained and quite good) A bowl of clean water A watering can or large jug of water which has stood overnight. A small jug or cup A little Epsom salts and common salt

Introduction.—Ask the children if they would like to keep some Goldfish, and tell them that they are going to have four, but that it is necessary to make a home for them beforehand. Tell them that most of our Goldfish come originally from China or Japan, where they live in fresh-water ponds and lakes, so that naturally they have plenty of water which is always being changed Therefore we should give them as much space and water as we can. We must try to make a home for them as much like their own as possible

I. Ask the children if they have watched either sticklebacks or minnows (give local names) Let them tell you all they can about the kind of place they are found in and what they do Sometimes they remain in the sun for quite a long time, at other times they dart about among the weeds that give them shelter. The bottom of the pond is muddy or sandy. Then for our Goldfishes' home what sort of conditions ought we to have?

(1) It should be large enough and deep enough to give them plenty of room.
(2) It should have mud or sand at the bottom Sand is easier to keep clean.
(3) It should have water weeds growing in it, for shade and shelter (Largely for aeration, but the children do not know this)

II. Show the children the two bowls, and place them on the table, so that all can see what is done The rest of the material should be conveniently near Show the sand, and explain that it has been washed by pouring water on it and pouring it away several times. The weeds will need washing Let two children wash them in a pail of water, and two others make them into bunches of about six pieces, tied together at the lower end with cotton. The cotton is then wound round a small stone which is pressed into the sand, and so the weed is fixed and ultimately rooted. Instead of a stone, the stems can be nipped in a doubled strip of lead (2 inches × ½ inch is large enough).

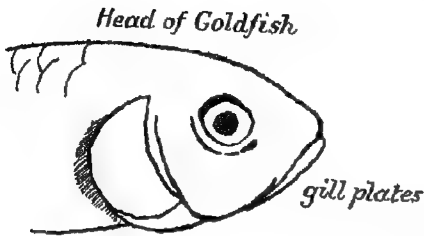
In the meantime, two other children can be arranging the bed of sand about 1 inch deep in each bowl. Employ as many children in turn as possible. Let others plant the weed, two or three bunches in each bowl. These should be arranged so as not to obscure the view The larger stones are arranged as a little cave to give additional shelter (If the bowl is to stand in the window, it should be protected against too strong sunlight by a paper screen)

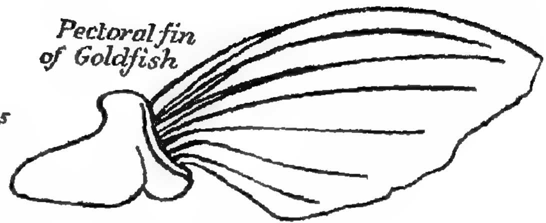
The bowl is then very carefully filled by pouring water from the little jug, letting it break its fall against the side of the dish so as not to disturb the sand If it is not quite clear it can stand until the next day, if fairly coarse sand or gravel is used it does not usually rise It can be cleared by standing the bowl in a sink and allowing water from a tap to trickle slowly in and overflow for some time, then the surplus is removed It should always stand long enough to reach the temperature of the water the fishes have been kept in. A sudden change of temperature may cause a "chill" and render them liable to a fungoid disease

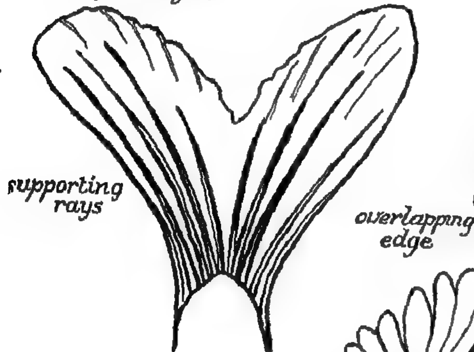
Tell the children that the water in ponds is not quite tasteless like tap water, because it has passed over rocks and through the soil, and dissolved what we call *mineral salts.* These are good for the health of the fish, so many people put in a little Epsom salts, or sometimes ordinary salt to make up for their absence. Add a saltspoonful of each to the water

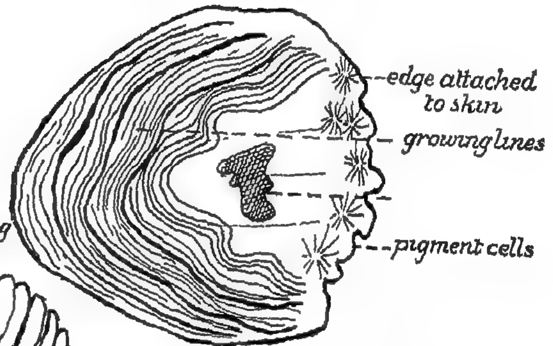
III. Care of the fish.—Arrange that all the children who wish may look after the fish for a day in turns, and make a list with

PLATE IX


Head of Goldfish
gill plates


Pectoral fin of Goldfish


Tail of Goldfish
supporting rays


edge attached to skin
growing lines
overlapping edge
pigment cells
Scale of Herring


gill rays
gill arch
gill rakers
Gills of Herring

dates Then explain what should be done Each day a good deal of the water should be baled out with a small jug, and fresh added, *which was drawn ready the day before.*

The fish can be fed on tiny worms, scraped meat, or ready-prepared fish food or ants' eggs. It is best to give variety, with some fresh food A small pair of forceps or scissors is best for giving them the meat, which should be snipped off and fed to them individually by dropping tiny pieces (¼ inch) in front of them. Never leave any uneaten food in the bowl, or it will attract a fungus which may kill the fish A small muslin net on a cane or galvanised wire frame should be made for skimming the surface, or a little sieve can be bought

Once a week the fish should be put in another vessel while the bowls are drained, their sides sponged, and they are refilled (This is best done by the teacher) If a tap and some rubber tubing are available this can be done by siphoning without disturbing either the fish or the bottom An occasional brine bath is good, especially if the fish show signs of lassitude or lose the brightness of colour Any fish attacked by fungus should be isolated. Brine baths may cure it

IV. Summarise the main points in the care of the fish.

V. Record.—The children can draw the "home" to show how it is arranged, labelling the contents This may be done in a subsequent period while other children are studying the fish.

In the next two periods, each group in turn, after having a minute or two to watch the fish, would be given the following list of questions, the second part only being written as a record

(1) Notice all the different movements the fish makes How does it swim forwards? sideways? up and down? Can it swim backwards? What other movements does it make? Tap the glass Do you think it can hear? Wave your hand over the top. What happens? Drop a tiny bit of food just in front of it. Does it seem to see? What happens when you touch it very gently with your pencil? (Touch head, body and tail, once only)

(2) Make a drawing to show all the parts of the fish you can see. Write beside each part anything it does

Have the questions read aloud to be sure all the children understand them, and know what to do Help only if it seems absolutely necessary. Change the groups halfway through.

THIRD PERIOD

Aim.—To discuss what the children have been able to see, and to raise new points.

Introduction.—Let the children take out their slips of questions, and their own records and tell them what is to be done.

I. Let each question be read in turn and the answers be discussed

1 **Movements.**—Write the word on the blackboard. The use of the tail and front pair of fins should have been grasped, as outlined previously

Draw attention to the structure of the fin (blackboard diagram) stiffened to strike the water and so push backwards against it, and drive the fish forward (See foot of Plate XI)

Speak of the shape, and its value in cutting through the water, cf. a boat, a bird's body in air, airship and aeroplane.

2. **Movements of mouth and gill plate.**—Ask what the children think the fish is doing (probably drinking) Tell them that we cannot really see what is happening when it opens its mouth regularly all the time, but that it has been found that this is its way of breathing We breathe through our noses, and through our mouths sometimes,

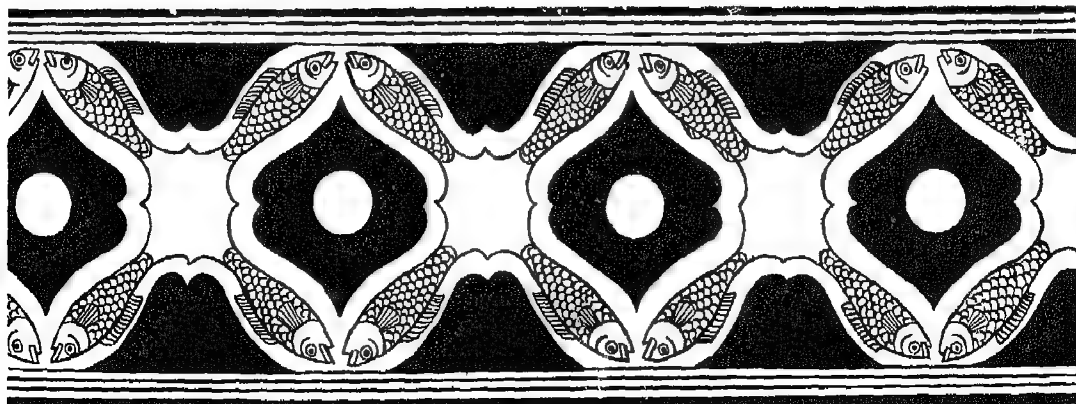
if we have been running hard When we do that, we take in air We need fresh air in order to live, and if we were under water where we could not get it, we should drown. But there *is* some air in water, and fishes can get it out They take in water, and it runs out again through the plates we can see at the sides of the head, and while it is flowing through, the air is taken out of it, so that the fish can use it to live.

3. **Senses.**—Collect the children's observations. They will have seen that the fish can find a little piece of meat some distance away Tell them (when the other senses have been dealt with) that the sense of smell is very keen, that the fish can smell bad water and avoid it, and also smell things a long way off as scents are quickly carried through water Many fish live practically in the dark, when their eyes would be little use to them, and most fish keep largely in shadow. Down in the deep sea the fishes and other creatures move very quietly, and there are probably few sounds to hear So that smell is more important than anything else Draw attention to the pair of hood-shaped nostrils directed backwards over a pair of little pits just above the tip of the snout, these are where the sense of smell is located. (The nostrils are *not* connected with breathing)

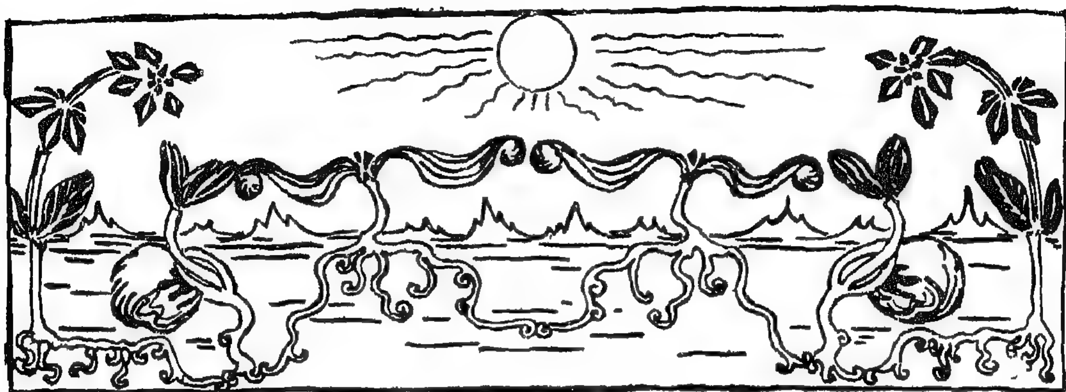
Draw attention to the silvery-looking line along each side of the body, which can be seen in certain positions This probably helps them to feel movements (vibrations) in the water

The scales.—Let the children describe the arrangement Mount a few herring scales by gumming them on to black paper, so that these can be passed round The children can see the rings on the scales, and the part which has been covered by others Notice how smooth and flat they lie, so that they do not catch the water and hinder movement (The eyes, too, are flat) The body of a fish feels slimy The slime and the scales probably protect the skin against disease, and they make it slippery to catch, so protecting the fish against other fish, birds such as ducks and herons, otters and water rats

II. Keep the fish for further observations, especially for the children to look for the nostrils and *lateral line* (line down side).



XI. PLANTING SEEDS



POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

ALL the seeds required may be planted during one period, or the process may be spread out and each planted in relation to a particular lesson Four- or five-inch plant pots, shallow wooden boxes, some jam jars and narrow-necked potted meat jars will be needed For planting, use a good sifted soil if possible. Mr T. C. Dymes, writing in *School Nature Study*, suggests that for the seeds of wild flowers the top inch of each pot should be filled with baked soil, to prevent undesired weeds from flourishing at the expense of the selected seeds

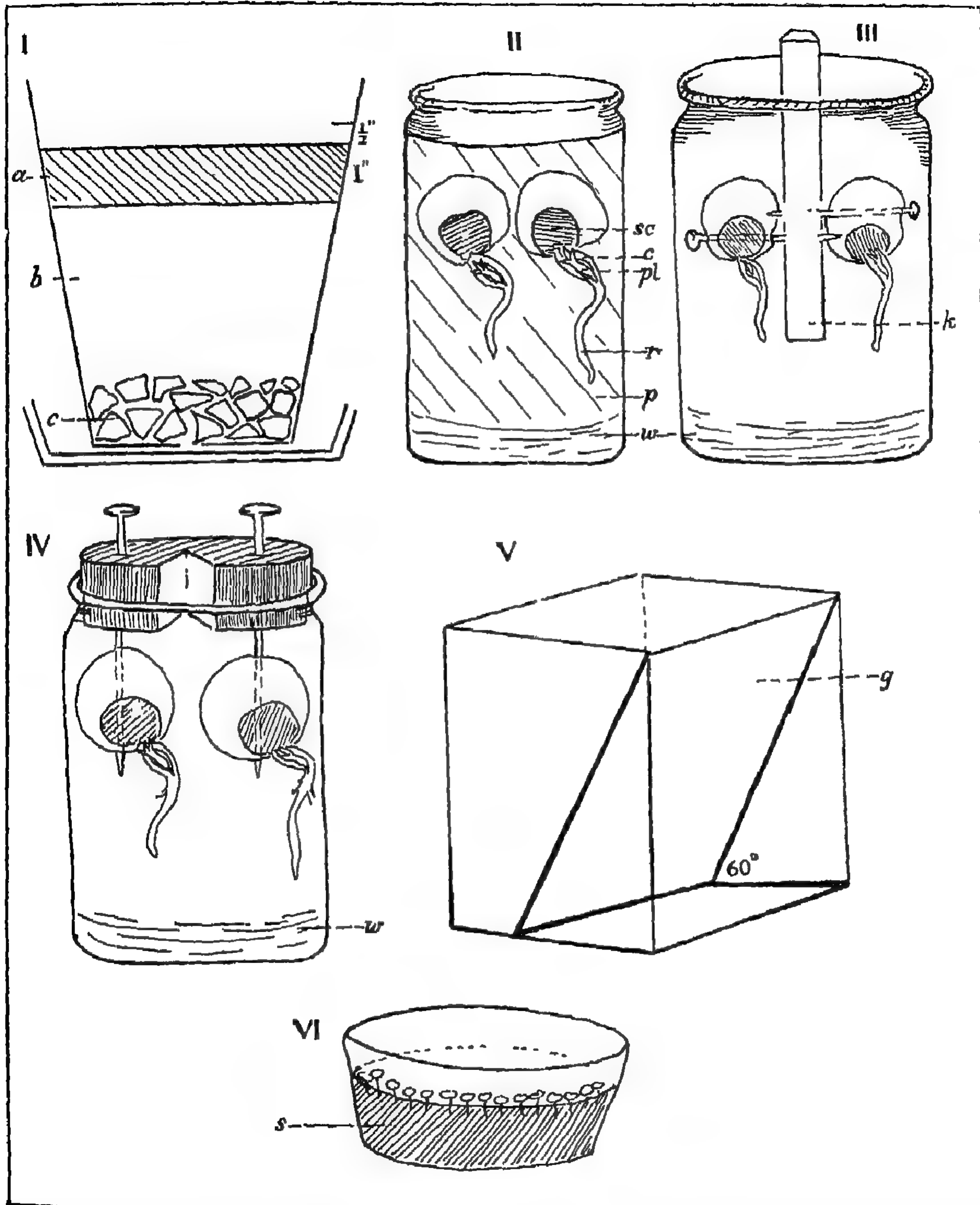
In connection with the series of lessons, the following seeds should be planted· Snapdragon, Plum, Sycamore, Horse Chestnut, Goose Grass, and any others selected from the hedge Since under natural conditions seeds plant themselves as soon as they are ripe, and remain in damp soil and leaf mould through the winter, it is usually good to plant them in the autumn. But if they cannot be kept damp and protected from frost through the Christmas holidays, it is better left till January

The smaller seeds, such as Snapdragon and Goose Grass, may be planted in drills in small boxes, with holes bored in the bottom and a layer of coarse gravel or small broken crocks for drainage A sheet of glass or thick paper placed over the top helps to keep them damp, but must be lifted frequently to give them plenty of air.

The larger seeds may be planted in pots, also provided with proper drainage. Four or five Horse Chestnut or Sycamore seeds may be planted in each pot, each one should have a wooden plant label, or a flag label, for the name of its owner, and the little group of children may combine to look after the pot It is essential to make the conditions as natural as possible, or children get the impression that certain seeds, grown in school, should be grown in queer ways, and dissociate them from the ordinary life of healthy plants Grow some in the garden if possible.

For the sake of seeing the growth of the whole plant, however, it is useful to grow some of each kind in glass vessels. The large seeds can be grown in jam jars, lined with a sheet of blotting paper which must be kept damp (It is put in dry) If a

PLATE X



I Method of growing seeds in pot—small seeds on surface with sprinkling of soil over, larger seeds with ½ inch soil above c, crocks for drainage, b, sifted garden soil, a, baked soil II Horse Chestnut seeds growing in a jar lined with blotting paper (p) w, water, pl, main stem or plumule, r, main root or radicle, sc, scar, c, stalks of cotyledon splitting III Horse Chestnut seeds pinned on cork, wedged in sides of jar (k) IV Horse Chestnut seeds suspended from cork from which a segment has been cut to admit air (long pins are used) V Box with glass plate (g) fixed in at 60° VI. Snapdragon or Goose Grass seeds growing in damp sand (s)

little water is kept in the bottom this will be drawn up, but once a day the top part also should be damped Horse Chestnut seeds can be grown over water in narrow-necked potted-meat jars so that they rest in the neck or on the rim. It is best to let these germinate first in moss or fibre in a bowl, and put them over water when the root is long enough to reach down to it The seed must not touch the water, but should be damped in the early stages Yet another way is to fix the seeds by a pin to a cork, so that they either hang down into a jam jar or are on the side of a sheet of cork wedged in the mouth They are, however, rather liable to go mouldy through the wound opened by the pin

To display the growth of roots of the smaller seeds, a wide potted-meat dish may be filled with fine damp sand and the seeds planted round the edge, so that their roots will show against the sides All glass vessels should have a sheath of dark paper to keep the roots in darkness, which can be slipped off to look at them. Small seeds may also be grown in shallow, unglazed earthenware saucers, in damp sand, damp sawdust, coconut fibre or sifted soil

A useful piece of apparatus for displaying the root systems of seedlings is a wooden box (a small margarine box) about 8 in × 10 in × 6 in with one of the large sides knocked out and replaced by a sheet of glass, sloping inwards towards the base at an angle of about 60°. This can be kept in place by narrow strips of wood nailed against the two short narrow sides, which are used as uprights The oblique glass plate then forms the front of the box It is filled with soil and the seeds planted The glass side is turned away from the light. The roots press against it and are easily seen

THE LESSON

If a lesson is devoted to the planting of all the seeds at the same time, the teacher will have to plan beforehand what small groups she will be able to employ Spread plenty of newspapers and let the work be done on desks or on the floor. If it is fine weather, the planting in pots might be done in the playground Some of the children might sift soil beforehand, and they might take their pots home to scrub. If baked soil (prepared beforehand) is used for the top layer, an old saucepan or metal tray can be used over a low gas burner, and the soil constantly stirred with a stick, or it can be placed in a hot oven. It must not begin to burn or its nature will be changed.

One period would be given to planting seeds in soil For forty children, ten plant pots for Horse Chestnut and ten for Sycamore seeds would be needed. Every child could either arrange the drainage crocks or fill the pot with soil. Each could plant his own two seeds and write his own labels. The seeds could be on the table and the children could get them as they were ready. The pots could be given out, one to each desk. The teacher would explain what was to be done, using a blackboard diagram. If the soil is arranged in four heaps on newspapers on the floor, and the crocks similarly at the other side of the room, so that the children can get round, they can take what they need in an orderly way without crowding Each child should show the teacher the pot with the drainage arranged before passing it on to have soil put in The soil should be pressed well down before the seeds are planted Dusters and the means of washing hands afterwards are of course necessary.

When this has been done, one or more shallow wooden boxes should be prepared in front of the whole class, children carrying out the processes at the table. Shallow grooves can be made with a ruler and the various small seeds planted, each row being labelled A box might be kept ready prepared for any seeds the children want to try, for instance, orange, grape, hawthorn, rose-hips.

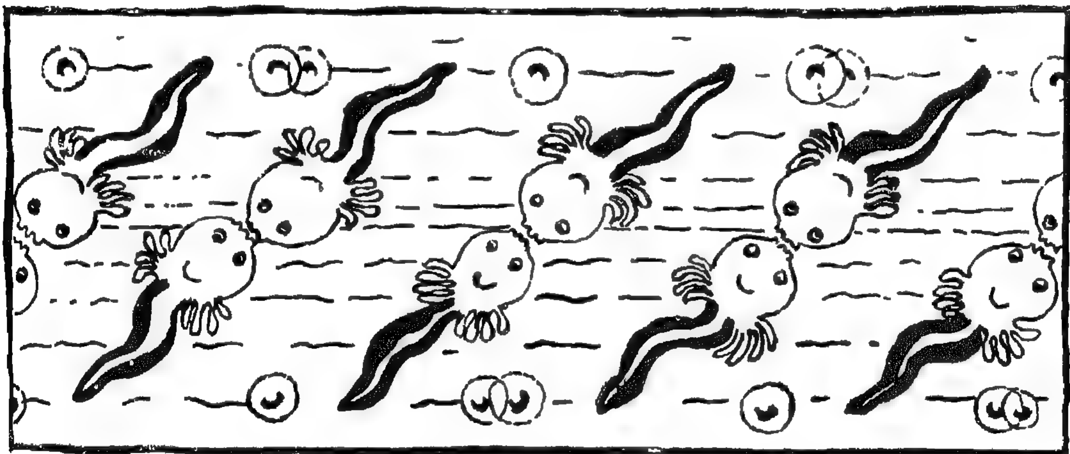
In a second period, the "artificial" growing of seeds might be prepared for. The teacher would first of all explain the object

of using glass vessels, so that the roots could be seen, and the absence of soil, so that the plants could be taken out to look at more closely Each type decided upon would then be set up in front of the children, using their help as far as possible

Further work.—The children would watch the growth of all the seeds, make dated and labelled drawings of their own seedlings, and of any others that give additional points; for instance, the roots of both Sycamore and Horse Chestnut may be drawn for comparison

Growth of a selected seedling might be recorded graphically as a classroom record by marking a horizontal line on a sheet of paper, say 3 feet long by 10 inches high, to represent the level of the seed, and pasting a series of dated drawings along this line The children should by this time be able to measure in inches and to make drawings of large seedlings approximately accurate in size.

XII. LIFE HISTORY OF FROG



POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

FROGS are called Amphibians, because they spend the first part of their lives in water, breathing dissolved oxygen like fishes, by means of gills, and in the adult phase they breathe atmospheric oxygen and live mainly on land, though they are limited to damp places because they still breathe partly through the skin, which must be kept damp They show in their individual lives the transition in habit and structure which must have taken place in all the races of higher vertebrates when they passed from the water to dry land The name Amphibia indicates dwellers in "both" worlds

Frogs lay their eggs in large masses in shallow water from late February to early April. They are fertilised by the male as they enter the water. This process is called spawning The same thing happens in fishes Each egg is nearly 2 mm. in diameter, and has a black pole which is uppermost and a white pole which remains underneath It is surrounded by a gelatinous mass which swells on entering the

water, and merges with the adjacent ones This is not edible, as some people imagine, but serves to space the eggs so that they do not press upon one another and so become deformed. It ensures that each has sufficient light and air as it buoys them at the surface of the water. It makes all the eggs less liable to be washed away than if they were separate, and it possibly serves to prevent them from being eaten, as it is slippery to catch hold of

The eggs begin to develop at once, becoming somewhat oval by the end of a week, and the head, body and tail can be recognised by the tenth day The tail grows rapidly longer, and three pairs of small tufts, the first gills or breathing organs, grow outward from the sides of the neck Three or four days later the tadpole will be seen wriggling about in its mass of jelly, and eventually it burrows a hole and bores its way out, through both the inner envelope and the jelly It is then less than $\frac{1}{4}$ inch long

It has at first no mouth, but for a day or so attaches itself to weed by means of a little sucker or cement gland just under the head Until its mouth breaks through, it feeds upon the yolk which it has absorbed from the egg by growing round it. It then breaks away, and begins to feed on the water weeds. The mouth is wide and horny, with rasplike projections on the lips It eats ravenously At a little later stage the long intestine coiled like a watch spring, which is capable of digesting a large quantity of vegetable food, can be seen through the thin body wall on the under side. The projecting end, and the faeces, are often mistaken by inexperienced observers for the beginning of the hind legs This projection is, however, in the middle line The eyes and nostrils appear shortly after the mouth.

At about the same time as the mouth, four pairs of gill slits appear perforating the pharynx to the exterior, these can be seen with a good hand lens, but would not be seen by children They would, however, notice that the first-formed tufts of external gills disappear This does not take place until the second set, or internal gills, are formed These are fringes on the edges of the gill slits comparable to those of fishes, so that the tadpole is at this stage, a true fish A fold of skin grows backwards over the gill slits forming an operculum, opening only by a small spout which can be seen protruding slightly on the left side. This is complete about four weeks after hatching when the tadpole is about $\frac{3}{4}$ inch long

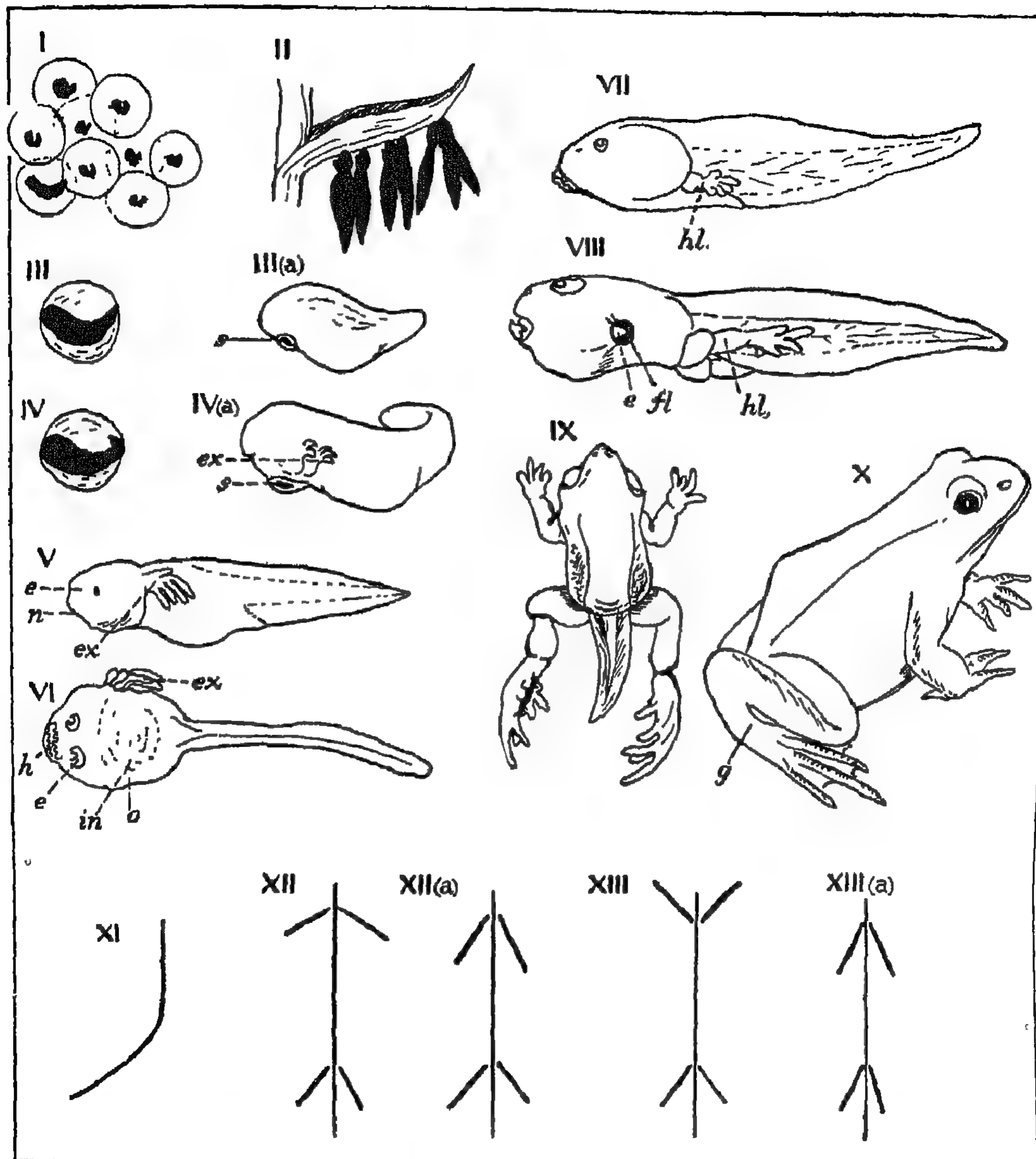
The fish-like character is further indicated by the presence of a broad delicate fin situated along the middle line, passing from just behind the head, round the tail to the hinder opening of the food canal This greatly assists the tail stroke by which the tadpole swims It is the condition still found in very primitive fishes, though they are all provided with additional paired fins (except the Lampreys, which are regarded as even more primitive than true fishes). The tail is very muscular, as it is in fishes.

At about four weeks old, or even earlier, the tadpoles seem to thrive better if provided with some animal food, either tiny "water fleas" and worms, or raw meat They grow very rapidly, and at seven or eight weeks begin to change from black to a light yellowish brown speckled with very dark brown, more like the colour of the adult frog

In the fifth week the "buds" of the hind legs can be seen at the root of the tail In the seventh week the joints can be seen, and in the eighth the toes The front legs are also formed, but are still hidden by the operculum

At about eight weeks old the tadpoles begin to come to the surface to breathe by using their newly formed lungs, though they still use gills as well Gradually the lungs take the place of the gills, blood is withdrawn from the gills, and they shrivel up. It will be seen, therefore, that internal preparations are being made for the adult life before the actual change takes place They may then be $1\frac{1}{4}$ to $1\frac{1}{2}$ inches long

At about eleven weeks old the tadpole throws off its infant (or *larval*) skin, and a



FROG I Spawn II Newly-hatched tadpoles clinging to a water weed by means of sucker (shown in III [a] *s*) III Embryo before hatching, surrounded by jelly mass III (a) Embryo as in egg (Fig III) *s*, sucker IV Embryo ready to hatch IV (a) Embryo as in egg (Fig IV) *s*, sucker, *ex*, external gills forming V Early tadpole, showing *e*, eye, *ex*, external gills, *n*, nose (side view) VI View fron ... *ws*, *in*, intestine, *ex*, external gills, *o*, fold of skin covering the gills on right side. VI ... ung to form VIII View from side *hl* hind limbs formed, *fl*, fore limb developing, ... X Frog *g*, long hind leg

GOLDFISH—swimming strokes XI Tail stroke to left for strong movement XII, XII (a) Position of front fins for gentle forward movement XIII, XIII (a) Position of front fins for backward movement

frog-like body emerges, much thinner than that of the tadpole, with a high bony ridge on the back, larger eyes, wider mouth with no horny lips. The front legs are now revealed. All that remains is to get rid of the tail, which, in the economy of Nature, is not shed, but *resorbed* into the body, thus providing it with a certain amount of substance

But these final changes will not take place unless the tadpole can climb out upon dry land. If no land is provided, it must remain for ever a tadpole, and eventually die In captivity the best way is to put the tadpoles (a few only) into a shallow, unglazed plant-pot saucer containing water, and bank it round with turf, arranging stones so that the tadpoles can climb out of their saucer. The home described for frogs is quite suitable, but an easy slope must be provided

THE LESSON

I. The life history of tadpoles can best be treated quite informally, since they must be kept under observation for eleven or twelve weeks If possible each child should have a small quantity of spawn in a 2 lb glass jam jar Each jam jar should contain a little Canadian pondweed In addition, it is a good thing to put a quantity of spawn in a large shallow bowl, with weeds and some of the mud of the pond. Enamel or earthenware bowls are satisfactory. When the tadpoles hatch, the jelly should all be removed or, in the confined space, they will be suffocated in it. The tadpoles kept in the large bowl can be watched in turn by the children. Their habit of "grubbing" in the mud very busily will be noticed. In this way they find a good deal of minute plant and animal food Those in the bowl will probably grow more rapidly than those in the jars, if fed in the same way, while if, at about the eighth week, fresh ones are brought from the same pond, they will probably be still larger, owing to the greater quantity of food available (though it is not possible to be quite sure that they were not hatched earlier).

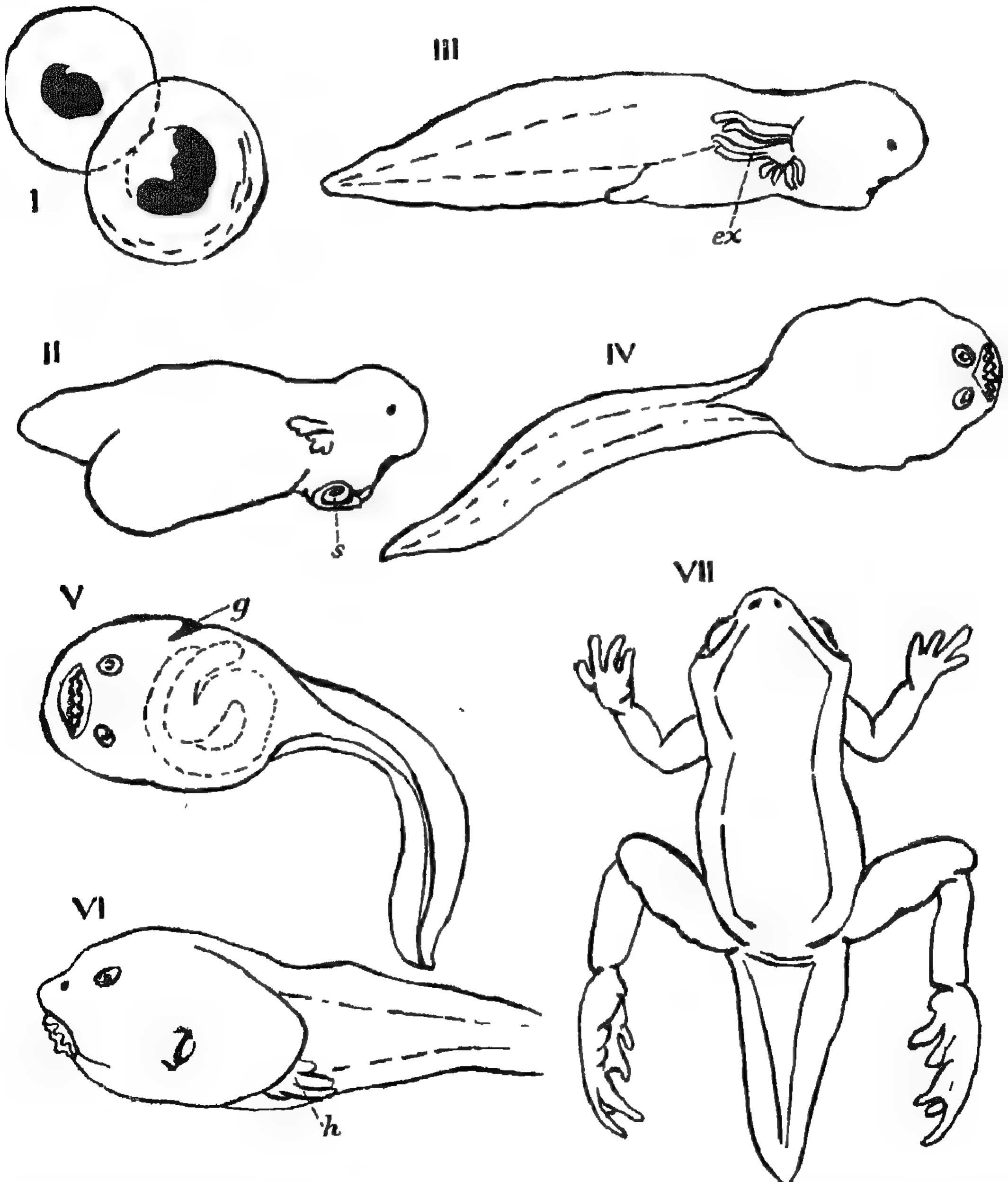
The date when the spawn is found should be recorded, and all the dates on which new stages occur. These are best entered on a wall chart. The children may either draw the tadpoles at various stages, or cut them out (free cutting *without* an outline) in black paper which can then be mounted A frieze could be made by mounting them all on grey or greenish paper. They would be cut out considerably larger and this often helps to secure a better shape and better detail. Without attempting any scale at this age, the children should try to show relative sizes as they progress Each drawing or cutting should be labelled to say what it shows This work could be interspersed with observations on other subjects, several things being examined in one lesson Some of the observations might then be collected together in one period, while the later ones might be taken at the same time as setting up a home for frogs and starting observations upon them

II. In the lesson or lessons which summarise the work on tadpoles the following points should be made clear

Development.

(1) Eggs or spawn Use of jelly
(2) End of a week (if spawn is just laid) tadpoles can be seen developing as little oval bodies.
(3) End of a fortnight, they hatch and attach themselves to weeds Describe the sucker
(4) A week after hatching, the body and head together have become round (or nearly so), and the tail long and thin. A day or two later, the tail fin is plainly seen The gill tufts (external) are quite clear. The tadpole is about ½ inch long
(5) After four weeks, the gill tufts cannot be seen. Explain that new ones are formed, covered in by skin The spout can be seen Explain that the

PLATE XII



I Eggs II Newly-hatched tadpole *s*, sucker III Tadpole breathing by external gills (*ex*) IV Tadpole with no gills showing V Tadpole from underneath showing coiled intestine and gill spout (*g*). VI Tadpole from left side showing hind limb developing (*h*) VII Tailed frog showing fore and hind limbs

tadpole is now breathing like a fish, by taking in water which comes out at the spout. It is nearly an inch long.

The accompanying outline sketches illustrate the type of blackboard diagrams which might be used at this stage to emphasise these points

(6) Hind legs begin to appear They probably will not be noticed till almost fully developed, about the seventh week Tadpole 1 inch or more long.
(7) Tadpole getting shorter Ninth or tenth week.
(8) Cast skins *may* be found Change to frog-like body, eyes, mouth. Long hind legs and webbed feet Tail much shorter
(9) Complete frog; tail gone

Habits.

(1) Clinging to weed by sucker.
(2) Swimming and feeding on weed "Wriggling" through water Later, as it gets larger, tail stroke can be clearly seen
(3) Begin to eat meat and later, ants' eggs Burrow in mud for food Still eat weeds—seen to graze or rasp, using lips like a nutmeg grater
(4) Begin to come to surface occasionally about eighth week
(5) Begin to crawl on to stones placed for them in new home
(6) Leave water altogether as little frogs. Jump

If the class is divided into two teams, whose members in turn ask the others questions on either life history or habits, most of the facts will be brought forward, and the teacher can fill in any gaps or amplify where it is desirable, at the end.

III. The Frogs' home.—Two frogs could be set up in homes Wooden boxes are suitable, with all but a framework of the lid and two sides replaced by fine wire netting (¼ inch mesh); or the box may be turned sideways, so that the lid acts as a door, this can have a panel of wire netting, and the box can be painted white inside so that its contents can be easily seen. If possible a zinc tray should be fitted inside for easy cleaning (a sheet of perforated zinc can be bent up at the edges without tools) This should be filled with sods of grass, cut short so that the frogs can be easily seen, but with one or two longer tufts to give them shelter. A large shallow flower-pot saucer (9 or 10 inches in diameter) of water makes a pool, set into the grass. As before, let the children arrange the home and feed the frogs The grass will have to be kept watered and the water in the pool renewed The tray can be removed and the grass watered from below The frogs will usually eat mealworms and small earthworms

The box might be partitioned down the middle, and one side set up with very light surroundings, white paint, very short grass and no shelter, or light-coloured stones and grass, and the other painted deep green, with plenty of grass and shade If two frogs which are nearly alike in colouring are introduced, in a few days the one in the light half will have become much paler and yellower in colour, the other much darker. If they are now reversed, the opposite change will take place in each. For the children at this age, it is probably sufficiently interesting to see this happen, without any explanation, but the change is due to the action of light on nerve-endings in the skin which control the pigment cells. These are branching cells containing colouring matter Under the influence of light they contract and withdraw their colour, while in the absence of light the colour is allowed to spread extensively and the skin assumes deeper tones.

IV. The chief points for the children to notice in watching the frogs are

Habits—Feeding Fondness for sitting in the water

Jumping. springing off the long hind foot with the knees bent.

Movement of the eyes response to light, (*a*) what part of the home they like to be in, (*b*) effect of a flash light, (*c*) response to hearing· tapping and whistling might be tried, (*d*) response to smells: various strong-smelling substances, e g methylated spirit, ammonia, might be brought near the cage (not near enough to cause strong irritation). These little experiments are best carried out by the teacher with a small group of children

Structure —The difference between the front and hind legs, and the relation to movement The absence of nails (which are skin growths) The soft, moist skin, no scales to protect it. (Used for breathing. Frogs cannot cross salt water because the skin cannot stand the effect of the salt, so they are not found in islands far out to sea) The eyes, wide apart and high up so that they have a wide view. Possibly the tongue may be seen to shoot out for food. It is attached just inside the lower jaw, not at the back of the throat. Periodically the skin is cast

V. As a record of observation on the Frog, the children might try to write a connected account of what they had seen. They would naturally pick out the points that had interested them most, and not write very much The frogs might be kept for about a fortnight, and then let go. It is possible to get them to spawn if taken early enough and comfortably housed. There must in this case be no attempt to disturb them for at least a fortnight when they begin to cling together They will probably not want food The male is distinguishable by his thin body and swollen thumbs.

XIII. THE AWAKENING OF THE HEDGE



PREPARATION

IT is unlikely that there will be suitable weather for taking a large class of children out to see the hedge so early in the year, though if it is near at hand and it is suggested to them, some children may be able to go to see for themselves.

The teacher should visit the hedge and find out.

(1) What plants have kept green all the winter

(2) What new growth is beginning (*a*) from underground stems or roots, and (*b*) from germinating seeds

She should collect enough of (1) to be labelled and placed on her Nature Table, so that all the children have a chance of

seeing them. They might include such plants forming part of the hedge as privet, fruiting stems of ivy, bramble, the first is sometimes an evergreen, the second always, the third generally keeps its leaves only in sheltered positions This habit might be discussed Under the hedge, sheltered by it, there might be the ordinary small-leaved ivy which is evergreen, and some such plants as dead nettles, ground ivy, and violets, if the position is very sheltered. This brings out the point that the shedding of leaves, or the withering of all parts above ground in herbaceous plants, is a protection against bad weather, and in particular, against cold winds which would dry up all the water from the plants and so cause them to die, a point previously explained.

Examples of (2) (*a*) and (*b*) would also be put on the table (2) (*a*) should have the root or underground stem attached. This would be a day or two before the lesson, and the short discussion would be incidental to drawing attention to the material

THE LESSON

Aim.—To see what happens in the hedge in early spring.

Material.—The examples on the Nature Table. Enough small twigs of such things as Elder, Honeysuckle, or Wild Rose, for about a third of the children to have one of each. Goose Grass seedlings (as the commonest; others would do), and Goose Grass fruits for another third Young shoots of such plants as Wild Arum, Cow Parsley, Ground Ivy, Violet, Dead Nettle, Cinquefoil, to be shared amongst the rest. (These should not have the rooting portion pulled up.)

I. Group I might examine their twigs to find out all they can about the young leaves, and how they had been protected during the winter. They could attempt to make *large* drawings to show them, half folded.

Group II. might draw two stages of the goose grass seedlings, and refer to the fruits: some can generally still be found.

Group III would look at the little shoots with the teacher, who would also show them the root of the arum, which passes into a short thick stem with a bud that lies underground and is protected throughout the winter. The children would also examine the stems of the other plants, with the ridges passing round the stem that are the scars of old leaves, and the bud at the end turning up to form the new plant. At intervals short roots will be found growing from the nodes (marked by the scars) The material would then be interchanged.

II. When all the children had examined examples of each group, a short class lesson could be given. The whole would occupy about two half-hour periods; the formal lesson about a quarter of an hour.

The class would first be asked to notice that the woody plants forming the hedge go on growing year after year, from new buds If no one ever cut the hedge, it would grow very tall and ragged, and the brambles and wild roses would bend over their branches and root them farther out and so gradually the hedge would get wider, so that in time the path (in the case of a road-side hedge) would get choked.

The children might then describe the opening buds, which were protected through the winter by little hard scales in the case of the elder, rose and bramble, by the smallest outside leaves pressed close together in the honeysuckle. These buds formed in the previous autumn, ready for the spring.

The plants at the foot of the hedge had no hard buds, but then they were not exposed to the wind, they were protected under the soil Their buds were white and firm, but not woody. (One or two should be dug up and shown) The children might name those that had a very short stem growing from a long root (wild arum) and those with a creeping stem

The goose grass fruits and seedlings are an

example of very early germination. They may often be found as early as December. The root emerges first, then it continues upwards (the hypocotyl), and draws out of the fruit two broad oval seed leaves. Between these the true stem emerges, with a bud at the top This unfolds in a succession of *whorls* or circles of narrow leaves, the characteristic of the plant, but at first they are quite smooth. The later-formed leaves and the stem above two or three inches are covered with minute hooks which roughen the surface and so help it to cling to the hedge

III. The children might then make dated lists in their notebooks of the plants found "awake," under the headings of opening buds of the hedge, underground buds, and seedlings

IV. Further work.—From this time onwards any new events in the hedge should be recorded on a special wall sheet kept for it, and illustrated on the Nature Table. If the hedge is easily accessible, the children should notice the birds and later, the nests Very common ones besides House Sparrows would be Blackbirds, Thrushes, Yellow-hammers probably, Chaffinches, Great Tits, Robins The songs, call notes and alarm notes might be listened for. Male Blackcaps and Whitethroats are easily recognised, as their names indicate. Coloured pictures of all these birds (postcards from the Natural History Museum, South Kensington) might be mounted above the Nature Table during the spring to help the children to recognise them Others that might be noticed are Goldfinches, Greenfinches and Linnets.

The flowers should be noticed as they appear, and added to the table. Lesser Celandine, Wild Strawberry and Violet, Dead Nettle and Ground Ivy come first, with Blackthorn, or Wild Plum and Hazel Catkins on the hedge The green Dog's Mercury may be seen as early as the first week in February. Then the succession of the Dead Nettles and Parsley-like flowers, with the Hawthorn and other bush flowers Notice the succession of *colours* for further reference.

XIV. SYCAMORE AND HORSE CHESTNUT SEEDLINGS

POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

IT has already been said that a double act of fertilization causes both the embryo plant and its food material to develop, forming the seed The embryo consists of a root and stem forming one axis, and a pair of leaves growing at right angles to their junction. The store of food material is called endosperm. The embryo plant is at first embedded in it, but in many cases before germination, the endosperm is completely absorbed into the first pair of leaves, called the seed leaves or *cotyledons* This happens in both Sycamore and Horse Chestnut, so that during seed formation the cotyledons swell and occupy the whole cavity of the seed coat. On the other hand, in the Ash and Goose Grass, the endosperm remains surrounding the small embryo, which only absorbs this reserve of food after germination has started.

The amount of endosperm present determines the size of the seed, whether it is absorbed or not In the case of seeds with little endosperm, when once germination

has started it is important that they shall grow rapidly, so that the roots are firmly established to draw up water and the leaves to make carbohydrates. Since the cotyledons are already perfectly formed, they are very often pulled out of the seed coat and above the ground to serve as the first pair of foliage leaves to nourish the plant. This is brought about by the rapid growth of the *hypocotyl*, the region of the main axis where the root merges into the stem. To release the cotyledons from the seed coat the hypocotyl usually grows more on one side than the other, so that it assumes a curve, and then straightens out, pulling the cotyledons with it. To bring this about the seed itself must be firmly wedged It is important, in making a study of seedlings, to notice such points as this, which bring out the value of every detail of the structure and growth In the case of a sunflower seedling grown in a glass jar lined with damp blotting paper, the seed was not fixed, and the hypocotyl grew to a height of 10 inches carrying the seed coat with it, in a vain effort to rid the cotyledons of what had become a trap

In some cases even large seeds send up their cotyledons to act as foliage leaves. This is generally when the plant will be large, as in the Sycamore, or where rapid growth follows, as in Runner Beans or Sunflower.

The Sycamore seedling.

Aim.—To watch its growth.

The seeds were examined and planted in the autumn The two seed leaves were seen unfolded, their green colour and leaf-like form were noted.

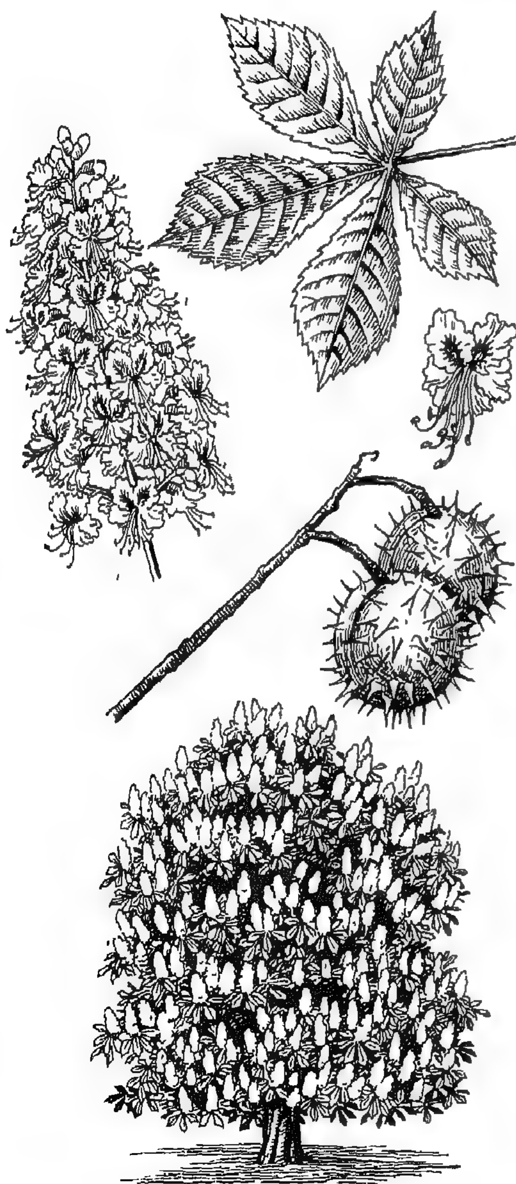
I. The growth of the seeds would be watched and dated drawings made The following points would be noted.

(1) The brown fruit coat becomes very dark and much softer as it absorbs water.
(2) A short root emerges. This turns downwards
(3) After a while the part immediately behind the seed begins to emerge as a short curved stem.
(4) The curve becomes deeper The bases of the two seed leaves begin to appear.
(5) The curve lengthens. The seed leaves are drawn farther out At last they are held only by their tips, and are then pulled right out. The stem behind them lengthens Give the name hypocotyl to the region below the leaves.
(6) Meantime, root hairs are growing which show fairly clearly the limit between root and hypocotyl, and also side or *lateral* roots. There is also sometimes a very slight swelling or ridge which marks the division.
(7) The hypocotyl goes on growing for some time The seed leaves, at first pressed together, separate and a small bud can be seen between them
(8) Some time elapses before this bud unfolds When it does, it can be seen that there are two almost triangular, pointed leaves, slightly lobed and indented but much simpler than the typical foliage leaves. In between there is still a terminal or apical bud These leaves grow in the opposite direction to the seed leaves (at right angles)
(9) Notice that subsequent pairs of leaves unfold, each pair in the opposite direction to the last Notice the gradual broadening of the later pairs, and that they are more deeply indented The final shape is called *palmate*.

II. Further work.—Keep the seedlings till the autumn and notice when the winter buds form (much earlier than you might expect) and how they are protected If possible, plant out one or two seedlings in the garden, and keep one or two for comparison even a year or two later. Notice when the leaves fall, both indoors and out

The Horse Chestnut seedling

I. Follow the growth on exactly the same lines Notice that instead of the seed leaves emerging from the seed, the bright pink "stem" separates and you can see that it is really composed of the two stalks of the seed leaves, with a small stem and bud lying closely wrapped between them. The stem is curved, then straightens as it emerges The interest of this is that these stalks protect the young bud.

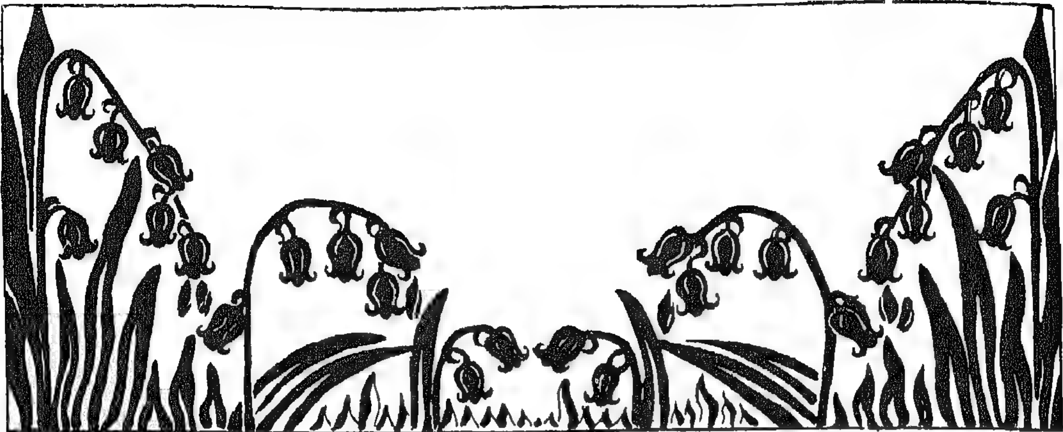


Subsequently, pairs of leaves unfold, as in the Sycamore, but in this case each is compound, consisting of five leaflets. The later leaves have seven segments and occasionally on a full-grown tree even nine.

II. There is no need for formal lessons on the seedlings, but a period might be given to contrasting and comparing their mode of growth, when the following points might be tabulated The heights might be periodically measured and compared. The names cotyledon and hypocotyl might be supplied at this stage.

Date of comparison	*Sycamore.*	*Horse Chestnut.*
	Root grows first	Root grows first
	Cotyledons are pulled out of seed coat by hypocotyl	Cotyledons remain in seed coat. Cotyledon stalks grow out.
	Bud appears between cotyledons after so long.	Bud appears after so long between stalks of cotyledons
	Has grown so high.	Has grown so high
	Has so many leaves	Has so many leaves
	Leaves are palmate	Leaves are compound, five or seven leaflets
	Leaves are opposite and alternate.	Leaves are opposite and alternate

XV. BLUEBELL FLOWERS



Aim.—To understand the structure of a flower in which the essential parts are clear and the accessory parts attractive to insects

Material.—Flowers of the Bluebell. One whole plant and some leaves

Introduction.—Give the children the name Wild Hyacinth as well as Bluebell, and they will point out in what respects it resembles the Hyacinths already grown, but that it differs in being smaller and having fewer flowers, of one colour only (though white occasionally occur).

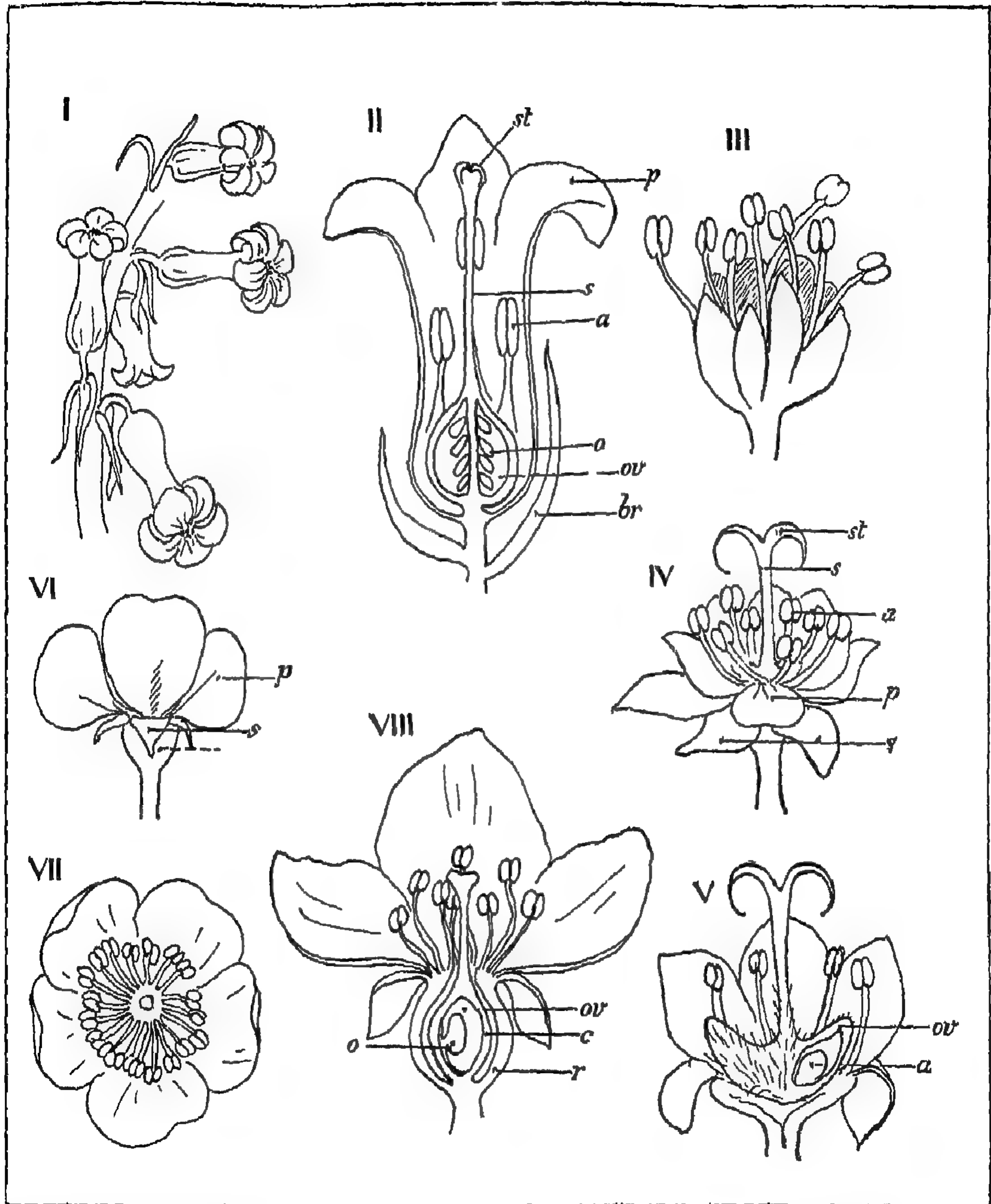
I. Show them the whole plant, notice that there are a bulb and long narrow leaves as in the garden Hyacinth, but much more slender and drooping easily. Explain that the bulb, by storing food, helps the flowers to bloom early in the woods, before all the leaves on the trees and bushes, and the long grass prevent insects from seeing them What makes us think they attract insects to take their pollen to other flowers? (The bright colour and sweet smell, as in the Hyacinth)

Let each child have a fresh head of flowers to look at. Notice the arrangement of the flowers, how many there are, the little blue bract at the base of each, and that the top ones are still in bud, though the lower ones are fully open and perhaps forming their fruits (the knob inside can be felt).

Have the flowers put back into water, and give the children some which have been kept in water till they are beginning to wither The fresher ones near the top will show all the parts of the flower quite well, and the lower ones will usually show the developing fruits

II. Structure of the flower. Notice the bell shape. Let the children find out how the bell is made up, of two rings (whorls) of coloured flower leaves, overlapping but not joined together to form a tube This pretty, bright bell attracts insects to the flower, so does the sweet smell. Now let the children try to find out what the flower has to give the insects For this, some of them will have to pull open (without injuring) some of the fresh flowers They will be full of clear nectar at the bottom, especially

PLATE XIII



BLUEBELL I Inflorescence II Vertical section. *p*, perianth, *st*, stigma, *s*, style; *a*, anther, *ov*, ovary; *o*, ovules, *br*, bract
MAPLE III Imperfect flower IV Perfect flower *sp*, sepals, *p*, petals V Vertical section of perfect flower
HAWTHORN VI Flower—side view VII Flower—front view VIII Vertical section of flower *r*, receptacle, *c*, carpel, *ov*, ovary, *o*, ovule

in warm, sunny weather. Remind the children that it is from this that bees make honey. Have they seen any insects coming to the flowers? They may have come into the classroom through the open window and should always be noticed The children may go to gather bluebells and the teacher may previously have suggested that they should watch for insect visitors.

Let the children look in the middle of the flower, for the pistil Recall its purpose Draw it on the blackboard to show the three parts, explaining that the ovary contains the unripe seeds or ovules, the stigma is ready to receive pollen from insects, and because the flower has a long tube, the style or stalk is needed to carry the stigma up so that the insects can reach it

Look for the stamens and notice how they grow and how many there are Which are open and which have shed pollen? Look for pollen on the stigmas

When a flower has a long tube, it is generally visited only by long-tongued insects like butterflies, moths and bees, because the long tube makes it difficult for little flies to get the nectar. (An explanation of the advantage of this to the flower might be left to a later lesson on Bees.) The drooping of the flowers is useful in keeping out rain, which might wash both nectar and pollen away. Notice that the unopened flowers do not hang down

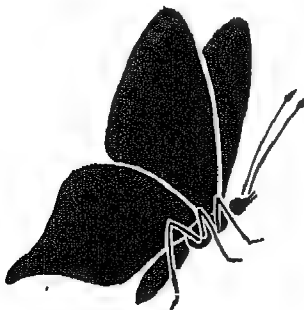
Look at the developing fruits. The ovaries have grown larger· the stigma and style have not grown Cut one or two across so that the ovules can be seen with a lens

III. Make a blackboard summary of the chief features of the flowers. It should include the following points

(1) A head of flowers may have about 5–12 flowers
(How many in the Hyacinth?)
(2) The youngest flower is at the top.
(3) The lowest flowers open first
(4) The flower is a bell of six flower leaves. Give the name *perianth* (=surrounding the anthers) and explain what it means, and that it is used when all the flower leaves are the same colour
(5) The flower is tube-shaped, so probably is visited by bees or butterflies. Try to find out which.
(6) There are six stamens. (How do they open? All at once?)
(7) There is an almost spherical ovary, with a short *style* and small *stigma*.

IV. The children might draw a head of flowers, a single flower showing the bell and the bract, and a pistil from a withering flower, with the perianth leaves removed.

Further work.—Keep the flowers and see how far they will develop. Later, in the woods, collect the papery open capsules of three chambers, with round black seeds Let the capsules be drawn Some of the seeds might be set, though they germinate very slowly and a bulb takes three years to ripen If a further study is required, Wallflowers offer similar points



XVI. HAWTHORN FLOWERS



Aim.—Study of an open, cup-shaped flower, which invites all insects

Introduction.—Mention the name of the flower, and ask the children for any points they have noticed What sort of fruits is formed? When are they ripe? Do they think insects are likely to visit these flowers? Why? Have they seen any? By this time the children ought to be beginning to notice insect visitors of their own accord, and may have seen that both bees and flies, especially small flies, are numerous.

I. Give each child a spray of flowers Notice how conspicuous a cluster of flowers is, while one would not be noticed much. The arrangement is useful in attracting the attention of insects In what other ways would the flowers attract attention? (By their creamy whiteness, bright pink stamens and sweet smell)

Suggest that everyone shall look carefully at the stamens Are they all pink? Notice the change of colour from pale straw colour through pink to dark brown Which are dark brown, which pink, which pale? Are they all ripe at once? What has happened to the dark brown ones? It will be noticed that as they unfold they pass through these changes, and the dark brown ones have all shed their pollen They have also changed their position How? Notice that they are all growing on the rim of the tiny cup that holds the flower.

These are flowers that give quantities of pollen to bees and flies, they can be seen flying away covered with it What colour is it? Do they give nectar as well? The cups will be found to be full of nectar, just round the rim.

Now look for the ovary It cannot be wholly seen, because part of it is below the flower and only part above where the stamens are attached Look for the stigma It is round and green Which flowers have the largest stigma? It will be found in the central, or youngest flowers of the cluster, but in the elder ones it has withered In the buds that are just opening it is projecting beyond the bud So the stigma is ripe first, and later, the stamens in the same flower ripen

How many flower leaves are there? There is a whorl of five white ones. These are called *petals* They tell the insects that

there is honey and pollen for them. Once a man who was watching flowers to see what the bees would do, pulled the petals off some pear blossom, and he found that although there were still honey and pollen there, the bees flew over and never found it (Lowell, an American botanist.)

Looking outside the petals, we find a whorl of small pointed leaves These are called *sepals*. They protect the young buds before they open, from wind and rain and frost

II. Let the children draw a cluster of flowers, and write a sentence or two about anything that has interested them in the flower.

III. Further work.—Keep on the look out for the developing fruits Place sprays on the Nature Table when the petals have fallen, when the green fruits can be seen, and when, much later, they begin to change colour. Enter these observations on a Flower Chart.

XVII. SYCAMORE FLOWERS

Aim.—To study a wind-pollinated flower.

Introduction.—Many of the children will probably never have noticed these flowers, or thought of them as flowers, even if they are growing near at hand Ask if they know what they are and tell them. Tell them also where they can see them growing.

Give out a spray to every two children if possible, and give them time to look at it carefully

I. Let the children notice first how the flowers grow, in a long green tassel on a central stalk which hangs down below the branch. The leaves are out or nearly out, but the flowers hang well away from them.

Ask the children what are the chief things that strike them about the flowers The green colour is the chief thing Is there anything about these flowers that insects would like? Would they notice that they were flowers? What else have we seen about flowers that insects seem to like? (Sweet smell in Hyacinth, Bluebell and Hawthorn) What did this smell tell the insects? (That there was nectar) Is there any nectar in these flowers? (No, none can be found)

Let the children see how the flower is formed They will find two rows of green leaves, eight in all, forming a very shallow cup turned downwards, eight stamens standing out away from the cup on long stalks, and in the middle, an ovary with two distinct lobes drawn out slightly into two stigmas which already suggest little wings Remind them of the fruit Help them to see the parts by a blackboard diagram

Now explain that, although a great many flowers rely upon insects to exchange their pollen for them, some flowers do not. In particular the flowers of many trees which grow very high up, swing their flowers out into the wind, which catches the pollen and carries it away Show how easily the long, limp tassels swing as you shake a branch slightly. Then let the children notice how each stamen is held away so that the pollen is easily blown away by the wind, perhaps to fall on other flowers. Draw attention to the branched stigma held out to receive it

II. Let the children mention the chief points spoken of, and make a blackboard summary.

(1) The flowers are green.

(2) There is no nectar, and no smell.

(3) Many flowers grow in one tassel, hanging down.

(4) The wind shakes the tassel and blows the pollen away.

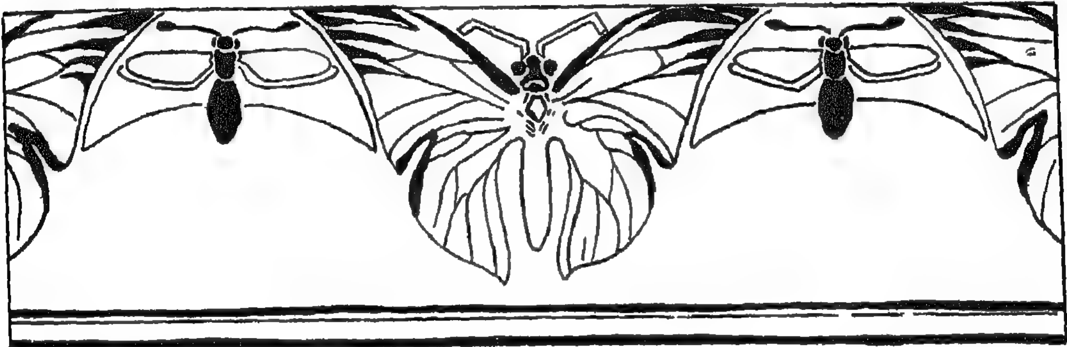
(5) The stamens have long stalks so that the pollen is easily caught by the wind.

III. Let the children draw and label a single flower.

IV. Further work.—Notice in the next week or two how quickly the fruits begin to develop, even while the flower leaves remain. Bring them in at various stages. Notice when they begin to change colour

Encourage the children to look out for flowers on trees, and to enter on their Flower Chart which are green and which are "blossoms"

XVIII. THE CABBAGE WHITE BUTTERFLY



POINTS FOR THE TEACHER'S CONSIDERATION

AT this stage the two characteristics of the life of insects which particularly interest children are the changes of form in the course of the life history and the relation to plants, and especially flowers. It is these two points, therefore, which should be concentrated upon in early lessons on insects, although the teacher should know something of the important place held by insects in the scheme, or, as Sir Arthur Thomson calls it, in the "web of life"

It is thought that somewhere amongst the lowly members of the group of Worms a divergence of form took place, which resulted ultimately in the development of very highly organised races of animals which spread from water to land Man and the Birds represent the highest points reached by the Vertebrates, and Insects the highest point of the Invertebrates These highly organised animals mastered not only the habitable land but also the air. When an animal achieves the power of flight, it needs to be able to obtain large supplies of oxygen to provide it with sufficient energy. This must penetrate all the tissues of the body, and reach every muscle. In the case of insects, the whole body is penetrated by a system of tubes, consisting of a pair of long tubes running the length of the body, called *tracheae*, which give off branches to all parts. The tracheae are connected with the surface by means of short lateral tubes, opening by pairs of *spiracles*, usually on each joint or segment Generally telescopic movements of the segments assist in

pumping air into the tubes The spiracles are closed and the air forced into the finer branches.

Insects belong to the group of Invertebrates called *Arthropoda*, because they have jointed legs The whole body and legs are encased in a horny skin of a substance called *chitin*, arranged in overlapping plates on the upper and under sides of the body and round the legs The body is divided into, usually, thirteen segments, covered with these plates. These are usually partially fused together, so that three distinct regions are formed

The head is hard and smooth, provided with eyes, a pair of jointed feelers or *antennae* also covered with chitin, and three pairs of jaws varying in pattern according to the method of feeding. Although these structures are called jaws, they are not inside but outside the mouth, and are more like tiny modified legs, but with biting or gripping edges, or transformed into sucking tubes or pumps. They are arranged in pairs on either side of the mouth, and if they remain separate, work sideways, using the rigid head as a fulcrum against which to work

The thorax consists of three partially fused segments, and supports three pairs of legs and the wings. The armour of chitin, besides protecting the internal parts of the body, serves as an external skeleton (or *exoskeleton*) to which the muscles are attached and upon which they work. It will be seen that in all flying insects, and they are the majority, it is important that the wings shall work from a rigid base This is provided by the fusion of the chitinous plates covering the thoracic segments. It will be noticed that this part of the body is usually the thickest in insects. This is because it consists largely of the strongly developed flight muscles (especially noticeable in the Hawk Moths and Dragon Flies, the latter being insects of prey in their habits in relation to other insects, and swift, strong fliers)

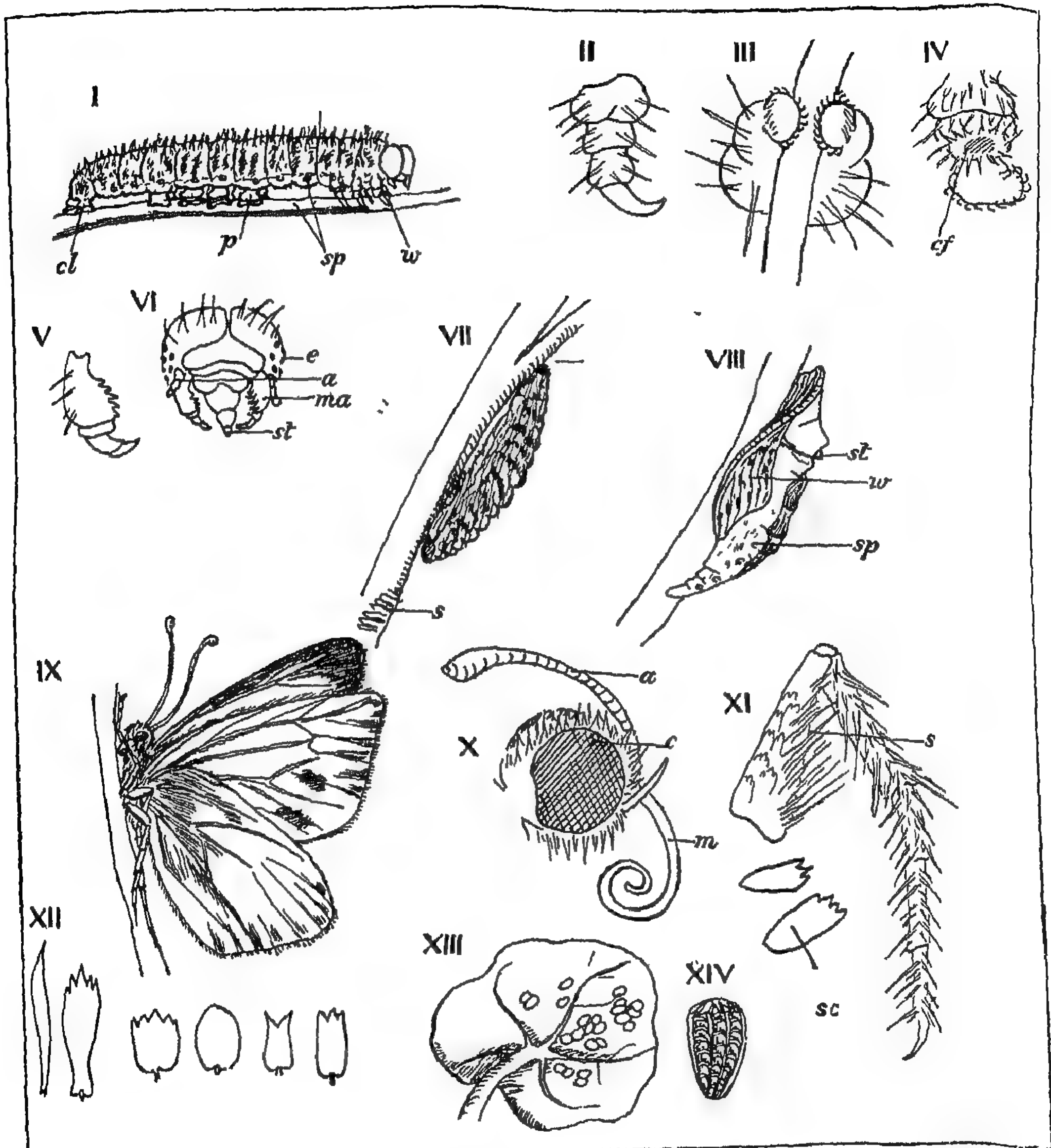
The abdomen is the remaining part of the body, usually with the segments free It has no legs or other appendages, except, possibly, on the last segment leaf-like or thread-like outgrowths called styles.

Specialization for flight is helped by the peculiar division of the life history of insects into three distinct phases, so that different activities can be carried on at different periods In the butterflies and moths the egg hatches into a *larval* stage, the caterpillar, which devotes itself entirely to feeding. (Larva = a young stage which differs in structure from the parent, e g. a tadpole, a "maggot" or "grub," a caterpillar.) From time to time it sheds its skin, and in the interval grows larger The new skin then hardens.

When large reserves of food have been stored the caterpillar passes into a resting stage or becomes a *pupa*, the *chrysalis*. Although quiescent, this is in reality a time of great internal change and strain, and there is a high mortality. The whole caterpillar body is reorganised The pupa is covered by a horny skin, through which, if no cocoon or wrapping is formed, the wings and legs of the developing butterfly can usually be seen, pressing upon it.

The pupal skin is cracked and the fully developed butterfly or moth emerges This is called the *imago* It is free to fly, and its only duty towards the race is to lay eggs Curiously, in many insects, this duty absorbs the imago life completely The power of flight enables the insect to select a suitable spot for its eggs, and after laying them, the majority die, though late broods of butterflies and moths, e g the Small Tortoiseshell Butterfly, hibernate till the spring before egg-laying In some of the gnat-like insects the imago is even unable to feed because it has no mouth

The wide range of food chosen by insects, both in the imago and the larval stages, gives them their economic importance Many of them become plant pests, by stripping leaves, burrowing into wood, and causing deformities in growth Others become animal pests, feeding upon their blood and in some cases c[illegible]ying and



I Caterpillar *cl*, clasper, *p*, prolegs; *w*, walking legs, *sp*, spiracles II Walking leg of caterpillar III Clasper seen from underneath, showing how it is used IV Proleg seen from the side showing the cushioned foot (*cf*) [illegible] pillar. VI Head of caterpillar *e*, eyes (6 pairs), *ma*, mandible, *a*, antenna, *st*, spinneret VII [illegible] stage *s*, silk ladder VIII Chrysalis, *st*, ring of silk, *w*, wing, *sp*, spiracle IX Butterfly X S[illegible] *a*, antenna, *m*, proboscis, *c*, compound eye. XI Fore leg of butterfly *s*, stiff hairs, *sc*, scales [illegible] of butterfly XIII Eggs on the under surface of a nasturtium leaf XIV Egg (x 25)

injecting the germs of disease, such as Sleeping Sickness and Malaria. The Ichneumon flies make a speciality of laying their eggs in the bodies of grubs, thus they may be incidentally useful to man in checking certain plant pests, such as the Larch Fly and the Cabbage White Butterfly, which is particularly liable to be attacked by an ichneumon whose small yellow fluffy cocoons cover its surface in the late autumn

THE LESSON

Aim.—To study the life history of the Cabbage White or Large White Butterfly

Material.—If possible the eggs should be looked for in May and August, and kept so that the development can be watched before any lesson is taken They occur as neat little patches, regularly arranged, rather flat, greenish white, on the backs of cabbage leaves They will hatch out if kept in jam jars with gauze tied over the mouth, and if supplied regularly with fresh cabbage, will develop easily. From time to time they will cast their skin

The caterpillars, well-grown, can usually be found amongst the outer leaves of cabbages by the middle of June. They will continue to grow and shed their skins in captivity A jam jar containing a caterpillar and some fresh cabbage leaves should be available for every two children.

Introduction.—If the caterpillars have been watched from the egg, tell the children that they are going to put together all the things they have seen

If they are newly brought in, tell the children what they are and give them time to watch them Let them be put out on to the desk or a saucer with the leaf, to be watched.

I. Let the children describe what the caterpillars do How they walk. Muscular movements of body. Movements of feet. Movements of the head, and pair of tiny black jaws, by which it seems to feel its way and decide which way to go.

Notice the feet. Three pairs of small black pointed feet underneath the body on the three joints just behind the head. It often rears its body up and feels round with these Further back, other feet, of a different shape, short and stumpy.

How many, and on what joints? (Four pairs, then a gap of apparently one joint, and an end pair on the last joint) The four pairs are called *prolegs*, and the end ones *claspers*, and it can be seen that they grasp the edge of the leaf and help to support it and drag the body along The three front pairs actually walk, or make the new steps The claspers and prolegs magnified, show tiny hooks

II. Notice the colouring The body is green, shaded on the sides with yellow, and dotted with minute raised black spots (tubercles) from each of which springs a stiff short hair.

III. Let the children make an enlarged drawing, at least three inches long, to show the body, with its segments, the legs, the head, the tiny black jaws. Indicate actual size by a line (The eyes and short antennae are too small to be seen The sides of the head, which are large convex swellings, should not be mistaken for the eyes.) A separate large drawing of one walking leg, one proleg and one clasper should be made Part of a cabbage leaf may be drawn before and after a caterpillar has fed upon it, to show the bites it has taken

IV. While the children are drawing, take small groups round the table to show them how the caterpillar responds to the stimuli of light, heat, sound, smell It is probable that the first set of drawings will not be very satisfactory, and that in a second period, after discussion and illustration by blackboard diagrams (which should not be left to be copied), the children will make better attempts. This will give the teacher

time to complete her groups round the table Or two or three small groups can be provided with the simple apparatus needed, and given instructions, and allowed to carry out the following little experiments, if the arrangement of the room makes it possible

1 **Smell.**—Place several (about six) active caterpillars on a shallow dish or plate on the table. Hold a glass rod dipped in some strong-smelling fluid such as turpentine, methylated spirit or dilute ammonia, in front of each in turn for long enough to see if they make any response by turning towards or away from it Take a clean rod and rub it well with cabbage and repeat Try other vegetable juices such as carrot, onion Then place round the edge of the plate some pieces of leaves of cabbage, cauliflower, mustard, wallflower, or other members of the *cress* family (Cruciferae) among which these caterpillars feed, and see if they will find them

2. **Sound.**—See whether the caterpillars make any movements in response to tapping, ringing a small bell, blowing a whistle

3 **Sight.**—Take a shallow cardboard box to form a tunnel, with a small opening at each end, and cover the caterpillars with it See whether they crawl out Flash a small electric torch into it, first at one end and then the other Then take a small tin or wooden box and divide it into two chambers Cut out about half the lid to fit over one and cover it with thin muslin to admit light Leave the other side so that when fitted on to the box one chamber will be quite dark Put cabbage leaves into both chambers Cut a small opening in the partition so that the caterpillars can get into either side. Put half the caterpillars into each and leave till next day The same device could be used with both sides either light or dark, to see whether caterpillars will feed more in light than in darkness. Food may be placed in one side only, to see if they will find it by smell. The senses are not acute, hence the importance of the mother's choice of the food plant.

V. Further development.—Records of growth, changes of skin, and the change from caterpillar to pupa should be made on a Nature Chart A chart might be kept for Butterflies and Moths only If possible the actual stages in pupation should be watched. The pupa and the butterflies, male and female, should be drawn The butterflies can be obtained after they have laid their eggs, when they die They will keep for a long time, with a few moth balls in a tin box Each should be pinned on cork, cheap round mats are useful for this purpose. When the caterpillar is full grown it ceases to feed, and can be removed to a small wooden box with two sides covered with net, or to a plant-pot saucer over which a framework covered with muslin or net is erected, thin enough to be seen through Here it will find a corner, and begin to weave from its mouth a thin mat of fine white silk threads, drawn out by first pressing the head against the surface and then gently swaying it backwards and forwards, pressing the silk down from point to point This mat passes under the body. A girdle of several threads is then woven across the middle of the body, so that the caterpillar is surrounded by a loop If it is in a crevice its head will usually be directed upwards, if not, it may be head downwards, swinging in its loop. Often in the autumn the second brood of caterpillars come in from the garden and climb up walls, pupating high upon the wall or in the crevice of wall and ceiling

The body now stiffens and shortens, then the caterpillar skin splits behind the head and is wriggled off Inside it is a pale greenish yellow or cream-coloured pupa, powdered with black dots It is angular, ending in a point back and front, and ascending steeply to a peak behind the head region On either side, about $\frac{1}{3}$ inch from the front, there is also a pointed projection At first the skin is quite soft, and the

abdomen makes gentle movements, especially if touched, but after a time it becomes quite stiff and passive As the skin hardens it adheres to the surface below it by the "tail"

The impression of three pairs of long, delicate legs and the nervures of folded wings can presently be seen on the sides and ventral surface of the body. One might be detached to see them, but the chrysalids should never be detached if you wish the butterflies to emerge Ultimately, the skin of the pupa splits behind the head, and the full-fledged butterfly struggles out, but if the pupa is not firmly wedged (cf. the germination of seeds) it has great difficulty in pulling itself out and is likely to injure its wings in the process, so that it is unable to fly.

As the butterflies emerge, they should be transferred to a jam jar or breeding cage, where some of the food plant of the caterpillars has been placed. They should also be given a spray of flowers, brushed with a little honey and water or treacle and water for food, or the leaves may be brushed Here eggs will readily be laid, and if both males and females are present they will be fertile, and any stages of the life history missed at the beginning can be filled in now This would be about the beginning of the autumn term

A useful breeding cage for any moths and butterflies can be made from a box 8 or 10 inches wide with the top and bottom replaced by either glass or net. If glass is used, then a panel of perforated zinc should be let into one of the sides for ventilation The glass should slide in and out, for handling and cleaning, and is turned upright to form the front A little shelf should be fitted inside, about 2½ inches from the bottom, with two holes bored in it to take the stems of plants Under the shelf small dishes of water can be placed, and the stems passed through into them This obviates any danger of the caterpillars falling into the water If the box is enamelled white inside it is easily kept clean with a damp cloth White paper can be placed on the shelf, perforated by the stems, and changed every day. The whole life history can be watched in such a "home" Another good breeding cage consists simply of a plant pot of damp soil with the food plant stuck into it, covered by a lamp chimney of the straight, wide kind, or a round lamp shade of clear glass, with the top covered by fine net, which may be pasted on. The lower rim is wedged in the soil

VI. Outdoor work.—In addition to watching the development in the classroom, the children should hunt for the eggs and caterpillars themselves, notice what plants they frequent, and watch the butterflies. They should notice what flowers they visit, and if the children approach quietly, they can often see the coiled, spring-like tongue or *proboscis* It is really a fine tube made from a pair of grooved jaws fitting together. It shoots down to the nectary of the flower. Notice how long the butterfly visits one flower, and the tendency to seek out flowers of the same kind, perhaps by recognising both colour and smell

The children can notice the marking of the butterflies They are cream colour, not quite white, with a black margin to the front edge of the front wing and two black spots in the female, and a smaller black margin on the back wing When they rest on a flower it is possible to see the slender black body, six long slim black legs, and furry head with a short projecting beak (really a sensory part of the jaws, called the palps) Notice that butterflies' wings meet over the back when at rest, showing the underside, which, in this case, is a cream colour or yellow shaded with a dusky greenish film, and on the fore wings are two black spots As it rests on a flower, the two long, slender black antennae can be seen quivering, and occasionally touching the flower with the little black knobs at the apex

Notice the light, fluttering flight and the delicate and yet sure way in which they

come to rest on a flower These points can best be called to the children's attention at odd moments and in informal discussions in connection with entries on the Butterfly Chart

The Small White Butterfly is very similar to the larger one except in size, but is without the black spots, and shows very slight black marking The caterpillar is green, with yellow stripes, but not hairy It is found in the hearts more than in the outside leaves of Cabbages and Cauliflowers, and feeds on Nasturtium and Mignonette, besides other Cruciferae The chrysalis is greener and smaller, but has much the same shape as the Large White

The Brimstone Butterfly is another close relation. Its wings are bright yellow, marked by an orange spot on each hind wing

The Small Tortoiseshell is another butterfly whose life history is readily studied, as the caterpillars feed on the common nettle. The young caterpillars are found in large numbers on the *backs* of the leaves in June and August. They are black at first, but shed their skins frequently, and become yellowish-green after several moults, then dark green or dark brown, with a double greenish-yellow stripe along the back, one along each side, and short yellowish-green spines. The head is black and bristly The chrysalis is shaped rather like that of the Cabbage White, with short projections on the head, but is brownish in colour, with gold spots on the underside The butterfly is one of the first to appear in the spring, and on warm days in winter, as it hibernates It is common. The rich warm red and orange colouring attracts attention, and possibly warns birds that it is *not* good to eat The front wings are reddish orange, darker at the base Along the front edge are three square black spots separated by two yellow ones, and ending in a white one on the outside The hind margins of all four wings are black, with a row of bright blue crescent-shaped spots. The fore wings are, in addition, marked with two small black spots, and one half black and half yellow, while the hind ones pass from black at the base to yellow at the margin.

The Large Tortoiseshell, similarly marked, has a caterpillar which feeds on Elm and other trees It is now rare.

The Peacock and **Red Admiral** belong to the same little group of autumn-hued, beautiful butterflies, the Peacock is known by its bright peacock-eye on the wing, the Red Admiral, by its diagonal bars of terra-cotta red, white and black.

XIX. THE MAGPIE MOTH

THE Magpie, Gooseberry or Currant Moth is one of the commonest ravagers of soft fruit bushes It is also very fond of the evergreen Japanese Spindle or Japanese Euonymus.

The method of study would be the same as already suggested for the Cabbage White Butterfly, but this moth offers some interesting points of contrast in the details of its life history and habits, as well as illustrating the chief general differences between Moths and Butterflies

Generally speaking, Moths have broader, thicker bodies than Butterflies, and the antennae are never clubbed (ending in a knob) but are either feathered or saw-like, tapering to a point The wings are not closed over the back when at rest, but lie in the same plane as the body, forming a triangle with it The wings are often

downy, covered with fine hairs instead of close-fitting scales as in the Butterfly. Moths usually fly at night or in the dusk, though this does not apply to all, and frequently feed on very pale, evening-scented flowers with long closed tubes, such as Honeysuckle, Evening Primrose, and the Tobacco Plant, Nicotiana. A comparison of the habits and life history of the two types might be made when the studies are fairly advanced

Life History of Magpie Moth.—Many of the moths seem to pass the winter in the pupa stage, hatch out, and lay their eggs, which are golden yellow with a slight depression in the middle, and arranged in small regular batches on leaves and stems of food plants The minute black caterpillars can be found in May, held together by a loose, dusky and unsightly web spun by themselves. They shed their skins several times, and with each change begin to show more of the characteristic colouring. When about ½ inch long they separate and wander away to feed alone, though there will generally be a large number on one bush. The ground colour is creamy-white, with a row of square black spots on the back, and smaller black spots along the sides, arranged above and below an orange stripe, so as to give it a broken, mottled effect. It is what is known as a "looper" caterpillar, because it progresses by arching the body, and straightening it again. It first of all moves forward by waving its head and thorax in the air, then, carefully placing the three pairs of feet, it contracts the muscular body, clasps its two pairs of prolegs round the stem, and brings the arched abdomen forward till these are close against the walking legs It then holds by the last claspers and straightens the body forward again These caterpillars are also known as "geometers" (earth-measurers) because of their way of appearing to measure each step as if with a mathematical instrument

If the branch is shaken or the caterpillar is in any way startled, the caterpillar emits a silk thread from its mouth and, holding on to it with its jaws, allows itself to drop. It will then either climb up the thread again, using its thoracic legs and apparently eating the silk, or it will swing to a new support. It also uses this method of finding a new part of the food plant when one is exhausted

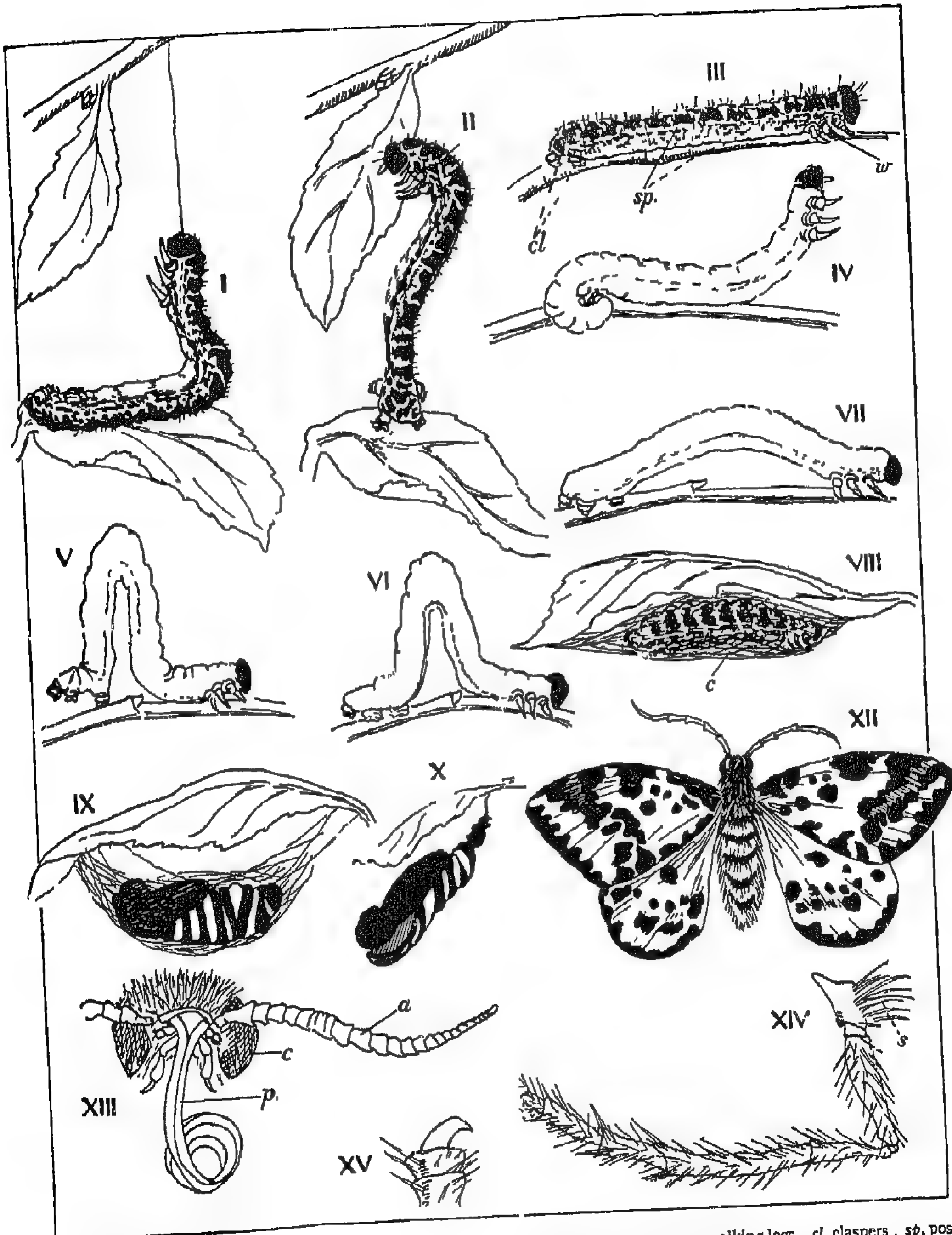
When the caterpillars are fully grown, about the end of June, they prepare to pupate They stop feeding, but remain among the stems of the food plant, often in the axil of a leaf. The body stiffens and shrinks. A few threads are loosely woven, forming a little net which partly encloses it.

It then casts its caterpillar skin, which splits on the back of the thorax, and apparently eats the greater part of it, as very shortly afterwards the hard black head only can be found. (This is a point that needs verification.) A short, oval pupa, less than half the size of the caterpillar, is then revealed inside. This is at first golden yellow, but in a few hours becomes banded with black The black rings are narrower than the yellow, and the whole effect is wasp-like and repellent It seems as if here, too, is a creature which warns the birds that they will not like it, for all through its life its colours are startling, and black and yellow are recognised everywhere as implying warning I have tried to get chickens to eat the caterpillars but they would not touch them Here, again, is a point for experiment.

At first, as in the Cabbage White, the pupa is sensitive and mobile, but in a day or so it hardens and is quite dormant. In about a fortnight (mid-July) the moths emerge, and may be found flying in July and August They will readily lay eggs in captivity if kept as suggested for the butterflies

The moth, when at rest, spreads its wings rather widely. They are creamy-white, with a yellow curved band parallel with the outer edge of the front wing, and mottled with black They are very variable, and some of the varieties tend to become constant in different localities. The variation is in

PLATE XV



I, II Caterpillar climbing back on to leaf by means of thread III Caterpillar stationary *w*, walking legs, *cl*, claspers, *sp*, position of spiracles IV, V, VI, VII Positions when moving forwards VIII Caterpillar awaiting change to chrysalis *c*, cocoon IX Chrysalis X Empty chrysalis case XII Moth XIII Head of moth *a*, antenna, *p*, proboscis, *c*, compound eye XIV Fore leg *s*, stiff hairs XV Claw

the amount of black pigment, so that some of them are very pale, the colouring being sparse and light, while others are thickly covered with black spots merging into one another Notice the resemblance between the colouring of caterpillar and moth.

There is no difference in colouring between male and female, but the abdomen of the male is more slender and ends more bluntly, the female being pointed

The chrysalids can be kept through the winter in shelter, and can be found amongst the sheltering twigs on the bushes occasionally, or dropped amongst the dead leaves

The Common Tiger Moth.—Another caterpillar frequently found in May and June is that of the Common Tiger Moth, known as the "Woolly Bear," a striking and handsome creature two to three inches long, with long dark "fur" of rich red, brown and black Often the hairs are nearly half an inch long. It lives and feeds amongst long grass, and low-growing plants such as dock and nettles, and is quite common in town gardens and neglected waste places in the suburbs It is easy to keep in the classroom, if it is given fresh supplies of food. For some reason it seems chiefly to be found fully grown, perhaps because it is so well hidden in the tangle of weeds, and also because the eggs are laid late in the year and it hibernates as a young caterpillar

Actually the body is black, with whitish tubercles bearing long black hairs tipped with white or buff. On the second and third segments these are reddish-brown. When it is ready to pupate it stiffens and loses its hairs, then splits the larval skin, and inside is a black, glossy cocoon, usually found lying on the ground or under stones.

The moth is one of our most handsome kinds. It has a red abdomen marked with black, dark velvety brown fore wings interlaced with cream or white spots and streaks, and orange red hind wings with dark spots It is 2½–3 inches across the wings, the female being the larger The moths are stout-bodied and hairy

The Drinker Moth.—This is also frequently met with in May and June in the same kind of surroundings as the Tiger Moth caterpillar, in country lanes. It feeds on grasses, and gets its name from the habit ascribed to it of drinking the dew At first sight it is similar to the "Woolly Bear" but lighter coloured, giving an impression of being brown, with shorter hairs. Actually, the body colour is a smoky blue-grey, with light brown hairs It has a row of yellowish spots on either side of the back, and orange spots marking the spiracles, with short tufts of white hairs. On the first segment, and also near the end of the body, it has a prominent tuft of black hairs Like the Tiger Moth, the caterpillar sheds its hairs before pupating. They are incorporated into a loosely-spun oval cocoon of a light brownish colour, in which the pupa is hidden The moth has yellowish, buff-coloured or cream-coloured wings, with two white spots on the fore wings, and both fore and hind wings marked by dark lines. They emerge from the cocoons about July, and lay eggs amongst grasses The young caterpillars hibernate.

Both these caterpillars have sixteen legs (with the claspers), and they are not "loopers," that is, there is not a long gap with only two pairs of claspers. Their movement appears to be on the principle of a continuous chain, for an even ripple of contracting and expanding muscles seems to pass from the head to the tail, and begins again before it has finished, while it grips the surface to pull itself along with all its feet in turn.

Notice that in all progressive movement, as these caterpillars illustrate, two factors come into play, a grip and a pull forward. Pulling alone, i e muscular contraction, is useless

It is a good plan to let the children watch several common moths and butterflies, whichever are easiest to obtain. Even if there is difficulty in identifying them, the children are still interested in watching them, and get some idea of the variety of food,

habits, and colouring. It is desirable to have a good reference book which the children can get at, from which they can try to identify their discoveries at first from coloured pictures, and later from the descriptions Always impress upon them the need for noticing and bringing a supply of the food plant, and as in previous lessons on keeping animals, discuss with them the conditions necessary for a home (to which ease of cleaning should be added in the case of caterpillars), before letting them attempt to keep caterpillars through their successive stages.

XX. CLIMBING PLANTS

A SUMMER visit to the hedge should be arranged if possible, to notice its characteristics in its fullest life The plants found in flower would be noted, and all others recognised as far as possible Birds and insects, especially butterflies and caterpillars, would be named and caterpillars collected Perhaps the climbing plants might receive particular attention, their various means of clinging to the hedge might be observed and discussed, their height noticed, and especially in what position on the hedge their flowers occur and whether they seem likely to be insect-pollinated. Three kinds might be selected for more detailed study, and others might be collected later if time allowed or the interest of the class made it seem desirable.

THE LESSON

The plants chosen might be Bramble or Wild Rose, Black Bryony, or perhaps Convolvulus, and Goose Grass

Aim.—To examine in detail the means of climbing of these plants

Material.—Enough for the children to share between two, and for half the children at once to have one kind, then share; that is, for forty children, ten sprays of Bramble and ten of Black Bryony, and the same of Goose Grass. A few flowers of each if the flowering season is chosen, or the flowers of Bramble may be shown later in the summer. A few sprays which have not yet caught a support, for the children to examine, on the table.

Introduction.—Recall to the children, by questions, how the plants were growing They were chiefly on the surface of the hedge, in the case of the Bramble, in the Bryony they might be farther in to begin with but came to the surface later, so that all their leaves and flowers were exposed to the air and sun In the Goose Grass they were more under the hedge and did not climb so high Recall how the leaves lay flat against the hedge, fully turned to the light. In Goose Grass they are narrow, air and light can pass through between them

I. Let the children then try to draw enough of each plant in turn to show how it climbs, and to write beside it what they notice on this point.

II. Take each plant in turn and discuss it with the children.

The Bramble.—Notice that it climbs by means of small, sharp hooks, arranged in rows all round the stem We call them prickles. Let each child strip off a little of the skin with a needle or penknife, and see that the prickles come away too. So they are formed from the skin They are very hard and woody How do they

manage to cling to the hedge? They all turn downwards, and so when they catch on to other stems they pull downwards and so become hooked on. The ends are straight and smooth-stemmed, the prickles form just a little way back The straight stems look as if they were feeling round for new holding-places, and when they touch anything the hooks catch hold Sometimes they stretch out and root in the ground some distance away from the hedge and there new plants grow. There are also small hooks on the backs of the leaves

The Goose Grass, too, seems to have little hooks, but they are so small we can only feel them. We can just see little roughnesses They are under the leaves, too, and the whole plant seems to hook itself on to branches as it pushes its way straight up under the hedge (Remember the hooked fruits.)

The Black Bryony has long stems bearing beautifully marked, glossy dark-green leaves shaped like arrow heads. We frequently find several stems growing together and twisting round one another, forming a sort of rope. They also twist round branches in the hedge, pulling themselves up to the light by this means The free end of the stem will be seen to bend over to one side, because the stem is weak and cannot support its weight, and as soon as the stem is bent over far enough to touch anything it begins to twine round it Notice that in all these plants the stem is too weak to support itself, though in the Bramble it is stronger than the others.

III. Make a short blackboard summary with the children

1. Black Bryony is a stem-twiner
2. Goose Grass and Bramble are hook-climbers. The hooks are prickles, formed from the skin.
3. All the stems are too weak to support themselves.
4. In Bramble and Bryony the leaves and flowers grow right on the outside of the hedge, turning to the light

The children might either copy this or try to write the main points from memory in their own way.

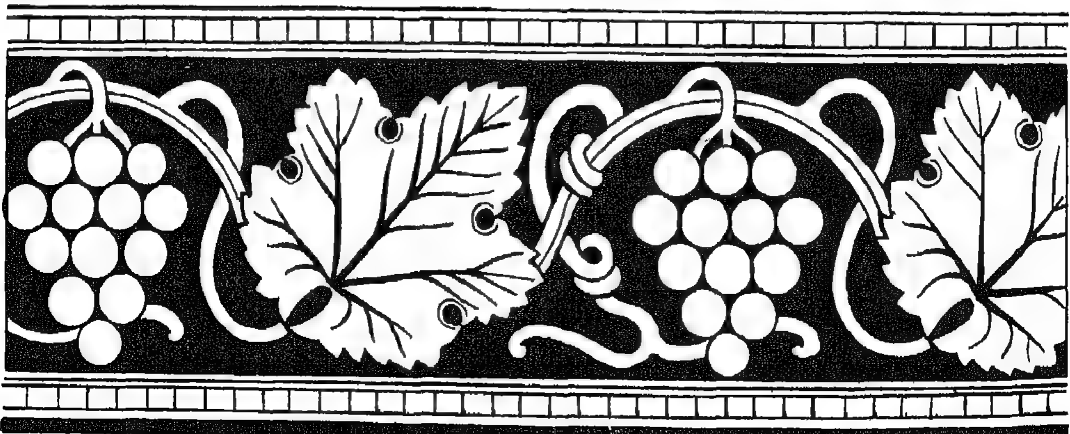
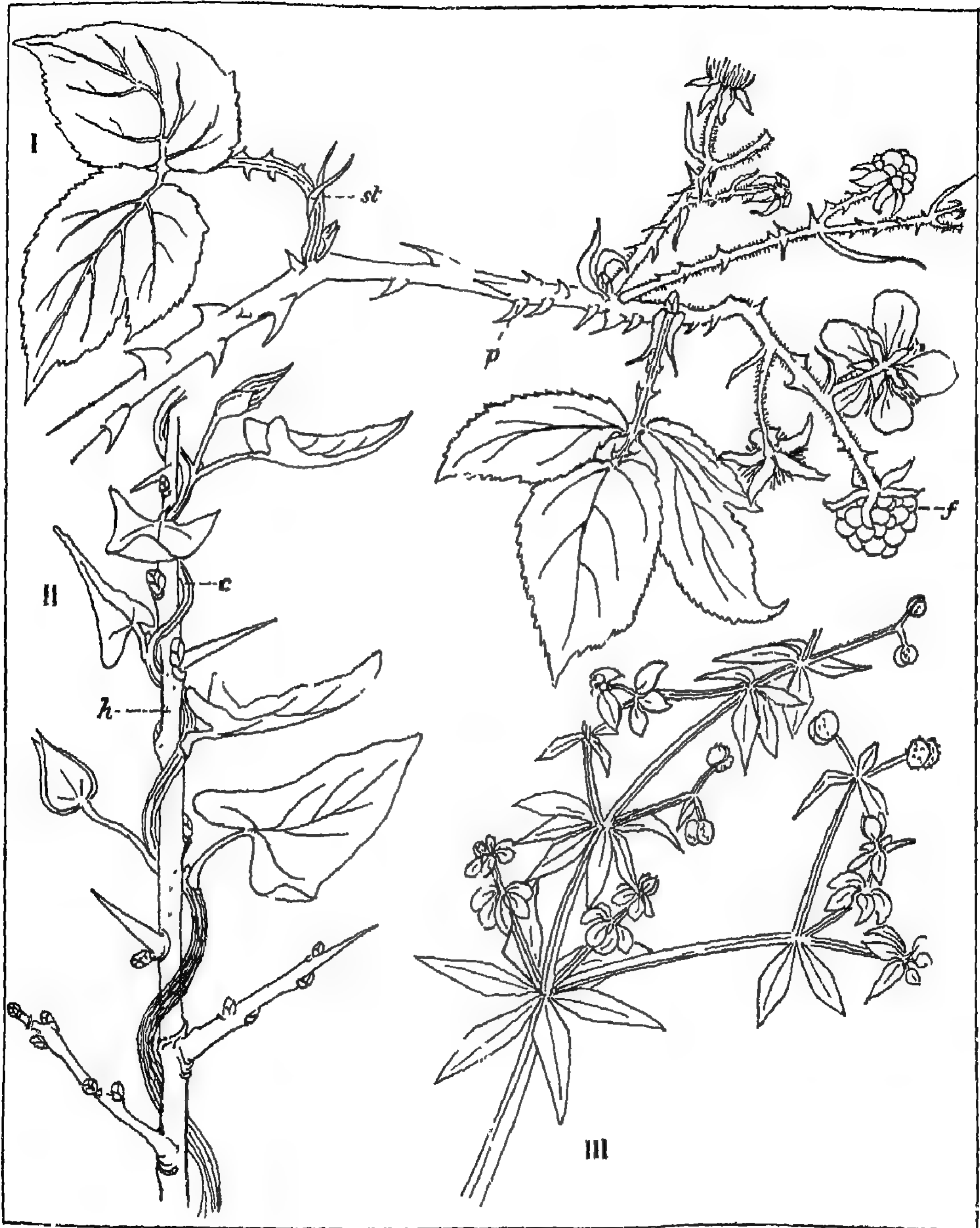


PLATE XVI



I BRAMBLE, showing recurved prickles (*p*), fruit (*f*) and stipules (*st*)
II CONVOLVULUS (*c*) twining round a hawthorn branch (*h*) in anti clockwise direction
III GOOSE GRASS, showing hooks on pericarp

THE TEACHING OF GEOGRAPHY

IN THE

PRIMARY SCHOOL



[Central Press

St Paul's Cathedral

GENERAL INTRODUCTION TO THE FOUR YEARS' COURSE

A KNOWLEDGE of geography broadens the mind and makes the world more attractive to us. It is stimulating, interesting and instructive to know something of this earth on which we live, of the different ways in which people occupy their lives, and of the animal and vegetable kingdoms around us, as well as of those in unknown countries The world is to-day a more wonderful place than it has ever been The marvels of modern science have made neighbours of regions far removed from each other Deep-sea cables and wireless messages carry men's voices across the oceans Great steamers plough their furrows from East to West and from North to South, interchanging cargoes, and supplying the wants of nation dependent upon nation Engineers probe the earth for its riches, bridge mighty rivers and tunnel mountain barriers. Scientists fight the germs of disease and make regions habitable that once were deadly. Ever more and more, luxuriant wild nature is being replaced by plantations of trees useful to man, and desert lands are brought " to blossom as the rose " by careful irrigation Among all, quietly making pictures, goes the cinematograph photographer, presently to record the marvels before a million wondering eyes All this, and a great deal more, is geography How can it be introduced and made intelligible to the minds of young children ?

Some difficulties—Scientific lessons on mountains and rivers are useless to young children, and the memorising of facts alone is time wasted The seasons as months of the year are so many names Nevertheless, summer, to a child, stands for warmth and sunshine, winter for frost and snow Therefore the best way of tackling the problem of teaching geography in the primary school is to proceed from the known to the unknown First stimulate an active interest in everything around—in the shops, the roads, the winds, the sky—and encourage enquiry and reasoning. Which wind generally blows when rain is falling ? Why is it often wet on the hills and dry in the flat meadows ? What does the sun appear to do every day ? Which part of your district must you climb to reach ? Approached in any other fashion, the ideas of rainfall, relief, and relation of earth to sun, are uncomprehended Observation of goods in the shops reveals our dependence upon other lands A friendly chat upon different habits and hobbies of children who are neighbours opens out the possibilities of vastly differing lives and habits of children far away. Introduced in this manner, foreign countries and peoples are *real* to children

World treatment.—It is essential that the pupils' ideas of the world, however new, should be clear. The teaching should be built up on broad outlines and salient facts, with no confusion of detail. That is to say, the world treatment must be regional. The scheme of climatic regional treatment followed in these books covers life in the principal areas of the British Empire—cold, cool, warm, hot dry, and hot wet lands. One type of climate and vegetation, of course, naturally flows into another. World position and environment influence the homes and activities of the people, and these occupations, in their turn, create the need for interchange of productions, and have led to the establishment of great trade routes.

The home region.—This is very important True geography is first-hand knowledge

of the world. Only the fortunate few can travel, and therefore most people have to derive their knowledge from their own district, and from books Direct observation on which to build the teaching of geography is essential As we have said before, the teaching in this scheme advances from the known to the unknown Typical scenes from the main climatic regions of the world are built up, and contrasted with familiar conditions. First-hand knowledge of food and clothing gives rise to acquaintance with Indian tea, Canterbury lamb, New Zealand butter, Egyptian cotton and Canadian cheese These, and other well-known commodities, are traced from producer to consumer, and so real knowledge is gained. Actual study of the home region begins in Volume II., with discussions upon the neighbourhood, the roads, railways and traffic, materials obtained or manufactured in the district, growing crops, observation of shadows, and if possible, the sea, tides, sirens, piers, ships and lifeboats; all these, again, are connected with stories of other lands

Imagination and stories.—It cannot be too strongly emphasised that mere definitions in themselves convey nothing real to the minds of the pupils. All such statements should be illustrated, and it is for this purpose that we find stories of great value. The stories in these volumes are carefully chosen to convey to the pupils a conception of the more strongly contrasted regions of the world, they cover topics of interest to children, selected in such a way that while each is practically complete in itself, together they build up a conception of the world as a whole So the pupils come to realise through the stories that there is "a certain completeness in the world" Although young children cannot learn a great deal of geography by reading aloud themselves, they can profit very much by the teacher's reading to them In this publication, the teacher has at his disposal well-written narratives based on experience, which offer points of discussion and are conveniently arranged in suitable lessons. Story-telling is a sure way of gaining interest, so that the presentation of lessons in story-form is a vital factor in the teaching of geography.

Pictures.—In geography lessons, good pictures must be in constant use. They also give that reality to the teaching which is essential in the treatment of the subject. In the lowest forms, the use of pictures should take the place of the globe and the map Class pictures, to illustrate most of the children's lessons, are provided in the portfolio attached to this work. Any description that may be hazy in the pupils' minds is made clear when pictured Illustrations of real scenery, of mountains, deserts and strange coasts, of people's occupations in hot, cool and cold areas, are of infinite value in aiding thought and memory

Textbooks.—The secret of good teaching lies in variety of method, and any one form of presentation of subject matter soon tires and bores the class. Pupils all enjoy listening to stories, but their interest cannot be sustained indefinitely in this way. Active investigation on their part should play its share in the lessons, and one way of ensuring this is by the use of textbooks In the lower forms, these should be profusely illustrated. Later on, the books should contain lively descriptions to supplement the oral lessons Textbooks are also useful for revision, and, in the upper forms, it is good training in concentration and habits of work for the children sometimes to do silent reading on fresh subject matter, and to be questioned upon it afterwards Each form should possess its own library, and among other books may be included simple stories of animal life and tales of travel From these, children can add to their knowledge, and improve their reading.

Questions and exercises.—Besides reading, another way of including the active co-operation of the children in the lesson is to let

them examine and compare instances for themselves In the lowest forms the work mainly consists of oral answers to easy questions, perhaps accompanied by sketches This is one form of revision, and a good way of finding out false impressions and mistakes If carefully graded, the questions will assist in training the association of cause and effect, which is one of the objects of the teaching of geography. Little problems can be worked later Simple sketch maps, plans and diagrams are all useful in fixing points in the mind, and adding exactness and reality to statements. Each child should have his own notebook, in which to take down summaries and sentences for memory work, and in which to stick cuttings, labels, picture postcards and photographs, according to the teacher's directions Very gradually, by their own investigations under guidance, pupils will discover how and where to find in their atlases and textbooks all the facts they require in building up answers to questions

The selection of material.—The material chosen for the study of descriptive geography in this scheme is the British Empire There are very good reasons for this selection In the first place, the land surface of the globe has an area of 51,800,000 square miles (exclusive of the Arctic and Antarctic continents), and the Empire has an area of 14,000,000 square miles. Empire study, therefore, gives a knowledge of more than a quarter of the land surface of the earth Again, the world's population is 2,200,000,000 and that of the Empire 540,000,000 * Here is another measure of the value of Empire study, since it gives an account of the activities of more than twenty per cent of the world's population. The main factor, however, to consider is that the Empire includes lands with every variety of climate and production, and thus Empire study embraces types of every one of the world's great climatic regions and all the different occupations of mankind. The lessons have been carefully planned to give a general idea of the outstanding features of each region (often a vivid contrast to those of the district in which the pupil lives), the homes and habits of the people, and their chief activities Thus the children gradually perceive that the regions of the world are of infinite variety, but constructed on a well-reasoned, orderly plan; by taking selected areas from the geography of the British Empire a sound knowledge of the subject is obtained.

* Figures are given in round numbers



DATE PALMS

A FOUR YEARS' COURSE OF GEOGRAPHY FOR CHILDREN FROM SEVEN TO ELEVEN YEARS OF AGE

THE general course of geography lessons prepared in these volumes is here set out for the guidance of teachers when preparing their schemes of work. Each lesson of the course of Descriptive Geography is arranged under the following headings:

Picture Reference.—A small illustration of the appropriate Class Picture in the portfolio is given at the beginning of each lesson, together with its notes and explanations.

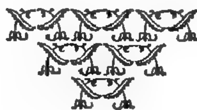
Introduction.—This is the teacher's background for the lesson set out in full detail The whole series of articles included in these "Introductions" covers a course of Empire Geography

Children's Story.—The story introduced by the Class Picture is written in simple language It can be told or read to the class at the teacher's discretion, and further details may, if necessary, be added from the subject matter of the "Introduction" Extra stories suitable for Friday afternoon reading, or for use when occasion offers, are included in Volume VI Questions and answers on each Class Picture and further information are provided in the Reference Book to the Class Pictures

(For children's Class Books see page 555.)

Teaching Hints.—A series of notes and hints which will be helpful to the teacher in preparing the lesson follows the "Children's Story" Included among these hints are *Memory Work* and *Exercises*. The former consists of a few brief sentences to be copied into notebooks and used for revision, and the latter will be found useful for both oral and written work.

Blackboard Sketches.—A whole page drawing of blackboard sketches which may be easily copied is included at the end of the lesson wherever the text lends itself to such illustration



FIRST YEAR'S COURSE OF GEOGRAPHY

Descriptive Geography.—Children and Life in the Commonwealth and Empire Cold Lands, Cool Grasslands, Cool Lands (Industrial), Warm Lands with Winter Rain, Hot Lands with Summer Rain, Hot Wet Forests, Hot Grasslands, Hot Dry Lands, Sunny Islands, Life on the Sea, Merchant Ships

SECOND YEAR'S COURSE OF GEOGRAPHY

Descriptive Geography.—Life in Canada and Australasia.

Practical Geography.—

1. General Introduction. The aims of the Course and the importance of observation The methods to be adopted in the teaching of the subject
2. A simple story of the origin and the movements of the earth.
3. Direction The position of one point in relation to another. The use of the mariner's compass How the sun helps us to find direction The Pole Star and the Plough
4. Plans The drawing of plans. Distance
5. Our Routes The way from our town to other places The local roads, railways, canals and rivers

THIRD YEAR'S COURSE OF GEOGRAPHY

Descriptive Geography.—Life in India, Burma and British Africa.

Practical Geography.—

1. Weather Study Observations of rainfall, temperature, clouds and winds How to collect data and record it The use of the weather chart
2. Our Scenery. A study of the surrounding physical features hills, valleys, cliffs and streams
3. Models and Maps The representation of surface features by models, sketches and colour-tinted maps.

FOURTH YEAR'S COURSE OF GEOGRAPHY

Descriptive Geography.—The British Isles.

Practical Geography.—

1. Weather Study. An extension of the previous year's work. Reading charts.
2. Our Industries The workers whom we know. Urban and rural studies. The destination of our surplus produce.
3. Our Buildings. Houses, factories, docks, reservoirs and other constructions associated with settlements
4. Making and Reading Maps. Extracts from the local 6-inch Ordnance Survey Map The addition of given information to an outline map. Simple land utilisation maps. Marking the chief local industries on maps showing physical features, routes, mines, etc

FIRST YEAR'S COURSE OF GEOGRAPHY

I. CHILDREN OF THE EMPIRE

PICTURE REFERENCE

THERE are two Class Pictures (Nos 61 and 62 in the portfolio) to illustrate this lesson. The first shows an Eskimo Boy with a dog, a Canadian Boy on skis, Australian Girls with kangaroos, and two Maori Girls greeting each other The second shows a Girl of the Sudan, a South African Schoolboy, an Indian Girl and Boy, and a Girl of Ceylon. It will be advisable to divide this lesson into two periods using one of the pictures in each period (see pp. 386–387).

INTRODUCTION

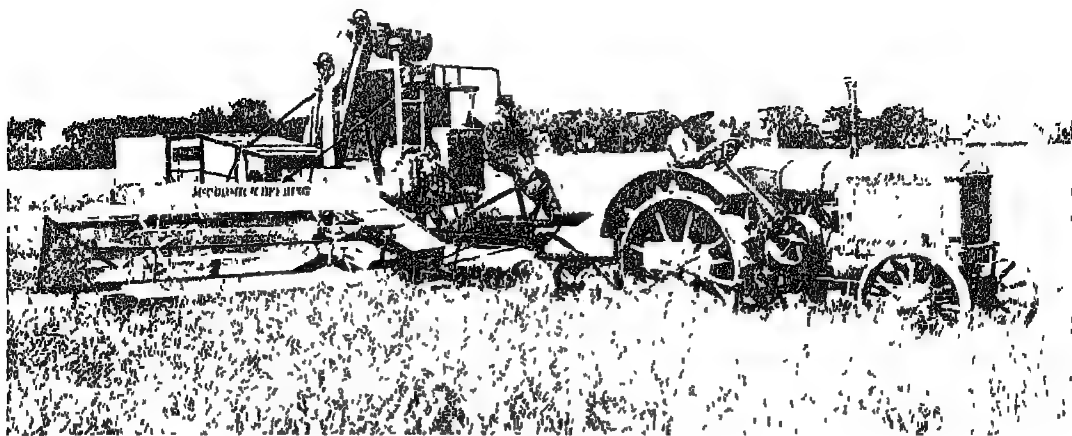
The First Year's Course of Geography is mainly intended to introduce to children of seven to eight years of age the subject of the general environment under which man lives in different regions of the British Empire. The term environment is meant to include all the surrounding conditions which influence or modify the life of man. The influences are so numerous and varied that many must be neglected in a short account We will consider mainly the influences which affect the movement, settlement and occupations of man

Cold lands.—The ice regions of the world offer nothing to man and attract only occasional explorers and adventurers. The climate is very severe, the surface is barren and settlement is impossible.

The so called "barren land" or tundra of Canada is free from ice and snow for a short period each year. It offers man or animals very little food, but a few people, such as the Eskimos, and a few animals, such as the caribou (reindeer), musk ox and seal are found. The food supplies are so scarce that a nomadic life is enforced Tundra is found in all lands near the polar ice

Cool lands.—The forested areas of cool lands show by the presence of trees in abundance that a decided period of real summer is experienced The more genial conditions allow the cultivation of food crops in forest clearings, and the proximity to warmer lands permits these locally prepared foods to be supplemented. The forest, moreover, supplies timber in abundance, a material which is needed in every industry of the world Man lives in the forest during the period of the year best suited to the work of felling the trees Usually, the trees are not felled during the summer, and the workers leave the forest for homes in adjacent regions. A settled mode of life is characteristic of the clearings in which agriculture is practised

The grass regions of cool lands show that the summer season has again been extended and has become warmer. The wealth of natural pasture encourages the rearing of animals in order to supply man with food, wool, hides and skins Large areas are often occupied by the owners of huge flocks and herds, and life for the men is of a semi-nomadic nature, for the animals under their care constantly need attention and fresh supplies of nature's food In many parts of



[E N A.

TRACTOR AND COMBINED HARVESTER-THRESHER, ONTARIO

the world, however, large areas of grassland are now cultivated.

Hot lands.—The great areas of hot, dry lands are practically barren It is only where wells occur that food of any description can be produced. Wells are few and far between, and the wanderer of the desert makes these small, fertile spots his calling place in his travels in order to replenish his supplies of food and water. In special circumstances a settled life is possible in hot, dry regions Certain mineral deposits attract man and lead to a settled life Gold-producing regions in the dry lands of West Australia have become peopled and are dotted with large towns The food and water necessary for life are taken to the towns by the shortest possible routes In such cases water, once it has been obtained, is used to render the districts near the towns fertile and productive to supplement the food supplies

The grasslands of hot countries in some respects resemble those of the cool lands. They supply natural food for certain animals, particularly cattle, and are sometimes capable of cultivation They thus encourage both the nomadic and the settled mode of life. One or two striking differences between the two grass regions must be noted Sheep do not flourish in hot lands, and dairy cattle do not prosper. The hot grasslands are favourable for beef cattle, and their use for food is rapidly extending Many of these grasslands are wet only for a very short period of the year, and without additional water supplies they are unsuited for agriculture

Hot wet forests.—The vast areas of hot wet forests are regions of an immense variety of wealth, but they have one serious drawback as a home for man The intense heat and heavy rainfall promote not only a wonderful mass of vegetation, but encourage, in a remarkable degree, the development of disease-carrying pests which make the region particularly deadly to man It is not surprising, therefore, that the great wet forests are practically uninhabited, and that it is only on the edges that the beautiful timbers and other products are obtained by small bands of workers

Industrial areas.—Gold, diamonds, tin and other valuable minerals lead to town development, however unsuited an area may



ESKIMO BOY



CANADIAN BOY



AUSTRALIAN GIRLS



MAORI GIRLS

CHILDREN OF CANADA, AUSTRALIA AND NEW ZEALAND

(Class Picture No 61 in the portfolio)



SUDAN GIRL



SOUTH AFRICAN SCHOOLBOY



INDIAN BOY & GIRL



GIRL OF CEYLON

Children of the Anglo-Egyptian Sudan, South Africa, India and Ceylon

(Class Picture No 62 in the portfolio)

be as a dwelling place for man, but in cool and fairly wet areas supplies of coal and iron greatly encourage the development of the settled life The coal fields of the British Isles, the United States, France and Germany in particular have developed into large urban centres of population with vast industries

Mountain regions.—Mountain regions occur in all parts of the world—hot, cool, cold, wet and dry Life in mountain regions must necessarily depend upon the altitude, and the resources offered by nature Where life is possible, it is of a settled character, since movement is difficult Trees, grass, ice and snow are characteristic features of mountains. Lumbering, pastoral occupations, and employment resulting from the visits of tourists, provide work for the scanty population. Mining in certain regions provides an additional occupation.

The ocean.—Notice must also be taken of the vast areas of water which cover so much of the earth's surface The water of the earth is traversed for two main reasons (1) for purposes of trade, to carry the materials of the earth from one place to another, (2) to obtain fish as one of man's foods. In each case man lives in a movable home for the greater part of his time, but it is a home which is fixed in type. He may suffer many discomforts from storm and tempest, but he has most of the comforts of the town dweller.

The homes of man.—In studying the main regions of the world, the influence of man's natural environment has been shown to determine his occupation to a marked degree. It is similarly interesting to show that the form and character of his dwelling is determined largely by the nature of the region in which he lives The Eskimo of frozen areas builds his winter hut of snow, while the dweller of hot forests uses leaves and stalks. In hot, swampy areas dwellings are built on poles and in trees, but in the temperate forests log huts are the rule In some areas of cool grasslands houses are built of earth and covered with turf, in Japan the houses are constructed with bamboo and paper The densely populated areas of cool lands have buildings constructed of brick, stone, timber and slate, but in mountain areas stone is the chief material used. The nomad of the tundra builds his tent with poles and skins, but the nomad of the grasslands, although a tent dweller, can add to his comfort with rugs and various domestic utensils Local material and the circumstances of the area largely determine the nature and the type of the dwelling place of man.

No matter to what degree man is influenced by the condition of the area in which he lives, life is always a struggle between man and nature. Sometimes man is the victor, but usually it is nature that is the all-powerful master. Man has achieved what at one time seemed to be the impossible In certain parts he has made the desert fertile, he has wiped out many virulent diseases, he has conquered many physical barriers, regulated the flow of rivers, drained swamps, and planted with useful crops areas which were once covered with thorny, spiny, poisonous and useless plants There is, however, a limit to his activities Man has made the earth a home for man, but nature has made man what he is to-day—a creature moulded by his environment

CHILDREN'S STORY

Part I

Show the Class Picture No 61 and invite the class to look at it carefully and tell all they can about the children. Get them to describe the various costumes and suggest reasons why the Eskimo boy wears furs, and why the Canadian boy is well wrapped up and is sliding on skis They should note the contrast in the dress of the Australian girls, and they will observe that this is

similar to that worn in England. The costume of the Maori girls will puzzle them and it will arouse their curiosity The fringed dresses seem to have been made from a plant and the material has not the same appearance as cloth woven in the ordinary way. The bare shoulders of the girls show that the weather must in general be warmer than in the British Isles. One, however, wears a cloak, telling of cool mornings and evenings She also carries a bag made of the same fibrous material, but her umbrella and smart shoes might very well have been made in Britain. The home she is visiting, too, has a neat modern appearance Discoveries such as these made by the class form a stimulating preparation for the story to follow Only a few points concerning each of the children illustrated are noted in this first lesson, as they will be dealt with again later on

The small boy who is fishing in the icy sea is called an *Eskimo* He is well wrapped up in clothes made from the warm skin of a white bear, for the land in which he lives is very cold He is not a white boy, for his skin is of a yellowish-brown colour, his eyes are rather narrow and his hair is straight and black The dog by his side is a young Eskimo dog. Its father and mother, with several more dogs, are away from home running over the snow dragging a sledge behind them The boy's father is sitting in the sledge with a sharp spear at his side He is hurrying away to the sea where he hopes to catch a nice fat seal to bring home for the boy's dinner Perhaps he will catch some fish, for the Eskimos eat a great deal



[Courtesy C N R

CLIFFSIDE SKI CLUB, OTTAWA, ONTARIO

of fish When the dog is well trained, he, too, will be harnessed to a sledge The boy is standing on the frozen sea and has caught some fish and a crab through a hole he has made. Behind him is a hut of thick planks in a village, where his parents and brothers and sisters live in the winter The country where this Eskimo boy lives is called Canada It is a long way from England, but thousands of men and women, boys and girls of Canada speak English British people can sail to that country in five days by steamship, and many fly there in an aeroplane in less than one day. It would take many days more, however, to reach the cold land where the Eskimos live, and if you did not go by airplane, you, too, would have to sit in a sledge and be drawn along by dogs What fun it would be!

The Canadian boy is having a happy time running over the snow on skis It is not easy to run on skis They are long pieces of wood taller than the boy He straps them firmly to his shoes and then slides and runs over the frozen snow The winters of Canada are long, and deep snow covers the ground Then the boys wrap themselves in woollen clothes and put on stout boots and warm mittens, and go out to play at snowballing, sliding, skating and ski-ing If they live on a hillside, they have great fun sliding on the snow down the hill in boxes with smooth pieces of wood like skis fixed at the bottom to make the boxes run swiftly This boy's father is at work in the forests cutting down trees During the summer he will work in the harvest fields gathering wheat, for Canada has some of the richest wheatlands of the world Most white men eat bread made from wheat, and much of the bread eaten in England is made from the flour of wheat grown in Canada King George of England is also king of Canada

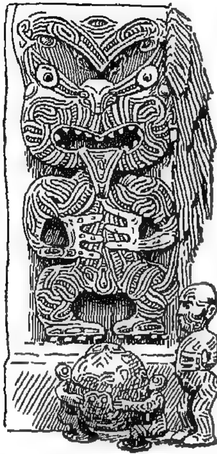
A farm in western Canada is a very large place. If you visited one, you would see hundreds of cattle and huge fields of wheat and oats much larger than any such fields seen in England. Canada, you must know, is a very large country, much larger than England. Parts of it, where the Eskimos live, are very, very cold, and most of it is cold in winter, but pleasant and warm in summer.

To visit the home of the *Australian girls* we should have to stay on a ship for six weeks The land of Australia where they live is a warm country far, far away towards the south. Most people from Britain who visit there go by ship, but some like a quick journey. Then a huge 'plane will take them, passing over seas and lands of many kinds The British were the first white people to live in Australia so nearly everybody speaks English and the king is King George. It is such a delightfully warm country that boys and girls can always dress as you do in a hot summer. Children in Australia do not often see snow unless they climb to the tops of some of the high mountains Some of their fathers have hundreds of sheep and probably some of your own clothes are made of wool that grew on the backs of Australian sheep. Many men keep cattle, and others grow wheat as the Canadians do.

A number of strange animals live in Australia, and one of the most interesting is the kangaroo, which hops along the ground as fast as a horse can run It has very long hind legs and short fore legs, and it uses its strong tail to support it when sitting down. (See Class Picture No 85)

Three days' journey by ship from Australia takes us to another sunny land called *New Zealand* The pretty dresses of the girls in the picture are made from New Zealand flax sometimes trimmed with feathers of a bird called a kiwi. The silky threads of the flax come from plants with long leaves like ribbons. When the British first went to live in New Zealand they met many brown people in clothes of flax, but to-day they dress as we do. These people used to greet one another by shaking hands and pressing their noses together You should try this way of greeting a friend. The white and brown people are now great friends. Both are strong and healthy, for they live in a cool land where there is bright sunshine in summer, and

where it is not very cold in winter Many sheep and cattle are reared in New Zealand, and wheat is grown for food



Maori Wood Carving

Part II

All the countries together over which King George reigns are called the Commonwealth and Empire We have seen pictures of the children who live in the cold land of Canada, and the warmer lands of Australia and New Zealand, we must now look at the pictures of children who live in the hot lands of the British Empire (Show the Class Picture No 62.) The first is a *Girl of the Sudan*, in Africa You can understand at once that the Sudan is a hot land, for the girl wears a loose robe Her skin is dark brown Can you see what she is carrying? In the hot lands wheat does not grow very well, so the people grow maize to make porridge. Maize is generally called corn, or mealies It is a tall grass plant which bears large cobs or heads in which are numbers of large seeds If you keep fowls at home you will know what these seeds are like Before the cobs are ripe and the seeds hard, they are very sweet and pleasant to eat, and the girl of the Sudan likes them very much There are not many British people living in the Sudan, but the young girl sometimes sees British men who look after big fields of cotton. The girl lives with her parents, brothers and sisters in a house of smooth clay with a flat roof Her father and mother work in the cotton fields, and she minds the baby and every day helps to pound the mealies into flour Palm trees bearing sweet dates grow near her home. She has never seen a train, but sometimes one of the British men comes to her village in a motor car, or, perhaps, in an airplane



African Girl
Pounding Maize

The *South African schoolboy* lives in Africa, too, but many hundreds of miles away from the home of the girl of the Sudan. The sun is not so hot where he lives, and as he meets white people every day he wears clothes like those worn in England. This boy is in school He is standing up in his desk to answer a question. He can read well, and behind him on the wall are some pictures he has helped to make Through the window can be seen the leaves of a palm tree This boy often sees trains, motor cars and trams, for he lives near large cities which are

like those in England White people and dark-skinned people both live in South Africa. The boy could tell you all about the sheep farms, the ostrich farms and the mealies, and of the oranges and grapes which grow in the sunny land of South Africa.

Another hot land of the Commonwealth is called India. It is made up of two large countries in which live thousands and thousands of brown-skinned people with dark eyes In the hottest parts clothes are light and loose and few are worn by men with hard work to do. People who can afford to do so wear beautiful garments of linen and silk, and some dress as British people do in a hot summer The girl in the picture has a graceful sari wound round her and over her head. She is walking past a mango tree bearing fruit like huge juicy plums. She and her brother live on the wide flat lands where men and women grow rice, for Indians eat a great deal of rice Ceylon is an island country close to India and the girl with the jar lives near a hillside, where is grown the tea you have when school is over.

TEACHING HINTS

1. Globe.—It is as well to introduce the globe at the beginning of the year Children are always highly interested in it, and although the time may not be ripe for a lesson on it, much will be learnt incidentally if the teacher uses it to illustrate the positions of the countries mentioned Probably a good deal has been learnt about the globe in the infant school, and in that case the teacher will be well-advised to revise the knowledge at an early opportunity

2. Map.—There is no object in leaving the study of maps to a later period Obviously, the children will not rightly understand them, but they are interested in maps, and are anxious to learn something about them It is surprising how much children learn about maps incidentally if they are given the opportunity to look at them

3. Countries.—As this first lesson is specially intended to deal with broad general features, details have been omitted, but if the children have had no previous lessons in the infant school about children of other lands, it will be found helpful to refer to the products seen in the shops Most children are now familiar with the advertisements and films showing Empire products, and they will probably have seen in shops Canadian and Australian apples; Canadian cheese, New Zealand lamb and butter, South African grapes, Indian tea, etc

4. Dwellings.—Children readily understand from their own experience why people in cold lands wear furs and those in hot lands wear linen clothes Even at the age of seven they will be able to reason why some Eskimos build winter houses of snow and summer houses of skin, also why many African people build their homes of branches, leaves and grass If they are taking the history course in this volume they will learn why the ancient Egyptians built their houses of bricks made from river mud The point to bring out is that man naturally uses for his dwelling the material which is most readily obtained

5. Caution.—It is advisable not to tell any more in this lesson about the various children illustrated in the Class Picture, or it will be impossible to cover the work in a regional way. Probably the children already know a good deal more about some of them, such as the Eskimo, but as these will be dealt with in more detail later on, it is best to go *straight on with the work*, or little progress will be made It should be remembered that the Eskimos are, relatively, very unimportant people

6. British Commonwealth.—This term should be simply explained at an early stage See that the children understand that the

British Islands are part of a great family of nations At the end of this lesson they should realise a little of its vast extent, with its lands in the cold, cool and hot parts of the world.



MAIZE PLANT

7. Food.—Three principal food plants of man have been noted in this lesson—wheat, mealies and rice These plants will be frequently referred to in subsequent lessons They represent the main food products of cool lands, hot grasslands and hot wet lands The children will probably be familiar with all except mealies Show a few grains of maize (Indian corn), and demonstrate how some natives grind it between stones, and others pound it in the way illustrated on page 391

8. Memory work.—(*a*) The Eskimo lives in the coldest parts of Canada. He dresses in furs and eats seals and fish. (*b*) The Canadian lives in a great country called Canada In the winter he cuts down trees, and in the summer he gathers the wheat. (*c*) Australia and New Zealand are sunny lands where men keep sheep and cattle, and grow wheat. (*d*) In the hot lands of Africa men and women grow cotton for our clothes and mealies for their own food (*e*) India is a very large country and most parts of it are hot Here men live chiefly on rice.

9. Exercises.—(*a*) Tell of two ways of going to Canada (*b*) How do people travel to the land where the Eskimos live ? (*c*) How do you know that parts of Canada are very cold ? (*d*) Why do boys of Canada like the winter ? (*e*) Why do men live in the forests during the winter ? (*f*) What do many Canadians do in the summer? (*g*) Name a warm country far to the south? (*h*) Is Australia a cold land or a warm land ? (*i*) How do boys dress in Australia ? (*j*) What work do men do in New Zealand ? (*k*) What do people grow for food in Africa ? (*l*) What do people grow for food in India ? (*m*) Why do many people of Africa build grass houses ?

(Many more questions can be asked on this chapter if time permits.)



CORN COB

II. LIFE IN COLD LANDS

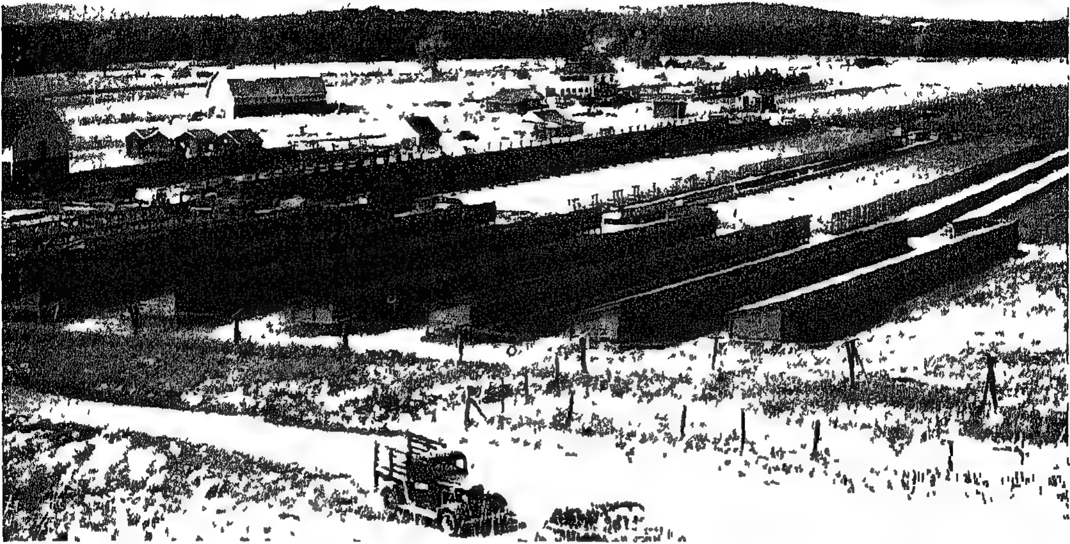
PICTURE REFERENCE



ESKIMOS IN SUMMER
(Class Picture No 63 in the portfolio)

INTRODUCTION

The Eskimos.—The name Eskimo is said to have been given by Indian neighbours to signify people who eat their food raw It is generally agreed that the Eskimos are in blood and language one kind of North American Indian, but they present an appearance very different from that of the Indians Their hair is equally straight but the skin lacks the warm brown colour of their southern neighbours The head is large and long; the nose is narrow and inconspicuous, which, combined with prominent cheek bones and broad face, gives a frontal appearance of flatness, the eyes are black, the hands and feet small, and the average stature about five feet Since the advent of the white



[By courtesy of Canadian National Film Board

COLPITTS FUR FARM, NEAR CALGARY, WHERE 15,000 FOXES ARE HOUSED

man their numbers have been greatly depleted, for they have succumbed in thousands to contagious diseases, notably measles.

The Eskimos live in many lands and in widely scattered communities, so that it is not possible to talk in general terms about their homes and modes of life, for these vary considerably Some, for instance, are rich, educated men owning large herds of caribou (reindeer), others are poor and very primitive in their ways; some live during the winter in snow houses, others, the majority, have never seen a snow house, some have never seen a tree, others live on the margins of forests; some have been acquainted with firearms since the time of the American Revolution, others still hunt with bows and copper-tipped or stone-tipped arrows The nature of their food varies considerably Some depend mainly on seal, some live chiefly on fish, others on caribou (reindeer) and a large number live like Europeans

In northern Canada and Labrador there are from six thousand to eight thousand Eskimos who use snow houses in winter and skin tents in summer Scattered Eskimo settlements dot the whole shore of the Canadian Arctic (with the exception of the southern part of Hudson Bay) and extend down the Labrador coast almost to Belle Isle Without the snow house life in winter would be impossible for the Eskimo in some of the inhospitable islands of the Arctic Circle Where there is little driftwood obtainable, snow houses are the common residence in winter. Even when stone and wooden houses are common, the snow *iglu* is put up on journeys, as it is quickly built and is impervious to weather. To build a house a man cuts a trench some 5 ft. long and 20 in deep in a snowdrift. From the face of the trench with his bone knife he prepares a number of snow blocks slightly concave so that they will lean inwards

when set up on edge. He lays a circle of blocks and shaves them down, so that the succeeding layers form an ascending and narrowing spiral As he works he cuts new material from the inside of his house. A keystone is dropped into the space at the top, and all cracks and crevices are filled with snow Snow platforms are left inside for beds A man can finish a small house in two hours When it is done, the housewife lights her blubber lamp, and closes the door with a block of ice The snow inside begins to melt, and owing to the curve of the roof it does not drip, but the water soaks gradually into the blocks When the woman sees that they are sufficiently soaked, she puts out the lamp and opens the door The rush of cold air freezes the house in a few minutes, and it is then a very solid structure over which a polar bear might crawl without breaking in the dome

At the end of the long winter, when the temperature rises, the snow houses begin to melt Life in the *iglu* soon becomes uncomfortable, and the man and his family are glad when the weather conditions enable them to live in tents. Some of these are small three-cornered shelters, where skins are spread over a tripod leaving the lee side open Others are larger, 6 ft. by 14 ft, with a ridge pole supported on a tripod at each end and a door in the middle of one of the long walls. This, like many of the snow houses, may contain two families, one to the right and one to the left of the door



[*Courtesy C.P.R*

SLEDGE DRAWN BY "HUSKIES"—BANFF WINTER CARNIVAL

North of a line drawn from the middle of Bering Strait to the middle of the coast of Labrador, Canada is known as the "Barren Lands" During winter that part of North America is a barren, frozen waste, but during the short summer ice and snow disappear, the ground thaws to the depth of a few inches, and the land becomes a marshy swamp Vegetation, under such severe climatic conditions, is necessarily very restricted, and consists of mosses and lichens which can survive the long, dark winter. Small flowering plants bloom freely during the short warm period of the year, but mosquitoes are then very numerous Towards the south of the "Barren Lands" stunted berry-bearing bushes, such as the cranberry, crowberry and whortleberry, are found The swamps of the short summer, caused by the water from the melted snow and ice being unable to escape through the frozen ground beneath, are intensified by the addition of water from the rivers The rivers flow from warm areas in the south to very cold regions in the north The mouths of these rivers are still frozen when water from the upper courses is endeavouring to flow to the sea. Being unable to flow to the mouths of the rivers the water floods the land.

Life in the "Barren Lands" is a constant struggle for food. The Eskimo is dependent upon sea animals. Wild fowl, rabbits, caribou and bear are hunted during the brief summers, but seals and whales are more important than any of these The flesh is eaten and the grease serves as fuel for the indispensable stone lamp used for heating and cooking during the winter Wood is extremely scarce, but the Eskimos are skilful workers in bone, ivory and, to some extent, stone Their chief weapons



[*Courtesy Canada House*

SKI-ING—LAURENTIAN HILLS, QUEBEC

are lances and harpoons, the bow is made of bone and driftwood Clothes are well-tailored, and the hunter's canoe, the *kayak*, is distinctive It consists of a bone or wooden framework over which a waterproof skin cover is stretched.

In winter the snow is perfectly dry, and travelling by the dog-drawn sledge is comparatively easy Considerable distances are covered in the search for food and *iglus* are used as dwelling places Snow shoes are worn by some Eskimos when they travel on foot over the snow In summer overland travel is difficult, but water travel is easy The *kayak* is then used in moving from place to place, and the dwelling place is a tent

Cold forests.—South of the "Barrens" a belt of forest stretches right across North America from the Pacific to the Atlantic, and it is broken only by the presence of high mountains or stretches of water.

The forest of Canada known as the cold forest, has a depth of about 600 miles, and a width of 3,000 miles Winter, in this region of trees, is exceedingly cold, and the ground has a thick mantle of snow One wonderful feature of the great forest is the small number of different kinds of trees They all belong to the coniferous group, that is, they have needle-shaped leaves. Pines, firs and spruces are the chief trees; their leaves are short, needle-shaped, thick and leathery to prevent them from giving up water to the air, and for protection from severe cold and winds The conifers are tall and straight, and they taper towards their summits. They have very few branches, and those they possess point upwards Their straightness, height and evenness of grain give them an additional value They bend rather than snap, and are useful as masts for ships, or for scaffold poles Owing to the softness of the timber they are easily cut and worked, and the wood is in great demand by builders for the making of packing cases It is also used in many other trades and industries. The soft parts of the trees are pulped into paper

Those who work in the forest felling trees are called lumbermen They carry on their work mainly in winter, when the frozen snow presents a smooth and slippery surface over which the logs can easily be transported In summer, when the snow and ice have disappeared, the uneven surface would present many difficulties for the movement of huge trees Sledges drawn by tractors carry the logs to the river banks, where they are piled into stacks In spring, when the rivers once more begin to flow and their volume and rate of flow are increased by the addition of water from the melted ice and snow of the land, the logs are tumbled into the rushing streams Huge rafts are carried along down stream in the charge of a few lumberjacks Sawmills and pulp mills are situated some distance from the forest at convenient spots on the river banks The same water power which floats the lumber down from the forests of the interior is used to work the machinery of the mills.

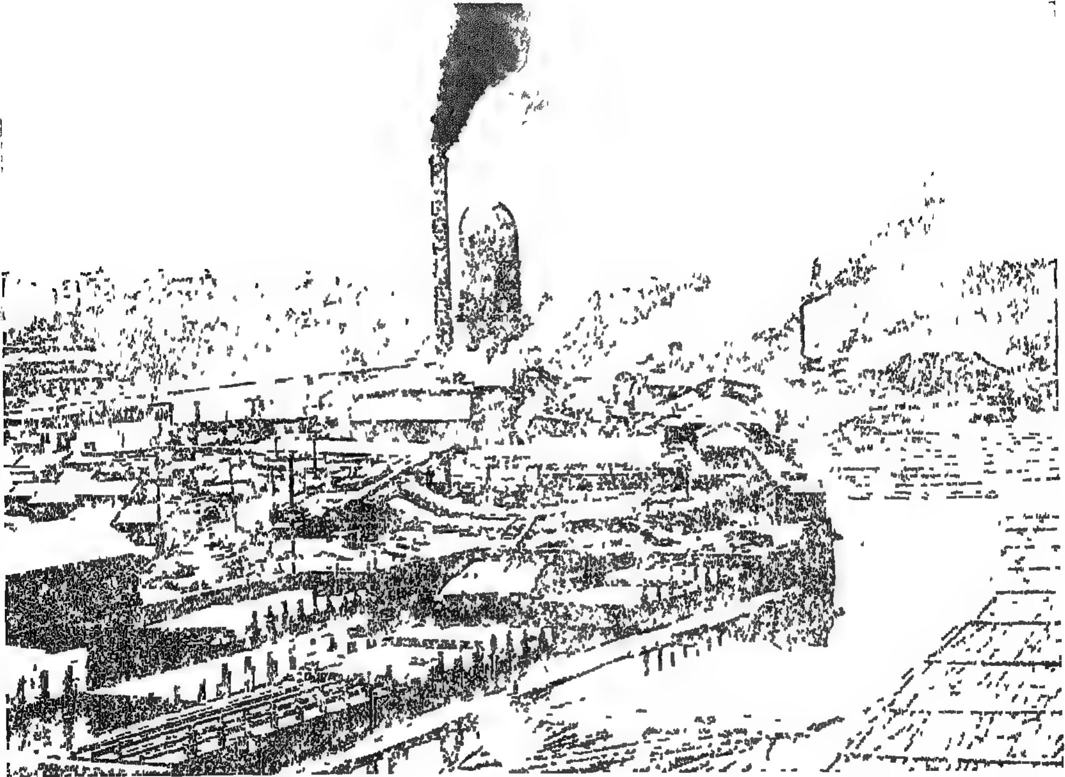
Wood pulp is largely used for paper making It is obtained by grinding softer portions of trees under water, or by acting chemically upon the wood There is a very large production of paper in eastern Canada and Newfoundland because of the abundance of softwood trees and water power

It is important to notice that in the forest area of the wet regions of western Canada some of the world's giant trees are found The Douglas fir is one of the world's tallest trees, and it often reaches a height of 350 ft A modification in the method of lumbering is necessary in western Canada owing to the mildness of the winter The trees are cut up at the spot where they are felled, the sawmill being centred in the forest itself.

In all forest regions wood supplies the most suitable material for the construction of dwellings Log huts are the rule for the backwoodsman

Forest fires frequently do much damage in Canada, as in other areas of cold forest Soft timber contains a great deal of resin,

and in dry seasons the wood becomes very inflammable. Lightning may often start a fire which wipes out a large area of forest.



TYPICAL SAWMILL, VANCOUVER

Fur-bearing animals.—The Canadian forest is the home of large numbers of animals The evergreen leaves, berries, nuts and soft twigs provide them with a never-failing supply of food. Black, brown and other bears, the ermine, marten, silver fox, mink, beaver, sable, muskrat, and racoon are all very numerous Most of these have skins which are highly valued for clothing in many lands Trapping these animals is an important occupation in the forest, but the life of a trapper is a hard and dangerous one He is open to the attack of many of the animals he desires to catch, and, in winter, he is subject to the rigours of a severe climate. His dwelling place is a simple shanty built out of fragments of the forest, and his food supplies are often scarce

The Hudson's Bay Company was founded in 1670 to engage in the fur trade with the North American Indians Later the excellent water route of the St Lawrence was used by adventurers who penetrated the forest for fur Their success led to the formation of the North-West Fur Company Rivalry caused many struggles, but ultimately the two companies joined forces in 1821

Animals usually produce an amount of fur which is in proportion to the warmth they need, and we thus find that the winter coat generally constitutes a much more valuable product than the summer one For the same reason, the furs which are most highly

prized are those obtained from the coldest regions. The dense, close fur of the mole and beaver is, however, more as a protection to the skin to save the animals from irritation during burrowing

Some of the fur-bearing animals need special mention. The beaver haunts the streams flowing through the wooded regions. It has strongly webbed hind feet which are used in swimming, and a flattened tail used as a rudder. The body varies in length from two and a half to three feet. The great interest of the beaver lies in the wonderful skill and ingenuity it shows in the construction of its house, and in the building of a dam to give a good depth of water near its dwelling place.

Muskrats live in streams and ponds, and are most active at night, spending the day in their burrows. They sometimes build winter huts composed of food material plastered together with mud The fur from these animals, one of the cheaper kinds, is called *musquash*

The martens spend most of their time in trees and prey chiefly upon small birds and mammals.

The mink gives a dense, close, dark brown fur. This creature lives chiefly on fish, and it has a very unpleasant smell The most valuable fur, given by the stoat or ermine, is obtained from the colder parts of the forest area The stoat, like the Arctic fox, displays a seasonal change of colour. This change aids these animals in escaping from their enemies, or in stealing unperceived upon their prey

The fur seal, known as the sea bear, is hunted for its fur mainly near the shores of Alaska. Only the young males are killed, and it is their woolly under fur that constitutes the sealskin of commerce.

CHILDREN'S STORY

The Eskimo

We will now have another talk about the Eskimo boy whom you saw in the coloured picture fishing. You will remember that he lives in a part of the Commonwealth called Canada. His home is in the land of ice and snow far away from the homes of white people. Summer has come and the ice is melting so that his father can now go out on the sea in his canoe to catch fish This very pretty canoe is called a *kayak*. Its ribs are made of wood or bone, and the cover is made of fine skins sewn tightly over the ribs The man fits so neatly into the hole in the top, that even if the kayak should overturn in the water, none can get into it through the hole.

The summer home of the Eskimo is a skin tent This is very quickly put up. The men put three poles into the ground to make a tripod, and they stretch skins of animals over the poles, weighting them at the bottom with stones. Upon a bench of earth inside they lay more skins on which to sleep.

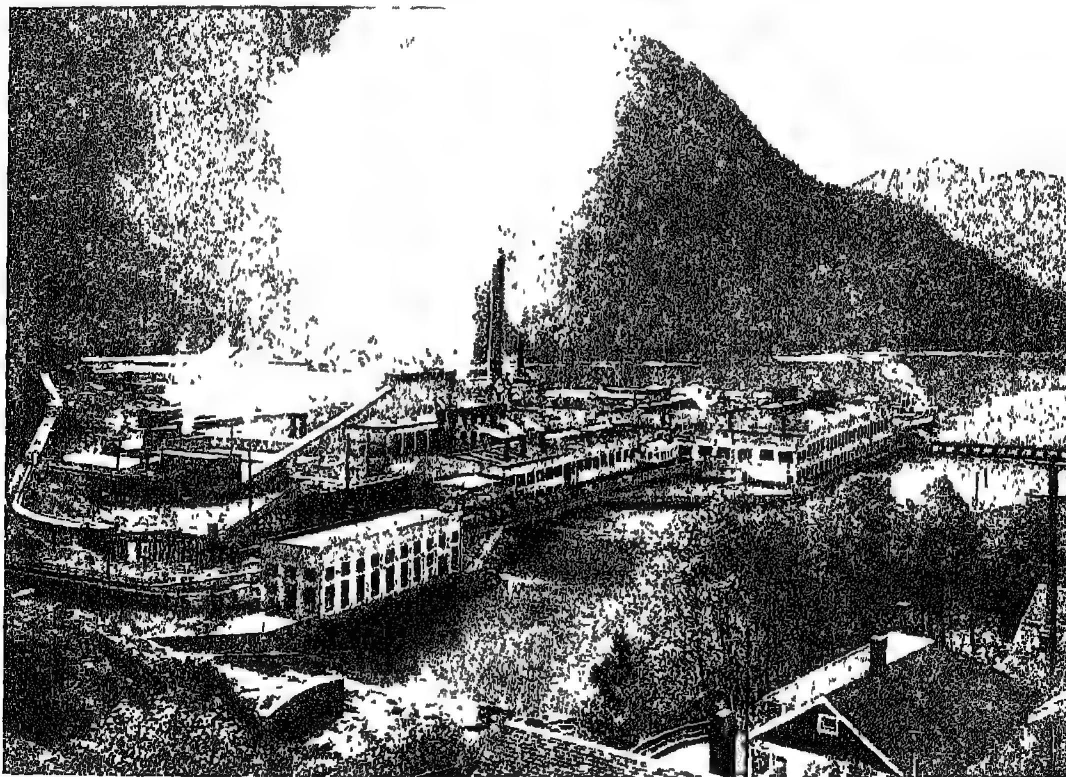
One of the strangest things that an English boy would notice, if he lived during the summer with the Eskimos, would be that the sun does not go to bed It shines all day and all night It never rises very high overhead, but there it is, and in some parts daylight lasts for several weeks Then the ice and the snow melt, pretty flowers quickly bloom, and butterflies and bees are seen The summers, however, are short Bitter winter quickly comes, and in some parts there is then no sunshine for weeks together

When the ground is covered with snow an Eskimo may build a winter house of snow This is a very easy job for him, and he can finish a house in about two hours With his bone knife he cuts out large blocks of snow and builds them in layers round and round, until he has made a house that looks like a large basin upside down When he has finished his wife goes inside, lights her lamp, closes the door with a block of ice, and waits The lamp is a stone basin filled with fish or seal oil on which floats a wick made of twisted moss. The little house soon begins to get warm. Then the snow melts, and when the inside is very wet the woman blows out the lamp and opens the door.

The icy wind blows through the doorway and in a few minutes the house is frozen solid. Now it will stand secure all the winter, and the family of Eskimos can live happily inside If they intend to live there long they will build a shelter for their dogs, for Eskimo dogs are very useful for drawing sledges over the frozen snow when the men go hunting for seals, bears and foxes

Of course the Eskimo has to wrap up well in fur clothes when he goes out hunting You would find it hard to tell a man from a woman, they are dressed so much alike, but you would soon notice that a woman's hood is larger than a man's, and often you would see her baby inside it.

(Let the children tell as much as they can from the Class Picture)



[By courtesy of Canadian National Railways

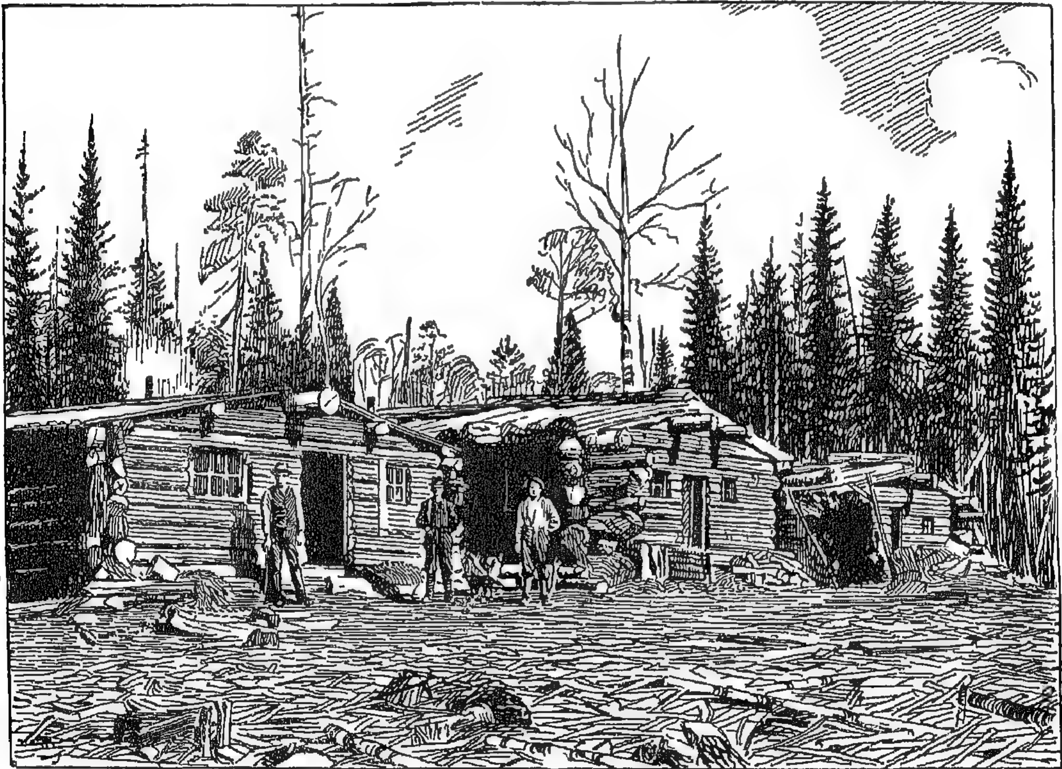
PULP AND PAPER PLANT, OCEAN FALLS

LUMBERING IN CANADA

I have already told you that Canada is a very large country, much larger than England If you start from one side of Canada in an express train, it will take five days, travelling night and day, to cross to the other side. You must not imagine that it is all a cold land. Just the northern part, where the Eskimos live, and where only tiny plants grow, is really very cold Stretching across the whole country there are hundreds and hundreds of miles of forests. The Canadians are very proud of their forest lands, for they help to make the people rich. Have you ever wondered where we get all the wood that is used for building houses? Look round your room and notice the things

that are made of wood—chairs, tables, desks, cupboards, floors, picture frames, rulers, penholders, pencils What a long list you could make of things that are made of wood! Perhaps you do not know that a great deal of paper is made of wood, too. Many of the books you read, and almost all of the newspapers that are published every day, are made of wood A great deal of the wood that is used in England for building and for paper making comes from Canada, so now you will see why the Canadians are proud of their forests, and why the forests help to make them rich.

In the great forests of the colder parts of Canada most of the trees belong to the same family They have short, needle-shaped, thick, leathery leaves Most of them are tall and straight with few branches, and they bear curious and very pretty fruits which are called cones Most of these trees are covered with leaves both in summer and winter There are pines, firs and spruces. No doubt every boy and girl has seen at least one of these conifers Where do you think you have seen one, or a piece of one? At Christmas time! All the thousands of pretty trees that everybody likes to see decorated with toys at Christmas are tiny conifers, or perhaps they are the tops of branches of them Now you will remember what kind of leaves these trees have and how the branches stand out straight and stiff and point upwards to the sky. Have you ever put a piece of Christmas tree into the fire? How it crackles and blazes! These pines are full of resin that burns very brightly Matches are made from the wood



LUMBERMEN'S LOG CABINS

of pines because it contains this resin. When you light a match you will often notice a strong, pungent smell from the smoke of the wood That is the smell of burning resin which is contained in the pine One of the most terrible things that happens in Canada is when parts of the vast forests catch fire The beautiful pines burn so easily and fiercely that once they catch alight it is very difficult to put the fire out. A careless hunter or trapper may leave his camp fire burning, and from it a spark may set fire to the dry moss under the trees, and so begin a terrible forest fire. Day and night forest rangers watch the miles and miles of forests for the first sign of a puff of smoke Some of them travel in airplanes over the forests looking to see that all is well. At the first sign of danger wireless and telephone messages are sent out. Men leap into motors or jump on horses. Some near the rivers hurry into canoes, and all rush swiftly to the spot where the smoke has been seen Then with branches of wood, heavy sticks, spades, axes and other tools, all work frantically to beat out the smouldering grass and moss

When timber is cut, the wood is often called lumber, and the men who cut down the trees of the forest are called lumbermen. At the end of the "fall," as the Canadians call *autumn*, parties of lumbermen go off to the forests with their axes and plenty of food They build themselves large wooden huts or shanties in which they live all together One or two stay in the shanties to cook the food for meals, and the others work very hard all day long felling the tall trees The tops and branches of the trees are lopped off. the great logs are hauled by strong tractors, rolled and pushed along the frozen snow to the river banks During the winter, when this work is done, the rivers are frozen, so that by the time the spring comes there are great stacks of logs waiting at different places for the rivers to carry away

The rivers are made to do the work of carrying No matter how many hundreds of great trees there are, when the ice melts the rivers carry them all Hundreds and hundreds of logs at a time float close together. Some men have to watch the logs and see that they do not get jammed They have iron spikes in their boots to enable them to walk on the logs as they roll about in the water. They carry long spiked poles with which they push into place any log that does not float along with the rest. Often the men build wooden huts on the rafts so as to be ready night and day to guide the rafts down the rivers. On and on go the logs, sometimes for weeks together, till they are guided to the great sawmills, where some are quickly cut up into planks and poles for building houses and furniture, and others are ground between rollers in great machines and mixed with water to make a thick paste which is called wood pulp Tons and tons of this wood pulp are sent in ships to Britain to be made into paper.

Before leaving the wonderful forests of Canada I must tell you about a beautiful tree that is not an evergreen It is called the maple The Canadians think that this is the most beautiful of all their trees. People in England call the rose their special flower, the Scots have the thistle, the Irish have the shamrock, the Welsh have the leek, and the Canadians have the maple leaf This leaf is beautiful in shape, and when the autumn comes the maple trees show a blaze of tints in yellow, orange, brown and red. Then the Canadian woodlands are a wonderful sight From one kind of maple the Canadians get maple sugar. In early spring holes are bored in the trees. The juice or sap which runs out is collected in cans and taken away to factories, where it is slowly boiled until the sap turns into syrup, and then into a soft brown sugar. Canadian boys and girls are very fond of maple sugar and the candies that are made from it.

The Fur Trappers

As you walk along the streets you will sometimes see a shop window full of beautiful

fur coats and wraps which ladies like very much, because they are so warm and comfortable to wear. Some of the small pieces of fur cost only a few shillings, but some of them cost many pounds You may see a fur coat in the window with such a price marked on it as £100, and some are much more expensive Where do these furs come from and why are they so dear? Many of the best furs come from the forests of Canada In these forests live wild animals such as bears and foxes In the rivers and lakes, too, live beavers and muskrats

Every year, when the autumn comes round, men called trappers get ready to go to the forests to catch these wild animals in steel traps They are caught during the winter, for then the coats of the animals are specially thick Sometimes several trappers set out in a party, but often a trapper goes alone to the forest He takes with him a sleigh drawn by dogs On the sleigh he packs up all he needs for several months. He has a sleeping bag made of warm reindeer skin, for he will have to sleep in a rough hut which he must build of wood, snow and branches He takes plenty of flour, salt pork and dried meat, for in the lonely forests there are no shops or houses He must have matches to light his fire, and he carries a gun to shoot any animals that may attack him or which he needs for food, and besides these things he takes a number of steel traps All day long he travels, sometimes riding in the sleigh, sometimes running beside it on his snowshoes. Snowshoes are wooden frames, joined together with a network of leather straps which makes them look like tennis rackets On these the trapper can glide easily over the soft snow without sinking into it.

When he sees the tracks of animals and knows that they are likely to pass that way again, he stops and sets his traps, cunningly hiding them so that the animals cannot see them Sometimes if he wishes to catch a beaver or a muskrat, he sets his traps under water. At nightfall, when it grows too dark to journey any longer, he makes camp, lights a fire to cook his supper and to keep away prowling wolves or bears, gives his dogs a good feed of frozen fish, and then, rolling himself in his sleeping bag, sleeps till morning

In this way the trapper travels on day by day till all his traps are set Then he is ready to turn back to visit the ones he has laid. What will be in each as he comes to it? There may be nothing at all, and sometimes it seems that trapping is very wasteful and sad work A poor creature may be caught whose fur is of no use at all, or perhaps the animal in the trap has been eaten by another and its beautiful fur spoiled Now and then, however, he sees in the trap a valuable animal, such as a beautiful silver fox, whose thick black fur is streaked with long white hairs which make it look like silver He kills the fox and carefully skins it, then he piles the skin or pelt on his sleigh and goes on to the next trap

Day after day the trapper works hard getting more and more pelts At the first signs of spring, when the snow begins to thaw, the trapper makes for the trading station This is a village of wooden houses and stores where men live ready to buy the pelts from the trappers Perhaps the trapper has hundreds of miles to travel with his load of pelts to the nearest trading station He is very glad when he arrives there to see men's faces again after his lonely travels, and he is glad, too, to get a good meal, for there is usually little left of the food which he took with him He meets many old friends who, like himself, have been trapping all the winter, and they have many stories to tell one another The traders who buy the pelts send them to one of the great fur markets in London, Montreal in Canada, or some other city

Now, perhaps, you will understand why some of the furs that hang in the shop windows are so dear Make a list of the names of animals which have fur coats Do not forget rats and mice

TEACHING HINTS

1. Blubber.—Blubber is the covering of thick fat which surrounds the bodies of whales, seals and some other marine animals It is one of the products for which whales are hunted, and from it comes the valuable oil for making into margarine, soap, etc The Eskimos persistently hunt the seal for its blubber and skin

2. Lumbering.—This term is applied to the harvesting of the forest products, and the conversion of the wood into various shapes and sizes for commercial use The term originated in America, where one of the first great obstacles encountered by the early settlers was the forests. Except for the building of shanties the forests were considered useless Trees were felled primarily to clear the ground for farming operations, and the logs were referred to as "lumber" according to the original meaning of the word. In England the sawn logs and planks are usually called timber

3. Canada's immense distances.—From Halifax, on the eastern seaboard, to Vancouver, on the western, the journey by rail is 3,772 miles From Vancouver, Canada's westernmost city, to Dawson City among the gold-bearing places of the Yukon is 1,550 miles by water and railway From the 49° N parallel of latitude (which is the boundary in the west with the United States) to the Arctic Ocean is 1,500 miles in an air line Canada is somewhat larger in area than the United States and little less than that of the whole of Europe.

4. Forests.—On the five-day railway trip across Canada one is never out of sight of trees. The forests are part of the forest primeval, except in that part of the prairie region which was once treeless (save along the river courses) and which has now been planted with arboreal wind-breaks Except in parts of the high prairies some variety of pine seems to be ubiquitous from the Atlantic to the Pacific Let the children make a list of all the things they can think of that are made of wood Let them smell the resin of a burning match such as a "Swan Vesta" Some children will want to know more about the manufacture of paper. There is an account of this in Volume VI

5. Maple leaf.—There is a blackboard illustration of this leaf The children will like to draw it and colour it with paints or pastels Most of them will know the national emblems noted in the lesson, but it will be advisable to make sure that they do know them.

6. Snowshoes.—Snowshoes are made of single strips of some tough wood, usually hickory, curved round and fastened together at the ends. Light cross-bars support the middle, and the spaces within the frames are filled with a close webbing of reindeer-hide strips They are fastened to the moccasins by leathern thongs. American Indians and Eskimos have snowshoes of varying shapes, the shoe worn by members of the Canadian snowshoe clubs is illustrated in the blackboard sketches This shoe is about 3½ ft long and 15 to 18 in. broad

7. Moccasin.—This shoe is made of deer skin or other soft leather It is made in one piece and the upper part is often adorned with embroidery or beading The moccasin is the footwear of the North American Indian tribes and is often worn by trappers and settlers.

8. Beavers and seals.—Information on these creatures and on many animals and plants likely to be mentioned in the lessons throughout the volumes is given in the section on "General Knowledge," Volume VI

9. Memory work.—(*a*) Eskimos live in the cold north of Canada (*b*) They live in snow houses in winter and skin tents

in summer (c) Lumberers cut down trees in the Canadian forests during winter (d) In spring the lumber is floated down the rivers to the sawmills. (e) Trappers catch wild animals in the forests and sell the pelts to traders.

10. Exercises.—(*a*) Tell how Eskimos dress (*b*) Tell how they build snow houses. (*c*) Make a list of twenty things that are made of wood (*d*) Tell all you know about pine trees. (*e*) Why do pine trees burn well? (*f*) What is maple sugar? (*g*) What is a trapper? (*h*) Why does a trapper catch animals in winter and not in summer? (*i*) Why are some furs very expensive?

(Many more questions of this character can be given during the lessons)

NATIONAL EMBLEMS



IRISH SHAMROCK



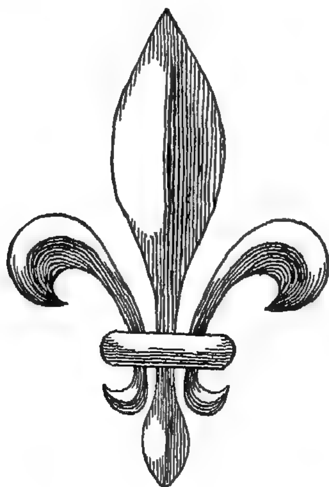
ENGLISH ROSE



SCOTTISH THISTLE

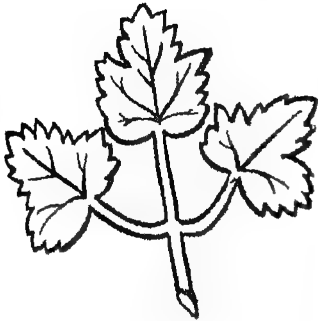


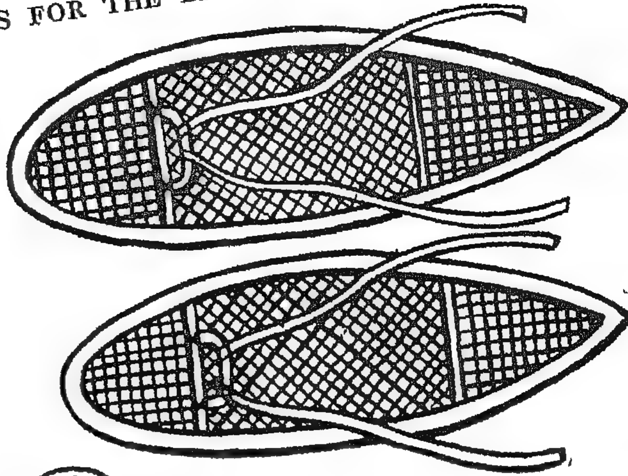
WELSH LEEK



FRENCH FLEUR-DE-LIS

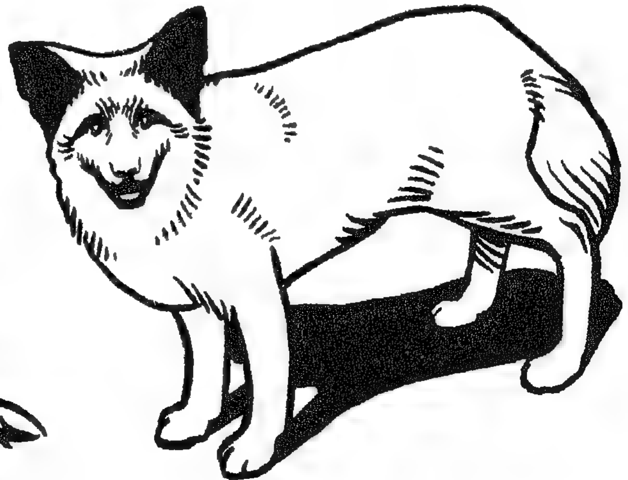
SKETCHES FOR THE BLACKBOARD









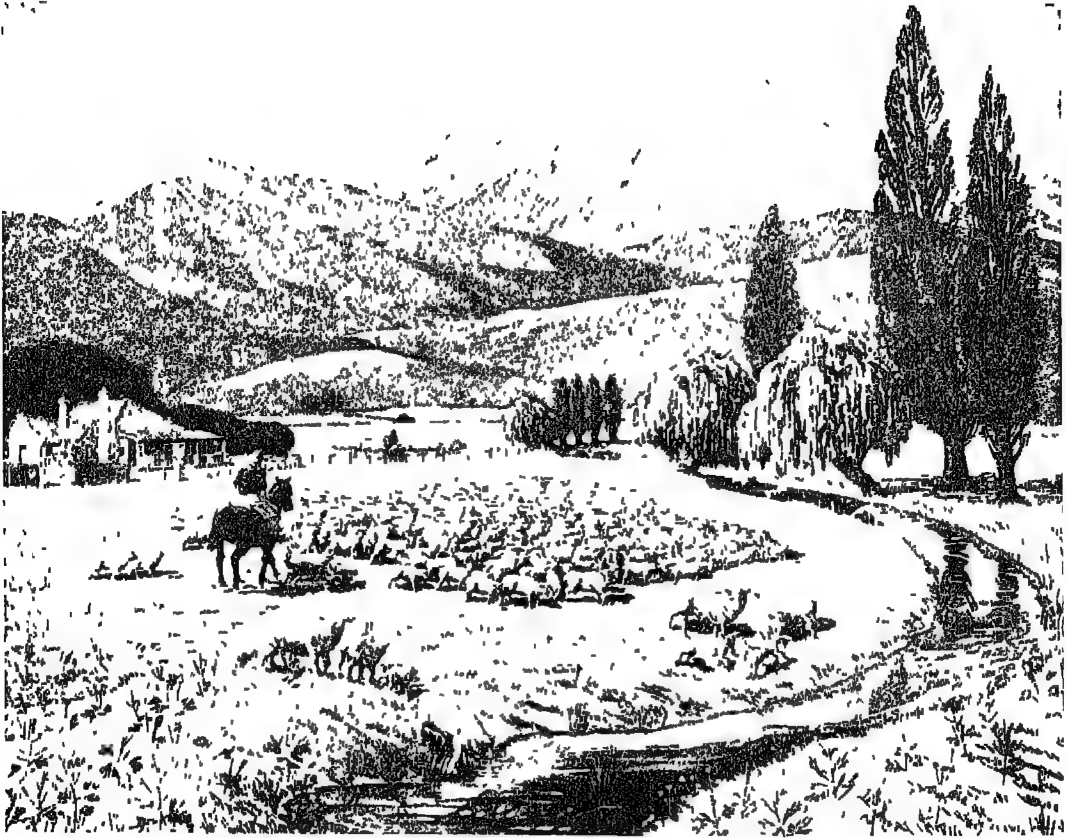


Maple Leaf
Conifer

Snowshoes
Seal
Silver Fox

III. COOL GRASSLANDS

PICTURE REFERENCE



SHEEP-RAISING IN NEW ZEALAND

(Class Picture No 64 in the portfolio)

MANY children will be familiar with the advertisements in the butchers' shops of New Zealand mutton and Canterbury lamb They will have to be told about the Canterbury Plains of New Zealand The sheep is one of the best known animals to children, for even in cities sheep are frequently seen grazing in the parks They will specially notice in this picture the character of the trees in the foreground and the general sunny appearance of the country They will observe, too, the distant mountains, the river, the plain and the sheep stations

INTRODUCTION

The Children's Story in this lesson is mainly concerned with the great wheatlands of Canada and the industry of sheep-raising in Australia and New Zealand. There are illustrations of Ploughing in England, No. 104, Threshing in England, No. 105, and a Cattle Ranch, No. 80, in the portfolio. The chief point of the lesson is to give the children some idea of the work and life of man in the wide open spaces of the cool grass regions of the Empire. It will not be advisable to deal in any detail with these various regions, and several must be omitted. The teacher must take care to compare the district in the neighbourhood of the school with those spoken of in the story. It is obvious that the treatment of the lesson, and indeed the treatment of all geography lessons for young children, will vary with the district in which the school is placed.

The prairies of Canada.—To the south of the broad evergreen forest of Canada, and lying between the Rockies and the great lakes, are the grassy plains. They have a width of 800 miles in the south, narrow to 400 miles in the north, and rise by three distinct steps, or prairie levels, from east to west. This region of grass is Canada's most valuable land, and includes the greater part of Manitoba, Saskatchewan and Alberta. The land is almost treeless, has a rich, loamy soil, is well watered by numerous rivers and lakes, and is highly fertile.

The transition from forest land to grassy plains is the result of a distinct climatic change. The more southerly position of the prairie results in a hotter and longer summer period of the year. The inland position and the lack of the tempering influence of the sea tend still further to increase the summer temperature and, at the same time, bring about very cold conditions in winter. Winnipeg, the "halfway house" of Canada, has a warmer summer than London, but for five months during the winter the temperature is considerably below freezing point. The rainfall of the prairie provinces is rather small and is of a summer character. Winnipeg has about 20 in. of rain a year, and, of this, 15 in. fall during the seven months when the temperature is above freezing point. The five inches of water received during the winter fall as snow, and are equivalent to a depth of 50 in. of snow.

The heavy snowfall of the plains is a distinct boon to the land. When it melts in early spring the moisture remains in the under soil, and so compensates for the small rainfall during the hot summer months. During the winter, when temperatures are very low, the dry, crisp atmosphere makes conditions less uncomfortable than the damp, cool atmosphere of much warmer lands.

The natural vegetation, under the climatic conditions outlined, is grass, a plant which can go through the whole cycle of growth in a short season. The rainfall is not sufficient to keep the soil moist at all seasons, and trees are found only near rivers or lakes. The growing season is confined to the summer months, when the soil is warm and moist. Grass can germinate from the seed, develop, and seed again, before winter sets in. In the early period of its growth, during spring and the first months of summer, the grass is of a rich green colour, but towards the fall of the year the colour changes to brown. Early spring is marked by a profusion of bulbous flowers. Migratory birds leave the prairie in autumn, but return in early spring. Frogs, lizards and hedgehogs, which sleep in burrows in winter, are active when the mantle of snow disappears from the ground.

For many centuries, before the appearance of the white man in North America, the prairie plain was the home of the bison and Indian tribes. The American bison now flourishes only in reservations, but less than 100 years ago it existed on the prairie in countless numbers. In appearance it resembles the domestic ox, but differs in the much greater development of the shoulders and chest, the presence of a heavy

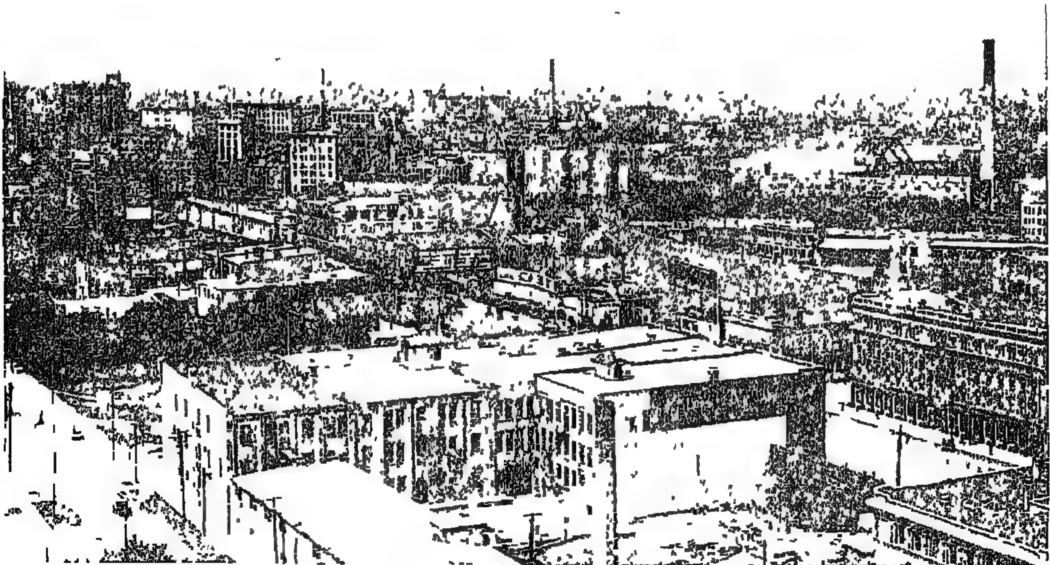
mane, and in the growth of a large beard beneath the chin. No effort has been made to domesticate the bison

The Indians of the plains depended on the bison for their existence Its flesh was their commonest food. In order to have a store of food in time of emergency the flesh was often dried, mixed with fat, and pounded into a solid mass called pemmican The tongue of the bison was considered a great delicacy, and, in time of plenty, the rest of the body would be left for birds of prey after the tongue had been extracted

The Indians were wanderers of the plain, living in tents, called tepees, which could be easily erected and carried These tents were constructed of poles and skins When travelling on the numerous rivers and lakes they used the simple birch-bark canoe which they paddled and steered with one oar. After the introduction of the horse into Canada they became expert horsemen, and they then used that animal to drag their tepees and other possessions from one camp to another

The red man, as a nomad, is now nearly extinct, and the prairie has become farm land The eastern part is now one of the great wheat-producing lands of the world, the middle prairie province, Saskatchewan, leading the way in the production of the golden grain Rich soil, moistened by the winter snow and summer rain, and warmed by the heat of the summer months, is admirably suited to wheat production Winnipeg is the great grain market, and it has grown into a large city because of its favourable position for handling the wheat of the prairie lying to its west.

The absence of trees means that the land needs no clearing before it can be ploughed All that is necessary to turn the prairie into wheatland is hard work, machinery and railways Farms are large, and the



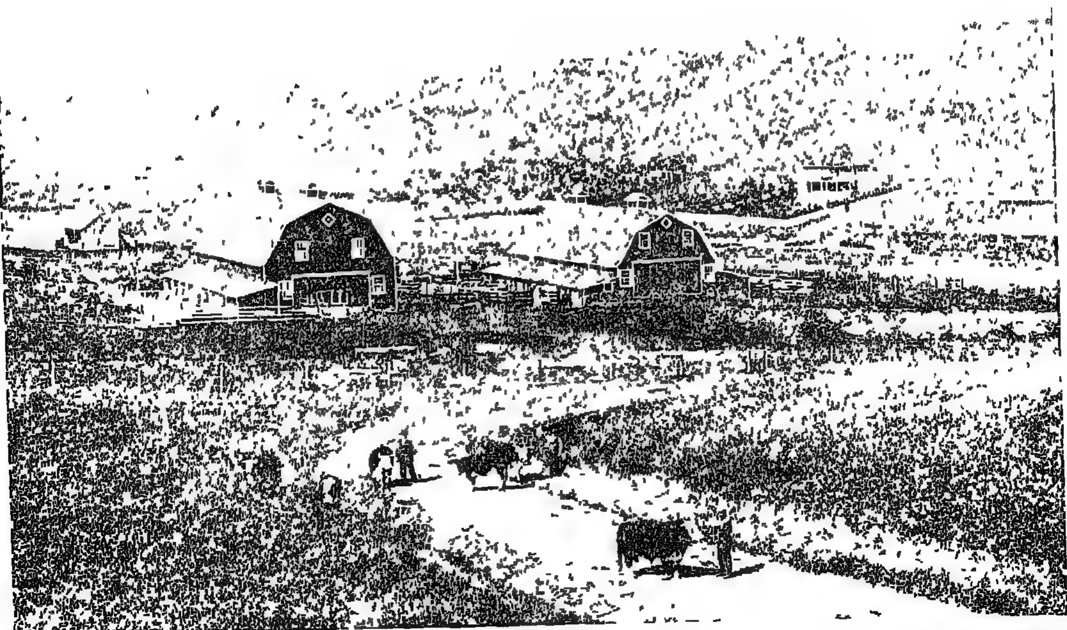
[*Courtesy C P R.*

WINNIPEG—GENERAL VIEW OF BUSINESS SECTION

simple horse-drawn plough and reaper have been superseded by wonderful motor-driven machinery The grain is grown mainly for export, and therefore the development of the grassy plains into farm lands has become possible only by the construction of thousands of miles of railways and roads for the transport of the crops to the ports in the east of Canada. Much of the grain for export is handled through elevators located at most of the railway stations. The farmer delivers his grain to the elevator at his nearest railway station. In addition to the elevators at the railway stations, immense storage elevators have been provided at some of the largest cities. Most of the wheat is taken by rail to Port Arthur or Fort William, on Lake Superior, the nearest points to the prairie on the Great Lakes At these cities it is again stored in elevators to await shipment overseas Immediately after the harvest the railways make special efforts to handle the crops, and trains each carrying over 1,000 tons of wheat are found on every main or branch line in the prairie provinces.

Oats and barley are also grown in each of the prairie provinces, and in addition each farmer has his garden where he raises fruit and vegetables. The garden, after providing a large part of the needs of the family table, is a source of revenue, since there is a good market for vegetables and small fruits Many farmers keep bees, and the production of honey is rapidly increasing

The natural grass of the prairie plain is turned to account for stock raising and dairying On every grain farm there is always a large amount of material not quite good enough for the market, which



[*Courtesy Canada House*

RANCH SCENE IN ALBERTA

makes excellent feed for stock Cattle, horses, sheep, pigs and hens can be counted by the million on the grasslands of Canada.

Ranching is specially important in Alberta, near the foothills of the Rockies The warm Chinook wind rapidly clears the prairie of its winter snow, and cattle can usually be kept in the open throughout the whole year The excellent fodder provided by the natural grasses makes conditions ideal for dairying and stock raising

The importance of the use of the grasslands as feeding ground for cattle needs emphasis In Canada the rapid rise of hundreds of towns and villages has created a demand for milk, cream, butter, cheese and beef Not only do the farmers find a market for these things in their own country, but there is also a much greater demand from the densely peopled regions of many parts of the world which cannot produce what they require in meat and dairy produce. A large export of Canadian cheese, beef, condensed milk and butter thus gives greater prosperity to the Canadian farmer Pig breeding is becoming increasingly important. The establishment of pork-packing houses at Edmonton and Calgary has greatly encouraged the hog industry Canned pork, bacon and hams form leading exports of Canada

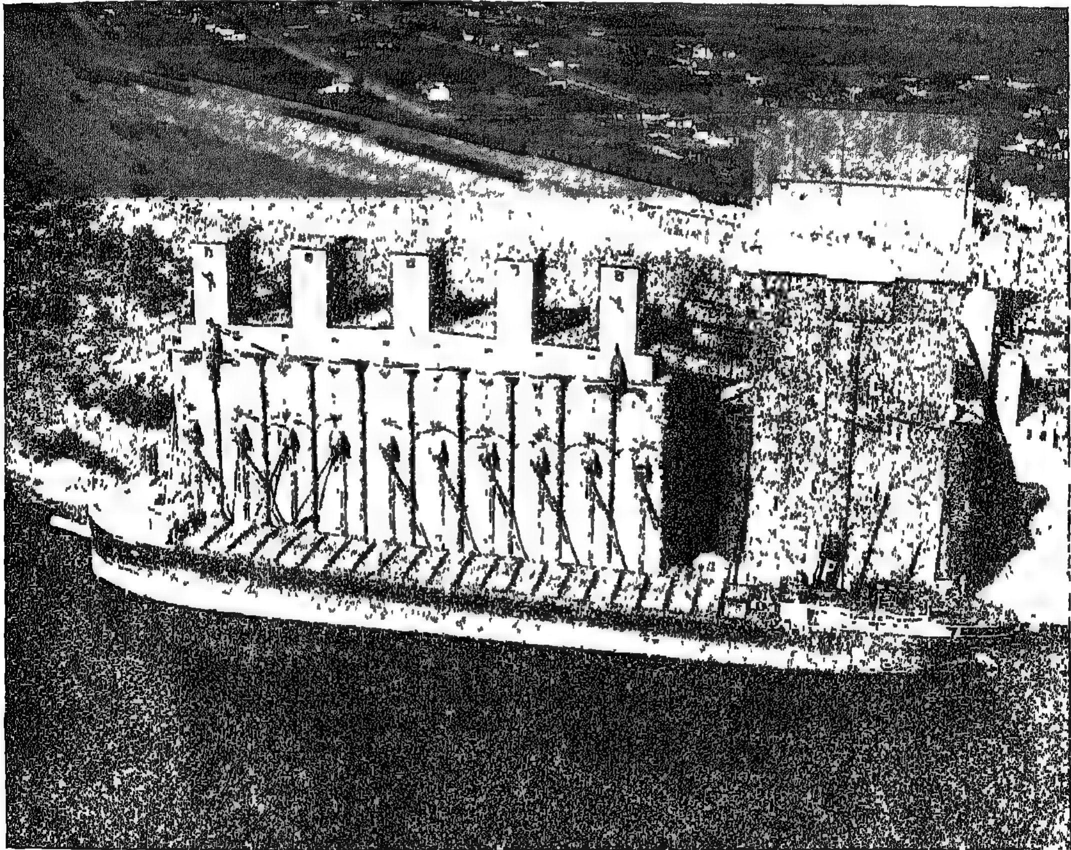


MOUNT ASSINIBOINE—TRAIL RIDERS' CAMP [Courtesy C.P R.

It is interesting to notice that a country suitable for farming on a large scale soon begins to manufacture certain things needed in its area, or based on the abundance of material it produces The prairie plain produces an enormous quantity of wheat,

and many towns are engaged in the milling of flour Farming demands farm implements, and many of these are made in the towns of the farming area The grasses support large herds of cattle, and butter and cheese factories are numerous The development of the prairie during the last fifty years has attracted thousands of settlers, and this has created a great need for building material. Lime burning, brick and tile manufacture, and industries connected with timber for buildings have grown up to meet the local demands.

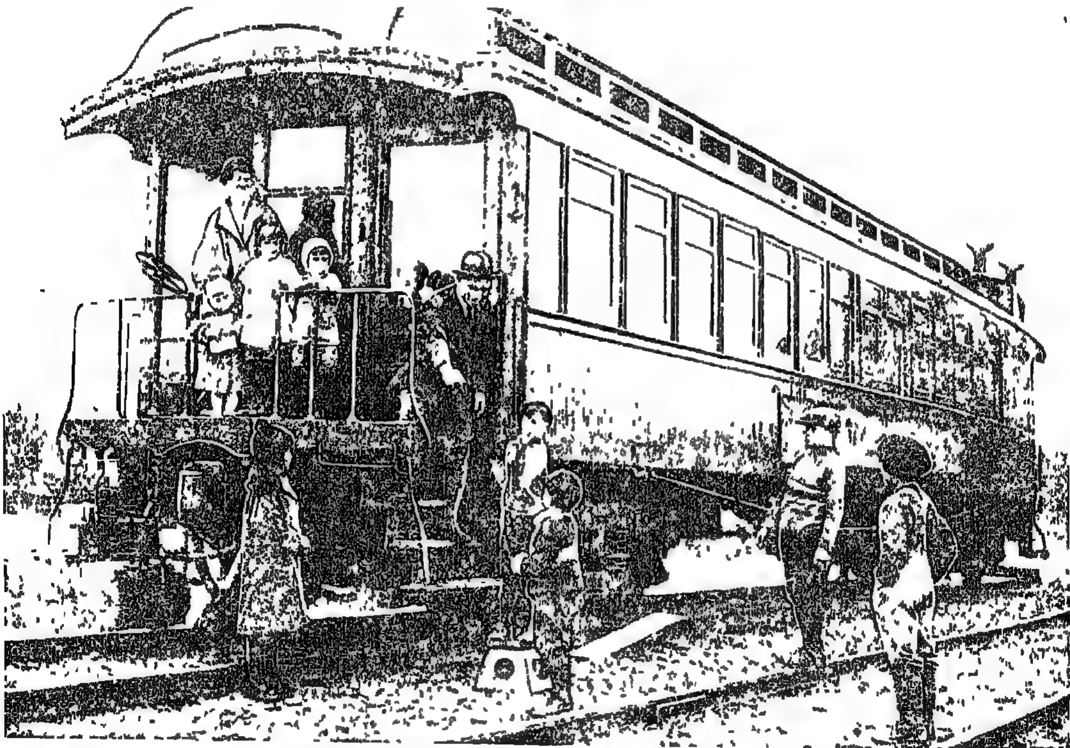
Grasslands similar in many respects to the Canadian prairie are found in many countries. In the United States, to the south of Canada, the prairie is used for grain production and for cattle rearing Wheat is a very important crop, but in parts, where the summer temperature is higher, maize production ranks first The United States is the home of the "cowboy," and cattle ranches are exceedingly large in the western regions of the grasslands In South America the cool grasslands are called pampas, and they produce wheat and meat products The grasslands of Australia and New Zealand are important for their sheep, cattle and wheat, and these British Dominions export tremendous quantities of mutton, wool, wheat, butter and cheese.



[*Courtesy Canada House*

NORTHLAND ELEVATOR, FORT WILLIAM, ONTARIO

The grasslands of Australia and New Zealand.—A little more must be said about the importance of Australia and New Zealand owing to the great prominence of their grassland products Large areas of Australia, particularly in the south-east, support tremendous flocks of sheep and large herds of dairy cattle A contrast must, however, be noticed between the Canadian prairie and the Australian pasture land It has been seen that the prairie was, in its original state, a good feeding ground for cattle, and ready for the plough for conversion into wheatland. Fairly level treeless expanses of land offered very little trouble to the settler Again, in Canada, climate favoured both pastoral and agricultural work In Australia great expanses of grass were not found by the early settlers Many of the areas now converted into sheep runs were more or less covered with bush and scrub, and much useless vegetation had to be cleared Some of the native grasses and bushes (salt bush and sage bush) were, it is true, excellent feed for sheep, but large areas had to be sown with European grasses The climate of Australia, although in many respects very favourable to sheep rearing, possesses one disagreeable feature Large areas have a small rainfall, and are sometimes seriously affected by drought Before the introduction of artesian wells and the commencement of the irrigation of large areas, disaster sometimes came to the farmers through drought. Wonderful progress has been made, however, and Australia now possesses more than a hundred million sheep and is the foremost country in the world for the production of wool. New South Wales is the leading State for sheep



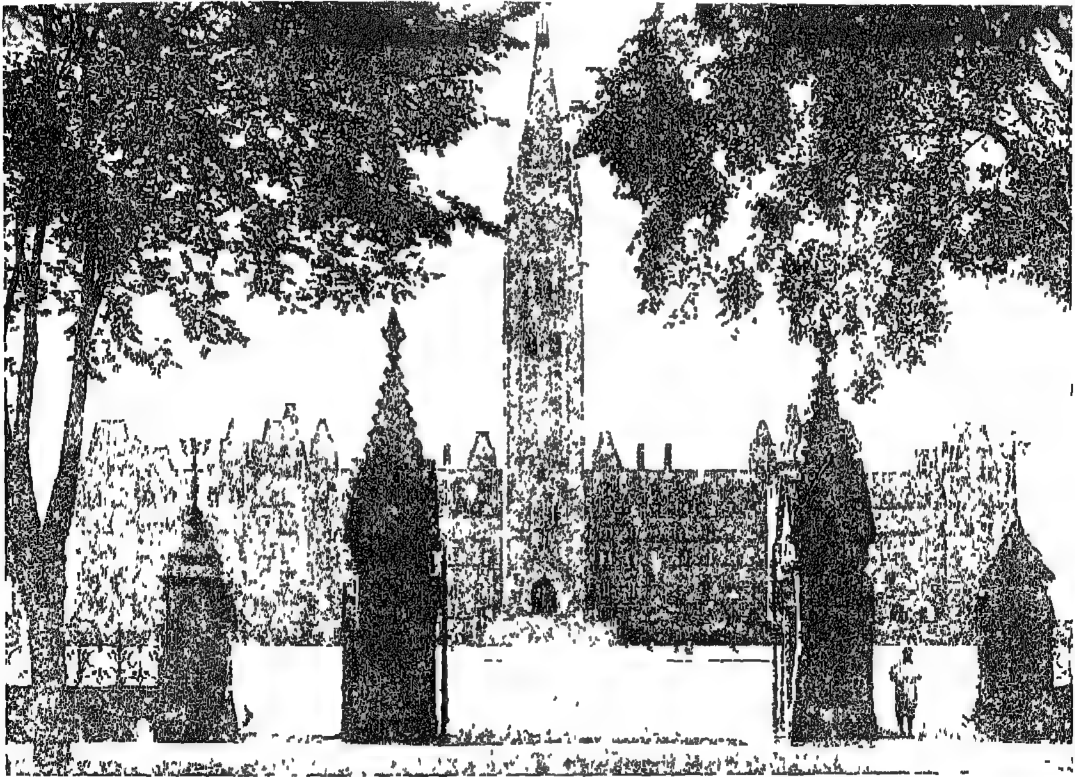
[Courtesy Canada House

C.N.R. SCHOOL CAR ON CAR SIDING—ONTARIO DEPARTMENT OF EDUCATION

and for wool, the area near the rivers Murray, Lachlan and Murrumbidgee being of special importance Each State, however, has some of its territory suitable, both as regards its pasture and its climate, for sheep rearing.

Dairy farming is mainly concentrated on the wetter coastlands, particularly those of Victoria, New South Wales and southern Queensland, and the export trade in butter and cheese is now assuming great dimensions In Australia, dairy herds are able to graze in the open all the year round The climate is so mild that permanent shelters are unnecessary. Two and a half million dairy cattle are now to be found in Australia

New Zealand is in some respects better fitted for sheep runs and dairy cattle than Australia. There are no areas of drought, and there are large areas of excellent grassland which require little preparation for the flocks and herds. Several of the native grasses are excellent sheep food, particularly the tussock grass The best sheep pastures occur on the drier east of both islands, particularly near Hawkes Bay and on the Canterbury Plains Owing to the small size of the islands the number of sheep is small in comparison with that in Australia, but, for its size, New Zealand has more sheep per head of the population than any other country of the world A great trade in chilled mutton and lamb has been built up, particularly with Britain. North Island possesses slightly more than half the sheep of the Dominion. Dairy herds are also more numerous in North Island, especially in the southern half, and the export of butter and



[E N A

PARLIAMENT BUILDINGS, OTTAWA

cheese is very large In both Australia and New Zealand settlement is of recent occurrence in comparison with Canada, but the importance of both countries for wool, frozen meat, hides and skins, tallow, butter and cheese is now very great indeed and is steadily increasing

Agriculture has, similarly, made great progress in both countries, particularly in the cultivation of wheat The south-eastern area is again the chief wheat-growing region of Australia, and in New Zealand a large proportion of the wheat of the Dominion is grown on the Canterbury Plains



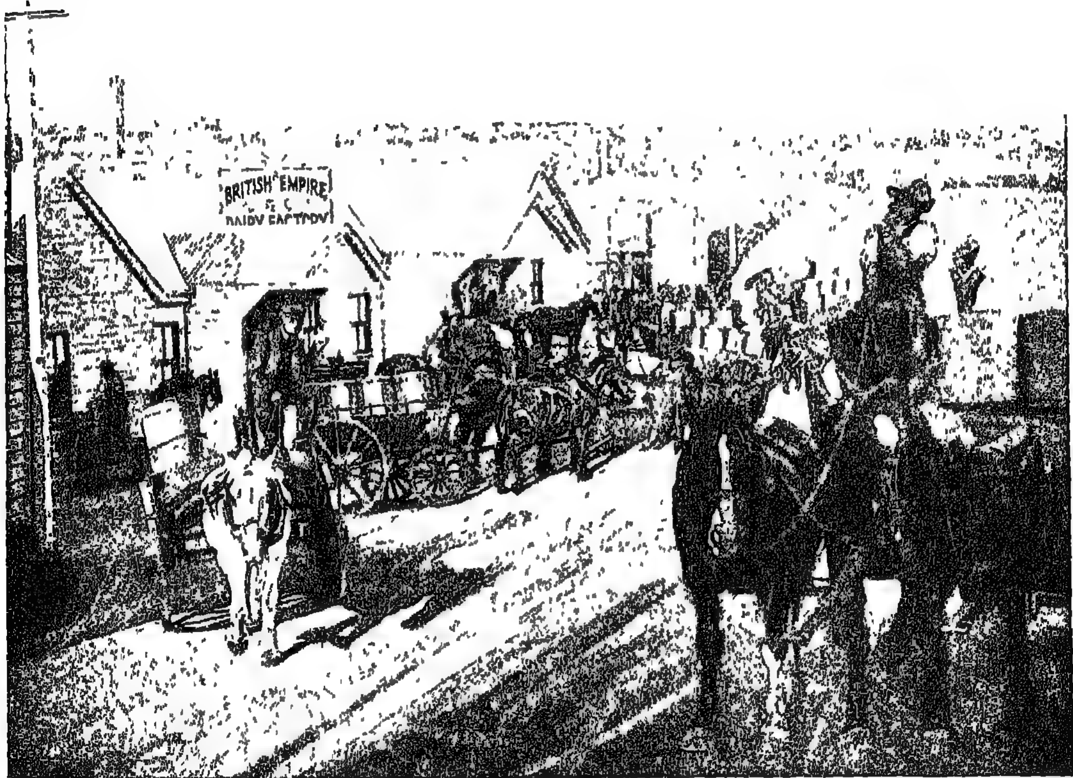
Bringing Down the Wool—Australia

CHILDREN'S STORY

The Prairies of Canada

Here are the names of six shopkeepers—Mr. Smith the grocer, Mr Brown the butcher, Mr. Williams the baker, Mr Jones the greengrocer, Mr West the clothier and Mr Adams the shoemaker With which kind of shopkeeper does your mother deal most? I do not think any of you will make a mistake in your answer, for there is one of them with whom your mother deals every day Of course it is the baker. Two, three or even more times a day every man, woman and child in the land eats bread Bread, as you know, is made from the flour of wheat. Have you ever wondered where all the wheat comes from to make the many thousands of loaves that are needed every day for our food? A good deal of it is grown in England, but the farmers of England cannot grow nearly enough wheat for all the loaves that are needed Most of it comes from that rich land, Canada Canada, as I have told you already, is a very large

country. Great forests stretch across it for hundreds of miles, in one part, the west, there are very high mountains called the Rockies; in another part, the east, there are great rivers and mighty lakes, but there are also hundreds of miles of flat lands called plains or prairies. Before the British went to live in Canada these prairies were covered with grass on which roamed vast herds of wild cattle called bison The people who lived there then were a brown-coloured race with long, straight, black hair They dwelt in tents made of skins, and they lived by hunting the bison When the British went to live in Canada they called these people Red Indians. They do not live by hunting now, and nearly all the bison have gone The Britishers found that the flat prairie lands were the finest places in the world for growing wheat There was plenty of warm sunshine during the summer to ripen it, and there was so much space that the men felt sure they could grow enough wheat for all the people of Canada and England One thing, however, was needed The prairies are hundreds of miles from the sea How could the farmers of Canada get their wheat from these rich lands to ships? There was only one way, and that was to build a railway.

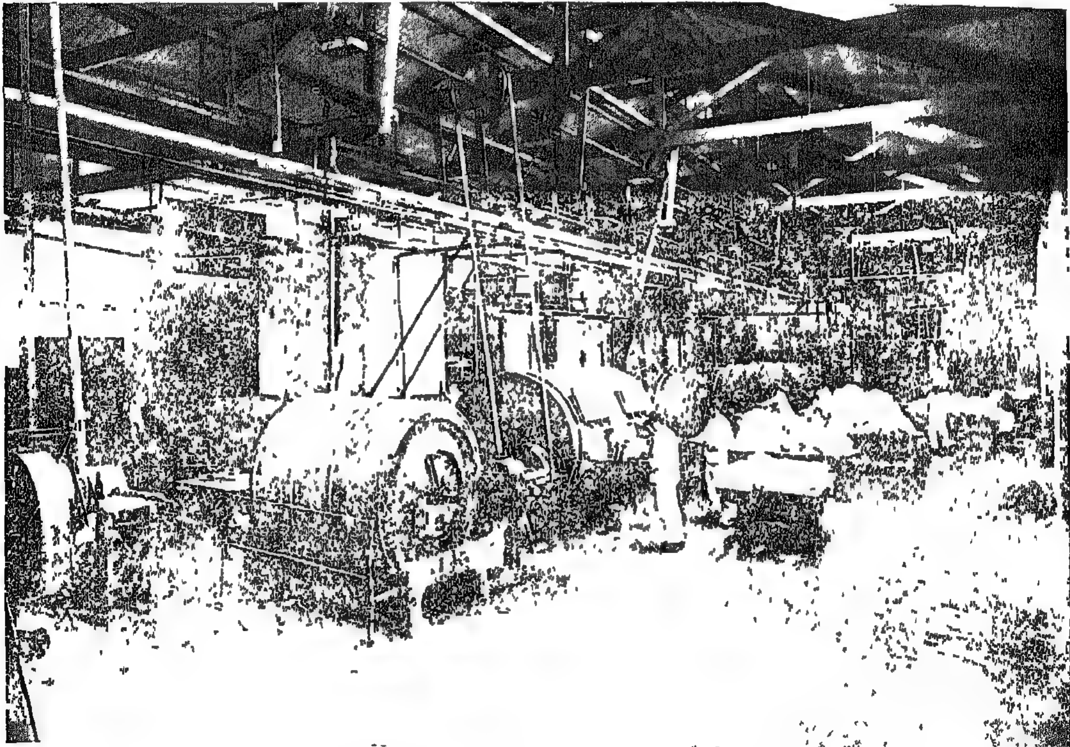


F C Herrick] [Courtesy High Commissioner for New Zealand

DAIRYING IN NEW ZEALAND

Men set to work and made a grand railway reaching from the Atlantic Ocean on the east right across the whole country, over the lofty Rocky Mountains, to the Pacific Ocean on the west. This grand railway is called the Canadian Pacific Railway or the C.P R

It is by this railway that the wheat is now brought to the ships which carry it to England. The prairie lands of Canada are so large that the farmers have to plough with a number of tractors and machines, each with several plough-shares, all working together, and many furrows are ploughed quickly at one time. Then, too, when the wheat is ripe, huge machines do all the work of harvest at the same time As they drive along they cut the wheat, thresh the grain from the ears and pour it into the lorries to take to the railway stations. The fields are so large and the grain is so plentiful, however, that it has to be stored in huge buildings, called elevators, until it can be carried away on the railway to the ships.


[Courtesy High Commissioner for New Zealand

INTERIOR OF DAIRY FACTORY—NEW ZEALAND

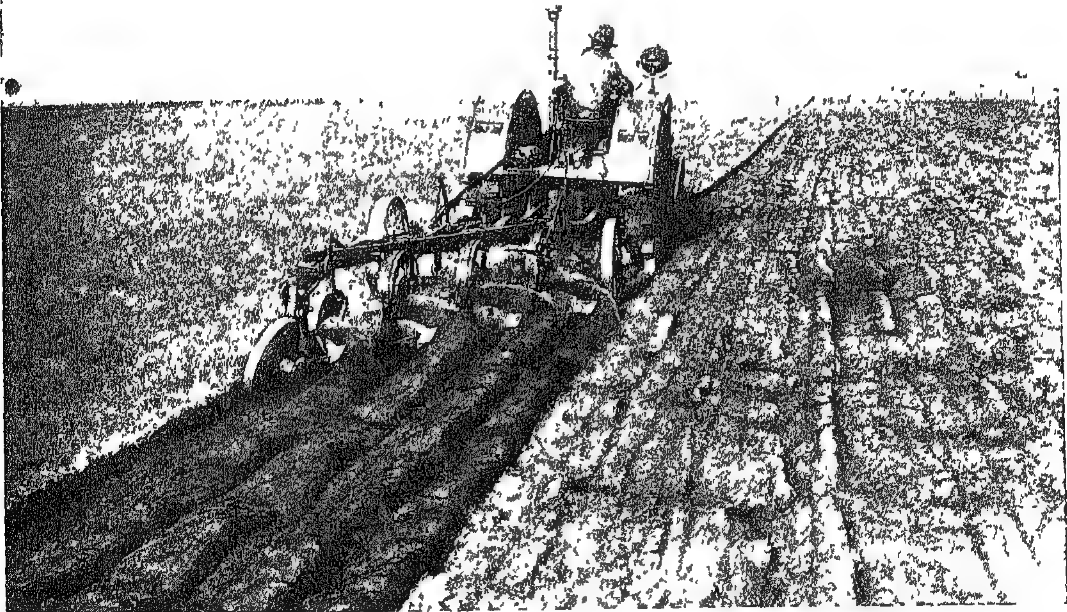
Wheat is not grown on all the prairie land There are still many miles of prairie waiting for the farmers to plough. Some of the farmers keep great herds of cattle to supply meat for the hard-working people Many of them keep hundreds of pigs, for pork is delicious food when it is cooked with beans, and the farmers, too, keep plenty of poultry to supply them with fresh eggs. What are the Canadians doing now as you hear this story of the prairies? Are they ploughing, or sowing, or reaping or threshing? Are they felling trees in the forests? Are the trappers busy catching the beautiful silver foxes and the beavers? Are the Eskimos living in tents or are they snug and warm in their snow houses? If you think for a few moments you can easily answer these questions correctly

AUSTRALIAN AND NEW ZEALAND SHEEP

Many parts of the British Empire are cool lands like the prairie lands of Canada.

England and Scotland and Ireland are cool lands So, too, is much of Australia and New Zealand and South Africa In all these cool lands wheat is grown for bread making, and cattle and pigs and poultry are kept for food. Where the grass is long and green, farmers keep cows and make butter and cheese from the milk Australia, like Canada, is a wonderful wheat-growing country, but it is specially famous for its sheep

Accordingly, he sent to South Africa for some sheep, and three rams and two ewes arrived in Australia. They had been used to living in a dry sunny climate and were just the right kind to have. These first Australian sheep settled down happily in their new home, and they had so many lambs that twenty years later the Australians had more mutton and wool than they wanted, and were able to export some of it.



[By courtesy of the Canadian Government Motion Picture Bureau

PLOUGHING BY TRACTOR, WESTERN CANADA

When the British first went to Australia about two hundred years ago, it seemed a strange land. There was not a sheep to be seen Then a settler named John MacArthur noticed the thick grass growing in large parts of the continent "Surely," he said to himself, "fine sheep could be kept on the grass and would do well in this sunny land. Then Australians would have plenty of mutton to eat and plenty of wool to sell"

Nowadays there are so many sheep in Australia that if you were to gather together all the sheep in the world and divide them into six parts, one part would be made up entirely of Australian sheep

The sheep farmers of Australia have a hard time in rearing their flocks. There are two things which every sheep must have—water to drink and grass to eat In many parts of Australia water is terribly scarce.

It rarely rains, and there are few rivers and pools from which the sheep can drink The farmers often have to dig deep down in the earth to find water

In other parts of Australia there is plenty of grass, but even here the farmers have hard work Many other creatures besides the sheep want to eat it. Sometimes great swarms of caterpillars appear, which crawl over the grass in millions, and nibble it away. Sometimes thousands of mice arrive so hungry that when they have eaten all the grass they go on to the farmhouses and eat the bedding, the carpets and even the furniture Sometimes weeds are sown by the wind in the grass and grow up with it, making it unfit to eat One of the worst of these weeds is the prickly pear It is covered with little spines, and these make it very painful to root up

Then, too, there are the rabbits In the sunny land of Australia rabbits live in hundreds of thousands They are a great trouble to the farmers, for they eat the grass which is badly needed for the sheep Some farmers have to put up miles and miles of wire fences round their sheep lands to keep the rabbits out, and of course they kill many thousands of them every year



[*By courtesy of the Australian Trade Publicity Board*

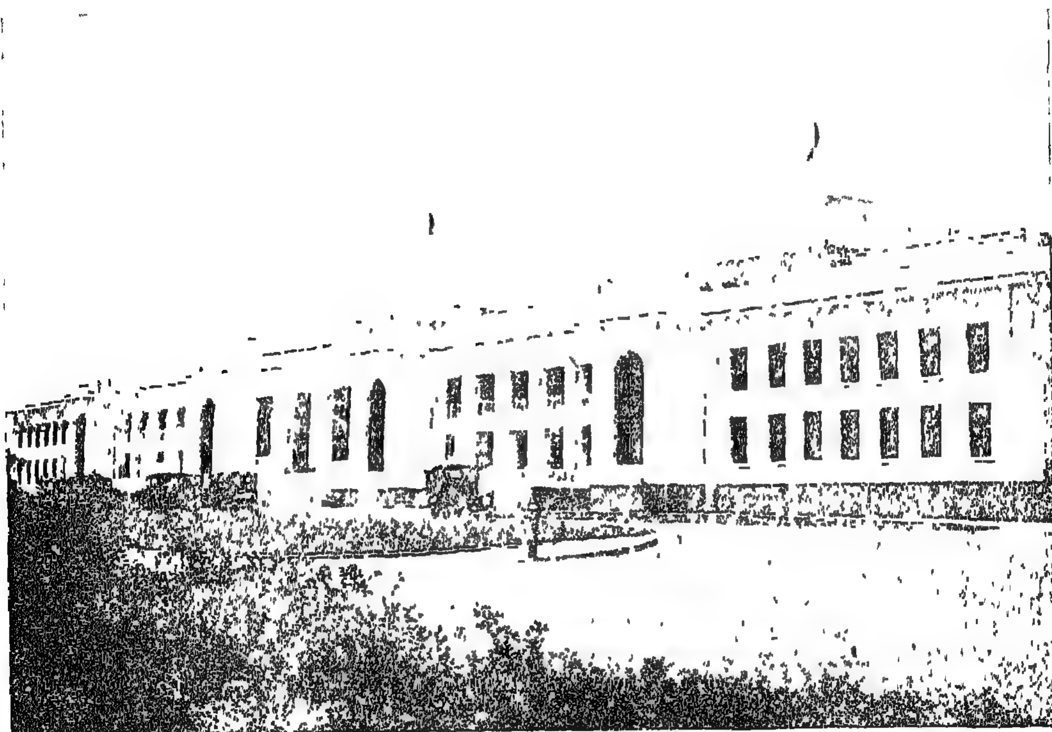
DAIRY FARM, VICTORIA—AUSTRALIA

Yet in spite of all these difficulties, the Australian farmers manage to rear hundreds of thousands of fine sheep every year Their mutton and wool supply all Australia with food and clothing, and many shiploads of meat and wool are sent to England. A large part of the wool that is made into cloth for the people of England grows on the backs of sheep that live in the cool but sunny lands of far-away Australia (See Class Picture 109, Making Cloth)

New Zealand Mutton

Sometimes in the butchers' shops you will see meat labelled "New Zealand Mutton" or "Canterbury Lamb" This meat has come all the way from New Zealand to England, and has spent six weeks on board a ship "It is not possible," you will say. "How will meat keep for six weeks?" If your mother were to leave a piece of meat in the larder it would go bad in far less time than six weeks How, then, has this New Zealand mutton been kept so fresh that we can eat it more than six weeks after it has been killed?

It is a very interesting story. The English settlers who first went to New Zealand took with them a number of sheep New Zealand is a good sheep-raising country, for plenty of rain falls there, and there are no long periods without any rain at all. Where there is enough rainfall there are good rivers and grasses, and the English sheep in New Zealand did very well in their new home. They grew fat, and their wool grew thick, and so these sheep supplied as much good wool and juicy mutton as the New Zealanders wanted In fact, they supplied too much, for there were still only a few people in the country, and those few could not possibly wear all the wool and eat all the mutton that the sheep gave them. The farmers began to grumble "We are wasting money," they said. "The wool we can send away to other countries, but we cannot do that with the meat, for it would go bad during the long voyage to England All the mutton which we cannot eat ourselves is wasted"



[By courtesy of the Australian Trade Publicity Board

Parliament House, Canberra

At last a wonderful discovery was made.

People had known for a long time that meat would not go bad if it were made so cold that it froze Clever men began to think out a way of freezing meat on board ship so as to keep it fresh They built great chambers inside the ships, and surrounded them with pipes let into the walls. Through these pipes a freezing mixture was passed, and this made the room so cold that anything which was put inside it would freeze. Then they filled the room with the carcases of sheep, and soon these were frozen hard and covered with ice In this way they could be carried safely to other countries many days' journey away, without going bad on the voyage.

To-day meat is not frozen but chilled, and this way of keeping meat fresh is called *cold storage* As soon as the New Zealand farmers found that their mutton could be sent abroad in this way their worries were ended. They began to feed their sheep very carefully so as to make them fat, and New Zealand sheep are now kept chiefly for their meat, and not so much for their wool

Next time you see New Zealand mutton at the butcher's shop, you will be able to tell your mother how it has been brought across the sea.

TEACHING HINTS

1. Cool lands.—Many parts of the Empire, including the British Islands, are in the region of "Cool Lands," and children will readily understand something of the climatic conditions in the prairies of Canada and the grasslands of Australasia If they live in the neighbourhood of mountains reference should be made to the different types of vegetation to be found—trees in the warmer valleys at the base, grass on the slopes, and barren land near the summit At this stage it will hardly be possible to give an explanation for the difference in climate in the north and south of Canada, other than to point out on the globe that the south is nearer than the north to the equator.

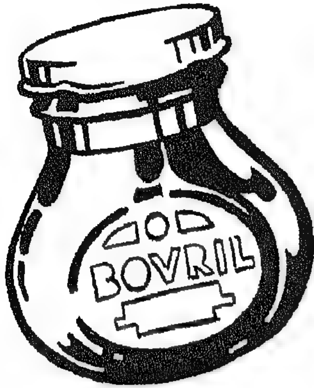
2. Meat packing.—All children are familiar with tinned (or canned) meats and fish, so that the opportunity should be taken to speak of this industry in connection with the cattle ranches. The industry of meat packing is carried out on a large scale in the United States and in South America, and it is increasing in importance in Canada.

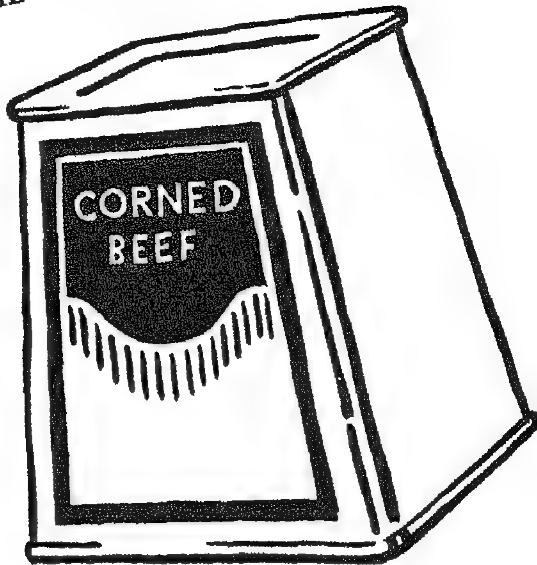
3. Sheep-shearing.—The old method of shearing sheep by means of hand clippers has now been superseded by the machine clippers. There is an illustration of this, No. 84 in the portfolio. Country children will know a good deal about sheep dipping and other matters concerning sheep farming It will add greatly to the interest of the lesson if children tell all they know about these matters. Wool is the greatest of all the Australian products. The country owes its pre-eminence as a wool-producing country to the fleshy grey-green shrub called the salt bush which covers large tracts of country. It smells of bad fish when crushed in the hand, and has a salty flavour, but it is excellent food for sheep

4. Memory work.—(*a*) Wheat is grown on the ploughed prairie lands of Canada. (*b*) The Canadian Pacific Railway carries the wheat many miles overland to the sea coast. (*c*) Machines are used in ploughing and harvesting (*d*) Cattle live on the prairie grasslands (*e*) Sheep are reared in Australia mainly for their wool (*f*) Sheep are reared in New Zealand mainly for their meat.

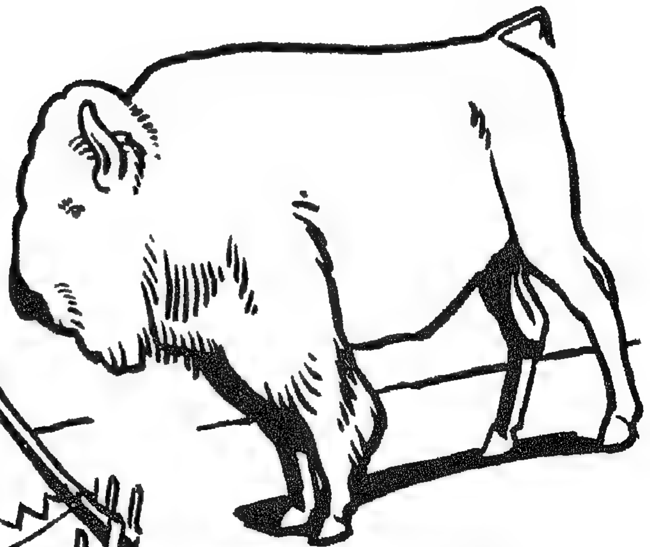
5. Exercises.—(*a*) What country sends wheat to England? (*b*) What are the flat lands of Canada called? (*c*) How do Canadian farmers plough the land? (*d*) What is an elevator? (*e*) What do we call the meat obtained from cattle? (*f*) Why is sheep farming in Australia hard work? (*g*) How are rabbits kept out of the sheep lands? (*h*) What is Canterbury lamb? (*i*) How is meat sent to England from New Zealand? (*j*) What comes over the sea from Australia?

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD







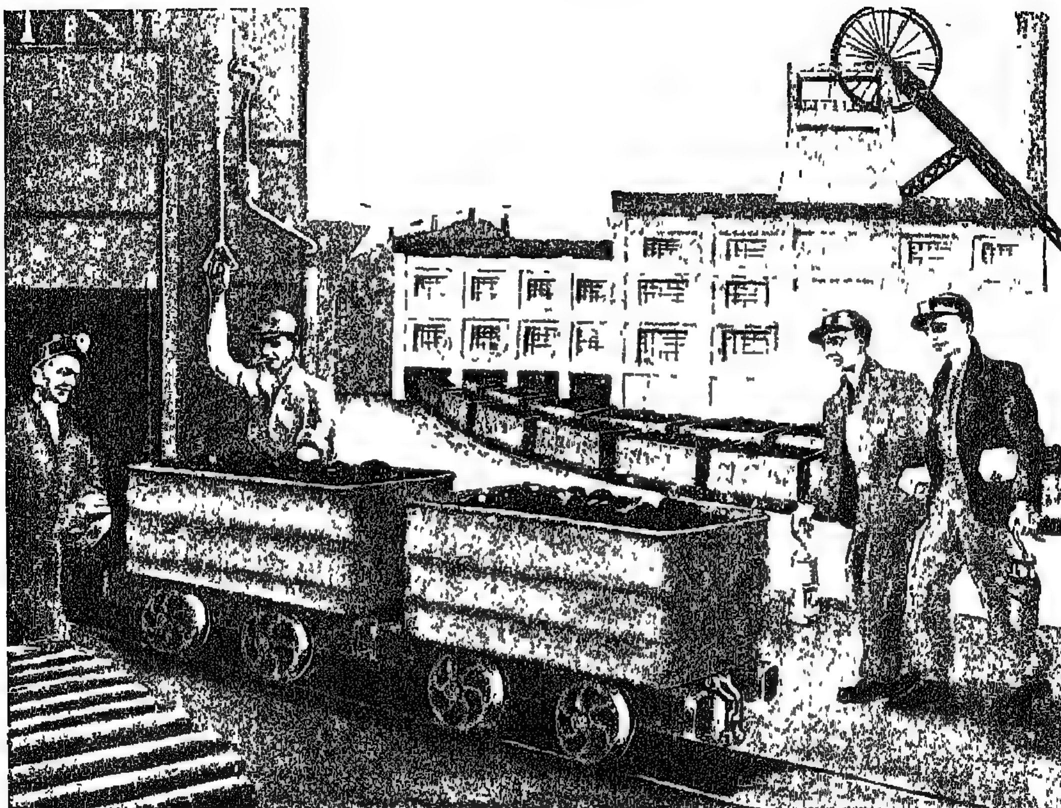


Tin of Corned Beef
Bison

Pot of Bovril
Indian Tepee

IV. COOL LANDS—INDUSTRIAL REGIONS

PICTURE REFERENCE



THE PIT-HEAD OF A COAL MINE IN THE UNITED KINGDOM
(Class Picture No 65 in the portfolio)

INTRODUCTION

THE "Children's Story" deals in a simple way with a survey of industrial life in England from early times to the present day, a coal mine, and the great industries of cotton, woollen and iron manufacture There is enough material for two or three lessons, but the treatment will vary greatly according to the district in which the lessons are given.

We have taken a survey of the forests and grass regions of the cool lands and have seen that they supply man with some of his important foods and other necessary materials We have also seen that both forest and grass areas lead to activity on the part of man, and tend to promote the birth and development of towns, the construction of roads and railways, and the rise of certain branches of the manufacturing

industry. The paper and pulp mills of eastern Canada, the flour mills, butter and cheese factories and leather works of the prairie provinces owe their origin and development to the forests and grasslands of the country

The British Islands lie in about the same position with regard to the equator as the grass and forest belts of Canada Owing to their small size and the consequent moderating influence of the sea they have a cooler summer and warmer winter than the interior of Canada, but the natural vegetation was originally the same—grass and trees. The forests have been cut down and only small patches remain Man has been active in the British Islands for many centuries, and he has used the trees of the original forest to supply his needs in many directions Most of the timber he now requires has to be imported from the forest regions of other countries The grasslands of the British Islands are used much in the same way as those in Canada. They have been turned into wheatfields or are used as feeding grounds for cattle and sheep. They do not supply enough wheat for the daily bread of the inhabitants of the British Islands, neither do they supply enough meat food, wool, or hides and skins to meet the needs of the people In Canada the bulk of the people are concerned with farms or kindred industries and produce more than they require for themselves, but in the British Isles the great majority of people follow entirely different occupations

A few centuries ago each area of the world had to be self-supporting People knew only their own little area, and they knew nothing of other regions except by hearsay. It is difficult to realise the conditions of early times, but it must be remembered that primitive peoples certainly lacked most of the things that we possess and consider essential Five hundred years ago the people of the British Islands had to be content with the things that their own country could produce. There were few roads, there were no railways or steamships, and the people of one part of the country were more or less isolated from those in the remainder of the land. Yet, as we know, the people in those days were not savages. They were well clad, had a sufficiency of food, and had already made good progress in the art of manufacture They had already acquired considerable skill in the spinning and weaving of wool and flax by simple looms, they were able to extract iron from the ore, and manufacture many things out of iron The old buildings in the country testify to the skill of the people in the use of stone, timber and iron. It should be noticed that the early manufactures of the British Islands were based upon the local material, just as those of Canada to-day are based upon the material that country produces.

The early wealth of the British Islands consisted of wool, iron ore and timber. The hills of the country supplied the grass suited for sheep rearing, and the streams which had their birth in the hills supplied water for washing the wool, and power to work the simple machinery Sheep thrive in cool lands, and the well-drained pastures of the hills and mountains are better fitted for sheep than cattle. The early woollen industry was located near the hills and mountains of Wales, the hills of Devonshire, Somerset, Wiltshire, Yorkshire and the south of Scotland. We are reminded of this by such things as Welsh mutton and flannel, Wilton carpets, Witney blankets and tweed cloth

Iron ore, in early days, was smelted by the heat obtained from burning charcoal specially prepared from timber. Iron smelting was therefore carried on where the ore and timber were found close together. Some of the important ironworks in the country were in south-east England The ore was mined in the hills and their slopes supplied the timber Another region containing both timber and ore was the midland part of Britain near the spot where the large city of Birmingham now stands We hear very little to-day about ironworks in south-east

England, but everybody knows that the Black Country, near Birmingham, is now one of the great areas of the world for the manufacture of a wonderful variety of articles made of iron and steel.

The reason for the decline of one part of the country and the rise of another can be made clear by a study of the changes brought about in industry by the industrial revolution. James Watt patented his steam engine in 1769, and this was the beginning of the revolution in industry Before that time the power required to drive machinery was provided by windmills and water wheels, by treadles worked by men's feet, and by horses harnessed to a beam and walking in a circle. Large factories were unknown, and things were manufactured in the homes of the people, or in small towns containing people working at the same kind of trade. When the steam engine became sufficiently perfect to be of use in driving machinery large supplies of coal were needed Manufacturers built their factories on the coal fields where the fuel would be cheapest, and the supplies of raw material no longer determined where the work should be done. Steam power became cheaper and quicker than the older form of water power Many machines could be driven by one engine, and it became necessary to have a large number of workmen in one building Near the factories, houses were necessary for the miners and factory workers, and thus, in time, the coal fields developed into areas containing large towns



[*Aerofilms, Ltd*

THE POTTERIES A VIEW OF HANLEY TAKEN FROM AN AEROPLANE

While these changes were going on, the outside world was becoming better known New foods and material for manufacture were being discovered, and trade between the British Islands and the outside world was rapidly developing Skill in spinning and weaving by machinery was gradually improved by the wonderful inventions of Arkwright, Hargreaves and Crompton Improvements were made in the smelting of metals, and steamships began to take the place of the slow-moving sailing ships The conditions to-day are the outcome of all these changes working together The British people had an early start and had become skilled in spinning and weaving and in ironwork When coal became necessary as a fuel, the position of the coal fields near the sea coast was a wonderful aid to the development of industry As soon as it became possible to import the produce of other lands, it could be brought direct to the ports on the coal fields, and those ports could be the outlets for the manufactured articles which had to be sent overseas Britain now manufactures enormous quantities of goods for other countries, but in order to do so it is necessary to import food and much of the raw material used in the factories

It is as well to see clearly how much the people of the British Islands depend upon the inhabitants of many lands in order that they may be able to work and live Although there is still a great wealth in iron ore and wool, both these materials must be brought into the country in large quantities. Iron ore is obtained from Spain, Sweden and Algeria, and wool is sent from Australia, New Zealand and South Africa All the cotton, jute, hemp, silk, mohair and coconut fibre have to be imported. Cotton is obtained from the United States, India and Africa; jute is sent from Calcutta; hemp comes from India and the East Indies, silk is imported from China and Japan, mohair is obtained from South Africa, and coconut fibre from Ceylon and the East Indies. Britain is deficient in all the metals besides iron, and has to go to other countries for her tin, lead, zinc, copper, silver and gold Without imported food the people of the British Islands would soon be in a state of starvation A certain amount of wheat, meat, fish, butter, cheese, fruit and vegetable foods are produced at home, but all the tea, coffee, cocoa, rice, sugar, oranges, dates, figs and bananas, come from other countries

The British Empire, on which the sun never sets, can supply products which thrive in every type of climate. More and more the Empire is developing her resources and showing her ability to supply the mother country with her food and factory material Many countries of the Empire are in tropical regions, which are less suited for some forms of factory work common in cooler climates At the same time it is often more economical to exchange raw materials for manufactured goods, than to erect industrial plants with their innumerable requirements of machinery, supply of power, transport, trained workers and homes for their families Such countries are therefore markets for British manufactured goods, and increasingly so as, with the advance of education, improvements in the scale of living are constantly going on

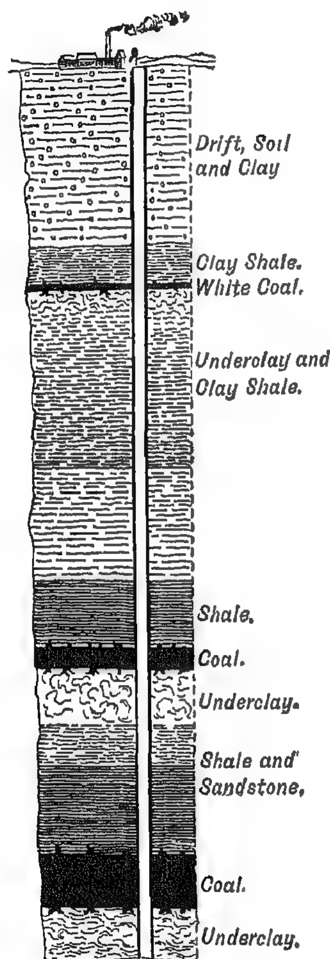
To obtain coal economically the utmost mechanisation is necessary. In a pit mechanical cutters, conveyors and devices for hauling laden tub-trucks are all to be seen Above ground numerous buildings contain machines for dealing with the haulage between the surface and the pit bottom, for screening and cleaning the coal, and for filling railway trucks with the least labour and waste of time

CHILDREN'S STORY

Early Times in Britain

The cool grasslands of the Empire include the British Islands Long ago, before man lived in Britain, the land was covered with

immense forests Huge trees, ferns and grasses flourished everywhere Then the sea came over the land, engulfing all The forests died The great trees were overthrown, and the heavy pressure of water upon them gradually turned them hard



SECTION OF A COAL MEASURE

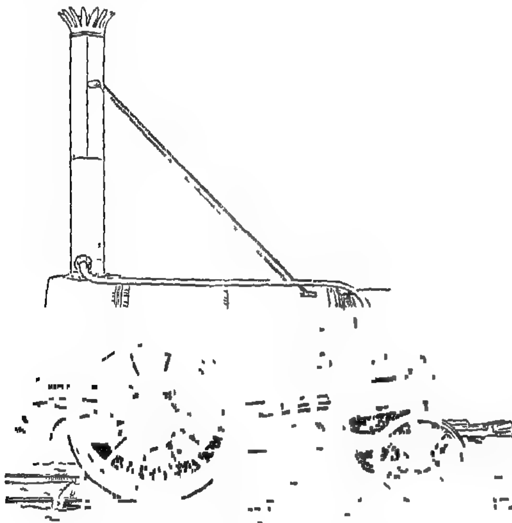
and black. Long afterwards, the British Islands appeared again above the sea, and forests began to grow anew upon them. In course of time, man came to the islands, and made his home there. For a long while he lived by fishing and hunting. At length he began to grow crops. Then he cut down trees of the forests to build himself a house, and many families living near each other cleared away parts of the forests so that they should have fields for growing wheat and stretches of grass for their animals to eat. As time went on, the number of people in the country grew much larger, but they produced enough for their needs They grew wheat for bread, and from barley they made drink Their sheep provided them with meat and wool, and their cows supplied milk for butter and hides for leather The women and girls of the families wove the wool into cloth So for a long time the British people were farmers, and lived on the produce of their land Gradually almost all the forests were cut down

In those days, of course, people knew little of foreign lands, or of foreign crops The roads were bad There were no railways or steamships, and men living in one part of the country were strangers to those of another district Yet they were clever in spinning and weaving wool, and knew how to obtain iron from the hills Many old buildings in this country contain beautiful stonework, woodwork and ironwork fashioned by men of those times In Wales, the old methods of weaving wool into cloth have never died out, and Welsh flannel is often hand-woven still The Welsh obtained their wool from the sheep on the hillsides of Wales. English wool came from the sheep on the hills of Yorkshire and from the west and south country. In Kent were some famous ironworks Iron ore was found in the hills, and there was also a large forest near by, so men cut down the trees and burned them for charcoal With the hot charcoal they smelted the iron, and made it into iron goods.

STEAM POWER

Nearly two hundred years ago a great change took place Do you know the story of the little boy who sat and watched his mother's kettle steaming? He saw the lid

jump up and down and wondered what would happen if it were tied fast and the spout stopped up "Why, the steam would burst the kettle," you say So the small boy thought "Steam is a mighty power," he said "If it can lift a kettle lid, it can also be made to lift heavier things, and to work engines" When this boy, James Watt, grew up he spent his life in finding ways of using steam power, and so the steam engine was invented Very soon it was put to work to drive machinery. It had to be fed by large supplies of coal, and now the people of the United Kingdom



GEORGE STEPHENSON'S "ROCKET"

began to find a use for those old forests long buried under the ground, for the trees that had once grown tall and green were now hard, shiny layers of *coal*. Soon afterwards, three clever men invented machines that would spin and weave cloth very quickly

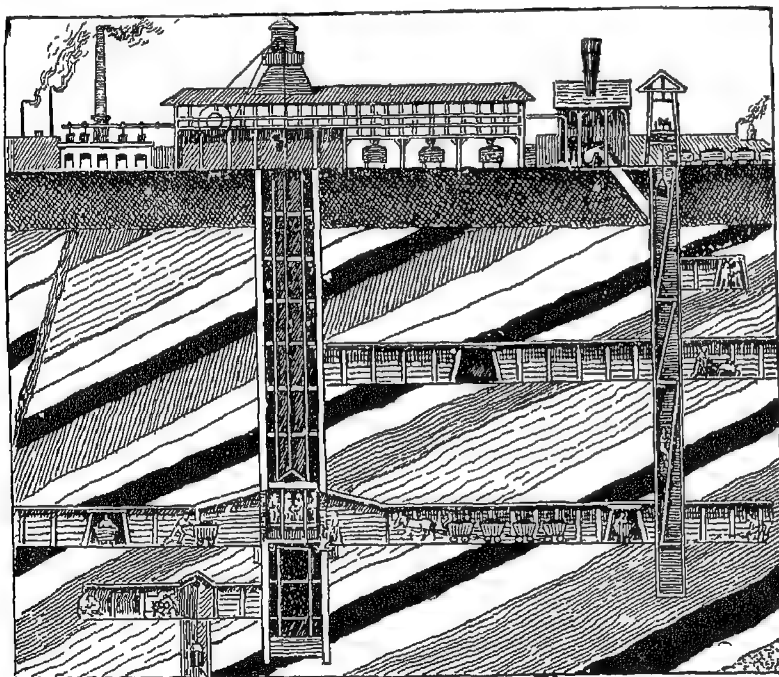
All these things completely changed the life and work of thousands of people in Great Britain The richest coal fields were found to be in the north and middle of England, so they began to be mined. Great cotton and woollen factories grew up around the coal fields People flocked from all parts of the country to work in the mines and factories, and gave up farming and village life Great towns grew up in the north and midlands, and from that time onwards the chief work of the people of the United Kingdom has been manufacturing. Farming is still done in many parts, but the wheat grown is not sufficient to supply the country with bread. As fast as the woollen, cotton and iron goods were made by the people, steamships carried them away to all parts of the world to be bought by men in lands where no factories exist. With the money gained from the sale of the manufactured goods, English people were able to buy wheat and other foods from abroad, and very soon they had to buy also a great deal more raw material for the factories, because they turned out their goods so quickly Thus to-day Britain depends on other parts of the Empire for food and raw cotton, wool and iron ore, and sends out to them in return the finest manufactured goods in the world

BLACK DIAMONDS

Have you ever heard of "black diamonds"? That is the name sometimes given to lumps of coal, because they are so precious Some coal lies near the surface of the ground, and is easy to dig out Most of it, however, is buried deep down in the earth, sometimes two miles underground, and mines must be made to get it out. Every day thousands of miners go down to their work underground The entrance to a mine is called the *pit head* This is the top of a great tunnel or shaft which leads down into the mine Up and down this shaft men and coal are carried in a great lift known as a *cage* The men step into the cage, and away they go, sinking at a tremendous speed, until they reach the bottom of the shaft Here they find themselves in a clear space lighted by electric lamps All around open out passages also lighted up, which lead to different parts of the mine Each miner takes a pick to hew out the coal, and a safety lamp to light him

in dark parts of the mine, and he wears a safety helmet and boots with very stiff toes. His work is often more than a mile away underground and to get to it there is generally a ride part of the way and then a walk down gloomy passages to the layer or *seam* of coal It rises up in front of him like a great black wall made entirely of coal, and this coal must be got out and sent back to the bottom of the shaft The miner takes off all the clothing he can spare, for there is not very much fresh air, and being so far below the earth it is very warm Then he sets to work

In some parts of the mine he must lie down on his side and chip with his pick to cut under the wall. But in most places there is a powerful machine to help him It rips away the coal, moving a yard a minute, and throws it on a moving belt. This carries it off to a truck called a tub, which is then pulled away either by a pit pony or by machinery The pit ponies live in the mine, and never see the sun or the light of day When the truck arrives at the bottom of the shaft it is pushed into the cage and carried up to the pit head. There it is weighed, and its weight, together with the name of the miner who filled it, is written down Eventually the coal is tipped out and taken away to be sorted, while the empty truck goes down the shaft again



SECTIONAL VIEW OF A COAL MINE

The black bands are coal, the rest is clay, shale, or sandstone

A miner's life is full of danger; accidents can easily happen to men so deep down Sometimes the coal or the rock fals. and crushes theml Sometimes the danger comes from foul gases in the mine One kind of gas from coal chokes anyone who breathes it Another will burst into flame and cause a terrible explosion. Sometimes, too, underground springs of water burst through the walls and flood the mine Coal is so much needed, however, that mining goes on in spite of perils The great factories, the railways, the steamships, all require coal, we need it ourselves to warm our houses and cook our food; and countries that have no coal buy thousands of tons from Britain every year

Factories

Since the days when the people of the United Kingdom supported themselves by growing all their own food, the population of the country has become very much larger Great towns have sprung up in the north and midlands, where before there were only

tiny villages. The people in these towns work at three great industries—cotton, woollen and iron—and coal is required to drive machinery for them all.

The cotton port of England is Liverpool, and there the steamers arrive from America, India and Egypt with bales of raw cotton The bales of cotton are taken to the cotton mills of towns in Lancashire, where the cotton is made into cloth. Raw cotton is the white fluffy down wrapped round the seeds of the cotton plant The separate threads or hairs are very fine and delicate, and when they become dry they are inclined to snap Lancashire, in the north-west of England, has very damp air, which keeps the threads moist for spinning When the bales of raw cotton arrive at the factories they are put through a machine which breaks them open and cleans away the seeds, twigs and leaves mixed with the cotton This machine has teeth like a comb, and is called a carding machine. Other machines beat out and flatten the cotton, and separate all the delicate threads It is then ready for spinning into thread or *yarn* The fine hairs of cotton are wound on reels called bobbins, and machines twist the threads together to make them strong The machines make a terrible roaring noise, and when anyone first goes to work in the spinning room the noise almost deafens him After a while, however, he grows so used to it that he does not notice it.

When the thread is spun, it has to be woven into cloth. This is done on great machines called looms, which make a deep humming noise. The cloth is then dyed beautiful colours, or printed with pretty patterns Sometimes the threads are dyed, and patterns are woven into the cloth while it is being made. Many of you may have seen pictures of people weaving, and will know that a loom is a kind of frame on which are fixed the long warp threads. Then the weft threads are passed in and out of the warp threads, so forming cloth Many of the cotton materials made in Lancashire now have a beautiful, soft, silky finish to them, and dressmakers often use them in place of silk. Here are a few of the articles made from cotton in Lancashire to-day—sails, aeroplane wings, calico, shirts, sheets, dresses, linings, flags, handkerchiefs, knitted cotton vests and combinations, stockings, gloves, curtains, lace, tape, sewing thread and bandages. Chilled meat is wrapped in cotton cloth, and plants that need shelter in hot lands are shaded with it. Everywhere in the world the cotton goods of the United Kingdom are found, and more than 500,000 people work to make them

We are all glad, on a cold winter night, to be tucked warmly in bed under two or three fleecy woollen blankets When bitter winds are blowing we put on thick woollen overcoats before we venture out. We know that woollen things will keep us warm If we wore only cotton all through the winter we should shiver with cold. Woollen goods are made in Yorkshire, and Bradford is the centre of the greatest wool-manufacturing district in the world Over 250,000 persons are employed in the factories.

How is the wool obtained? It is sheared from the backs of sheep who live on the hills in the south of England, in Australia, New Zealand and South Africa Sheep are reared for their flesh, called mutton, and for their wool Some sheep supply beautiful silky wool, and very poor meat Others give us very good mutton and poor wool Another kind of sheep is good both for wool and mutton English and New Zealand sheep are of this last kind The finest fleeces of all come from *merino* rams in Australia

When it arrives, the raw wool is greasy and has to be scrubbed clean After cleaning it is carded or combed into separate strands. These thin strands then have to be spun into strong yarn, and woven into cloth just as the threads of cotton are woven.

IRON

When mining in the mountains for coal, men often dig out rock which contains a

metal called "ore" in it. Alongside the coal in the United Kingdom large supplies of *iron ore* are found. The rock containing the iron ore is called ironstone. After being dug up the ironstone is first laid up in heaps and burnt to free it from impurities. The remainder is put into what is called a *blast furnace*, which is like a very large chimney With the ironstone are put loads of coke and limestone and the whole is made to burn Blasts of air are forced through the mixture from the bottom to make the fire fierce That is why the chimney is called a *blast furnace* The heat is so great inside the furnace that the metal in the ironstone melts, and as it is heavy it sinks to the bottom as a white-hot liquid A trap door is opened at the bottom of the furnace and the molten iron is allowed to run out into trenches on the floor, which have been lined with sand. Here it cools to form bars of solid iron This is called *pig iron* for the little bars look somewhat like young pigs as we sometimes see them lying down by the side of their mother The melting of the ore in the blast furnace is called *smelting* Much of the ore is brought to the blast furnaces by steamers from foreign lands, and the chief place in England for smelting iron is at Middlesbrough at the mouth of the river Tees in Yorkshire

Much of the pig iron is remelted and "cast," It is then made into many kinds of iron goods such as iron bedsteads and the stands for your school desks Cast iron easily breaks, so much of the pig iron is made by other processes into *steel*, which is very hard and strong. Railway engines, railway lines, bridges and ships are made of steel. Treated in another way pig iron is made into *wrought iron* which will bend but not easily break. The iron that a blacksmith heats in his furnace and hammers into horseshoes is wrought iron. In the middle of England is the large city of Birmingham which is famous all over the world for its *hardware*, for that is the name given to things that are made of iron and steel

TEACHING HINTS

1. Occupations.—It is interesting and instructive to compile, at the suggestion of the children, a list of occupations by which man earns his daily bread. By the study of such a list it can be shown that the kind of work undertaken is determined by the nature of the locality in which man lives It can also be shown that no occupation stands alone, but that work in one direction leads to work in many other ways.

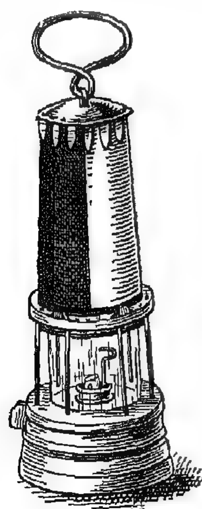
2. Weaving.—Woven cloth consists of two sets of threads—warp and weft The warp threads run longways and are usually stronger and harder than those of the weft The weft threads cross the piece at right angles The quality is determined by the number of warp and weft threads per inch. (See Lesson IX in the history section of this volume)

3. Loom.—In the old days of hand looms the looms were scattered about the country, two or three in a house, operated by as many people. The weavers owned the looms, and work was found for them by the merchants in the towns. With the advent of the power loom, the private system of weaving gave way to the factory system, in which all the machinery is under one roof. Spinning and weaving became two separate industries

4. Coal mining.—Manual labour is still necessary in some places for cutting the coal although mechanical tools worked by compressed air or electricity are in general use in mines The collier's pick is called a *pike*, *mandril* and *slitter* in different districts, the men are called *pikemen* or *hewers* The most important operation in cutting coal is called *holing* or *kerving* It consists of undercutting the coal by means of a groove 12 or 14 in. wide at the face and sloping down to nothing at the far end, which is about 3 to 4 feet in depth There is then left an overhanging portion of coal To

prevent the wall of coal from falling down before he is ready for it, the pikeman puts wooden wedges in the cracks as he works After these supports that hold up the under-cut coal are removed, it either falls of its own weight, or is brought down by driving wedges along its top, or by blasting The process of holing coal by hand is one of the severest kinds of human labour.

5. Safety lamp.—This lamp is used by miners in coal mines where there is danger of explosive gases The first practical lamp was made either by Sir Humphry Davy in London, or by George Stephenson while working at a colliery in Northumberland. Davy's principle is the basis of all subsequent designs. He found that if the flame of the lamp were enclosed in wire gauze, there was no danger of its setting fire to the explosive gases found in the mine Wire gauze is a good conductor of heat and dissipates the heat of the flame so that the gas in the surrounding air outside the gauze is not heated sufficiently to burst into flame or explode. In the presence of fire damp, moreover, the flame of the safety lamp changes colour, and so warns the miner of danger Modern safety lamps have draught screens, and glass cylinders around the lamps to give better illumination. Most of the lamps now in use, however, are electrically lighted



Davy Lamp

6. Fire damp.—This is the name given to marsh gas, or carburetted hydrogen, which occurs in coal mines. It is formed by the decomposition of vegetable matter, and sometimes accumulates in a bed of strata, where the stroke of a pick may suddenly release it Mixed with air, fire damp is highly explosive; in its purer state it burns quietly with a blue flame.

7. Flannel.—This is a variety of soft, woollen textile Wales appears to have been the first home of flannels, the close hard-wearing material being of special value to workers among the mountains

8. Memory work.—(*a*) Britain belongs to the region of cool grasslands. (*b*) It was once covered with forests (*c*) Men cut down the trees and grew wheat. (*d*) Iron furnaces were heated with charcoal (*e*) Steam engines are fed with coal (*f*) Cotton, woollen and iron goods are made in British factories

9. Exercises.—(*a*) What work did men do in England a thousand years ago? (*b*) Who found out and used the power of steam? (*c*) How is coal made? (*d*) What would you see inside a coal mine? (*e*) How do miners obtain the coal? (*f*) Why did many people give up farming the land? (*g*) Why is Lancashire air very good for cotton spinning? (*h*) What is yarn? (*i*) Which countries send raw wool to the United Kingdom? (*j*) What is done to iron ore?

V. WARM LANDS WITH WINTER RAIN

PICTURE REFERENCE



CYPRUS IN SUMMER
(Class Picture No 66 in the portfolio)

IN the picture we see a line of camels on the march along a road in Cyprus Cyprus is a part of the Empire—an island in the Mediterranean Sea Each camel is loaded with sacks of sweet purple locust beans or carobs, which will be sent by ship to England and other lands The camels, the bright sun and the white dusty road make Cyprus seem to be hot and dry Across the bare plain are some tall, dark, pointed trees called cypresses, and also a grove of bushy olive trees Far off are high mountains and at their foot is a town with graceful buildings of white stone. Goats live among the mountains and some have been brought to the plain to feed on the tough grass The food is not good enough for dairy cows and so the goats take their place



[*Reproduced by permission of the Controller of H M Stationery Office*

VINES

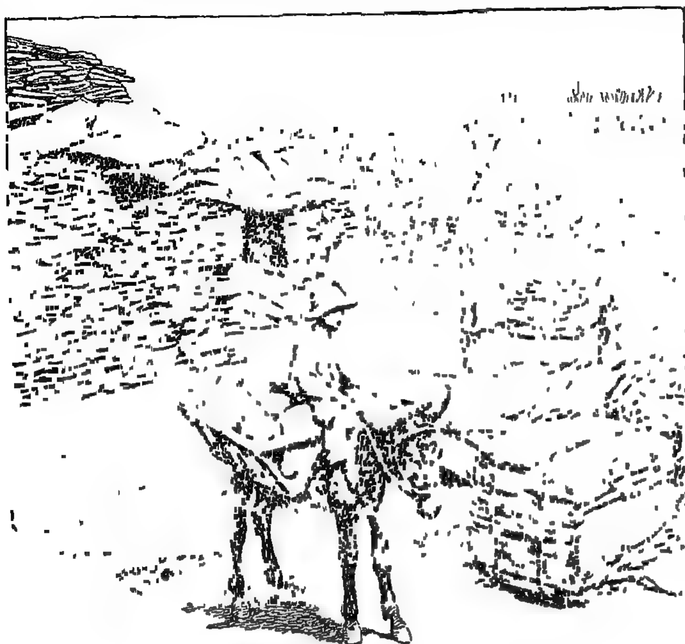
INTRODUCTION

The western sides of the cool lands receive the west winds from the ocean at all seasons of the year, and each month receives its share of the rain of the year Lands placed at about the same distance from the equator as Spain, the south of France, and Italy have the west winds only during the cool season of the year The winter months are therefore the wet months The summers are remarkably dry and the skies are clear and blue

By several devices nature has equipped the plant life of Mediterranean lands for dry summer conditions Some plants have very long roots which penetrate deeply into the soil in the search for water The hot summer sun quickly dries the top layer of soil, but the lower layers retain their moisture for a long time. Other plants have thick, fleshy roots which act as storehouses for the water obtained during the wet season. Plants lose a great deal of moisture from the leaves, just as human beings do from the skin. In the lands of dry summers small dry leaves and thick leathery leaves prevent moisture from escaping readily. The cork oak similarly retains its moisture because its thick rough bark is a protection against excessive transpiration.

In Mediterranean lands there is a remarkable absence of fresh green grass during the late summer months. The roots of grass penetrate only a short distance into the ground, and this top thin layer is baked hard and dry as summer advances Under such conditions cattle are not numerous and there is a scarcity of home-made butter and cheese The oil of the olive is often used as a substitute for butter

Fruit production is a characteristic feature of lands of winter rain and sunny summer skies. Grapes of many kinds, olives, figs, peaches, apricots, oranges, lemons, almonds and mulberries are successfully grown The



STACKS OF CORK—SPAIN

The region in which Cape Town stands in South Africa has the temperature and winter rain of Mediterranean lands It receives annually about 25 in of rain, and of this only about 6 in. fall during the six hottest months. Orchards and vineyards are numerous near Cape Town The vine was introduced by the Dutch about 300 years ago, and the cultivation has been so successful that to-day over a hundred million vines are growing They are grown to produce fresh fruit, raisins, wine and brandy. Oranges are successfully cultivated. Summer time comes to South Africa during the period of the English winter, that is why South African oranges reach England just when summer is beginning At one time English people could get oranges only in winter. To-day South African oranges can be bought everywhere from May until the middle of autumn The fruit is transported in cold storage and arrives at Covent Garden market in beautiful condition

The south-western parts of Australia also have the Mediterranean climate of summer sunshine and winter rain Perth, in Western Australia, has about 33 in of rain each year and of this only about 5 in fall during the six hottest months It is about a hundred years ago that the vine was introduced into Australia, but to-day vineyards cover over a hundred thousand acres. The purposes for which grapes are grown are for wine making, for drying and for the fresh fruit Wine making has not developed so rapidly as the suitability of the climate would appear to warrant, but there has been a remarkable development in the production of raisins, sultanas and currants The raisin is a white grape which contains seeds, the sultana is a white seedless grape, the currant is a small, black, seedless grape

cultivation of grapes leads to the manufacture of wine and the preparation of dried fruit such as sultanas, raisins and currants From olives, olive oil is extracted, and, in many parts, soap is manufactured from the oil thus obtained In regions where the mulberry is grown silkworms are reared on the leaves The manufacture of silk is an industry which arises in Mediterranean lands Some of the fruits, such as apricots and peaches, are preserved in cans for export to other lands

Cyprus, the largest island of the Mediterranean Sea, after Sicily and Sardinia, is inhabited mainly by people of Greek or Turkish origin, but it is a British possession. Fruits of many kinds grow in luxuriance, the most important being oranges and lemons, some of which go to England, but most to Egypt. Grapes, figs, peaches and apricots are also extensively grown Cyprus is the second most important silk-producing country in the British Empire The manufacture of wine is an ancient industry in the island.

The sultana is the most difficult of the dried vine fruits to grow. It is the most delicate and the most easily susceptible to unfavourable weather conditions Only those areas where water supplies are accurately controlled do justice to it The best qualities of fruit are obtained from the valley of the river Murray.



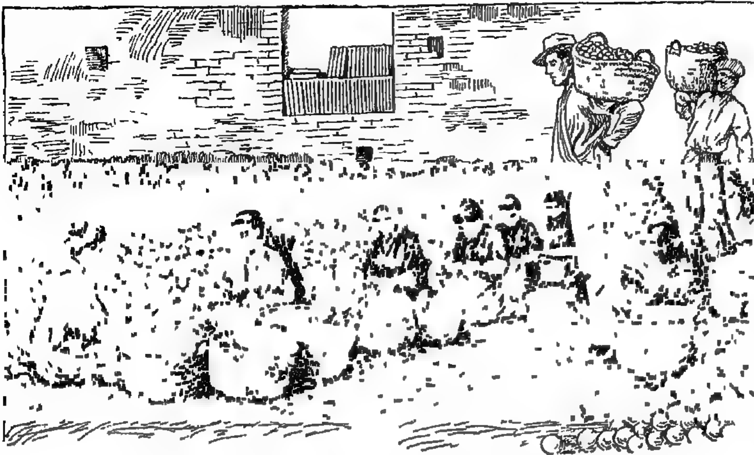
PICKING, SORTING AND PACKING MALAGA GRAPES

The production of dried fruit involves several processes, in none of which, after the picking process, is there contact by hand The ripe fruit is dipped in a slightly alkaline solution, and this causes microscopic cracks in the skin which facilitate the drying process Drying takes place on racks Harvesting occurs in the early part of the year and the dried fruits reach England by the end of April

Little over a century ago fruit (except during the summer and early autumn months) was almost entirely the privilege of those who lived in the country and possessed gardens of their own The two great inventions of cold storage and canning were still to come. To-day the fruits of the world can be transported in cold storage thousands of miles across the ocean without losing freshness or quality. By canning fruit it can be preserved an indefinite time The air-tight tin or bottle in which ripe, juicy fruit is sealed, ready to be eaten without further treatment, has come to be recognised as one of the most valuable labour-saving devices. The canned and bottled fruits of Australia are now a large export of that country

Considering the enormous extent of the British Empire it is remarkable how little of it has the true Mediterranean climate. It is to south Europe and north-west Africa that we must turn for the great areas of winter rain Spain, southern France, Italy, Greece, Morocco, Algeria and Tunis are the lands of the citrus fruits, the cork oak, the mulberry, the olive and the vine Seville and Denia in Spain are noted for their oranges, Palermo and Messina in Sicily are prominent for their orange and lemon groves, Patras in Greece is world famous for its currants Silk goods are manufactured and exported from Spain, France and Italy. Olives and olive oil are characteristic products of the south of France and Tuscany in Italy. Spain is noted for its port and sherry; France for its champagne, burgundy and claret. Every country bordering the Mediterranean Sea manufactures wine

The Mediterranean region has been of



SELECTING AND SORTING ORANGES AT VALENCIA

importance from very early times and ships plied upon its waters many centuries ago. On its shores were the early civilisations such as those of Phoenicia, Egypt, Greece and Rome The almost tideless waters of the sea and the long, broken character of much of the coast line created a spirit of adventure and a love for the sea Venice achieved greatness as a

[*Courtesy South African Railways*

ORANGE TREES—WHITE RIVER, EAST TRANSVAAL

port for the reception of the riches of the far East. Commercial greatness has departed from most of the peoples bordering the Mediterranean, but the opening of the Suez Canal in 1869 has tended to give a new importance to several of the Mediterranean ports, especially those of southern France and Italy Genoa, Naples and Marseilles are now important seaports.

CHILDREN'S STORY

Cyprus

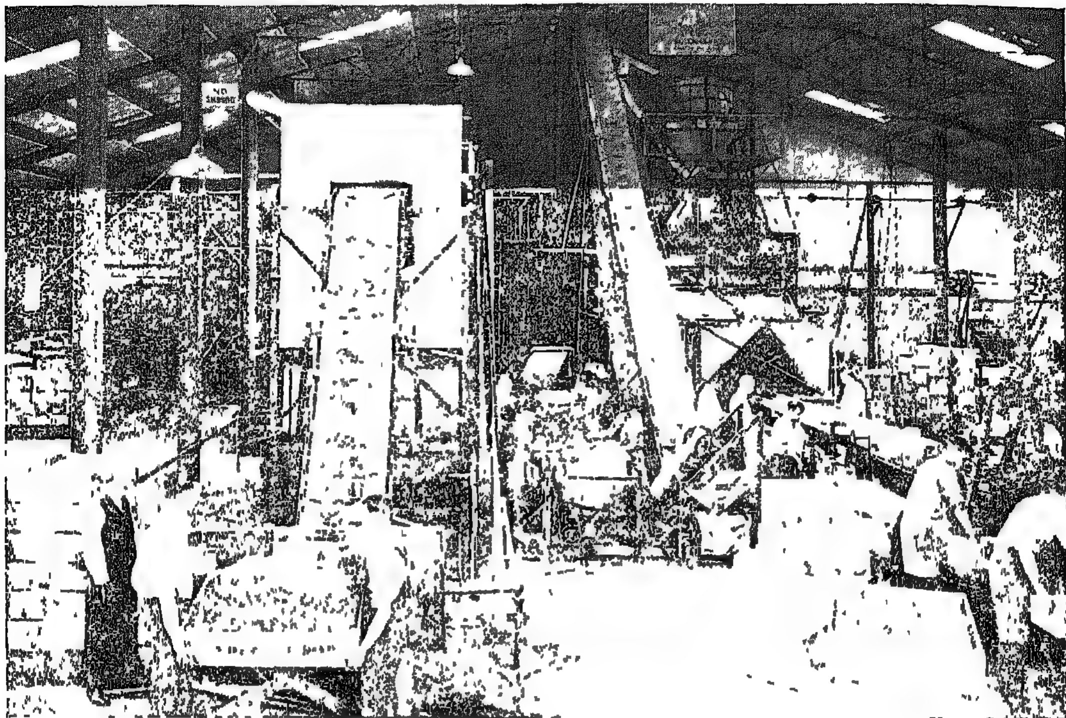
We now come to lands in our Empire where very little rain falls the whole summer long The winds bring rain to these countries during the winter, but all through the summer the people living in them enjoy warm sunshine and fine weather The plants that grow have to search deep down in the earth for water, and protect themselves against the hot sun, which would dry them up Consequently, some have very long roots Others store up water through the winter in thick, fleshy roots or stems Their leaves are either very small, or stiff and shiny, so that the sun cannot hurt them The leaves of the olive trees are covered with small silvery hairs, so that they look grey instead of green Often the bark of the trees is thick, and the fruits are tough-skinned Some of these tough-skinned fruits are grapes, oranges and lemons

The summer sun bakes the grass brown and dry, so that there is little food for the cows, and butter and cheese become scarce



[*Courtesy South African Railways*

Drying Fruit in Trays—Orchard Siding, Cape



Cleaning, Stemming and Grading Fruit, Mildura Packing Shed, Victoria—Australia

Then the people of these lands use olive oil for butter, for olives grow in plenty They are bonnie laughing people, who like to sleep in the middle of the day, when the sun is hottest They are proud of their lovely lands, their vineyards and orange groves and their long bright summers.

One of these warm lands with winter rain is called Cyprus It is an island washed by the gentle waters of a warm, blue sea. All the large countries within a short sail of Cyprus have wished to own this island, so it has been governed by many different people Now it forms part of the British Empire There are great hills on the island, and in the middle of it a long stretch of flat land called a plain This is divided amongst the people of the island, and almost every man has his own piece of land on which to grow crops. Those men who own the largest tracts now use machines on their land for ploughing and gathering in the harvest, but the owners of small patches plough their land in the spring with wooden ploughs drawn by oxen, just as their great-great-grandfathers used to do long before them

The Wonderful Vine

Another plant that grows very well in Cyprus is the vine, from which grapes and wine are obtained. There have been large vineyards in Cyprus ever since olden times, so the people know how to produce very fine grapes (There is a vineyard in Class Picture No 91.) The vine is a climbing plant, like the scarlet runner bean which twines round the bean sticks in the garden The men of Cyprus cut the vines down into

bushes, however, for then the bunches of grapes all grow within reach. Often the vineyards are planted on gentle slopes among the hills, and then donkeys carrying big baskets are needed to bring the ripe fruit down the stony narrow paths The grapes need months of sunshine to ripen them, and then they turn either a dark blue colour, and are called black grapes, or a pale green, and are called white grapes

When the grapes are ripe, the owner of the vineyard sorts them out for different purposes. A certain number of black bunches and a number of white bunches are cut off the vines, carefully packed in boxes of cork dust, and sent by ship to England and other countries for people to eat. You have all seen these in the green-grocers' shops Other bunches of white grapes are dried, and are called raisins There are two kinds of these, the raisins we put into Christmas puddings, and those we eat with almonds, called Muscatel raisins. The Muscatels have their stems cut through on the vines, and are left to dry in the sun The Christmas pudding raisins are dried in ovens There are also some smaller white grapes which have no pips in them These, when dried, are called sultanas There may still be more vines bearing very small black grapes, also with no pips in them, and these are dried and called currants What should we do at Christmas time if no grapes were grown in warm lands with winter rain? There would be no raisins, sultanas, or currants for the Christmas puddings!

There is still another way of making use of grapes Very often, the whole produce of a vineyard is turned into wine. Every autumn, when the grapes are ripe, the pickers go out and gather the heavy bunches into baskets, which they carry on their backs These baskets are emptied into wagons, and the grapes are carried off to cool cellars, where they wait to be made into wine In wine making, the juice is squeezed out of the grapes first. This used to be done by putting the bunches into a huge pan shaped like a bowl, and letting bare-footed men dance on them, to press out the juice Nowadays, however, the grapes are squeezed through wine presses worked by machinery—a much better plan. The juice flows into bowls, and is left to ferment or become bubbly. Finally it is poured off into bottles and casks, and sent away to many lands Red wine is made from black grapes, and white wine from white or black grapes

Other lovely fruits besides grapes are grown in Cyprus, as, indeed, they are grown in all warm lands with winter rain We find groves of oranges and lemons, and orchards of cherries, peaches, apricots, olives, figs and mulberries On the mulberry leaves silkworms are reared, and Cyprus silks and velvets are famous throughout the whole world At the beginning of the century, when the king's palace in London needed new curtains and hangings, they were all made of Cyprus silk and velvet

Look at the globe now and try to find Cyprus It may not be marked, as it is very small, but you can find the other Empire lands which have winter rain and warm, dry summers They are South Africa and parts of Australia. In these lands, too, are grown the thick-skinned fruits of Cyprus. So many are grown that a great number are canned, and then they are ready for use at any time of the year. Notice that Africa and Australia lie south of the equator, and consequently they enjoy their summer time when it is winter in Britain and Cyprus. Because of this we are now never without fresh fruit. When the season for fruit from Cyprus is over, it is just beginning in the other lands The fruit is stored in very cold rooms on the great ships which carry it over the sea

Jaffa Oranges

There is another notable land called Palestine which has a warm dry summer. Look for it on the globe. There is a famous port in Palestine, from which ships bring us

hundreds of boxes of beautiful oranges every year This port is Jaffa, and the oranges are called Jaffa oranges Jaffa is very near Jerusalem, about which we learn in the Bible Behind Jaffa lie miles of lovely orange groves. The trees are planted in rows like the apple trees of an English orchard. All the year round their glossy dark green leaves quiver in the soft breezes, and when summer comes, the trees are crowned with graceful, snow-white blossom. The scent of the flowers is delicious It can be smelt half a mile away, and bees come buzzing along in thousands. Arabs and Jews tend the groves, and spray the trees to kill any insects on them. Soon the fruit appears, green at first, gradually changing to gold If there should be any danger of frost in the night, fires are lit in small wire baskets, and placed about the groves These fires give off a blanket of smoke, which warms the air, and prevents the frost from harming the fruit.

You can easily tell a Jaffa orange when you see one, because it is oval, not round. It is very juicy, and has no pips Jaffa oranges begin to arrive in Britain about November, and come to an end in April Before the last shipload arrives from Jaffa, the first cargoes appear from Cape Town in South Africa, so the supply of oranges in the world never fails They are often not quite ripe when gathered, but go on ripening while they cross the sea. They are cut off the trees with scissors The pickers wear gloves so as not to scratch the skins of the fruit. At the packing house the oranges are sorted, wrapped in tissue paper, and packed in boxes so closely that they cannot move Large and small oranges are packed separately. About a hundred large oranges, and about two hundred small ones, will fill a box Orange trees will bear fruit for a hundred years or more, and yield fourteen or sixteen thousand oranges every season, so it is a splendid trade. The oranges sent to other lands from Cyprus, Africa and Australia are all sweet, like the Jaffa oranges, but round instead of oval

TEACHING HINTS

1. Use of globe.—When giving the lessons use the globe freely and see that the children have as clear an idea as possible of the positions of Cyprus, South Africa, Australia, Palestine and Jaffa Revise the position of the equator, and point out the northern and southern hemispheres

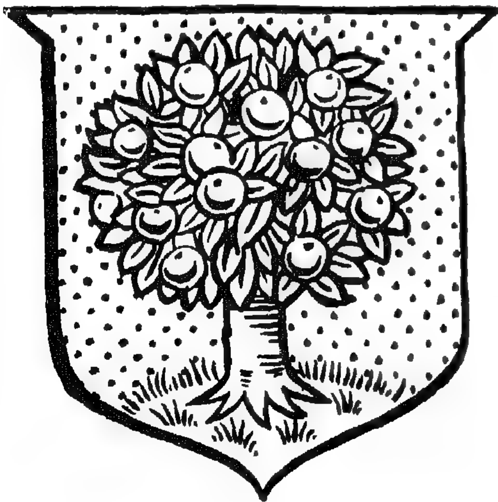
2. Cyprus.—Here is further information which the teacher can use at discretion for completing the picture The fertile plain of Cyprus is called the Messaoria, and the mountains fringe it on the north and south Anciently Cyprus was famous for copper, to which it gave its name The Phoenicians and Romans mined it Cyprus has been occupied in turn by the Greeks (Alexander the Great), the Persians (Haroun el Raschid of the *Arabian Nights*), the Romans, Richard Lion-Heart, the Venetians (Shakespeare's *Othello*), the Turks and, finally, the British Trees cover one-fifth of the island, but the ancient forests have long been used up as fuel, etc Large herds of goats, now kept under control, also helped in the destruction by stripping the bark from the trees Without sufficient natural vegetation to provide a catchment, the winter rains rapidly drain away and people depend largely on wells and storage tanks for water Diving for sponges is a notable coastal occupation, and mules and donkeys are part of the daily scene everywhere

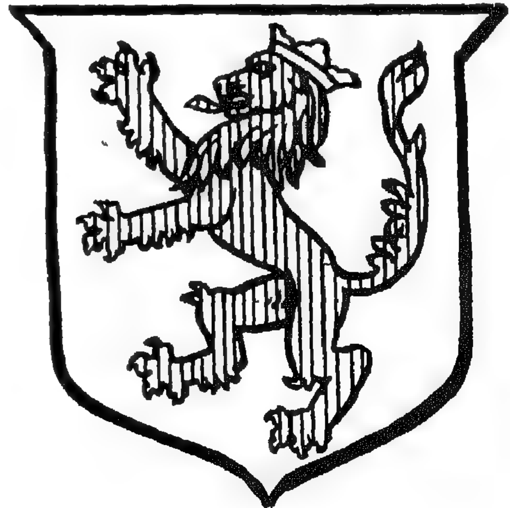
3 Silkworms.—The eggs, of which the female moth deposits about five hundred, are laid in August and September, and hatched the following May, when the mulberry comes into leaf. The eggs when hatched produce small caterpillars which feed greedily for more than a month The caterpillars then sicken and cast their skins and in a day or two begin to eat again This process happens four times and then, when they are about three inches in length, they cease to eat and begin to spin their cocoons The threads emerge from two little openings in the head and these are

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD





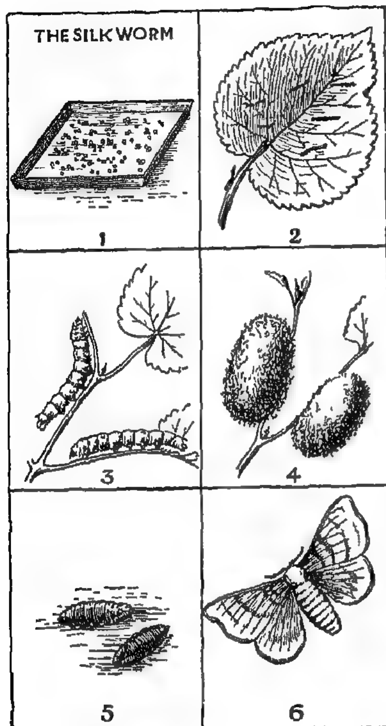




Locust Bean
Arms of the Orange Free State

Fig Leaves and Fruit
Arms of Cyprus

wound round the body like a ball of thread. Silk is the most beautiful of textile materials. As obtained from the silkworm it is a finished thread and no spinning is required.



LIFE STORY OF THE SILKWORM

4. Canning and cold storage.—Canning is a method of preserving foods in sealed tins Certain foods, such as sardines, are merely preserved in oil, the tins being sealed as soon as they are filled with oil. Fruit must be properly heated before being sealed, as this kills the germs which cause it to go bad. After heating and expulsion of air, the tins are sealed. Cold storage is a method of preserving perishable goods by keeping them at a low temperature.

5. Illustrations.—Point out to the children the strong lights and dark shadows in the picture of "Cyprus in Summer," thus laying emphasis on the bright summer sunshine and clear skies of lands that have winter rain

6. Blackboard summary.—Let the children assist in making sentences for a blackboard summary, which may be arranged as follows—

Cyprus is a warm, sunny island.
You would see locust beans growing there.
Ploughs are pulled by oxen.
Rich silks and velvets are made.
Upon the vines hang black and white grapes.
Sweet oranges come from Jaffa in Palestine.

7. Wine and Oil.—There is an interesting chapter with illustrations on these subjects in the history section, Lesson XII.

8. Memory work.—(*a*) Fruits that grow in warm lands with winter rain have tough skins to protect them from the sun (*b*) Thousands of bags of locust beans are sent from Cyprus to other lands every year, as food for cattle. (*c*) Raisins, sultanas and currants are all dried grapes (*d*) Grapes need months of hot sunshine to ripen them. (*e*) When it is summer time at Jaffa it is winter time at Cape Town. (*f*) When the orange crop at Jaffa has come to an end, the orange crop at Cape Town arrives from over the sea to take its place.

9. Exercises.—(*a*) In what ways do plants prepare for a hot, dry summer? (*b*) Why is there no butter in Cyprus in the summer time? (*c*) What do the people of Cyprus use instead of butter? (*d*) Tell all you know about a locust bean (*e*) How are grapes made into wine? (*f*) How would you know a Jaffa orange in the greengrocer's shop? (*g*) What do you owe to warm lands with winter rain for your Christmas pudding? (*h*) Why does Cape Town enjoy summer when we are having winter? (*i*) Name some fruits which grow in warm lands with winter rain.

VI. HOT LANDS WITH SUMMER RAIN

PICTURE REFERENCE



SETTING OUT RICE PLANTS IN INDIA
(Class Picture No 67 in the portfolio)

THE Class Pictures (Nos 67, 68 and 103) show rice planting, tea picking and piling teak Rice is the staple food of the people of India In the first picture peasants are setting out the young plants The people are dark-skinned and wear special head-dresses and cotton clothing in the damp heat. They paddle in the muddy water, for rice plants will grow only when the roots are flooded Notice the huge in-curving horns of the water buffalo ploughing.

The tea picking is going on in dazzling sunshine The bushes are planted on the hillsides, and conveniently placed among the plantations is a tea factory with modern equipment for drying and rolling the leaves



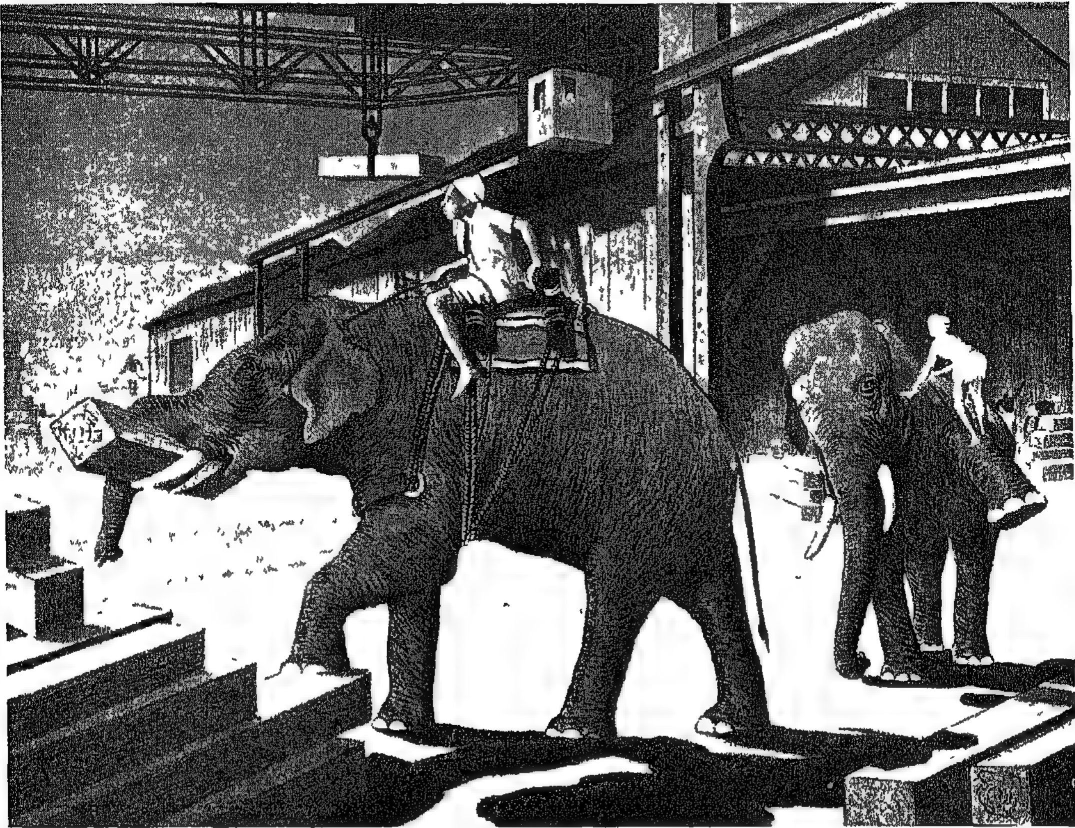
TEA PICKING IN CEYLON
(Class Picture No 68 in the portfolio)

An ox-wagon, hooded to shade the delicate leaves, carries the baskets to the factories, whilst a lorry conveys chests of prepared tea to the seaport.

The third picture shows an elephant piling heavy logs in a timber yard and a *mahout* on his back guides him in his work The elephant lifts a log in his tusks and uses his trunk to guide and balance it Another one is helping his master to mount his back.

INTRODUCTION

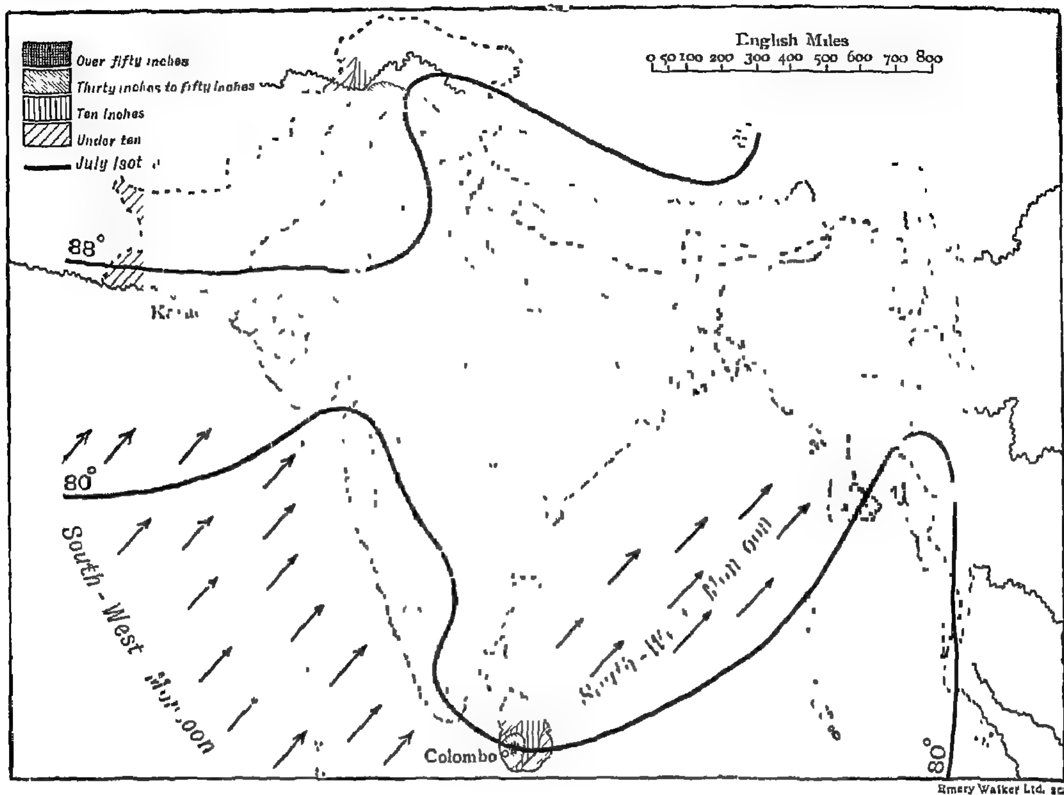
We have dealt, so far, with areas of the world inhabited mainly by white people, but we have now to study an important region where the climate is hot and wet, and unsuited on the whole for white occupation India is a typical land where out of a total population of about 350 million only a few thousands are white In the cool parts of the world, coastal districts usually experience a wind blowing from sea to land during the day and a wind blowing from land to sea during the night This reversal of the wind direction is brought about by the rapid cooling of the land after the sun has set, and the rapid warming after the sun has risen. The wind blows from cooler to warmer areas, and thus the sea breeze blows by day and the land breeze by night.



ELEPHANTS PILING TEAK IN BURMA
(Class Picture No 103 in the portfolio)

The monsoonal, or seasonal, winds of India closely resemble these land and sea breezes. India becomes intensely heated during the hot season of the year, and an inflowing wind is brought about which persists during the summer months Later, when the land cools down and the sea becomes relatively warmer than the land, the wind is reversed and blows from India to the Indian Ocean. The inflowing wind from the ocean, the south-west monsoon, is heavily charged with vapour, and where it is cooled by contact with high mountains tremendous rainfall occurs. The outflowing wind, the north-east monsoon, contains very little vapour, since it is passing from land to sea, and during the cool season when it is blowing, the greater part of India is very dry Some parts of this vast country are classed as "desert"

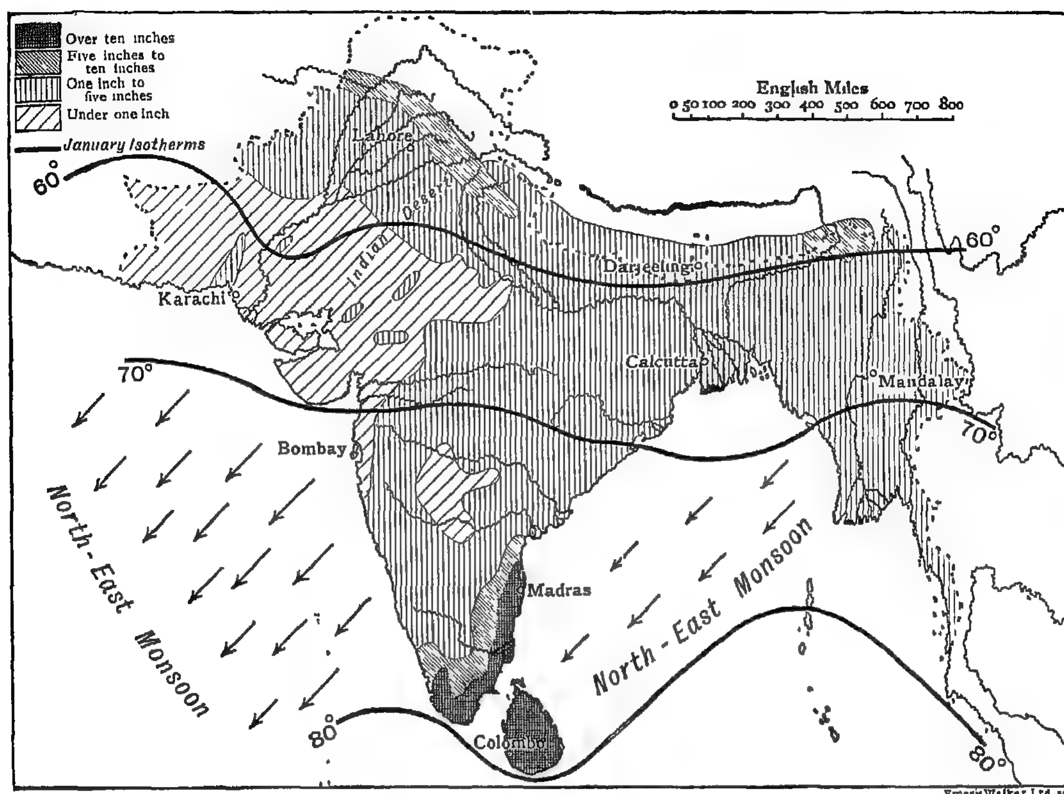
These climatic conditions influence both the character of the natural vegetation and the cultivated plants Hot monsoon forest areas are found, and, in these, teak is the most valuable timber tree The elephant is an important beast of burden in the lumbering operations in the forest In the lowland plains, and where trees have been cleared, a very wide range of cultivated products can be grown Among these are



SOUTH-WEST MONSOON—INDIA, BURMA AND CEYLON

rice, jute, indigo, sugar, millet, cotton, tea and coffee In the cooler season of the year, when the temperatures are a little higher than the English summer, wheat is grown Millions of coloured people, native to India and Burma, are peasant farmers who live in villages In the wettest parts of their countries they grow rice to provide themselves with their chief food. South-east Asia has had centuries of experience in rice cultivation and since the earliest days, it has been a staple industry Rice is grown for home consumption, but the vast rice-growing areas of India and Burma yield a surplus in excess of the people's requirements. To-day more rice is exported from the two countries than from any other region in the world. Most of the grain comes from lower Burma and Bengal. (Rangoon and Patna rice are well-known varieties in all parts of the world) Climate and soil are ideally suited to its cultivation. The tropical summer rains flood the paddy fields and the crop is ripened and dried by the warm Indian sun.

Swamp rice, the most important commercial variety, requires very wet hot regions The seed is sown in flooded ground with a depth of about 6 in. of water, and when the shoots are a few inches high they are planted in paddy fields Each field is surrounded by a bank in order that it may be kept covered with water during the early stages of the growth of the plants. It is only during the ripening period that the fields are drained The rice plants mature quickly, and in the most favoured areas three distinct crops can be harvested during



North-East Monsoon—India, Burma and Ceylon

the hot wet season of the year The plants give a prolific yield, and the harvest is usually very great

Tea, like rice, requires a heavy rainfall and a high temperature, but, unlike rice, it requires a well-drained soil Water must not stay at its roots, hence plains near rivers liable to flood are unsuited to its cultivation Tea flourishes on the lower portions of wet mountain slopes, and is an important crop in Assam, the south of India and Ceylon Some 82 per cent of the area cultivated is located in Assam and Darjeeling and its neighbourhood

The rainfall of Assam is at least three times the Indian average and in some localities amounts to 30 ft or even 40 ft a year. Over a foot of rain may fall in the course of a night The hillslopes are therefore well-watered during the hot summer months. The tea plant grows wild on the eastern hills of the province, often attaining the height of a moderately sized tree The cultivation of tea involves much labour in pruning and leaf picking, and it is necessary that labour should be plentiful. Peasants from northern and central India are engaged to do the work Over 4,300 tea plantations give work to nearly a million of these people. The tea of commerce is the dried leaves of the tea shrubs The earliest crop is the best, since the young leaves supply the choicest tea

The bulk of the tea produced in India is exported to foreign countries and the trade brings to India about £23,000,000 a year. Indian tea goes to over fifty countries scattered all over the globe. After picking, the

leaves are speedily removed to the factory, where the first process is to wither them in trays, which are generally stacked in lofts through which hot air from drying-machines below is passed Next come numerous rollings, which liberate the juices for fermentation and give the leaves the characteristic twist From the rollers the leaves pass into the humid air of the fermenting rooms, where they attain a copper red colour. Finally comes firing, a tricky operation, in which the trays pass on an endless band through a vast drier heated to about 150°F It now remains for the tea to be sifted and graded. The sifting is done by women who see that all inferior leaves are removed When this has been done, it is passed through sieves with meshes of various dimensions, which separate the leaves according to size and shape, and thus grade the different qualities in readiness for packing in the well-known plywood chests

Over 70 per cent of the enormous population of India are directly dependent upon agricultural pursuits for their livelihood There are few large towns in India but there is an enormous number of villages in which the peasant farmers live. Their methods of cultivation are not very scientific and many of their implements are old-fashioned In this fertile



[*Courtesy Indian Railways.*

CHURNING BUTTER—INDIAN VILLAGE LIFE

country the farmer is everywhere a poor man Owing to the great heat little clothing is worn The dwelling places are constructed with wood or mud walls and have thatched roofs of leaves and grass The houses are one-storeyed dwellings with an average of two rooms The villages vary considerably in different parts Sometimes they are packed closely together, but often there is a single village site around which the houses are collected In swampy districts the houses line the high banks of rivers Usually a bamboo fence or a thorny cane hedge surrounds the courtyard of each house as a precaution against wandering animals The elephant, rhinoceros, and wild buffalo frequent the areas where dense jungles are found Tigers sometimes raid village herds in places, while leopards, bears, wolves, the mongoose, mice and rats are numerous

Domesticated animals are buffaloes and oxen, both being used for draught purposes. Cattle are held in great veneration and the flesh is never eaten. Wild birds are exceedingly numerous

It is important to notice that when the dry monsoon wind is blowing the temperature is still fairly high and the land is able to produce crops by the aid of irrigation In many areas tanks have been constructed to store the heavy rain of the wet season The water is led to the fields by dykes and ditches. Some of the rivers have been harnessed, in the latter part of their courses, by great masonry dams, and their waters distributed into a network of irrigation channels



[*Courtesy India House*

WEAVERS AND THEIR QUARTERS, OUTSIDE AGRA

Mention must also be made of the wonderful skill of many of the peasants of the hot summer rain lands India is the land of monumental and magnificent temples These are found in every city of the country They are decorated in a lavish and wonderful fashion which speaks well of the artistry and skill of the people The fine muslins, silks, carvings, filigree work and pottery are further examples of their beautiful handwork

CHILDREN'S STORY

Rice Cultivation

We come now, in our lessons, to India and Burma, both very hot lands which have rain in the summer time The people of these lands are dark-eyed, graceful and slender They wear thin, cotton clothing The men work on the land, and almost all of them have small farms, where they grow food for their families What food do you think they grow? Chiefly one kind, which supplies almost all their needs. That food is rice They eat it at every meal, just as we eat bread They eat their meat with rice, their vegetables and fish with rice, and when they have no meat or fish, they eat rice cooked alone

Now rice is a very curious plant to grow It likes to stand in cool water, with a burning sky above it That is why it flourishes in lands with summer rain Rice is called "paddy" while it is growing. At first, it is a tiny seed When the rain comes, at the beginning of the summer, all the paddy fields are ploughed Oxen, or sometimes water buffaloes, drag the ploughs The patient animals walk up and down the fields all day long, in deep mud and water often up to their knees The men or boys guiding the ploughs sometimes bind straw or cotton rags round their legs, so that they shall not be bitten by insects in the mud In the warmest corners of the ploughed fields the tiny rice seeds are sown under six inches of water They soon shoot up, and when the shoots are four or five inches high, they are planted out in rows in the paddy fields This you see being done in the picture If the rain should not be heavy enough to keep the paddy fields flooded, the farmers run in water from the nearest river, and bank up the fields so that no water can escape. The whole crop would be ruined if a field became dry



Indian Farmer going to the Paddy Field with his Plough and Cattle

Gradually the green shoots grow taller, and the paddy fields appear to be covered with waving grass Towards the end of the summer, the rain grows less, and finally stops. The paddy turns yellow and ripens, and the fields are drained dry. Children are now kept busy scaring away the birds which try to steal the rice grains At last the

crop is ready for harvesting Men go into the fields of paddy and cut it all down. Then they hang it out on fences to dry There is still more work to do before the grains are all sifted out and shiny as we buy them for our puddings. When the paddy is gathered, the rice grains are hidden in husks, just as grains of wheat are hidden in the ears To sift the rice grains from the husks, men drag the dry plants through iron teeth set in tree trunks. Then they beat the rice, and throw it against the wind in shovelfuls The wind blows away the husks, leaving the grains behind in a heap on the ground. In the end, the grains are carried away in buffalo wagons to the rice mills, where they are scraped and polished white

Most of the rice grown is eaten by the people who grow it, but some of the hot lands with summer rain in the Commonwealth, grow more than the people need for themselves Then the rice is packed in large bags, and sent by ship to London and other places. From which lands does it come? Turn the globe round and look for a land called India. India is a part of the Commonwealth which has heavy summer rain Is it very far away from the equator? No, that is why it is a hot land It has long rivers, and the paddy fields lie on either side of the rivers, where the land is flat and marshy, and holds water on it for months at a time Some of the best rice that you can buy comes from India, and from a country adjoining it, called Burma, which was once a part of our Empire.

Tea Plantations

We know now the chief *food* of the people living in hot lands with summer rain Have they also any special *drink?* Yes These are the countries in which the tea plant grows The tea plant, like the rice plant, needs both rain and sun, but it does not care to stand in water. Its roots must be well drained Consequently it is grown on sunny hillsides so that the rain water will moisten its roots and then run away, and the hot sun will hasten its growth Many hillsides in India are used for tea plantations, and sometimes the bushes are found growing wild.

Tea plants are grown from seeds, and are not ready for picking for three years They are neatly planted in rows and cut down to a height of about four feet, so that the leaves can all be reached easily Only the young shoots are picked for tea making, and these are nipped off by hand In a large tea estate, picking goes on all the year round. The land is divided into fields, and the plants are at different stages in each field. Some fields will be in flower, snow-white and delicately scented, others will be shooting or producing fruit. There is always work to be done When a field of plants has just been picked and needs a rest so that new shoots can grow, then is the time for weeding, or pruning The pickers on a tea plantation are mostly women and older children Their fingers are more nimble than men's and the tender shoots need handling with dainty care You can see them in the picture busily filling their baskets When they have filled their baskets, they take them to the factory to be weighed, and are paid a certain amount of money for every pound of tea leaves that they have picked

Inside the factory, the leaves are spread on trays and left to wither for a day and a night. They are next put into a rolling machine, and all the juice is squeezed out of them After that they are spread on trays to decay or ferment, and they give off a lovely scent Finally, they are rolled again, and dried by hot air, which turns them black The large leaves are sifted from the small ones, and all are packed in separate cases lined with lead to keep them air-tight These tea chests come over the sea to England Mother and father are very glad of their cup of tea at tea time They can buy a pound of good tea for a little over three shillings, but before India had her great plantations a pound of tea in England cost fifteen shillings and more!

When tea was new and strange to English people, they did not know how to use it. The story is told of an old lady in the country who had a pound of tea sent to her for a present She was told to pour boiling water on the leaves. So she put them into a jug and poured on the boiling water, for she thought that the tea leaves were vegetables and would be cooked by the water Then she threw away the water, and spread the leaves on bread and butter. Ugh! how nasty they were! "I do not care for tea at all," said the old lady, and threw the leaves to her pig

Teak Forests

Where the land in these hot regions is not cleared for growing crops, large forests spring up with many strange trees in them. On the edges of the forests live wild animals, such as tigers, leopards, bears and wolves These hunt the wild deer for their prey, but when they cannot find enough food in the forests they come out and prowl round the nearby villages. A great many more people live in villages than in towns, and their little houses have wooden or mud walls, and roofs thatched with leaves and grass Generally there are only two rooms in a house They are not very well protected against the wild animals The men put bamboo fences around their gardens, or grow hedges of thorny cane. Sometimes a tiger will push through in the night, and make a raid on a poor man's stock A very hungry tiger will carry off a child if it should find one Wild elephants and buffaloes also live near the forests, and when these sally out in herds they will trample a whole village down to the ground

Since these dangerous creatures make their homes on the forest rim, you will say, "Why not cut the forests down? Then the wild animals will go away or die." No, we cannot do without the forests, because of the wood that comes from them In the depths of the forests grow noble trees called teak trees They flourish, green and stately, during the hot, wet summers, and drop their leaves during the dry season that follows When a teak tree is fully grown the woodcutters take off a ring of bark from around the base of the trunk and so kill the tree Then they leave it standing for two years before cutting it down. Consequently the wood is very hard, and will not split or warp when in the hands of the carpenter

You can see an elephant in the picture piling up the logs of teak after they have been sawn and planed The logs are worth a great deal of money, and are shipped to many lands. They are used for building houses, for furniture, for ships, railway sleepers, shop fronts, garden seats, and wherever wood is wanted to stand hard wear or bad weather. When a great many teak trees have been cut down from the forests, fresh shoots are planted, so that the supply of wood shall not fail. The people living in the hot lands with summer rain are very clever in carving the wood from their forests. They are always using their supple brown fingers to make beautiful work in gold and silver, in pottery, in embroidering silk and muslin, and in carving stone and wood, so that their splendid temples are the wonder of the world Would you not love to pay them a visit?

Some time ago, a queer little story came from an Englishman who had been born in India, and had lived there many years. When he went over to England for a visit, he stayed at his brother's house, where he met a small niece and nephew. The children begged him to tell them a story about the land of summer rain. "All right, I will," said he. "An Englishman and his wife once lived in a house near one of the Indian forests. The Englishman was overseer of a body of woodcutters engaged in felling teak trees He and his wife had a baby son, who was about six months old at the time of my story During the dry season the nights were so hot that they sometimes slept on the verandah of the house One day, when it was about four o'clock in the morning, the lady woke up, and turned to

glance through the dim light at the baby sleeping in his cot beside her To her horror she saw that *the cot was empty!* Screaming with fear, she woke her husband and servants, and all dressed hurriedly On the verandah steps they found large marks of paws. A tiger had come in the night and had carried away the baby The Englishman seized his gun, and the whole party went out into the forest, though the poor mother had little hope of seeing her child again The party followed whatever tracks seemed likely to be the tiger's, and wandered sadly on and on, peeping and peering in every direction

"All at once one of the servant boys said 'Hush!' They stopped, and looked in the direction in which he was pointing, keeping as still as mice. Hidden away in a clump of bushes was a comfortable den of dried grass and leaves, and stretched lazily on these was the tiger, blinking his eyes and licking his paw like a great sleepy cat. Beside him lay his mate, a tigress, playing with two or three cubs, which rolled and gambolled over her Lying between the tiger and tigress was the little white baby, seemingly unharmed, and kicking its feet in the air!

"Very, very quietly the Englishman lowered his gun and took careful aim His shot shattered the tiger's head Terrified at the noise, the tigress leapt up and ran away, followed by her cubs The happy mother and father rushed to their baby, and with thankful hearts lifted him up out of danger. He had not a single scratch upon him, and did not seem frightened in the least Full of joy, the little party returned home"

"Did the baby live to grow up and become a man?" asked the children, breathlessly.

"Oh yes, he is living now," said their uncle, "and you have seen him"

"Seen him? Why, where is he?" they cried

"He is talking to you now," replied their uncle, laughing. "*I was that very baby!*"

TEACHING HINTS

1. Monsoon.—This is the name of a rain-bearing wind which blows over the Indian Ocean from May to September. It produces great storms in the Bay of Bengal, and sailors who trade with India have to vary the route they follow in accordance with the monsoon The causes of the wind are explained in the "Introduction"

2. Rice.—Fifty or more varieties of rice are known The flowers grow in a pointed plume. Each grain of rice stands on a separate stalk The grains contain starch, but no gluten, so that rice flour cannot be used for bread making Rice can be boiled or baked whole, broken or ground In Japan, rice is made into an alcoholic drink called *saké*. In Burma, the husk, which forms one-fifth of the weight of the paddy crop, is used as fuel in furnaces

3. Tea.—The name "tea" is given to the drink infused from tea leaves, and to similar decoctions, such as beef tea, cowslip tea and sage tea. In the "Children's Story" the making of black tea has been described There is also green tea, which is unfermented, and more stimulating than black In moderation, tea soothes the nerves Excessive tea drinking, especially if the tea be kept long standing, produces nervous complaints, insomnia and indigestion. The teacher may here take the opportunity to impress on the children the correct method of making tea, since instruction in the preservation of health is never out of place

1 The water should be freshly boiled
2 Heat the teapot.
3 Allow one teaspoonful for each person.
4 Pour on the boiling water, allowing about half a pint for a teaspoonful
5 Let the tea stand not more than three to five minutes

The Chinese were the first people who used tea as a drink

4. Elephant.—This is the largest animal now existing There are two kinds, Indian and African The Indian elephant has smaller ears and tusks than the other. The diet of the elephant is exclusively vegetarian Indian elephants rest heavy weights on their tusks or hold them in their teeth, using their trunks to keep them steady The trunk is a delicate sense organ for smell and touch, and the animal takes great care of it. An elephant can uproot a tree by pressing its head on the tree trunk

5. Buffaloes, oxen, cows.—Buffaloes can be distinguished from oxen by their horns, which are flattened at the base and triangular in section. Wild buffaloes of the jungle do great damage to crops Domestic buffaloes pull the ploughs in the rice fields, as described in the "Children's Story"

6. Memory work.—(*a*) In hot lands with summer rain men are farmers. (*b*) They grow fields of rice. (*c*) Rice likes to stand in cool water beneath a burning sky (*d*) Tea plants grow on sunny hillsides (*e*) Tea is made only from the tender shoots of the tea plant. (*f*) Teak is a very hard wood (*g*) Elephants, oxen and buffaloes work hard all day long.

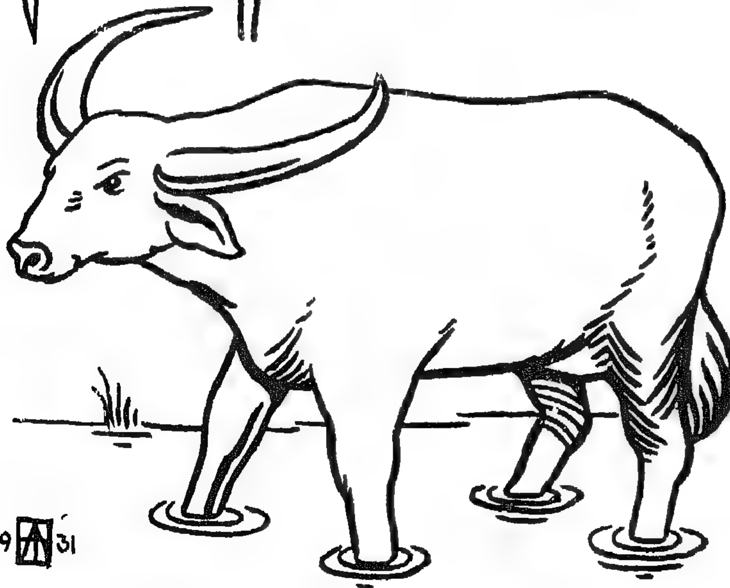
7. Exercises.—(*a*) What name are the rice fields called? (*b*) How must the rice be planted? (*c*) How is water prevented from running out of the fields? (*d*) Of what use is rice? (*e*) Why should the tea plants be set on hillsides? (*f*) Who are the chief pickers on a tea plantation? (*g*) What is done to the tea leaves after picking? (*h*) What are the names of the lands that grow tea? (*i*) What tree grows in the forests that have summer rain?



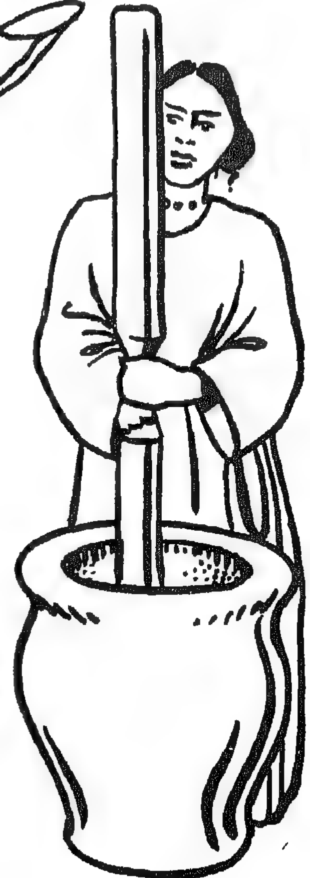
[*By courtesy of Messrs Steel Brothers & Co., Ltd.*

TEAK RAFTS ON THE IRRAWADDY AT PROME

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD



Rice Plant
Water Buffalo



Tea Plant
Indian Woman Pounding Rice

VII. HOT WET FORESTS

PICTURE REFERENCE



A COCOA ORCHARD IN WEST AFRICA
(Class Picture No 69 in the portfolio)

THE Class Picture shows a party of dark-skinned people who live in the hot wet forest lands of Africa They are working on a cocoa plantation Look closely at the trees and you will see that they are quite different from coconut palms Also, the fruits are pods, not nuts, and they grow from the trunks and branches A large heap of pods has been cut from the trees and round it are sitting women dressed in coloured cotton dresses and wearing knotted head-dresses A man is breaking open the pods with a long knife called a cutlass, and the women are scooping out the cocoa seeds or beans The huge leaves on which the women are sitting have come from banana plants An important thing to notice is that there are no animals to carry the heavy loads.

INTRODUCTION

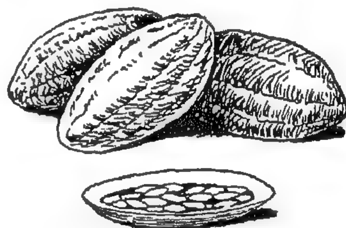
All lowland areas in a belt stretching about 10° on each side of the equator have a high temperature throughout the year, and a heavy rainfall which is fairly evenly distributed during the year The belt includes the regions of the Amazon in South America, the Congo and the Guinea coastlands in Africa, and the island region lying between Asia and Australia Rather a small part of the British Empire is included in this region of high temperature and heavy rainfall, but we have British Guiana, the Gold Coast and Ashanti, Nigeria, Uganda, Kenya Colony, Malaya, British North Borneo and British New Guinea, either wholly or partly in it

The absence of a cool season and the abundant supply of rain throughout the year cause vegetation to grow profusely, and vast forests occur These forests are a decided contrast to those of cool lands Near the equator the trees are mainly giants, and grow very close together The branches intertwine overhead, forming a roof through which the rays of the sun can scarcely penetrate Creepers, often a foot or more in width, twine themselves about the trunks and join tree to tree. In the gloom the undergrowth is scanty, but where daylight breaks through, the forest floor becomes a vast jungle, the home of myriads of insects and reptiles, deadly foes to man. The only pathways through these forests are the water routes formed by the rivers, and these routes are full of difficulties and dangers to navigation. Under such conditions the tropical forests are almost uninhabited regions of the world

The trees of the tropical forests offer many valuable products Some are prized for the value of their timber. Mahogany, rosewood and ebony are well known cabinet woods, and are used in the manufacture of high-class furniture. Lignum-vitae is noted for its hardness, and civilised man has found many uses for it. Other trees are valued for their saps The rubber tree has become of very great importance during recent years. From some of the trees important medicines, such as quinine, cocaine, castor-oil and ipecacuanha are obtained, while from others dyeing material is extracted.

The unhealthy character of the tropical forest is a severe handicap to man in his efforts to extract the wealth. Lumbering is an arduous occupation owing to the difficulty of transporting the huge logs

At first, the produce of these forests was obtained only by forced labour, but better conditions have gradually been established Man is overcoming the terrible diseases of the tropics, and the work is now less deadly The most wonderful change, however, is that some of the products are being cultivated, and man is becoming less dependent upon the virgin forest



COCOA PODS AND BEANS

In the Gold Coast Colony the forest trees have been felled, and their stumps burned. Plantations of cocoa trees are being grown in the clearings thus made The damp, hot climate suits the trees admirably They are raised from seed, and the seedlings transplanted three months after sowing, when they are set out about fifteen feet apart. The young plants must be protected from wind and from the rays of the sun When in bearing, each cocoa plant yields from one to ten pounds of dry beans annually. The cocoa industry of the Gold Coast is now a large and flourishing concern.

In the comparatively small region of Malaya and the islands of the area between Asia and Australasia the natural jungle has, to a large extent, been wiped out and plantation work now prevails. The climate still,

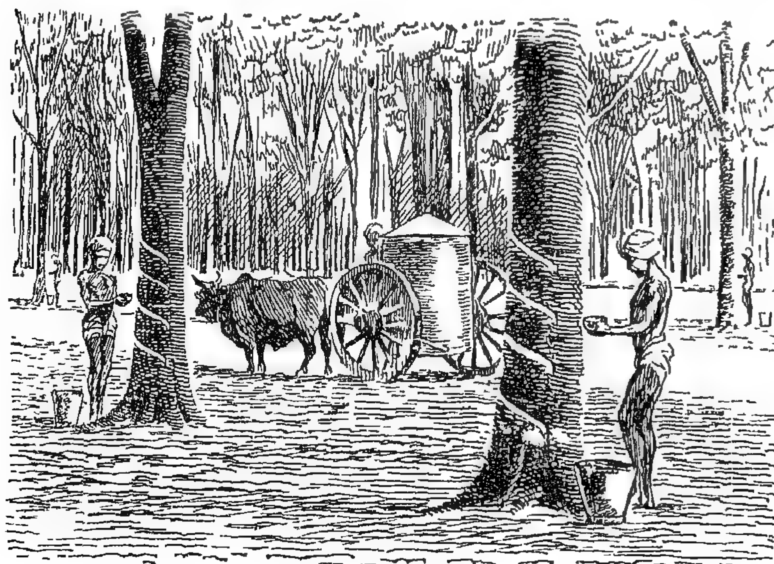
naturally, remains hot and wet throughout the year, but the opening up of the islands to the sea breezes, and the draining of swamps, has made them more healthy areas

Plantation work for the cultivation of rubber trees has made remarkable progress In Malaya the birth of the plantation rubber industry is one of the most striking romances of agricultural enterprise In the year 1876 a supply of seeds was obtained from the area of the Amazon forest and about twenty plants were established. In 1900 world trade in Eastern rubber amounted to only four tons, but now the annual yield in Malaya is nearly 500,000 tons Plantations have also been established in the hot lands of Ceylon, India, North Borneo and Sarawak, and these regions, together with the Dutch East Indies, now produce about 95 per cent of the world's supply of rubber Malaya produces about half the world's supply.

Rubber will grow in any district in Malaya It requires an equable tropical temperature and a well distributed and high rainfall Most of the areas at present under rubber were previously dense jungle which was cleared by felling trees and burning From the time of planting until the trees come into bearing there is little cultivation except eradicating weeds, draining the land where necessary, and preventing epidemic attacks of disease.

Rubber comes into bearing in from five to six years after planting. By that time tapping commences and the trees have a girth of about three feet at the base. The latex, which is somewhat like milk in appearance and consistency, is taken direct to the factory when collected from the trees There, after being placed in tanks or pans, it is coagulated by the addition of a small quantity of acetic acid. The thick material is put through rollers, washed, and either smoke-dried or rolled into thin long strips (crêpe) and air-dried.

The British possession of Sarawak has a large production of plantation rubber, and also exports a considerable amount of gutta-percha from the virgin jungle of the region The collection of the rubber from the jungle is an occupation well suited to the Dyak inhabitants. It requires little capital, and the collectors may travel long distances and be away for months at a time The journey is made by boat to the region where the trees have been located. The tapping is done by a gouge tapping knife, the bark is cut on the herring-bone system, and the latex is collected in bamboo cups It is then conveyed to the coagulating sheds, usually built at a convenient position on the river bank, where the workers live and sleep. Having accumulated a sufficient stock the collectors take it to the nearest bazaar for sale to the merchants



Collecting Rubber Latex

Of all the jungle plants the rattan and bamboo are the most valuable to the people. The houses are constructed with bamboos, and the baskets made with bamboo by the Dyaks are the best in the world. Rattan furniture is made and is found in every house, and with rattans the people also make beautiful mats. The finer sorts of rattans take the place of ropes and string

British North Borneo now has a very large export of rubber Less than twenty years ago the production was small and it was entirely from jungle trees and vines Plants raised at Kew from Brazilian seeds were introduced in 1882, and since then the plantation industry has expanded rapidly North Borneo has now definitely taken its place as one of the few tropical countries where plantation rubber is a great success Gutta-percha, rattans and bamboos are also obtained from North Borneo



STRAIGHTENING RATTANS

The fauna of Borneo is prolific Elephants are found in the south-east part of the territory, and the small type of rhinoceros lives in the dense jungle of the interior Wild pigs are exceedingly common, and unless guarded against do considerable damage to plantations and crops They attain an unusually large size, and are much hunted with spear and dog by the people. The immense ape called the "orang-utan" is found in the forest, and the tiger-like clouded leopard, famed for its beautiful coat, preys upon the gorgeous wild peacocks. There are numerous small animals in the forest Monkeys are seen everywhere, and two species of the lemur are found Armadillos, porcupines, otters, stoats, flying-foxes and bats are numerous The crocodile is the most dangerous of the reptiles, and is found in nearly all the rivers It attains an enormous size. The people have an ingenious method of catching crocodiles They use a baited stick which twists in the throat Snakes are abundant, some harmless and some poisonous Large pythons are found in the forest and some are said to reach a length of thirty feet Borneo is the home of glorious songsters as well as of birds of brilliant plumage.

Little has been said of the two great areas of tropical forest that almost fill the Amazon and Congo basins, but reference might be made to a curious race of people found in the forest of Africa The Pygmies of that area are dwarfs who are mainly a hunting people The men use blow-pipes and poisoned arrows as weapons, or catch wart-hogs and other animals in pitfall traps, while the women supplement the food supplies



[*Courtesy Cadbury Brothers, Ltd*

OLD METHOD OF TRANSPORTING COCOA

by cultivating a little manioc and gathering wild fruits, insects and honey. Villages of oval huts made of grasses and leaves are to be met with in clearings, where the little people like to stay aloof from strangers.

CHILDREN'S STORY

COCOA AND CHOCOLATE

The hot wet forest lands of our Empire all lie very close to the equator, and therefore they have summer time all the year round Rain falls, too, all the year round. It rains heavily for a while almost every day, and most things always seem to be either dripping or damp Trees love the rain and sun, and so vast forests spring up, full of giant trees and ferns and creeping plants, which crowd upon each other, and struggle for a share of the sunlight Searching on the edges of these forests, men have discovered trees of great value to them Some of the wood from the trees is dark red in colour, or black, and can be made up into expensive furniture. Other trees contain medicine in their trunks or leaves. There are still others which supply us with useful materials for our everyday life, and one very important tree gives us food and drink! How strange, you will say! Do we really get food and drink from a tree in the hot wet forests? Yes, indeed we do, and here is its story.

This wonderful tree is called the cacao tree, and from it we obtain chocolate and cocoa Because cocoa comes from it, it is



[Courtesy Cadbury Brothers, Ltd

NEW METHOD OF TRANSPORTING COCOA

sometimes called the cocoa tree, and you must be careful not to confuse it with the coconut palm There is an "a" in the spelling of "cocoa", but not in "coconut" The cocoa tree is not a palm, and it bears pods, not nuts. Look at the trees in the picture The leaves are oblong, smooth and pointed They are bright green in colour, and sometimes grow eighteen inches long Tiny pink and yellow flowers spring in clusters from the trunk and main branches of each tree, and these give place to fruits like small cucumbers. They look very curious hanging away from the leaves, instead of amongst them, as apples and pears do. In three or four months, the little fruits swell into large pods, and their green colour changes to red or yellow The rain makes them grow, and the sun ripens them They cannot stand much wind, and drop off in large numbers, or shrivel up, when a gale arises. They often grow a foot long

At length they are ready to be picked. Those fruits within reach are either picked by hand or cut through their stalks with cutlasses A cutlass is a very large knife with a broad blade which is curved at the point (See blackboard illustration) The pods growing out of reach are cut off by men using a long bamboo cane with a knife fastened to the top They work very carefully, so as not to injure any clusters of flowers growing by the pods, as these will produce the next crop of fruit. Women and children gather up the pods as they fall, and heap them at the foot of the trees Presently, they pile the pods in baskets, and carry them off on their heads to an open space between the trees. The women walk very gracefully, and their blue and brown clothes floating out among the green leaves and golden fruit make a picture full of bright colour.

When a huge pile is heaped up, the workers gather round to break open the pods Men slash them open with cutlasses, and scoop out the insides with the curved points. Then they throw the tough rinds on one

side, and the contents of the pods in a heap in front of them The insides of the pods are sticky masses of white pulp, in which are arranged about forty beans in rows The beans are either a pale yellow or delicate purple colour, but at this stage they all look white, because they are wrapped in pulpy white jackets. Women take up the sticky masses in their hands, and break them into separate beans They heap these upon plantain leaves. When the work is finished, they place more plantain leaves over each pile, and the beans are then left to sweat or ferment

During the sweating, which takes about six days, the pulp round the beans becomes liquid and runs away, and the colour of the beans deepens to a medium brown, or in some cases to a dark chocolate hue. The beans have to be turned over every day while they are sweating, or they will not ferment properly. The next work is to dry the beans They are either spread out in the sun to dry, or taken to hothouses where they are fanned with hot air from machines. Now they are ready for market. They are packed in bags, and sold, to be shipped to many different countries.

Not many beans are gathered from wild trees, for the coloured people of the hot wet forest lands have learnt to grow them in plantations. They root out and burn patches of forest trees and plant little cocoa trees in regular rows. These cultivated trees are reared from seeds and planted out when about a foot high. They have to be shaded from the hot sun when they are young, so banana trees or plantains are set by them, and cut down afterwards when the cocoa trees are tall and strong. Dry winds and hot sun kill young cocoa trees The plantations are kept carefully weeded and free from deadly insects, and from the trees thus grown very fine beans are obtained Merchants prefer the beans from plantations to those from the wild forest. Great firms which make large supplies of chocolate and cocoa always buy their beans straight from the plantations.

When the bags of cocoa beans arrive from over the sea, their contents have still to be made into chocolate or cocoa They are placed in a wonderful machine which cleans them and sorts them into sizes. After that, they are roasted for an hour. Lastly, the beans are put through a machine which splits off their shells and crushes them into small pieces called nibs. The nibs are carried away for grinding. They are showered into a mill which turns them to powder, but when they leave the mill they run out as a streaming liquid. The grinding of the millstones warms the nibs and melts the fat in them This fat is called cocoa butter. The thick liquid flows into cloths through which the cocoa butter filters and a brown powder is left behind. At last we have our cocoa! We mix it with hot milk or water and sweeten it with sugar, and so obtain a delicious, nourishing drink.

The cocoa butter is used for soap, face cream and for making into scent. Some of it is run into moulds and used in the making of chocolate. When used for chocolate, the cocoa butter is not filtered away from the powder. They are left together, making a rich liquid which has still more cocoa butter added to it, also sugar, and some kind of flavouring, and then is run into moulds of many shapes, where it cools and hardens into chocolate Thus we get both food and drink from the cacao tree, and what delicious food and drink! Remember this story, and tell it to your mother when you offer her a piece of your next Easter egg

Rubber Plantations

It is wonderful to think that trees growing in our Empire give us food and drink. What would you say of a tree that provides us with clothing? In those mighty wet forests near the equator such a tree does actually grow. In the rain and sun it springs up healthy and strong, and without it we could have no mackintoshes to protect us from rain It is the rubber tree In some lands it grows wild, but in our Empire it

is cultivated in large plantations Great parts of the hot, wet forests have been cleared by cutting down and burning the trees, and digging out every root. In these clearings, either seeds or young plants of the rubber tree are set at regular distances, so that each can receive enough air and sunlight In about five years after planting, the trees begin to produce rubber

As it comes from the tree, rubber is a milky juice. To obtain this juice, the tree has to be "tapped," or cut with a knife through the bark. At one time, the men who collected the juice made a great many V-shaped cuts all over the trunk, thinking that more cuts would give them more juice It has been found, however, that the same quantity of juice can be taken from one long cut as from many small ones, and the one cut in the bark heals up much more quickly afterwards. So nowadays the rubber trees are tapped by cutting one long channel all down the tree to the ground, with four or five short branches running out of it A cup is placed under the cut in the tree

The tapping is done early in the morning, and in the evening the juice in the cups is poured into pails, and carried off to the factory. All the buckets of juice are emptied into a tank, and a little acid added which makes the juice harden Soon the rubber looks like a great white cheese. It is cut into lumps, washed, and put through mills, which roll it into sheets. Finally the sheets of rubber are hung up in sheds to dry. Sometimes they are smoked, to dry them more thoroughly. When perfectly dry, the sheets of rubber are packed in chests which hold about a hundred pounds each, and these chests are carried down to ships and taken all over the world What a number of useful purposes rubber serves! Besides mackintoshes, we have rubber soles and heels on our boots, rubber hot water bags, rubber balls, gloves, cushions, sponges, aprons and hose pipes. Can you think of anything else made of rubber?

The great success of the cocoa and rubber plantations in the hot wet forests is the more wonderful when we know in what dangerous parts of the world they are The damp and heat breed swarms of insects, and give rise to fever germs in the air Crocodiles infest the rivers. Deadly snakes lurk among the ferns and grasses. Wild pigs, elephants, large apes and monkeys, leopards and bats abound Yet in spite of perils, man carries on his work there, and makes use of all the good gifts of Nature he can find, for his own well-being, and for the good of the whole world.

Now look at the globe and find out where the cocoa and rubber trees grow. Run your finger along the west coast of Central Africa, called the Gold Coast That is an easy name to remember Now move your finger along eastwards over the sea to Australia, and look at the islands to the north of Australia. Notice that the equator runs through them Try to find Malaya, Borneo and New Guinea Parts of these lands are in the British Empire, and they are the hot wet forest regions

TEACHING HINTS

1. Forest trees.—In the hot wet forest regions, the lengths of days and nights are fairly equal all the year, and summer and winter temperatures much alike. The rain also is distributed equally throughout the year Consequently the vegetation is enormous. *Mahogany* is a beautiful hard red wood. *Rosewood* when cut yields a perfume like roses *Lignum-vitae* is of a blackish green colour, and is used for rollers, ships' blocks and woods for the game of bowls *Ebony* is very hard and black *Gutta-percha* sap is obtained from the tree when it is felled. It is a greyish, horny substance when hardened, and is used for electric cables *Rattans* are spiny, climbing canes, used in the making of mats and baskets. *Ironwood* is a hard, heavy brown wood. *Camphor-wood* is brownish red, and scented like camphor Camphor crystals and camphor oil are obtained from it. *Cinchona* trees yield quinine from their bark Quinine

is the medicine used in the treatment of fevers There are also many varieties of *palm trees*, among them the *date, oil, sago, coconut, ivory-nut* and *betel-nut*. They usually have straight slender stems, bearing at the top a mass of feather-shaped leaves. Palm oil is obtained from the fruit of the oil palm, and sago from the pith of the sago palm.

2. Forest creatures.—For information on the orang-utan, the armadillo and other forest animals see the section on "General Knowledge" in Volume VI.

3. Plantains and banana trees.—These are really herbs, not trees They grow to a height of twenty feet, but the true stem is very short, and what appears to be a trunk is formed of the bases of the enormous leaves. Each leaf is from eight to ten feet long and one foot wide, with an oblong blade. Thus the leaves are a shade for the cocoa trees planted by them. The banana is thought to have been cultivated from the plantain. It yields one huge cluster of luscious and sustaining fruit on each tree, weighing almost half a hundredweight

4. Acid.—A little acetic acid is added to the rubber juice to hasten solidification. This acid is obtained from wood, and is also found in vinegar When strong, it will blister the skin, and it is useful for removing warts and corns.

5. Chocolate and cocoa firms.—Children should be encouraged to find out the names of the great firms in their country, and where the factories are built. For handwork, artistic designs on bowls and pots can be made from coloured chocolate-papers stuck to the sides.

6. Dyaks.—These are some of the forest people of Borneo They are great collectors of jungle produce, away from their villages months at a time, seeking the many products with which the jungle abounds The Dyak custom of head hunting, no longer practised, was founded on the same principle as that of scalp hunting among the North American Indians A young man found it difficult to obtain a wife until he had at least one head to present.

A Dyak village is a communal establishment. It does not consist of separate huts, but large halls on platforms, upon which the dwelling rooms abut. Wood is the material used for the buildings which are supported on poles sometimes over twenty feet above the ground. Dogs, birds, and monkeys mingle with the people on the platform and in the communal hall

The Dyaks are skilled in the use of poison darts which they eject from a blowpipe The Borneo blowpipes are very skilfully made and used. They are seven or eight feet long, and the users show skill and accurate shooting up to a range of fifty to sixty yards.

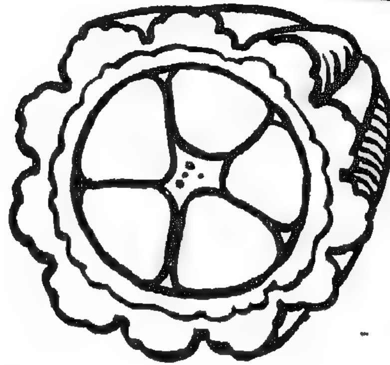
7. Memory work.—(*a*) In the hot wet forests rain falls all the year round. (*b*) Young cocoa plants are protected from the sun by banana trees. (*c*) Cocoa pods grow out of the tree trunks. (*d*) Inside a pod are forty beans. (*e*) Cocoa and chocolate come from the cacao tree. (*f*) The rubber juice is collected in cups. (*g*) Hot wet forests are dangerous.

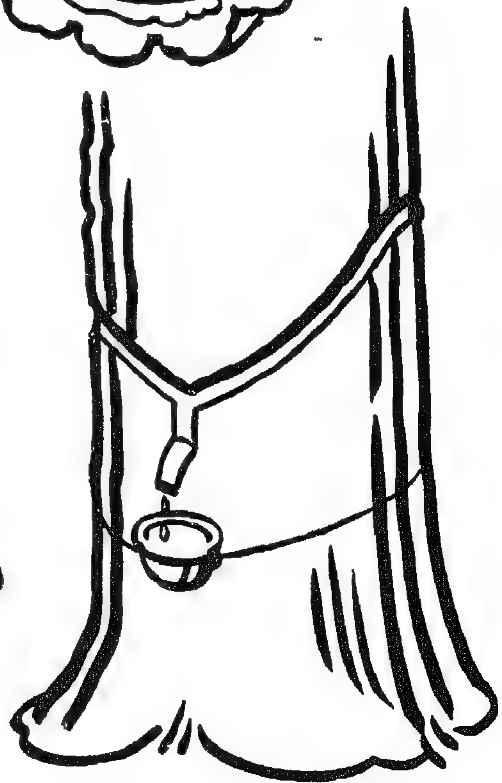
8. Exercises.—(*a*) Of what different uses are the trees in the hot wet forests? (*b*) How is the cacao tree different from the coconut palm? (*c*) What are the colours of cocoa pods? (*d*) Why must the pods be cut from the trees with care? (*e*) What is a cutlass? (*f*) What is done to the cocoa beans before they are shipped to other lands? (*g*) What do we call the fat in the cocoa bean? (*h*) What uses are made of the fat? (*i*) How does rubber come from the tree? (*j*) What creatures live in the hot wet forests? (*k*) Where on the globe would you look for the hot wet forest lands? (*l*) What is done to the juice taken from the rubber tree?

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD









Harvesting Picker and Cutlass
Cocoa Pods

Section of Cocoa Pod
How Rubber is Collected

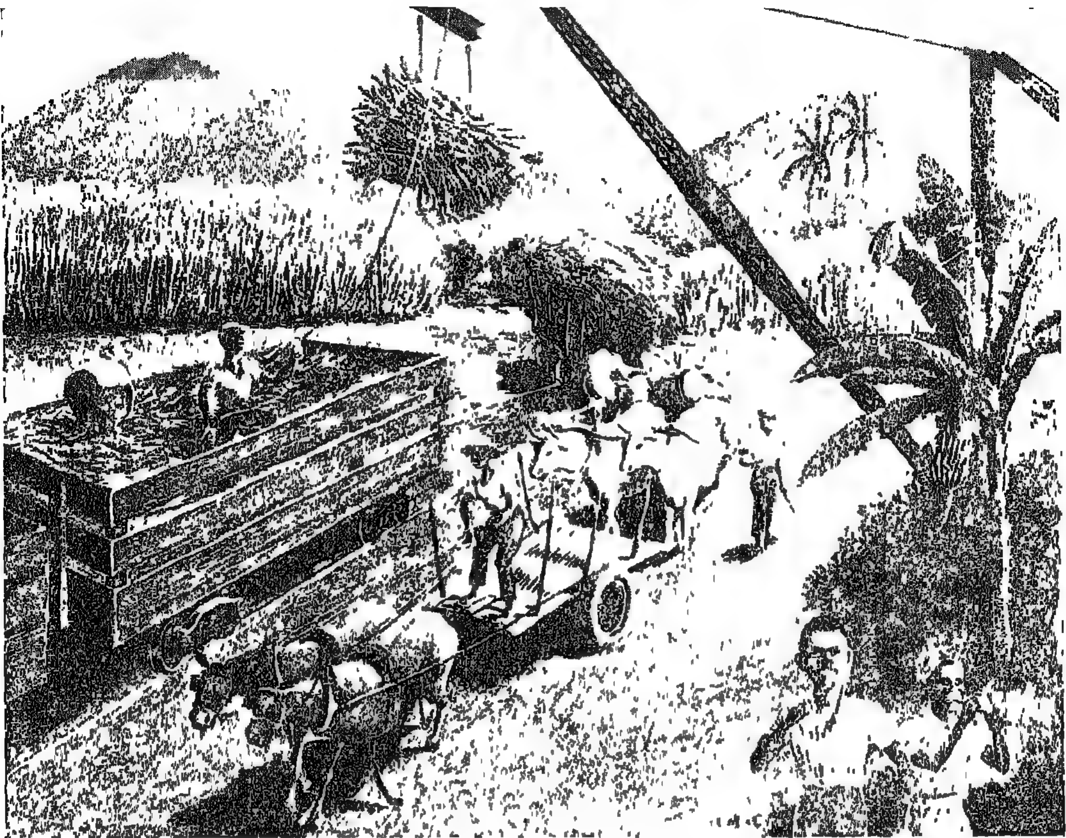
VIII. HOT GRASSLANDS

PICTURE REFERENCE



A SUDAN COTTON FIELD
(Class Picture No 94 in the portfolio)

THE Class Pictures (Nos 94 and 70 in the portfolio) show a Sudan cotton field and the loading of sugar-canes in Jamaica The snowy-looking cotton field is a most attractive sight Near the front of the picture the white patches are seen to be balls of fluffy lint or down, which is inside the bursting fruit of the cotton plant The dark-skinned Sudanese people put handfuls in their bags, and camels carry loads from the plantation to the collecting station across the canal This part of the Sudan must be hot and dry for camels to be employed That is why a canal had to be dug to bring water for the cotton plants. The tall date palms in the distance also grow in dry lands



LOADING SUGAR-CANES IN JAMAICA
(Class Picture No 70 in the portfolio)

The animals in the second picture are mules and oxen, which are able to withstand tropical heat You can tell by the number used which are the stronger They are bringing loads of ripe sugar-canes from the plantation in the distance The carts are made very lightly and have rubber tyres to make pulling easier on the muddy road Notice how the bundles of canes are lifted from the carts and placed in a railway truck. The machine doing the work is called a crane and a man behind the bushes is attending to it When the trucks are full they will be drawn by an engine to the sugar factory, where the sweet juice will be squeezed out of the canes The children in the foreground enjoy chewing a piece of cane immensely ' They have just passed a banana plant growing by the roadside

INTRODUCTION

The hot wet jungle is flanked by a region where the rain is received only during the hottest months of the year. Not only is the rain restricted to a part of the year but the quantity received is smaller than that of the forest belt The change from one region to the other is gradual, and as one passes farther from the equator, so the wet period of the year becomes shorter and the amount of rain less. By gradual changes

the dense jungle gives place to grassland and then to the hot dry desert Temperatures during the hottest months are higher than those at the equator, but there is a wider range of temperature throughout the year. There is also a gradual lengthening of the daylight period during the hottest months, with a consequent shortening of the day during the cooler period of the year.

At El Obeid, in the Anglo-Egyptian Sudan, there is a mean annual rainfall of about 14 in, but of this quantity only about half an inch falls in the six coolest months Farther north, at Khartoum, the rainfall falls to 5 in, and less than half an inch falls during the cool season. Halfa, on the northern boundary of the Anglo-Egyptian Sudan, is a little cooler than Khartoum in the hottest part of the year, but it is practically rainless.

In the tropical grasslands trees are found only near watercourses, where the ground is moist enough for tree growth during the whole year. For this reason the grasslands in Africa are often referred to as "park lands."

The distribution of the tropical grasslands on the globe is simple to realise They bound the Congo forest in the Sudan and Rhodesia. In South America, they are called savannahs, and lie on each side of the Amazon forest In Australia they lie to the south of the forest which fringes the northern shore.

Tropical grass is better suited for cattle than for sheep, and cattle reared for beef are more important than dairy cattle. Irrigation is gradually transforming the tropical grasslands into areas of great production.

The possibilities of development of the park lands can be realised by a glance at the activities of the inhabitants of the Anglo-Egyptian Sudan This region stretches from the southern boundary of Egypt to within 4° of the equator, and lies between the Red Sea and French Equatorial Africa The Sudan is the land of the Blue and White Niles Both these rivers in the Sudan are over 1,000 miles in length, and form the river roads for both passengers and merchandise to the big game country and great forests of the south. Along their banks dwell many types of African peoples. The traveller on the river steamers will see some of the life of primitive Africa, native cities and villages, gaily clad women and tom-tom players

From December to March the climate of the Northern Sudan is delightful During these months the country is at its best and the social season at its height Khartoum, the capital, is a city with a winter season. Near by stands Omdurman, one of the greatest native cities in all Africa. To the south of this town, between the Blue and White Niles, are the largest cotton fields of the Sudan The success which has attended the cultivation of cotton is due to the development of the irrigation schemes in the country. The Sennar dam, completed in July 1925, has a length of one and three quarter miles, and it raises the level of the water of the river fifty feet to enable it to flow into the Gezira Canal. In addition it forms a reservoir extending fifty miles upstream and containing 140,000 million gallons of water From the dam the main irrigation canal runs for thirty-five miles parallel to the Blue Nile, and then divides into a system of smaller canals irrigating a large area in the plain between the Blue and White Niles. In 1927 the irrigated area was increased, and a much greater production of cotton was the result.

Millet, known as *dura*, is an important crop, and is the chief food crop of the country. It also provides the natural drink, *merissa*, a native form of beer The crop is sown in July and is harvested in November It is grown mainly as a rain crop in the wetter parts of the south, but is also grown under irrigation Some is exported for poultry food.

In the drier parts of the north dates are produced in abundance The bulk of the crop is consumed locally but several thousand tons are exported annually to Egypt.

The grasslands of the Sudan support large numbers of cattle, goats and camels The Dinkas, a hardy race forming the largest proportion of the Bahr-el-Gazal population, possess immense herds of cattle, and neglect agriculture In the southern parts of the Sudan there are very large numbers of cattle There is, however, no trade in cattle from the richer southern area The people can support themselves on the products of their own region, and are content with the maintenance of their own herds. The cattle trade of the northern area is remarkable. Animals are marched hundreds of miles to the railway at El Obeid, and are carried over 1,000 miles by rail to the Nile steamers at Halfa, or nearly as far to Port Sudan on the Red Sea route. The meat supply of Egypt is largely obtained from the Sudan, and camels are obtained as well as cattle The eastern Sudan sends about 8,000 camels per annum to Egypt for slaughter for meat. They are marched down by desert routes and take a month or more on the journey

The southern part of the Sudan is the "big game" country In few countries can game hunters pursue their sport under more favourable conditions Elephants, gazelles, lions, leopards, buffaloes and hippos are numerous The Sudan remains one of the chief sources of supply of ivory

As in all tropical countries, much is to be feared from the effects of insect bites Practically all kinds of flying and crawling pests are found in the Sudan, especially ants, centipedes, scorpions, mosquitoes, sand flies and locusts Locusts are particularly dreaded, since they do such tremendous damage to the vegetation Real invasions by locusts occur at intervals Every effort is made by the use of poisoned bran and smoke fires to cope with the swarms, but they appear in such alarming numbers that considerable damage cannot be prevented. Near the Red Sea the camel fly is responsible for a high death-rate among camels. In the swampy districts of the south sleeping sickness is a terrible scourge, and the tsetse fly does great damage to domestic animals making human porterage essential. The tsetse fly is a two-winged, brown and yellow fly, which with its wings closed has much the appearance of a common house fly. One species, of which there are about fifteen, by transmitting germs from animals to men causes sleeping sickness.



HUNTER'S CAMP IN THE "BIG GAME" COUNTRY—AFRICA

CHILDREN'S STORY

COTTON

We have now come to the hot grasslands of our Empire In these lands a season of summer rain is followed by a long spell of hot dry weather. The lands lie farther away from the equator than the hot wet forests, where, you remember, it rains all the year round. In the hot grasslands, rich grass grows in the season of summer rain, but when the dry weather comes the grass gradually becomes poor As the ground grows drier and drier, the grass becomes short and scanty The rivers are not so full of water, and sometimes they begin to dry up Trees will grow only by the deeper watercourses, which can keep their roots moist all the year Where the grass remains good most of the year, great herds of cattle are kept to feed on it

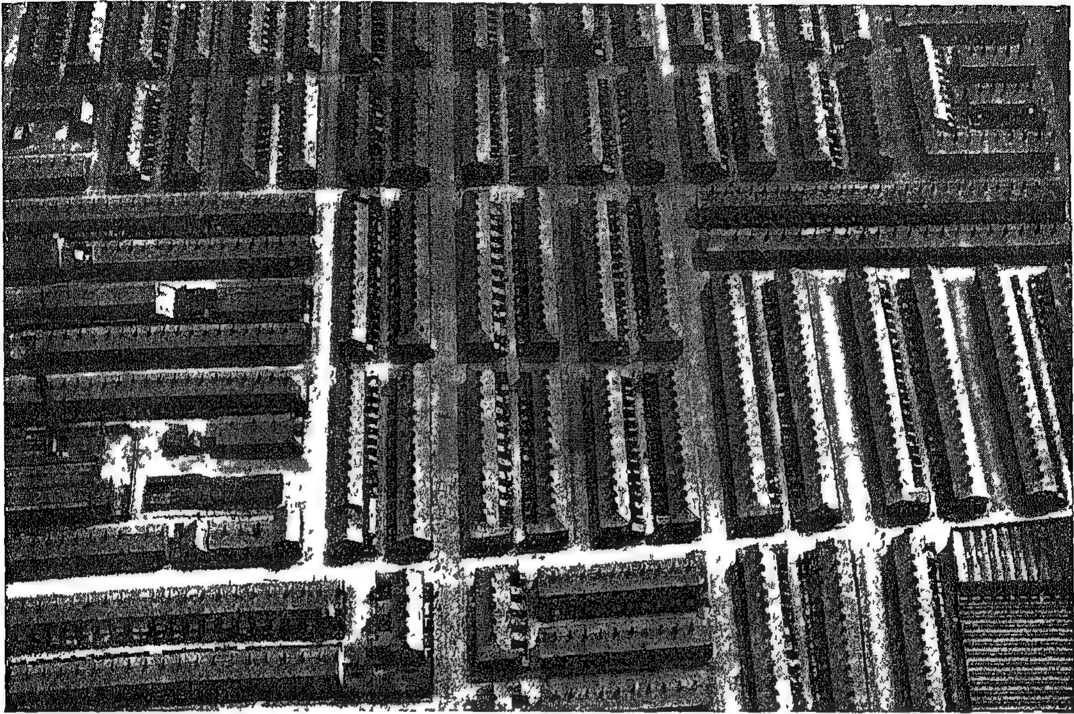
Where the grasslands adjoin the hot wet forests, hundreds of wild animals make their homes. Elephants, gazelles, lions, leopards and buffaloes live there. These creatures are called "big game" Sportsmen come from all parts of the world to shoot the big game, and they try to obtain lion and leopard skins and buffalo horns to take home with them on their return. In the hot grasslands there are thousands of insects, which are great pests Flies worry the cattle, and one kind, called the tsetse fly, makes the animals sicken and die Locusts swoop down on the crops, and eat them all up. Ants, mosquitoes, scorpions and centipedes are found everywhere

Some parts of the hot grasslands have been ploughed and planted with crops, and one plant that grows very well indeed is cotton. The cotton plant is rather like a hollyhock, which is its cousin It needs plenty of rain when growing, and weeks of hot sunshine without any rain after it has come into flower The seed is sown in spring, and after six months' growth the flowers appear. The plant is a bushy shrub with large leaves, and bears flowers which are either red, golden-yellow or creamy in colour, according to their kind In time these flowers give place to green fruits, called *bolls* The bolls split, and inside them are small brown seeds covered with long, white hairs. In the best bolls, the hairs are often two and a half inches long. These hairs are raw cotton, which at this stage is called *lint*.

There are miles of hot grasslands in a part of Africa which belongs to the Empire and is called the Sudan. The cotton field in the picture is in the Sudan. The plants have grown and the fruits ripened, and you can see the cotton pickers now at work gathering the lint. They are black people, who laugh and chatter and sing as they work. When their bags are filled, they are taken by camels to a collecting station from where the cotton goes by lorry to the factory. All around on trees and fences the cotton fluff is hanging, just as straws are seen hanging on English hedges at harvest time

In the factories, the seeds are separated from the lint by a method called *ginning*, and the machine doing the work is called a *cotton gin*. The seeds are then stored ready to be sown again next year. The cotton is made up into bundles called *bales* The bales are put under presses, squeezed as small as possible, and then loaded on trains to be sent down to the coast where steamers are waiting to carry them to many lands.

England buys a great deal of raw cotton, and English factories make the best cotton cloth in the world. The cotton factories have been built near a famous English port called Liverpool. Ships sail into Liverpool harbour and unload their bales of raw cotton. The bales are taken to cotton mills. Here they are unpacked. The dirt is combed out of the raw cotton by a *carding machine*, and each tiny hair is disentangled. The hairs are next twisted together or *spun*, to make strong threads Then the threads are woven backwards and forwards on looms to make cloth Cotton cloth is afterwards dyed many beautiful colours, or printed in pretty patterns, and used to clothe millions and millions of the world's peoples



[*Aerofilms, Ltd*

CONGESTED HOUSES IN A LANCASHIRE MILL TOWN

SUGAR

Another important crop grown in some of the hot grasslands is sugar. The sugar we use at home is of two different kinds, cane sugar and beet sugar. Cane sugar is made from the sugar-cane, a tall grass which is found in hot grasslands Beet sugar is made from the sugar beet, which looks something like a parsnip, and grows in cool countries A notable island with hot grasslands for growing sugar is called Jamaica The sugar-cane is rather like an enormous grass which may grow twenty feet tall and end with a feathery tuft of flowers at the top The plants must have water while growing, so the ground is ploughed at the end of the hot dry season Cuttings from the tops of ripe canes grow into the best plants and these are therefore laid in furrows and lightly buried. The buds in the joints soon spring up, and young plants begin to grow Hard work is needed now in the sugar fields Weeds must be pulled up, signs of blight, or disease, attended to, the ground must be watered if the rainfall is slight, and drained if it is too heavy, and manure must be added to enrich the soil When the canes are well-grown, they are hidden amongst their own leaves, which block up the rows and make it impossible to move about in the fields This tangle of leaves is called *trash* The trash has to be removed It is difficult to clear away by hand, because the leaf blades are so sharp So the workers set fire to it. You would think that the whole crop must be burnt up, so high and fierce are the flames, but they destroy only the trash, and the canes are left standing unharmed.

After trash clearing comes the harvest The canes are reaped with cutlasses. Each cane is cut off close to the ground, and then beheaded. The long, bare pieces of cane are taken to a mill to be crushed, the top

joints are kept for planting, the feathery heads are given to cattle for food Look at the picture and you will see truck loads of sugar-canes about to be taken to the factory The canes are yellow and green, or purple in colour, and some have stripes of all three colours in them. At the factory they are crushed between heavy rollers, and a greenish-yellow liquid flows out, sweet to taste and pleasant to smell This liquid is cane juice, and will later be made into sugar It is strained clean of all dust, and then put through treatment to make it clear and pure The clear juice is next boiled into a thick syrup, and passed through a machine which separates the grains of dry sugar from the sticky syrup. The dry, or raw sugar comes out of one side of the machine, and the golden syrup or treacle flows from the other side. The Jamaicans call the treacle *molasses* It is very rich and sweet. Do you like treacle pudding?

The raw sugar is still rather sticky, and brown in colour It has yet to be made up into all the different kinds of sugar that we use One brown kind is called *Demerara*, because it was first made at Demerara, a county of British Guiana in South America We also have granulated, lump, castor and icing sugar, all of which are white. When the sugar comes over the sea it is all raw sugar, and the lands that buy it have factories in which the raw sugar is changed or *refined* into white sugar. The largest sugar-refining factory in England belongs to Messrs Tate and Lyle, Ltd, in London You have all seen the name TATE on the neat cartons of sugar that mother buys At the Tate and Lyle refinery there are machines which heat and whiten the raw sugar, and then run it into moulds where it hardens into long white slabs Another machine cuts up the slabs into lumps In the Tate and Lyle refinery the sugar is never touched by hand, but is all machine made, so that it is perfectly pure and clean

Beet sugar is made by a machine which slices up the beetroots into small pieces and mixes them with water The sweet juice in the beetroot runs into the water until all the liquid becomes exactly the same as the beet juice itself. The beet juice is then made into sugar just as cane juice is "Which is the better sugar," you ask, "cane or beet?" Cane sugar and beet sugar are equally good Before the juice is made pure, that from the sugar-cane has a pleasant taste and smell, while that from the sugar beet is unpleasant, but when the sugars have been refined, not one person in a million can tell which is which

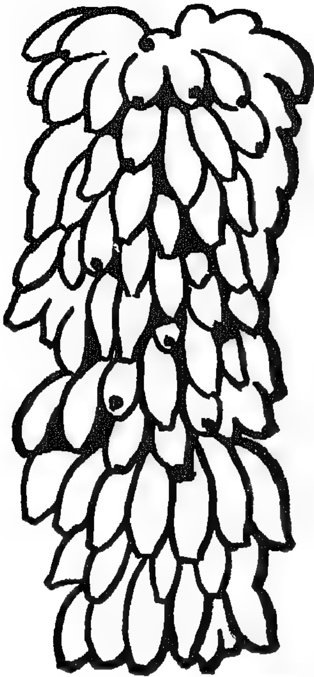
You must now look for the hot grasslands of our Empire on the globe They will all be somewhere near the equator, though farther away than the hot wet forests. Turn to Africa and find the Sudan, where there are cotton plantations. In India, too, you will find them Go on to America and look for Jamaica among the islands near Central America Not far from Jamaica, on the coast of South America, you will see Demerara, where the first Demerara sugar was made In Australia, too, are hot grasslands You will find them in Queensland, on the east coast.

TEACHING HINTS

1. Khartoum.—This noted African city is 1,400 miles distant from Cairo by rail and 1,750 miles by river. It early became an important trading centre. When the Mahdist rebellion broke out, General Gordon was sent in 1884 to evacuate the garrison. He found it impossible, without great loss of life, to do this, and he determined to hold the city against the rebels After a prolonged siege the city was captured and Gordon was slain on the steps of the palace in 1885. The city was reduced to a ruin Lord Kitchener, the conqueror of the Sudan, was largely responsible for the building of the present beautiful city.

2. Omdurman.—This is the chief native city of the Sudan It is a mud built town, except that the Khalifa's house is made with the bricks taken from Gordon's palace

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD









Bananas

African Woman Pounding Mealies

Cotton

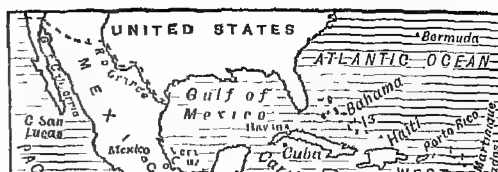
Sugar-Cane

at Khartoum when that city was destroyed. The mud walls which surround the town are from nine to twelve feet thick and vary from eleven to thirty feet in height The *suk*, or bazaar, is the show place of the town There the various wares of the people are for sale The whole suk is clean and without the indescribable odours so common in Eastern cities Nearly every African nationality is represented at the bazaar. Each man takes a pride in showing his handiwork and wares, and gives the visitor the impression that the sale of them is a matter of complete indifference to him Traders from remote districts come to the market with provisions, spices, cloths, weapons, perfumes, ivory carvings and silver work.

3. Tom-tom.—A kind of native drum made generally of a hollow cylinder formed of fibrous wood or earthenware Each end is covered with skin and the drum is beaten with the fingers or the open hand The instrument produces a hollow, monotonous sound.

4. Sudan people.—The Sudan is "the land of the Negroes," but the peoples of the northern part are largely Arab The Negro races show great uniformity of physical characteristics—e g. in being tall and slim, and in possessing a thick crop of black woolly hair. Among many of the Negro peoples it is customary to give agricultural work to the women

5. Jamaica.—This is an island of the West Indies. It is the largest belonging to Great Britain in the Caribbean Sea Agriculture is the staple industry. Over 1,000,000 acres are under cultivation, largely let out in small holdings. Cattle, sheep, goats and pigs are reared Large quantities of bananas, oranges, tobacco, coffee, coconuts and maize are cultivated. Other products are cane sugar, tobacco, yams, arrowroot, nutmegs and lime juice The climate is warm and agreeable Jamaica was dis-



THE WEST INDIES

covered by Columbus in 1494 and settled by the Spaniards It was taken in 1655 by a force sent out by Cromwell, and its possession by Great Britain was confirmed by the treaty of Madrid in 1670 The island is subject to cyclones and hurricanes.

6. Demerara.—River and county of British Guiana Its chief port is Georgetown, the former name of which was Demerara. The colony was originally Dutch.

7. Memory work.—(*a*) The hot grasslands have a wet and a dry season. (*b*) Cattle feed on the rich grass. (*c*) Big game hunters shoot lions (*d*) Cotton bolls are full of fluffy seeds (*e*) Negroes do the cotton picking (*f*) The threads are spun into cloth. (*g*) Sugar is made from the juice of the sugar cane (*h*) The useless leaves are called trash (*i*) When raw sugar has been refined it is white in colour.

8. Exercises.—(*a*) Why are cattle kept in the hot grasslands? (*b*) What wild animals are found in the grasslands? (*c*) What kind of weather does a young cotton plant need? (*d*) What do we call large bundles of cotton? (*e*) What is the name of England's chief cotton port? (*f*) What clothing have you that is made of cotton? (*g*) Describe a sugar-cane (*h*) How is the juice obtained from the sugar-canes? (*i*) What is the Jamaican name for golden syrup? (*j*) What is beet sugar?

IX. HOT DRY LANDS

PICTURE REFERENCE



A CAMEL CARAVAN
(Class Picture No 71 in the portfolio)

THE Class Picture shows a camel caravan transporting dates The camels are travelling over sand, so soft that it shows the mark of every footprint They do not look very good-tempered animals What long legs and long necks they have! Their nostrils are wide to take in air easily Notice the divided upper lip of the front camel, like a rabbit's, and his two-toed feet with their strong nails The whole procession is called a caravan, and this caravan is carrying dates across the desert The drivers are walking close at hand They wear loose robes, and are barefooted The desert rolls away into sand hills in the background, beyond which a line of feathery date palms is growing There must be water near, or the palms could not grow. These and the white walls of a village seen above the sand



GUFAS ON THE TIGRIS

hills show that the place is an oasis from which the caravan has come Do you notice the prickly plant in the corner of the picture? It is a cactus, a plant which will grow in dry land where other plants cannot

The above illustration is interesting to teachers both as presenting an aspect of oasis life and of the lingering ancient civilisation as shown by the basket-like *gufas* made of reeds caulked securely with pitch Innumerable waterways, led from the rivers Tigris and Euphrates of 'Iraq, bring great productivity to an otherwise desert land Although the *gufas* are clumsy craft among the modern traffic now seen on the river, they still ferry melons, dates, bricks and their white donkeys, which are needed for the return journey by land

INTRODUCTION

Reference has been made to the gradual changes which take place in passing through the tropics from the equator towards either pole The whole of the tropical belt is very hot, but summer temperatures are higher near Cancer and Capricorn than at the equator The most remarkable change is in the distribution of the rain The heavy rain at all seasons changes to a distinctly summer rain, and finally an area of drought is reached A belt of hot, almost rainless regions is practically coincident with the tropics of Cancer and Capricorn on the western sides of all land masses, and the hot deserts of the world are found in these belts Along the line of Cancer are the Sahara of Africa, the Arabian and Indian deserts of Asia and the North American deserts. Along the line of Capricorn are the Kalahari desert of Africa, the West Australian deserts and the Atacama desert of South America

This arrangement of hot deserts is largely due to the fact that, in the position in which they lie, the winds are the north-east and the south-east trades These winds blow as off-shore winds on the western sides of

land masses. They blow from land to sea and begin their journey across the oceans as dry winds They can give rain to eastern coasts and eastern slopes of mountains, but they leave western shores dry.

Regions of very high temperature and small rainfall are almost devoid of plant life. A characteristic feature of the hot desert is the presence of large expanses of sand, which is the product of the hard, dry, surface earth. Day temperatures are very high, the surface becomes intensely heated, and the rocks of the surface expand The nights are cold and the chilled rocks contract The continued expansion and contraction break the rocks into small pieces, and ultimately produce the fine material called sand Sand storms of the desert are dreaded The wind sweeps the loose sand from the surface and leaves new hard material to be broken up

Fertile spots occur at places in the desert where underground water is found. These places are called oases, and, in Africa, produce the date palm There is a certain peculiar desert vegetation consisting of plants of a prickly character, often with very thick, fleshy leaves They have the power of storing water in their stems and leaves, and can resist loss by evaporation The cacti, tamarisks and acacias are characteristic desert plants

The lack of vegetation results in a scanty population, and promotes a nomadic life among the few inhabitants. Usually the beast of burden is the camel, which has been fitted by nature to do without supplies of water for long periods of time, and to travel over a loose sandy surface where sand storms often occur Well-known nomads of the Sahara are the Tuaregs, and other Arab peoples On the larger oases trading villages have arisen and through these all the caravans pass At the oases the nomads obtain their water, fruit and cereals to supplement their food supplies

Travelling by caravan dates back to the earliest historic times, and even to-day the camel caravan is still a valuable method of desert transport despite the advance of motor roads and tracked vehicles The Sahara is crossed by a number of routes, which converge on the ports of the Mediterranean Sea and link the Nile valley with Arabia, Palestine and Persia. The southern termini of the routes, notably Timbuktu, Kuka and Kano, were used in very early times, and are still in use to-day

The hot deserts of the world are of little use to man unless they possess underground water or can be made fertile by irrigation. There are. however certain regions of the hot dry lands where great development has taken place, where roads, railways and cities are to be found In western Australia there is one region known as the "golden mile," which now produces four-fifths of all the gold obtained in Australia This rich area has produced, so far, gold worth millions of pounds This large amount gives some idea of the human energy that must have been expended to extract the gold from the rocks in which it is found. The early miners, attracted to the area by rumours of the wonderful wealth to be easily obtained, must have endured severe hardships It was necessary for them to trek over many miles of bad country carrying with them all their supplies and equipment. To-day the gold area contains large towns with fine buildings, good roads, tramways and every modern convenience They are linked to the coast by rail and by huge pipes which convey all the water which is needed Over 4,000 persons are engaged in gold mining, but many more are employed in other occupations which have arisen in the gold area. The output of gold is steadily declining, but the area opened up and developed will continue to prosper when gold mining ceases to be a profitable occupation.

Mesopotamia, now called 'Iraq, is a dry hot area between the Euphrates and Tigris In early days it prospered, since the people used the river water to irrigate their land much in the same way as did the people of Egypt. At a later period wars and inva-

sions led to the destruction of the irrigation canals, and the land became almost desert. To-day great irrigation works, initiated by the British during their trusteeship after the First World War, are restoring fertility to large areas Apart from oil, which is the most valuable export, large amounts of dates, barley, wool and wheat are sent to other countries Cotton is also produced in increasing supplies, while rice is a notable crop of the marshy lower river. The date palm is the chief source of wealth to the river people of 'Iraq, and the fruit is a staple food When picked ripe it has the appearance of a firm ripe plum and is quite different from the common article of commerce An interesting type of boat is used for ferrying across the Tigris This is called the *gufa*, and it is practically a large circular basket made of reeds. Another typical river boat is the *bellum*, a light canoe which can be propelled by paddle or pole according to the depth of the stream Away from the fertile strips bordering the rivers live the wandering Bedouins, "the people of the camel" They are the nobility of 'Iraq's Arab population

CHILDREN'S STORY

The lands we have come to now are the hot dry lands of the British Empire The people of these lands hardly ever see any rain All the year round the weather is dry The winds that blow bring no rain with them at all Consequently the ground is dried up, and nothing will grow on it Such land is called a hot desert The air in the desert is burning hot all day, and very cold at night Because of this great difference between day and night, the ground is first baked and then half-frozen, and everywhere it splits up into fine, dry grains of dust or sand, which is soft to the tread Hot winds blow the sand into hills and valleys, which stretch for miles and miles as far as the eye can see. Here and there in the desert an underground spring of water will bubble up and moisten the land around it for a distance Directly the soil becomes moist, trees spring up, people build small houses around and grow crops Such a fertile spot in the desert is called an oasis

An oasis is a very welcome sight to travellers through the desert You will wonder whether it is possible to live in such lands No, in the actual desert nothing can live, for there is no water People live in the oases, however, and they also travel about the desert from one oasis to another. Such people are Arabs They make their journeys on camels, sleep in tents which are easily put up and taken down, and carry enough water with them for each journey What food do they eat? Look at the picture,



A Bedouin

and notice in the background the line of palm trees They are date palms The fruit from these trees supplies all the desert peoples with food Without the date palm they could not live.

Dates are sweet, reddish-brown fruits with hard stones inside them. They are sold in boxes at the grocers' shops, or can be bought by the pound in a sticky mass. They grow in clusters on the date palms, which spring up around an oasis in the desert The date palm is a tall tree, with large, feather-like leaves and a bark covered with rough scales. Sometimes a single leaf is twelve feet long, more than twice the height of a man! The palms bear sweet-scented white flowers

his flocks and herds before he went to Palestine, used to be under the care of the British. Two great rivers run through it, and without them the land would be a hot desert. The two rivers join before they reach the sea, and at this spot are the largest groves of date palms in the world. The palms yield far more dates than the people can use, so many thousands of tons are sent to other lands, and more than half the dates eaten in Britain come from Basra, the port of 'Iraq

The two rivers flowing through 'Iraq are known as the Tigris and Euphrates From these lovely rivers water can be drawn off to moisten great fields lying around, and so crops can be grown on the hot, dry land. Dates form the largest crop. Other fruits grown are grapes, oranges, lemons, figs, mulberries and melons. Often they are carried on the backs of strong white donkeys The strange boats rowed backwards and forwards on the river Tigris are not seen anywhere else in the world. They are called *gufas*, and are probably the oldest kind of boat now in use. They are round in shape, made of reeds, and plastered inside and out with pitch to make them water-tight People who wish to cross the Tigris are taken over in *gufas*, and from them they sell the fruit. Another boat used on this river is the *bellum*, a light canoe, which is easily paddled from place to place. The buildings on the banks of the Tigris are painted white to keep them as cool as possible, and they all have flat roofs The Arabs who grow crops live in huts made of reeds, and there are also many Turks and Jews in 'Iraq

In olden days 'Iraq was a rich and pleasant country. The water from the two rivers was run off in ditches to water the land for miles around, and splendid crops were raised Then the land was conquered by enemies who cut off the supply of water to the fields, and all the crops died. The land became a hot, sandy desert. At last the British helped the people to build fine waterworks to water the land again. Now we can obtain not only a great supply of dates from Basra, but also cotton, barley and many other crops as well

Now find on the globe the hot dry lands of the British Empire Look at Africa first. There are some in the north and some in the south-west Find the river Nile. The land around the Nile would be hot, dry desert, if it were not for the water that is run off from that river From the Nile, pass along to the east and you will come to 'Iraq with its two rivers Find out which is the Tigris, where the *gufas* are rowed from one bank to the other. Then run your finger east and south to find Australia There is an enormous hot desert there, in the middle and west Water has been run into a small part of it through huge pipes reaching to the west coast, and wherever water can be had, towns have grown up People who live in the hot dry lands of Australia dig amongst the rocks to find gold They could not do this, however, if they were not supplied with water Life in the hot dry lands of the British Empire is never very easy.

TEACHING HINTS

1. Transport routes.—In hot dry regions routes must be determined by wells or other supplies of water Man and beast require fresh water. If transport routes are to be used for the movement of merchandise, the minimum amount of food must be carried in order that the maximum load shall be of commercial value. Water holes, therefore, determine the routes traversed in undeveloped regions Having learnt the position of the water holes, the travellers can find their way by the stars. The fitness of the camel for movement over the sandy desert should be emphasised

2. The camel—important characteristics.—

1. Two toes on each foot, large pad beneath toes for aid in walking on loose sand

2. Dromedary or Arabian camel has one hump Bactrian camel has two humps Reserves of food are in the hump
3. Heavy rail of eyelashes to keep out sand and protect the eyes from the sun
4. Can close nostrils to shut out sand during sand storms
5. The stomach is divided into three compartments, and a store of water can be kept there
6. Camels can travel seventy to eighty miles a day.

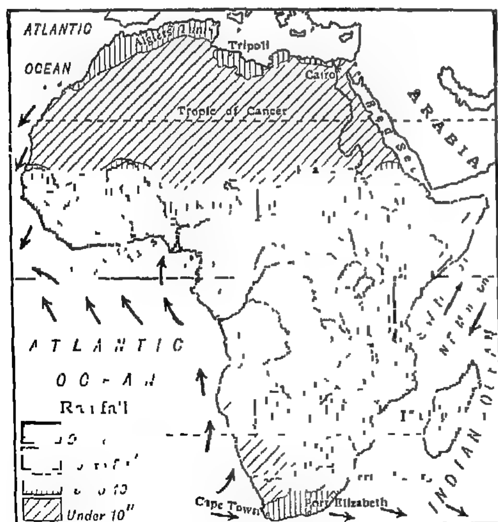
3. Oases.—In many parts of the hot desert underground water may be tapped by sinking wells Where such water is obtained cultivated spots are found The camel caravans crossing the desert pass from one oasis to another The narrow fertile strip bordering the Nile in Egypt is an oasis, but the water which promotes fertility is the Nile water

4. Bellum.—This corresponds in use to the gondola of Venice. It is a long, narrow canoe.

5. Mesopotamia and 'Iraq.—The word Mesopotamia means "between the rivers" 'Iraq forms the south-east part of Mesopotamia, and is sometimes called Lower Mesopotamia. It corresponds with ancient Chaldea and formerly included part of Babylonia During World War I. it was taken from the Turks by the British, who improved the navigability of the Tigris and constructed railways from Basra to Baghdad Population about 2,000,000

6. Memory work.—(*a*) Nothing will grow in the desert because there is no water (*b*) Date palms grow in the oases (*c*) The dates hang in large bunches (*d*) Camels carry bags of dates across the desert (*e*) Dates come from 'Iraq (*f*) *Gufas* sail on the Tigris

7. Exercises.—(*a*) Why are hot deserts sandy? (*b*) What is an oasis? (*c*) Name all the ways in which the date palm is useful to the Arabs (*d*) Tell all you know about a camel. (*e*) How do caravans find their way across the desert? (*f*) From what port in 'Iraq are dates sent to England? (*g*) Describe a *gufa*.



Arrows show the direction of prevailing winds

AFRICA—RAINFALL



AFRICA—VEGETATION

sions led to the destruction of the irrigation canals, and the land became almost desert To-day great irrigation works, initiated by the British during their trusteeship after the First World War, are restoring fertility to large areas Apart from oil, which is the most valuable export, large amounts of dates, barley, wool and wheat are sent to other countries. Cotton is also produced in increasing supplies, while rice is a notable crop of the marshy lower river The date palm is the chief source of wealth to the river people of 'Iraq, and the fruit is a staple food. When picked ripe it has the appearance of a firm ripe plum and is quite different from the common article of commerce An interesting type of boat is used for ferrying across the Tigris This is called the *gufa*, and it is practically a large circular basket made of reeds Another typical river boat is the *bellum*, a light canoe which can be propelled by paddle or pole according to the depth of the stream Away from the fertile strips bordering the rivers live the wandering Bedouins, "the people of the camel" They are the nobility of 'Iraq's Arab population

CHILDREN'S STORY

The lands we have come to now are the hot dry lands of the British Empire The people of these lands hardly ever see any rain All the year round the weather is dry The winds that blow bring no rain with them at all. Consequently the ground is dried up, and nothing will grow on it Such land is called a hot desert The air in the desert is burning hot all day, and very cold at night. Because of this great difference between day and night, the ground is first baked and then half-frozen, and everywhere it splits up into fine, dry grains of dust or sand, which is soft to the tread Hot winds blow the sand into hills and valleys, which stretch for miles and miles as far as the eye can see Here and there in the desert an underground spring of water will bubble up and moisten the land around it for a distance Directly the soil becomes moist, trees spring up, people build small houses around and grow crops. Such a fertile spot in the desert is called an oasis

An oasis is a very welcome sight to travellers through the desert You will wonder whether it is possible to live in such lands No, in the actual desert nothing can live, for there is no water People live in the oases, however, and they also travel about the desert from one oasis to another Such people are Arabs. They make their journeys on camels, sleep in tents which are easily put up and taken down, and carry enough water with them for each journey. What food do they eat? Look at the picture,



A BEDOUIN

and notice in the background the line of palm trees They are date palms The fruit from these trees supplies all the desert peoples with food Without the date palm they could not live.

Dates are sweet, reddish-brown fruits with hard stones inside them They are sold in boxes at the grocers' shops, or can be bought by the pound in a sticky mass They grow in clusters on the date palms, which spring up around an oasis in the desert The date palm is a tall tree, with large, feather-like leaves and a bark covered with rough scales. Sometimes a single leaf is twelve feet long, more than twice the height of a man! The palms bear sweet-scented white flowers

When the blooms fall, little white dates are left behind on long stalks that hang in bunches from the top of each tree trunk Soon the dates turn green, and later they change to a reddish-yellow that deepens as they ripen. The riper they are, the sweeter they become Then they are ready to be gathered

Boys climb the scaly trees, clinging to the bark with their bare toes They cut off the heavy bunches of dates with sharp knives, rather like saws At their approach, dozens of palm rats that eat the dates scamper away over the great leaves, drop down to the ground like furry balls, and run off to hide themselves. The bunches of dates are handed down carefully, for they must not be bruised Then parties of men and women sit on the ground with the bunches before them, picking off the dates and sorting them according to size The fruit is next packed in boxes, or in bags of matting, to be taken on camel-back or in motor lorries to the nearest railway station

Not only the fruit, but all parts of the date palm are useful to the people of the desert A man who owns a few of these trees has all that he needs The fruits can be eaten fresh, or dried, pounded and made into paste which will keep a long time The stones are ground up and mixed with other food for the camels, horses and dogs The wood of the trunk is used in building houses and in making fences and furniture. The broad leaves make excellent thatch for the roofs of the houses The stringy fibres of the leaves are made into cord and rope which is used to tie baggage on the camels, or they are fluffed out into stuffing for saddles, and even twisted into fine thread for sewing During the cold nights, a blazing fire may be made from the stalks of the leaves, and when the trees are cut down, the buds at the top are cooked and eaten like cabbages

Many oasis people could not send away their dates to other countries if it were not for the useful camels which carry them across the desert The camel is the "Ship of the Desert" It can go without water or food much longer than any other animal, because it stores up food in its hump, and water in its stomach It has a hard mouth, and can eat prickly plants that sometimes grow in the sand among the rocks, and it can close its nostrils when a sand storm comes. Its long eyelids shelter its eyes from the sun, and protect them from grains of sand carried by the wind It has large pads under its broad feet, which are suited to walking over sand

The camels in a caravan are fed on dried dates The drivers eat dates, and sometimes cheese made from camels' milk They travel over the desert at night, the men walking by their camels to keep warm, and singing songs as they go They love their camels, and treat them kindly They find their way by the stars, for there are few roads across the desert. In the villages of the oases, the small flat-roofed houses are made of sun-dried bricks of clay, washed with white to keep them cool in the glare of the sun The people sell dates, grow grain, keep sheep and goats on the short grass, and weave cloth from camels' hair, with which they make tents and carpets. You see that where there is water in the desert, the ground is good for crops and grass It is just the lack of water which makes it so bare and useless everywhere else



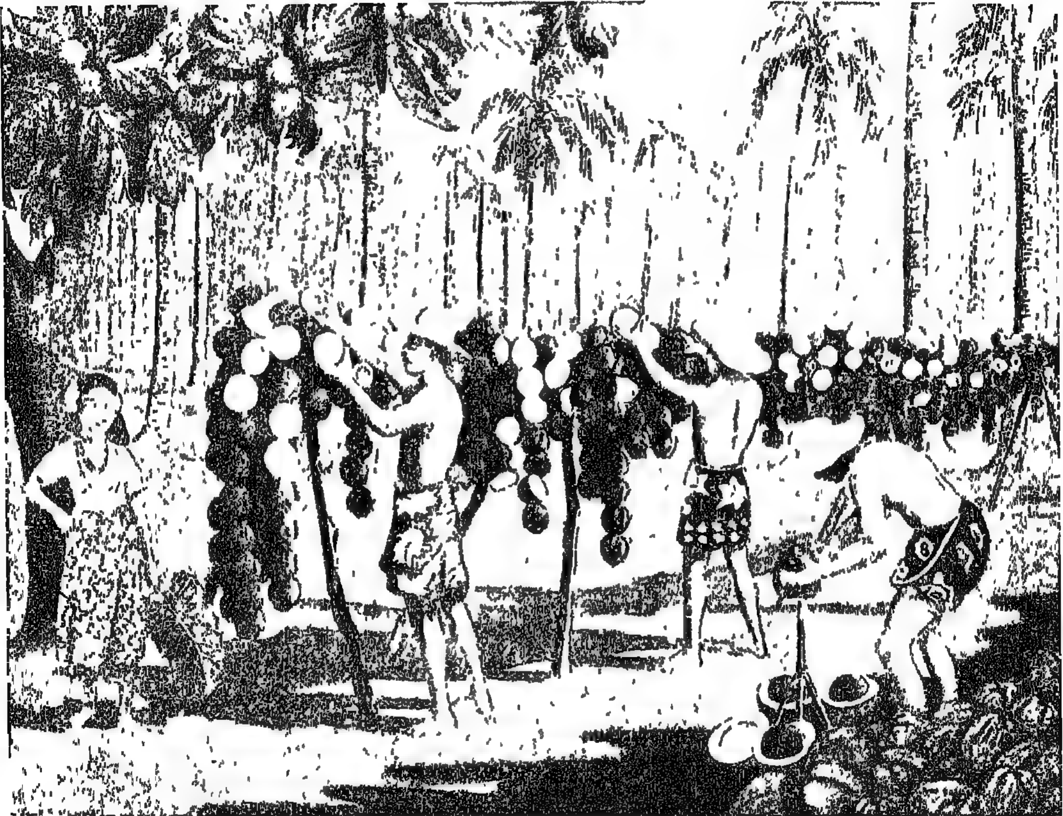
HEAD OF A CAMEL

THE GUFA

On many boxes of dates you see the name 'Iraq This land, where Abraham lived with

X. SUNNY ISLANDS

PICTURE REFERENCE

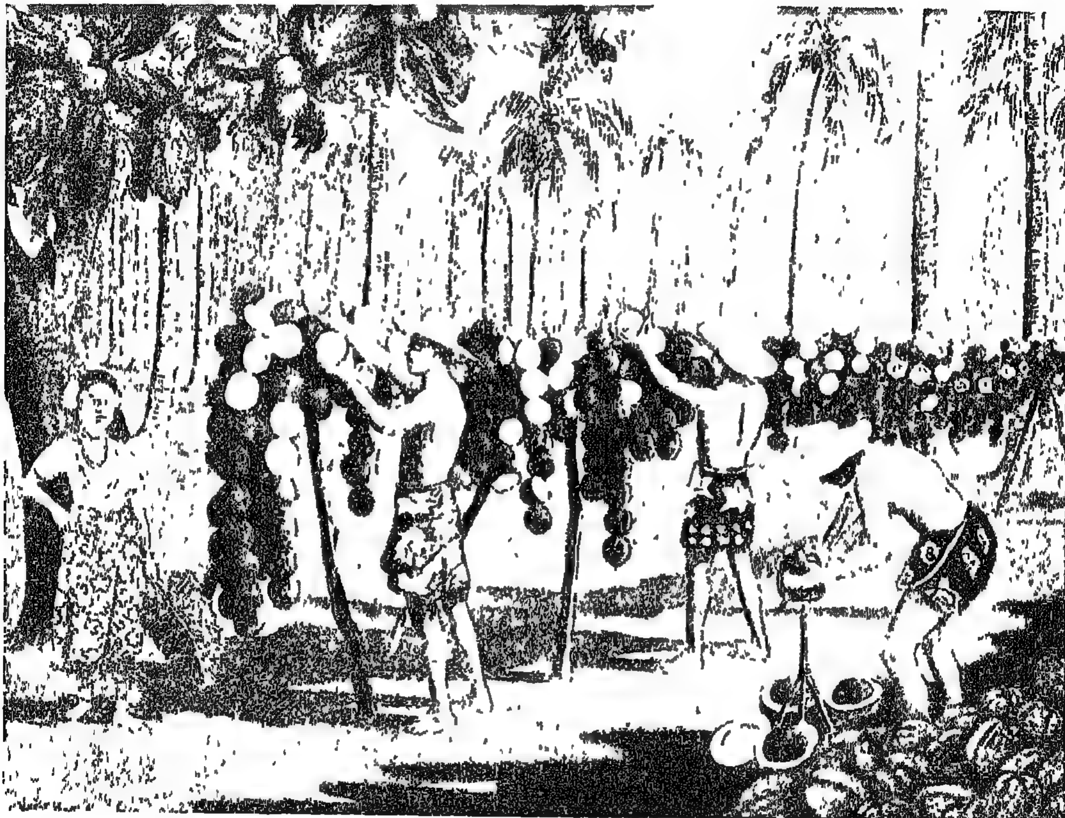


DRYING COPRA IN THE SOUTH SEA ISLANDS
(Class Picture No 72 in the portfolio)

COPRA is the white fleshy lining round the inside of a coconut When coconuts are taken from the trees they have a thick, green overcoat on them The man on the right of the picture is splitting the overcoats off on an iron spike and his friends are hanging up the white parts to dry in the hot sun Notice the shady white hats and the gay waist-cloths the men wear The dainty little lady with the big leaf fan likes gay colours, too, and also bright flowers and necklaces for ornament She is fond of the fruit of the breadfruit seen behind her, when cooked the fruits taste very much like dumplings

X. SUNNY ISLANDS

PICTURE REFERENCE



DRYING COPRA IN THE SOUTH SEA ISLANDS
(Class Picture No 72 in the portfolio)

COPRA is the white fleshy lining round the inside of a coconut When coconuts are taken from the trees they have a thick, green overcoat on them The man on the right of the picture is splitting the overcoats off on an iron spike and his friends are hanging up the white parts to dry in the hot sun Notice the shady white hats and the gay waist-cloths the men wear The dainty little lady with the big leaf fan likes gay colours, too, and also bright flowers and necklaces for ornament She is fond of the fruit of the breadfruit seen behind her, when cooked the fruits taste very much like dumplings

INTRODUCTION

Scattered about the oceans are countless tiny islands, many of which are a thousand miles or more from the nearest land mass Some of these small areas, situated in a world of water, are merely the tops of mountains standing on the ocean bed, others are coral masses, built upon the summits of mountains which do not quite reach the ocean surface The islands are, in the main, either of volcanic or coral formation Often, however, volcanic islands are surrounded by coral reefs

The Pacific Ocean is particularly rich in small islands, many of which are grouped in archipelagoes Some are too small or too rugged to be of service to man, and others are too little above sea level to be inhabited Many of the groups, however, are the homes of interesting peoples. The islands may be divided into two classes, those which are "high," or of volcanic structure, and those which are "low," or of coral formation The New Hebrides, the Fiji Islands, the Samoan group and the Hawaiian Islands are high and volcanic, while the Caroline, Marshall, Cook, Gilbert and Society Islands are low and coral built

The important British colony of Fiji consists of about 250 islands and has a total area equal to that of Wales The islands stretch from 15° to 20° south of the equator, and are on the opposite side of the world to the British Islands The two chief islands are Viti Levu and Vanua Levu These are mountainous (volcanic) and contain large rivers Many of the highest mountains are volcanic cones and hot springs are found Earthquakes often occur. Most of the islands are fringed with a coral reef Suva, the capital, is a port of call for ocean steamers It stands at the head of a large open bay, a coral reef acting as a natural breakwater

Although the islands of the Pacific are very numerous, they nearly all lie in the tropical belt between Cancer and Capricorn Their small size and distance from the large land masses give them common characteristics with regard to climate The moderating influence of the great ocean and the beneficial effect of the prevailing trade winds, mean that they are never so hot as continental areas of the same latitude, and they have an almost uniform temperature throughout the year Drought is unknown, even though some of the islands lie in the latitudes of the hot deserts of the large continents The climate, in most cases, is healthy, and white traders can usually make a permanent home among the native peoples In the main the latter are a peaceable set of people, who have helped greatly in the development of their islands under the influence of white men

The uniform high temperature throughout the year, and the fairly heavy rain, result in a varied and abundant vegetation A distinction must, however, be made between the volcanic islands and those of coral formation The volcanic islands have very fertile soil and are ideal places for sugar-canes, which can be grown only on well-watered tropical coast lands The windward sides of the islands which receive the heavier rainfall are clothed with rich tropical vegetation Low-lying coasts are usually fringed with mangroves The low coral islands have poor soil but they are suited for the production of the coconut palm Coconuts rank first among the products of many of the islands, and copra is often one of the principal exports Before white men came to the islands the people obtained all their food from what the sea and the land could give them. In the low islands coconuts, pandanus fruit and fish were the chief foods, but in the larger islands the taro was the principal food crop of the island inhabitants In some of the islands boiled green bananas formed a part of the diet, supplemented with breadfruit, taro, yams and tapioca To-day the white trader stocks a large assortment of foods and materials for trading purposes, and moreover, under European influence, the island people readily cultivate rice, tobacco, coffee and maize.

Most of the island peoples are expert boatmen and fishermen They had a good knowledge of the seas round their island homes long before the appearance of the white men among them They had their own charts of the ocean around them, and possessed a wonderful sense of direction, often travelling long distances to neighbouring islands without the aid of any instruments for guidance. Often their boats are made out of the trunks of breadfruit trees No nails are used, but all the parts are securely bound together with coconut fibre Sometimes they use rafts contrived from bamboo poles. Dugout canoes fashioned from the trunks of large trees are used for fishing near the coral reefs, and an outrigger made of a light log of timber, fastened to the canoe by crossbars, steadies the boat in surf Cane traps made of split bamboos bound together with plaited rattan vines are used for catching fish. These are about ten feet long and six feet in diameter There is an opening at each end, and these openings converge to a hole in the centre, through which the fish pass but cannot return. These traps are anchored in deep water overnight, and are usually full in the morning

The native huts have a timber framework and sunken low mud walls with a thatched roof of palm leaves Finely woven grass mats, capable of being rolled up, are hung in the gap between the roof and the top of the wall In some of the islands the buildings are most elaborate In parts of the Solomon group it is the custom to build houses at a height of several feet above the ground. The roof is always thatched with palm and pandanus leaves, and supported on a row of posts, but the more careful and artistic structure of the walls distinguishes them from the huts already mentioned Considerable taste is shown in the elaborate colour scheme of dyed and plaited palm leaves comprising the fronts of the buildings

The white population of the Pacific Islands is small The white traders often succumb to the influence of a warm climate and an indolent population, and some of them lose their European smartness and cleanliness. They give cheap forms of manufactured goods in exchange for the products of the islands, for which vessels call periodically. Many have native wives and half-caste children, and in that way become a real part of the region in which they dwell There are now many Indians and Chinese working on the plantations. There is no antipathy between the various peoples, but each set more or less lives its own life Many diseases have



Typical Scene in the South Sea Islands

appeared in the islands due to the influx of outside peoples, and measles, when it first appeared, caused a very high death-rate among the children Whooping cough, similarly, was responsible for an enormous number of deaths Leprosy is destructive in the islands into which it has been introduced



PLAITING PALM FRONDS FOR ROOFING

Flies and mosquitoes are a great nuisance in many of the islands The mosquitoes can be kept under only by spraying all stagnant water with paraffin The river mouths and coastal waters are usually infested with crocodiles. Snakes are abundant, and centipedes over a foot in length are common Beautiful birds and butterflies are a wonderful contrast to the repulsive creatures of the land and water The butterflies are of an enormous size, and the birds, such as pigeons, parrots, parroquets and cockatoos, are brilliantly coloured.

We have seen that the islands are usually very small, and that the groups are scattered over a very large ocean Each little island is producing material that is badly needed in the great industrial countries of the cool regions of the world, but the amount produced in each island is obviously small The total produce of all the islands is, however, quite considerable. It is impossible to create a multitude of well equipped ports capable of dealing with the large ocean liners The cost would be too great and the time taken by a boat to obtain a full cargo too long to be a profitable arrangement The method adopted is for small coasting vessels to collect the produce from the islands and take it to a convenient central point which has been equipped as a modern port. The coaster can be off-shore and receive its cargo from the local canoes and boats The port, at the central position among the islands, can not only accommodate the large ships, but it is able to do any necessary repairs, and is also a coaling station Such ports, which are called *entrepôts*, are Suva, in the Fiji Islands, Apia in the Samoan group, and Honolulu in the Hawaiian Islands They owe their importance to their excellent positions for collecting and distributing material, and their positions on the great trade routes across the oceans.

CHILDREN'S STORY

We now come to the sunny islands of the British Empire They are dotted about the great seas, sometimes a thousand miles away from any large stretch of land. They lie near the equator, and enjoy warm weather all the year round Breezes from the sea bring them rain and prevent the air from becoming too hot Beautiful sandy beaches slope down to the warm waters The brown boys and girls of these islands love the sea, and spend hours playing and swimming in it Canoes glide about on the waves, and deep down in the clear water thousands of prettily-coloured fish dart hither and thither The high islands are made of very hard rock The low, sandy-edged islands are of coral, and were built up by millions of tiny sea creatures whose

soft bodies had a hard framework These little creatures lived tightly packed together, and when they died their hard skeletons left behind formed coral. On these lovely islands grow some of the most useful trees in the world. They are coconut palms

The coconut palm is a tall graceful tree with long leaves divided in a feather-like manner into narrow, glossy strips The flowers grow in spikes, and give place to branches of coconuts, hanging at the top of the trunk They are big fruits, bigger than a man's head After they have been



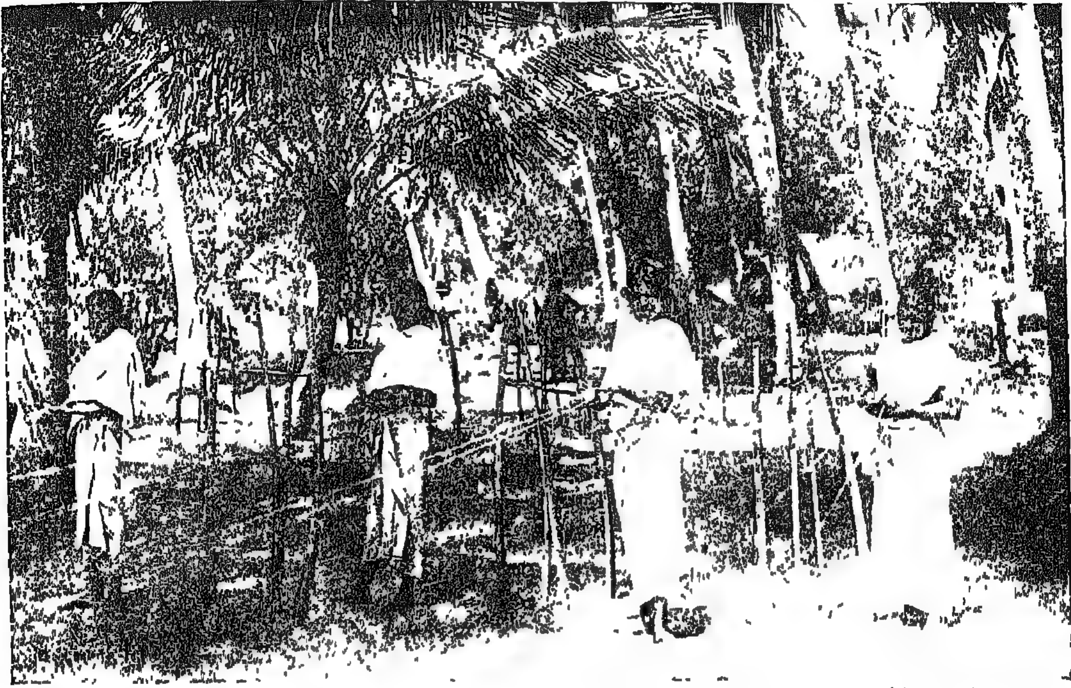
COLLECTING TODDY

gathered, the nuts are split open Each nut is hollow in the centre, which contains the milk for drinking As it dries in the sun, the white fleshy coating inside the shell loosens, and is easily taken out. This eatable part of the coconut is called *copra* The hard shell is left behind, and also the overcoat, two or three inches thick, which covers the shell This overcoat is husky and fibrous, and is called *coir* The coir has a brown skin over it, covering all

When the copra has been taken out of the nuts, it is dried on fences in the sun. You can see this going on in the picture When quite dry, the copra is packed in bags and sent away to other lands, where it is very quickly made use of It is first grated into fine pieces and then squeezed under heavy presses, until the coconut oil runs out of it The crushed part left behind is called *oil cake*, and is given to cattle to eat The coconut oil hardens into a kind of white wax which is very useful indeed The best qualities are used for making margarine and the remainder for making soap and candles. Sometimes the white meat of the coconut is not dried, but taken out of the fresh nuts It is then shredded and made into desiccated coconut, a very wholesome food used in making sweets, biscuits, cakes and puddings

The coconut is not the only useful part of the coconut palm, however Some use is found for every part of this wonderful tree. A drink called *toddy* is made from the sap of the flower head When toddy is boiled it produces brown sugar, and when left to ferment it turns into vinegar Before the young nuts are ripe, they have sweet water instead of milk inside them, and the soft kernels are very refreshing to eat raw The hard shell of the coconut is made into cups and spoons, or carved into jewel cases and ornaments. The thick coir is soaked in water and pressed It then gives fibre for brushes, brooms, matting and rope. The strong mid-ribs of the leaves make blazing fires The branches are woven and used for roofing village homes The hard trunk of the tree is made into houses, furniture, walking sticks and buttons. In fact every part of the tree is useful.

Although the coconut palms grow wild, they are also cultivated in large plantations because they are worth so much money, and are very little trouble to grow. The inhabitants of the islands are peace-loving people, and willingly help the white men in whatever work they wish to do Before white men came to them, they lived on food that the sea and land gave them They had plenty of coconuts and fish Sometimes they cooked the roots or leaves of wild plants and ate them On many of the islands banana



[Courtesy India House

COCONUT TO COIR—SPINNING THE FIBRE INTO YARN

trees grew, and the people ate the ripe fruit, or boiled the bananas when they were young and green. Nowadays white traders carry other kinds of food to the islands, and exchange them for coconuts They have also taught the people how to grow tobacco, coffee and rice

The men are splendid fishermen, and travel for miles over the seas in their little boats They make their boats from the trunks of trees No nails are used, but all the parts are bound together with coconut fibre They make big cane baskets with very small openings at each end for catching fish The fish swim in at the openings but cannot get out again These traps are set in deep water overnight and are usually full in the morning

The island houses have wooden frames Low walls of sun-baked mud are built up around the frameworks, and large gaps are left between the tops of the walls and the roofs. The roofs are made of coconut branches and thatched with palm leaves In the gaps between the walls and roofs grass or coconut fibre mats, beautifully woven, are hung They can be rolled up at will Sometimes the houses are built high up above the ground The mothers dye the palm leaves and mats many bright colours, and make their homes look pretty and gay

Flies and mosquitoes are a nuisance in the islands, and so the pools are sprayed with paraffin, which kills the baby insects Crocodiles abound in the rivers Snakes hide among the grasses. Beautiful birds and butterflies flit over the sunny fields, and some of the birds, such as parrots and cockatoos, are brilliantly coloured The copra and other crops, one of which is sugar, are collected from the islands by small coasting vessels which take their cargoes to one or two large central ports where the big steamers call.

We must now look on the globe for the sunny islands of the British Empire Most of them are found scattered about a great ocean called the Pacific Ocean. Let us start

from the British Isles. Run your finger southwards and then eastwards, until you come to India To the south of India is a large and beautiful island called Ceylon. You remember that tea was grown there. Now you know another crop from Ceylon Large plantations of coconut palms grow there, and every year ships leave Ceylon laden with copra, coconuts in shell, coconut oil, bristle fibre, coir rope and coir door rugs Ceylon is one of the loveliest lands in the world.

Now pass your fingers eastwards and you will soon find the Pacific Ocean. Notice what numbers of islands there are Look for the equator, too, so that you can see how near it is Of all these sunny Pacific islands, one little group is the most important. This group is called the Fiji Islands In Fiji is the central port-of-call where the big steamers stop to take up cargoes from the coasting vessels The name of the port in Fiji is Suva. Steamers leaving Suva bring good things from the sunny islands of the Empire to Britain and to many other lands.

TEACHING HINTS

1. Volcanoes.—Volcanoes are conical hills and mountains formed by erupted matter At the top they have a cup-shaped cavity, called the crater, from which a tube or pipe passes downwards to the hotter part of the earth's interior Volcanoes, at times, discharge steam, lava and solid matter. Material which has collected in the crater during the quiet period is first discharged, then follows steam and finally lava rises up, fills the crater, and usually overflows and runs slowly down the sides of the volcano often doing enormous damage

2. Earthquakes.—Earthquakes are tremblings or shakings of the ground From the centre of disturbance a wave motion of the crust travels in all directions This causes an up and down movement of the surface Earthquakes are common in volcanic areas If earthquakes occur beneath the sea huge destructive waves are formed

3. Entrepôt.—A port in which the imports and exports are practically the same materials. Such a port collects from and distributes to a scattered area in which it holds a good position for such work A large commercial port will sometimes have an entrepôt trade in addition to its other work London imports much material for the country in which it is the largest port, but some of the material is exported to countries of Europe which are unable to do their own carrying trade.

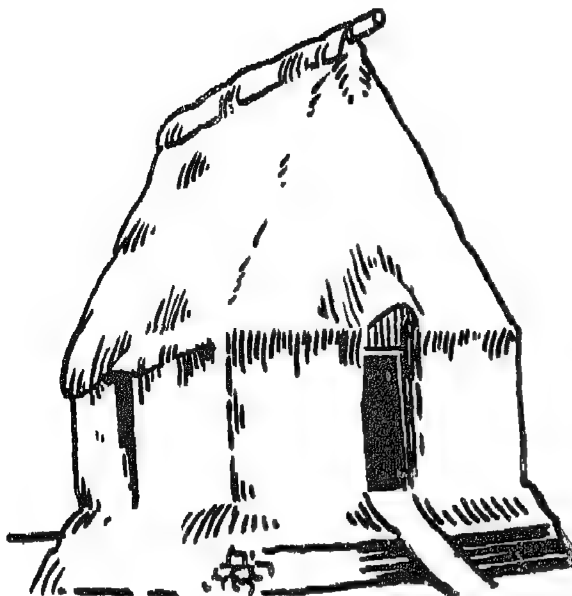
4. Coral.—The coral polyp can live only when the water is warm, salt, clear and shallow. Coral rock is thus found only near the coasts of hot lands and there are always breaks where rivers enter the sea. Rivers carry fresh muddy water which prevents coral activity The polyps construct the stony framework called coral from the lime present in sea water Coral structure falls into three groups—(1) Fringing reefs, (2) Barrier reefs; (3) Atolls

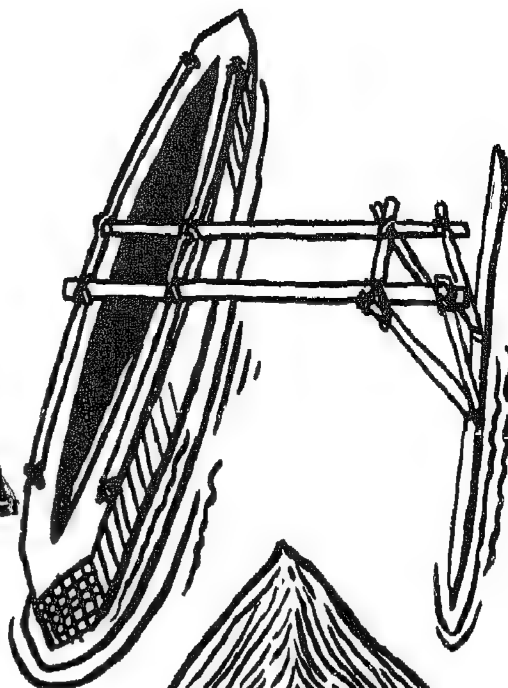
A fringing reef is always close to the shore. A barrier reef is at a greater distance from the shore than a fringing reef An atoll is a ring of coral enclosing a lagoon The largest stretch of coral rock is the Great Barrier Reef off the coast of Queensland, which has a length of about 1,200 miles.

5. Memory work.—(*a*) Many sunny islands are made of coral (*b*) Coconut palms grow in the sand by the sea (*c*) Copra is the name of the white lining inside the shell. (*d*) Margarine is made from coconut oil. (*e*) Large steamers call at Suva.

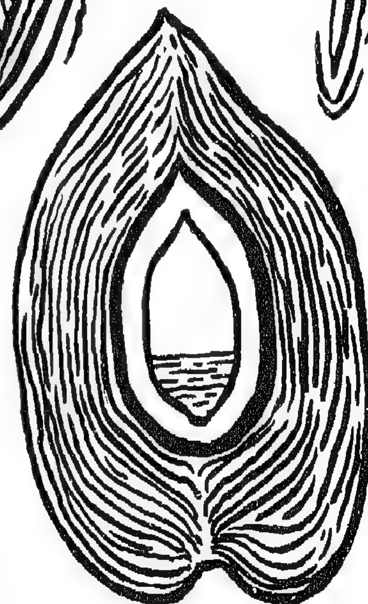
6. Exercises.—(*a*) How are coral islands made? (*b*) Describe a coconut palm (*c*) How does the coconut palm provide the people with food and drink? (*d*) What is done with copra? (*e*) What things are made from coconut oil? (*f*) Where have you seen coconuts? (*g*) Which part of the coconut is the coir? (*h*) How do the people of sunny islands catch fish? (*i*) Describe an island house. (*j*) What things would you like to do in the Sunny Islands?

SKETCHES FOR THE BLACKBOARD







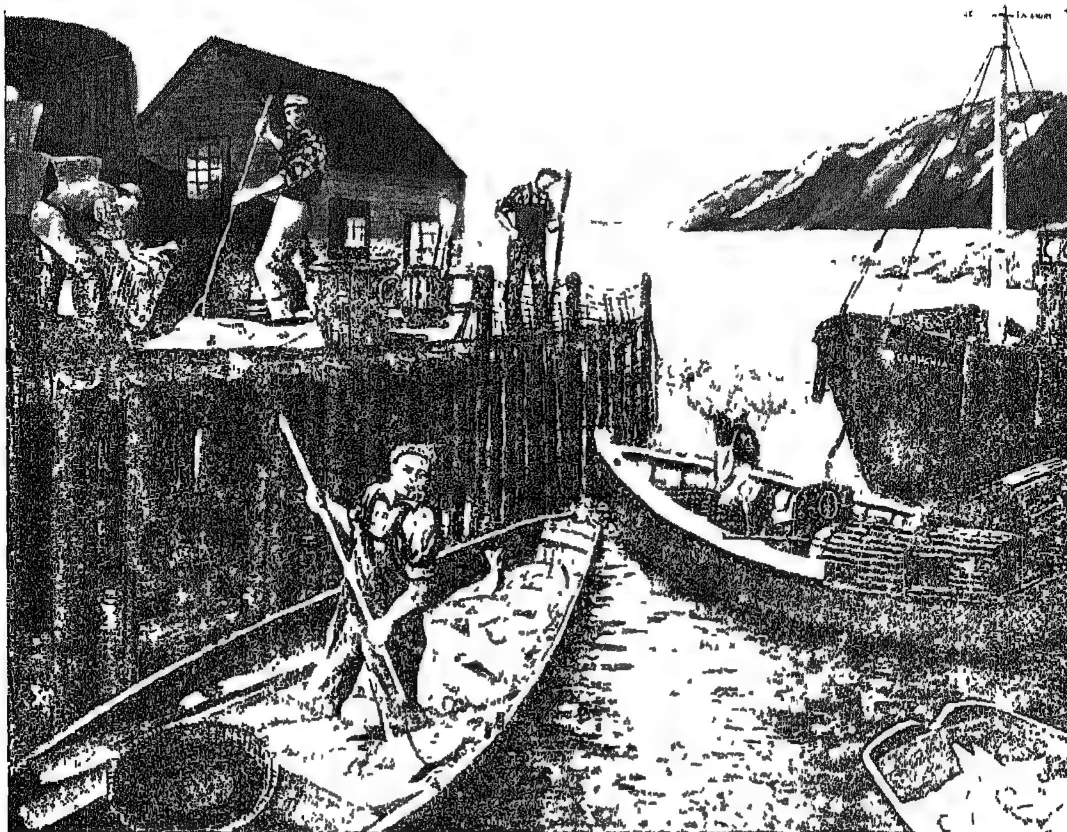


Grass House of Fiji
New Guinea Woman Making a Cook Pot

Outrigger Canoe
Section of a Coconut

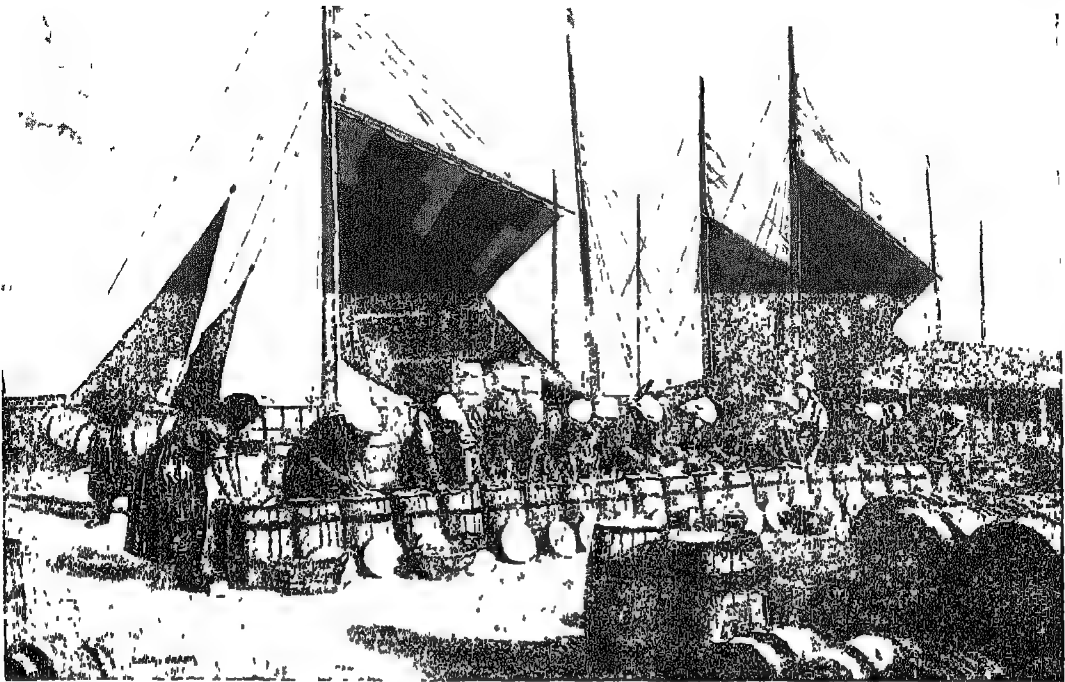
XI. LIFE ON THE SEA

PICTURE REFERENCE



COD FISHING IN NEWFOUNDLAND
(Class Picture No 73 in the portfolio)

MOST British children have tasted cod and have seen the large greenish-grey and white fish at a fishmonger's shop Many cod are caught in the seas round Britain and even more off the coast of Newfoundland The picture shows a strong wooden jetty built from the shore at a Newfoundland fishing village, and a man landing a boatload of cod brought from the large ship He slips the prongs of his fork round the huge heads of the fish and tosses them to the jetty A fishing net is hanging up to dry, but the boatman has probably been fishing with baited hooks attached to the long line in his basket. Do you notice how rocky the shore is? The rocks are very dangerous for ships But lobsters live among the rocks, and in the motor-



[Reproduced by permission of the Controller of H M Stationery Office

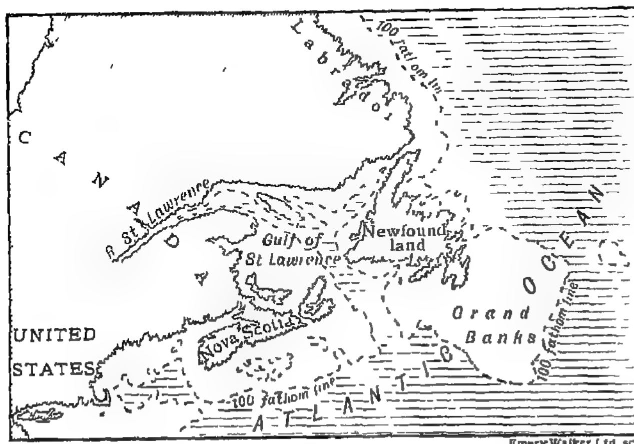
HERRING PACKING

boat are the pots or traps the man sets to catch them He is holding up a fine lobster for his friend to see. On shore the cod will be split and dried in the sun and the lobsters will be put in tins Then both can be sent a long way to other countries without going bad

INTRODUCTION

The three great fishing grounds of the world are those of eastern Canada in the North Atlantic, the North Sea fishing grounds, and those of the North Pacific, near Japan These are the centres of what are called the "deep sea" fisheries, but it should be noticed that, although the men are engaged in their work many miles from land, the fishing is always carried on in shallow parts of the sea The Grand Banks, near Newfoundland, are a shallow part of the Atlantic, and the Dogger Bank, in the middle of the North Sea, is the shallowest part of that sea Fish are always more abundant in shallow water than in the deep sea, because there they find a good supply of their food called *plankton*

The Grand Banks, lying south-east of Newfoundland, have an area of 36,000 square miles which is more than a quarter of the size of the British Islands Fishing vessels from Europe, on the other side of the Atlantic, are to be found there, side by side with those from Canada and the United States The cod fishery is the most extensive in the world, and the greater portion of the population of Newfoundland is engaged in some part of the fisheries On the east coast of England and Scotland, adjacent to the fishing grounds of the North

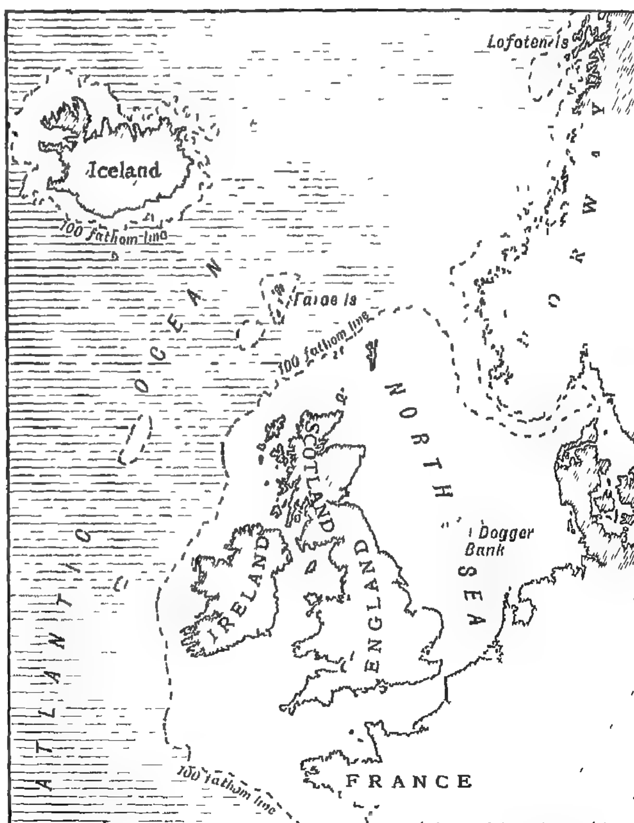


THE GRAND BANKS OF NEWFOUNDLAND

Sea, is a large number of fishing ports facing the Dogger Bank. Similarly, on the European side of the sea, the fishing ports of Norway, Denmark, Holland and Belgium are to be found. Cod is again the chief fish caught, but in both areas hake, halibut, plaice and haddock are also abundant.

Deep sea fishing in the North Sea is done by long liners, steam drifters and trawlers. Long liners obtain fish by hook and line, the drifters catch the surface fish, and the trawlers the fish living in the deeper water. Each type of fishing vessel is comparatively small, and each kind carries a crew of from ten to fourteen people. In addition to the steamships are motorships and a large number of local sailing craft fitted with auxiliary engines. In the Newfoundland area the ships are called bankers, and the small, flat-bottomed boats accompanying the bankers are called dories. The vessels remain at sea sometimes for months at a time. When they return to port, the fish, which have been split and salted on board, are taken ashore, washed and dried. Steam trawling is now carried on to a considerable extent.

The shallow coastal waters of eastern Canada, eastern and southern Britain and western Europe are regions of what are called the inshore fisheries. The herring fishery off the east coast of Britain is important, mackerel are caught in the English Channel, the pilchard fishery flourishes off the coasts of Cornwall and Devon, and the sardine and tunny fisheries are important near the coasts of Spain. The herring fishery is also important off the coast of eastern Canada, particularly in the Bay of Fundy between Nova Scotia and New



MAP OF WESTERN EUROPE SHOWING DOGGER BANK AND HUNDRED FATHOM LINE

Brunswick In British waters the herring fishery starts between the Hebrides and the Shetlands during the spring of the year, and as the year advances the centre of activity moves farther south. The appearance of the shoals makes Peterhead, Aberdeen, Stonehaven, Dundee, Whitby, Grimsby, Yarmouth and Lowestoft each in turn the herring centre, and the herring season ends in October near the south of England The herring fleets, and the Scots fisher lassies employed in cleaning and packing the fish, move southward from port to port as the shoals appear.

River fisheries yield important supplies of salmon, oysters, lobsters, crabs and other shellfish. Salmon is abundant in the rivers of British Columbia, Alaska, Scotland and Norway, at certain seasons of the year, and advantage has been taken of this to develop a large trade in that fish. Colchester and Whitstable, in the Thames estuary, have become renowned for their oysters Lobsters, crabs and other shellfish are caught off the southern coast of England and the eastern coast of Canada An idea of the magnitude of this side of the fishing industry is shown by the fact that 30,000,000 lobsters is a normal catch for a year in eastern Canada.

Fish remain fresh only a few days after catching, and special methods must be adopted to ensure a supply of fresh fish to people living far distant from the fishing grounds The fishing grounds are often a day's journey from the ports, and large towns are frequently many miles inland Fish is usually packed in broken ice immediately it is caught, taken as quickly as possible to port, and then dispatched



[*Courtesy* C N R

Boys Drying Codfish—Gaspe Coast, Quebec

immediately by rail to the centre where it is required Fish markets develop at the fishing ports, which must have good railway communication for the rapid transport of the fish The large population of London is supplied mainly from Billingsgate market, which is situated on the banks of the Thames near London Bridge Many fishing boats bring their catch, preserved in ice, direct to that market

Other methods of preserving fish are by salting, drying, curing or canning Smoked haddocks, and cured herrings, called bloaters and kippers, are to be seen in every fishmonger's shop Salmon, lobsters, pilchards and sardines are usually canned, and can thus be kept fresh for an indefinite time The adoption of scientific methods in developing trade is shown by the present large export of Newfoundland in frozen salmon At first no means could be found of transporting the fish in an edible and marketable condition A few years ago several Newfoundland firms experimented in freezing salmon in cold water. Several months after freezing it was found that the fish had still the appearance of freshly caught salmon and the same delicious flavour. As a result freezing plants have been established at St John's, and thousands of salmon are frozen daily. The shipping companies by equipping their liners with refrigerating holds carry the fish to Europe, and a large export trade is being built up.

Much fish is exported from British ports to those countries of the continent of Europe which are unable to obtain adequate supplies by their own efforts The importance of fish as a food in the Catholic countries of Europe has given rise to a large export trade of salted, dried or cured fish, and the large trade in fish at the ports has developed many industries other than fishing Cleaning, salting, curing and preserving fish give employment to many people other than those actually engaged at sea. The making of boxes and barrels, the building of fishing boats, the making of nets and the preparation of important products from fish waste all create additional employment and make the fishing ports busy industrial centres

Fish waste and those varieties of fish that are not in demand for human consumption are used for the preparation of fish meal and other valuable by-products Fish meal made from cod and other ground fish is an excellent food for cattle and poultry, and is extensively used for that purpose in Europe. Herring meal is seldom used as a food owing to its strong smell, but it is a valuable fertiliser Fish oil and glue are important by-products Cod-liver oil is probably the most important of the fish oils It is extracted from the fresh and healthy livers of the fish by subjecting them to a gentle heat When the oil is obtained it is exposed to a low temperature which solidifies much of the fatty matter, and that fat is then removed by filtration Cod-liver oil is the most easily digested of all fats, possesses high nutritive qualities and has an important medicinal value

The importance of the fishing industry in Canada and Newfoundland must be emphasised The Atlantic fishing grounds, near the St Lawrence mouth, are perhaps the most extensive in the world, and fishing was the first industry to be systematically prosecuted by Europeans The early explorers soon found that cod was very plentiful, and it became a common practice for a crew to anchor in a bay, erect a hut on shore, and make daily excursions to the fishing grounds Salted and dried cod was exported to Europe in those early days Fish provided a much needed food supply for the first settlers in Canada, and, being easily obtained and plentiful, played a great part in the early history of the country. The present great fishing industry makes Eastern Canada hold a somewhat analogous position for fish to that of Western Canada for wheat

CHILDREN'S STORY

In other lessons we have learnt that people who live near fresh or salt water often catch fish for their food. In some parts of the

British Empire, however, such large quantities of fish are caught that they can be sent to other parts of the world where fish is very scarce The flesh of fish is always wholesome food, though some kinds of fish are more satisfying than others What fish do you know? Can you pick out the silvery herrings in a fishmonger's shop? Do you know what cod is like, and salmon, plaice, haddock, mackerel, sole, skate and whiting? If you do not, ask your father or mother or your big sister to show them to you the next time you pass the shop. They have been brought to you through dangers by brave fishermen, whose work in the fishing fleets is rough and hard

Fish do not care to live in very deep water, because they cannot find enough food there They exist in great numbers in shallow waters, where they find tinier fish than themselves to eat baby crabs, water snails, the soft parts of mussels and limpets, and seaweed. This food eaten by fish is called *plankton*. There are two great feeding places for fish in the British Empire One is called the Dogger Bank in the North Sea, near the east coast of England, and the other, called the Grand Banks, lies off Newfoundland, near Canada. You can find these two places on the globe. Notice that the Grand Banks are a shallow part of the Atlantic Ocean All kinds of fish are caught at these two places, but the biggest catch taken from both is *cod*, and off the east coast of Great Britain, from Peterhead, in Scotland, to Yarmouth and Lowestoft, in England, the biggest catch is *herring*.

Deep sea fishing in the North Sea is done mainly in three ways, by long lines, by drift nets, or by trawling The boats that carry lines are called long liners, and they catch fish that can be hooked, such as cod, whiting and haddock The long liners carry a great number of lines At about every three yards a small line with a hook is fixed to the long line, and food or *bait* is placed on the hook. Sometimes 5,000 hooks float just above the sea bottom The boats sail around for three or four days, and then the lines, with the fish hanging from them, are drawn up

Drift nets are huge, deep nets, held up to the surface of the sea by a row of large corks on the tops of the nets, while the bottoms are kept down by weights These nets catch fish that swim near the top of the water The ships drift along with the tide, and so are called drifters Drifters are used chiefly in catching herrings

The trawl net is an enormous bag with an overhanging top, which drags the fish down into the net as it is pulled along by the ship. These nets drag the sea bottom for plaice, sole and skate Trawling is a wasteful way of fishing, because the trawl often catches thousands of young fish which are too small to be of any use for food

Fishing boats are not very large vessels. They carry about a dozen men Most of the fishing fleet are steamships and motorships, though there is also a number of sailing vessels It is hard and heavy work dragging on board the nets laden with fish.

Herrings

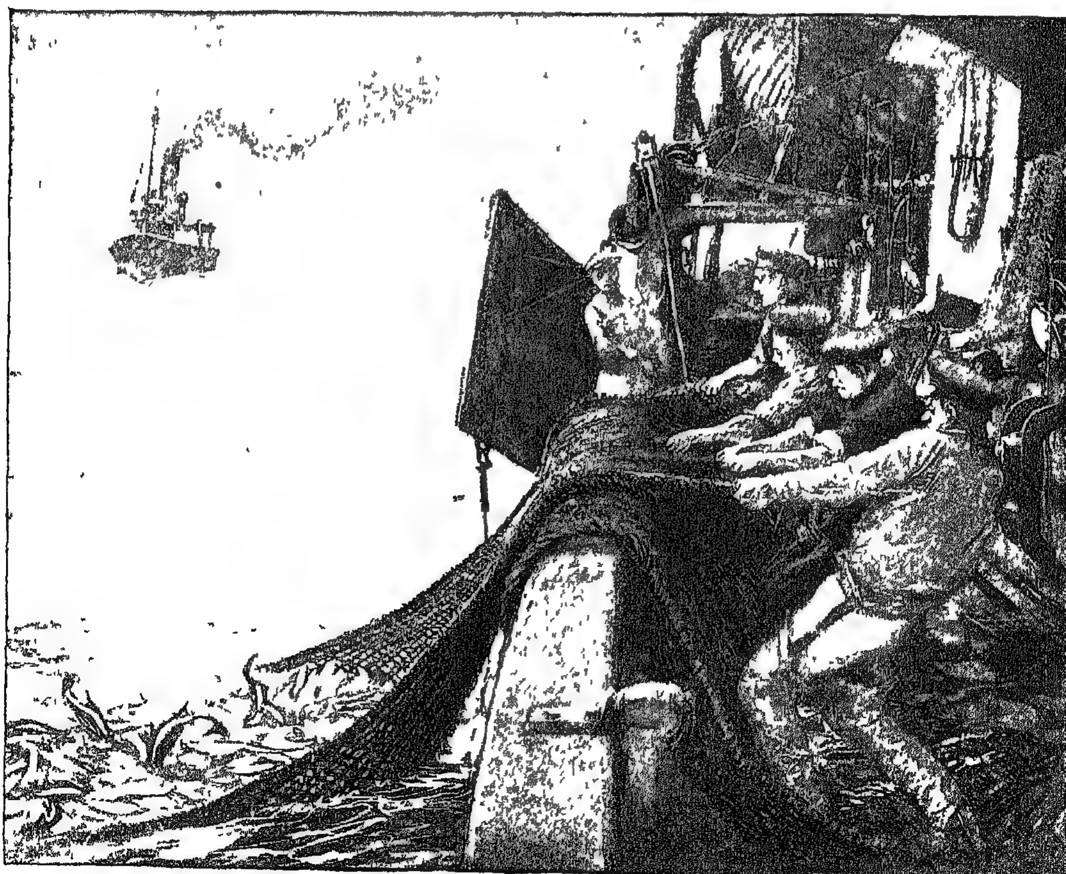
In British waters the herring fishery begins early in spring off the east coast of Scotland The herrings arrive in great masses, called *shoals*, to lay their eggs in the shallow water near the shore The fishermen know that they have come by the flocks of gulls which follow the fish to feed on them As soon as the news arrives that the herrings have come, all is hustle and stir The fishing boats put out to sea, and preparations are made on shore to take in the catch. The drifters sail along with their great nets hanging like heavy lace curtains under the water The herrings swim into the nets and their gills catch in the meshes The gills are close to the heads of the fish, and by moving them backwards and forwards, the herrings are able to take in air and breathe under the sea When their gills are caught, the fish die, because they cannot breathe

When the net is full, it is hauled on board ship, and the catch poured out on deck Back in port, the fish are sorted and piled in heaps on the ground. The large fish are then cleaned by women, who work very quickly, and can clean sixteen in a minute! Salt is then thrown over the fish, and they are carefully packed in layers, with their heads to the sides of the barrels, and salt is also placed between each layer. One barrel of salt is used to *cure* or preserve three barrels of herrings After the barrels have been nailed up eight or ten days, holes are bored in them, and the liquid is drained out Then the barrels of salted herrings are sent away to other lands.

Millions of herrings, however, are still left. Some are packed in ice and sent to market as fresh herrings. Others are threaded on sticks and placed over smoking fires which change them into kippers and bloaters. Others, again, are bottled, tinned, or made into bloater paste. In the meanwhile, more and more herrings appear, the shoals arriving each time farther south, so the fishing fleets and the fisherwomen follow the fish from one port to another.

Cod

You can tell a cod fish in the shop by his very large mouth and the barbel, or tiny strip of flesh hanging like a beard from his chin. He is much larger than a herring, being two or three feet long, and some cod



Hauling in the Trawl

as tall as a man have been caught. Fishing boats, called bankers (because they go to the Grand Banks), catch cod off the coast of Newfoundland Nearly 100,000 men and boys work at the cod fishing, catching the fish chiefly by long lines.

The fish are cleaned as soon as they are caught, and packed in boxes to protect them from the sun and air. As soon as they have been brought ashore, the heads are cut off, and the fish brushed in fresh water and split open They are then pickled in barrels as the herrings are, and two fish make a layer Salt is placed between every layer About half a pound of salt is used to every fish Some of the catch is dried or smoked, and then boxes and barrels of cod fish are sent away to all parts of the world. Cod and herring share the first place in the list of wholesome food fishes. Not only is cod useful for its flesh, but also it gives us cod-liver oil, which is a splendid medicine for children or people in weak health.

Salmon

Most children see tins of salmon and enjoy the tasty red or pink flesh. Sometimes a whole salmon may be seen in a fishmonger's shop, its beautiful blue and silver spotted sides gleaming The full-grown fish are often a good deal larger than cod, many being over five feet in length and fifty pounds in weight

Unlike cod they are caught mostly at the mouths of rivers up which they swim to lay their eggs Baby salmon are hatched far up the river, where the water is shallow and the bed sandy. Then when old enough they travel down the river to the sea, where they live for several years until they become full grown In time they want to return to their first home and every August swim to the river mouths in thousands and thousands This wonderful sight is to be seen chiefly on the west coast of Canada and Alaska. Nets in the form of huge traps are set to catch the fish. Then men go out in boats called scows and with the aid of machinery scoop up the salmon The fish are also caught in Britain, chiefly in the Scottish rivers and lochs and in the rivers Severn and Wye

In the fish shop you will sometimes see shellfish as well as ordinary fish The most important shellfish is the lobster, which is caught off the south coast of England, and off the east coast of Canada. The lobsters caught in Canada are chiefly canned, though nowadays men have learnt to pack fish so cleverly in ice that it will often travel hundreds of miles in as good and fresh condition as it was caught Many ships are now built with freezing rooms in them, where meat and fish will remain good for a very long time

Though so much fish is caught in these parts of the British Empire, we must remember that in many other places men and women know nothing of the sea, and have never seen a fishmonger's shop Those people who are able to get fresh fish are very fortunate, and should buy it, if only to show their gratitude to the brave fishermen who sail in all weathers over the dangerous seas.

TEACHING HINTS

1. Fishing industry.—To make the fishing industry a success, there are three chief requirements.

1. Easy access to water containing an abundance of fish.
2. Possession of boats, nets and other implements.
3. Brave and skilful men.

2. Fish.—Tabulate a list of fish and classify as flat or round: e g

flat fish—plaice, sole, skate
round fish—cod, haddock.

The children might with advantage collect labelled pictures of these Make a list of prepared fish seen in shops—smoked, dried, tinned or otherwise preserved.

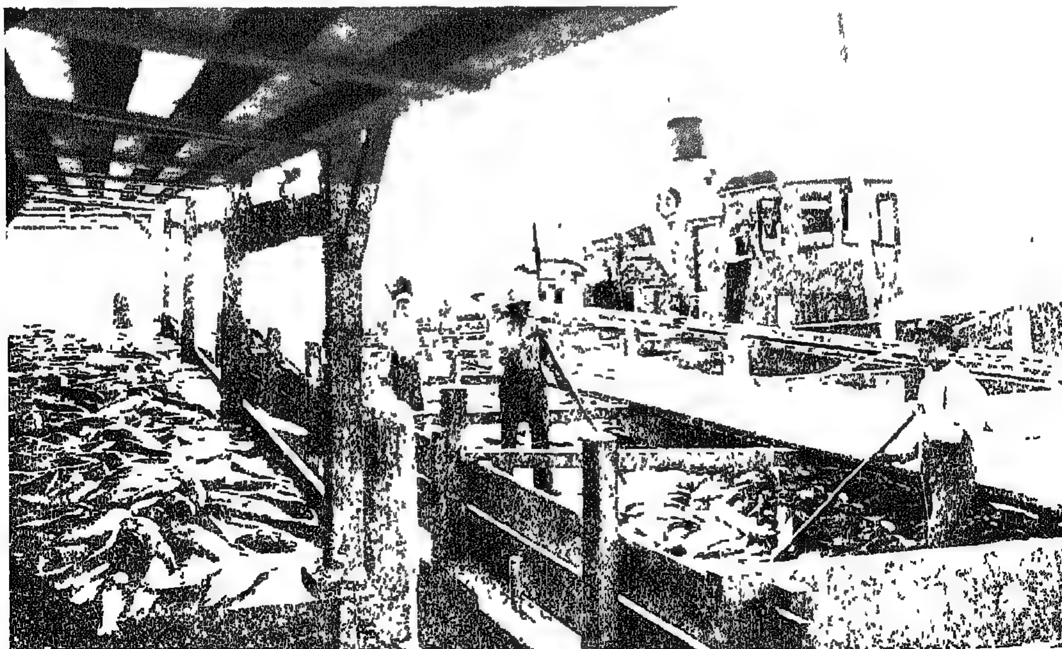
3. Grand Banks of Newfoundland.—This is a submarine plateau of about 500,000 square miles in area, with a depth of from 60 to 1,000 feet Minor shallows, such as St Pierre, Ballard and Greenbank, occur in the same region. The banks swarm with cod fish, and Canadian, American, British and French fishermen visit the area regularly

4. Dogger Bank.—This is a sand bank occupying a position about midway between Yorkshire and Denmark. The average depth is from 60 to 120 feet. The northern part is known as the Great Fisher Bank. Depressions near the sides are called Pits, such as Silver Pit and Sole Pit It is a famous fishing ground, especially for cod

5. Plankton.—This term includes both the small animals which live near the ocean bottom in shallow water and cannot swim against the ocean currents but drift passively with them, and also many plants of simple structure The plankton animals are usually transparent and of delicate structure, and occur in enormous shoals Together with the plants, they form the chief food supply of fish.

6. Herring.—This fish is of the same family as the sprat and pilchard The herring schools swim near the surface of the sea, and constantly move from place to place, following their food They are found in the North Atlantic, but not in the Mediterranean. The average number of eggs laid by the female is 30,000 These hatch in about a month, and the young fish take from two to three years to become adult

7. Cod.—Cod is of the same family as haddock, whiting, ling and hake Its colour and markings vary considerably, and appear to accord with the features of the sea bottom from which the specimens are taken The



[*By courtesy of Canadian Pacific Railway*

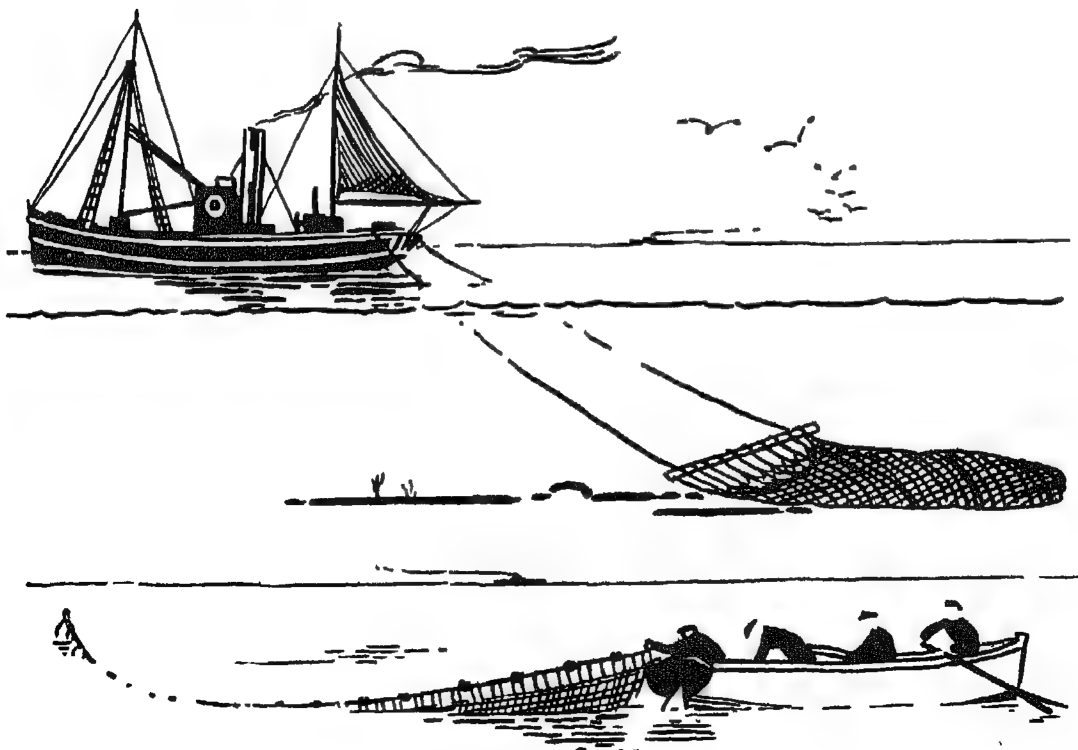
UNLOADING SALMON FROM SCOWS, WESTMINSTER, B C

female lays from three million to nine million eggs a season, but few grow into adult fish In March, the sea is often clouded with dense layers of these floating eggs. The fish mature at the age of four years when they should be two feet long Isinglass is obtained from the swimming-bladder of the cod The heads and offal are dried and used as food for cattle and as land manure The fishery fluctuates from year to year, but in Great Britain alone 96,000 tons of cod have been landed in a year, representing over £1,000,000

8. Memory work.—(*a*) Fish is very good food (*b*) Herrings and cod are placed together first on the list. (*c*) Fishermen are very brave and skilful (*d*) The Dogger Bank is near England and the Grand Banks are near Newfoundland (*e*) Fish are caught by long lines, and in drift nets and trawl nets. (*f*) Cod-liver oil builds up the body

9. Exercises.—(*a*) What fish have you seen in the fishmonger's shop? (*b*) What fish are caught off the Grand Banks? (*c*) Where is the Dogger Bank? (*d*) How are herrings caught? (*e*) What work is done by the fisherwomen? (*f*) What do we call smoked herrings? (*g*) How can you tell a cod? (*h*) What medicine is obtained from cod? (*i*) What is done with lobsters in Canada? (*j*) Why ought we to buy fish?

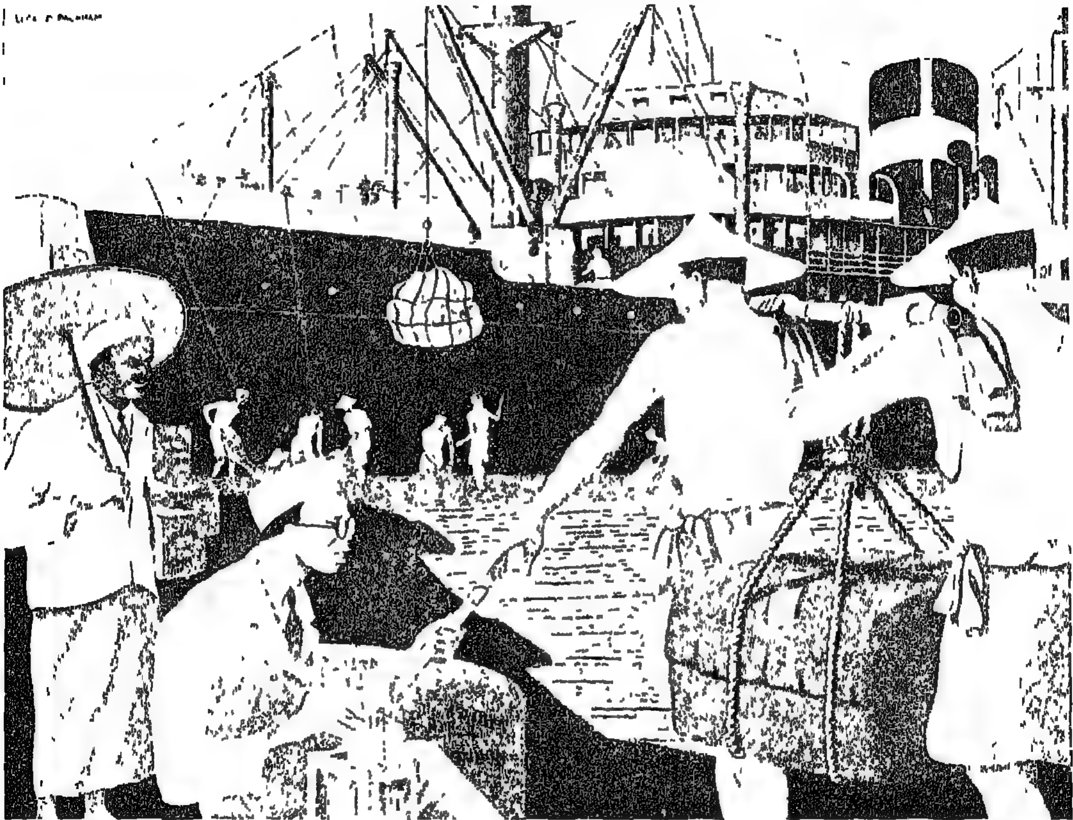
SKETCHES FOR THE BLACKBOARD



STEAM TRAWL   DRIFT NET

XII. MERCHANT SHIPS

PICTURE REFERENCE



AN EASTERN SEAPORT
(Class Picture No 74 in the portfolio)

THE Class Picture shows a dock scene at Penang in Malaya It is in the region of hot wet forests and the people are chiefly Malays, Chinese and Tamils from India. The liner in the background has discharged her passengers and goods and is loading rubber, copra, coir and spices In the front of the picture Chinese porters are bearing a heavy package slung on a bamboo pole, their shady hats and little clothing suggesting the great heat of the region A Chinese clerk checks each bale as it goes to the ship, and nearby is a Malay merchant carrying a sunshade and wearing the customary white jacket and sarong Notice the derrick by which the bales are slung over the ship's side and into the hold When all is aboard and the passengers have arrived the liner will begin her long journey over the ocean.

INTRODUCTION

Routes which traverse only the territory of the British Empire and the sea routes which can be navigated by calling at Empire ports only are known as "All-Red Routes" on account of the colour chosen to mark them on most maps. In order to understand clearly how a very considerable part of the material of the world can be carried along all-red routes it is necessary to realise the great extent of the Empire. The whole of Australasia, with the exception of a few islands in the South Pacific, is a member. In Asia, India, Malaya, Aden and Hong Kong share in it and so does a very large part of Africa, including the Anglo-Egyptian Sudan, the Gulf of Guinea territories, Kenya, Uganda, Rhodesia, and the whole of South Africa The northern half of North America (except Alaska) forms the Dominion of Canada. Gibraltar, Malta and Cyprus are notable dependencies in Europe, and in South America are British Guiana, many of the West Indian Islands and a large number of useful islands in each of the oceans. Thus, member countries and islands of the Empire are found in each of the land masses, and in cold, cool, warm and hot parts of the globe. In whichever direction we travel from home we can soon get into touch with Empire land, and we can obtain the produce resulting from every possible type of climate

The oceans are the connecting link of the widely scattered Empire and they form one continuous stretch of water on the globe A large number of fine ports have been created on the British coasts, and Britain has developed a great manufacturing industry providing abundant material for export

One special requisite is necessary before ships can make their long journeys, and the world's material can be carried along the routes. Ships consume a tremendous amount of coal or oil. In order to economise space and provide the greatest accommodation for cargo and passengers, it is advisable to carry only the smallest possible amount of "bunker" coal. To achieve this end, fuelling stations have been established at frequent intervals along each of the great routes, where ships can quickly fill their bunkers and tanks

Gibraltar is at the narrow entrance to the Mediterranean Sea and must be passed by all ships entering or leaving that sea Malta is the halfway house between Gibraltar and the Suez Canal Suez and Port Said are at the entrances to the Suez Canal, and Aden commands the entrance to the Red Sea Similarly, as the ocean highways are studied, it will be found that fuelling stations can conveniently be established in British territory at the best points on all the routes Unfortunately most of the best sites are without coal of their own and they rarely have coal fields near them. They are stocked, usually, with coal from the British coal field in South Wales, which possesses large quantities of hard steam coal Tramp steamers carry the coal as far east as Singapore and return home with whatever cargo they can obtain The Australian coal field in New South Wales exports coal to many coaling stations in the southern hemisphere.

The steamers of the ocean fall into two distinct classes—the tramps and the liners The tramps are built wholly for cargo, and the liners mainly for passengers. The bulk of the world's material is carried on tramps, which are ready to go to any port where a cargo can be obtained The liners are the largest, fastest and most luxurious vessels on the seas They cater for passengers chiefly, but cargo is also carried.

A large number of ships engaged in commerce make very short journeys, travelling only along the coast of a country, or from one land to a near neighbour These are called coasters, and in the island groups of the world they are of the greatest importance They gather the produce of the small islands and take it to a convenient point that can be developed as a port for the ocean traders. The number of sailing ships on the ocean to-day is very small

CHILDREN'S STORY

We have learnt now of the many wonderful crops grown in the Commonwealth and other parts of the Empire to provide food, drink and articles of everyday use for us What should we do without them? Supposing we could get no tea, coffee or cocoa; no wheat for bread, no beef or mutton for dinner; no wool or cotton for clothing, no wood for our houses; no oranges, grapes, currants or raisins! We should be without protection from rain and cold, without sufficient food, and we should soon die We have to thank all the varied peoples in our Empire for the good things they grow for us, we have to thank the brave white men and women who venture into dangerous, unhealthy lands to sell our own goods and seek others in return; and we have to thank the captains and crews of the ships that sail backwards and forwards over the wide seas, bringing us and the rest of the world in touch with each other, and making one great Empire out of many separate parts

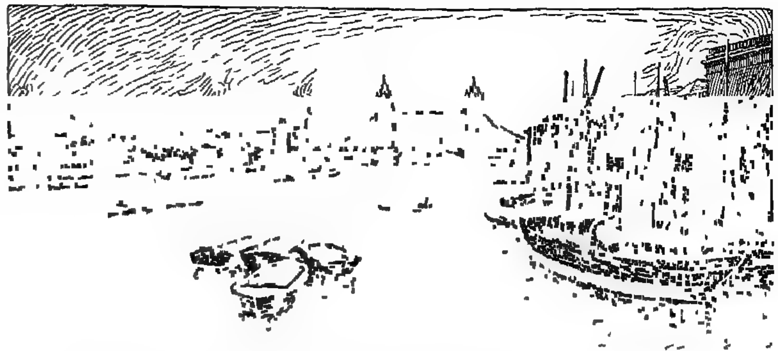
Now supposing there was no tea at home and mother could not wait for her new supply, what would she do? She would say, "Edith, will you run along to the grocer and ask him if you may have our tea?" So Edith would fetch the tea for her mother How does the grocer get it? It is brought to him in a motor van belonging to a firm that sells tea to thousands of grocers' shops in many towns Or it may come to the railway station, from where he would fetch it in his own van. How do the large firms of tea merchants obtain it? They have to send lorries to the great docks of one of our seaports The steamships have brought the boxes of tea over the ocean and unloaded them at the docks of a British port

Standing in the docks are large warehouses, in which the tea chests are stored as soon as they arrive Merchants come to these warehouses to buy as much tea as they want, and then send it away on their vans to the grocers' shops where mother is able to make her purchases

There are three very large ports in England where the big ships call regularly and unload their cargoes. These are London, Liverpool and Southampton London is the largest of all It is the greatest port in the world The London docks stretch for miles along by the river Thames, and in the warehouses at the back of the docks almost everything you can think of is stored neatly away, ready for sale when the merchants require it. There are great rooms full of coffee Other rooms are stacked high with bales of camels' hair and sheep's wool There is a warehouse for sugar, another for rubber, another for fruits of every kind, another for wheat, and so on. Underneath the warehouses run enormous cellars or vaults, where great casks of wine from Cyprus, South Africa and Australia are stored The cellars are dark and cool, and fat spiders spin their cobwebs over the wine barrels All great ports must have warehouses. In Liverpool, many of the warehouses are full of bales of cotton

You know that if you want sugar, you must go to the grocer's shop for it If you want a reel of cotton, you must go to the draper's shop In the towns, however, there is generally one district which contains stalls selling all sorts of goods, side by side. You have only to take three steps from the grocery to be at the drapery stall, and three more to the meat or china or fruit stall, and so on A place where all kinds of goods are brought to be sold is called a market In the country, farmers take their home-made butter to the market for sale, or send their sheep and cows. All people who make or grow things to sell can take them along to the market There they sell them to people who cannot make or grow these things themselves We call London the market of the world Every land in the Empire sends goods to the market of London, and the merchants who come to buy them speak not only in English, but also in many strange tongues unknown to most Englishmen.

How do all the Empire's cargoes arrive safely in London? Well, supposing you lived in the country and wished to visit your aunt in the town, you would have to walk to the railway station and take a train Or you might catch a 'bus going that way The 'bus and train will both go in the same direction, along special roads which lead from the country into the town London, Liverpool and Southampton have many roads leading to them, but they are not all land roads. Some of them are water roads Steamships carrying cargoes to London have to find their way over the great seas, and the captains know their road as surely as the 'bus driver or the engine driver knows his



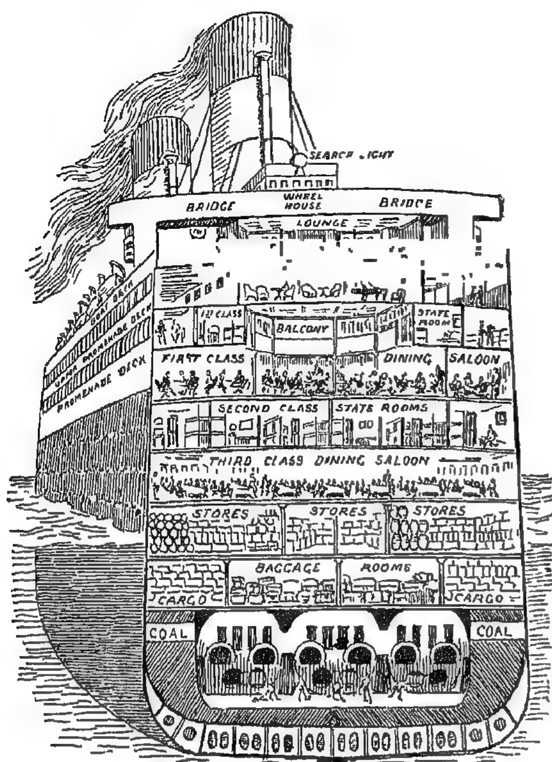
THE THAMES, SHOWING THE TOWER BRIDGE IN THE DISTANCE

There are very few sailing ships to-day on the ocean Most vessels which go on long journeys no longer depend on the wind, but are driven by engines which use either coal or oil fuel The ships fall chiefly into three classes There are *coasters*, which make only short journeys along the coasts of different countries, sailing from one port to another. These are very useful in the sunny islands, because they collect the copra, coir and sugar from the islands, and take them to one central port where the large steamships call. The coasters also carry cotton goods and tinned foods to the people of the islands There are also *tramp* steamers These are built specially for cargo, and most of the world's produce is carried by them over the ocean They go to any port where a cargo can be obtained The third kind of steamship is the *liner*. They are the largest, fastest and most comfortable vessels on the seas, and carry both passengers and cargo The ship in the picture is a liner which has called at Penang in Malaya, for passengers and goods It is collecting a cargo of rubber, copra, coir and tin

How will the captain of the liner find his way back to London? Do you remember the caravans in the desert? They travel from oasis to oasis, and find their way over that sandy sea by the stars The captain of this liner carries a wonderful instrument called a compass, whose needle, which resembles the hand of a clock, always points to the north By this he steers his way over the deep. On his road home he will call at Ceylon for tea and more copra, at a town in India for rice, cotton and tea, and at Cyprus for locust beans, raisins, currants and fruit.

A modern liner has been called a floating palace. The cabins are beautifully furnished, the decks are wide enough for a game of tennis and there is a swimming bath on board The *Cunard* was the first line of steamers founded to sail across the Atlantic Ocean, but now there are many famous lines Some of the crews of the large liners number over eight hundred, and the ships have seven, eight or nine decks

Such enormous vessels use up a tremendous supply of fuel on their long voyages. They cannot carry enough to last them the whole way, so they stop at certain places on their routes to take in more These are called fuelling stations. Special ships carry great cargoes of coal or oil to the stations, so that there is always plenty to be had The coal used is taken chiefly from Wales, and is called hard steam coal It burns with very little smoke. Australia sends coal to the



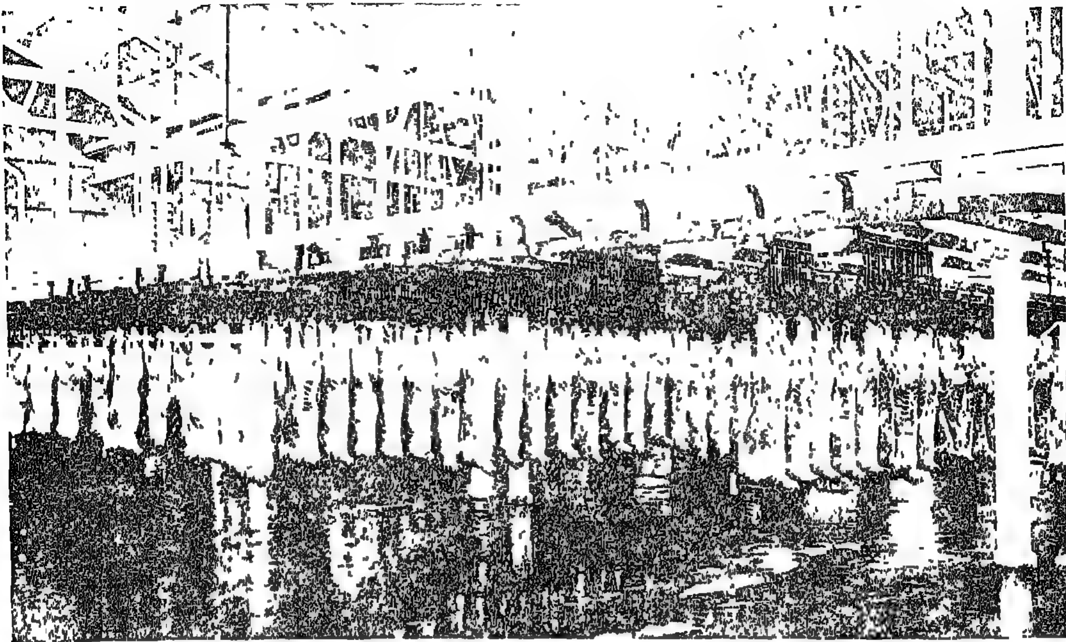
SECTION OF A LINER

fuelling stations south of the equator. Besides fuel, the stations have shipyards, where ships can be repaired if they have been damaged by heavy seas or fierce gales. At all dangerous parts of the coast brave men are on duty in lonely lighthouses, which flash warning signals to ships coming in too near to the rocks.

What cargoes, then, do the tramps and liners carry over the seas? The British Empire stretches from pole to pole. As the earth moves round, there is always some land in the Empire turning towards the sun. When the countries north of the equator have had their summer, the warm season begins anew in the countries to the south, so that there are always two harvests to come in every year. Thus the cargoes carried by British ships include almost everything in the world From Canada in the west come stores of wheat, fish, furs and timber. Ships sail away from Liverpool, cross the Atlantic Ocean in a week, and unload at the Canadian port of Halifax their cotton and woollen goods, their ploughs, motor tractors and lorries made in England and needed in the wheat fields of Canada. Then they take in a new cargo of Canadian goods at Halifax, and away home they come again, to stack the warehouses of Liverpool or London with fresh supplies of furs and canned fish and meat, which are very quickly swallowed up by the English markets Other ships sail away to Australia and New Zealand Six weeks the voyage takes them. They carry out manufactured goods—clothes and machinery—just as they do to Canada, for British manufactured goods are wanted everywhere They return from Australia and New Zealand with supplies of wool, chilled meat (Canterbury lamb) and fruits, both canned and fresh. Other ships again go to the East, to Singapore and Penang, and gather up stores of tea, rice, rubber and copra, as we have already seen from the picture.

Now turn to the globe, and follow with your finger the busiest sea road in the world It is one of the British Empire roads Find *London* first, and travel south to *Gibraltar*, the first fuelling station. Go through the straits of Gibraltar eastwards to *Malta*, the second fuelling station. Leaving Cyprus to the east, run your finger down the Red Sea to *Aden*, and eastwards again over the water to *Bombay* in India From Bombay move southwards to *Colombo* in Ceylon, and from Colombo to *Penang* The steamship in the picture followed this course, a distance of over 9,000 miles, and now you know where she may call on her way back to London. The seas do not separate, they join all the different lands of the Empire, and on these great free highways British ships move to and fro—

"Swift shuttles of an Empire's loom that weave us, main to main"



[Courtesy High Commissioner for New Zealand

MEAT IN COLD STORE—NEW ZEALAND

TEACHING HINTS

1. Seaports.—In all great ports, the pathway of ships to the port in the shallow waters is clearly marked Lighthouses, lightships and buoys are all there. The port itself is furnished with docks, warehouses, cranes, engineering shops, coal, telegraph apparatus, and other necessities for the equipment of a ship and the distribution of its cargo

2. The Empire.—The sun never sets on the Empire Noon travels westwards on the earth's surface, moving over 15° of longitude each hour. Thus when it is noon at Greenwich it is 2 p.m at Durban, 6 p m. at Calcutta, 8 p m near Albany in Australia and about 10 p m at Melbourne At the same time it is 8 a m in British Guiana, 6 a m at the western end of Lake Superior in Canada, 4 a m in the West of British Columbia and midnight in the Fiji Islands Yet the great extent of the Empire from east to west is perhaps of minor importance compared with its extent from north to south The great range of latitude over which it extends means that every variety of climate and production can be found The following gives some idea of distances·

Southampton to Melbourne via Suez—	12,560	miles
Southampton to Melbourne via Cape of Good Hope—	13,610	,,
Southampton to Cape Town—	6,900	,,
Liverpool to Montreal—	3,420	,,
Vancouver to Sidney—	7,900	,,
Australia to New Zealand—	1,420	,,
Southampton to Bombay—	7,030	,,
Southampton to Singapore—	9,350	,,
Southampton to Gibraltar—	1,320	,,

A fast boat travels about twenty miles an hour, and it takes about forty days to reach Melbourne, and twenty days for the journey to Bombay

3. Sailing ships.—The path of a sailing ship is longer than that of a steamer travelling between the same two ports, but it is the path taking the least time possible for the sailing ship The trade winds of the tropics, the westerly winds of the temperate zone, and the monsoon winds of the Indian Ocean are of great advantage to sailing ships The outward and homeward journeys cannot be the same The winds which would help on the way out would be against the ship on the homeward journey. The steamer takes the same path on each journey. A sailing ship in travelling from London to Cape Town would cross the Atlantic to the coast of Brazil, and then, when well south, would cross again to Africa On the return journey it would cross the Atlantic from Africa to near the West Indies, and then, when well north, would cross again to England

4. Penang.—One of the Straits Settlements. It is traversed by the main western railway of Malaya from Singapore to Siam, and a branch goes to Prai, whence steam ferries make connexion with Georgetown.

The town, which is built on a promontory nearest the mainland, is largely occupied by Chinese and Tamils, though the Malays are also well represented Behind the town, on Penang hill, are built several government buildings, private bungalows and an hotel There are European clubs, a racecourse and golf links. Coconuts are grown along the seashore and rice is cultivated in the interior at Balek Pulau The official name of the island is Prince of Wales island and that of the town Georgetown. Penang has an excellent harbour but its trade is eclipsed by the proximity of Singapore

5. Malta.—This is an important naval base and coaling station with an extensive dockyard and arsenal. During the two World Wars it was a noted allied base, and in the second one heroically resisted devastating attacks by enemy aircraft.

The island is an irregular oval in shape about 17½ miles long by 8¼ broad, with an area of less than 100 square miles, and a population of 225,000 The surface is a succession of hills and valleys, the coast line is deeply indented and the notable double bay of the island is formed by the promontory on which stands Valetta, the capital The inhabitants are mainly concerned with agriculture and fishing. Malta is specially noted for its honey and lace The principal resources of the people are derived from its being an important military station and the headquarters of the Mediterranean fleet Malta is a self-governing dominion. Most of the people speak English and Italian, while their own language is a mixture of Arabic and Italian. The educational system of the island is highly efficient, three languages are taught in the schools and there is a university and several secondary and technical schools. (An outline of the fascinating history of Malta is given in Volume VI)

6. Memory work.—(*a*) We depend on other lands for meat, bread, fruit, tea and clothing. (*b*) London is the world's greatest market (*c*) Tramp steamers carry cargoes (*d*) The captain finds his way with the help of the compass (*e*) Coaling stations supply steamers with coal. (*f*) Steamers use smokeless coal (*g*) The sun never sets on the Empire.

7. Exercises.—(*a*) What is done with cargoes unloaded at the docks? (*b*) Name three great ports in England. (*c*) What is kept in the vaults under London docks? (*d*) What is the chief cargo taken to Liverpool? (*e*) What have you seen at a market? (*f*) What kind of steamers visit the sunny islands? (*g*) What cargoes do steamers bring from the Far East? (*h*) What cargoes are sent from Canada to London? (*i*) What cargoes are sent from Australia and New Zealand to London? (*j*) Of what great use is Malta to the Empire? (*k*) What cargoes are sent out from England to other lands? (*l*) How quickly could you sail to India, and to Australia?



[Donald McLeish

The Nelson Monument, Trafalgar Square—London

HANDWORK FOR THE GEOGRAPHY LESSONS

THE COLD LANDS

This lesson deals with the inhabitants of the cold lands of the Empire and the general life of the Eskimos and the Lumbermen of the Canadian forests. The latter will be dealt with more fully in Volume II, where the teacher will find additional exercises worked out.

The children will have had described to them the expansive forests of Canada, and already know something about the timber that is sent from this dominion. In dealing with the work of the lumbermen, the question of transport will arise. Although motor tractors are extensively used, and in places where a river is available huge timber rafts are utilised, in British Columbia the horse-drawn wagon is common. Our first exercise is the construction of a simple model of a lumber wagon. For this model two empty match boxes, a strip of card from an old box and a bottle cork are required. Fig 1 A shows how the strip of card is cut to the width of the match boxes. The cardboard is stuck upon the boxes to form the top of the wagon If diagonals be drawn, as shown by the dotted lines, the centres of the sides of the boxes may be found. Small holes are made, and pieces of kindergarten stick are thrust through these to form axles for the cardboard wheels. Next, in grey wool, the girls should crochet four "chains" which are fixed to the wagon as shown, these are for fastening the load of logs to be added when the wagon is complete

Our next task is to fit the movable shaft. The cork is cut to such a height that it will fit comfortably within the match box, the shaft and crosspiece (joined with a small paper fastener) are strips of thin cardboard (double for the shaft) glued to the top and bottom of the cork (Fig. 1 B). When this is completed, it is placed inside the match box and fixed at the top and bottom with drawing pins (Fig 1 C). All that now remains to be done is to add the wheels and prepare a "load" of tree trunks in clay or plasticine. The "load" is secured by the wool chains (Fig 1 D). The match boxes may be covered with white or tinted paper and painted brown.

Our next modelling exercise is the making of an Eskimo fishing canoe or *kayak* in clay or plasticine. A cigar-shaped mass is rolled between the palms of the hands (Fig 2 A) This is flattened on one side by pressing it gently down on the modelling board (Fig. 2 B). A hole is made into the mass at one end, and around this a narrow collar is fixed. To complete the model, a tiny figure of an Eskimo, provided with a paddle (a splint of wood with a paper end) is seated within it

The land of the Eskimo is also the land of the polar bear. An attractive scene is shown in Fig. 3 B. A large drawing is given of the bear (Fig. 3 A). This should be traced on to cardboard, coloured a creamy-white, and cut out. On a piece of card masses of clay are fixed, and into one of these the bear is placed. A stick of chalk is scraped to provide "snow" to cover the base, or flour or salt may be used instead of chalk A background coloured with pastels or paints in bluish green or white should be added to complete the scene.

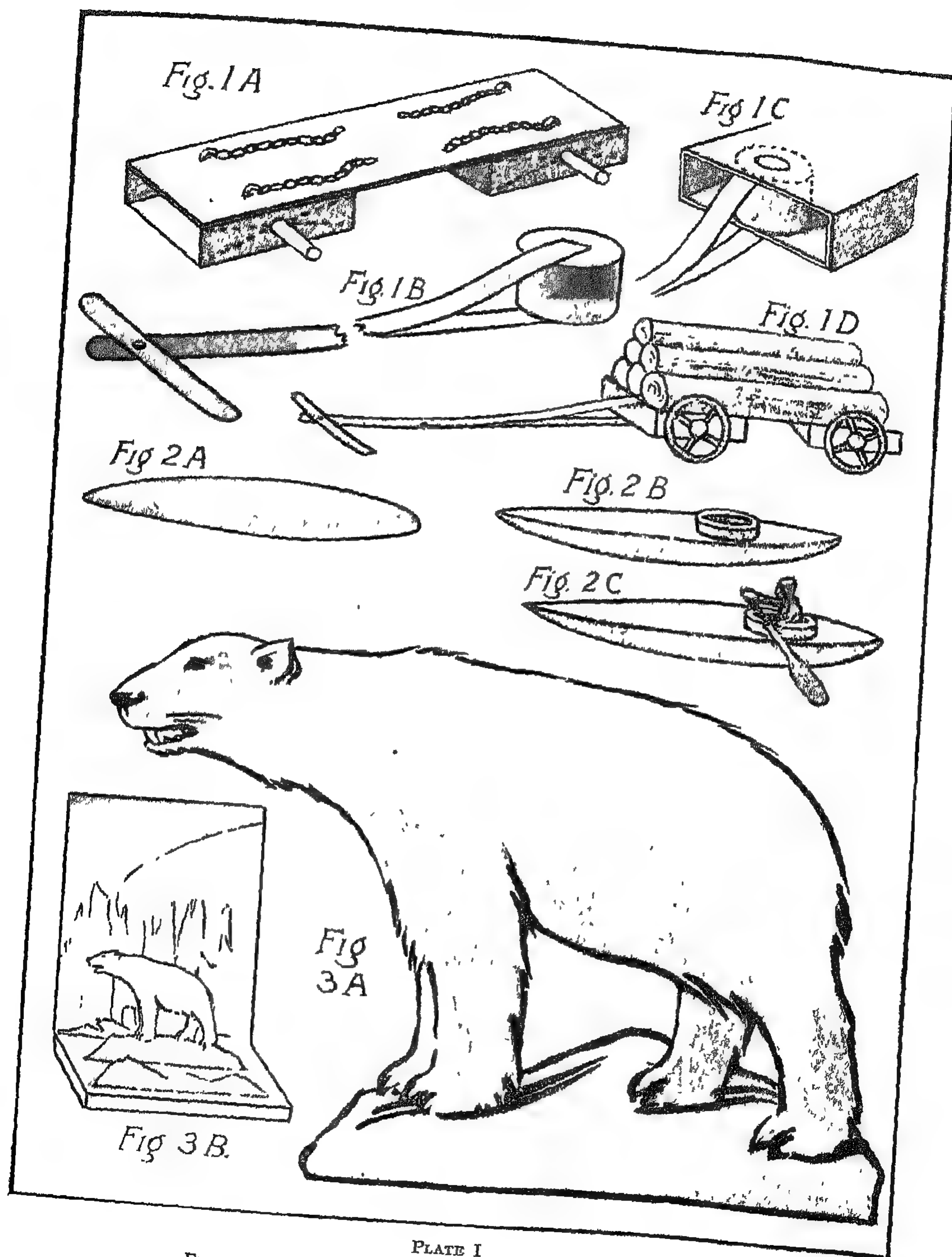


PLATE I

FIG 1 CANADIAN LUMBER WAGON MADE IN CARDBOARD
FIG 2 PLASTIC MODEL OF AN ESKIMO KAYAK
FIG 3 POLAR BEAR FOR A PAPER CUT-OUT

COOL GRASSLANDS

In this lesson we deal with cattle and sheep in Australia. Country children, particularly those in the north of England, are quite familiar with sheep farms, and to all children the sheep is a common English animal

We have purposely made our handwork on this plate of a co-operative or group nature, an exercise in which practically the whole of the class may join Each member makes one or more components, which, when assembled, form a large model of an Australian sheep run. Handwork of this type is particularly valuable in the classroom, for the young children learn in a practical manner the virtue of the precept, "Each for all and all for each."

The model consists of a large sheet of cardboard surrounded by fencing, so that a number of fence units will be required These are made of stout paper or thin card (Fig. 1 A) from a rectangle 8 in. × 2½ in. The ends are cut as shown, so making the fence unit 7 in. long, and the base flaps 8 in. long. The inner portion is removed, thus leaving a ¼ in frame. The younger children might leave the fence units in one piece without cutting out the middle portions The children will have heard that miles of steel wire are required on a sheep run for providing fencing. The "wire" for our fences is made by black cotton threaded with a needle across the frame in the manner shown. The flaps are turned up horizontally, alternately left and right.

Some gates will be necessary. Fig 1 B shows how the posts for these gates may be fitted at the end of a fence unit. A piece of a meat skewer is cut a little higher than the fence itself Under the end flap, a drawing pin is thrust with its point upward, and on to this the wood is pressed until it is firmly held by the pin The gate (Fig. 1 C) is a simple matter, for it consists of a narrow frame of card, over which strips are pasted to form bars The gate is fixed to the posts by means of small loops of very thin wire.

Fairly large sketches are given of the sheep, which should be traced and hectographed for the children to use. It will be noticed that sheep standing in two positions are reproduced, but the teacher may provide the children with four types in the following manner. After having traced the sheep, hold the sketches up to the light and draw on the back of the paper, so giving the reversed position. Masses of bushes may be stuck to the base to relieve the monotony of the flat surface (Fig. 3), also, one or two simple houses can be made by fixing card around boxes in the manner of the Lake-Dwelling in Lesson VI of the history section (but without the piles). The completed model (Fig. 4) should now be sprinkled liberally with green chalk or pastel dust, and provided with a simple background.

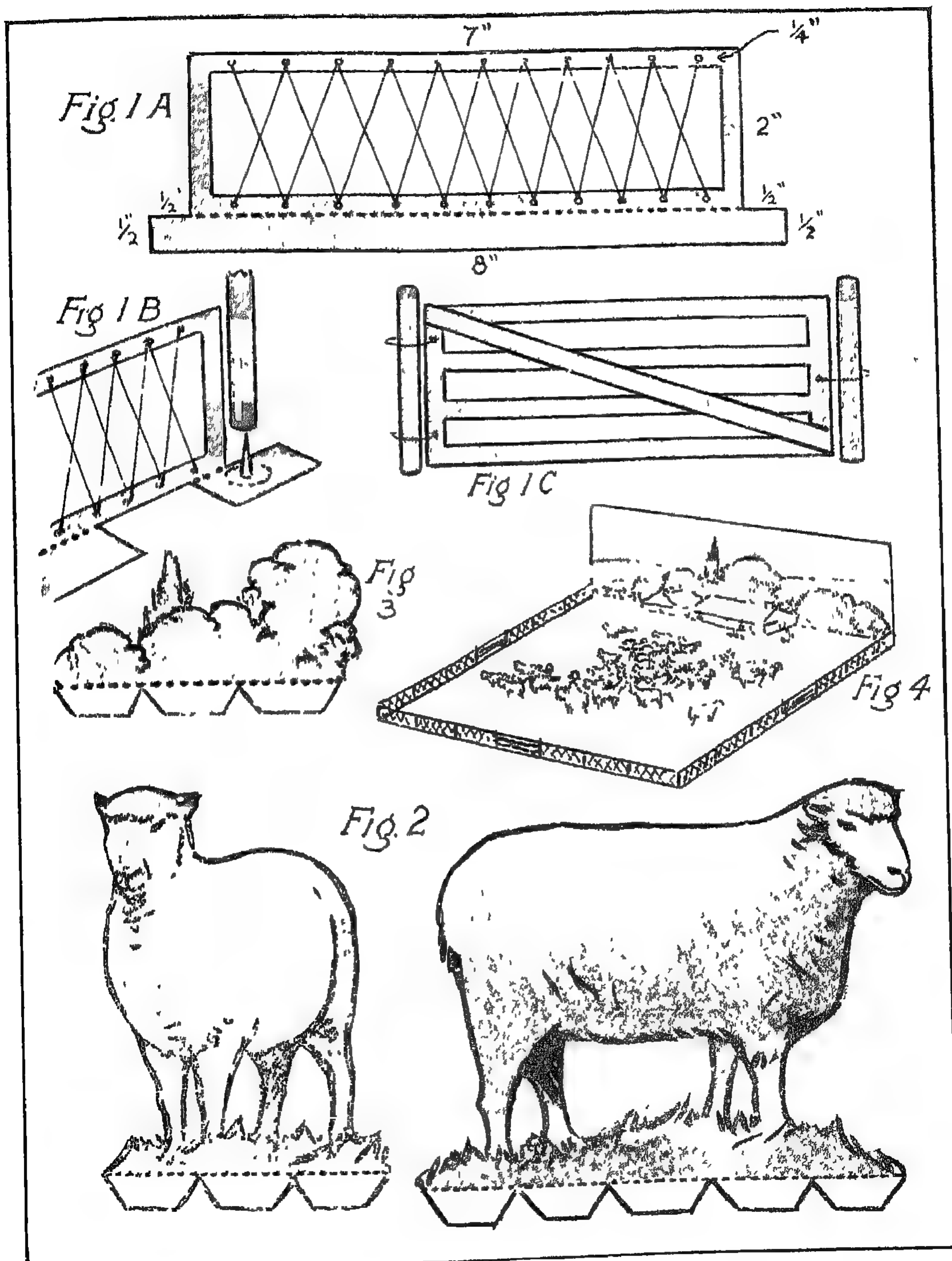


PLATE II

AN AUSTRALIAN SHEEP FARM WORKED AS A COMMUNITY MODEL BY THE WHOLE CLASS

COOL LANDS—INDUSTRIAL REGIONS

This lesson leaves the more picturesque spots of the Empire, and deals with some of the manufacturing and mining centres in England

The first model is that of a simple working crane. Children will realise that heavy goods made of iron and steel can only be lifted by some mechanical means Fig 1 A shows how a cotton reel is used to form the base of the crane. A meat skewer is thrust into the reel so as to project far enough to pass right through an ordinary match box. This match box is prepared in the manner shown in Fig 1 B Two holes are made to receive the projecting meat skewer and a paper gable roof is fixed to the top of the box, the sides of which may also be covered with paper. A wire handle is bent as shown in Fig 1 C, and it is thrust through the two sides of the box near the bottom, and at a point a little to the side of the box, so that the skewer is untouched. A little thought and manipulation are required for the fixing of the thread The problem of fixing should be discussed by the children The bottom of the match box is first cut on two sides and bent back so that the wire handle inside is accessible from the bottom By means of a needle a long thread is put through a hole in the edge of the box as shown, and it is wrapped two or three times round the wire handle within the box. The box is inverted, and a blob of sealing wax is dropped on to the strands of thread to fix them securely on to the handle Now the bottom of the box is replaced and fixed by strips of paper pasted round its edges The box is placed over the skewer, and it is pasted to the lid of a cardboard box to make it secure, as the model is "top heavy." To complete the crane, a strip of thin card is bent as shown in Fig. 1 D and glued to the box. A short length of match stick is fitted at the end to form a runner for the thread At the end of the thread a plasticine ball and a thin wire hook are fixed (Fig. 1 E). The hook can be moved up and down by turning the handle of the crane.

The second model illustrated is another form of crane constructed in a similar fashion from a gas mantle box, a bobbin and a meat skewer. The planning of the arm of the crane (Fig. 2 A) is rather more difficult than the first, and is suitable only for the better craftsmen. It is folded and provided with the necessary holes (Fig 2 B) for the skewer to pass through, and two match sticks form the runners The fixing of the thread is a simpler operation here, because the lids of the box may be removed. A wire handle is fixed as before, and the base of the arm is glued to the top lid. The completed model is shown in Fig. 2 C.

A railway coal truck is simply constructed by pasting stout carton paper round a Swan Vesta match box, cut as shown in Fig. 3 A. Cardboard and stick axles are added beneath, and finally disc card wheels, which are shaped for cutting by using a penny. When complete, the two middle portions of the sides are cut down, removed, provided with paper hinges, and then replaced so that they will form flaps (Fig 3 B). Tiny pieces of card, bent at right angles, are used to keep the flaps in position; paper fasteners form "buffers"; a wire hook is fixed at the back and front, and a load of coal completes the model Crayons can be used for colouring the sides brown and black.

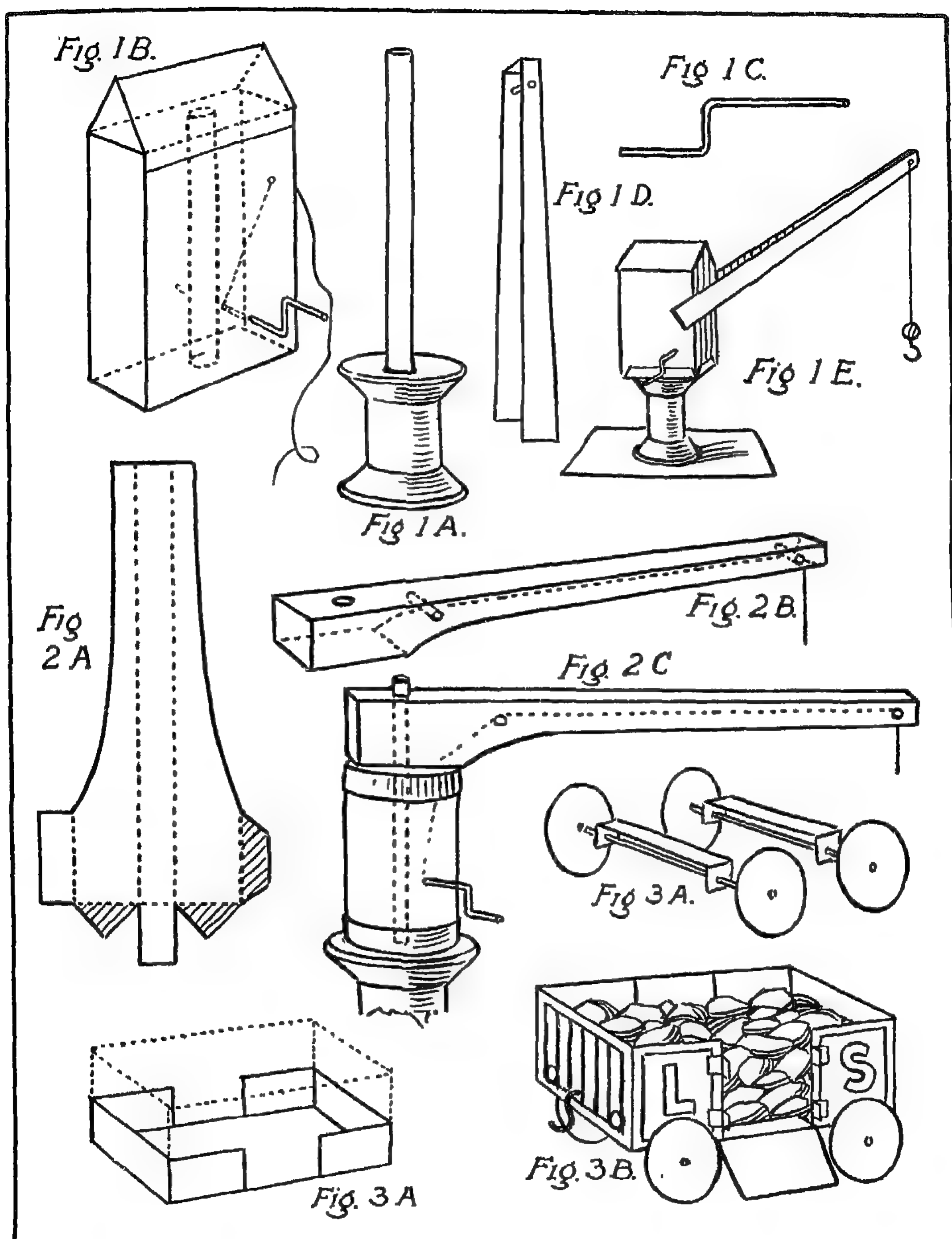


Plate III

Fig 1 Model Crane Made from a Match Box and a Cotton Reel
Fig 2 Model Crane Made from a Mantle Box and a Cotton Reel
Fig 3. Coal Truck Made from a Match Box

WARM LANDS—FRUIT

In this lesson the children are led to sunny and bright spots of the Empire, where fruit trees grow abundantly Empire-grown fruit is now freely advertised in the shops

The first handwork exercise shown on the accompanying Plate consists of a barrel of Tasmanian apples modelled in clay or plasticine. The children begin with a ball, which is rolled on to the modelling board to elongate it into a cylinder. With the cylinder held vertically the rounded ends must be gently pressed down on the board to flatten them as shown in Fig 1 A. The cylinder is laid horizontally on the board, and one end is rolled very gently with slight pressure to make the barrel-shaped end This operation is now repeated at the other end of the barrel, the children aiming at making the two ends alike With the point of the modelling tool, the inside of the top is scooped out to form a cavity, as shown in Fig 1 B Markings are made to represent the staves of the barrel; a flat, circular top is shaped and a number of tiny "apples" are modelled to put into the barrel. If the apples are made of clay they may be painted red, or red plasticine may be used (Fig. 1 C)

The next exercise consists of cutting out in paper a picture of a basket of Empire fruit A simple basket is cut out from folded tinted paper of a fairly dark shade (Fig 2 A). Full scope for originality should be given to the children in selecting the shape of the basket Next, an oblong of black paper is taken as a background for mounting. In red, yellow, orange-green and purple gummed paper the children prepare simple fruit shapes by free cutting Alternatively, the teacher may hectograph the shapes on white drawing paper, and allow the children to tint them These fruit shapes are stuck to the background to overlap a little Finally the basket shape is stuck over them as shown in Fig 2 B One or two "grapes" are stuck on the front of the basket to represent them as overhanging.

Fig. 3 C shows a pretty fruit basket planned on a 4 in. square of paper as indicated in Fig 3 A. The handle is cut on folded paper to secure a symmetrical form (Fig 3 B). Again, freedom of shape should be allowed in the construction of this basket, and to aid self-expression the children may be allowed to add a pattern in crayon or water colour.

An interesting exercise for group work is shown in Fig 4 On a large sheet of black paper the teacher sketches a basket and a fairly dark background with the inscription shown in the Plate The children cut out their various fruit shapes and gum them on to the background to appear as if they are rolling out of the basket.

The various stages in the plastic modelling of an apple are shown in the last illustration Begin with a ball, afterwards making small conical recesses at the top and bottom with the point of the tool (Fig 5 A) Round these fix tiny masses of clay to form the "humps" of the apple, smoothing them in with the forefinger (Fig 5 B) Finally, add a stem and a small leaf (Fig 5 C)

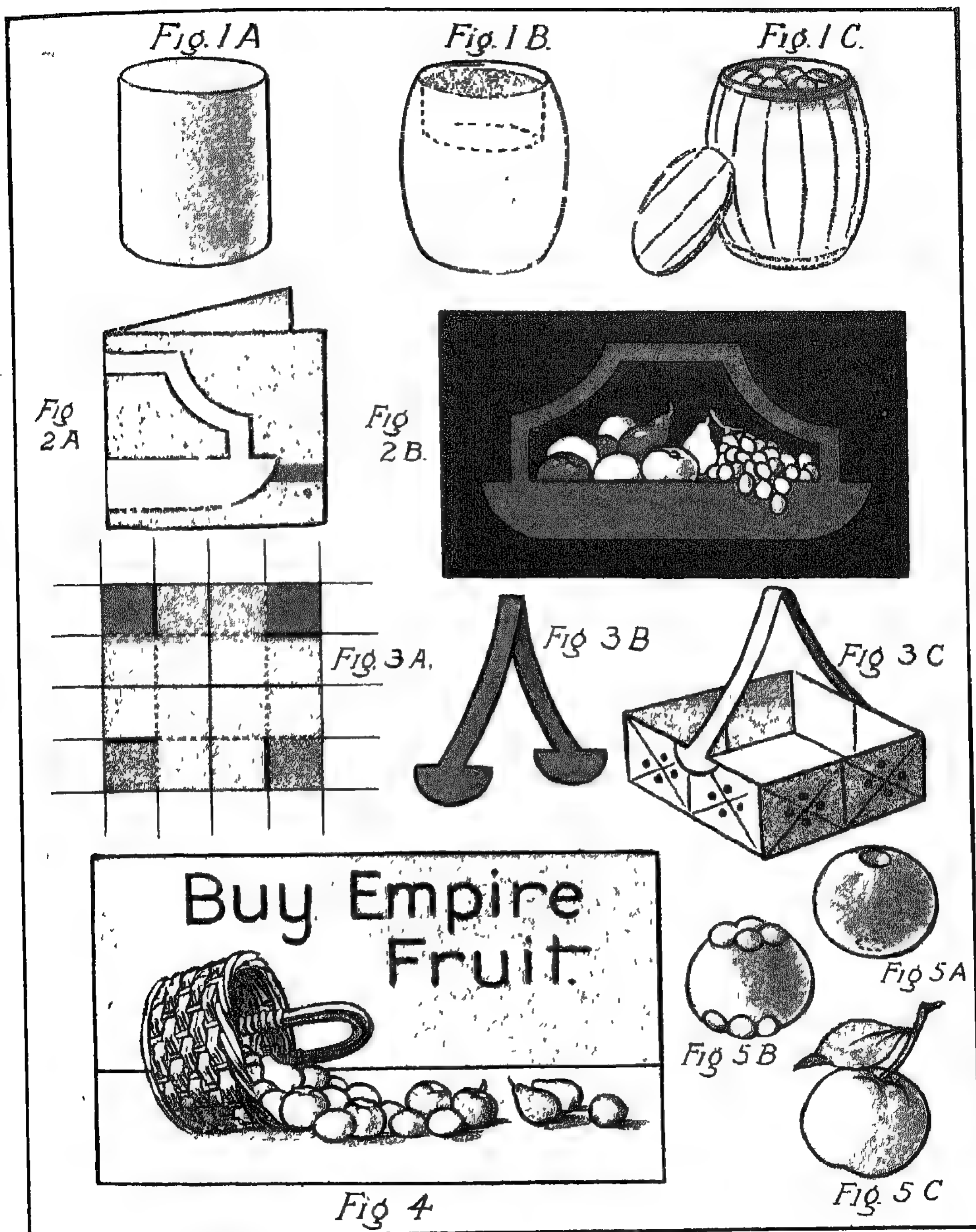


PLATE IV

FIG. 1 PLASTIC MODEL OF A BARREL OF COLONIAL APPLES
FIG 2 BASKET OF FRUIT FOR PAPER-CUTTING
FIG. 3 PAPER FRUIT BASKET
FIG. 4 POSTER FOR AN EXERCISE IN PAPER-CUTTING
FIG 5 PLASTIC MODEL OF AN APPLE

HOT LANDS WITH SUMMER RAIN

The commodities dealt with in this lesson are rice and tea, with their corresponding Indian environments. The children will doubtless be surprised to hear that the young rice plants grow in water, and that the ploughing of the paddy fields is done under water also, humped bullocks being used to draw the ploughs.

The handwork exercise to illustrate rice cultivation has been planned so that it may be compared with the models in the history lesson No. III—"The Clever River-Men". The teacher will point out that ploughing in India to-day is carried out in much the same primitive manner, and with almost the same primitive implements, as it was in Ancient Egypt. This will form an interesting link between the history and the geography lessons

Figs. 1 A and B show simple line drawings (which may be traced and hectographed by the teacher) of the native worker of the paddy field and the eastern bullock. These are tinted with crayons or water colour by the children—brown native, yellow loin cloth, white turban and light-brown bullock. The flaps are bent so that the figures will stand, and the native and the two bullocks are glued on to a strip of card as shown in the small sketch (Fig 1 D). Some silver paper or bits of glass are added to the base, and the whole is sprinkled with fine soil or sand, to allow bright spaces, representing water, to show.

The primitive plough is made so that it may be fixed to the bullocks Its construction is shown in Fig. 1 C. A long kindergarten stick or splint of thin wood is required. The end of this is carefully split, and a narrow strip of thin card to form the yoke is fixed into the crack. Narrow paper collars are slipped over the heads of the bullocks and glued to the flat yoke in exactly the same manner as in the case of the Assyrian horses in the model of a chariot in the history model No. XIII. The ploughshare with its handle is modelled in clay or plasticine, and the other end of the stick is thrust right through it as seen in the diagram In making this part care should be taken to ensure that the end of the handle is just long enough to reach the extended hands of the worker (see Fig. 1 D). To complete the model, the shaft of the plough may be covered with plasticine, or it may be tinted with dark brown water colour

The construction of a model tea chest is shown in Fig. 2 A For this model younger children should work on paper divided into 1 in. squares. This will assist them in their measurements. White paper may be used, as it is easy to colour. If the sides of the box are 2 in. square, the shaded fixing flaps may be 1 in wide. Before gluing together, allow the children to colour the sides, making the borders black and the remainder pale brown. One or two rows of oriental characters may be added to the front (Fig 2 B). To secure a more realistic finish the interior may be lined with silver paper, as tea chests are lined with lead foil.

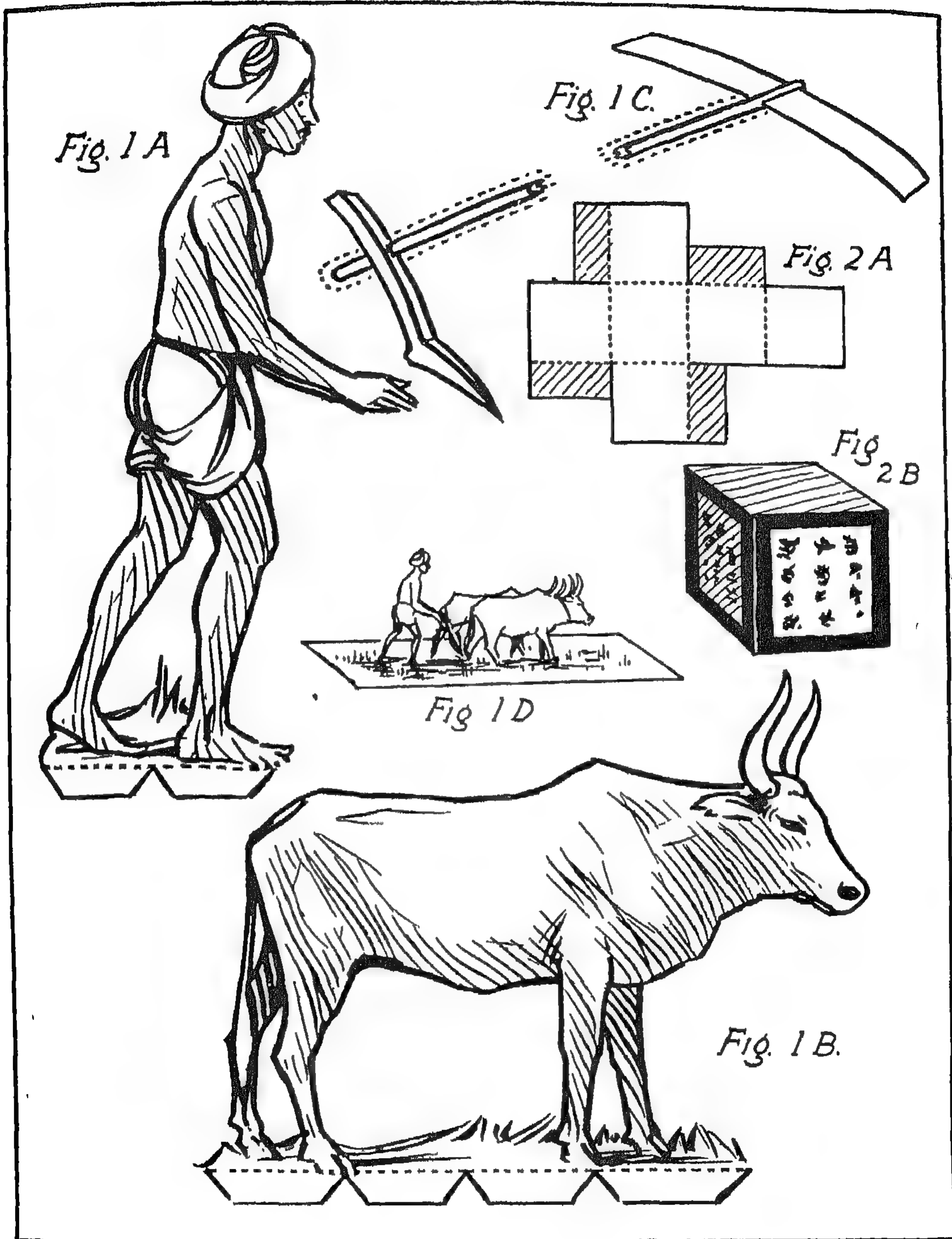


PLATE V

FIG 1 A PADDY FIELD FOR PAPER-CUTTING
FIG 2 PAPER MODEL OF A TEA CHEST

HOT WET FORESTS

This lesson covers the life and the industries common to the wet tropical forest regions, and naturally the children will be especially interested in the animals. The teacher, in working out this lesson, may find the stories of Kipling's *Jungle Books*, as well as his poems, convenient to use for literary illustrations in which many of the animals of the wet forests are described.

The first exercise is a plastic model of an elephant. Fig. 1 A shows how it may be constructed from masses of clay or plasticine. The body is formed by rolling a sphere into a lemon-shaped mass, a little wider at the front than at the back. A pointed pear shape is modelled for the head, and four cylindrical legs are made broader at the top than at the bottom. The head is first fixed into position as shown (Fig. 1 B). The joins are carefully smoothed down with the tip of the forefinger; a little more trunk is added, and the lower portion of the head is slit with the blade of the modelling tool to form a mouth. With the point of the tool, two holes are made to receive the tusks, which are bent into position For the eyes, two very small holes are made, one on each side of the head. Two tiny pellets or beads of clay are rolled between the tips of the forefinger and thumb; one of these beads is pressed gently into each hole, and the needle tool is used to make one or two surface markings to represent the eyelids. Ears are next made, quite thinly, bent over and fixed to the head (Fig. 1 C) The tops of the legs are then flattened somewhat and fixed into position Round the base of the legs small flattened pellets should be fixed to represent the creature's toes A thin, worm-like tail completes the animal (Fig. 1 D). The children will have heard of elephants engaged in the Burmese teak industry, so that it will give more interest to the model if the children are allowed to show their elephants "a pilin' teak." For this, they should model a number of cylinders to represent teak trunks, and one of these should be placed in the position of being lifted by the animal's trunk.

The lesson further describes the cultivation of the cocoa bean in West Africa. While all children have a personal interest in chocolate, many are ignorant of the cultivation of cocoa. Fig. 2 A shows the construction of a plastic model of a cocoa pod First an elongated ovoid shape is modelled, and round its surface are fixed narrow spindles. These are smoothed into the general shape to produce the finished pod (Fig. 2 B). A few small plastic beans may be scattered around the pod.

Perhaps the most popular model of this plate will be the paper cut-out of the tiger (Fig. 3 B). The figure of the tiger (Fig 3 A) should be traced by the teacher, hectographed and coloured by the children in black and orange stripes The cut-out is glued to a box lid, and round the creature small twigs are fixed into small lumps of plasticine The ground is sprinkled with fine soil and green pastel dust, and a forest background, drawn in greens and browns, is fixed behind.

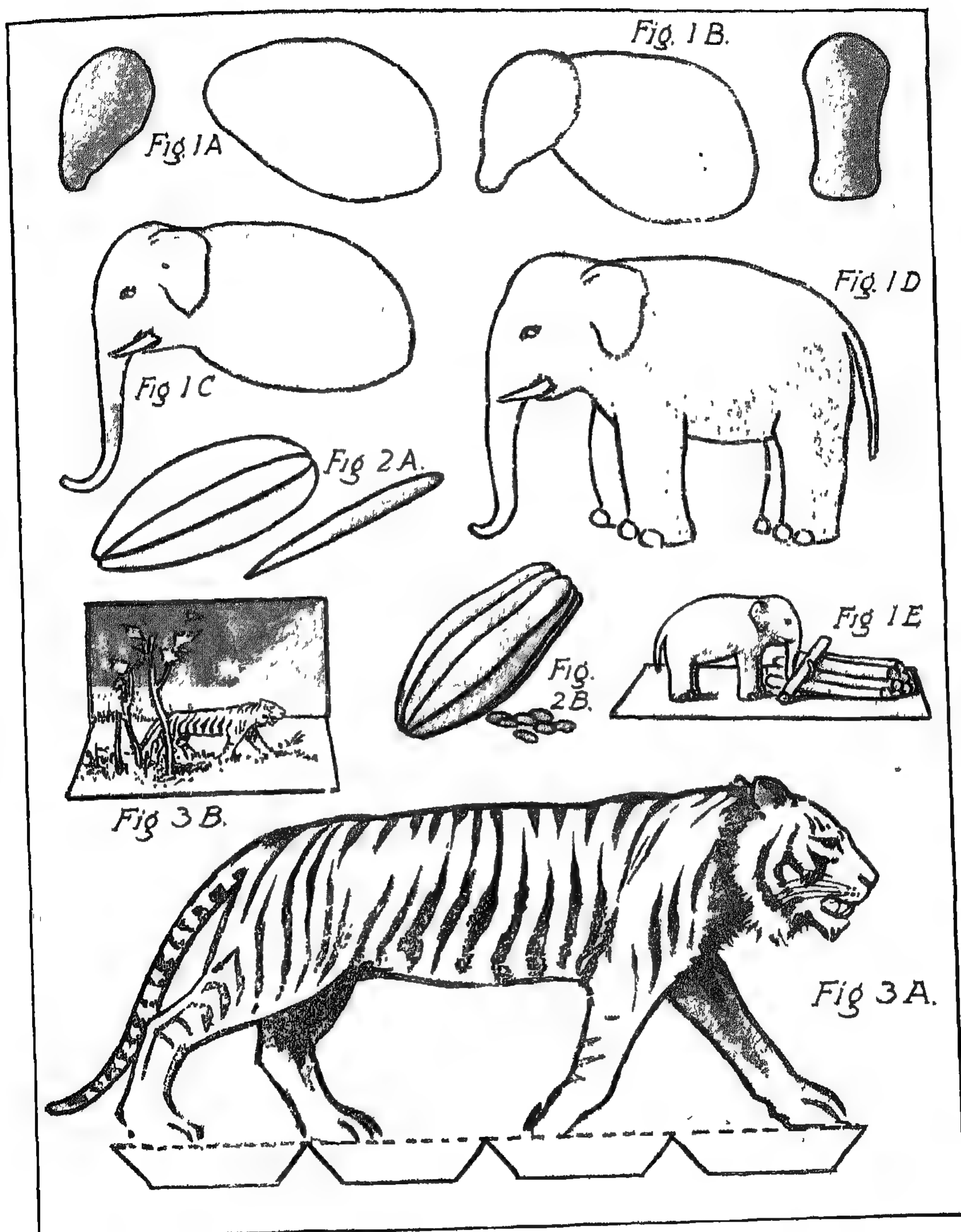


PLATE VI

FIG 1 CLAY MODEL OF AN ELEPHANT
FIG 2 CLAY MODEL OF A COCOA POD
FIG. 3 PAPER CUT-OUT OF A TIGER

HOT GRASSLANDS

The models for this lesson are associated with cotton growing in the Sudan, and the cultivation of the sugar cane in Jamaica. The teacher will naturally link up this lesson with that in the historical section of this volume, "Man's New Clothes," No IX, for there are given models connected with the story of spinning and weaving.

The first exercise is the construction of a model of a South African native hut For the foundation of this hut any small round boxes may be used, or half of a round mantle box, or a cardboard tube Fig 1 A shows how the box may be cut into shorter lengths by first fixing it on a broom handle, or similar round piece of wood. Fig. 1 B shows how the hut is made An entrance is cut out, and four strips of thin card are glued round the inside of its top edge. The strips are bent inwards to receive the roof. If, in the opinion of the teacher, the card boxes are too thick for the youngest children to handle, rings may be made of narrow oblongs of stout paper bent round and glued at the edges. The roof (Fig. 1 C) is a bundle of straw or dried grass stems tied at the top and opened out as shown. The box foundation is tinted a creamy brown, to represent mud, the flaps are given a coat of adhesive, and the roof is placed gently into position to complete the model (Fig. 1 D) To make an interesting group model, a number of the small huts may be assembled to form a native kraal.

Fig 2 B shows a simple paper-cutting exercise associated with cotton and its production For the background, a very dark tinted, or black paper is required. An orange or yellow paper, folded at the middle (Fig. 2 A), the shape of a cotton reel is cut out and this is gummed to the top left-hand corner of the background. An oblong of white paper, ruled with lines to represent the cotton, is stuck over the central portion of the reel In the right hand corner of the background an irregular mass of white paper is gummed. Next, two or three leaf-like forms of brown paper are cut out and stuck *over* the bottom of the white paper. A tiny stalk completes the cotton pod.

In making a plastic model of a cotton *boll*, the first stage is to produce a pear shape, with a slight rib along its length (Fig. 3 A) Next, leafy bracts are added, something like those round our English filbert nuts. Finally, a narrow stalk is fixed into position (Fig 3 B).

Fig. 4 shows a model of a knife similar in shape to those used in the Jamaican sugar plantations for cutting the sugar cane It will form an exercise in free cutting in stout paper A small piece of card can be stuck on each side of the handle.

Fig. 5 gives a suggestion for a "Cotton Book" in which children might keep a small collection of different materials made of cotton, e.g calico, nainsook, cambric, lawn, etc. The cover may be of light tinted paper, with a cut-out distaff stuck to its corner.



PLATE VII

FIG 1 MODEL OF A NATIVE AFRICAN HOUSE MADE FROM A CARDBOARD TUBE
FIG 2 COTTON POD AND COTTON REEL FOR FREE CUTTING
FIG 3 PLASTIC MODEL OF A COTTON BOLL
FIG 4 SHAPE OF A KNIFE AS USED IN CUTTING SUGAR CANE
FIG 5 BOOK FOR SPECIMENS OF MATERIALS MADE FROM COTTON

HOT DRY LANDS

For illustrative purposes, this lesson deals with different methods of transport in the hot dry lands of the Empire The problem of transport in different countries frequently arises, and several handwork exercises described in this book illustrate various kinds of transport Lumber wagons and coal trucks have already been made The different methods of transport may be reviewed with advantage from time to time and the reasons for the wide differences be considered The dog sledges of the Cold Lands, the camel caravans of the Desert and the bullock wagons of Burma all give scope for lessons on animals used for the transportation of goods and materials

In this particular lesson, the *gufa* of 'Iraq as used on the river Tigris is described Here the child will see a strange survival of the primitive means of river transport We read that the infant Moses was discovered in an ark "daubed with pitch." In a later history lesson, the coracles of the Ancient Briton will be considered The *gufa* is similar in construction to these primitive boats. It is a circular boat made of woven reeds and coated with bitumen to render it water-tight.

Fig. 1 A shows a plastic model of a *gufa* as used on the Tigris In shape it resembles a shallow bowl with rounded edges It may be constructed by one of the two processes described in the section on historical modelling contained in this volume; that is it may be built up by the coiled method, or by rotating the ball of the right thumb in a sphere of clay held in the palm of the left hand When the modelling is completed, short lengths of dried grass stems or straw, should be embedded crossways in the clay of the interior to represent the woven structure, and a rectangular seat of clay fixed as shown. To complete the model, there should be added a tiny clay figure holding a match stick "pole" in his hand, also a few clay "melons" (Fig. 1 B).

Further work illustrative of the *gufa*, though of a simpler nature, is shown in Fig. 2 The *gufas* are used principally as ferryboats from one port to another on the Tigris. The eastern scene illustrated is a paper cut-out An oblong of pale green paper is taken, and to the upper portion pale blue paper is gummed (or pale blue pastel may be used), to represent the sky. To the right hand of the base of the sky a purple hill is gummed. On each side of the picture the orange ground is fixed, that on the right being cut with a curve to represent the river bank Two or three cut-out palm trees of brown and green are fixed to this ground, also one or two white eastern dwellings cut on the flat. The *gufa* itself (rather small in size, to be in proportion with the rest of the scene) is cut from dark brown paper on the fold, to secure a symmetrical shape, and gummed (with cut-out "reflections") to the water. A tiny figure completes an attractive and pretty scene.

The camel caravan forms an enjoyable project in which all the class can take part Hectographed copies of the camel and driver (Figs 3 A and 3 B) are distributed to the class These are painted, a thread is joined from the Arab's hand to the camel, and all are assembled as shown in Fig. 3 C.

Finally, an ostrich cut-out is given in Fig 4. The bird is coloured in black and white, with orange legs and beak, while the foliage is tinted green. One flap is turned to the left, and the other to the right so that the bird will stand up.

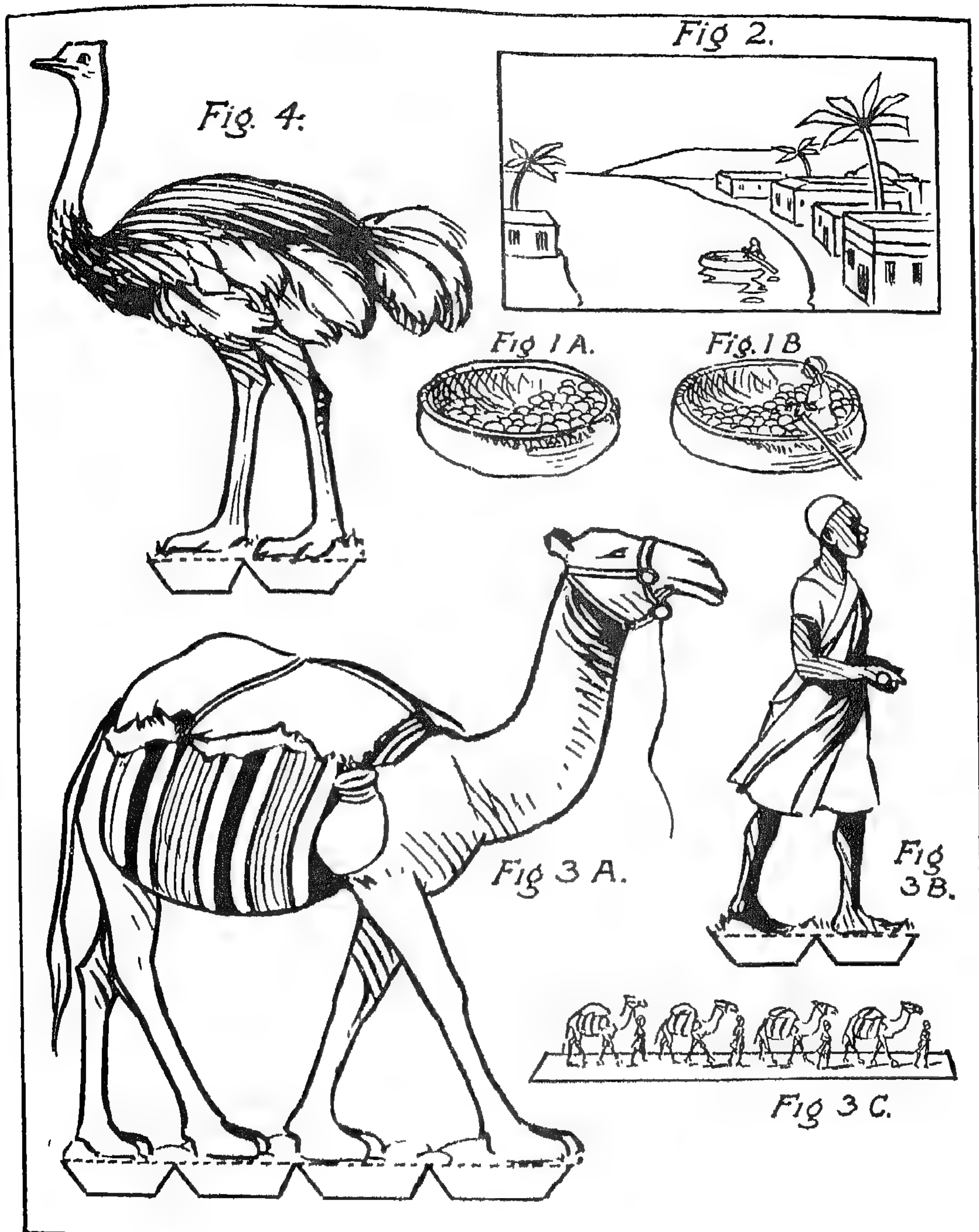


PLATE VIII

FIG 1 CLAY MODEL OF A GUFA
FIG 2 SCENE ON THE TIGRIS FOR PAPER-CUTTING
FIG 3 A CAMEL CARAVAN
FIG 4 AN OSTRICH CUT-OUT

SUNNY ISLANDS

In this lesson the children are transported to the sunny islands of the South Seas. Young children, in the course of their school work, learn many of the poems of Robert Louis Stevenson, but comparatively few are aware of the fact that he spent his last days under the blue skies of Samoa. This fact may be mentioned during the course of the lesson. (A biography of Robert Louis Stevenson is given in Vol VI)

From pictures showing typical scenery of the South Seas, the children will have gathered that the islands are the home of the coconut palm The average child is familiar with the nut itself, but they are usually surprised to find that the nuts are not produced on the palm in the form in which they reach us, but are contained in a woody husk and are surrounded with fine brown fibres. Some of these fibres are attached to the nut when it reaches us. They are used for making the familiar coconut matting, and for rope making. A large blackboard sketch, in coloured chalks, will help to explain the structure of the fruit, particularly if it is drawn in section. A clay model to show the structure in section is shown in Figs. 1 A and B A pear-shaped mass of clay is tapped gently on to the modelling board to provide a flat surface. Next, with the tip of the little finger, an oval depression is made in the middle. Round the edge of the depression, a margin is marked with the point of the modelling tool, and on the outer edge of this margin a narrower margin is marked. The portion remaining is cut up with the point to represent fibres The model is placed aside to harden. When dry, it is painted in the following manner: the outside blackish brown, the fibres red brown, the narrow margin dark brown,—to represent the woody shell of the nut The wider margin and depression are painted white to represent the succulent kernel of the coconut (Fig 1 B)

The popular banana is a fruit of the South Seas To model a banana, a sausage-shaped mass is rolled (Fig. 2 A), then pressed gently on the board to produce the four flattened planes peculiar to this fruit (Fig. 2 B). A piece of clay representing a portion of its stem is fixed to the narrower end.

A group model of a coconut shy may be made in a box placed on its side, with one side cut away. A number of wire stands stuck into cork bases (Fig 3 B) are glued to the box The stands are made by twisting wire as shown in Fig. 3 A round a circular stick Clay coconuts and balls complete this group

The leaf of the banana plant makes a useful paper-cutting exercise The shape shown in Fig. 4 A is cut out in white paper This is snipped into segments, and coloured with crayons. When complete, the segments may be bent away as shown in Fig. 4 B.

The tree house (Fig. 5 D) makes an attractive model. A slab of plasticine is cut to the shape shown in Fig. 5 A (The dotted lines show the position of the house) The slab is pierced with twigs which are stuck through another slab (Fig 5 B). A house shape is constructed in stout paper, with a kindergarten stick at the roof to slip over the four projecting twigs at the top of the platform (Fig. 5 C) The whole house is covered with strands of straw, raffia or grass stems secured with seccotine. A twig ladder adds the finishing touch.

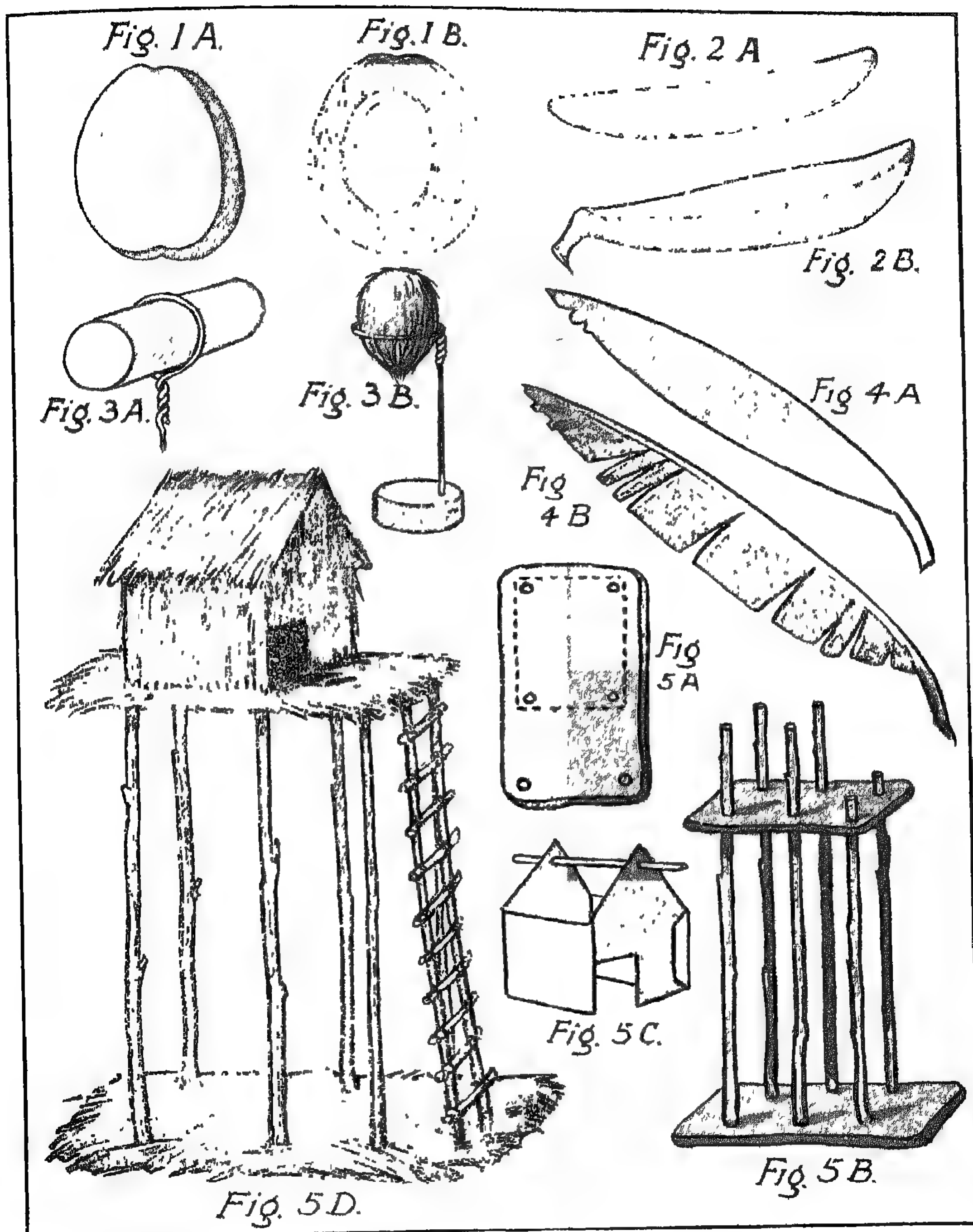


PLATE IX

FIG 1 PLASTIC MODEL—SECTION OF A COCONUT
FIG. 2 PLASTIC MODEL OF A BANANA
FIG 3 MODEL OF A COCONUT SHY
FIG 4. LEAF OF A BANANA PLANT IN PAPER-CUTTING
FIG 5 HOUSE OF THE SOUTH SEAS

LIFE ON THE SEA

The handwork for this lesson is associated with the great fishing industries of Newfoundland, British Columbia and the Dogger Bank.

The first models shown are clay or plasticine models of the cod and the salmon. The salmon is the simpler of the two and should be attempted first In modelling a fish, the children should begin with a ball, carefully rolling it between the palms of the hands to form a spindle shape as shown in Fig 1 A For the fish shape, two points must be borne in mind—firstly, the head end must be broader than the tail end and it must be rolled less, secondly, when the spindle has been produced, it must be pressed gently between the two palms to flatten it somewhat, as a fish is flat. The teacher may impress a useful nature lesson here, and it will be a great help to the children, when they are working this exercise, if one is allowed to bring a goldfish to school (A lesson on the goldfish is given in the section on nature, page 338.) Having produced the general shape (Fig. 1 A), the next task is to add flattened fins and tail (Fig. 1 C) which are smoothed into the body. The final stage (Fig. 1 B) is the addition of the details. With the point of the modelling tool, criss-cross markings are made lightly on the body to show the scales; line markings are similarly made on the fins and tail. The mouth, rounded in shape, is hollowed out, and an eye is added on each side of the head. Finally, the gill markings are cut by using the edge of the modelling tool (held flat) as a knife. If the fish is made of clay, one or two may be stored and when dry painted with silver or aluminium paint.

The cod is made in exactly the same manner as the salmon, but modified as shown in Fig. 1 D. Fig 2 shows a model of a plate upon which rests a steak of cod

A clay or plasticine model of a trawler is shown in Fig 3 B. This model will naturally appeal to the boys. A spindle shape is again rolled, but this time it is flattened on both sides, particularly at the stern end (Fig 3 A) Simple shapes are fixed to the slab, as shown in the sketch of the finished model, to represent the cabins, bridge and funnel. A long and a short match stick act as masts.

The children have been told of trawlers and the use of the trawl net Fig. 4 shows an attractive paper-cutting scene that may be attempted by the class working in groups of four or five. The sky is pale blue paper, the sea pale green paper, the rocks dark brown paper, with masses of dark green to represent seaweed in the ocean bed. A tiny boat in black and red paper is cut out and gummed on to the surface of the "water" as shown. On white paper, with dark brown crayon a trawl net is drawn and afterwards cut out. This is gummed to the sea bed, and an ink line is drawn connecting it to the boat

Fig. 5 shows a cut-out of a fisherman to be traced, painted and mounted to stand.

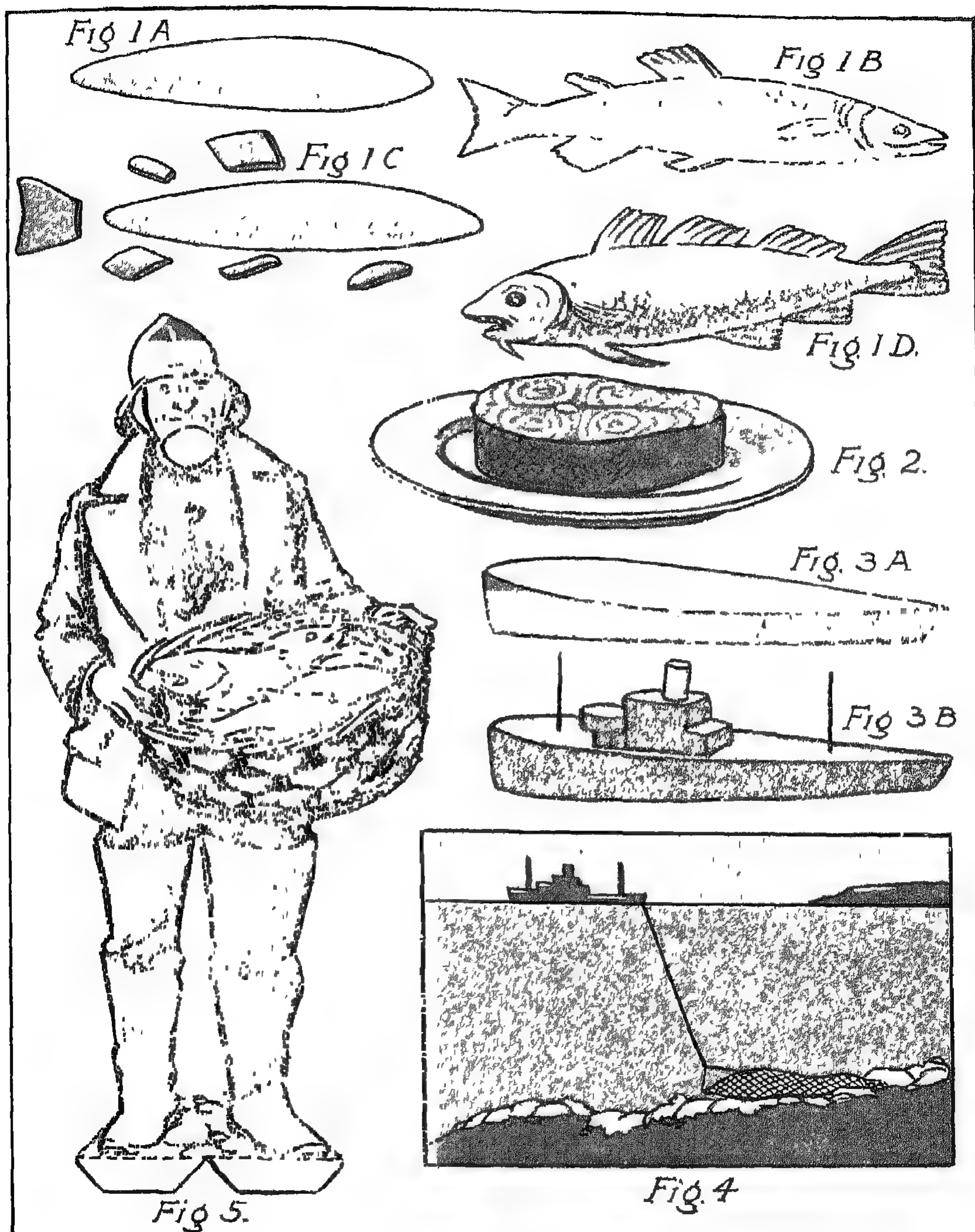


PLATE X

Fig 1 Plastic Models of Salmon and Cod
Fig. 2. Plastic Model of Cod Steak and Plate
Fig 3 Plastic Model of Trawler
Fig 4 Paper-cutting Scene of Trawler at Work
Fig 5 Cut-out of Fisherman



EIGHT SIMPLE PLAYS FOR THE FIRST YEAR'S COURSE

POOR JACK!

People in the play —JACK, MRS SOAPSUDS, DOCTOR SLOW-AND-SURE

Things wanted in the play —A small book. A notebook and pencil. A small white rubber ball A large handkerchief

Scene —Mrs Soapsuds' kitchen. There is one door. Two chairs stand one on each side of the fireplace.

[*Jack is sitting hunched up on one chair*]

Jack. Oh dear! How unhappy I am!

[*Mrs. Soapsuds comes in.*]

Mrs Soapsuds It is such a lovely day, Jack. The washing is blowing out like white clouds Come into the sunshine.

Jack. I don't want to go out.

Mrs. Soapsuds If you saw the blue sky, and heard the larks singing in the hayfield, I am sure you would feel better

Jack. No, Mother I should feel sadder than ever.

Mrs. Soapsuds Dear! Dear! I don't know what to do with you You are not the same boy since you fell down the hill when I sent you to fill my pail at the well

Jack. I can't help it, Mother. It is not my fault that I feel so dismal

Mrs. Soapsuds It can't be your head, for I mended it so nicely with vinegar and brown paper. . Well . well . . perhaps Doctor Slow-and-sure will be able to cure you. I asked him to call to-day.

Jack Oh dear! He will give me castor oil, I am sure.

[*There is a knock at the door*]

Mrs. Soapsuds. There he is, I do declare!

[*Mrs. Soapsuds opens the door*]

Come in, doctor. I am very glad to see you.

[*Doctor Slow-and-sure comes in, he has the small book, the notebook and pencil, the ball and the handkerchief in his bag.*]

Doctor Good afternoon, Mrs Soapsuds Good afternoon, Jack, my boy What is all this I hear about you?

Mrs. Soapsuds. Oh, doctor, it is very sad! I think he must be bewitched!

Doctor. Tut-tut-tut. Stuff and nonsense! Come, my young friend. . . Your pulse . . .

[*He feels Jack's pulse*]

Let me see your tongue

[*Jack puts out his tongue.*]

H'm! Rather too pink! A little snail water night and morning should do you good.

Mrs. Soapsuds. That is not the trouble, doctor He is well enough. But . . . but . . . he cannot smile . . . or laugh!

Jack. It is no use. I have tried and tried.

Mrs Soapsuds. He mopes in the chimney corner all day. . . . And he used to be such a merry lad.

Doctor He who can't smile or won't smile, must be made to smile. Now I shall write a prescription for some tonic pills . . . crushed beetles and peppermint, I think . . and while I do it, just look at this riddle book

[*Doctor hands the small book to Jack*]

The Hundred Best Riddles . . . If you cannot laugh at some of those I *shall* be surprised

Mrs Soapsuds There! You see how it is, doctor. Nothing can make him smile or laugh.

Doctor. Dear! Dear! Dear! A very sad case! . . I give it up! I fear there is nothing that I can do for your son . . . Good afternoon, Mrs. Soapsuds Good afternoon

[*Doctor Slow-and-sure goes out.*]



[*Doctor writes in his notebook, while Jack and Mrs. Soapsuds look at the Riddle Book*]

Mrs. Soapsuds. Oh, Jack! Look at this one . . . "When is your nose like a book?" Ha! ha! "When it is *red.*" Well, I do think that is clever!

[*Jack sighs.*]

Mrs Soapsuds (*reading*). And see here . . . this is really very funny. "Why is a horse the most wonderful of animals? Because it can eat best *without a bit in its mouth.*" Ha! ha! Oh, I do like that one.

[*Jack bursts into tears*]

Mrs Soapsuds Well, Jack . . it cannot be helped. We must think of something else.

Jack It is no use, Mother. I shall never smile again.

Mrs. Soapsuds. The doctor is not as wise as I thought.

[*Doctor Slow-and-sure comes in again.*]

Doctor. I have an idea! A splendid idea! My poor boy, did I hear your mother say that you had had a tumble?

Jack. A terrible tumble, doctor I am still sore from my head to my toes.

Doctor. And did you fall on your elbow?

Jack I rolled over and bumped myself everywhere.

Doctor. Is this sore?

[*Doctor pinches Jack's elbow*]

Jack Oof! You are hurting me!

Doctor Aha! Aha! I have got it! . Why, of course, he cannot smile or laugh, or do anything but mope and pine . . .

Jack and Mrs Soapsuds together Why? Why? Why?

Doctor The poor boy has lost his funny-bone!

Mrs Soapsuds. Why, so he has! I can feel the hollow place

[*Mrs Soapsuds pinches Jack's elbow*]

What shall we do?

Doctor. Wait a minute . . . wait a minute . . . Let me look in my bag

[*Doctor fumbles in his bag and brings out the ball*]

Doctor Here it is!

Jack But what is it?

Doctor. Now let me stick this on to your elbow with a little dab of glue, and tie it up in a clean handkerchief . . . like that

[*Doctor takes out his handkerchief and ties the ball on to Jack's elbow*]

Doctor There you are!

Mrs Soapsuds But what is it?

Doctor A new funny-bone, Mrs. Soapsuds . . . I always keep a stock of them Some people lose them so easily. The smallest bump or upset, and off tumbles the funny-bone. That is why there is so much bad temper in the world . . . Now in a day or two that will grow on nicely.

Jack. I say, what a funny face you have! . . . Mother! Look at his red nose, and his blue chin, . . and his funny pointed ears! Ha! ha! ha! ha! Oh! He makes me laugh! . . .

Mrs. Soapsuds Stop at once, you rude boy!

[*Jack laughs and laughs.*]

Doctor. Never mind, Mrs Soapsuds. Let him laugh The new funny-bone fits him, that is clear.

Mrs Soapsuds. Then he is cured . . Oh, thank you, Doctor Slow-and-sure!

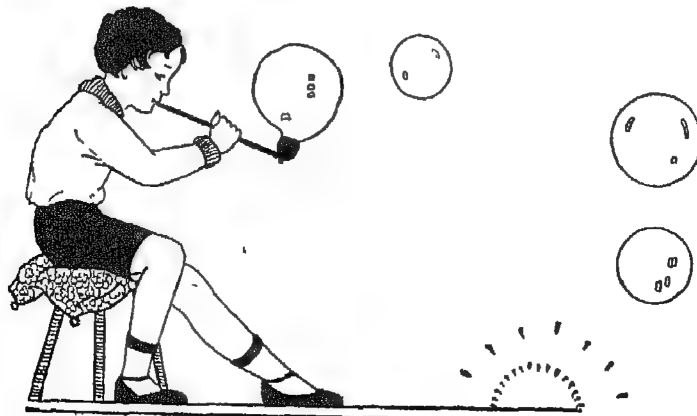
Jack And I am off to show my new funny-bone to Jill

[*Jack runs out laughing.*]

Doctor I may be slow, but I am sure too, Mrs Soapsuds.

Mrs Soapsuds Indeed, Doctor, you are a wise man

[*Doctor Slow-and-sure and Mrs. Soapsuds shake hands*]





THE TRAVELLERS AND THE BEAR

People in the Play.—FIRST TRAVELLER. SECOND TRAVELLER. THE BEAR.

Scene—A lonely road. In the middle of the stage stands a large tree which must be strong enough to allow a child to climb up into it (a chair will serve the purpose very well).

[*The Travellers walk in The Second Traveller limps; he carries a stick and has a satchel over his shoulder. In the satchel are a bottle of water and some bread and cheese. The First Traveller is mopping his forehead with his handkerchief, he has a penknife in his pocket.*]

First Traveller. Phew! How hot it is!

Second Traveller. This long walk is too much for my lame leg. I can hardly put one foot before the other.

First Traveller. Look, the sun is almost over our heads. It must be twelve o'clock.

Second Traveller. Let us find some shady place where we can rest

First Traveller And we will drink from the water bottle you are carrying

Second Traveller. Over there is a fine big tree, that is the very place for us.

First Traveller. Good. We shall be out of the sun.

[*First Traveller goes to the tree and sits down under it.*]

First Traveller. Oh, this is grand! It is quite cool in the shade of these green leaves and there is soft moss to lie on.

[*Second Traveller leans on his stick and takes off his satchel*]

Second Traveller Please give me your hand to help me to sit down. My leg is so stiff that I cannot bend it.

[*He takes the First Traveller's hand and sits down very slowly.*]

Second Traveller. Ah! That's better!

First Traveller. Now for your water bottle.

[*Second Traveller opens his satchel and takes out the bottle.*]

Second Traveller. It is only half full now. Do not drink too much, or we shall be thirsty later on.

[*First Traveller takes bottle and drinks.*]

First Traveller. Very good!

[*First Traveller drinks again and smacks his lips afterwards*]

First Traveller This makes me feel a new man.

Second Traveller. Remember that we have three more miles to go.

First Traveller. I couldn't be more thirsty than I was just now.

[*First Traveller drinks again*]

Second Traveller I am rather thirsty too.

[*First Traveller drinks again. He passes back the bottle nearly empty.*]

First Traveller. Now your turn.

Second Traveller. Well, I am afraid this will be our last drink before we get home.

[*Second Traveller drinks the rest of the water*]

First Traveller Have you anything to eat in your satchel?

Second Traveller. I have a little bread and cheese

First Traveller. I was just wishing for some bread and cheese.

Second Traveller. I'm afraid there is not very much

[*Second Traveller takes out bread and cheese*]

First Traveller Here is a penknife. I will cut off a piece of bread.

[*First Traveller cuts off a large piece of bread.*]

First Traveller. And the cheese? It smells very fresh and good.

[*First Traveller cuts off a large piece of cheese*]

Second Traveller Luckily I am not very hungry.

[*They sit and eat. Suddenly the Bear growls in the distance*]

First Traveller. What was that?

Second Traveller. I heard nothing.

[*They go on eating. The Bear growls more loudly.*]

First Traveller. Surely you heard something that time?

Second Traveller Yes It seemed to be a growling sound

First Traveller. I hope it is not a wild beast.

Second Traveller I have heard that there are bears in the wood near by, but I have never seen any.

[*First Traveller springs to his feet*]

First Traveller *Bears*, did you say?

Second Traveller We shall be in great danger if we meet one here.

[*Bear slowly prowls in. He looks from side to side and sniffs the air*]

First Traveller Oh, look! The tree!

[*First Traveller climbs into the tree*]

Second Traveller. Pray help me! I can't get up!

[*First Traveller takes no notice*]

Second Traveller. What can I do? I will pretend to be dead I have heard that bears will not touch a dead man

[*Second Traveller lies down, quite still Bear sees the man on the ground and walks up to him. He smells the man's face, and then walks slowly out, growling.*]

First Traveller Has he gone?

Second Traveller I think so.

First Traveller. Thank goodness for the tree!

Second Traveller. We must not stop here any longer.

First Traveller. Let us be going at once

[*First Traveller scrambles down from the tree*]

Second Traveller. What a narrow escape! Will you help me to get up?

[*First Traveller helps him up and hands him his satchel and stick*]

First Traveller. Here are your things.

Second Traveller. Thank you.

[*They start to walk out*]

Second Traveller. What an adventure!

[*First Traveller begins to laugh*]

First Traveller Ha! ha! the bear put his face so near yours! What did he whisper to you?

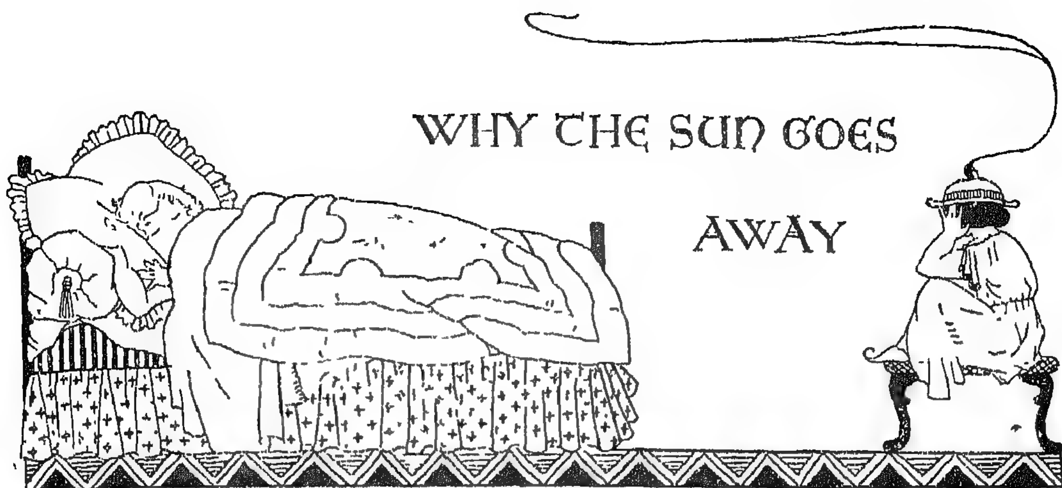
Second Traveller He told me a secret.

First Traveller. What secret?

Second Traveller He said that I must be careful to choose unselfish friends, who will not forget me in time of danger.

[*They walk out*]





People in the Play.—MARY (a little girl in nightclothes). MARY'S MOTHER. MOONLIGHT (a girl with long, fair hair, dressed in white) STARLIGHT (a boy dressed in dark blue, spangled with stars). FIRELIGHT (a small boy dressed in red) BABY NIGHTLIGHT (a very small girl dressed in a long primrose yellow frock with a round yellow bonnet). SUNLIGHT (a girl dressed in red and yellow). FATHER SUN (a big boy, or the teacher, dressed in bright yellow, with a coronet of rays, and a dark cloak with a yellow lining).

Scene.—Mary's bedroom, which contains a window, a door, a fireplace, a bed and a chair.

[*Mary is in bed. Her Mother is folding her clothes. Moonlight and Starlight are outside the window Firelight is crouching down in the grate. Baby Nightlight sits curled up on the chair at the foot of Mary's bed, her arms folded and her head resting on them.*]

Mary. Don't go yet, Mummy.

Mother. Why not, darling?

Mary. Because I'm afraid of the dark.

Mother. But it isn't dark, dear. There's the moon shining so brightly in the sky with all the stars around her, and the fire burning up nicely in the grate. I'll light your little nightlight too.

[*Mother strikes a match and pretends to light Nightlight. Nightlight wakes up and stands up on the chair*]

There now! With moonlight and starlight and firelight, and your little nightlight as well, you can't say that it is dark.

Mary. But I want the sun to come and give me his sunlight Mummy, why *does* the sun go away every night?

Mother. Because he must

Mary. Yes, but *why* must he?

Mother Now, darling, it's time all little boys and girls were asleep. Don't ask any more questions, but just lie down like a good girl and go to sleep quietly.

[*Mother tucks Mary up, kisses her, and goes out*]

Mary (*sitting up in bed*) Moonlight, Moonlight, come and talk to me.

[*Moonlight comes in at the window. She speaks very slowly and gently*]

Moonlight.

I shine softly down
On the fields and the town,
And my silvery light
Is the lamp of the night.

Mary Moonlight, may I ask you something?

Moonlight If you like.

Mary. Moonlight, *why* does the sun go away, and take the sunshine with him?

Moonlight (*thinks for some time and then says slowly*). I don't know. I have often wondered about that myself. Shall I ask Starlight?

Mary. Oh, *please* do!

[*Moonlight goes to the window and calls.*]

Moonlight. Starlight! Starlight!

[*Starlight jumps in through the window. He moves and speaks quickly.*]

Starlight

Starlight, starlight,
Twinkles in the quiet night
From a million stars which lie
Powdered over all the sky.

Mary. Starlight, why does the sun go away?

Starlight (*skipping round and round*). I don't know, I don't know. I've never thought about it. Let's ask little brother Firelight.

[*Starlight dances to the fireplace and calls.*]

Firelight! Firelight!

[*Firelight jumps up from the grate. He bobs up and down as he talks.*]

Firelight.

Flicker, flicker,
Slower, quicker,
Now I grow and then I shrink,
Now I glow and then I blink,
Up I shoot and down I sink.

[*He sits down cross-legged on the floor. Mary jumps out of bed and runs to sit down beside him with the others. They arrange themselves in a row facing the audience in this order: Mary, Moonlight, Starlight, Firelight.*]

Starlight. Firelight, Mary wants to know why Father Sun goes away and takes the sunshine with him. Do you know?

Firelight. No, I don't. Have you asked Baby Nightlight?

Starlight. It's no use asking her. She won't know. She's much too tiny.

Moonlight (*gently*). Still, we might ask her. I'll go and fetch her.

[*Moonlight goes over to the chair.*]

Come down, little Nightlight.

[*Baby Nightlight rubs her eyes.*]

Baby Nightlight

I'm wee, I know,
But I can glow
With a bright
Little light.

Moonlight. Come and talk to all the other Lights. We want to ask you a question.

[*She carries Baby Nightlight to the others, and they sit her down between Moonlight and Mary, each holding one of her hands.*]

Firelight. Baby Nightlight, do you know why Father Sun goes away?

Baby Nightlight (*sleepily*). No, Baby Nightlight doesn't know.

Starlight. There, I told you so.

Firelight. Oh, you're very clever, aren't you?

Starlight. No, it's you who are stupid.

[*Starlight and Firelight start to fight.*]

Moonlight. Now, boys, no fighting. Suppose we ask Father Sun himself why he goes away?

Starlight. But he isn't here.

Firelight. We can call him, stupid.

Mary. Oh, do let us do that.

Moonlight. Very well, we will.

[*They all stand up and turn their backs to the audience.*]

All together. Father Sun! Father Sun!

Moonlight. Now we must all sit down quietly and wait till he comes.

[*Mary, Baby Nightlight and Moonlight sit down on one side of the stage, Starlight and Firelight on the other.*]

Mary. I think Father Sun is very cruel to go away and leave us alone in the dark.

Moonlight. I don't. Father Sun is always good.

Starlight. And kind.

Firelight. And warm.

[*Baby Nightlight has fallen asleep. A dark figure wrapped in a black cloak appears at the back of the stage.*]

Mary. Oh, look! Who is that? Oh, it must be Darkness,—I'm frightened! I'm frightened!

[*Sunlight runs on to the stage. She goes to Mary and takes her hands.*]

Sunlight. Don't be frightened, Mary. I am Sunlight, and I have come to tell you that Father Sun is on the way.

Mary. But who is that?

[*She points to the cloaked figure which is moving backwards down the stage.*]

Sunlight. You silly girl! Don't you know who *that* is? Look!

[*Sunlight runs to the figure and turns him round. It is the Sun.*

All together. Why, it is Father Sun!

Sun. Yes, darkness is only the back of the sun.

[*Sun comes forward and sits on the chair. He takes Mary on his knee, and the others stand or sit round him.*]

Sun. Well, little people, why have you called me here? I ought to be at the other side of the world, you know. I must not stay with you long, or the people who live there will be wondering what has happened to me.

Firelight. Father Sun, we want to ask you a question.

Moonlight. It is Mary's question really. I think she should ask it herself.

Sun. Well, Mary, what is the question?

Mary (*shyly*). Father Sun, why do you go away every night, and take Sunlight away with you, so that we are left alone in the dark?

Sun. You see, Mary, the earth is round like a ball, and that means that I cannot shine on both sides of it at once. All day long I am shining on this side of it, but at the end of the day I must shine on the other side. If I stayed with you here all night, the poor little boys and girls on the other side of the world would have to live always in the dark. But when I go to shine on them I leave you these little friends of yours to keep you company.

Moonlight. I shine on you.

Starlight. I twinkle at you.

Firelight. I bob up and down and peep through the bars of the grate at you.

Baby Nightlight. And I sit by your bed all night.

Sun. And remember, Mary, that I only *seem* to go away at night. I am really there all the time, and when you wake up in the morning you will find me shining as brightly as ever in the sky. Now it is time you were asleep. Into bed with you!

[*Mary gets into bed. Father Sun tucks her up and Sunshine kisses her.*]

Sun. You will find me shining on your bed when you wake in the morning.

[*Sun wraps his cloak round him and goes out, followed by Sunlight.*]

Mary. Good night, Moonlight.

Moonlight. Good night, Mary.

[*Moonlight goes out through the window.*]

Mary. Good night, Starlight.

Starlight. Good night; sweet dreams.

[*Starlight climbs out too.*]

Mary. Good night, Firelight.

Firelight. Good night. I will try to keep alight all night for you.

[*Firelight goes to the fireplace and crouches down in the grate.*]

Mary. Good night, Baby Nightlight.

Baby Nightlight (*sleepily*). Good night, Mary.

[*She climbs up into her chair. Mary lies down. There is silence.*]

Mary. Shall I blow you out, Baby Nightlight? Because I don't mind the dark now.

Baby Nightlight (*more sleepily*). Yes, please.

[*Mary blows at Baby Nightlight, who curls up and goes to sleep.*]

Mary. Good night.

[*Mary falls asleep.*]





COCK-A-DOODLE-DOO



People in the Play—MOTHER BROOM (an old woman dressed in a rough frock, with a white cap and apron and a red shawl) COCK-A-DOODLE-DOO (a weathercock, which is shown on his headdress) TOM THE PIPER'S SON (he carries a pipe, or whistle). JACK HORNER (he carries a pie dish). LITTLE BOY BLUE (he wears a blue smock and a blue hat with a blue feather in it, he carries a horn). MARY QUITE CONTRARY (she wears a long flowered cotton frock and a big straw hat tied with ribbons; she carries a watering-can or a garden rake). BO-PEEP (she is dressed like Mary, only her frock is shorter; she carries a crook) LITTLE MISS MUFFET (she is dressed in a long muslin frock tied under the arms with a sash, a white mob cap with ribbons to match the sash, and black mittens) DAME DRY WEATHER (she is dressed like Mother Broom, only with a shawl of another colour) MASTER WET WEATHER (he wears a waterproof and sou'wester, and carries a small umbrella) THE DOG THE CAT

Things wanted in the play—A cardboard screen in the shape of a shoe to represent the shoe house; it has a window and a door cut in it Some bowls and spoons A buckled shoe. A fiddlestick.

Scene—Outside the shoe house The two stools stand one on each side of the house door

[*When the curtain rises the stage is empty The children are gathered behind the house They begin to sing*]

Children (*singing*)

There was an old woman who lived in a shoe,
She had so many children she didn't know what to do.

[*Mother Broom comes out of the house*]

Mother Broom What a day I have had! I have spring-cleaned the house from toe to heel And I have had to do it all by myself, not one of my children would help me Tom the Piper's Son was out stealing pigs again, the bad boy Mary was in the garden watering her flowers—she grows more contrary every day. Bo-Peep and Little Boy Blue were out in the meadow looking after the sheep Jack Horner was at home, and so was Miss Muffet. But Jack was eating pie in the corner all the morning, and Miss Muffet was so frightened by a big spider that she would do nothing but cry, so they were no help to me. Now they are all inside the house eating their dinner. I have given each of them a great piece of bread, and a bowl of broth, I hope they are eating nicely.

[*Mother Broom goes to the window and listens From inside the house comes the sound of spoons scraped in bowls.*]

Children, children, eat your broth nicely.

[*The scraping noise dies away*]

Now I can have a little fresh air, and rest after my morning's work.

[*Mother Broom sits down on a stool and falls asleep. Cock-a-doodle-doo comes in from the side of the stage*]

Children (*singing, from inside the house*)

Cock-a-doodle-doo!
My dame has lost her shoe.
My master's lost his fiddling-stick,
And doesn't know what to do.
Cock-a-doodle-doo. Cock-a-doodle-doo!

Mother Broom (*waking up suddenly*). Bless me! What was that? A cock! Shoo! shoo! I won't have chickens in my garden.

Cock. Oh, please help me! I am in such trouble.

[*He begins to cry.*]

Mother Broom (*patting his head*) There! there! Tell me what the trouble is.

[*Mother Broom sits down on the stool again Cock stands beside her*]

Cock. I am Cock-a-doodle-doo, and I belong to the old lady and gentleman next door.

Mother Broom. You mean Master Wet Weather and his wife Dame Dry Weather.

Cock. Yes, that's right. I am the weather-cock on top of their house They call it Weather Cottage, and they live there all the year round. They are funny old people My master goes out only in wet weather, and my mistress only when it is fine

Mother Broom Then do your master and mistress never go out together?

Cock. Only when the weather is neither very wet nor very dry.

Mother Broom. How strange! But what is your trouble?

Cock This morning my mistress found that one of the shoes with gold buckles that she wears on Sundays had disappeared. And my master's fiddlestick has gone too. They both think that I took them. They are very angry with me, and say that if I do not find them and bring them back I shall be punished.

Mother Broom. Poor Cock-a-doodle-doo! What can I do to help you?

Cock I think that one of your children must have taken the shoe and the fiddle-stick, for there is no one else living near.

Mother Broom I will call them out one by one, and we will ask them if they know anything about them. I will call Tom first. He is a bad boy, and very fond of stealing, I'm afraid Tom! Tom!

Children (*singing from inside the house*).

Tom, Tom, the Piper's Son,
Stole a pig and away did run
The pig was eat and Tom was beat,
And Tom went roaring down the street

[*Tom comes out of the house*]

Mother Broom. Tom, have you seen Dame Dry Weather's shoe, or her husband's fiddlestick?

Tom. Not I. I have been far too busy all the morning stealing pigs. I got home only just in time for dinner

Mother Broom. Yes, that is true. Run away, then, Tom We will ask Jack Horner. He is the best of all my family, if only he were not so fond of pie. Jack! Jack!

Children (*singing*)

Little Jack Horner
Sat in a corner,
Eating his Christmas pie.
He put in his thumb,
And pulled out a plum,
And said, "What a good boy am I!"

[*Jack comes out of the house.*]

Mother Broom. Jack, have you been into Weather Cottage to-day, and stolen any-thing?

Jack. Oh *no*, Mother Broom! I have been sitting in the corner all the morning, eating that nice pie you gave me. I am a *good* boy!

Tom. You might have saved some of it for the rest of us. You are too greedy and selfish to be really good

Mother Broom. Anyway, Jack isn't the thief. I don't think it can have been Little Boy Blue, but I'll ask him.

Tom He's fast asleep.

Mother Broom. Go and wake him, then.

[*Tom goes in*]

Children (*singing*).

Little Boy Blue, come blow up your horn,
The sheep's in the meadow, the cow's in
the corn.

Where is the boy that looks after the sheep?
He's under the haycock, fast asleep

[*Tom brings in Little Boy Blue, who is yawning and rubbing his eyes*]

Tom Here he is, the lazy fellow!

Mother Broom. Wake up, little son. Did you take a shoe and a fiddlestick from Weather Cottage?

Boy Blue No, I've been fast asleep under a haycock all the morning, I woke up only just before dinner time

Mother Broom None of the boys seems to have taken the things, we must ask the girls next I'll try Mary first. Mary! Mary!

Children (*singing*)

Mary, Mary, quite contrary,
How does your garden grow?
With silver bells, and cockle shells,
And marigolds all in a row.

[*Mary comes out of the house.*]

Mother Broom Mary, do you know anything about Dame Dry Weather's slipper, or Master Wet Weather's fiddlestick?

Mary No, I don't. I am too busy caring for my pretty garden to bother about such stupid things.

Tom. Contrary as usual!

Mother Broom Then we must ask Bo-Peep Bo-Peep!

Children (*singing*)

Little Bo-Peep,
She's lost her sheep,
And doesn't know where to find them.
Leave them alone,
And they'll come home,
Bringing their tails behind them.

[*Bo-Peep comes out of the house*]

Bo-peep. Oh, I have had such a dreadful morning! Lazy Little Boy Blue went to sleep instead of watching the sheep, and they all wandered into the wood I spent all the morning looking for them But I found them at last, and now they are all safe in the fold.

Mother Broom I am so glad you did not lose them altogether. And now you must help us to find Dame Dry Weather's shoe and her husband's fiddlestick. They are lost too.

Bo-Peep. I'm afraid I don't know anything about them

Mother Broom Then there is only Little Miss Muffet left to ask Miss Muffet! Miss Muffet!

[*Miss Muffet looks out of the window*]

Come out here, I want to ask you something.

Miss Muffet. Are there any spiders about?

Mother Broom No, none at all.

Miss Muffet I can't come out, I'm too frightened.

Bo-Peep. I'll go and fetch her

[*Bo-Peep goes in the house*]

Children (*singing*)

Little Miss Muffet
She sat on a tuffet,
Eating her curds and whey.
There came a big spider
And sat down beside her,
And frightened Miss Muffet away

[*Bo-Peep comes out of the house, leading Miss Muffet by the hand Miss Muffet runs to Mother Broom and climbs on to her knee*]

Mother Broom You see, there's nothing to frighten you.

Miss Muffet (*pointing to Cock*) What's that?

Mother Broom. That is only Cock-a-doodle-doo He wants to know if you have seen a lost shoe and a fiddlestick

Miss Muffet. No, I haven't. I don't like him. I'm afraid.

Mother Broom The lost things are still not to be found Children, one of you *must* have taken them.

All No, indeed, we have not.

Mother Broom You are not telling the truth If the slipper and the fiddlestick are not found, you will *all* be punished. There will be no bread for supper, and I shall whip you all soundly and send you to bed early.

Children (*singing*)

> She will give us our broth
> Without any bread,
> And whip us all soundly
> And send us to bed

This is dreadful What shall we do?

Tom Mother Broom, you haven't asked the dog

Jack. Or the cat.

Mother Broom No, I had forgotten them Tom, go and fetch Fido

[*Tom goes into the house*]

Children (*singing*).

Oh where and oh where has our little dog gone?
Oh where and oh where is he?
With his ears cut short and his tail cut long,
Oh where and oh where can he be?

[*Tom comes out of the house carrying a shoe Fido follows*]

Tom. Here he is, the naughty dog Look what I found in his kennel!

All A shoe!

Cock Why, it is my mistress's Sunday slipper! Cock-a-doodle-doo!

Mother Broom Mary, go and fetch the cat.

[*Mary goes into the house*]

Children (*singing*)

> Hey, diddle, diddle,
> The cat and the fiddle,
> The cow jumped over the moon
> The little dog laughed
> To see such sport,
> And the dish ran away with the spoon.

[*Mary comes out of the house with the cat, carrying a fiddlestick*]

Mary. I found him playing his fiddle with this fiddlestick.

Cock Why, it is the one my master lost! Cock-a-doodle-doo!

Mother Broom. Fido and Puss, you have both been very naughty.

Dog and Cat (*together*). We are very sorry.

Dog. I took the shoe because I am only a puppy, and I thought it would be nice to cut my teeth on

Cat I took the fiddlestick because it was my music lesson, and I had broken my own bow

Children. Forgive them, dear Mother Broom

Mother Broom Very well, I forgive them both

[*Dame Dry Weather and Master Wet Weather come in from the side*]

Why here come Dame Dry Weather and her husband, Master Wet Weather.

Dame Dry Weather and Master Wet Weather (*together*) How do you do?

Mother Broom How is it that you are both able to come out at the same time?

Dame Dry Weather Well, you see, it's not a very wet day——

Master Wet Weather And it's not a very dry day——

Dame and Master (*together*) So here we are out together.

Mother Broom We have some good news for you Your shoe and fiddlestick are found

[*The dog brings the shoe to Dame Dry Weather*]

Dog. Here is your shoe I am so sorry I stole it

[*The cat brings the fiddlestick to Master Wet Weather*]

Cat Here is your fiddlestick I am sorry too.

Dame Dry Weather. We forgive you.

Master Wet Weather Because we are so glad to have them back again

Cock Will you be kind to me again now?

Dame Dry Weather Of course we will

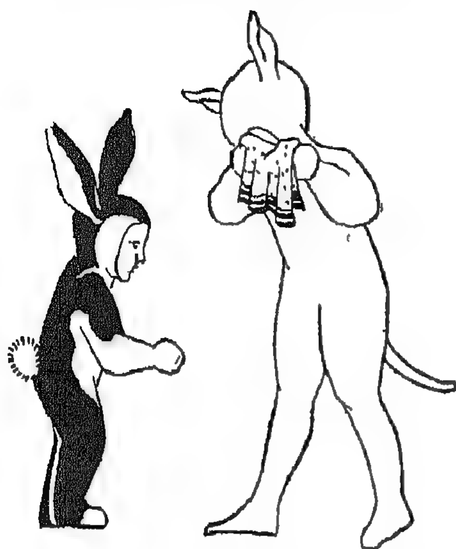
Cock (*flapping his wings for joy*) Cock-a-doodle-doo! Cock-a-doodle-doo!

Children (*singing*)

> Cock-a-doodle-doo!
> My dame has found her shoe.
> My master's found his fiddling-stick,
> And now we'll dance with you

[*They dance in pairs, to the tune of this rhyme Mother Broom dances with the Cock, Tom with Mary, Jack Horner with Bo-Peep, Boy Blue with Miss Muffet, and Dame and Master with each other*]

MISTER RABBIT AND MISTER FOX



People in the Play—MISTER RABBIT. MISTER WOLF MISTER FOX.

Things wanted in the Play—A newspaper. A large tablecloth.

Scene.—A room in the house of Mister Fox. There is a table covered with a cloth. Two chairs stand near the table.

[*Mister Fox is sitting on a chair reading a newspaper*]

Fox. Ha! ha! Very funny! The Tortoise knows how to put a good story together

[*He turns to another page*]

What's this?

[*He reads aloud from the paper*]

"Mister Rabbit's cruel trick. Yesterday morning Miss Cow was found in Farmer Green's orchard in a sad and weak state. Her horns were stuck fast in the trunk of an apple tree and she had been standing there all night. She was rescued by the help of Mister Horse and Mister Donkey. When she was well enough to speak she said that Mister Rabbit had advised her to butt the tree to get down the apples" Dear! dear! A cruel trick indeed! Poor Miss Cow!

[*Mister Wolf knocks at the door*]

Fox. Come in.

[*Mister Wolf walks in.*]

Wolf Good-day, Mister Fox

Fox Good-day, Brother Wolf. How kind of you to pay me a visit, come and sit down How are you?

Wolf Very worried, dear Fox, very worried

[*Mister Wolf sits down*]

Fox. Why, what is the matter?

Wolf It's this rascal Rabbit, who is worrying the life out of all the animals for miles round

Fox It is odd that you should have come to talk about him Just as you knocked I was reading this story of his cruelty to Miss Cow Such a charming young lady, too, I don't know how he had the heart to do it

Wolf It is one trick after another with him I have just heard that he almost frightened the life out of Mister Horse's youngest son He tied a tin can with a pebble in it on to the poor child's tail. Mrs. Horse was quite upset about it.

Fox. Horrible! What do you think we ought to do?

Wolf Rabbit is not easy to catch, he can run so fast, but I have an idea, and I want you to help me.

Fox. With all my heart.

Wolf I heard Rabbit say that he was coming to call on you in half-an-hour. You lie down on the floor and pretend that you are dead, and don't say a word until he comes up and touches you. Then get up and hold him fast I will run home and call my wife. The three of us can easily make an end of him He will make a splendid savoury stew for supper

[*Mister Fox lies down on the floor*]

Fox. Rabbit stew! How delicious!

Wolf I will cover you with this tablecloth Rabbit is very curious, he is sure to come and lift it up to look at you.

[*Mister Wolf covers Mister Fox with the tablecloth*]

Fox. This is a very hard bed. I hope he will not be long in coming

[*Mister Rabbit knocks at the door.*]

Wolf Hush! Here he is

[*Mister Wolf gets out his handkerchief and pretends to cry. Rabbit knocks again*]

Wolf C-c-c-c-come in.

[*Mister Rabbit peeps round the door.*]

Rabbit Why, Mister Wolf, what's the matter? You seemed quite happy when I saw you a few moments ago. And where is friend Fox?

Wolf. Bad news, Mister Rabbit. Terrible news. My beloved Fox is no more I came here to find him stretched dead on the floor There he lies, covered with his own tablecloth

[*Mister Wolf cries more than before*]

Rabbit. This is bad news indeed How suddenly he has died! Why, only this morning I saw him out fishing.

Wolf. We can only be thankful that he could not have suffered long. I am just off to arrange for the funeral. Perhaps you would kindly stay with my dear friend's body till I return.

Rabbit Why, certainly, Mister Wolf. I am always ready to oblige my friends, even in such sad duties

[*Mister Wolf goes out Rabbit stands near the door and looks at Mister Fox*]

Rabbit Now this is a very strange thing. I wonder if he is really dead. It doesn't look like it You can always tell if a Fox is dead by the way he keeps shaking his left leg. I must watch him carefully.

[*Mister Fox shakes his left leg a little.*]

Rabbit. Was that a leg moving?

[*Mister Fox shakes his leg a little more.*]

Rabbit. Yes, I believe one of them did move Now let me see, would it be the right or the left?

[*Mister Fox shakes his leg still more*]

Rabbit. Yes, it's the left leg, But it is shaking so feebly that he is probably only asleep after all.

[*Mister Fox starts kicking with his left leg*]

Rabbit Aha! Now I *know* whether he is really dead Oh, Mister Fox, you and your friend Wolf are not clever enough to catch ME. Here comes Wolf, but I won't wait to say good-bye to him I hope he gives you a splendid funeral Oh, who ever heard of a dead Fox with a shaking leg! Ha! ha! ha!

[*Rabbit runs out*]

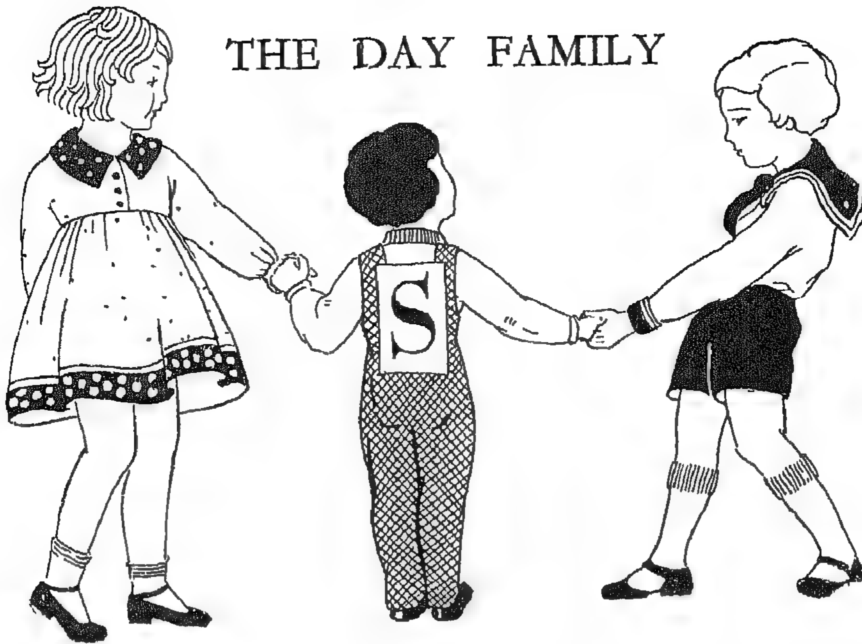
Fox. The rascal!

[*Fox springs up and runs after him*]





THE DAY FAMILY



People in the Play.—Mr. Sun Day. Mrs Mon Day. Master Tues Day. Master Wednes Day Master Thurs Day Miss Fri Day Master Satur Day John. Mary. (John and Mary wear ordinary clothes If possible, the Days should all wear overalls of the same colour, and each should wear or carry a card back and front, with the name of the day printed on it)

Scene.—The playroom of John and Mary's house.

[*John and Mary are sitting on the floor playing with bricks when the five Day Children run in. John and Mary jump up.*]

John Hullo, who are you ?

Mary What are you doing here ?

Day Children (*all together*). We are the Day Children

John (*reading their names*) Tues Day, Wednes Day, Thurs Day, Fri Day, Satur Day—why, they are the days of the week !

Mary. But where are Sun Day and Mon Day ?

Tues Oh, you mean Father and Mother. They are coming along behind us They cannot run so quickly as we can. Here they are.

[*Enter Sun Day and Mon Day.*]

John } *Mary.* } How do you do ?

[*John shakes hands with Sun Day, and Mary with Mon Day*]

Sun Very well, I thank you. I am Mr Sun Day. I am named after the Sun, the great shining light in the sky. It is so beautiful that it makes men think of God That is why on my day many people go to church to praise Him. Everyone rests on Sunday.

John I know they do There is no school on Sunday, and we often have an extra hour in bed.

Mary. What a lazy boy you are growing, John. You think about nothing but resting, and you never want to do any work I think Sunday is a very busy day There is church in the morning, and we always go for a splendid walk in the afternoon, and in the evening Father tells us stories.

Sun This is my wife, Mrs Day

Mon I am Mrs. Mon Day I am called after the moon, the other great light in the sky. I am a very busy person, because I come after my husband. People do not

work on his day, so they have to do twice as much on mine Some of my friends call me Washing Day, too.

Mary. Yes, I know Monday is always washing day. I like you, Mrs Mon Day, because you see that we have nice clean clothes to wear.

John I'm not sure that I *do* like you Mrs Mon Day. You make me begin lessons again, you know. I think I like your husband better.

Sun That is lazy of you, John You would not like every day to be a Sunday, would you? You enjoy Sunday rest because you do not have it very often, but if you had it every day you would soon be tired of doing nothing.

Mon This is my eldest son, Tues Day

Tues My name is Master Tues Day I was called after the great war god, Tyr But I am not very fond of fighting I am a quiet little fellow really, and I like best to stay at home and help Mother with the ironing

Mon Yes, indeed I don't know what I should do without Tues Day

Sun This is our second son, Wednes Day. He is the best-behaved of all our children

Wednes So I ought to be, for I was named after Woden, the king of all the gods

Mary I like Wednesday It is a nice, steady day, and I have settled down to my lessons well by then

John I like Wednesday too, because it is a half-holiday

Sun This is our third son, Thurs Day

Thurs. I am called after Thor, the strongest and bravest of the gods If you have anything difficult to do, it is a good thing to begin it on Thursday Then you will be brave enough and strong enough to finish it.

John I like Thursday, because then I know that the week is nearly over.

Mary Oh, John, how lazy you are! *I* always begin to hurry and bustle on Thursday, because I know that the week-end is near, and I must get my lessons finished

Sun. Now that you know my three strong sons—Tues Day, Wednes Day and Thurs Day—I want you to meet my only daughter Fri Day.

Mary Oh, isn't she pretty!

Fri. Father and Mother think so too. That is why they called me Fri Day, after Freya, the most beautiful of all the goddesses.

John Some people say that Friday is an unlucky day.

Fri. I know they do It makes me very unhappy to hear them say so, for it is not true. Friday is a good day really. It is easy to work well on a Friday.

John. Friday is the only day when I *do* work. I always do my best then, so as not to have any work left over to do on Saturday.

Sun This is Satur Day, our youngest child

Mary What a dear little fellow!

John. I love Saturdays.

Satur. So does everyone I am the jolly day. I am named after Saturn, the god of the harvest He was the merriest of the gods, and I am the merriest of the days. On my day all children play and have fun.

Mon. Now you have met all the Day family

John Yes Now stand in a row with your backs to us and we will put you in your right order.

[*The Days arrange themselves side by side, close together, in a row with their backs to the audience, in this order:—Satur Day, Tues Day, Fri Day, Thurs Day, Wednes Day, Mon Day, Sun Day. John and Mary stand in front of the line*]

John. Now, Mr Sun Day.

[*He turns Sun Day round, takes him to the opposite end of the line and stands him there facing the audience*]

Mary. This is Mrs. Mon Day Move along, Satur Day

[*She takes Mon Day and stands her facing the audience between Sun Day and Satur Day Satur Day and the*

rest of the Days move up to make room for her]

John And now Master Tues Day, the biggest boy You must move again, Satur Day, this is not your place

[*He stands Tues Day between Mon Day and Satur Day, facing the audience; the rest move up as before, except Sun Day and Mon Day.*]

Mary Then there is Master Wednes Day

[*Mary turns round Thurs Day by mistake.*]

Oh no! this is Thurs Day How silly of me!

John. *This* is Wednes Day.

[*He turns him round, and puts him next to Tues Day The others move up as before*]

Mary. And Thurs Day comes after Wednes Day.

[*She puts Thurs Day in his place*]

John And now pretty little Miss Fri Day.

[*He turns her round and puts her next to Thurs Day*]

Mary And here is dear little Satur Day standing in his right place

[*She turns him round as he stands at the end of the line*]

There! now you are all in the right order

Mon. Clever children!

Sun. (*looking at his watch*). Why, it is half past four, time for tea Come along, children

John. }
Mary } Oh, must you go?

Mon. Well, of course, one of us must always stay with you

John Why?

Mary Because it is always *some* day, silly. We never wake up and find it is no day at all, do we?

Mon Come along, children

Sun All except Satur Day,—he must stay.

John Why must Satur Day stay? Can't Fri Day stay instead?

Mary Oh, John, you *are* slow! Don't you understand yet? Satur Day must stay because it *is* Saturday.

John So it is How stupid of me! Good-bye, dear little Fri Day, I will see you again next week

[*All the Days except Satur Day line up one behind the other in order, calling out as they go*]

All the Days. Good-bye, John Good-bye, Mary.

John }
Mary. } Good-bye, all of you

Mary. You know, Satur Day, we really like you best of all the days of the week, only we didn't like to say so, for fear of hurting the other Days' feelings

John I say, can't you smell muffins? We always have muffins for tea on Saturday Come along!

[*John and Mary each take one of Satur Day's arms, and they all run out together*]

John }
Mary } Hurrah for Saturday!





A BOWL OF CREAM



People in the Play.—PHYLLIS PHOEBE. GRANDFATHER CLOCK. A BROWNIE

Things wanted in the Play A plate A duster. A small bowl of milk, or water A sixpence

Scene —The kitchen of Buttercup Farm There is a window, and one door and a table The clock stands in one corner. The person who plays the clock holds a cardboard clock-face in front of his face

[*Phyllis is dusting, and singing as she works Soon Phoebe comes in, carrying a bowl of cream.*]

Phoebe. Why, Phyllis! How busy you are!

Phyllis. I want to leave everything clean and fresh so that we may start early for the Fair in the morning

Phoebe And you have polished the pans in the dairy, they are as bright as silver!

Phyllis. I like to make them shine.

Phoebe It is easy to see that you are new at Buttercup Farm. Silly thing that you are to work so hard! I never do I know a trick worth two of that! Do you see this bowl of cream?

Phyllis. What are you going to do with it?

Phoebe I put it on the window sill . . so . and leave the window open just a little way . . like that . .

[*Phoebe puts the bowl on the sill, and opens the window*]

Phyllis. And then?

Phoebe In the night someone comes in, and drinks the cream He sweeps and dusts the kitchen, and sets everything straight Then he washes the dairy floor, and cleans the pans and the milk pails

Phyllis But who is he?

Phoebe. I do not know. I have never spoken to him But one night I hid behind the clock, and I saw him He is a little brown man.

Phyllis And he does all your work for you! How kind of him!

Phoebe But he must have the best cream, and no one must disturb him at his work If he had seen me watching him, he would have run away, and never come back again He is as shy as a little brown rabbit

Phyllis I should like to see him

Phoebe So you may if you hide behind the clock He will never find you there. But you will be too sleepy to come to the Fair in the morning

Phyllis. No, the cock will wake me

Phoebe. What will you buy at the Fair?

Phyllis I have no money to spend, for I gave my wages to my mother But I shall see all the sights, and dance and sing

Phoebe. What a queer girl you are!

[*Phoebe yawns*]

Well, I am off to bed Be sure you do not frighten my Brownie away.

[*Phoebe goes out Phyllis takes off her shoes, leaves them on the floor and hides behind the clock*]

The Clock Ting-ting-ting-ting-ting-ting-ting-ting-ting-ting Ten o'clock, and no Brownie. He is late to-night.

[*Brownie runs in*]

Brownie. Good evening, Grandfather! How are you?

The Clock A little wheezy, but quite well, thank you

[*Brownie runs to the window, picks up the bowl, and drinks the cream greedily Then he sighs, looks sadly at the empty bowl, and picks up the duster*]

Brownie Oh dear! I am so tired!

[*Brownie rubs his eyes and yawns*]

But I must earn my cream

[*Brownie begins to dust.*]

The Clock. There is a surprise for you to-night.

Brownie Where?

The Clock. Look and see See if you can find any dust.

[*Brownie runs his finger along the window ledge, and the edge of the table*]

Brownie. Why! There is no dust!

[*He runs out, and comes back quickly*]

And someone has been cleaning the dairy too I can see my face in the pans I could eat my supper off the floor. And the milk pails are as sweet as clover! Hurrah! Hurrah!

[*Brownie dances round the room*]

No work for me to-night! Lazy Phoebe is lazy no longer. I will leave something in her shoe.

The Clock Lazy Phoebe is as lazy as ever We have a new dairymaid Her name is Phyllis, and these are her shoes

Brownie. And her shoes tell me all about her Look how thin the soles are. That shows how much running to and fro they have done! Mistress Phyllis shall have something to spend at the Fair to-morrow

[*Brownie puts a sixpenny piece into her shoe*]

And now I am off to my bed in the hay Good night, Grandfather

[*Brownie runs out Phyllis comes out from behind the clock*]

Phyllis What a queer little man! And what has he left in my shoe?

[*Phyllis looks into the shoe.*]

A sixpence! A silver sixpence to spend at the Fair! I must tell Phoebe!

[*Phyllis runs to the door and calls*]

Phoebe! Phoebe!

[*Phoebe enters in her nightgown The Brownie runs in They all join hands with the Clock and sing*]

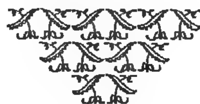
I love sixpence, pretty little sixpence,
I love sixpence better than my life
I'll spend a penny of it,
I'll lend a penny of it,
And I'll take fourpence back to my wife.

I love fourpence, pretty little fourpence,
I love fourpence better than my life
I'll spend a penny of it,
I'll lend a penny of it.
And I'll take twopence back to my wife.

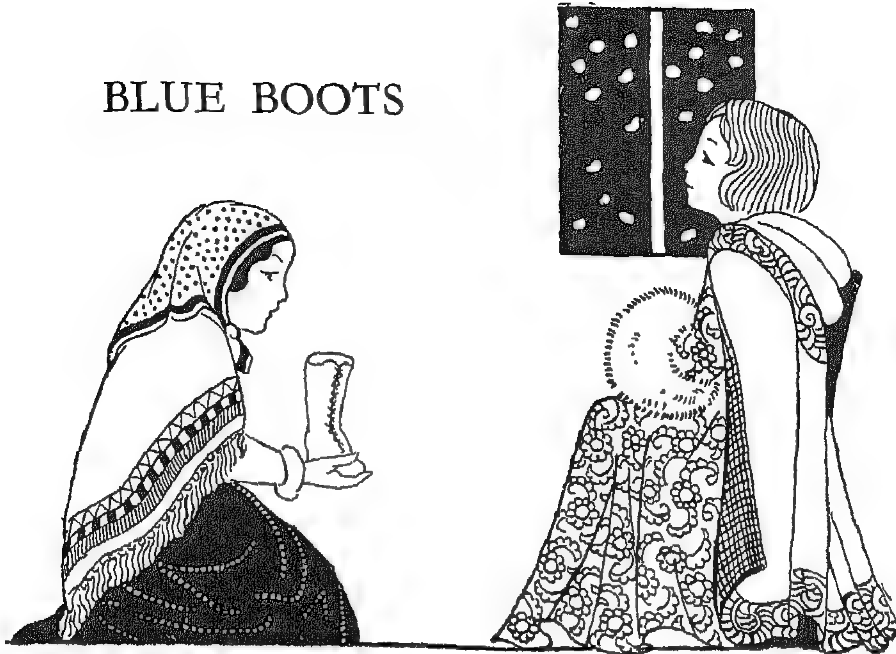
I love twopence, pretty little twopence,
I love twopence better than my life
I'll spend a penny of it,
I'll lend a penny of it,
And I'll take nothing back to my wife

I love nothing, pretty little nothing,
I love nothing better than my life,
I'll spend nothing of it,
I'll lend nothing of it,
And I'll take nothing back to my wife.

[*All run out*]



BLUE BOOTS



People in the Play—THE SHOEMAKER. THE SHOEMAKER'S WIFE THE LORD THE LADY. THE SERVANT

Things wanted in the Play.—Two boots, which should be painted blue, or covered with blue cloth or paper. A hammer. Two purses A poker Some bells to sound like sleigh bells, like those on a tambourine or on a child's harness Two or three children in the background to howl like wolves.

Scene—A room in the Shoemaker's cottage There are two doors, one leading to the outside and one to the inside of the cottage. There is a cupboard by the wall. Two chairs stand one on each side of the fireplace.

[*The Shoemaker sits in one chair with a boot on his knee, tapping the heel with a hammer, the other boot lies on the floor The Wife sits in the other chair with her hands folded. They both look very sad*]

Shoemaker. There The boots are done at last They are very well sewn and I am glad, for they are the last boots I shall ever make. We have no money to buy any more leather.

[*He hands the boots to his Wife*]

Wife They are very tiny. Only a lady could wear them, and she would have to be a very small lady. What a curious colour they are! I have never heard of blue boots before.

Shoemaker. I have had a fine piece of blue leather by me for a long time, but because it was blue I have never made it into boots. But now these boots are all we have left to sell, and if no one will buy them we must starve.

Wife. Perhaps someone will buy them. Who knows?

[*She puts the boots away in the cupboard There is a knock at the outside door*]

Shoemaker. Someone is knocking

[*The Wife opens the outside door. The Servant comes in*]

Servant Good evening to you I am the servant of a noble lord and lady who are travelling to their castle. My lady is very tired, and when my lord saw the firelight shining through the windows of your cottage, he sent me to ask if she might rest here.

Shoemaker. I am a poor shoemaker, and I live here alone with my wife. We have no

food, but we have a warm fire Your lord and lady may rest in our cottage and welcome

[*He pokes the fire, while the Wife runs about tidying up the room*]

Wife What sort of man is your lord?

Servant A very sad sort of man to-day, I promise you He and his lady have quarrelled and she will not speak to him.

Wife. Why have they quarrelled?

Servant. I do not know. But here they come

[*A jingle of sleigh bells is heard The Lord and Lady come in by the outside door. The Lord has the two purses in his pocket. The Shoemaker and his Wife bow low to them*]

Shoemaker and Wife Welcome to our poor house

Lord Thanks, kind friends My lady is tired and needs rest Sit down, my dear, and warm your cold hands

[*The Lord tries to take her hand to lead her to the fire, but she turns away and sits down angrily*]

Lord Will you attend to my horses, and see that they have food?

[*The Shoemaker, his Wife and the Servant go out by the outside door. The Lord sits down opposite the Lady.*]

Lord Are you still angry with me?

Lady Of course I am, because you will not do what I ask

Lord You want me to drive back to the place where we slept last night and fetch your boots. But you know there is a storm coming, it is snowing already.

[*Wolves howl in the distance.*]

Besides, there are wolves about. Listen!

[*Wolves howl*]

Don't you hear them howling? We must hurry on to the castle as soon as you are ready. It is not safe to go back to fetch your boots to-night

[*The Lady bursts into tears*]

Lady. They are such beautiful boots! They are blue, and no other lady in the land has any to compare with them. I shall not be happy again till you bring me my boots, my beautiful blue boots.

[*The Shoemaker, his Wife and the Servant come timidly in through the outside door*]

Lady Good woman, have you a bedroom where I can lie down and rest a little?

Wife Certainly, my lady. Come this way

[*The Lady and the Wife go out by the inside door*]

Lord Oh, what an unhappy man I am!

[*He buries his face in his hands*]

Shoemaker (*whispering*) Why is he unhappy?

Servant. Shall I ask him?

Shoemaker. Yes, perhaps you may be able to help him

[*The Servant goes up to the Lord*]

Servant (*timidly*) My lord, can I do anything for you?

Lord I would give a hundred gold pieces to anyone who would bring me a pair of blue boots.

[*The Servant looks very puzzled*]

Servant Blue boots? Where could I find such a pair?

[*The Servant goes back to the Shoemaker.*]

Servant. He says he must have a pair of blue boots

Shoemaker What? Blue boots, did you say? *Blue* boots?

Servant. Yes, *blue* boots. Have you ever heard of anything so foolish?

Shoemaker. Come with me

[*The Shoemaker takes the Servant to the cupboard and opens it.*]

Shoemaker. Look in here.

Servant Oh! Why, here *is* a pair of blue boots!

[*The Servant takes the boots and puts them on the Lord's knees.*]

Servant Master! Master! Look at these!

Lord Upon my word, a pair of blue boots!

[*The Lord holds them up*]

Lord. How wonderful! But where did they come from?

[*The Lady and Wife come in by the inside door They see the boots which the Lord is holding up.*]

Lady Why, there are my blue boots!

Wife. Those are the last boots my husband made

Lord They are yours, my dear I will buy them for you Will you try them on?

[*The Lady sits down*]

Lady They are sure to be too big. I have the smallest foot of all the ladies in the land

[*The Lady tries on the boots. The Shoemaker and the Wife help her*]

Lady. Why, they fit perfectly. Who made them?

Shoemaker. I did, my lady.

Lady. How much do they cost?

Lord A hundred gold pieces

Shoemaker Oh, Sir!

Lady How very expensive!

[*The Lord takes the purses out of his pocket*]

Lord I would pay much more than that to please you Here, Shoemaker, there are fifty gold pieces in this bag to pay you for making the boots. And here is another fifty for my servant, because he found them for me. And now, my wife, will you forgive me?

Lady Indeed I will. I am sure no other lady in the land has a husband who would pay a hundred gold pieces for her boots.

[*All five come forward together The Lord and Lady, the Shoemaker and his Wife hold hands. The Servant stands in the middle*]

Lady

Had a lady ever
Finer boots of blue?

Lord.

As my wife is happy,
I am happy too.

Servant

I have made my fortune
With this bag of gold

Wife

We need fear no longer
Hunger, thirst or cold.

Shoemaker

When you're poor and needy
Here's what you must do—
Use up all your leather
Even if it's blue.



CLASS-BOOKS FOR THE CHILDREN

THE practice of private study in the classroom has of recent years become an integral part of the education of children. The excellent methods adopted to teach reading in the modern infant school have made it possible for children of even seven years of age to read suitable books with profit and delight It cannot be too strongly urged that the foundation of all true education is self-help. The "spoon-feeding" methods of teaching practised in former years have to a large extent been superseded by training children to learn and to do for themselves

An Encyclopaedia of this character would not be complete without provision for children's private study in connection with it. For this reason, the children's stories in the history and geography lessons, the English literature, the composition, some of the plays, the poetry, the arithmetic and the music are published separately in delightful, though inexpensive, books for the use of the children.

Thus the full extent of the needs of both teacher and pupil have been met in this work. On the one hand, the detailed and comprehensive nature of the work contained in the Encyclopaedia supplies the teacher with abundant material for a full four years' course of study in the junior school, and readily admits of adaptation to the special requirements of any individual syllabus. The children, on the other hand, are given a threefold source of information and delight,—a thoroughly informed and enthusiastic teacher, class illustrations and books for private study

The list of pupils' books specially prepared for use in conjunction with this Encyclopaedia is here set out

CLASS-BOOKS OF ANCIENT AND MODERN HISTORY.—This series of four books has been prepared to meet the needs of teachers in junior schools All the lessons are written in story form round some outstanding historical character or event, and in such language as young children will understand. The stories have been selected from the whole range of history, beginning with primitive man, and leading through a gallery of striking pictures to modern times No attempt has been made to present world history as a continuous narrative, but chronological sequence is strictly followed, and each story is so linked with the next that the whole will form a sound foundation for the more extensive study of history in the senior schools.

The stories are illustrated by drawings specially prepared from authentic sources by John Macfarlane At the end of each chapter is the briefest summary for the children to "Remember," and the "Exercises," for oral or written work, are of such a character as to stimulate and interest the pupil. Simple "Time Charts" are included in each of Books II., III. and IV , and maps, diagrams and line drawings bearing on the subject matter are freely used throughout the series.

The lessons contained in this series of history books correspond with those dealt with in this Encyclopaedia The books for the four years cover the following periods.

Book I. Long, Long Ago.
Book II. Abraham to Alexander the Great.
Book III Romans to the Normans.
Book IV. Crusades to the Restoration.

LITERATURE OLD AND NEW (PROSE READERS FOR JUNIOR SCHOOLS) —Good literature is fundamental to the study of language, and it is with this principle in view that

these four readers for junior schools have been prepared. The material selected is of recognised literary merit, the exercises are not extraneous to the text, but are framed to foster the interest and understanding of the child, and to provide for language-study through the direct medium of the story

The material has been chosen from a variety of authors, both old and new The stories have not been re-written, therefore the varying styles of different authors have been preserved even in the simple Book I Only a few of the more familiar stories are included, so that there is a considerable body of fresh matter for both teacher and pupil Included in each book are two or three original plays, which may be acted without costume and with only the simplest stage properties. Most of the illustrations have been specially drawn for these books by H. R Millar.

All the exercises have a direct bearing upon the story and are designed to bring out its full value The exercises throughout are similar to those included in the Model Lessons beginning on page 138 of this volume of the Encyclopaedia.

There are four books in the junior series, viz:

Book I. For children from 7 to 8 years of age.
Book II. For children from 8 to 9 years of age.
Book III. For children from 9 to 10 years of age.
Book IV. For children from 10 to 11 years of age

POETS AND POETRY.—In books of poetry the pupil specially needs some guidance to enable him to make full use of his opportunities for self-instruction. It demands an extraordinary feat of mental adjustment to turn from a lesson, say, on arithmetic, and at a moment's notice to attune the senses to the appreciation of poetry. The teacher has not always the time to prepare the children's minds for the study These three books of POETS AND POETRY have been prepared to supplement the work of the teacher and to stimulate the mental activities of the children.

The poems are arranged in groups under certain subject headings or with a common thought running through each group. The notes at the beginning of each section are framed with the object of creating a suitable atmosphere for the study of the poems, and the notes and questions at the end of each section will guide the pupil to a fuller appreciation of the beauty of the poetry

The sketches in the books are mainly intended as pictorial illustrations of certain words and phrases unfamiliar to children, especially to those children living in cities

The majority of the poems are from the works of modern poets: Robert Bridges, Patrick Chalmers, Mary E. Coleridge, William Davies, Walter de la Mare, John Drinkwater, Rose Fyleman, Wilfrid Gibson, Thomas Hardy, Rudyard Kipling, John Masefield, Sir Henry Newbolt, Alfred Noyes, J C. Squire, James Stephens, Dorothy Margaret Stuart, Wilfrid Thorley, William Butler Yeats, etc

There are three books in the junior series, viz.:

Junior Book I. For children from 7 to 9 years of age
Junior Book II. For children from 9 to 10 years of age
Junior Book III. For children from 10 to 11 years of age

THE PUPILS' CLASS-BOOKS OF ARITHMETIC.—This set of pupils' books is the outcome of some years of striving to make the teaching of arithmetic genuinely suitable to the varying ages and capacities of the children.

The following are the main features of the books.

A unique arrangement.—Exercises of a similar character for Two Divisions of a class are arranged on opposite pages The exercises for the Second Division are simpler and more direct than those for the First Division. This unique arrangement enables children of unequal mental capacity to proceed at their own rate.

Fundamentals —The sums in the books are mainly concerned with the simple rules, compound rules of money, common weights and measures, and money exercises dealing with everyday transactions of a child's experience Care has been taken not to strain the reasoning faculties beyond the child's capacity at this stage The principal aim has been to prepare a sure foundation by the doing of a moderate amount well.

Oral work —The oral exercises in the Teacher's Book bear directly on the sums to be worked on the corresponding page of the Pupil's Book. The Teacher's Book also contains exercises for mental drill, and practical work

Mechanical sums —Mechanical sums of many types, memory work, self-help exercises, and notes on the problems, etc., are set out in the last few pages of each book, so that the fundamentals can be constantly reviewed at the teacher's discretion

Revision.—Revision exercises on the mechanical rules are included at the bottom of every page, so that a rule once taught is frequently recapitulated. Certain essential types of sums are repeated again and again in varying forms throughout the book.

There are four books in the junior series, viz :

Junior Book I. For children from 7 to 8 years of age
Junior Book II For children from 8 to 9 years of age
Junior Book III For children from 9 to 10 years of age
Junior Book IV For children from 10 to 11 years of age.

Corresponding Teachers' Books are issued for each year

ADVENTURES INTO NATURE.—A graded series of books covering a full four years' course of Nature Study with the syllabus arranged as far as possible on a seasonal basis in parallel books for the "A" and "B" streams of a class.

Each book is illustrated with 16 plates in full colour and numerous black-and-white drawings The coloured plates are reproduced wholly or in part from the 62 Class Pictures which accompany the series, of which details may be obtained from Messrs. Macmillan & Co., Ltd

ESSENTIALS TO THE STUDY OF NATURE AND SIMPLE BIOLOGY.—One book providing an alternative course for the fourth year in the junior school and based on the course set out in Vol. VII.

THE EMPIRE GEOGRAPHY BOOKS.—This series of four books for junior classes has been arranged on a unique plan The introduction to each lesson consists of several large illustrations prepared from authentic sources with a series of questions following each to guide the pupil in making his own observations. Following the pictures is interesting descriptive matter which throws further light on the illustrations and gives much additional information. The books run parallel with the stories developed in the geography sections of this Encyclopaedia. They are most attractive in appearance, and the mere glancing at the pages will stimulate the children's interest in geography and induce them to study the text.

The four books in this series are:

Book I. Treasure from Land and Sea
Book II. Life in Canada and Australasia.
Book III. Life in British Africa and India.
Book IV The British Isles.

TWENTY ESSENTIAL STUDIES IN GEOGRAPHY.—One book providing an alternative course for the fourth year in the junior school.

MUSIC BOOKS.—There are four music books prepared by Sir Henry Walford Davies for the use of pupils in the junior schools. These books contain.

(*a*) Musical phrases for weekly class practice of the Echo Game, and for use in tune writing.
(*b*) Phrases with stave-space for schools to add their own reply-phrases
(*c*) Stave-spaces for schools to complete their own simple AA, BA tunes.
(*d*) Rhymes spaced under staves, with the first musical phrase given, for schools to complete.

ENGLISH COMPOSITION FOR JUNIOR CLASSES—This series of four books runs parallel with the lessons on Oral and Written Composition included in the Encyclopaedia. The stories for these children's books have been greatly simplified as they are to be read by the pupils instead of by the teachers Great pains have been taken to ensure that the exercises are suitable to the age of the children for whom they are intended. The absurdity of setting long compositions for young children has been avoided, and care has been taken to increase the written work by slow degrees, so that the children can make real progress without the disappointment attending the attempts to express themselves in writing before they can do so in spoken language. Most of the stories are illustrated Each book contains a considerable body of reading matter which will be welcomed as a valuable supplement to the reading books of the classroom

ESSENTIALS TO THE STUDY OF ENGLISH.—One book providing an alternative course for the fourth year in the junior school and based on the course set out in Vol. VII.

ADVENTURES INTO HISTORY.—The method adopted in this series of books is based on the teaching set out in Vol VII. of the Encyclopaedia—TWENTY TURNING POINTS OF ENGLISH HISTORY. The stories, which are generally based on authentic pictures, are told in a unique way. There are conversations, imaginary personal accounts, picture studies, and other devices which make the history live. The variety of treatment obviates the possibility of dullness.

The most striking feature of this series is that parallel books are provided for both the "A" and "B" streams of a class The reading in each pair covers much the same ground, but that in the "B" books is particularly easy.

The series is as follows.

I A and I B; II A and II B—
STORIES FROM THE WHOLE RANGE OF HISTORY
III A and III B—
ENGLISH HISTORY FROM THE BRITONS TO THE STUARTS.
IV A and IV B—
STUARTS TO MODERN TIMES (1946).